प्रकाशक
ज्योत्सना प्रकाशन
रामजस रोड, न्यू दिल्ली

प्रथम संस्करण
मूल्य १५ रुपया

मुद्रक
दीपक प्रिंटिंग प्रेस,
दिल्ली ।

पवित्र कुरान

तुम्हारा किया तुम्हारे काम आएगा और हमारा किया हमारे काम एक का काम दूसरे की मदद नही कर सकता।

क़ुरान की यह शिक्षा न सिर्फ मुसलमानों के लिए बल्कि पूरी इन्सानियत के लिए फायदे मन्द है। खुशी की बात है कि इस ईश्वरीय ज्ञान को आज राष्ट्रभाषा हिन्दी मे प्रस्तुत किया जा रहा है ताकि आम लोग इससे फायदा उठा सकें।

आज से करीब चौदह सौ साल पहले यानी ६१७ विक्रमी संवत अर्थात ५६० ईस्वी में इस्लाम के पैगम्बर हजरत मुहम्मद साहब का जन्म हुआ।

उस वक्त अरब की हालत बहुत खराब थी। हर तरफ अधर्म का बोल बोला था। अरब की जनता स्वार्थी शासकों और मठाधीशो के शिकजे में जकड़ी हुई थी। ईसाई और यहूदी अपने प्राचीन शुद्ध धार्मिक संस्कारों को छोड़ कर अपने स्वार्थ के वशीभूत थे। मूर्ति पूजा का बोलबाला था। शराब आम फहम थी। सूदखोरी बढ रही थी। स्त्रीयों से पशुवत व्यवहार किया जाता था। सन्तानो मे भेदभाव किया जाता था, आम तौर से लड़कियाँ पैदा होते ही कत्ल कर दी जाती थीं।

यह थी अरब देश की स्थिती जब हजरत मुहम्मद साहब का जन्म हुआ।

मक्का के कुरेश वंश के प्रसिद्ध हाशिम परिवार मे हजरत मुहम्मद साहब का जन्म हुआ। माता का नाम आम्ना और पिता का नाम

अब्दुल्ला था। ईश्वर इच्छा से जब हजरत गर्भ मे थे पिता जन्नत नशीन हुए। जब हजरत पांच वर्ष के हुए तो माँ भी जन्नत नशीन हुई। आठ वर्ष की अवस्था मे उनके एकमात्र सरक्षक बाबा जान भी दुनिया मे नही रहे। चचा अबूतालिब के पशु चराते हुए हजरत बड़े हुए।

समाज में जो अनैतिकता फैली हुई थी हजरत ने उसके खिलाफ दृढता से आवाज उठानी शुरू की, लेकिन शुरू मे उस आवाज को उनके खानदान वालों तक ने न सुना और बहुत से तो उनके कट्टर दुश्मन बन बैठे।

खुदा ताला की मेहरबानी से जब हजरत चालीस वर्ष के हुए तो उन्हें जिब्राइल फरिश्ते के दर्शन हुए और हजरत कुरान की आयतो का ज्ञान प्राप्त होना प्रारम्भ हो गया। हजरत ने सरेआम उन आयतों को सुनाना शुरू कर दिया। फलस्वरूप जहां अबूबकर जो इस्लाम के पहले खलीफा कहलाए हजरत अली जो मुहम्मद साहब के दामाद भी थे अरब के अनेको प्रतिष्ठित व्यक्ति सहित हजरत के अनुयायी हो गए। परन्तु दूसरी ओर बलशाली कुरैश सरदारो ने मुहम्मद साहब का विरोध करना आरम्भ कर दिया। जबानी विरोध नही बल्कि हजरत और उनके अनुयायीओ पर तरह तरहके जुल्म ढाए जाने लगे। इस जुल्म से बचने के लिए हजरत की आज्ञा से उनके बहुत से अनुयायी अफ्रीका के हबश प्रदेश मे जा बसे। कुरैश सरदारों का और साहस बढा उन्होने हजरत की हत्या का षड़यत्र किया, परन्तु खुदा की मेहरबानी से हजरत को एक दिन पहले ही इस षडयत्र का पता लग गया फलस्वरूप उन्होने मक्का से मदीना के लिए ५३ वर्ष की अवस्था मे हिजरत की।

यू बाद में हजरत के अनुयायिओ ने मक्का विजय कर लिया। परन्तु वो शेष जीवन मदीना मे ही रहे और ६३ वर्ष की आयु मे नश्वर ससार से विदा ली।

कुरान वास्तव मे अति पवित्र ईश्वरीय ज्ञान है। जो जिब्राइल फरिश्ते से साक्षात के बाद हजरत पर अवतरित हुआ। जब हजरत मुहम्मद साहब की आयु चालीस वर्ष की थी तब रमजान के अति पवित्र मास मे कुरान का अभ्युदय हुआ और उनके अन्तिम समय तक अवतरित होता रहा।

कुरान मे तीस पारे अथवा खण्ड हैं। एक सौ चौदह सूरतें अथवा अध्याथ है। अध्याय विरामो मे विभक्त हैं जिन्हें रकूअ कहा जाता है। प्रत्येक रकूअ में अनेको ज्ञान वाक्य हैं जिन्हें आयत कहा जाता है। मुहम्मद साहब के बाद इस्लाम के खलीफाओं के सहयोग से सहावा और अन्सार विद्वानो ने कुरान की आयतो का इसी प्रकार वर्गीकरण किया। चूंकि कुरान का अवतरण अरबो के उद्धार के लिए हुआ इस लिए इसकी भाषा अरबी है।

कुरान की शिक्षा है एक खुदा ही सृष्टि को पैदा करने और सहार करने वाला है और वो निराकार है उसका कोई आकार नही है। पैगम्बर के विषय मे भी कुरान मे स्पष्ट संकेत है कि पैगम्बर भी आम इन्सानो की तरह ही होता है। आम इन्सानो की तरह ही उसे जीना और मरना है। खुदा की मेहरबानी से पैगम्बर खुदा के आलौकिक ज्ञान का ससार मे प्रकाश करता है और भूले भटके मनुष्यो को जीवन का सच्चा मार्ग बताता है। ऐसा मार्ग बताता है जिससे जीवन मे मनुष्य धर्माचरण करके मृत्यु पश्चात ईश्वर के साम्राज्य स्वर्ग मे सुख भोगे।

कुरान मे स्त्रिओ के लिए भी महत्व आदेश हैं, सक्षेप मे कुरान बुराईओ के खिलाफ ईश्वरीय आदेश है। पर स्त्री अथवा पर पुरुष यदि आपस मे सम्बन्ध रक्खें अथवा व्यभिचार करें तो कुरान का आज्ञा है कि —

स्त्री और पुरुष जो भी व्यभिचार का दोषी हो उसे सरे आम सौ कोड़ों की सजा देनी चाहिए। इस सजा पर लोगों को तर्स नहीं खाना चाहिए। सजा सरे आम होनी चाहिए ताकि दूसरो के लिए नसीहत हो।

मूर्ति पूजा अथवा व्यक्ति पूजा का कुरान विरोधी है। मूर्ति पूजा अथवा व्यक्ति पूजा को कुरान मे कुफ्र अथवा नास्तिकता माना गया है। दो प्रकार के काफिर माने गये हैं, एक तो वो जो शिर्क करते है यानी ईश्वर को एक और निराकार न मानकर अन्य और विभिन्न रूपो ईश्वर की पूजा करते हैं, दूसरे काफिर वो माने जाते हैं जो कुछ भी न मानकर ईस्लाम के अनुयायीओ के साथ युद्ध और अत्याचार करते हैं। जो ईश्वर को किसी और रूप मे मानते हैं वो काफिर कुरान की शिक्षा के अनुसार सह्य है, परन्तु दूसरे प्रकार के काफिरो के लिए कुरान का आदेश है उस समय तक उनका नाश करो जब तक कि इस्लाम की पूर्ण रूप से स्थापना न हो जाए।

कुरान मे दूसरे धर्मों के प्रति आदर भाव भी है। कुरान का आदेश है कि—

पृथ्वी के प्रत्येक भाग मे ईश्वर इच्छा से सदैव महापुरुष आकर ईश्वर का मार्ग दिखाते हैं। वे सभी मव्य और आदरणीय हैं।

अपराधो के विषय मे कुरान के बहुत सख्त नियम हैं। कुरान में चोरी के अपराध के वदले हाथ काट देने का आदेश है। प्राण के बदले प्राण, आंख के वदले आंख अर्थात अर्थात जो अपराधी किसी कोई अंग भग करे तो उसे सजा वैसी ही दी जाए अर्थात उसका वो ही अंग भग कर दिया जाए।

साथ ही भले कर्मो वालो के लिए कुरान मे स्वर्ग और बुरे कर्म वालो को नरक मे जाने का भी आदेश है। आदेश है कि जब कयामत

होगी तब हर एक के भले बुरे कर्मों का लेखा जोखा होगा और कोई सिफारिश काम न देगी किसी प्रकार की दया न होगी।

संक्षेप में कुरान सभी के लिए मार्ग दर्शक है, सभी इन्सान इससे शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। बुराईयो को छोडकर इन्सान भलाइयो की ओर मुडे इसी इच्छा के साथ कुरान का राष्ट्रभाषा मे अनुवाद प्रस्तुत किया जारहा है। ताकि इन्सान शैतान के फरेब से बचें और प्रमुख ईश्वरीय आज्ञाओ का जैसे रोजा अर्थात व्रत उपवास, नमाज अर्थात प्रार्थना, हज्ज उम्रा अर्थात तीर्थ यात्रा का महत्व समझें। कुरान के पाठ से दुनियादारी मे भटका इन्सान जान सकता है कि दान पुण्य की महत्ता क्या है, और दूसरो की भलाई मे कितना बड़ा पुण्य है।

कुरान की शिक्षा है। ईश्वर एक है, भले ही उसे अलग-अलग नामो से याद किया जाए।

आशा है हिन्दी भाषी पाठक कुरान शरीफ के हिन्दी अनुवाद का लाभ उठाएगे।

प्रकाशक

निवेदन

इस पवित्र ग्रंथ का हिन्दी अनुवाद करने में हमने बहुत सावधानी एवं कुशलतापूर्वक का प्रयत्न किया है। फिर भी यदि आपको कहीं कोई अशुद्धी मिल जाये तो उसे प्रकाशक को सूचित करदें ताकि अगले संस्करण में उसका शुद्धीकरण कर दिया जांये आपके इस पवित्र कार्य मे सहयोग देने के अनुवादक एवं प्रकाशक अत्यन्त आभारी होंगे।

प्रकाशक

पवित्र कुरान

सूरे फातिहा

यह अध्याय मक्के मे अवतरित हुआ। इसमे ७ आयतें १ रुकू है। (आरम्भ) अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त दयावान कृपालु है। प्रत्येक प्रकार की प्रशसा ईश्वर ही को हैं जो सारे ससार का पालनहार है। (१) अत्यन्त दयावान तथा कृपालु है। (२) महाप्रलय के दिन का स्वामी है। (३) हे ईश्वर हम तेरी ही प्रार्थना करते हैं और तुझ ही से सहायता माँगते हैं। (४) हमें सीधा मार्ग दिखला (५) उन मनुष्यो का मार्ग जिन पर तूने दया की (६) उनका मार्ग नाही जिन पर तू क्रोधित हुआ और नाही उनका जो भटक गये (७) (रुकू १)

प्रथम पारा

सूरे बकर का अवतरण मदीने में हुआ। इसमें २८६ ज्ञान-वाक्य (आयतें) और ४० रुकू हैं।

(आरम्भ) अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त दयावान तथा कृपालु हैं। अलिफ-लाम-मीम (१) यह वह पुस्तक है जिसके ईश्वरीय वाणी होने मे कुछ भी सन्देह नही। यह सयमी का मार्ग बताती है। (२) जो आदृष्ट पर विश्वास करते हैं, नमाज पढते है और जो कुछ हमने उन्हे दे रखा है उसमे म (ईश्वर की भक्ति मे भी) व्यय करते है (३) और हे मोहम्मद जो पुस्तक तुम पर अवतरित हुई और जो तुमसे

पहले अवतरित हुई, उनको जो मानते हैं और महाप्रलय पर भी विश्वास करते हैं (४) यही मनुष्य अपने पालनहार के सीधे मार्ग पर है और ये ही इच्छित फल प्राप्त करेंगे। (५) और जिन मनुष्यों ने नहीं माना उनको तुम डराओ या न डराओ, वह नही मानेंगे। (६) उनके हृदय पर और उनके कानों पर अल्लाह ने मुहर लगादी है और उनकी आंखो पर पर्दा है और महाप्रलय मे उनके लिए कठिन दण्ड है। (७) (रुकू १)

मनुष्यो मे कुछ ऐसे भी हैं जो कह देते हैं कि हम अल्लाह पर और महाप्रलय पर विश्वास करते हैं, यद्यपि वे विश्वास नही करते। (८) वह अल्लाह को और उन मनुष्यों को जो विश्वास कर चुके हैं, धोखा देते हैं, परन्तु वह नहीं जानते कि वह अपने आप से छल करते हैं। (९) उनके हृदय मे अविश्वास का रोग था—अब अल्लाह ने उनका रोग बढा दिया है और उनको झूठ बोलने के अपराध में कष्ट-प्रद दण्ड मिलना है। (१०) और जब उनसे कहा जाता है कि देश मे उत्पात मत फैलाओ तो कहते हैं कि हम तो मेल-जोल कराने वाले हैं। (११) और सुनो यही लोग उत्पाती हैं परन्तु समझते नही हैं। (१२) और जब उनसे कहा जाता है कि जिस प्रकार और मनुष्यो ने विश्वास किया है उसी प्रकार तुम भी विश्वास करो तो कहते हैं क्या हम भी विश्वास कर लें जिस प्रकार मूर्खों ने किया है ? सुनो ! यही मनुष्य मूर्ख हैं परन्तु समझते नही हैं। (१३) और जब उन मनुष्यो से मिलते हैं जो विश्वास कर चुके हैं तो कहते हैं—हमने विश्वास कर लिया है और जब एकान्त मे अपने उद्दण्ड साथियो से मिलते हैं तो कहते हैं—हम तुम्हारे साथ हैं। हम तो केवल (मुसलमानो से) हँसी करते हैं। (१४) अल्लाह उनसे हँसी करता है और उनको ढील देता है। वह इसमे भटकते रहेंगे। (१५) यही है वह मनुष्य जिन्होंने शिक्षा के बदले भटकना मोल लिया है, अत न तो इनके स्वार्थ की ही सिद्धी हुई न य सच्चे मार्ग पर ही स्थिर रहे। (१६) इनका

दृष्टान्त उस मनुष्य का सा जिसने अग्नि प्रज्वलित की, और जब उसके आस पास की वस्तुएँ जगमगा उठी तो अल्लाह ने उसकी नेत्र ज्योति छीन ली और उसको अधेरे मे छोड दिया । अब उनको कुछ नही सूझता । (१७) बहरे, गूंगे, अधे की तरह वह सच्चे मार्ग पर नही आ सकते । (१८) या उनका उदाहरण वैसा ही है जैसे कि नभ से जल बरसे उसमे अधेरा, गरजन और विद्युत हो और इस समय कोई मरने के भय से कडक के मारे अगुलियां कानो मे ठूस लेता हो । अल्लाह अविश्वासियो को घेरे हुए है । (१९) निकट है कि विद्युत उनकी दृष्टि को ही झपका दे क्योकि वे इतने असमर्थ हैं कि जब उनके आगे विद्युत का प्रकाश हुआ तो उसमे वे कुछ चल दिए अन्यथा जब उन पर अधेरा छा गया तो खडे रह गये, यदि अल्लाह चाहे तो उनके सुनने और देखने की शक्तियाँ छीन ले । निस्सन्देह अल्लाह सर्व शक्तिमान है । (२०) (रुकू २) ।

मनुष्यो ! अपने पालनहार की भक्ति करो । जिसने तुम्हें और तुम्हारे पूर्वजो को उत्पन्न किया है । क्या आश्चर्य यदि तुम भी नास्तिक बन जाओ । (२१) जिसने तुम्हारे लिए पृथ्वी का फर्श बनाया और नभ की छत । नभ से पानी बरसा कर उससे तुम्हारे खाने के फल उपजाये, बस किसी को अल्लाह के समान मत समझो और तुम तो जानते हो । (२२) कि हमने अपने भक्त (मोहम्मद) पर कुरान अवतरित की है । यदि तुम्हे इसमे सन्देह हो, तो तुम उसके समान एक अध्याय बना लाओ और सच्चे हो तो अल्लाह के अतिरिक्त अपना कोई और सहायक बुला लाओ । (२३) बस, और यदि इतनी बात भी न कर सको और खूब परिश्रम करने पर भी न कर सको तो नरक की अग्नि से डरो, जिसके ईधन मनुष्य और पत्थर होगे और वह अविश्वासियो के लिए तैयार है । (२४) और जिन मनुष्यो ने विश्वास किया और अच्छे कार्य किए उन्हे यह शुभ-सवाद सुना दो कि उनके लिए स्वर्गीय उद्यान हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही होगी, जब उनको

उनमे का कोई मेवा खाने को दिया जायेगा तो कहेगे, यह तो हमे पहले ही मिल चुका है और उनको एक ही प्रकार के मेवे मिला करेंगे और वहाँ उनके लिए पत्नियाँ पवित्र साफ होगी और वह उनमे सदैव रहेगे। (२५) अल्लाह किसी उदाहरण देने मे नही झेंपता । वह उदाहरण मच्छर का हो या उसमे भी अधिक तुच्छ हो। अत. जो मनुष्य विश्वास कर चुके हैं वह तो विश्वास रखते हैं कि यह उनके पालनहार की ओर से ठीक है पर जो अविश्वासी हैं वह कहते हैं कि इस उदाहरण के प्रस्तुत करने की ईश्वर को क्या आवश्यकता थी । ऐसे ही उदाहरण से ईश्वर बहुतेरो को भटकाता है और बहुतेरो को शिक्षा देता है, परन्तु भटकाता है वह केवल पापियो को ही। (२६) जो वचन देकर ईश्वर का प्रण तोड़ देते हैं और जिन सम्बन्धो को जोडे रखने को ईश्वर ने कहा है उनको काटते हैं तथा देश में उत्पात फैलाते हैं यही मनुष्य हानि उठायेंगे। (२७) मनुष्यो! तुम किस प्रकार ईश्वर की महिमा को मना कर सकते हो क्योकि जब तुम निर्जीव थे तब उसने तुम्हें जीवन दिया; फिर वही तुम्हें मारता है वही तुम्हें जीवन देता है, और अन्त मे उसी की ओर तुम्हें लोटाया जायेगा (२८) वही है जिसने तुम्हारे लिए पृथ्वी की वस्तुएँ उत्पन्न की फिर नभ को ओर ध्यान दिया तो सात नभ समतल बना दिए और वह प्रत्येक वस्तु से जानकार हैं। (२९) (रुकू ३)।

जब तुम्हारे पालनकर्ता ने देवताओ (फरिश्तो) से कहा—"मैं पृथ्वी पर अपना उत्तराधिकारी (सहायक) बनाना चाहता हू" तो देवता बोले—क्या तू पृथ्वी पर ऐसे को उत्तराधिकारी (सहायक) बनाता है जो वहाँ उत्पात फलाये और खून बहाये। हम स्तुति तथा वन्दना के साथ तेरी महिमा का वर्णन करते हैं। बनाता है तो उत्तराधिकारी (सहायक) हमें बना। ईश्वर ने कहा—जो मैं जानता हू वो तुम नहीं जानते। (३०) और आदम को सब वस्तुओ के नाम बता दिए। फिर इन वस्तुओ को देवताओ के सामने प्रस्तुत करके कहा कि

यदि तुम सच्चे हो तो हमें इन वस्तुओ के नाम बताओ। (३१) देवता बोले—तू पावन है, जो तूने हमे बता दिया है उसके अतिरिक्त हमे कुछ पता नही। सचमुच तू ही जानने वाला है। (३२) तब ईश्वर ने आज्ञा दी कि रे आदम! तुम देवताओ को इनके नाम बता दो, फिर जब आदम ने देवताओ को उन वस्तुओ के नाम बता दिये तो ईश्वर ने देवताओ से कहा—"क्या हमने तुमसे नही कहा था कि नभ की और पृथ्वी की सब छिपी वस्तुओ का हमे पता है और जो कुछ भी तुम हमे बताते हो या हमसे छुपाते हो उसकी हमे जानकारी है। (३३) और जब मैंने देवताओ से कहा कि आदम के आगे झुको तो राक्षस को छोडकर सारे देवता झुक गये। उसने न माना और दम्भ किया तथा आज्ञा की अवहेलना की। (३४) और मैंने कहा रे आदम तुम और तुम्हारी पत्नी स्वर्ग मे बसो और उसमे जहाँ कही से तुम्हारी जो इच्छा हो निडर होकर खाओ परन्तु इस गेहू के पेड के पास मत फटकना और यदि ऐसा करोगे तो अपराधी हो जाओगे। (३५) बस राक्षस ने उनको बहकाया और उनको निकलवाकर छोडा। मैंने आज्ञा दी कि तुम जाओ। तुम एक के शत्रु एक और पृथ्वी मे तुम्हारे लिए एक समय तक ठिकाना और जीवन व्यतीत करने का आवश्यक सामान है। (३६) फिर आदम ने अपने पालनकर्ता से कुछ बाते सीखली और ईश्वर ने उसकी प्रार्थना मान ली। निस्सन्देह वह बडा ही क्षम्य तथा कृपालु है। (३७) जब मैंने आज्ञा दी कि तुम सब यहाँ से उतर जाओ और हमारी ओर से तुम लोगो के पास कोई सूचना पहुँचेगी तो जो हमारी सूचना का सरक्षण करेंगे उनको न तो कोई भय होगा और न वो दुःखी होंगे। (३८) जो मनुष्य नास्तिक होगे और हमारे ज्ञान वाक्यो (आयतो) को झुठलायेंगे वही नरक के भोगी होंगे और सदैव नरक मे रहेंगे। (३९) (रुकू ४)।

रे याकूब की सतान (रे बनी इस्राईल) मेरी कृपाओं का स्मरण करो जो हम तुम पर कर चुके हैं और तुम इस प्रतिज्ञा को पूरा करो

जो मुझसे की है और मैं उस प्रतिज्ञा को पूरा करूंगा जो तुमसे की है और मुझसे डरते रहो। (४०) और कुरान, जिसका हमने अवतरण किया है उस पर विश्वास करो और वह उस पुस्तक (तौरात) को प्रमाणित करता है जो तुम्हारे पास है और सबसे पहले इस पर अविश्वास मत करो और मेरे ज्ञान वाक्यो (आयतो) के बदले मे थोड़ा मूल्य (सांसारिक लाभों के रूप मे) प्राप्त मत करो और हम ही से डरते रहो। (४१) सत्य को असत्य के साथ मत मिलाओ जान बूझ कर सत्य को मत छिपाओ। (४२) नमाज पढा करो और दान किया करो और जो झुकने हैं उनके साथ तुम भी झुका करो। (४३) तुम मनुष्यो से भलाई करने को कहते हो और अपनी और ध्यान भी नही देते यद्यपि तुम पुस्तक पढते रहते हो। क्या तुम इतना नही समझते ? (४४) सन्तोष और नमाज का सहारा पकडो। निस्सन्देह नमाज कठिन कार्य है परन्तु उनके लिए नही जो मुझसे डरते हैं। (४५) और यह धारणा रखते हैं कि वह अपने पालनकर्ता से मिलने वाले और उसकी ओर लौट कर जाने वाले हैं। (४६) (रुकू ५)

ऐ याकूब के पुत्रो ! मेरी उन कृपाओ का स्मरण करो जो मैंने तुम पर की हैं और इस बात का भी स्मरण करो कि मैंने तुम्हें संसार के मनुष्यो पर प्रधानता दी थी (४७) उस दिन का भय करो जब कोई मनुष्य किसी मनुष्य के कुछ काम न आयेगा न उसकी ओर से किसी की मानी जायेगी, न उसके बदले मे कुछ लिया जायेगा और न मनुष्यो को कुछ सहायता पहुंचेगी। (४८) जब हमने तुम्हें फिरऔन के मनुष्यो से बचाया जो तुम पर अत्याचार करते थे। वे तम्हारे पुत्रो को मृत्यु प्रदान करते और तुम्हारी स्त्रियो को अपनी सेवा के लिये जीवित रहने देते इसमे तुम्हारे पालनकर्ता की बड़ी परीक्षा थी। (४९) स्मरण करो जब मैंने तुम्हारे कारण नदी को फाड दिया। तत्पश्चात तुम्हें बचाया और फरऔन के मनुष्यो को तुम्हारे देखते-देखते डुबो दिया। (५०) और स्मरण करो जब मैंने मूसा से (तोरात देने के लिए) चालीस रातो की

प्रतिज्ञा की फिर तुमने उसके पीछे पूजन के लिए बछड़ा बना लिया और तुम अत्याचार कर रहे थे। (५१) फिर इसके पश्चात भी मैंने तुम्हे क्षमा किया। सम्भवत तुम कृपा मानो। (५२) और स्मरण करो जब मैंने मूसा को पुस्तक (तौरात) और कानून कसल अर्थात शरीयत दी जिससे तुम शिक्षा ग्रहण करो। (५३) वह समय भी स्मरण करो जब मूसा ने अपनी जाति से कहा कि तुमने बछडे की पूजा करने से अपने ऊपर अत्याचार किया तो अपने सृष्टिकर्त्ता के सामने क्षमा प्रार्थना करो कि भविष्य मे ऐसा नही करेगे और अपने आपको मार डालो तुम्हारे उत्पन्न करने के समक्ष तुम्हारे लिए यही उत्ताम है। फिर ईश्वर ने तुम्हारी प्रार्थना मान ली। निस्सन्देह वह बडा क्षमा प्रार्थना मानने वाला कृपालु है। (५४) उस समय का स्मरण करो। जब तुमने कहा था कि ऐ मूसा जब तक हम ईश्वर को सामने न देख ले हम तो किसी प्रकार तुम्हारा विश्वास नही करने वाले। इसपर तुमको विद्युत ने आ दबोचा और तुम देखते रहे (५५) फिर तुम्हारे मरने के पश्चात मैंने तुम्हे जीवित कर दिया कि सम्भवत तुम धन्यवाद दो (५६) मैंने तुम पर बादल की छाया की और तुम्हारे लिया मन* और सलवा** भी बनाया और हमने जो तुम्हे पवित्र भोजन दिए हैं खाओ। उन मनुष्यो ने मेरा तो कुछ अनिष्ट नही किया परन्तु अपना ही खोते रहे। (५७) और उस समय का स्मरण करो जब मैंने तुम्हे आज्ञा दी कि इस गाँव मे जाओ और जहाँ चाहो निश्चिन्त होकर खाओ। द्वार मे शीश झुकाते हुए प्रविष्ट होना और मुख से 'हितमुन" हम क्षमा प्रार्थी हैं कहते जाना तो हम तुम्हारे अपराध क्षमा करेंगे और जो हमारी आज्ञा का भली भाँति पालन करेंगे, उनको ऊपर से पुण्य देंगे (५८) इस पर जो मनुष्य अन्यायी थे वे प्रार्थनाओ को जो उनको बताई गई थी उनको बदलकर दूसरी बोलने

---

*मीठी वस्तु जो रात को पत्तों पर जम जाती है।

**बटेर जैसी चिडिया का मांस।

लगे तो हमने उन उद्दण्डो को उनके आज्ञोलघन के अपराध के दण्ड नभ से भेजे। (५६) (रुकू ६)

वह घटना भी स्मरण करो जब मूसा ने अपनी जाति के लिए पानी की प्रार्थना की तो मैंने कहा ऐ मूसा अपनी लाठी पत्थर पर मारो, लाठी मारने पर पत्थर से द्वादस जल प्रपात फट निकले। सब मनुष्यो ने अपना घाट ढूंढ लिया और आज्ञा हुई कि अल्लाह की आजीविका खाओ और पिओ और देश मे उत्पात न फैलाते फिरो । (६०) उस समय का भी स्मरण करो जब तुमने कहा कि ऐ मूसा हमसे तो एक भोजन पर नही रहा जाता तो आप हमारे लिए अपने पालनकर्ता से प्रार्थना कीजिए कि पृथ्वी से जो वस्तुए उपजती हैं अर्थात् शाक, ककड़ी गेहू, मसूर, और प्याज हमारे लिए उत्पन्न करे। मूसा ने कहा कि जो वस्तु उत्तम है क्या तुम उसके बदले मे वह वस्तु लेना चाहते हो जो घटिया हैं ? किसी नगर मे उतर पड़ो और जो तुम मांगते हो तुमको मिलेगा। और उन पर कष्ट और निर्धनता डाल दी गई और वे ईश्वर के प्रकोप मे आ गये यह इस कारण कि वह अल्लाह की आज्ञाओ को नही मानते थे और पैगम्बरो को व्यर्थ मार डाला करते थे। इसलिए कि वे आज्ञा के न मानने वाले अहकारी थे। (६१) (रुकू ७)

निस्सन्देह मुसलमान, यहूदी, ईसाई और साईबी इनमे से जिन मनुष्यो ने अल्लाह पर और महाप्रलय पर विश्वास किया और अच्छे काम करते रहे तो उनको इसका फल उनके पालनकर्ता के यहाँ मिलेगा और उन पर न भय होगा न वह उदास होगे । (६२) ऐ याकूब के पुत्रो ! स्मरण करो जब मैंने तुमसे स्वीकृति ली और पर्वत (तूर) को उठाकर तुम्हारे ऊपर ला लटकाया और कहा कि जो पुस्तक हमने तुमको दी है इसको दृढता से पकड़े रहो और जो इसमे है याद रखो जिससे तुम सयमी बन जाओ। (६३) फिर इसके पश्चात् तुम पलट गये तो यदि तुम पर ईश्वर की कृपा और दया न होगी तो तुम घाटे मे आ गये होते। (६४) उन मनुष्यो की जो तुमको जान चुके हो

तुम मे से जिन्होने सप्ताह के दिन मे तुम्हें कष्ट दिया तो हमने उनसे कहा बन्दर बन जाओ, दुतकारे जाओ। (६५) मैंने इस घटना को उन मनुष्यो के लिए जो इस समय उपस्थित थे और उन मनुष्यो के लिए जो इसके पश्चात् आने वाले थे उनके लिए भय और सयमी के लिए शिक्षा बनाई। (६६) जब मूसा ने अपनी जाति से कहा अल्लाह तुम्हें आज्ञा देता है कि एक गाय का वध करो वह कहने लगे क्या तुम हमसे हसी करते हो ? मूसा ने कहा ईश्वर मुझे अपनी सुरक्षा मे रखे कि मैं ऐसा ना समझ न बनूँ। (६७) वह बोले अपने पालनकर्ता से हमारे लिए प्रार्थना करो कि हमे भलीभाति समझा दे कि वह कैसी हो। मूसा ने कहा, ईश्वर कहता है कि वह गाय न बूढी हो न बछिया दोनो के मध्य की रास, बस तुमको जो आज्ञा दी है उसे पूरा करो। (६८) वह बोले अपने पालनकर्ता से हमारे लिए प्रार्थना करो कि वह हमको भली प्रकार समझा दे कि उसका रग कैसा हो। मूसा ने कहा ईश्वर कहता है कि उस गाय का रग खूब गहरा पीला हो कि देखने वालो को भली लगे। (६९) वह बोले कि अपने पालनकर्ता से हमारे लिए पूछो कि हमको अच्छी प्रकार समझा दे कि उसमे क्या गुण हो हमको तो गायें एक ही प्रकार की दिखाई देती हैं और ईश्वर ने चाहा तो हम अवश्य ठीक पता कर लेंगे। (७०) मूसा ने कहा कि ईश्वर कहता है कि वह न तो कमेरी हो जो भूमि जोतती हो और न खेतो को पानी देती हो, अँग पूरी हो, उसमे किसी प्रकार का दाग न हो वह बोले अब तुम ठीक पता लाये अर्थ कि उन्होने गाय का वध किया। उनसे आशा न थी कि करेंगे। (७१) (रुकू ८)।

जब तुमने एक मनुष्य को मार डाला और झगडने लगे तो जो तुम छुपाते थे अल्लाह को उसी का भेद खोलना मान्य था। (७२) हमने कहा कि गाय का कोई टुकडा मृतक से छुआ दो, इसी प्रकार अल्लाह मृतक को जीवित करेगा। वह तुम्हे अपना चमत्कार दिखाता है जिससे तुम समझो। (७३) तब इसके पश्चत् तुम्हारे हृदय कठोर

हो गये मानो वह पाषाण ही हो बल्कि उनमे भी कठोर । पाषाणो मे कुछ ऐसे भी हैं कि उनसे नहरें फूट निकलती है और कई पत्थर ऐसे हैं जो फट जाते हैं और उनसे पानी झरता है और कई पत्थर ऐसे भी हैं जो अल्लाह के भय से गिर पडते हैं। और जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह सब बातो को जानता है। (७४) क्या तुम्हे आशा है कि वह तुम्हारी बात मान लेगे उनकी दशा यह है कि उनमे कुछ मनुष्य ऐसे भी हो चुके हैं जो ईश्वर की वार्ता सुनते थे और तत्पश्चात् उसको समझने के उपरान्त देख भाल कर उसको कुछ का कुछ कर देते थे। (७५) जब धर्मियो से मिलते है तो कह देते हैं कि हम विश्वास कर चुके हैं। जब अकेले मे एक दूसरे के पास होते है तो कहते हैं कि जो कुछ ईश्वर ने तुम्हारे समक्ष खोली है क्या तुम मुसलमानो को उसकी सूचना दिए देते है कि तुम्हारे पालनहार के सामने उसी बात की सनद पकड कर तुम से झगडें। तो क्या तुम नही समझते । (७६) इन मनुष्यो को यह पता नही है कि वे जो कुछ छुपाते हैं या जो सामने करते हैं ईश्वर सब बातो को जानता है। (७७) कई उनमे अनपढ हैं जो बुदबुदाने के अतिरिक्त पुस्तक को नही समझते और वे केवल विचारो के बाण चलाया करते है। (७८) उन मनुष्यो पर दुःख होता है जो अपने हाथ से पुस्तक लिखे फिर कहें यह ईश्वर के यहाँ से अवतरित हुई है जिससे उसकी सहायता से थोडा-सा मूल्य प्राप्त करे। इसका दुःख है कि उन मनुष्यो ने अपने हाथ से लिखा और दुःख है जो वे इस प्रकार की कमाई करते हैं । (७९) वे कहते हैं कि केवल गिनती के कुछ दिनो के अतिरिक्त नरक की अग्नि हमको छूएगी नही। इनसे कहो क्या तुमने अल्लाह से कोई प्रतिज्ञा लेली है और अल्लाह अपनी प्रतिज्ञा के विरुद्ध नही करेगा या बिना समझे ही अल्लाह के नाम पर असत्य भाषण करते हो। (८०) सत्य बात तो यह है कि जिसने बुराइयाँ पल्ले बांधी और अपने पाप के फेर मे आ गए तो ऐसे ही मनुष्य नारकीय हैं और वे सदैव परलोक मे ही रहेंगे । (८१)

जिन मनुष्यो ने विश्वास किया और भले कार्य किये ऐसे ही मनुष्य स्वर्गिक हैं और वे सदैव स्वर्ग मे रहेंगे। (८२) (रुकू ९)।

स्मरण करो जब हमने याकूब के पुत्रो से दृढ प्रतिज्ञा की कि वह ईश्वर के अतिरिक्त किसी की पूजा नही करेंगे और माता-पिता के साथ सम्बन्धियो, अनाथो और दीन-दुखियो के साथ अच्छा बर्ताव करते रहेंगे अथा मनुष्यो से नम्रता से बात करेंगे नमाज पढेंगे और दान देते रहेगें। परन्तु तुम मे से थोडे से मनुष्यो के अतिरिक्त सब बदल गए और तुम भी बदल जाने वाले हो। (८३) जब हमने तुमसे दृढ प्रतिज्ञा की कि परस्पर रक्तपात न करना और न अपने नगरो से अपने मनुष्यो को देश निकाला करना। यही प्रतिज्ञा तुमने और तुम्हारे पूर्वजो ने की। (८४) फिर वही हो कि अपनो को मारते हो और अपने मे से भी कुछ मनुष्यो के विरुद्ध व्यर्थ और जबरदस्ती एक दूसरे के सहायक बन कर उनको उनके नगरो से देश निकाला देते हो और और वही मनुष्य यदि बन्दी होकर तुम्हारे निकट आवें तो तुम मूल्य देकर फिर उन्हे मुक्त करा देते हो। यद्यपि उनका निकाल देना ही तुम्हारे लिए उचित नही था। तो क्या पुस्तक की कुछ बातो को मानते हो और कुछ को नही मानते ? तो जो मनुष्य तुम से ऐसा करे, इसके अतिरिक्त उनका और क्या फल हो सकता है कि साँसारिक जीवन मे निन्दा तथा अपमान मिले और महाप्रलय के दिन कठिन दण्ड भोगने को दिया जाय। और जो कुछ भी तुम करते हो अल्लाह उससे अनभिज्ञ नही। (८५) यही हैं जिन्होने प्रलय के बदले ससार का जीवन मोल लिया। अत न तो महाप्रलय के दिन उनका दण्ड ही कम किया जायेगा और न उनको सहायता पहुचेगी। (८६) (रुकू १०)।

निस्सन्देह मैंने मूसा को पुस्तक दी और फिर एक के पश्चात् एक रसूल (ईश्वरीय दूत) भेजे और मरियम के पुत्र ईसा को हमने खुले करामात दिये और पवित्र आत्मा से उनकी सहायता की। तो जब-जब तुम्हारे पास कोई रसूल तुम्हारी इच्छाओ के विरुद्ध कोई सूचना लेकर आया

तो तुमने शोखी दिखलाई। फिर बाज को तुमने झुठलाया और बाज को मार डालने लगे। (८७) कहते हैं कि हमारे हृदय पर कवच पड़ा है पर वास्तव में इनको मना करने के कारण ईश्वर ने फटकार दिया है। बस कभी ही विश्वास करते हैं। (८८) और जब ईश्वर की ओर से इनके पास पुस्तक कुरान आई जो उनकी पिछली पुस्तक को प्रमाणित करती है और इससे पहले जिसका नाम लेकर काफिरो के विरुद्ध अपनी विजय की प्रार्थना किया करते थे। तो वही वस्तु जिसको जाने पहचाने हुए थे, आ उपस्थित हुई तो उसको न मानने लगे। इन नास्तिको पर ईश्वर की फटकार। (८९) क्या ही बुरी वस्तु है। जिसके बदले इन मनुष्यो ने अपनी जानो को क्रय कर लिया, ईश्वर ने अपने भक्तो मे से जिस पर चाहा अपनी कृपा से कुरान भेजा। अहंकारी ईश्वर की उतारी हुई पुस्तक से मना करने लगे। इसलिए कोप पर कोप पडे और नास्तिको के लिए जिल्लत का दण्ड है। (९०) और जब इनसे कहा जाता है कि कुरान जिसका ईश्वर ने अवतरण किया है उसे मानो, तो कहते है कि हम उसी को मानते हैं जो हम पर पहले अवतरित हुई और उसके अतिरिक्त दूसरी पुस्तक को नही मानते यद्यपि यह कुरान सत्य है और जो पुस्तक उनके पास है उसे प्रमाणित भी करता है। ऐ पैगम्बर इनसे यह तो पूछो कि भला यदि तुम आस्तिक होते तो पहले ईश्वर के पैगम्बरो को क्यो मार डाला करते थे। (९१) और तुम्हारे पास मूसा खुले चिन्ह लेकर आया इस पर भी तुमने उनके पीछे बछडे को ले बैठे और उसकी उपासना करके तुम अपनी हानि कर रहे थे। (९२) जब मैंने तुमसे दृढ प्रतिज्ञा की और तूर पर्वत उठाकर तुम्हारे ऊपर ला लटकाया और आज्ञा दी कि यह पुस्तक तौरात जो हमने तुमको दी है इसे दृढता से पकडे रहो, सुनो और पल्ले बांधो। उत्तर मे इन मनुष्यो ने कहा कि हमने सुना तो सही परन्तु मानते नहीं और उनके मना करने के कारण बछडा उनके हृदय मे समाया हुआ था। इनसे कहो कि यदि तुम आस्तिक

हो तो तुम्हारा धर्म तुमको बुरी बात सिखला रहा है । (९३) कहो कि यदि ईश्वर के यहाँ स्वर्ग विशेषकर तुम्हारे ही लिए है दूसरे मनुष्यो के लिए नही यदि यह सत्य है तो मृत्यु को मागो और देखो । (९४) और वे अपने कुकर्मो के कारण मृत्यु की प्रार्थना कभी नही कर सकते और ईश्वर अन्याइयो को खूब जानता है। (९५) तू उन्हे अन्य सब मनुष्यो से ससारी जीवन के लिए अधिक लालची पायेगा और मुशरकीन* मे से भी प्रत्येक हजार वर्ष का जीवन चाहता है और इतना जीना उसे दण्ड से नही बचायेगा। जो कुछ वे करते हैं ईश्वर उसे देखता है। (९६) (रुकू ११)।

जो मनुष्य जिब्रील देवदूत का शत्रु हो उनसे कहो कि यह कुरान उसी ने ईश्वर की आज्ञा मे तुम्हारे हृदय मे डाला है जो उन पुस्तको को भी प्रमाणित करता है जो इससे पहले से उपस्थित हैं और धर्मियो के लिए आदेश और शुभ-सवाद है। (९७) जो मनुष्य ईश्वर का, उसके दूतो का, उसके रसूलो का, जिब्रील का और मीकाईल का शत्रु हो तो ईश्वर भी ऐसे काफिरो का शत्रु है । (९८) हमने तुम्हारे पास सुलझी आयतें भेजी हैं और आज्ञा न मानने वालो के अतिरिक्त कोई इनसे मना नही करेगा। (९९) जब कोई प्रतिज्ञा कर लेते हैं तो इनमे का कोई न कोई गुट उस निश्चय को फेंक देता है । प्राय इनमे से धर्म पर नही रहते। (१००) और जब उनके पास ईश्वर की ओर से रसूल आये जो उस पुस्तक को जो उनके पास है प्रमाणित भी करता है तो पुस्तको वालो मे से एक गुट ने ईश्वर की पुस्तक को पीठ पीछे फेका मानो वे कुछ जानते न थे। (१०१) और उन ढको-सलो के पीछे लग गये जिनको सुलेमान के राज्यकाल मे शैतान पढा करते थे यद्यपि सुलेमान तो काफिर नही था अपितु वे काफिर थे जो

*ईश्वर मे, उसकी जाति में, उसके गुणो मे, उसकी प्रार्थना में दूसरे को सम्मिलित करने वाले मुशरीक कहलाते हैं।

मनुष्यो को जादू सिखाया करते थे जो बाबिल नगर मे हारूद और मारूत देवदूतो पर अवतरित हुआ था । वह किसी को न सिखाते थे जब तक उसमे न कह देते थे कि हम तो जांचते हैं कि तू काफिर न हो। इस पर भी उनसे ऐसी बातें सीखते जिनके कारण से स्त्री पुरुष मे जुदाई पड़ जाये । यद्यपि ईश्वर की आज्ञा के बिना वे अपनी इन बातो से किसी को हानि नही पहुचा सकते थे । अर्थ कि यह मनुष्य ऐसी बातें सीखते जिनसे इन्हे हानि है लाभ नही । जबकि जान चुके थे कि जो मनुष्य इन बातो को अपनाता था वह अन्त मे अभागा हुआ है और निस्मन्देह बुरा है जिनके बदले इन्होने जानो को बेचा । दुख है इनको यदि समझ होती । (१०२) और यदि यह विश्वास करते और सयमी बनते तो ईश्वर से अच्छा फल मिलता । (१०३) (रुकू १२) ।

ऐ मुसलमानो ! पैगम्बर के साथ राइना* कहकर सम्बोधन न किया करो अपितु उन्जुर्ना कहा करो और सुनते रहा करो, मुन्किरो के लिए दु खदाई दण्ड है । (१०४) पुस्तक वालो और मुशरकीन मे से जो मनुष्य न मानने वाले हैं वे इस बात से प्रसन्न नही हैं कि तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से तुम पर भलाई की जाय । अल्लाह जिसको चाहता है अपनी दया के लिए निश्चित कर लेता है और अल्लाह बड़ा

*'राइना' के अर्थ है—हमारी ओर ध्यान दें । रसूलुल्लाह, सल्लल्लाहु अलैहिवअालिहो व सल्लम की राजयसभा में यहूदी आकर बैठने और हुज़ूर का कोई शब्द समझ में नहीं आता तो राइना के स्थान पर 'राइना' का शब्द शरारत से प्रयुक्त करते । 'राईना' के अर्थ हैं 'हमारा ग्वाला' । इसलिए मुसलमान भी यहूदियों की इस शरारत मे भटक न जाये उन्हें हिदायत की गई कि वे 'उन्जुर्ना' कहा करें उसके भी अर्थ हैं । 'दुबारा कहें' इस प्रकार राइना और राईना को भूल से बच जायें ।

दयावान है। (१०५) ऐ पैगम्बर हम कोई आयत बनादें या बुद्धि से उसको अवतरित कर दें तो उससे अच्छी या वैसी ही पहुचा देते हैं क्या तुम्हें प्रतीत नही कि अल्लाह हर वस्तु से शक्तिसाली हैं। (१०६) क्या तुम्हे पता नही कि नभ और पृथ्वी का राज्य उसी अल्लाह का है और अल्लाह के अतिरिक्त तुम्हारा कोई सहायक मित्र नही है। (१०७) क्या तुम यह चाहते हो कि जिस प्रकार प्रथम मूसा से प्रश्न किये गये थे उसी प्रकार तुम भी अपने रसूल से प्रश्न करो। जो विश्वास के बदले अविश्वास करे तो वह सीधे मार्ग से भटक गया है। (१०८) प्राय पुस्तक के मानने वाले सत्य प्रकट होने पर भी अपने हृदय की ईर्ष्या के कारण चाहते है कि तुम्हारे विश्वास कर लेने के पश्चात् पुन॰ तुम्हे काफिर बना दे तो क्षमा करो।

यहाँ तक कि ईश्वर अपनी आज्ञा दे दे। निस्सन्देह अल्लाह प्रत्येक वस्तु से शक्तिशाली है। (१०९) नमाज पढते और दान देते रहो और जो कुछ भलाई अपने लिए पहले से भेज दोगे उसको ईश्वर के पास पाअगे निस्सन्देह अल्लाह जो कुछ भी तुम करते हो देख रहा है। (११०) वे कहते हैं कि यहूदी और नसरानी के अतिरिक्त स्वर्ग मे कोई नही जाने पायेगा यह उनकी स्वप्निक बातें हैं। कहो यदि सच्चे हो तो अपना प्रमाण प्रस्तुत करो। (१११) अपितु सत्य बात तो यह है कि जिसने ईश्वर के समक्ष शीश झुकाया और अच्छे कार्य किये तो उसके लिए उसे फल उसके पालनकर्ता से मिलेगा और ऐसे मनुष्यो को ना कोई भय होगा ना वे उदास होंगे। (११२) (रुकू १३)।

यहूदी कहते है ईसाइयो का धर्म कुछ नही और ईसाई कहते है यहूदियो का धर्म कुछ नही यद्यपि वे तौरात और इजील के पढने व ले हैं इसी प्रकार इन्ही जैसी बाते वह मुशरकीन अरब भी कहा करते हैं जो नही जानते। तो जिस बात पर ये मनुष्य झगड़ रहे है महाप्रलय के दिन अल्लाह इनमे उसका निर्णय कर देगा। (११३) उससे अधिक अत्याचारी और कौन है ? जो अल्लाह की मसजिदो मे ईश्वर का

नाम लिया जाने को मना करे और मसजिदो के उजाडने का प्रयत्न करे। ये मनुष्य स्वय इस योग्य नही कि मसजिदो मे आने पायें परन्तु डरते हुए आते हैं। इनके लिए ससार मे अपमान तथा महाप्रलय मे वडा दण्ड है। (११४) अल्लाह ही का पूर्व और पश्चिम है तो जहाँ कही मुह करलो उधर ही अल्लाह का सामना है। निस्सेन्देह अल्लाह गुजाइश वाला है। (११५) कहते है कि ईश्वर सतान रखता है यद्यपि वह पावन है अपितु जो कुछ नभ और पृथ्वी मे है उसी का है और मव उसके आधीन हैं। (११६) वह नभ और पृथ्वी का वनाने वाला है और जव किसी कार्य को करना ठान लेता है तो वस उसके लिए कह देता है कि 'हो' और वह हो जाता है। (११७) जो नही जानते वह कहते हैं कि ईश्वर हमसे वात क्यो नही करता या हमारे पास कोई पहिचान क्यो नही आती इसी प्रकार जो मनुष्य इससे पहले हो गये हैं इन्ही जैसी वातें वे भी कहा करते थे। इन सवके हृदय एक ही प्रकार के हैं। जो मनुष्य विश्वास रखते हैं उनको तो हम चिन्ह स्पष्ट तथा दिखा चुके। (११८) ऐ पैगम्वर हमने तुमको सत्य वात देकर मगल समाचार देने वाला और पाप के भय से डराने वाला वनाकर भेजा है और तुम से नरकवासियो के विषय मे कुछ पूछ-ताछ नही होगी। (११९) ऐ पैगम्वर न तो यहूदी ही तुमसे कभी सहमत होंगे न ईसाई ही जव तक कि तुम उन्ही के धर्म का समर्थन न करो। ऐ पैगम्वर इन मनुष्यो से कहो कि ईश्वर का निषेध ही निषेध है और ऐ पैगम्वर यदि तुम्हारे पास विद्या ज्ञान आने के पश्चात् भी उनकी इच्छाओ पर चलो तो तुमको ईश्वर के कोप से वचाने वाला न कोई मित्र होगा न सहायक। (१२०) जिन मनुष्यो को हमने कुरान दिया है वह उसको पढते रहते हैं। जिन्हे उसे पढने का अधिकार है वही उस पर विश्वास करते हैं और जो इससे मना करते हैं वही भटक जाते है। (१२१) (रुकू १४)।

ऐ याकूव के पुत्रो! हमारी उन कृपाओ का स्मरण करो जो हमने तुम पर की है और यह कि हमने तुमको सारे ससार के मनुष्यो

पर प्रधानता दी है। (१२२) उस दिन से डरो कि जब कोई मनुष्य किसी मनुष्य के कुछ काम नही आयेगा और न उसकी ओर से कोई बदला स्वीकार किया जायेगा और न सिफारिश लाभ पहुचायेगी और न मनुष्यो को सहायता पहुचायेगी। (१२३) याकूब के पुत्रो को वह समय याद दिलाओ जब इब्राहीम की उसके पालनकर्ता ने कुछ बातो का परीक्षण किया। उन्होने उनको पूरा कर दिखाया तब ईश्वर ने सन्तुष्ट होकर कहा था कि हमने तुमको मनुष्यो का इमाम बनाया है। इब्राहीम ने प्रार्थना की थी मेरी सन्तान मे से भी किसी को इमाम बनाओ तो ईश्वर ने कहा 'हो' परन्तु हमारी स्वीकृति मे वे सम्मिलित नही जो सत्यता पर न होगे। (१२४) ऐ पैगम्बर याकूब के पुत्रो को वह समय भी स्मरण कराओ जब हमने काबे के घर को मनुष्यो को एकत्रित होने और शान्ति के स्थान पर बनाया। और कहो कि इब्राहीम के स्थान को ही नमाज का स्थान बनाओ और हमने इब्राहीम और इस्माइल से कहा कि हमारे घर को परिक्रमा करने वालो और मुजा-विरो, रुकू और सिजदा करने वालो के लिए स्वच्छ रखो। (१२५) जब इब्राहीम ने प्रार्थना की कि ऐ मेरे पालनकर्ता! इसको शान्ति का नगर बना और इसके रहने वालो मे से जो अल्लाह और महाप्रलय पर विश्वास करते हैं उनको फल खाने को दे, फलाहार करवा। ये भी कहा कि जो न मानने वाला होगा उसको भी कुछ दिनों के लिए लाभ उठाने देंगे। और फिर उसे विवश करके नरक के दण्ड मे ले जाकर प्रवेश करावेंगे और वह बुरा स्थान है। (१२६) ऐ पैगम्बर याकूब के पुत्रो को वह समय भी स्मरण कराओ कि जब इब्राहीम और इस्माइल काबे के घर की नीवें उठा रहे थे और प्रर्थना करते जाते थे कि ऐ हमारे पालने वाले हमारी प्रार्थना स्वीकार कर। निस्सन्देह तू ही सुनने और जानने वाला है। (१२७) और ऐ हमारे पालनकर्ता! हमे अपना आज्ञाकारी बना और हमारी जातियो से एक गुट उत्पन्न कर जो तेरा आज्ञाकारी हो और हमको हमारी पूजा की विधि बता और हमारे अपराध क्षमा कर। निस्सन्देह तू ही बडा क्षमा करने वाला

कृपालु है। (१२८) ऐ हमारे पालनकर्ता ! इनमे इन्ही मे से एक पैगम्बर भेज, जो इनको तेरी आयते पढकर सुनाएँ और इनको पुस्तक की शिक्षा दे और इनको सभालें। निस्सन्देह तू ही शक्तिशाली व ज्ञानवान है। (१२९) (रुकू १५)।

और कौन है जो इब्राहीम के नियम से मुह फेरे। परन्तु वही जिसकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई हो वह मुह फेर लेगा निस्सन्देह हमने इब्राहीम को ससार मे चुन लिया था और महाप्रलय के दिन भी वह भलो मे होगे। (१३०) जब उनसे पालनकर्ता ने कहा कि सेवा करो तो उत्तर मे प्रार्थना की कि मैं सारे ससार के पालने वाले का सेवक (आज्ञाकारी हुआ)। (१३१) और इसके विषय मे इब्राहीम अपने पुत्रो को वसीयत कर गये और याकूब ने कहा ऐ पुत्रो अल्लाह ने इस दीन को तुम्हारे लिए पसद फरमाया है। तुम अन्त तक मुसलमान ही मरना। (१३२) ऐ यहूद ! क्या तुम मौजूद थे जब याकूब के सामने मौत आ खडी हुई। उस समय उन्होने अपने बेटो से पूछा कि मेरे पीछे किस की पूजा करोगे ? उन्होने उत्तर दिया कि आपके पूजित और आपके बडो अर्थात् इब्राहीम, इस्माईल और इसहाक के पूजित एक खुदा की पूजा करेंगे और हम उसी के आज्ञाकारी है। (१३३) ऐ यहूद यह लोग हो चुके, उनका किया उनको और तुम्हारा किया तुम को और तुम से उनके काम की पूँछ-ताँछ नही होगी। (१३४) यहूद और ईसाई मुसलमानो से कहते है कि यहूदी या ईसाई बन जाओ। तो सच्चे रास्ते पर आओ ऐ पैगम्बर तुम इन लोगो से कहो नही बल्कि हम इब्राहीम के तरीके पर है। जो एक खुदा के हो रहे थे और मुशरकीन मे से न थे। (१३५) मुसलमानो ! तुम यहूद ईसाई को उत्तर दो कि हम तो अल्लाह पर ईमान लाये हैं और कुरान जो हम पर उतरा और जो कि इब्राहीम और इस्माईल और इसहाक और याकूब और याकूब की संतान पर उतरे और मूसा और ईसा को जो पुस्तक मिली, उस पर और जो दूसरे पैगम्बरो को उनके

पालने वाले से मिली, उसी पर हम इन पैगम्बरो मे से किसी एक मे भी किसी तरह की भिन्नता नही समझते और हम उसी के आज्ञाकारी हैं। (१३६) तो अगर तुम्हारी तरह यह लोग भी ईमान ले आवे, जिस तरह तुम ईमान लाये तो बस सच्चे मार्ग पर आ गये और मुँह फेर लें तो समझो बस वह हठ पर है तो इनकी बजाय खुदा तुम्हारे लिए काफ़ी होगा वह सुनता और जानता है। (१३७) मुसलमानो! इन लोगो से कहो कि हम तो अल्लाह के रग मे रग गये। और अल्लाह के रग से और किस का रग अच्छा होगा और हम तो उसी की पूजा करते हैं। (१३८) ऐ पैगम्बर इन लोगो से कहो कि क्या तुम अल्लाह के बारे मे हम से झगडते हो? हालाँकि वही हमारा पालनकर्त्ता है और तुम्हारा भी परवर्दिगार है। और हमारे काम हमारे लिए और तुम्हारे काम तुम्हारे लिए और हम सिर्फ उसी को मानते है। (१३९) या तुम कहते हो इब्राहीम इस्माईल और इसहाक और याकूब और याकूब की सतान (यह लोग) यहूदी थे या ईसाई थे ऐ पैगम्बर! इनसे कहो कि तुम बड़े जानने वाले हो या खुदा और उससे बढकर जालिम कौन होगा, जिसके पास खुदा की तरफ मे गवाही हो और वह उसको छिपाये और जो कुछ भी तुम कर रहे हो अल्लाह उससे बेखबर नही। (१४०) यह लोग थे कि हो गुजरे। उनका किया उनको और तुम्हारा किया तुम को और जो कुछ वह कर गुजरे तुम से उसकी पूँछ-ताँछ नही होगी। (१४१) (रुकू १६)।



दूसरा पारा-सूरे बकर

मूर्ख मनुष्य कहेंगे कि मुसलमान जिस क़िब्ले पर पहले थे अर्थात् बैतुल मुकद्दस उससे इनके कावा के घर की ओर को मुड़ जाने का क्या कारण हुआ? ऐ पैगम्बर तुम यह उत्तर दो कि पूर्व और पश्चिम

अल्लाह ही की है। जिसको चाहता है सीधे मार्ग चलाता है (१४२) और इसी प्रकार हमने तुम को बीच की उम्मत (गिरोह जो किसी पैगम्बर के आधीन हो) बनाया है। जिससे मनुष्यो के मुकाबले मे तुम गवाह बनो और तुम्हारे मुकाबले मे पैगम्बर गवाह बने; और ऐ पैगम्बर। जिस किब्ले पर तुम थे हमने उसको इसी अभिप्राय से ठहराया था कि हमको प्रतीत हो जावे कि कौन-कौन पैगम्बर के आधीन रहेगा और कौन उल्टा फिरेगा और यह बात यद्यपि भारी है, परन्तु उन पर नहीं जिनको अल्लाह ने ज्ञान दिया और ईश्वर ऐसा नही कि तुम्हारा विश्वास लाना मेटेगा। ईश्वर तो मनुष्यो पर बडी ही कृपा रखने वाला दयालु है। (१४३) तुम्हारे मुँह का नभ मे फिरना हम देख रहे हैं। तो जो किब्ले तुम चाहते हो, हम तुम को उसी की ओर फेर देंगे। पूजनीय मसजिद (काबे) की ओर अपना मुँह फेर लिया करो और जहाँ कही हुआ करो, उसी की ओर अपना मुँह कर लिया करो और जिन मनुष्यो को पुस्तक दी गई है, उनको पता है कि यह किब्ला बदलना ठीक उनके पालनहार की ओर से है और जो कर रहे हैं, खुदा उससे बेसुध नही है (१४४) ऐ पेगम्बर! जिन मनुष्यो को पुस्तक दी गई है, यदि तुम सब चिन्ह उनके पास ले आये, तो भी वह तुम्हारे किब्ले की सहायता न करेगे और न तुम्ही उनके किब्ले की सहायता करोगे और उनमे का कोई भी दूसरे के किब्ले को नही मानता और तुम्हें तो ज्ञान हो चुका हैं, यदि उसके पश्चात् भी तुम इनकी इच्छाओ पर चले, तो ऐसी दशा मे निस्सन्देह तुम भी अन्यायियो मे गिने जाओगे। (१४५) जिन मनुष्यो को हमने पुस्तक दी है, वह जिस प्रकार अपने पुत्रो को पहिचानते है इन मोहम्मद को भी पहिचानते है। और उनमे से कुछ मनुष्य जानबूझ कर सत्य को छिपाते है। (१४६) सच यह किब्ला तुम्हारे पालन-कर्ता की ओर से है। तो कही सन्देह करने वालो मे से न हो जाना। (१४७) (रुकू १७)।

प्रत्येक के लिए एक दिशा है जिधर को नमाज मे वह अपना मुँह करता है, तो दिशा-भेद की चिन्ता न करते हुए भलाइयो की ओर लपको। तुम कही भी हो, अल्लाह तुम सबको खीच बुलायेगा। निस्सन्देह अल्लाह प्रत्येक वस्तु, पर शक्तिशाली है। (१४८) तुम कही से भी निकलो, अपना मुँह माननीय मसजिद (काबा) की ओर कर लिया करो। यह तुम्हारे पालनकर्त्ता द्वारा निश्चित है। अल्लाह तुम्हारे कामो से बेसुध नही है। (१४९) ऐ पैगम्बर तुम कही से भी निकलो, अपना मुँह माननीय मसजिद की ओर कर लिया करो और जहाँ कही हुआ करो उसी की ओर अपना मुँह करो, जिससे दूसरो को तुम से झगडने का अवसर न रहे। परन्तु उनमे से जो अन्यायी है, तुम उनसे मत डरो और हमारा डर रक्खो। अर्थ यह है कि मैं अपनी कृपा तुम पर पूरी करूँगा। सम्भवत तुम सीधे मार्ग पर आ जाओ। (१५०) जैसा हमने तुम्हारे बीच तुम्ही मे का एक रसूल भेजा। वह हमारी आयतें तुम को पढ कर सुनाता है, तुम्हारा सुधार करता है, तुम को पुस्तक और समझ की बाते सिखाता और तुम को ऐसी-ऐसी बाते बताता है, जो पहले से तुम जानते न थे। (१५१) अत. तुम मेरी याद मे लगे रहो और मेरा कृपा मानते रहो नाशुक्री न करो। (१५२) (रुकू १८)

ऐ ईमानदारो! सतोप और नमाज से सहायता लो। निस्सन्देह अल्लाह सतोपियो का साथी है। (१५३) और जो मनुष्य अल्लाह के मार्ग मे मारे जाये, उनको मरा हुआ न कहना। वह मरे नही जीवित हैं, परन्तु तुम नही समझते। (१५४) और निस्सन्देह हम थोडे भय से, भूख से, माल, जान, और उपज की हानि से तुम्हारी जाँच करेंगे और ऐ पैगम्बर सतोपियो को शुभसवाद सुना दो। (१५५) यह मनुष्य जब इन पर कष्ट आता हैं, तो बोल उठते हैं कि हम तो अल्लाह के ही है और हम उसी की ओर लौट कर जाने वाले हैं। (१५६) यही लोग हैं, जिन पर पालनकर्ता की कृपा और दृष्टी है और यही सच्चे

मार्ग पर हैं। (१५७) पर्वत सफा, और (पर्वत) मर्वह* ईश्वर की निशानियो मे से हैं। तो जो व्यक्ति काबे का हज्ज या उमरा (तीर्थ जो मक्के से तीन कोस पर है) करे उस पर इन दोनो के बीच फेरे करने मे कुछ अपराध नही और जो प्रसन्नता से शुभ काम करे, तो ईश्वर किए को मानने वाला और जानकार है। (१५८) वह जो हमने खुली हुई आज्ञाओं और उपदेशों की बातें अवतरित की और पुस्तक तौरात मे हमने साफ-साफ समझा दिया इसके पश्चात भी जो उनको छिपाए तो यही लोग हैं जिनको ईश्वर अपमानित करता है और अपमान करने वाले भी उनको अपमानित करते हैं। (१५९) परन्तु जिन्होने क्षमा प्रर्थना की और अपनी दशा को सभाल लिया और जो छिपाया था साफ-साफ वर्णन कर दिया तो यही मनुष्य है, जिनकी प्रार्थना मैं मानता हू और मैं क्षमा करनेवाला कृपालु हूं। (१६०) जो मनुष्य अस्वीकार करते रहे और अस्वीकार की ही दशा मे मर गए यही हैं जिन पर ईश्वर की और फरिश्तों की और व्यक्तियो की सब की धिक्कार है। (१६१) वह सदैव इसी मे रहेंगे। इनका न तो दण्ड ही कम किया जावेगा और न अवकाश ही मिलेगा। (१६२) तुम्हारा पूजित एक ईश्वर है, इसके अतिरिक्त कोई पूजित नही। वह बड़ा दया करनेवाला कृपालु है। (१६३) (रुकू १९)

निस्सन्देह नभ और पृथ्वी के उत्पन्न करने मे और रात और दिन के आने जाने मे और जहाजो मे जो मनुष्यो के लाभ की वस्तुएँ समुद्र

*सफा और मर्वह दो पर्वतो के नाम हैं। एक समय ईश्वर की आज्ञा से हजरत इब्राहीम एक वार अपनी बीबी हजरत हाजरा और दुधमुंहें बच्चे इस्माइल को छोडकर चले गए। बच्चे को प्यासा देख हजरत हाजरा इन्हीं पर्वतों पर पानी की खोज मे गईं। ईश्वर की कृपा से एक चश्मा निकल आया, जो 'जमजम' के नाम से प्रसिद्ध है। इन्हीं पर्वतो पर मुसलमान आज भी फेरे देते हैं। उन्हें यह विश्वास है कि संतोषी के दु.ख को ईश्वर सदैव सुनता है।

मे लेकर चलते हैं और वर्षा मे जिसको अल्लाह नभ से बरसाता है, फिर उसकी सहायता से पृथ्वी को उसके उजडे पीछे फिर लहलहाता है और हर प्रकार के जन्तुओ मे जो ईश्वर ने पृथ्वी के धरातल पर फैला रखे हैं और हवाओ के फेरने मे, और बादलो मे जो आकाश और धरती के बीच घिरे रहते है। उन मनुष्यो के लिए जो समझ रखते हैं। (ईश्वर की प्रकृति की) निशानियाँ है। (१६४) मनुष्यो मे कुछ ऐसे भी हैं, जो अल्लाह के सिवा औरो को भी पूजित ठहराते है। जैसा प्रेम ईश्वर से रखना चाहिए, वैसा प्रेम उनसे रखते हैं। जो धर्मी हैं, उनको सबसे बढकर ईश्वर का प्रेम होता है। यह बात अन्यायियो को दण्ड के देखने पर सूझ पडेगी। निस्सन्देह अब वह सूझ पडती कि हर प्रकार की शक्ति अल्लाह को ही है और यह कि अल्लाह का दण्ड भी कठोर है। (१६५) उस समय गुरू, चेले चाटियो से हाथ छुड़ा लेंगे और दण्ड देख लेंगे और उनके सम्बन्ध टूट जायेगे। (१६६) चेले कह उठेंगे कि शोक! हमको फिर लौट कर ससार मे जाना मिले, तो जैसे यह गुरू हमसे हाथ खेंच गए, उसी प्रकार हम भी उनसे सम्बन्ध तोड जाएँ यो अल्लाह उनके काम उनके सामने लावेगा कि उनको हसरत दिखाई देगी और वे नरक से निकल न सकेंगे। (१६७) (रुकू २०)

मनुष्यो पृथ्वी मे जो वस्तुएँ भोग्य और शुद्ध है, उनमे से खाओ और राक्षस का पक्ष न करो, वह तो तुम्हारा स्पष्ट शत्रु है। (१६८) वह तो तुम्हें कुकर्म और निर्लज्जता बतायेगा। और यह चाहेगा कि वे ना समझे-बूझे तुम ईश्वर के बारे मे झूठे जजाल गढ़ो। (१६९) जब इनसे कहा जाता है कि जो ईश्वर ने अवतरित किया है, उस पर चलो तो उत्तर देते हैं—नही जी, हम तो इसी पर चलेंगे जिस पर हमने अपने बडो को पाया। भला यदि उनके बडे कुछ भी नही समझते थे और न सच्चे मार्ग पर चलते थे, तो भी ये उन्ही का पक्ष किए चले जायेगे। (१७०) और जो मनुष्य काफिर हैं उनका उदाहरण

उस व्यक्ति जैसा है, जो एक मूर्ति के पीछे पडा चिल्ला रहा है और वह सुनती ही नही। तो उसको बुलाना पुकारना निरर्थक है। बहरे गू गे अन्धे के समान उनको भी समझ नही। (१७१) ऐ ईमानदारो! मैंने जो तुमको आजीविका और पवित्र वस्तुएँ दे रखी है खाओ और यदि तुम अल्लाह ही की पूजा का दम भरते हो, तो उसके कृतज्ञ बनो। (१७२) उसने तो बस मरा हुआ जन्तु खून सूअर का मांस और वह जन्तु जिसको ईश्वर के अतिरिक्त किसी और के लिए भेट किया जाय, तुम पर हराम किया है। जो भूख से बेचैन हो परन्तु अवज्ञा करनेवाला और सीमा से बढ जानेवाला न हो, तो उस पर पाप नही। निस्सदेन्ह अल्लाह क्षमा तथा दयालु है। (१७३) जो मनुष्य उन आज्ञाओ को जो ईश्वर ने अपनी पुस्तक (तौरात) मे दी, छुपाते है और उनके बदले थोडा-सा लाभ करते है, यह मनुष्य और कुछ नही परन्तु अपने पेटो मे अगारे भरते है और महाप्रलय के दिन ईश्वर इनसे बात भी तो नही करेगा और न इनको पवित्र करेगा और उनके लिए कठोर दण्ड है। (१७४) यही मनुष्य है जिन्होने सच्ची राह के बदले भटकना मोल लिया है और क्षमा के बदले दण्ड। बस, नरक की अग्नि मे उनको ठहरना है। (१७५) यह इसलिए कि पुस्तक तौरात को वास्तव मे ईश्वर ही ने अवतरित किया और जिन मनुष्यो ने उस मे भेद डाला, वह हठ मे भटक गये हैं। (१७६) (रुकू २१)।

भलाई यही नही कि तुम अपना मुंह पूर्व वा पश्चिम की ओर कर लो, भलाई तो यह है कि अल्लाह और महाप्रलय और फरिश्तो और नभ की पुस्तको और पैगम्बरो पर विश्वास कर और धन अल्लाह को मार्ग मे सबन्धियो, अनाथो, दुखित मनुष्यो मुसाफिरो और मांगनेवालो को दे और पराधीनता इत्यादि की कैद से मनुष्यो की गर्दनो के छुडाने मे दे, नमाज पढता और जकात देता रहे और जब वचन देदे तो अपनी प्रतिज्ञा पूरी करे और तगी मे कष्ट मे और हलचल के समय दृढ रहे यही मनुष्य सच्चे और सयमी हैं। (१७७) ऐ ईमानवालो! जो मनुष्य मारे जावे, उनमे तुमको जान के बदले जान की आज्ञा दी जाती

है। स्वाधीन के वदले स्वाधीन, पराधीन के बदले पराधीन, स्त्री के वदले स्त्री। फिर जिस हत्यारे को वध किए हुए की हत्या के वदले मे कोई अश लेकर क्षमा कर दिया जाय, नियमानुसार हत्यारे को बध किये प्राणी के वारिसो को खून का बदला अदा कर देना चाहिए। यह तुम्हारे पालनेवाले की ओर से तुम्हारे पक्ष मे आसानी और कृपा है। फिर इसके पश्चात जो जियादती करे, तो उसके लिए कठिन दण्ड है। (१७८) और बुद्धिमानो बदला चाहने मे तुम्हारा जीवन है जिससे तुम खून बहाने से बचे रहो। (१७९) पुस्तकवालो तुमको आज्ञा दी जाती है कि जब तुममे से किसी के सामने मृत्यु आ पहुंचे और वह कुछ धन छोडनेवाला हो, तो माता-पिता और सम्बन्धियो के लिए नियमानुकूल वसीयत करे, जो ईश्वर से डरते है, उन पर उनके अपनो का यह एक अधिकार है। (१८०) फिर जो वसीयत के सुने पीछे उसे वदल दे तो उसका पाप उन्ही मनुष्यो पर है, जो वसीयत को बदले। निस्सन्देह अल्लाह सुनता और जानता है। (१८१) जिसको वसीयत करनेवाले की ओर से किसी विशेष व्यक्ति का पक्षपात या किसी को अधिकार का सन्देह हुआ हो और वह वारिसो मे मेल करा देते तो ऐसी दशा मे वसीयत के बदलने का उस पर कुछ पाप नही। निस्सन्देह अल्लाह क्षमा करनेवाला कृपालु है। (१८२) (रुकू २२)।

ईमानवालो ! जिस प्रकार तुमसे पहिले पुस्तकवालो पर रोजह रखना कर्त्तव्य था, तुम्हारा भी कर्तव्य है जिससे तुम पापो से बचो। (१८३) वह भी गिनती के कुछ दिन है। इस पर भी जो व्यक्ति तुममे से बीमार है या सफर मे हो, तो दूसरे दिनो से गिनती पूरा कर दे

*जीव हत्या के दो दण्ड हैं—(क) या तो हत्यारे को भी मार डाला जाय या (ख) उससे कुछ रुपया ले लिया जाए और उसकी जान न ली जाय, परन्तु रुपया उसी वक्त लिया जा सकता है, जब मरे प्राणी के सम्बन्धी उसको खुशी-खुशी स्वीकार करें।

और जिनको भोजन देने की शक्ति है, उन पर एक रोजे का बदला एक गरीब को भोजन देना है और जो व्यक्ति अपनी प्रसन्नता से शुभ काम करना चाहे, तो यह उसके पक्ष मे अधिक भलाई है और समझो तो रोजा रखना तुम्हारे पक्ष मे भलाई है। (१८४) रमजान (रोजो) का महीना जिसमे ईश्वर की ओर से कुरान अवतरित हुआ है। और कुरान जो मनुष्यो को मार्ग दिखानेवाला है और ज्ञान और नियम की स्पष्ट आज्ञा उसमे है, तो तुममे से जो व्यक्ति इस महीने मे उपस्थित हो, तो चाहिए कि इस महीने के रोजे रखे और जो बीमार या यात्रा मे हो* तो दूसरे दिनो से गिनती पूरी कर ले अल्लाह तुम्हारे साथ आसानी करना चाहता है कडाई नही करना चाहता। इसलिए कि तुम रोजो की गिनती पूरी कर लो अल्लाह ने जो तुमको सच्ची राह दिखा दी है उस पर चलो और उसके कृतज्ञ बनो। (१८५) ऐ पैगम्बर! जब हमारे भक्त तुमसे हमारे बारे मे पूँछे तो उन को समझा दो कि हम उनके पास है। जब कोई हमे पुकारता है, तो हम प्रत्येक पुकारने वाले की टेर को स्वीकार कर लेते हैं, अत. उनको भी चाहिये कि हमारी आज्ञा माने और हम पर विश्वास करें, जिससे वह सीधे मार्ग पर चले। (१८६) मुसलमानो! रोजो की रातो मे अपनी पत्नियो के पास जाना तुम्हारे लिये उचित कर दिया गया है, वह तुम्हारे वस्त्र हैं और तुम उनके वस्त्र हो। अल्लाह ने देखा तुम चोरी चोरी उनके पास जाने से अपनी (धर्म) हानि करते थे, तो उसने तुम्हारा अपराध क्षमा कर दिया और तुम अपराधी नही रहे। बस अब रोजो की रात्री के समय उनके साथ सहवास करो और जो परिणाम ईश्वर ने तुम्हारे लिए लिख रक्खा है (अर्थात सतान) उसकी इच्छा करो और खाओ पियो। जब तक

*रोजा (व्रत) रखना आवश्यक है। जो अपने घर पर न हो या बीमार हो, उसको चाहिए कि रमजान के बाद जितने रोजे उसने छोड़ दिये हैं उतने ही रोजे रख।

कि रात्री की काली धारी से प्रात की श्वेत धारी तुमको स्पष्ट दिखाई देने लगे, फिर रात्री तक रोजह पूरा करो और तुम मसजिद में एकान्त मे बैठे हो, तो उनसे प्रसग मत करना—यह अल्लाह की बांधी हुई सीमाऐं हैं तो उनके निकट भी न फटकना। इसी प्रकार अल्लाह अपनी आज्ञाओ को मनुष्यो के लिए खोल-खोलकर बताता है, जिससे वह बचे। (१८७) और आपस मे निरर्थक एक दूमरे का धन प्राप्त मत करो और न धन को हाकिमो के पास रिश्वत के लिये ढूढो, जिससे मनुष्यो के धन मे से कुछ जान-बूझ कर निरर्थक हजम न कर जाओ। (१८८) (रुकू २३)।

ऐ पैगम्बर! मनुष्य तुमसे चन्द्रमा के बारे मे यदि पूछते है, तो कहो कि चन्द्रमा से मनुष्यो के हज्ज के समय का पता लगता है और यह कुछ अच्छा नही है कि घरो मे उनके पिछवाडे की ओर से आओ, अपितु भलाई तो उसकी है जो सयम करे और घरो मे उनके द्वारो से आओ* और अल्लाह से डरते रहो जिससे तुम अपने ऐच्छितलक्ष को पहुचो। (१८९) मुसलमानो! जो तुम से लडें तुम अल्लाह के नाम से उनसे लडो और अधिकता न करना। अल्लाह अधिकता करनेवालो को नही चाहता। (१९०) जो मनुष्य तुमसे लडते है उनको जहाँ पाओ हत्या करो और जहाँ से उन्होने तुमको निकाला है अर्थात मक्के मे तुम भी उनको वहाँ से निकालो और झगडे का बना रहना खून बहाने से भी बढ कर है और जब तक काफिर माननीय मसजिद के पास तुमसे न लडें, तुम भी उस स्थान पर उन से न लडो, परन्तु यदि वह तुमसे लडे तो तुम भी उनकी हत्या करो, ऐसे काफिरो को यही दण्ड है। (१९१) फिर यदि मान जाय तो अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है।

---

*हज्ज के समय बीच मे आवश्यकता पडने पर लोग घर के पिछले दरवाजे से जाकर फिर वापिस आजाते थे। मानो घर गये ही नहीं। इस पाखण्ड से बचने के लिये संकेत है।

(१९२) उन से इतना लडो कि झगडा शेष न रहे और एक ईश्वर की आज्ञा चले । फ़िर यदि झगड़ा छोड़ दें तो उन पर किसी प्रकार का अन्याय नही करना चाहिए, क्योकि श्रद्धा तो अत्याचारियो के अतिरिक्त किसी पर उचित नही । (१९३) श्रद्धा* वाले महीनो का बदला श्रद्धा वाले महीने और श्रद्धा की वस्तुओ मे भी बदला** तो जो तुम पर अन्याय करे, तो जैसा अन्याय उसने तुम पर किया वैसा ही तुम भी उस पर करो । और अन्याय करने मे अल्लाह से डरते रहो और स्मरण रक्खो कि अल्लाह उन्ही का साथी है जो उससे डरते हैं । (१९४) प्रभु के कार्य मे व्यय करो । अपने हाथो अपने को हत्या मे मत डालो और कृपा करो, कृपा करने वालो से अल्लाह प्रेम रखता है । (१९५) अल्लाह के लिए हज्ज और उमरह को पूर्ण करो । और यदि मार्ग मे कही घिर जाओ तो वलिदान करदो जैसा कुछ होसके और जब तक बलिदान अपने ठिकाने न लग जाय अपना सिर न मुडावो और जो तुममे रुग्ण हो व सिर की ओर से उसे दुख हो तो बाल उतरवा देने का बदला रोजे या दान या बलि है । तत्पश्चात जब तुम्हारे लिये एकत्रित हो जावे तो जो कोई उमरे को हज्ज से मिलाकर लाभ उठाना चाहे तो उस को बलिदान देना होगा और उसको बलिदान सुलभ न हो तो तीन रोजे हज्ज के दिनो मे रखले और जब लौटकर आओ तो सात रोजे रक्खो यह पूरे दस हुए । यह आज्ञा उसके लिए है जिसका घरबार मक्के मे न हो । अल्लाह से डरो और जानते रहो कि अल्लाह का दण्ड कठिन है (१९६) (रुकू २४) ।

हज्ज के कई महीनो*** का पता है तो जो व्यक्ति इन महीनो मे

*जीकाद जिलहिज्ज मुहर्रम रजब ये चार श्रद्धा वाले महीने है ।

**यदि झगडालु पवित्र मास या पवित्र वस्तुओं की चिन्ता न करके झगडा करें तो तुम भी उनकी चिन्ता न करो ।

***शव्वाल, जीकअद और दस दिन जिलहिज्ज के ।

हज्ज की ठान ले तो अहराम* बाधने से अन्त तक हज्ज के दिनो मे विषय भोग और पाप व झगडे की कोई बात न करे। और भलाई का कोई सा काम करो वह ईश्वर को प्रतीत हो जायगा और हज्ज के जाने से पहले मार्ग व्यय एकत्रित कर लो। उत्तम मार्ग मे व्यय सयम है और बुद्धिमानो! मुझ से डरते रहो। (१९७) हज्ज के समय तुम अपने पालने वाले की कृपा खोजो, तो कुछ पाप नही। फिर जब अरफात पर्वत से लौटो तो स्थान मुजदल्फ़ा मे ठहर कर ईश्वर की याद उस नियम से करो जैसा तुमको बताया है। इस से पहिले तुम भटके हुओ मे से थे। (१९८) फिर जिस स्थान से मनुष्य चलें, तुम भी वही से चलो और अल्लाह से क्षमा प्रार्थना करो अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है। (१९९) फिर जब हज्ज के कामो को कर चुको तो जिस प्रकार तुम अपने पिता-पितामह की चर्चा मे लग जाते थे उसी प्रकार अपितु उस से भी बढकर ईश्वर की याद मे लग जाओ। मनुष्यो मे कुछ ऐसे भी हैं जो प्रार्थना करते है कि ऐ हमारे पालने वाले हमको जो देना हो ससार मे दे। ऐसे मनुष्यो का महाप्रलय मे कुछ भाग नही रहता। (२००) कुछ ऐसे हैं जो प्रार्थना करते हैं कि ऐ हमारे पालनकर्त्ता! हमे ससार मे भी उन्नति दे और प्रलय मे भी और हमको नरक के दण्ड से बचा। (२०१) यही है जिनको उनके किये का पुन्य मिलना है और अल्लाह तो शीघ्र सबका हिसाब करने वाला है। (२०२) और गिनती के इन कुछ दिनो मे ईश्वर की याद करते रहो। फिर जो व्यक्ति शीघ्रता करे और दो दिन मे चल बसे उस पर भी कुछ पाप नही और जो देर तक ठहरा रहे उस पर भी कुछ पाप नही यह नम्रता उनके लिए है जो सयम करें। ईश्वर से डरते रहो और जान रहो कि तुम

*अहराम-वह कपडा जो हज्ज के दिनों मे पहनते है जब तक तीर्थ-यात्रा का कार्य समाप्त नहीं होता तब तक इसे पहने रहते हैं।

उसी के सामने प्रस्तुत किये जाओगे। (२०३) और कोई व्यक्ति ऐसा है जिसकी बातें तुम को साँसारिक जीवन मे भी भली मालूम होती है और वह अपने हृदय की इच्छाओ पर ईश्वर को समर्थक ठहराता हैं। ईश्वर की साक्षी देता है कि जो मन मे है वही जिह्वा पर है यद्यपि वह अधिक झगडालू है। (२०४) और जब लौटकर जावें तो देश मे दौडता फिरता है कि उस मे विद्रोह फैलावे और खेती बारी को और जीव को नष्ट करे। अल्लाह उसे नही चाहता क्योंकि अल्लाह झगडा नही चाहता। (२०५) जब उससे कहा जाय कि ईश्वर से डर तो अभिमान उसको पाप पर उतारू करता है ऐसे को नरक पर्याप्त है और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है। (२०६) कुछ ऐसे है जो ईश्वर प्रसन्नता के लिए अपनी जान दे देते हैं और अल्लाह भक्तो पर बडी ही दया रखता है। (२०७) ऐ धर्मावलम्बियो इस्लाम मे पूरे-पूरे आ जाओ और राक्षस के पैर पर पैर न रखो। वह तुम्हारा स्पष्ट शत्रु है। (२०८) फिर जबकि तुम्हारे पास स्पष्ट आज्ञा से पहुच चुकी और इस पर भी बिचल जाओ तो स्मरण रक्खो कि अल्लाह सर्वशक्तिमानहै। (२०९) क्या यह मनुष्य इसी की बाट देखते हैं कि अल्लाह फरिस्तो के साथ बादलो का छाता लगाये उनके सामने आवे और जो कुछ होना है हो जाये। सब काम अल्लाह ही के है। (२१०) (रुकू २५)

ऐ पैगम्बर याकूब के पुत्रो से पूछो कि हमने उसको कितने स्पष्ट चिन्ह दिये और जब कोई व्यक्ति ईश्वर की उस नियामत को बदल डाले, तो ईश्वर की मार बडी कठोर है। (२११) जो मनुष्य न मानने वाले है। ससार का जीवन उनको भला दिखाई देता है। और धर्मानुयायियो के साथ हँसी करते है, यद्यपि जो मनुष्य सयमी है उनके स्थान महा-प्रलय के दिन उनसे बढ-चढकर होगा। और अल्लाह जिसे चाहे असीम धन दे। (२१२) (शुरू मे सब) मनुष्य एक ही धर्म रखते थे, फिर अल्लाह ने पैगम्बर भेजे जो शुभ सवाद देते और न मानने वालो को डराते और उनके द्वारा सच्ची पुस्तके भेजी जिससे जिन बातो मे मनुष्य

भेद डाल रहे है उन बातो का वह पुस्तक निर्णय कर दे और जिन मनुष्यो को पुस्तक दी गई थी फिर वही अपने पास स्पष्ट आज्ञा लाये पीछे आपस की जिद से उनमे डालने लगे तो वह सच्चा मार्ग जिसमे मनुष्य भेद डाल रहे थे ईश्वर ने अपनी कृपा से धर्मानुयायियो को दिखला दिया। अल्लाह जिसको चाहे सच्चा मार्ग दिखलाये। (२१३) क्या तुम ऐसा विचार करते हो कि स्वर्ग मे जाओगे ? अभी तक तो तुम्हारी उन मनुष्यो जैसी दशा नही हुई है, जैसी तुमसे पहलो की हो चुकी है कि उनको कठिनाइयाँ और कष्ट पहुचे और फटकारे गये यहाँ तक कि पैगम्बर और धर्म वाले जो उनमे साथ थे चिल्ला उठे कि ईश्वर की सहायता का कोई समय भी है। ध्यान रहे ईश्वर की सहायता किकट है। (२१४) ऐ पैगम्बर यदि तुमसे पूछते हैं कि क्या वस्तु दान करे ? तो समभा दो जो धन व्यय करो वह तुम्हारे माता-पिता का, निकट के सम्बन्धियो का, अनाथो, दीन-दुखियो, बटोहियो का अधिकार है और तुम कोई भी भलाई करोगे अल्लाह उसको जानता है। (२१५) तुम पर लडाई की आज्ञा हुई है और वह तुमको बुरी लगी है। सम्भवत एक वस्तु तुमको भली लगे पर वह तुम्हारे लिये बुरी हो। इसको अल्लाह जानता है पर तुम नही जानते। (२१६) (रुकू २६)

ऐ पैगम्बर! मुसलमान तुमसे श्रद्धा वाले महीनो* मे लडाई करने के विषय मे पूछते हैं तो उनको समझा दो कि पवित्र महीनो में लड़ना बडा पाप है परन्तु अल्लाह के मार्ग से रोकना और ईश्वर को

---

* अरब मे चार महीनो में लडाई को बहुत बुरा समभते थे। उनके नाम यह (१) जीकअद (२) जिलहिज (३) मुहर्रम (४) रजब। काफिर इन महीनो में लडाई छेड देते। मुसलमान उन दिनो में लडते रहते थे। इस पर उनको आज्ञा दी गई कि तुमसे ये लोग लडे तो तुम भी उन महीनो में जी खोलकर लड़ो।

न मानना और मानवीय मसजिद मे न जाने देना और उस मसजिद से निकाल देना, अल्लाह के निकट मार डालने बढकर है और वे तो सदैव तुमको लडते ही रहेगे यहाँ तक कि इनका वश चले, तो तुमको तुम्हारे धर्म से फिरा दें। जो तुममे अपने धर्मों से फिरेगा और मनाई की दशा मे मर जावेगा, तो ऐसे मनुष्यो का किया-कराया समार और महाप्रलय मे निरर्थक होगा और वह नारकीय है और वह सदैव नरक मे ही रहेगे। (२१७) जिस मनुष्यो ने विश्वास किया और उन्होने अल्लाह के मार्ग मे देश त्याग किया और लडाई भी की यही हैं ईश्वर की कृपा की आशा लगाये है और अल्लाह क्षमा करने वाला दयावान है। (२१८) तुमसे मदिरा और जुए के विषय पूछते हैं, तो कह दो कि इन दोनो मे वड़ा पाप है थोडे स लाभ भी है। परन्तु इनके लाभ से इनका पाप वढकर और तुमसे पूछते है कि ईश्वर के मार्ग मे क्या व्यय करे, तो समझा दो कि जितना अधिक हो सके इसी प्रकार अल्लाह आज्ञा तुम से खोल-खोलकर वताया करता है कि सम्भवत तुम ध्यान दो (२१९) यदि ये तुमसे अनाथो के वारे मे पूछते हैं, तो समझा दो कि उनकी भलाई ही भलाई है और यदि उनसे मिल-जुलकर रहो तो वह तुम्हारे भाई हैं और अल्लाह विगाड़ने वालो को तथा सभालने वालो का भेद पहचानता है और यदि ईश्वर चाहता तो तुमको कठिनाई मे डाल देता। निस्सन्देह अल्लाह एक वडी शक्ति है। (२२०) शिर्कवाली* स्त्रियाँ जव तक विश्वास न करें उनसे विवाह न करो। मुसलमान लौंडी शिर्कवाली पत्नि से भली है, यदि तुमको पसन्द भी हो। शिर्कवाले पुरुष से विवाह न करो, जव तक विश्वास न करे और शिर्कवाला तुमको कैसा ही भला लगे, उससे मुसलमान गुलाम भला और वे शिर्कवाले नरक की ओर वुलाते हैं। अल्लाह अपनी कृपा से स्वर्ग और दान की ओर

*शिर्कवाली—खुदा की जाति मे और गुण मे दूसरे को देवताओ को सम्मिलित करने वाली, दूसरों को पूजने वाली।

बुलाता है और अपनी आज्ञाए मनुष्यो से खोल-खोलकर बताया करता है, जिससे वह सावधान रहें। (२२१) (रुकू २७)

यदि मनुष्य तुम से मासिक धर्म के विषय मे पूछते हैं तो समझा दो कि वह गन्दगी है। इन दिनो स्त्रियो से प्रथक रहो और जब तक शुद्ध न हो लें उनके निकट न जाओ। फिर जब तक नहा-धो लें, तो जिधर से जिस प्रकार अल्लाह ने तुमको बता दिया है, उनके समीप जाओ। निस्सदेह अल्लाह बचे रहने वालो को और सफाई रखने वालो को मित्र रखता है। (२२२) तुम्हारी पत्नियाँ मानो तुम्हारी खेतियाँ हैं। अपनी खेती मे जिस प्रकार चाहो जाओ और अपने लिए भविष्य का भी प्रवन्ध रक्खो। अल्लाह से डरो और जाने रहो कि उस के सामने उपस्थित होना है। ऐ पैगम्बर धर्मानुयायिओ को शुभ सम्वाद सुना दो। (२२३) अच्छा व्यवहार करने और सयम रखने और मनुष्यो मे मिलाप कराने मे ईश्वर की कसम* मत खाओ। अल्लाह सुनता और जानता है। (२२४)तुम्हारी बेकार की कसमो**पर ईश्वर तुमको नहीं पकडेगा। लेकिन उनको पकडेगा, जो तुम्हारी हार्दिक इच्छाएँ हो और अल्लाह क्षमा करनेवाला और सहन करने वाला है। (२२५) जो मनुष्य अपनी पत्नियो के समीप जाने की कसम खा बैठें, उनको चार महीने का अवकाश है, फिर यदि मिल जावें, तो अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है। (२२६) और यदि तलाक की ठान लें तो अल्लाह सुनता जानता है। (२२७) और जिन स्त्रियो को तलाक दी गई हो वह अपने आपको तीन बार मासिक धर्म होने तक विवाह से रोके रक्खे

---

*यानी यह कसम न खाओ कि मै ऐसे-ऐसे आदमी के साथ कोई नेकी न करूंगा। या इन-इन दो लोगो मे मिलाप न कराऊंगा।

**जो अपने आप मुंह से निकल जाय जैसे कुछ लोग बात बे बात कहते हैं 'वल्लाह'। कुछ लोग कहते हैं कि यह वह कसम है जो मनुष्य क्रोध मे खाता है : ऐसी कसम को तोडने मे कुछ पाप नहीं।

और यदि अल्लाह और महाप्रलय का विश्वास रखती हैं, तो जो कुछ भी बच्चे के रूप मे ईश्वर ने उनके पेट मे उत्पन्न कर रक्खा है, उसका छिपाना उनको उचित नही और उनके पति यदि उनको अच्छी प्रकार रखना चाहे, तो वह इस बीच मे उनको वापस लेने के अधिक अधिकारी हैं और जैसे पुरुषो का अधिकार स्त्रियो पर है वैसे ही नियम के अनुसार स्त्रियो का अधिकार पुरुषो पर है। हाँ, पुरुषो को स्त्रियो पर प्रधानता है और अल्लाह सर्वशक्तिमान है। (२२८) (रुकू २८)

तलाक दो बार करके दी जाय फिर नियम के अनुसार रखना या अच्छे बर्ताव के साथ विदा कर देना और जो तुमको दे चुके हो उनमे से तुमको कुछ भी वापिस लेना उचित नही। परन्तु यदि पति पत्नि को डर हो कि ईश्वर ने जो सीमाएँ ठहरा दी हैं, उन पर नही रह सकेंगे या स्त्री* अपना पीछा छुड़ाने के बदले कुछ दे निकले तो इस मे दोनों पर कुछ पाप नही, यह अल्लाह की बाँधी हुई सीमाऐं हैं अत- इनसे आगे मत बढो और जो अल्लाह की बाँधी हुई सीमाओ से आगे बढजायँ तो यही मनुष्य अन्याचारी हैं। (२२९) अब यदि स्त्री को तीसरी बार तलाक**देदे तो इसके पश्चात जबतक स्त्री दूसरे पति के साथ विवाह

---

*मर्द औरत को तलाक दे सकता है और औरत मर्द से ख़ुला ले सकती है। यानी एक दूसरे से न निभे तो अलग हो सकते हैं।

**तलाक का यह नियम है कि जब कोई मुसलमान पुरुष अपनी स्त्री को तलाक देता है तो काम से कम दो मनुष्यो के सामने तलाक देता है और एक महीने के पश्चात दूसरी तलाक भी इस तरह से देता है। यहाँ तक तो पति-पत्नि मे मेल हो सकता है। इसके एक महीने पश्चात तीसरी तलाक दी जाती है, इस तलाक देने के पश्चात फिर पुरुष उस स्त्री के समीप नहीं जा सकता। यह स्त्री ३ महीने १० दिन पश्चात विवाह कर सकती है। दूसरे पति के साथ विवाह हो जाने पर यदि दूसरा पति तलाक दे दे तो केवल इस रूप मे कि वह दूसरे पति के साथ सम्भोग

न कर ले, उसके लिए भोग्य नही हो सकती हाँ, यदि दूसरा पति उससे विषय भोग करके उसको तलाक दे दे, तो दोनो पर कुछ पाप नही अतः परस्पर प्रेम कर ले, शर्त यह है कि दोनो को आशा हो कि अल्लाह की बाँधी हुई सीमाओ पर दृढ़ रह सकेंगे और यह अल्लाह की सीमाऐं हैं जिनको उन मनुष्यो के लिए बताता है जो समझते हैं। (२३०) जब तुम स्त्रियो को दो बार तलाक दे दे और उनकी अवधी पूरी होने को आए तो नियम के अनुसार उनको रक्खो या उनको तलाक तीसरी देकर विदा कर दो और सताने के लिए उनको अपनी स्त्री बना के न रखना कही उसके पश्चात उन पर अन्याय करने लगे क्योंकि जो ऐसा करेगा, वो अपना ही खोयेगा और अल्लाह की आज्ञाओ को कुछ हँसी-खेल न समझो और अल्लाह ने जो तुम पर कृपाऐं की हैं उनको स्मरण करो और यह कि उसने तुम पर पुस्तक और बुद्धी की बातें अवतरित की जिस से वह तुम को समझाता है और अल्लाह से डरते रहो और जान रक्खो कि अल्लाह सबको जानता है। (२३१) (रुकू २९)

और स्त्रियो को तीन बार तलाक दे दे और वह अपनी इद्दत की अवधी*पूर्ण कर ले और उचित रूप से किसी से उनकी इच्छा मिल जाय तो उनको दूसरे पतियो के साथ विवाह कर लेने से न रोको। यह शिक्षा उनको की जाती है, जो तुममे अल्लाह और महाप्रलय के

कर चुकी हो अपने पूर्व पति के साथ पुनः विवाह कर सकती है। परन्तु जब तक किसी दूसरे के साथ विवाह करके विषय-भोग न करले (यानि हमबिस्तर न हो ले) कदापि पूर्व पति से विवाह नहीं कर सकती।

*इद्दत उस अवधि को कहते हैं जिसके अन्दर स्त्री तलाक देने के पश्चात व उसका पति मर जाने के पश्चात विवाह नहीं कर सकती।

इद्दत की अवधि चार महीने दस दिन है। वास्तव में यह है कि इस बीच स्त्री तीन बार मासिक धर्म से पवित्र हो जाय।

दिन पर विश्वास रखता है। यह तुम्हारे लिए बड़ी पवित्रता तथा बड़ी सफाई की बात है और अल्लाह जानता है तुम नही जानते। (२३२) जो व्यक्ति पत्नि को तलाक दिये पीछे अपनी संतान को पूरा अवधी तक दूध पिलवाना चाहे, तो उसके लिए मातायें अपनी संतान को पूरे दो वर्ष दूध पिलायें और जिस का वह बच्चा है उसके लिए नियमानुसार माताओ को खाना, कपड़ा देना आवश्यक है। किसीको कष्ट न दीजिये, परन्तु वही तक जहाँ तक उसकी सामर्थ्य हो। माता को उसके बच्चे के कारण हानि न पहुचाई जाय और न उसको जिसका बच्चा है उसके बच्चे के कारण किसी प्रकार की हानि पहुचाई जाय और दूध पिलाने का खाना-खुराक जैसा वास्तविक बाप पर वैसा उसके संरक्षक पर, फिर यदि समय से पहिले माता-पिता दोनो अपनी इच्छा से मिल कर दूध छुडाना चाहें तो उन पर कुछ पाप नही और यदि तुम अपनी संतान को किसी धाय से दूध पिलवाना चाहो तो तुम पर कुछ पाप नही। इस शर्त पर कि जो तुमने नियमानुसार उनको देना किया था उनको सौंप दो और अल्लाह से डरते रहो और जाने रहो कि जो कुछ भी तुम करते हो अल्लाह उसको देख रहा है। (२३३) और तुम मे जो मनुष्य मर जाय और पत्नियाँ छोडमरें तो स्त्रियो को चाहिये कि चार महिने दस दिन अपने को रोके* रहें फिर जब अपनी इद्दत की अवधि पूर्ण करलें, तो उचित रूप मे जो कुछ अपने लिये करें उसका मरे के संरक्षको पर कुछ पाप नही और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह को उसकी सूचना है। (२३४) और यदि तुम किसी बात की आड मे स्त्रियो को विवाह का सदेशा भेजो या अपने हृदयो मे छिपाये रक्खो तो इन मे भी तुम पर कुछ पाप नही अल्लाह को प्रतीत है कि तुम इसका विचार करोगे, परन्तु इनसे विवाह का ठहराव**

---

*यानी इतने दिन ब्याह न करें।

**यानी इद्दत भर उनसे निकाह की बात न करो और न यह जी में ठानो कि में इनके साथ ब्याह करेगा।

तो चुपके से भी न करना, हाँ उचित रूप में बात कह दो। और जब तक निश्चित अवधि समाप्त न हो जाय विवाह के बन्धन की बात पक्की न कर बैठना और जाने रहो कि जो कुछ तुम्हारे जी मे है अल्लाह जानता है तो उससे डरते रहो और जाने रहो कि अल्लाह क्षमा करने वाला और सहनशील है। (२३५) (रुकू ३०)

यदि तुमने स्त्रियो के साथ सहवास न किया हो और उनका मिहर* न ठहराया हो इससे पहिले उनको तलाक दे दो तो उसमे तुम पर कोई पाप नही। हाँ ऐसी स्त्रियो के साथ कुछ व्यवहार करो। सामर्थ वाले और बिना सामर्थ वाले अपनी सामर्थ्य के अनुसार उनको व्यय जैसा व्यय का नियम है। यह भले मनुष्यों के लिये आवश्यक है। (२३६) और यदि सहवास करने से पहिले और मिहर ठहरने के पश्चात औरतो को तलाक दे दो, तो जो तुमने ठहराया था उसका आधा देना चाहिए हाँ यदि स्त्रियाँ अधिकार छोड बैठें या पुरुष जिस के हाथ मे विवाह की स्वीकृति है वह अपना अधिकार छोड दे, अर्थात् पूरा मिहर देने पर राजी हो और अपना अधिकार छोड दे तो यह सयम के अधिक निकट है। अपने मध्य श्रेष्ट विचार को मत भूलो। जो करते हो अल्लाह उसको देख रहा है। (२३७)

मुसलमानो ! नमाजो की और मध्य की नमाज का पूरा ध्यान रक्खो और अल्लाह के समक्ष आदर से खड़े हुआ करो। (२३८) फिर यदि तुमको भय हो तो पैदल या सवार जैसी दशा हो नमाज पढ लो फिर जब तुम निश्चित हो जाओ तो जिस प्रकार अल्लाह ने तुमको नमाज का ढग सिखाया जो तुम पहिले नही जानते थे उसी ढग से अल्लाह को स्मरण करो। (२३९) जो मनुष्य तुममे से मर जायँ और पत्नियाँ छोड मरें तो अपनी पत्नियो के पक्ष मे एक वर्ष तक के बर्ताव

* मिहर उस बचन को कहते है जो विवाह के समय पति स्त्री के साथ पूंजी व नकद रुपया देने का करता है :

भोजन आदि का प्रबन्ध। और घर से न निकालने की वसीयत कर मरें फिर यदि स्त्रियाँ स्वय ही घर से निकल खडी हो तो उचित बातो मे से जो कुछ अपने लिए करें उनका तुम पर कुछ पाप नही और अल्लाह है। (२४०) जिन स्त्रियो को तलाक दी जाय उनके साथ मिहर के अतिरिक्त भी नियमानुसार जोडे वगैरह से कुछ व्यवहार करना सयमियो को उचित है। (२४१) इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आज्ञाओ को खोल-खोलकर बतलाता है। जससे तुम समझो। (२४२) (रुकू ३१)

ऐ पैगम्बर क्या तुमने उन मनुष्यो पर दृष्टि नही डाली, जो अपने घरो से मृत्यु के भय से निकल खडे हुए वह हजारो ही थे फिर ईश्वर ने उनको आज्ञा दी कि मर जाओ फिर उनको जीवित किया। निस्सन्देह अल्लाह तो मनुष्यो पर कृपालु है। परन्तु प्राय. मनुष्य कृतज्ञ नही होते। (२४३) ईश्वर के मार्ग मे लडो और जाने रहो कि अल्लाह सुनता और जानता है। (२४४) कोई है जो ईश्वर को प्रसन्न चित से कर्ज* दे वह उसके कर्ज को उसके लिए कई गुना बढा देगा। अल्लाह ही निर्धन और धनाढ्य बनाता है और उसी की ओर तुम को लौटकर जाना है। (२४५) क्या तुमने इसराइल के पुत्रो के सरदारो पर दृष्टि नही डाली। एक समय उन्होने मूसा के पश्चात अपने पैगम्बर अशमूयील से प्रार्थना की थी कि हमारे लिए एक राजा निश्चित करो हम उसके सहारे से अल्लाह के मार्ग मे युद्ध करें। पैगम्बर ने कहा यदि तुमसे युद्ध कर्तव्य द्वारा करने को दिया भी जाय तो भी सम्भव है कि तुम न लड । बोले कि हम अपने घरो और बाल-बच्चो से तो निकाले जा चुके तो हमारे लिए अब कौन सी मनाइ है कि इश्वर के मार्ग मे न लड़ें फिर जब उन पर युद्ध का कर्तव्य पालने करने को कहा, तो उनमे से कुछ गिने हुओ के सिवाय शेष सब फिर बैठे। अल्लाह तो अपराधियो को खूब जानता है। (२४६) उनके पैगम्बर ने उनसे कहा

* यानी जिहाद के लिए जो धन वा साधन है उनका प्रबन्ध करे।

कि अल्लाह ने तालूत* को तुम्हारा राजा नियुक्त किया है। उस पर कहने लगे कि उसको हम पर कैसे राज्य मिल सकता है। इससे तो राज्य करने के हम ही अधिक अधिकारी हैं। उसको तो धन से भी कुछ ऐसी सम्पत्ति प्राप्त नही। पैगम्बर ने कहा कि अल्लाह ने तुम पर उसी को पसन्द बताया है ज्ञान और शरीर में उसको उन्नति दी है और अल्लाह बडा सहनशील तथा जानकार है। (२४७) उनके पैग-म्बर ने उनसे कहा कि तालूत के राजा होने की यह निशानी है कि वह सन्दूक** जिसमे तुम्हारे पालने वाले की तसल्ली अर्थात तौरात है और मूसा और हारून जो छोड मरे हैं, उनमे की बची-खुची वस्तुएँ है, तुम्हारे पास आ जायँगी फरिश्ते उनको उठा लायेंगे। यदि विश्वास रखते हो तो यही एक बात तुम्हारे लिए निशानी है। (२४८) (रुकू ३२)

फिर जब तालूत सेना सहित चला तो कहा कि मार्ग मे एक नहर पड़ेगी अल्लाह उस नहर से तुम्हारी जाँच करने वाला है, तो जो अघा-कर उसका पानी पी लेगा, वह हमारा नही और जो उसको नही पियेगा, वह हमारा है, परन्तु हाँ अपने हाथ से कोई एक चिल्लू भर ले। उन मे से गिने हुए कुछ के अतिरिक्त सभी ने तो उस नहर मे से अघाकर पी लिया। फिर जब तालूत और धर्म वाले जो उसके साथ थे नहर के

---

*हजरत मूसा के बाद कुछ समय बनी इस्राईल का काम बना रहा। फिर उनके पापो के कारण उन पर एक काफिर बादशाह ने अपना अधिकार जमा लिया। इसने उनको अनेक कष्ट दिये तो इन्होने अपने नबी हजरत शैमउल से प्रार्थना की कि हमारे लिए कोई बादशाह ठहरा दीजिये जिसके आधीन हम जालूत से युद्ध कर सकें। हजरत शैमउल ने कहा खुदा ने तालूत को तुम्हारा बादशाह नियत किया है।

**बरकत का सन्दूक तालूत के अधिकार मे आ जाना उसकी बादशाह का ईश्वरीय प्रमाण है।

पार हो गये, तो जिन्होंने तालूत की आज्ञा न मानी थी कहने लगे कि हममे तो जालूत और उसकी सेना से युद्ध करने की आज शक्ति नही है। उस पर वह मनुष्य जिनको विश्वास था कि उनको ईश्वर के सामने उपस्थित होना है, बोल उठे—प्राय. अल्लाह की आज्ञा से थोड़ी सेना ने बड़ी सेना पर विजय पाई है। अल्लाह सतोषियो का साथी है।(२४६) वे जब जालूत और उसकी सेना की बराबरी मे आये तो प्रार्थना की कि हमारे पालने वाले हमे पूरा सन्तोष दे और हमारे पाव जमाये रख, और काफिरों की मंडली पर हमको विजय दे। (२५०) उसमे फिर उन्होंने अल्लाह की आज्ञा से शत्रुओ को भगा दिया और जालूत का दाऊद ने बध किया और उनको ईश्वर ने राज्य दिया और बुद्धी दी और जो चाहा उनको सिखा दिया। यदि अल्लाह किन्ही मनुष्यो के द्वारा किन्ही को न हटाता रहे, तो देश उलट-पलट जाय। परन्तु अल्लाह ससार के मनुष्यो पर दयालु है। (२५१) ऐ पैगम्बर यह अल्लाह की आयतें मैं तुमको सचाई से पढ़-पढकर सुनाता हूँ और निस्सन्देह तुम पैगम्बर मे से हो। (२५२)



सूरे बकर—(तीसरा पारा)

तिलकर्रसूल (यह पैगम्बर)

इन पैगम्बरो मे से हमने किसी पर किसी को प्रधानता दी। इनमे से कोई तो ऐसे है जिनके साथ अल्लाह ने बातचीत की और किसी के पद ऊँचे किये। मरियम के पुत्र ईसा को हमने स्पष्ट चमत्कार दिये और पवित्र आत्मा जिब्रील से उनका समर्थन किया और यदि ईश्वर चाहता, तो जो मनुष्य उनके पश्चात् हुए उनके पास स्पष्ट चिन्ह आये पीछे एक दूसरे मे न लड़ते, परन्तु मनुष्यो ने एक दूसरे मे भेद डाला। तो इनमे से कोई वह थे जो विश्वास करते थे और कोई वह थे जो

काफिर हुए और यदि ईश्वर चाहता तो यह आपस मे न लडते, परन्तु अल्लाह जो चाहता है करता है। (२५३) (रुकू ३३)।

ऐ धर्मवालो प्रलय के आने से पहले हमारे दिए हुए मे से व्यय कर दो। जिससे क्रय-विक्रय न होगा, न मित्रता होगी और न सिफारिश होगी और जो न माननेवाले हैं, वह मनुष्य अन्यायी है। (२५४) अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूजा के योग्य नही। वह जगत का साक्षात सभालनेवाला है, न उसको झपकी आती है और न नीद। जो कुछ नभ मे है और जो कुछ पृथ्वी मे है उसी का है। कौन है जो उसकी आज्ञा के विना उसके सामने सिफारिश करे। जो कुछ मनुष्यों के सामने और पीछे है उसको सब को जाने है और लोग उसके ज्ञान मे से किसी का भी पता नही लगा सकते, अतिरिक्त उसके कि जितनी वह चाहे, उमका राज्य नभ और पृथ्वी मे है और इन दोनो की रक्षा उस पर भारी नही और वह महान् और सर्वोपरि है। (२५५) धर्म मे दबाव नही, भूल और सुधार स्पष्ट हो चुकी है कि जो झूठी प्रार्थना को न माने और अल्लाह पर विश्वास करे उसने दृढ रस्सी पकड रखी है जो टूटनेवाली नही और अल्लाह सुनना जानता है। (२५६) अल्लाह धर्मवालो का सहायक है। उनको अन्धेरे से निकलकर उजाले मे लाता है और जो मनुष्य काफिर है, उनके साथी राक्षस हैं। उनको उजाले मे निकालकर अन्धेरे मे ढकेलते है। यही मनुष्य नरकवासी है। वह सदैव नरक मे ही रहेगे। (२५७) (रुकू ३४)।

ऐ पैगम्बर क्या तुमने उस व्यक्ति को नही देखा जो केवल इस कारण मे कि ईश्वर ने उसको राज्य दे रखा था इब्राहीम से उनके पालनकर्ता के विषय मे विवाद करने लगा।* उस समय इब्राहीम ने

---

* यह कथा के राजा नमरूद की है। वह स्वयं अपने को पूज्य बताता था। इब्राहीम ने उसकी पूजा न की और कहा कि मै तो उस एक की पूजा करता हूँ जो मारता और जीवित करता है अर्थात

कहा कि मेरा पालनेवाला तो वह है जो जीवित करता और मारता है। इस पर वह कहने लगा कि मैं भी जीवित करता तथा मारता हू, इब्राहीम ने कहा कि अल्लाह तो सूर्य को पूर्व से निकालता है आप उसको पश्चिम से निकालें, इस पर वह काफिर चुप रह गया और अल्लाह अन्यायिओ को शिक्षा नही देता। (२५८)या जैसे वह व्यक्ति* जो एक उजडी बस्ती से होकर निकला उसे देखकर अचम्भे से कहने लगा कि अल्लाह इस व्यक्ति को इसके उजडे पीछे कैसे बसायेगा? इस पर अल्लाह ने उनको सौ वर्ष तक मृत रखा फिर उनको जीवित करके पूछा तुम इस दशा मे कितनी अवधी तक रहे? उसने कहा— एक दिन रहा हू, या एक दिन से भी कम। तब ईश्वर ने कहा तुम सौ वर्ष इसी दशा मे रहे थे। अब अपने खाने और पीने की वस्तुओ को देखो कोई बुसी तक नही और अपने गधे की ओर भी दृष्टी करो जिस पर तुम आरूढ थे तुम्हारे इतने दिनो मृत रखने और फिर जीवित उठाने से अभिप्राय यह है कि हम तुम्हारे लिए अपनी लीला का एक उदाहरण बनावें तनिक गधे की हड्डियो की ओर दृष्टि करो कि हम कैसे उनको जोडजोडकर उनका पिंजर बना कर खडा करते है फिर उन पर माँस चढाते है। फिर उन पर अल्लाह की शक्ति का यह चमत्कार प्रगट हुआ तो कहने लगे कि अब मैं विश्वास करता हू कि अल्लाह का प्रत्येक वस्तु पर प्रभाव रहता है। (२५९) और जब

ईश्वर की। नमरूद उसकी बात का तत्व न समझा और तुरन्त दो अपराधियों को बुलवाकर एक को छोड दिया और दूसरे को मरवा डाला। इस पर इब्राहीम ने सूर्य को उदय और उसके अस्त करने की बात कही। नमरूद अब कुछ न बोल सका।

*यह बात हजरत उजैर की है। पहले उनकी समझ मे न आता था कि ईश्वर मरनेवालो को कैसे जीवित करता है। जब वह स्वयं मरकर फिर जी उठे तो उनको विश्वास हुआ।

इब्राहीम ने निवेदन किया कि हे मेरे पालनकर्ता मुझे दिखा कि तू मृतको को कैसे जीवित करता है, तो ईश्वर ने कहा क्या तुमको इसका विश्वास नही। उत्तर दिया, क्यो नही। परन्तु मैं अपने हृदय की शांति चाहता हू। ईश्वर ने कहा अच्छा चार पक्षी लो और उनको अपने पास मँगाओ, फिर एक-एक पर्वत पर उनका एक-एक टुकडा रख दो फिर उनको बुलाओ तो वह स्वय तुम्हारे निकट दौडे चले आयेगे और जाने रहो अल्लाह प्रबल औपचारिक है। (२६०) (रकू ३५)।

जो अपना धन ईश्वर के मार्ग मे व्यय करते है उनको दान का उदाहरण उस दाने जैसा है, जिससे सात वालें उगती है और प्रत्येक बाल मे सौ दाने होते है और अल्लाह उन्नति देता है, जिसको चाहता है और अल्लाह बडी सहनशक्तीवाला तथा जानकार है। (२६१) जो मनुष्य अपना धन अल्लाह को मार्ग मे व्यय करते हैं फिर व्यय किए पीछे किसी प्रकार की अपनी कृपा नही बताते और न कष्ट देते है उनको उनका शुभफल उनके पालनकर्ता के यहाँ मिलेगा। न तो उन पर भय होगा और न वह उदास होगे। (२६२) भली बात बोलना और क्षमा करना उस पुण्य से बहुत बढकर है जिसके पीछे दुख हो और अल्लाह निडर और सहन करनेवाला है। (२६३) धर्मवालो! अपने दान को कृपा बताने और हानि पहुँचाने से उस व्यक्ति के समान अकारथ मत करो जो अपना धन मनुष्यो के दिखावे के लिए व्यय करता है और अल्लाह और प्रलय पर विश्वास नही रखता तो उसके दान का उदाहरण शिला जैसा है। उस पर मिट्टी है फिर उस पर जोर की वर्षा हुई और उसको सपाट कर गया उनको अपनी कमाई कुछ हाथ नही लगती और अल्लाह काफिरो को शिक्षा नही दिया करता है। (२६४) और जो मनुष्य ईश्वर की प्रसन्नता के लिए और अपनी दृष्टि शुद्ध रखकर अपने धन व्यय करते है, उनका उदाहरण एक उपवन जैसा है जो ऊँचे पर है, उस पर जोर की वर्षा पडे, तो दूना फल लाये और यदि उस पर जोर की वर्षा न पडे तो उसकी हलकी फुआर भी पर्याप्त है, और तुम जो कुछ भी करते हो, अल्लाह

देख रहा है। (२६५) भला तुम मे से कोई भी इस बात की इच्छा करेगा कि खजूरो और अगूरो का अपना एक उपवन हो, उसके नीचे नहरें वह रही हो। हर प्रकार के फल उसको वहाँ प्राप्त हो और वह बुड्ढा हो जावे और उसके छोटे-छोटे दुर्बल बच्चे हो, अब उस उपवन पर एक हवा का बवडर चले, जिसमे अग्नि भरी हो, जो उस उपवन को जला दे। इसी प्रकार अल्लाह अपनी आज्ञाओ को स्पष्ट तुम से बताया करता है, जिससे तुम सोच सको। (२६६) (रुकू ३६)।

ऐ धर्मवालो अच्छी वस्तुओ में से जो तुमने आप कमाई हो या हमने तुम्हारे लिए पृथ्वी से उत्पन्न की हो व्यय करो और खराब वस्तुओ को देने का विचार भी न करना। तुम भी वस्तु न लो और अल्लाह चिन्तारहित (तथा) इच्छाओं का घर है। (२६७) राक्षस तुमको तगी से डराता और निरलज्जता की ओर लगाता है और अल्लाह अपनी ओर से क्षमा और कृपा का तुमको वचन देता है और अल्लाह सहनशील और जानकार है। (२६८) जिसको चाहता है समझ देता है और जिसको समझ दी गई, निस्सन्देह उसने बडा धन पाया और शिक्षा भी वही मानते हैं जो समझदार हैं। (२६९) जो व्यय भी तुम करो या उसके नाम की कोई मन्नत* मानो, वह सब अल्लाह को प्रतीत है। ईश्वर के अतिरिक्त अन्य किसी की मन्नत मानकर ईश्वर का अधिकार मानते हैं, उनका कोई सहायक न होगा। (२७०) यदि दान सबके सामने दो, तो वह भी अच्छा** और अगर इसको छिपाकर

---

*मन्नत—काम पूरा होने के लिए दान पुण्य करने की मन मे मानता मानना या संकल्प लेना।

**दान देना हर प्रकार अच्छा है चाहे छिपाकर दिया जाय चाहे सबके सामने दिया जाय परन्तु गुप्त दान अधिक सुन्दर है क्योंकि इस प्रकार जिसको सहायता की जाती है उसे दूसरे लोगों के आगे लज्जित नहीं होना पडता।

और जरूरतवालो को दो, तो यह तुम्हारे हिस्से मे और भी अच्छा है और ऐसा देना तुम्हारे पापो को नाश करनेवाला होगा और जो कुछ भी तुम करते हो, अल्लाह को उसका ज्ञान है। (२७१) इन मनुष्यो को सीधे मार्ग पर लाना तुम्हारे वश का नही, अपितु अल्लाह जिसको चाहता है सीधे मार्ग पर लाता है और तुम धन मे से जो कुछ भी व्यय करोगे, सो अपने लिए करोगे, और तुम तो ईश्वर ही को प्रसन्न करने केलिए व्यय करते हो और धन मे से जो कुछ भी दान के रूप मे व्यय करोगे, तुमको पूरा-पूरा भर दिया जायेगा और तुम्हारा अधिकार न मारा जायगा। (२७२) उन गरीबो को देना चाहिए, जो अल्लाह के ध्यान मे बैठे है। देश मे किसी ओर को जा नही सकते। जो व्यक्ति इनकी दशा से अपरिचित है, इनके न माँगने से इनको धनवान समझता है, परन्तु तू इनके मुख से इनको स्पष्ट पहिचान लेगा कि वह लिपट कर मनुष्यो से नही माँगते* जो कुछ तुम धन मे से दान के रूप मे व्यय करोगे, अल्लाह उसको जानता है। (२७३) (रुकू ३७)।

जो मनुष्य रात और दिन छिपे और प्रकट अपना धन व्यय करते हैं, तो उनको पालनकर्ता के यहां से बदला मिलेगा और इनको न डर होगा और न वह उदास होगे। (२७४) जो मनुष्य सूद खाते हैं प्रलय के दिन खडे नही हो सकेंगे, परन्तु उस व्यक्ति का सा खडा होना जिसको राक्षस ने अपनी चपेट से पागल कर दिया हो यह उनके इस कहने का दण्ड है कि जैसा बेचने का मामला है वैसा ही कर का मामला है। यद्यपि बेचने को तो अल्लाह ने पवित्र बताया है और व्याज को अपवित्र। तो जिसको उनके पालनकर्ता की ओर से शिक्षा पहुँची उसने व्याज खाना छोड दिया। जो व्याज पहिले ले चुका है वह उसका

---

*कुछ लोग रसूल से धार्मिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए उनके घर के पास बैठे रहते थे। ये किसी से कुछ मागते न थे पर धनवान भी नही थे, इसलिए उनकी सहायता का आदेश दिया गया है।

हुआ और उसका मामला ईश्वर को सौंप दिया पर जो फिर वही काम करेगा वह मनुष्य नारकीय हैं और वह सदैव नरक ही मे रहेंगे। (२७५) अल्लाह ब्याज को मिटाता और दान बढाता हैं। जितने अकृतज्ञ है और कहना नही मानते ईश्वर उनसे प्रसन्न नही। (२७६) जिन मनुष्यो ने विश्वास किया और नेक काम किए और नमाज पढते तथा दान देते रहे उनका बदला उनके पालनकर्ता के यहाँ से मिलेगा और उन पर न भय होगा और न वह उदास होगे। (२७७) ऐ धर्म-वालो! यदि तुम विश्वास रखते हो तो अल्लाह से डरो और जो ब्याज शेष है उसे छोड दो। (२७८) और यदि ऐसा न करो तो अल्लाह और उसके रसूल से युद्ध के लिए तैयार हो जाओ और यदि क्षमा माँगते हो तो अपना मूलधन तुमको मिलेगा और तुम किसी की हानि न करो और न कोई तुम्हारी हानि करेगा। (२७९) और यदि कोई विवश तुम्हारा ऋणी हो तो अच्छी दशा तक की आज्ञा दो और यदि समझो तो तुम्हारे लिए यह अधिक अच्छा है कि उसको भूल ऋण भी छोड (२८०) और उस दिन से डरो जब कि तुम अल्लाह की ओर लौटाये जाओगे। फिर प्रत्येक व्यक्ति को उसके किये का पूरा-पूरा बदला दिया जायगा और मनुष्यो पर अन्याय न होगा। (२८१) (रुकू ३८)

ऐ धर्मवालो*! जब तुम एक निश्चित अवधि तक उधार का लेन-देन करो तो उसको लिख लिया करो और यदि तुम को लिखना न आता हो तो तुम्हारे बीच मे कोई लिखने वाला न्याय से लिख दे और जिससे लिखवाओ तो उस लिखने वाले को चाहिये कि लिखने से मना न करे जिस प्रकार ईश्वर ने उसको सिखाया है उसी प्रकार उसको भी चाहिए कि लिख दे और जिसकी ओर ऋण निकलेगा अर्थ बोलता जाय और अल्लाह से डरे वही उसके काम का सभालने वाला है और अधिकार मे से किसी प्रकार की काँट-छाँट न करे, जिसकी ओर ऋण निकलेगा यदि वह नासमझ हो या दुर्बल हो या स्वय अर्थ स्पष्ट न कर सकता हो तो उसका पक्ष न्याय के साथ लिखे हुए का अर्थ बोलता

जाय और अपने मनुष्यों मे से जिन पर तुम्हें विश्वास हो ऐसे दो पुरुषो को साक्षी कर लिया करो, फिर यदि दो पुरुष न हो तो एक पुरुष और स्त्रियो को कि उनमे से कोई एक भूल जायगी तो एक दूसरे को स्मरण करायेगी और जब साक्षी बुलाये जायँ तो मना न करे और अवधि का मामला छोटा हो या बडा उसके लिखने मे आलस्य न करा ईश्वर के समीप बहुत ही मुन्सिफाना है और साक्षी के लिए भी यही ढग बहुत ही ठीक है और अधिकतर सोचने के योग्य है, कि तुम शक न करो परन्तु सौदा नकद दाम से हो जिसको तुम हाथो-हाथ आपस मे लिया दिया करते हो तो उसके न लिखने मे तुम पर कुछ पाप नही और जब कि क्रय विक्रय करो तो साक्षी कर लिया करो और लिखने वाले को किसी प्रकार की हानि न पहुचाया जाय और न साक्षी को और-यदि ऐसा करोगे तो यह तुम्हारा पाप है और अल्लाह से डरो क्योंकि अल्लाह तुमको सिखाता है और अल्लाह सब कुछ जानता है। (२८२) यदि यात्रा मे हो और तुमको कोई लिखने वाला न मिले तो गिरवी पर अधिकार रक्खो, बस यदि तुम मे से एक का एक विश्वास करे तो जिस पर विश्वास किया गया है अर्थात ऋण को चुका दे और ईश्वर से जो उसके काम का बनाने वाला है डरे और साक्षी को न छिपाओ और जो उस को छिपायेगा तो वह हृदय का खोटा है और जो कुछ भी तुम करते हो अल्लाह को सब का ज्ञान है। (२८३) (रूकू ३९)

जो कुछ नभ मे और जो कुछ पृथ्वी मे है अल्लाह ही का है और जो तुम्हारे हृदय मे है चाहे उनको प्रकट करो या उस को छिपाओ अल्लाह तुमसे उसका हिसाब लेगा फिर जिसको चाहे क्षमा करे या दण्ड दे और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर अधिकार रखता है। (२८४) मोहम्मद इस पुस्तक को मानते है जो उसके पालनकर्ता की ओर से उन पर अवतरित हुई है और पैगम्बर के साथ और मुसलमान भी सब अल्लाह और फरिश्तो और उस की पुस्तको और उसके पैगम्बरो पर विश्वास

किया, हम ईश्वर के पैगम्बरो मे से किसी एक को भिन्न नहीं समझते और बोल उठे हमने सुना और विश्वास किया। ऐ पालनकर्ता तेरी कृपा चाहिए और तेरे ही पास लौट कर जाना है। (२८५) अल्लाह किसी व्यक्ति पर उसकी शक्ति से अधिक बोझ नही डालता। जिसने अच्छे काम किये उसका बदला उसी के लिए है जिसने बुरे काम किये उनका दण्ड भी उसीके लिए है। ऐ हमारे पालनकर्ता यदि हम अनजान मे भूल जाँय या चूक जाँय तो हमको न पकड और ऐ हमारे पालन-कर्ता जो हमसे पहले हो गये हैं उनकी तूनें परीक्षा की थी वैसी परीक्षा हमारी न ले और ऐ हमारे पालनकर्ता इतना भार जिसे कि उठाने की हममे शक्ति नही है उसे हमसे न उठवा और हमारे अपराधो पर ध्यान न दे और हमारे अपराधो को क्षमा कर और हम पर दया कर तू ही हमारा स्वामी हैं। हमे काफिरो के विरुद्ध सहायता दे। (२८६) (रुकू ४०)

सूरे आल इमरान

सूरे आल इमरान मदीने में अवतरित हुई उसमें २०० आयतें और २० रुकू हैं

(आरम्भ) अल्लाह के नाम से जो बहुत ही दया वाला तथा कृपालु है। अलिफ, लाम, मीम (१) अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूजित नही है। वह अविनाशी है व ससार का सभालने वाला है (२) उसीने तुम पर यह पुस्तक उचित अवतरित की जो उन पुस्तको को प्रमाणित करती है, जो उससे पहले की है और उसी ने प्रथम मनुष्यो को ज्ञान के लिए तौरात और इन्जील भेजी, उसीने और वस्तुओ को भी बनाया जिससे सत्य झूठ का भेद प्रगट होता है। (३) जो खुदा की आयतो को सुन कर नहीं मानते हैं, निस्सदेह उनको कठोर दण्ड मिलेगा और अल्लाह बहुत

बदला लेनेवाला है। (४)अल्लाह से कोई वस्तु पृथ्वी मे और नभमे छिपी नहीं। (५) वही हैं जो माता के उदर मे जैसा चाहता है, तुम्हारा रूप बनाता है। उसके अतिरिक्त कोई प्रार्थना के योग्य नही वह प्रबल औपचारिक है। (६) ऐ पैगम्बर वही है जिसने तुम पर यह पुस्तक भेजी जिसमे से कुछ आयते पक्की है जिससे स्पष्ट है वह वास्तविक पुस्तक हैऔर दूसरी सदेह मे डालने वाली जो कई अर्थ देने वाली हैं तो जिन मनुष्यो के हृदय मे कपट है वह तो कुरान की उन्ही सदिग्ध आयतो के पीछे पड़े रहते हैं, जिस्से विरोध उत्पन्न करे और उनके वास्तविक अर्थ की खोज लगावें। यद्यपि अल्लाह के अतिरिक्त उनका वास्तविक अर्थ किसी को प्रतीत नही और जो विद्या मे बडी पैठ रखते हैं, वह तो इतना ही कह कर रह जाते हैं कि इस पर हमारा विश्वास है। सब हमारे पालनकर्ता की ओर से है। यह बात वही समझते हैं, जिनको सूझ है। (७) हमारे पालनकर्ता हमे सीधे मार्ग पर लाये। पीछे हमारे हृदयो को डावाडोल न कर और अपनी सरकार से हम पर कृपा कर दे, निस्सदेह तू बडा देने वाला है। (८) ऐ हमारे पालनकर्ता ! तू एक दिन निस्सदेह मनुष्यो को एकत्रित करेगा। अल्लाह वचन के विरुद्ध कार्य नही किया करता। (९) (रुकू १)

जो मनुष्य काफिर हैं, अल्लाह के यहाँ न तो उनके धन ही कुछ काम आयेंगे और न उनकी सतान ही और यही नरक के ईंधन हैं।

---

*कुरान मे दो प्रकार की आयतें हैं—एक मुहकम दूसरी मुतशाबिह मुहकम वह वाक्य है जिनका अर्थ स्पष्ट है और इसलिए उनका समझना सरल है। मुतशाबिह वे हैं जिन को कई पहलुओ से समझ सकते हैं या वे अक्षर हे जिन का तात्पर्य कोई नही जानता जैसे अलिफ, लाम, मीम।

**मुसलमान मुहकम आयतो पर अमल करते हैं और मुतशाबिह पर यकीन रखते हैं। उनके मतलब के पीछे नहीं पड़ते।

(१०) इनकी भी फिरऔन वालो और उन से पहले वालो मी गति होनी है। जिन्होने आयतो को झूठा किया था, तो अल्लाह ने उनको उनके अपराधो के बदले धर पकडा और अल्लाह की मार बडी कठिन है। (११) ऐ पैगम्बर जो मनुष्य नही मानते उनसे कह दो कि शीघ्र ही तुम हार जाओगे और नरक की ओर भेजे जाओगे। वह बुरा सामान है। (१२) उन दो गुटो मे तुम्हारे लिए ईश्वरीयलीला की निशानी प्रमाणित हो चुकी है, जो एक दूसरे से बदर के युद्ध लड गये। एक गुट मुसलमानों का तो ईश्वर के मार्ग मे लडता था और दूसरा काफिरो का था जिनको आँख देखते मुसलमानो का गुट अपने से दूना दिखाई दे रहा था और अल्लाह अपनी सहायता से जिसको चाहता है बल देता है। इसमे सन्देह नही कि जो मनुष्य सूझ रखते हैं, उनके लिए इसमे ज्ञान है। (१३) मनुष्यों की इच्छित वस्तुएँ जैसे पत्नियाँ पुत्रियाँ, सोने-चाँदी के बडे-बडे ढेरो अच्छे-अच्छे घोडो चतुष्पदो (जन्तु) और खेती के साथ मन बहलावा भला प्रतीत होता है। यद्यपि यह साँसारिक जीवन के क्षणिक सामान हैं और अच्छा ठिकाना तो उसी अल्लाह के यहाँ है। (१४) ए पैगम्बर इन से कहो कि मैं तुमको इनसे बहुत अच्छी वस्तु बताऊँ, वह यह कि जिन मनुष्यो ने सयम का व्रत लिया उसके लिए उनके पालनकर्ता के यहाँ उपवन हैं। जिनके लिए नहरे बह रही है और वह उनमे सदैव रहेंगे और उपवन के अतिरिक्त पवित्र पत्नियाँ हैं और ईश्वर की प्रसन्नता प्राप्त होती है और अल्लाह मनुष्यो को देख रहा है। (१५) वह मनुष्य यह कहते हैं कि हमारे पालनकर्ता पर हमने विश्वास किया है, तू हमारे अपराध क्षमा कर और हमको नरक के दण्ड से बचा। (१६) जो सतोप करते है सत्य बोलनेवाले है और ईश्वर के मार्ग मे व्यय करने वाले हैं और वे अन्तिम रात्रि के समय मे क्षमा चाहते हैं। (१७) अल्लाह इस बात की साक्षी देता है कि उसके अतिरिक्त कोई भी पूज्य नही। फरिश्ते और विद्वान भी साक्षी देते हैं कि वही न्याय का सभालनेवाला है उसके अतिरिक्त कोई पूज्य नही। वह प्रबल शक्तिशाली है। (१८) धर्म तो ईश्वर के निकट यही

इस्लाम है। पुस्तकवालो ने तो पता होने के पश्चात आपस की हठ से भेद डाला है और जिस व्यक्ति ने ईश्वर की आयतो से मना किया, उससे अल्लाह को हिसाब लेते कुछ समय नही लगती। (१९) बस, ऐ पैगम्बर यदि इस पर भी तुमसे विवाद करें, तो कह दो कि मैंने और मेरे चाहनेवाले ने ईश्वर के समक्ष अपना सिर झुका दिया। ऐ पैगम्बर पुस्तकवाले और अरब के जाहिलो से कहो कि तुम भी इस्लाम मानते हो या नही, यदि इस्लाम मानें, तो वे सत्य मार्ग पर आ गये और यदि मुँह मोड़ें तो मोडें तेरा कर्तव्य मेरा आदेश* पहुँचा देना भार है और बस। अल्लाह मनुष्यो को खूब देख रहा है। (२०) (रुकू २)

जो मनुष्य अल्लाह की आयतो को मना करते हैं और निरर्थक पैगम्बरो का बध करते हैं और उनका भी वध करते हैं जो न्याय करने को कहते है तो ऐसे मनुष्यो को पीडाजनक दण्ड का शुभ सम्वाद सुना दो। (२१) जिनका सब करा कराया ससार और प्रलय दोनो मे अकारथ है तथा कोई उनका मददगार नही है। (२२) ऐ पैगम्बर क्या तुमने उस पर दृष्टि नही डाली, जिनको पुस्तक मे से एक भाग मिला था। उनको अल्लाह की पुस्तक की ओर बुलाया जाता है जिससे वह पुस्तकें उनका झगड़ा चुका दे। इस पर भी उनमे का एक गुट भूल से फिर बैठा है।** (२३) यह इसलिए है कि उनका कहना है कि हमे नरक की अग्नि छुएगी नही, और छुएगी भी तो बस गिनती के थोडे ही दिन और असत्य बातें यह करते रहे हैं, उसी ने इनको इनके धर्म मे धोखा दे रखा है। (२४) प्रलय के दिन जिसके आने मे कुछ भी

---

*नबी का काम यही है कि जो आदेश या ज्ञान ईश्वर की ओर से उसको मिले, उसे दूसरों को समझाये। मानना न मानना सुननेवालों का काम है।

*आकाशी ग्रंथ तौरात के अर्थो का स्वार्थी विद्वान अनर्थ करने लगे थे। इस प्रकार अपने मान्य धर्मग्रंथ से भी विमुख थे।

सन्देह नही, उनकी कैसी दशा बनेगी जबकि हम उनको एकत्रित करेंगे और प्रत्येक व्यक्ति को जैसा उसने ससार मे किया है, पूरा-पूरा भर दिया जायगा। मनुष्यो पर अत्याचार नही होगा। (२५) ऐ पैगम्बर तू कह कि ईश्वर देश का स्वामी है। जिसको चाहे राज्य दे और जिससे चाहे राज्य छीन ले। और वह जिसको चाहे मान दे और जिसे चाहे बर्बादी दे। लीला तेरे ही हाथ मे है। निस्सन्देह प्रत्येक वस्तु पर सर्व-शक्तिमान है। (२६) तू ही रात को दिन मे मिला दे और तू ही दिन को रात मे परिवर्तित कर दे और तू जड से चेतन तथा चेतन से जड कर दे और जिसको चाहे असीम धन दे। (२७) मुसलमानो को चाहिए कि मुसलमानो को छोडकर काफिरो को अपना मित्र न बनावे और जो वैसा करेगा, तो उसका अल्लाह से कुछ सरोकार नही परन्तु किसी प्रकार यदि उनसे बचने का रहस्यमय प्रयत्न करें तो उचित है और अल्लाह तुमको अपने तेज से डराता है और अन्त मे अल्लाह की ही ओर जाना है। (२८) ऐ पैगम्बर ! इन मनुष्यो से कह दो कि जो कुछ तुम्हारे हृदय मे है, उसे छिपाओ चाहे उसे प्रकट करो, वह अल्लाह को पता है और जो कुछ नभ मे और पृथ्वी मे हैं वह सब जानता है और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर सशक्त है। (२९) जिस दिन प्रत्येक व्यक्ति अपनी की हुई भलाई और बुराई को सामने पावेगा तो इच्छा करेगा कि मुझमे और उसमे (कुकर्म के फल मे) बडी दूरी होती। अल्लाह तुमको अपने से डराता है और अल्लाह भक्तो पर बडी कृपा रखता है। (३०) (रुकू ३)।

ऐ पैगम्बर इन मनुष्यो से कह दो कि यदि तुम अल्लाह को मित्र रखते हो, तो मेरे साथी हो। अल्लाह तुमको मित्र रखे और तुम्हारे अपराध क्षमा कर दे और अल्लाह क्षमा करनेवाला कृपालु है। (३१) इनसे कह दो कि अल्लाह और पैगम्बर की आज्ञा पूर्ण करो। फिर यदि न माने, तो अल्लाह आज्ञा न माननेवालो को पसन्द नही करता। (३२) अल्लाह ने समस्त संसार के मनुष्यो पर आदम, नूह और

इब्राहीम के वश और इमरान * के वश को श्रेष्ठ चुन लिया है। (३३) इनमे एक-एक की सतान हैं। अल्लाह सब सुनता जाता है। (३४) एक समय था कि इमरान की पत्नि ने कहा कि ऐ मेरे पालनकर्ता मेरे उदर मे जो शिशु है उसको मैं स्वतन्त्र करके तेरी भेट करती हू, तू मेरी ओर से इसे स्वीकार कर। तू सुनता जानता है। (३५) फिर जब उन्होने पुत्री को जन्म दिया, तो अल्लाह को तो खूब पता था कि उन्होने किन गुणो की पुत्री को जन्म दिया है। अत. जब कहने लगी कि ऐ मेरे पालनकर्ता मैंने तो इस पुत्री को जन्म दिया है और बालक बालिका के समान नही होता और मैंने तो इसका नाम मरियम रखा है और मैं इसको और इसकी सतान को राक्षस से दूर रखकर तेरी शरण अर्थात धर्म मार्ग मे देती हू। (३६) तो उनके पालनकर्ता ने मरियम को प्रसन्नता से स्वीकार कर लिया और उसको खूब अच्छा उठाया और जकरिया को उनको रक्षक बनाया। जब-जब जकरिया मरियम के स्थान पर जाते, तो मरियम के पास खाने की वस्तु पाते, एक दिन जकरिया ने पूछा कि ऐ मरियम यह तुम्हारे पास भोजन कहाँ से आता है ? मरियम ने कहा यह ईश्वर के पास से आता है, अल्लाह जिसको चाहता है, असीम आजीविका देता है। (३७) उसी क्षण जकरिया ने अपने पालनकर्ता से प्रार्थना की कि ऐ पालनकर्ता अपने पास से मुझको भी भली सतान दो। तू तो सबकी प्रार्थना सुनता है। (३८) अभी जकरिया कोठे मे खडे वर माँग ही रहे थे कि उनको फरिश्तो ने आवाज दी कि ईश्वर तुमको एक पुत्र यहिया के उत्पन्न होने का शुभ सम्वाद देता है और वह ईश्वर की आज्ञा से मसीह को प्रमाणित करेंगे और पेशवा होगे तथा स्त्रियो की सगत से रुके रहेंगे और मेरे भक्तो मे से वे पैगम्बर होगे। (३९) जकरिया ने कहा कि

---

*इमरान हजरत मरियम के पिता थे। हजरत मूसा के बाप का नाम भी इमरान था। यह दोनो ही अर्थ निकलते हैं।

ऐ मेरे पालनकर्ता ! मेरे कैसे बालक उत्पन्न हो सकता है क्योंकि मुझ पर वृद्धावस्था आ चुकी है, और मेरी पत्नि बाँझ है* । (अल्लाह ने) कहा कि इसी प्रकार अल्लाह जो चाहता है, करता है । (४०) जकरिया ने कहा कि ऐ मेरे पालनकर्ता मेरी साँत्वना लिए कोई चिन्ह दे । तो ईश्वर ने कहा जो चिन्ह तुम माँगते हो, वह यह है कि तुम तीन दिन तक मनुष्यो से बात** न कर सकोगे । केवल सकेत करोगे । प्रात और संध्या अपने पालनकर्ता की माला फेरते रहो । (४१) (रुकू ४) ।

तब फरिश्तो ने कहा ऐ मरियम ! तुमको अल्लाह ने पसन्द किया और तुमको पवित्र व शुद्ध रखा है और तुमको सारे ससार की स्त्रियों मे से श्रेष्ठ माना है । (४२) ऐ मरियम ! अपने पालनकर्ता की आज्ञा को मानती रहो, और शीश नवाया करो और रुकूअ करने वालो के साथ रुकूअ मे झुकती रहो । (४३) ऐ पैगम्बर यह छिपी हुई सूचनाएँ है जो हम तुमको सदेश के द्वारा पहुँचाते हैं । न तो तुम उनके पास उस समय थे, जब वह लोग अपनी लेखनी नदी में डाल***रहे थे कि कौन मरियम का पालनेवाला होगा ? और ना तुम उनके पास उस समय उपस्थित थे जबकि वह आपस मे झगड रहे थे कि जिसकी लेखनी चढाव की ओर बहे, वही मरियम का सरक्षक होगा । (४४) फरिश्तो

*हजरत जकरिया की उम्र १०० वर्ष की थी और उनकी बीबी ९८ वष की थी । जब यहिया (पुत्र) का जन्म हुआ । यह जानते है कि इस अवस्था मे आदमी लड़का या लड़की की आशा नही रखता ।

**जब यहिया माँ के पेट मे आये, तो जकरिया की जबान फूल गई और तीन दिन वह किसी से बातचीत न कर सके ।

***मरियम को कौन पाले इस बात का निर्णय यूं हुआ कि दावेदारों ने अपने अपने कलम बहते पानी मे डाले । जकरिया का कलम उलटा बहा और वही संरक्षक बने ।

ने कहा कि ऐ मरियम ! ईश्वर तुमको अपनी उस आज्ञा का शुभसवाद देता है। तुम्हारे पुत्र होगा उसका नाम होगा ईसामसीह मरियम का पुत्र—लोक और परलोक मे मानवाला और ईश्वर के निकट भक्तो मे से होगा। (४५) झूले में भी और बडी आयु का होकर भी एक समान मनुष्यों के साथ बातचीत करेगा और भले मनुष्यो मे से होगा। (४६) वह कहने लगी कि ऐ पालनकर्ता मेरे कैसे बालक हो सकता है, जब की मुझको किसी पुरुष ने छुआ तक भी नही है। अल्लाह ने कहा इसी प्रकार अल्लाह जो चाहता है उत्पन्न करता है। जब वह किसी कार्य का करना ठान लेता है तो बस उसे कह देता है कि हो '(कुन)' और वह हो जाता है*। (४७) ईश्वर ईसा को नभ की पुस्तक और ज्ञान की बाते तौरात और इन्जील सिखा देगा। (४८) और इसराईल के वश की ओर जायगा पैगम्बर होगा और कहेगा में तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से तुम्हारे पास चिन्ह लेकर आया हू । जैसे मैं तुम्हारे लिए मिट्टी से पक्षी का रूप बनाकर फिर उसमे फूँक मार दूँ तो वह ईश्वर का आज्ञा से उडने लगेगा और ईश्वर ही की आज्ञा से जन्म के अन्धे और कोढियो को स्वस्थ और मृतको को जीवित करता हू और जो कुछ तुम खाकर आओ वह और जो कुछ तुमने अपने घरो मे एकत्रित कर रखा है वह तुमको बता दूँ। यदि तुममे विश्वास है तो निस्सन्देह इन बातों मे तुम्हारे लिए चिन्ह है**। (४९) तौरात जो मेरे समय मे उपस्थित है मैं उसको प्रमाणित करता हूं और एक अभिप्राय यह भी

---

*मरियम का किसी के साथ ब्याह नहीं हुआ और वह मर्दों से दूर भी रही, फिर भी उनके लड़का हुआ, जिसका नाम ईसामसीह था। जब फरिश्तो ने इस घटना की भविष्यवाणी मरियम को पहले ही की तो उसका आश्चर्य मे पड़ जाना स्वाभाविक ही था।

**मुर्दों को जिलाना, बीमारों को अच्छा करना, और अंधो को आंखवाला बनाना। यह सब ईसा के चमत्कारो मे से थे ।

है कि कुछ वस्तुएँ जो तुम्हारे लिए अनुचित हैं*उन्हें तुम्हारे लिए उचित ठहरा दूँ और मैं तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से कुछ चमत्कार लेकर तुम्हारे समीप आया हू । तुम ईश्वर से डरो और मेरा कहा मानो । (५०) निस्सन्देह अल्लाह मेरा और तुम्हारा पालनकर्ता है, अत. उसी की पूजा करो, यही सीधा मार्ग है । (५१) जब ईसा ने यहूदियो का अविश्वास देखा तो पुकार उठे कि कोई है जो अल्लाह की ओर होकर मेरी सहायता करे**हवारी बोले कि हम अल्लाह के पक्षपाती हैं । हमने अल्लाह पर विश्वास किया और तू इस बात का साक्षी है कि हम माननेवाले हैं । (५२) ऐ हमारे पालनकर्ता इन्जील जो तूने भेजी है, हमने उस पर विश्वास किया और हमने पैगम्बर का साथ दिया । तू हमको साक्षियो मे लिख ले । (५३) यहूद ने ईसा से छल किया । अल्लाह ने यहूद से छल किया अल्लाह छल करनेवालो में अच्छा छलिया है । (५४) (रुकू ५) ।

अल्लाह ने कहा ऐ ईसा ससार मे तुम्हारे रहने की अवधि पूरी करके हम तुमको अपनी ओर उठा लेंगे और काफिरो से तुमको पवित्र करेंगे और जिन लोगो ने तुम्हारा समर्थन किया है उनको प्रलय के दिन तक काफिरो पर शक्तिशाली रखेंगे, फिर तुम सबको हमारी ओर लौट कर आना है । तब जिन बातो मे तुम झगड़ रहे थे हम उनमे तुम्हारे मध्य निर्णय कर देंगे । (५५) जिन्होने तुम्हारी पैगम्बरी से मना किया, उनको तो ससार और अन्तिम रात्रि दोनो मे बड़ी कठोर ताड़ना देंगे । कोई उनका साथी न होगा । (५६) जिन मनुष्यो ने विश्वास किया तथा भले कर्म किये उनको ईश्वर पूरा बदला देगा और अल्लाह अधर्मियो को पसन्द नही करता । (५७) ऐ पैगम्बर यह जो हम तुमको

*यहूदियों पर चर्बी गाय की और बकरी की हराम थी यानी अपने धर्मानुसार वह इन वस्तुओं का प्रयोग नहीं कर सकते थे ।

**हवारी वह लोग कहलाते हैं जो हजरत ईसा के अनुयायी थे ।

पढ-पढकर सुना रहे हैं, वह ईश्वर की आयतें और संतुलित बाते है। (५८) अल्लाह के पास ईसा का उदाहरण आदम के समान है कि ईश्वर ने मिट्टी से आदम को बनाकर उसको*आज्ञा दी कि 'हो' और वह हो गया। (५९) ऐ पैगम्बर यह तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से है। कहीं तुम भी शका करनेवालो मे से न हो जाना। (६०) फिर जब तुमको सत्यता का पता लग गया, उसके पश्चात् भी तुमसे उनके बारे मे कोई विवाद करने लगे, तो कहो कि आओ हम अपने पुत्रो को बुलावे और तुम अपने पुत्रो को बुलाओ, हम अपनी स्त्रियो को बुलाये और तुम भी अपनी स्त्रियो को बुलाओ और हम और तुम भी सम्मिलित हो जाए फिर हम सब मिलकर ईश्वर के सामने गिडगिडाए और जो झूठे हो उनको ईश्वर अपमान दे**। (६१) ऐ पैगम्बर यही बात सत्य है अल्लाह के अतिरिक्त कोई प्रार्थना के योग्य नही। निस्सन्देह अल्लाह प्रबल औपचारिक है। (६२) इस पर भी यदि फिर जावें, तो अल्लाह झगडालुओ से खूब परिचित है। (६३) (रुकू ६)।

कहो कि ऐ पुस्तकवालो! ऐसी बात की ओर आओ जो हमारे और तुम्हारे मध्य समान है कि ईश्वर के अतिरिक्त किसी की पूजा न करे और किसी वस्तु को उसका समकक्ष न ठहरावे और अल्लाह के अतिरिक्त हममे से किसी को स्वामी न समझे। फिर यदि मुह मोड़ें

---

*ईसा के बिन बाप के जन्म लेने से उनका खुदा का बेटा होना नहीं सिद्ध होता। देखो ईसा के केवल एक बाप ही न थे, परन्तु उनकी माता अवश्य थीं, लेकिन आदम के तो मां-बाप दोनो ही थे। ईसाई आदम को खुदा का बेटा नही कहते, तो ईसा को ऐसा क्यो कहते हैं? खुदा ने जैसे आदम को बिन मां-बाप के पैदा किया है, वैसे ही ईसा को भी बनाया है।

**ईसाइयो का विश्वास है कि ईसा ईश्वर-पुत्र है। इसी का खण्डन है। बिना पिता के ईसा का जन्म एक ईश्वरी चमत्कार है।

तो कह दो कि तुम इस बात के साक्षी रहो कि हम तो मानते हैं। (६४) ऐ पुस्तकवालो ! इब्राहीम के विषय म क्यो झगडते हो। तौरात और इन्जील तो उनके पश्चात् अवतरित हुई। क्या तुम नही समझते (६५) तुमने ऐसी बातो मे झगडा किया जिनके विषय मे तुमको पता नही था। परन्तु जिसके विषय मे तुमको ज्ञान नही, उसमे तुम क्यो झगडा करते हो। उसे अल्लाह जानता है तुम नही जानते। (६६) इब्राहीम न यहूदी थे और न नसरानी, अपितु हमारे एक आज्ञाकारी सेवक थे और मुशरिको मे से न थे। * (६७) इब्राहीम के अधिकारी वह मनुष्य थे, जिन्होने उनका समर्थन किया अर्थात एक ईश्वर को माना ऐ पैगम्बर और विश्वास किया है और अल्लाह तो विश्वास करने वालो का मित्र है। (६८) पुस्तकवालो मे से एक गुट तो यह चाहता है कि किसी प्रकार तुमको भटका दे, यद्यपि वे स्वय ही भटकते हैं और नही समझते। (६९) ऐ पुस्तकवालो ! अल्लाह की आयतो को क्यो मना करते हो जबकि तुम मन मे मानते हो। (७०) ऐ पुस्तकवालो ! क्यो सत्य मे झूठ को मिलाते हो और सत्य को छिपाते हो जब तुम जानते हो। (७१) (रुकू ७)।

पुस्तक वालो मे से जब एक गुट समझाता है—मुसलमानो पर जो पुस्तक अवतरित हुई है, उस पर तो विश्वास करो और तत्पश्चात उससे मना कर दिया करो। सम्भवत मुसलमान भी भटक जायँ। (७२) जो तुम्हारे धर्म का समर्थन करे, उसके अतिरिक्त दूसरे का भरोसा न करो। कहो कि उपदेश तो वही है जो अल्लाह उपदेश देता है, जैसा

---

*हजरत इब्राहीम को सब अरब वाले अपना पेशवा मानते थे। यहूदी कहते थे—वह ईसाई थे। इसी तरह मुशरिक उनको अपने धर्म वाला जानते थे। और मुहम्मद साहब कहते थे कि न तो वह यहूदी थे, न ईसाई और न मुशरिक। वह तो एक खुदा के माननेवाले थे। इस पर ईसाई और यहूदी मुहम्मद साहब से झगडते थे।

तुमको दिया गया है वैसा ही किसी और को दिया जाय या दूसरे मनुष्य ईश्वर के पास तुमसे झगडे तो कि बडाई तो अल्लाह ही के हाथ मे है जिसको चाहे दे और अल्लाह बडा सहनशील और सब कुछ जानता है। (७३) जिसको चाहे अपनी कृपा के लिए उपयुक्त समझ ले और अल्लाह की दया बडी है। (७४) पुस्तक वालो मे से कुछ ऐसे है कि यदि उनके पास नकद रुपये का ढेर धरोहर रखवा दो तो भी तुम्हे दे दे और उनमे से कुछ ऐसे है कि एक अशर्फी भी उनके पास धरोहर रखवा दो, तो वह तुम को वापिस न दे, जब तक कि हर समय उनसे मागते न रहो, यह इस लिए है कि वह कहते हैं कि मूर्खों के अधिकार मार लेने की हमसे पूछ-ताछ नही है और वे जान बूझ कर अल्लाह पर झूठ बोलते हैं। (७५) क्यो नही व्यक्ति अपना बचन पूरा करे और बुरे कामो से बचे, अल्लाह ऐसे बचने वालो को मित्र रखता है। (७६) जो मनुष्य ईश्वर से की गई प्रतिज्ञा और अपनी कसमों को थोडी के लिये त्याग देते है इनका प्रलय मे कुछ भाग नही और प्रलय के दिन ईश्वर इन से बात भी नही करेगा, न इनकी ओर देखेगा, न इनको पवित्र करेगा और इनके लिए कठिन दण्ड है। (७७) इन्ही मे एके पन्थ है जो पुस्तक पढते समय अपनी जिह्वा को मरोडते है जिससे तुम समझो कि वह पुस्तक का भाग है यद्यपि वह पुस्तक का भाग नही है और कहते हैं यह अल्लाह के पास से है यद्यपि वह अल्लाह के पास से नही और जान-बूझ कर अल्लाह पर झूठ बोलते है। (७८)किसी मनुष्य को उचित नही कि ईश्वर उसको पुस्तक बुद्धी और पैगम्बरी दे—और वह मनुष्यो से कहने लगे कि ईश्वर को छोड़ कर मुझे मानने वाले बनो तुम तो ईश्वर को मान कर चलो जिस प्रकार तुम पुस्तक पढाते रहे हो और पढ़ते रहे हो। (७९) वह तुम से नही कहेगा कि फरिश्तो और पैगम्बरो को ईश्वर मानो—तुम तो इस्लाम मान चुके हो और वह इसके पश्चात क्या तुम्हे मना करने को कहेगा ? (८०) (रुकू ८)

अल्लाह ने पैंगम्बरो को वचन दिया है कि हमने तुमको पुस्तक और वुद्धि दी है अत. यदि फिर कोई और पैंगम्बर तुम्हारे पास आयेगा और जो तुम्हारे पास पुस्तकें हैं उनको प्रमाणित करेगा तो देखो अवश्य उस पर विश्वास करना और अवश्य सहायता करनेवालो क्या तुमने स्वीकार कर लिया ? और इन बातों पर मेरा दायित्व लिया ? सब पैंगम्बर बोले हम स्वीकार करते हैं। कहा अच्छा तो साक्षी रहो और साक्षियो मे मैं भी तुम्हारे साथ हू।(८१) तो इसमे पीछे जो कोई फिर जावे तो वही मनुष्य आज्ञा को टालने वाले हैं। (८२) यह मनुष्य अल्लाह के धर्म के अतिरिक्त किसी और धर्म की खोज मे है यद्यपि जो मनुष्य नभ और पृथ्वी पर हैं। प्रसन्नता या विवशता से उसकी ओर सबको लौटकर जाना है। (८३) कहो हमने अल्लाह पर विश्वास किया और जो पुस्तक हम पर अवतरित है उस पर और जो पुस्तक इब्राहीम, इस्माईल, इसहाक, याकूब की सतान पर उतरी उन पर और मूसा और ईसा और पैगम्बरों को जो पुस्तकें उनके पालनकर्ता की ओर से मिली हम उनमे से किसी को भिन्न नही समझते और हम उसी को मानते हैं। (८४) जो व्यक्ति इस्लाम के अतिरिक्त किसी और धर्म की खोज करे तो ईश्वर को उसका वह धर्म स्वीकार नही और वह प्रलय मे हानि पाने वालो मे से होगा। (८५) ईश्वर ऐसे मनुष्यो को क्यो सूचना देने लगा जो विश्वास किये पीछे मना करने लगे और स्वीकार कर चुके थे कि पैगम्बर सच्चा है और उनके पास स्पष्ट प्रमाण भी आ चुके। अल्लाह अन्यायियों को सूचना नही दिया करता। (८६) ऐसे मनुष्यो को दण्ड यह है कि इनको ईश्वर फरिश्तों की और मनुष्य से सब से अपमानित। (८७) और उसी मे सदेव रहेंगे। न तो इनका दण्ड ही हलका किया जायेगा और न उनको छुट्टी ही दी जायगी। (८८) परन्तु जिन मनुष्यो ने तत्पश्चात क्षमा माँगी और सुधार कर लिया तो अल्लाह क्षम्य तथा कृपालु है। (८९) जो विश्वास करके पीछे फिर बैठे और उनकी अस्वीकृति वढ़ती गयी तो ऐसो की

क्षमा प्रार्थना किसी प्रकार भी स्वीकृत नही होगी और यही मनुष्य भटके हुए हैं। (९०) वह जो लोग काफिर हुए और अस्वीकृति की दशा मे मर गये उनमे से कोई व्यक्ति पृथ्वी के समान भी सोना बदले मे देना चाहे तो कभी भी स्वीकार नही किया जायगा। यही मनुष्य हैं जिनको कष्टप्रद दण्ड मिलेगा और उनका कोई भी सहायक नही होगा। (९१) (रुकू ९)



चौथा पारा (लन्तना)

जब तक तुम अपनी प्रिय वस्तुओ मे से दान न करो भलाई प्राप्त नही करोगे। (९२) जो तुम दान करते हो अल्लाह को ज्ञात है। (९३) जो वस्तु याकूब ने अपने लिए पाप समझ ली थी उसको छोड कर तौरात के अवतरण से पूर्व खाने की सब वस्तुऐं याकूब के पुत्रो के लिए थी कहो कि यदि तुम सच्चे हो तो तौरात ले आओ और उसको पढो। (९४) फिर इसके पश्चात भी जो कोई अल्लाह पर झूठ लगाये वही मनुष्य अन्यायी है। (९५) कहो कि अल्लाह ने सत्य भाषण किया अत इब्राहीम के ढग का समर्थन करो जो एक ईश्वर को मानते थे और मुशरिको मे से न थे। (९६) मनुष्यो के लिए जो प्रथम घर ठहराया गया वह यही है जो मक्के मे है। यह उन्नतिशील है और समस्त ससार के मनुष्यो के लिए एक पाठ है। (९७) इसमे बहुत से स्पष्ट चिन्ह हैं। इब्राहीम के खडे होने के स्थान पर और इस घर मे जो आ उपस्थित हुआ, उसे सुख प्राप्त होगा। मनुष्यो का कर्त्तव्य है कि ईश्वर के लिए काबे के घर की हज्ज करे जिसमे उस तक पहुचने की शक्ति हो और जो अकृतज्ञता करे तो अल्लाह उन मनुष्यो का ध्यान नही रखता (९८) कहो कि ऐ पुस्तकवालो ! ईश्वर के भाषण को भी क्यो अस्वीकार करते हो और जो कुछ भी तुम कर रहे हो अल्लाह उसको

देखता है। (९९) कहो कि ऐ पुस्तकवालो ! जान-बूझ कर अल्लाह के मार्ग मे कमी निकाल निकालकर विश्वास करनेवालो को उससे क्यो रोकते हो और जो कुछ भी तुम कर रहे हो अल्लाह उससे अज्ञान नही हैं। (१००) मुसल्मानो ! यदि तुम पुस्तकवालों के किसी गुट का भी कहा मानोगे तो वह तुम्हारे विश्वास किये पश्चात् तुम को फिर काफिर बना छोडेगा। (१०१) तुम किस प्रकार मना करने लगोगे जबकि अल्लाह की आयते तुमको पढ-पढकर सुनाई जाती है और उसके रसूल तुममे उपस्थित हैं और जो व्यक्ति अल्लाह को दृढता से मानते रहे, तो वह सीधे मार्ग पर आगया। (१०२) (रुकू १०)

ऐ धर्म वालो ! अल्लाह से डरो जैसा उससे डरने का हक है और तुम इस्लाम पर ही मरना। (१०३) और तुम सब दृढता से अल्लाह की रस्सी पकडे रहो और आपस मे फूट न डालो और अल्लाह की वह कृपा स्मरण करो जब तुम आपस मे मक्के-मदीने वाले शत्रु थे फिर अल्लाह ने तुम्हारे हृदय मे प्रेम उत्पन्न किया और तुम उसकी कृपा से एक दूसरे के भाई हो गये और तुम आगे नरक के किनारे थे फिर उसने तुमको उससे बचा लिया। इसी प्रकार अल्लाह अपनी आज्ञाएँ तुमसे स्पष्ट रूप से कहा करता है जिससे तुम सच्चे मार्ग पर आ जाओ। (१०४) तुम मे से एक ऐसा गुट भी होना चाहिए जो शुभ कामो की ओर बुलाये और अच्छे काम करने को कहे और बुरे कामो से मना करें और ऐसे ही लोग अपनी कामना को पहुचेंगे। (१०५) और उन जैसे न बनो जो बिछुड गये और अपने पास स्पष्ट आज्ञाऐ लाए पश्चात आपस मे भेद डालने लगे और यही है जिनको अन्तत. बडा दण्ड मिलेगा। (१०६) जिस दिन कुछ के मुँह उज्जवल और कुछ के कलुपित होगे तो जिनके मुंह कलुषित होगे उनसे कहा जायगा कि तुम विश्वास करने के पश्चात काफिर गये थे तो अपने मना करने के अपराध में नरक भोगो। (१०७) और जिनके मुंह उज्जवल होगे वह अल्लाह की कृपा के पात्र होगे वह स्वर्ग मे ही सदैव

रहेंगे। (१०८) यह सचमुच अल्लाह की आयतें है जो हम तुमको पढ-पढकर सुनाते हैं और अल्लाह सारे ससार के मनुष्यो पर अत्याचार करना नही चाहता। (१०९) जो कुछ नभ में है और जो कुछ पृथ्वी मे है सब अल्लाह ही का है और सब कामो की पहुच ईश्वर ही तक है। (११०) (रुकू ११)

तुम सब समाजो मे से जो मनुष्यो मे उत्पन्न हुए हैं भले हो क्योंकि तुम भली बात की आज्ञा करते हो और बुरी बात से मना करते हो और अल्लाह पर विश्वास रखते हो और यदि यहूदी विश्वास कर लेते तो उनके पक्ष मे भला था। उनमे से थोडो ने विश्वास किया और उनमे से अधिकतर प्राय- फिरे हुए है। (१११) दुख देने के अतिरिक्त वह कभी भी तुमको किसी प्रकार की हानि नही पहुचा सकेंगे और यदि तुमसे लड़ेंगे तो उनको तुमसे पीठ फेरतें ही बन पडेगी और उनको कहीं से सहायता नहीं मिलेगी। (११२) जहां देखो कोप छाया हुआ है। परन्तु अल्लाह के द्वारा, तथा और ईश्वर के कोप से वे पीडित हैं और निराश्रितता उनके पीछे पडी है। यही उसका दण्ड है कि वह अल्लाह की आयतो से मना करते थे और पैगम्बरो को व्यर्थ मार डालते थे और यह दण्ड न मानने और सीमा से बढ जाने के कारण था। (११३) पुस्तक वाले सब समान नही है कुछ ऐसे भी हैं जो रातो को खडे रहकर ईश्वर की आयतें पढते और शिर झुकाते हैं। (११४) अल्लाह और प्रलय पर भरोसा रखते है, अच्छे काम करने को कहते हैं, बुरे कामो से मना करते हैं। तथा अच्छे कामो मे दौड पड़ते है यही भले मनुष्य हैं। (११५) भलाई किसी प्रकार की भी करें ऐसा कदापि न होगा कि उनको उस भलाई का मान नही किया जावे और अल्लाह सयमी से खूब परिचित हैं (११६) जो काफिर हैं उनका धन और सतान अल्लाह के पास कदापि उनके कुछ काम न आयेगी और यही मनुष्य नारकीय हैं और यह सदैव नरक ही मे रहेगे। (११७) ससार के इस जीवन मे जो कुछ भी यह मनुष्य व्यय करते हैं उसका

उदाहरण उस वायु जैसा है जिसमे कडी सर्दी हो वह उन मनुष्यों के खेत को जा लगे और नष्ट करे जो अपने ही लिए अत्याचार करते थे और अल्लाह ने उन पर अत्याचार नही किया अपितु वह अपने ऊपर स्वय ही अत्याचार किया करते थे। (११८) ऐ धर्म वालो ! अपने मनुष्य छोडकर किसी विरोधी को अपना भेदी मत बनाओ कि यह मनुष्य तुम्हारी बुराई मे कुछ कमी नही रखना चाहते हैं जिससे तुमको कष्ट पहुचे। शत्रुता तो इनकी बातो से प्रकट हो ही चुकी है और जो इनके हृदय में है वह उससे भी बढ कर है, हमने तुमको पते की बातें बता दी हैं यदि तुम मे बुद्धि है। (११९) सुनो तुम कुछ ऐसे लोग हो कि उनसे मित्रता रखते हो और वह तुमसे प्रेम नही रखते और तुम ईश्वर की सब पुस्तको को मानते हो और वे जब तुमसे मिलते हैं तो कह देते हैं कि हमने भी विश्वास किया और जब अकेले होते है तो मारे क्रोध के तुम पर अपनी उंगलियाँ काटते हैं। उनसे कहो कि अपने क्रोध मे जल मरो। जो तुम्हारे हृदय मे है अल्लाह को सब ज्ञात है। (१२०) यदि तुमको कोई लाभ पहुचे तो उनको बुरा लगता है यदि तुमको कोई हानि पहुचे तो उससे प्रसन्न होते हैं और यदि तुम सतोष करो और पापो से बचे रहो तो उनके छल कपट से तुम्हारा कुछ भी बिगडने का नही क्योकि जो कुछ भी यह कर रहे हैं अल्लाह के वश मे हैं। (१२१) (रुकू १२)

एक समय वह भी था कि प्रात. अपने घर से चले मुसलमानो को युद्ध के अवसरो पर बैठाने लगे और अल्लाह सुनता जानता है। (१२२) उसी समय की घटना है कि तुम मे से दो* गुटो ने साहस तोड़ देना

---

* इनके नाम थे ओस और खिजरज का कबीला। यह दोनो कबीले ऊहद के युद्ध मे बड़ी वीरता से लडे, लेकिन उनको बहकाने का भर-सक प्रयत्न भी मुनाफिको की ओर से हुआ था और इनकी हिम्मत भी थोड़ी देर के लिए टूट गई थी।

चाहा परन्तु अल्लाह उनके ऊपर था और मुसलमानो को चाहिए अल्लाह पर भरोसा रक्खें। (१२३) जिस समय बदर का युद्ध था उसमे अल्लाह तुम्हारी सहायता कर ही चुका था जब तुम्हारी कुछ भी स्थिरता न थी अत अल्लाह से डरो। आश्चर्य नही तुम कृपा भी मानो। (१२४) जबकि तुम मुसलमानो को समझा रहे थे कि क्या तुमको इतना पर्याप्त नही कि तुम्हारा पालनकर्ता तीन सहस्र फरिश्ते भेजकर तुम्हारी सहायता करे। (१२५) अपितु यदि तुम दृढ बने रहो बचो और शत्रु अभी इसी क्षण तुम पर चढ आयें तो तुम्हारा पालनकर्ता पाँच सहस्र फरिस्तो से तुम्हारी सहायता करेगा। (१२६) यह सहायता तो ईश्वर ने केवल तुम्हें प्रसन्न करने को की है और इसलिए कि तुम्हारे हृदय मे इससे सन्तोष हो अन्यथा सहायता तो अल्लाह ही की ओर से है जो बडा शक्तिशाली* है। (१२७) यह सहायता इसलिए थी कि काफिरो को कम करे या अपमानित करे जिससे असफल होकर वापिस चले जावे। (१२८) तुम्हारा तो कुछ भी अधिकार नही चाहे ईश्वर उन पर दया करे या उनके अत्याचारो पर दृष्टि करके उनको दण्ड दे। (१२९) और जो कुछ नभ मे तथा पृथ्वी मे है सब अल्लाह ही का है जिसको चाहे क्षमा करें जिसको चाहे दण्ड दे और अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है। (१३०) (रुकू १३)

ऐ धर्म वालो! दुगना चौगुना ब्याज मत खाओ और अल्लाह से डरो। इसमे आश्चर्य नही की तुम मनमाना फल पाओगे। (१३१) और नरक से डरते रहो जो काफिरों के लिए प्रस्तुत है। (१३२) और अल्लाह और रसूल की आज्ञा मानो इसमे आश्चर्य नही कि तुम पर दया की जायगी। (१३३) और अपने पालनकर्ता की देन और

---

* बदर के युद्ध में आकाश से कई हजार फरिश्ते मुसलमानों की सहायता के लिए उतरे थे। यहाँ कहा गया है कि खुदा ही की सहायता से विजय होती है फरिश्तों का उतरना कुछ आवश्यक नहीं हैं।

स्वर्ग की ओर लपको जिसका विस्तार पृथ्वी और नभ जैसा है तथा उन संयमियों के लिए प्रस्तुत है। (१३४) जो अच्छी दशा तथा दुर्दशा में दोनों दशाओ में धर्म पर व्यय करते और क्रोध को रोकते और मनुष्यों को क्षमा करते हैं ऐसे भलाई करने वालों को अल्लाह चाहता है। (१३५) और वे मनुष्य जब कोई स्पष्ट पाप कर बैठते हैं या अपनी हानि कर लेते हैं तो ईश्वर को स्मरण करके अपने पापों की क्षमा माँगने लगते हैं और ईश्वर के अतिरिक्त अपराधों को क्षमा करने वाला कौन है और जो जान-बूझकर उस पर हठ नही करते। (१३६) यही लोग हैं जिनका बदला उनके पालनकर्ताकी ओर से क्षमा है और वह उपवन हो जिसके नीचे नहरें बह रही होगी। वे उनमें सदैव रहेंगे और शुभ कर्म करने वालो के लिए भी अच्छे फल हैं। (१३७) तुमसे पहले भी घटनाएं घटित हुई हैं अतः देश मे चलो फिरो और देखो कि जिन मनुष्यों ने झुठलाया उनका कैसा परिणाम मिला। (१३८) यह मनुष्यो को समझाने का है वैसे सावधानी और शिक्षा तो उससे वही पकड़ते हैं जिनके हृदय में भय है। (१३९) साहस न त्यागो और न घबराओ यदि तुम धर्म पर हो तो तुम्हारी ही विजय होगी। (१४०) यदि तुमको यह अड़गा लगा तो उनको भी इसी प्रकार का अडंगा लग चुका है और यह सयोग है जो मेरे सावधान करने से दिन के फेर आया करते हैं और यह इसलिए कि ईश्वर ईमानदारो का पता लगाये और तुममें से कुछ को शहीद बनाये। अन्यथा ईश्वर अन्याय को नहीं चाहता। (१४१) यह अवश्यंभावी था कि अल्लाह मुसलमानों को शुद्ध कर दे और काफिरों की शक्ति तोड़ दे। (१४२) क्या तुम इस विचार मे हो कि स्वर्ग में पहुच जायेंगे। यद्यपि अभी तक अल्लाह ने न तो उन लोगो की परीक्षा की जो तुममें से युद्ध करने वाले हैं और न उन लोगो की परीक्षा की जो युद्ध मे स्थिर रहते हैं। (१४३) और तुम तो मृत्यु के आने से पहले मरने* की प्रार्थना किया

---

* मुसलमान शहदत की इच्छा रखते थे। जब ऊहद में बहुत-से

करते थे सो अब तो तुमने उसको अपनी आँखो से देख लिया है। (१४४) (रुकू १४)

मुहम्मद तो और कुछ नही केवल एक पैगम्बर है और बस इनसे पहले भी रसूल हो गये हैं यदि मर जावे या मारे जावें तो क्या तुम फिर लौट* जाओगे और जो अपने उल्टे पैरो कुफ्र की ओर लौट जायगा वह ईश्वर का तो कुछ भी नही बिगड़ सकेगा हाँ जो मनुष्य उसको धन्यवाद करते है उनका ईश्वर शीघ्र कल्याण करेगा। (१४५) और कोई भी व्यक्ति ईश्वर भी आज्ञा बिना मर नही सकता, जीवन लिखा हुआ है और जो व्यक्ति ससार मे बदला चाहता है मैं उसका बदला यही दे देते हैं और जो प्रलय मे बदला चाहता है मैं उस को वही दूगा और जो मनुष्य धन्यवाद देते है मैं उन को शीघ्र बदला दूगा। (१४६) और बहुत से पैगम्बर हो गये हैं जिनके साथी आकर ईश्वर को मानने वाले शत्रुओ से लडे, तो जो कष्ट उन को अल्लाह के मार्ग मे प्राप्त हुआ उस को कारण न तो उन्होने हिम्मत हारी और न थके और न दबे और अल्लाह स्थिर रहनेवालो को मित्र रखता है। (१४७) और इसके अतिरिक्त उनके मुँह से एक बात भी तो नही निकली कि ऐ हमारे पालनकर्ता! हमारे पाप क्षमा कर और हमारे कामो मे जो हमसे अधिक अत्याचार हो गये हैं उनको क्षमा कर और हमारे पैर स्थिर रख और काफिरो के समाज पर हमे विजयी करा। (१४८)

मुसलमान मारे गये तो उन्होंने अपनी आंखों से देख लिया कि शहादत के क्या अर्थ है।

* ऊहद के युद्ध मे मुहम्मद साहब घायल होकर एक गढ़े मे गिर पड़े थे और यह खबर उड गई थी कि उनका स्वर्गवास हो गया। इसलिए कुछ मुसलमान मैदान छोडकर चले गये थे। इस पर कहा गया है कि मुसलमान तो ईश्वर के लिए लड़ते हैं। नबी की मृत्यु भी हो जाय तो उनको अपने कर्त्तव्य का पालन करना चाहिए।

तो अल्लाह ने उनको संसार मे बदला दिया। प्रलय मे भी अच्छा बदला दिया। अल्लाह भलाई करने वालो को चाहता है। (१४६) (रुकू १५)

ऐ धर्मवालों! यदि काफिरों के कहे में आ जाओगे तो वह तुमको वापिस अपने धर्म मे ले जायेंगे फिर तुम ही उल्टे हानि में आ जाओगे। (१५०) तुम्हारा सहायक अल्लाह है और उसकी सहायता सबसे बड़ी है। (१५१) हम शीघ्र तुम्हारा भय काफिरों के हृदय मे डालेगे क्योंकि उन्होने उन वस्तुओ को ईश्वर के समान वताया है जिनका ईश्वर ने कोई भी प्रमाणपत्र भी नही भेजा और उन मनुष्यो का वास नरक है जो अत्याचारियो का वुरा ठिकाना है। (१५२) और जिस समय तुम ईश्वर की आज्ञा से काफिरो का खडग से बधकर रहे थे उस समय ईश्वर ने तुमको अपना प्रण सच्चा कर दिखाया यहाँ तक कि तुमको तुम्हारी भलाई के लिए विजय दिला दी। इसके पश्चात तुम डरपोक हो गए और तुमने आज्ञा के विषय मे आपस में झगडा किया और आज्ञालघन की। कुछ तो तुममे से ससार के पीछे पड़ गये और कुछ प्रलय की चिन्ता मे लगे फिर तो ईश्वर ने तुमको शत्रुओं से फेर दिया। ईश्वर को तुम्हारी परीक्षा स्वीकार थी और ईश्वर ने तुमसे पैगम्बर के बुलाने पर और ईमानदारों पर ईश्वर की कृपा है। (१५३) ज़ब तुम भी भागे चले जाते थे तव तुम मुड़कर किसी की ओर नही देखते थे। दुख के वदले ईश्वर ने तुमको दुख पहुंचाया जिससे जव कभी तुम्हारा कोई स्वार्थ अपूर्ण रहे या तुम पर कोई संकट आन पडे तो तुम उसका दुख मत करो और तुम कुछ भी करो अल्लाह को उसका ज्ञान है। (१५४) फिर तगी के पश्चात ईश्वर ने तुम पर आराम के लिए निद्रा वनाई और उसमे से कुछ को निद्रा ने आ घेरा और कुछ जिनको अपने प्राणो की पड़ी थी अल्लाह के समक्ष निरर्थक अकर्मण्यो जैसे बुरे विचार बना रहे थे कहते थे कि हमारे वश की क्या बात है—कह दो कि सव काम ईश्वर ही के वश मे है—इनके हृदयो मे अन्य वातें भी

छिपी हुई है जिनको तुम पर प्रकट नही करते । कहते हैं कि हमारा कुछ भी वश चलता होता तो हम यहाँ मारे ही न जाते । कह दो कि तुम अपने घरो मे भी होते तो जिनके भाग्य मे मारा जाना लिखा था निकलकर अपने मृत्यु के स्थान पर उपस्थित होते । ईश्वर की इच्छा थी कि तुम्हारी हार्दिक आकाँक्षाओ की परीक्षा करें और तुम्हारे हृदय के विचार को स्पष्ट करे और अल्लाह तो सबके जी की बात जानता है । (१५५) जिस दिन दो समान आपस मे भिड गए तो तुममे से कुछ मनुष्य भाग खड़े हुए तो केवल उनके कुछ पापो के कारण शैतान ने उनके पाँव उखाड दिए पर ईश्वर ने उनको तब भी क्षमा किया । अल्लाह क्षमा करनेवाला तथा सहनेवाला है । (१५६) (रुकू १६) ।

ऐ मुसलमानो ! उन काफिर जैसे न बनो । वे अपने भाई-बन्धुओं मे जो परदेश गये हो या युद्ध करने गये हो उनसे कहा करते थे कि यदि हमारे पास होते तो न मरते और न मारे जाते । ईश्वर ने उन के ऐसे विचार इसलिए कर दिए है कि उनके हृदय मे दुःख रहे और अल्लाह ही जीवित रखता तथा मारता है । और जो कुछ भी तुम कर रहे हो अल्लाह उसको देख रहा है । (१५७) और ईश्वर के विचार से यदि तुम मारे जाओ या मर जाओ तो ईश्वर की क्षमा और कृपा उससे बढकर हैं जो तुम ससार मे एकत्रित कर लेते हो । (१५८) तुम मर गए या मारे गए तो अल्लाह ही की ओर एकत्रित होगे । (१५९) अल्लाह की बडी ही कृपा हुई कि तुम मुहम्मद इनको कोमल हृदय मिले हो और यदि तुम स्वभाव के अक्खड कठोर हृदय के होते तो यह तुम्हारे समीप से भाग जाते । तो तुम इनके अपराध क्षमा करो और इनके अपराधों की क्षमा चाहो और समस्याओ मे उनकी सलाह ले लिया करो, फिर तुम्हारे हृदय मे एक बात ठन जाय तो भरोसा ईश्वर ही पर रखना, जो मनुष्य भरोसा रखते हैं ईश्वर उनको चाहता है । (१६०) यदि ईश्वर तुम्हारी सहायता पर है तो फिर कोई भी तुमको विजित करनेवाला नही और यदि वह तुमको छोड़ बैठे तो उसके पश्चात

कौन है जो तुम्हारी सहायता को खडा हो और धर्मवालो को चाहिए कि अल्लाह ही का भरोसा रखे। (१६१) पैगम्बर को उचित नही कि कुछ भी खयानत करे और जो कोई खयानत का अपराधी होगा वह प्रलय के दिन उसको लाकर उपस्थित करेगा फिर जिसने जैसा किया है उसको उसका पूरा-पूरा बदला दिया जायगा और किसी पर अत्याचार नही होगा। (१६२) भला जो व्यक्ति अल्लाह की इच्छा का हो वह उस व्यक्ति जैसा कैसे हो सकता है जो ईश्वर के क्रोध का भागी बन गया हो और उसका ठिकाना नरक है और वह बुरा ठिकाना है। (१६३) अल्लाह के यहाँ मनुष्यो के पद है और वह मनुष्य जो कुछ कर रहे है उसको देख रहा है। (१६४) अल्लाह ने धर्मवालो पर दया की कि उनमे उन्ही मे का एक पैगम्बर भेजा जो उनको ईश्वर की आयतें पढ-पढकर सुनाता है, उनको सुधारता है, पुस्तक और कर्म की बात उनको सिखाता है पहले तो यह लोग स्पष्टतया भटके हुए मे से थे। (१६५) जब तुम पर सकट आ पडा, तो यद्यपि तुम स्वय इससे दूना सकट डाल चुके थे, तुम कहने लगे कि कहाँ से यह सकट आया यह तुम्हारे कर्म का परिणाम है। निस्सन्देह अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर शक्तिशाली है। (१६६) जिस दिन दो समान भिड गए और तुमको दुख पहुचा तो ईश्वर की आज्ञा ही थी और उसका यह भी अभिप्राय था कि ईश्वर धर्मवालो का पता लगाए। (१६७) और मुनाफिको (आगे कुछ पीछे कुछ कहनेवालो) का पता करे। मुनाफिको से कहा गया, आओ अल्लाह के रास्ते मे लडो, तो कहने लगे कि यदि हम लडाई समझते तो अवश्य तुम्हारे साथ हो लेते। यह उस दिन विश्वास की अपेक्षा अविश्वास के निकट थे। मुह से ऐसी बात कहते हैं जो इनके हृदय मे नही और जिसको छिपाते हैं अल्लाह उसे खूब जानता है। (१६८) जो बैठे रहे और अपने भाइयो के सम्बन्ध मे कहने लगे कि हमारा कहा मानते तो मारे नही जाते, उनसे कहो कि यदि तुम सच्चे हो तो अपने ऊपर से मृत्यु को हटा देना। (१६९) जो मनुष्य अल्लाह के मार्ग मे मारे गए है उनको मरा हुआ न विचारना अपितु वे अपने

पालनकर्ता के पास जीवित है। उनको आजीविका मिलती है। (१७०) जो कुछ अल्लाह ने अपनी कृपा से इनको दे रखा है उससे प्रसन्न हैं। और जो इनके पश्चात अभी इनमे आकर सम्मिलित नही हुए वह हर्ष मनाते हैं क्योकि इन पर न भय हैं और न यह उदासीन हैं। (१७१) अल्लाह के दिये पदार्थो का, उसकी दया का और इस बात का कि अल्लाह धर्मवालो के फल को अकारथ नही होने देता हर्ष मना रहे हैं। (१७२) रुकू १७)) ।

जिन मनुष्यो ने चोट खाकर भी ईश्वर और पैगम्बर की आज्ञा मानी विशेष कर ऐसे भलाई करनेवाले और संयमियो के लिए बडा फल है। (१७३) वह मनुष्य जिनको मनुष्यो ने समाचार दिया कि मनुष्यो ने तुम्हारे लिए बड़ी भीड एकत्रित की है उनसे डरते रहना तो इससे उनका विश्वास और अधिक हो गया और बोल उठे कि हमको अल्लाह प्राप्त है और वह अच्छा काम सभालनेवाला हैं। (१७४) अर्थ यह कि मनुष्य अल्लाह की वस्तुओ और कर्म से लदे हुए वापस आये और उनको कुछ हानि नही हुई और अल्लाह की इच्छा पर चलते रहे और अल्लाह की कृपा बडी है। (१७५) यह राक्षस है जो अपने मित्रो का भय दिखलाता है तो तुम उनसे न डरना और यदि विश्वास रखते हो तो मेरा ही भय करना। (१७६) जो मनुष्य नही मानते हैं तुम इन मनुष्यो के कारण उदास न होना, यह मनुष्य ईश्वर का तो कुछ भी नही बिगाड सकते, ईश्वर चाहता है कि प्रलय मे इन को कुछ भाग न दे और इन को बडा दण्ड मिलता है। (१७७) जिन मनुष्यो ने विश्वास देकर अविश्वास मोल लिया है उससे ईश्वर को तो कदाचित किसी प्रकार की हानि नही पहुचा सकेंगे अपितु इन्ही को कठिन दण्ड मिलेगा। (१७८) जो मनुष्य मना कर रहे हैं वे इस विचार मे न रहें कि हम जो उनको ढील दे रहे हैं यह कुछ इनके पक्ष मे भला है। हम तो इन को केवल इसलिए ढील दे रहे हैं कि और अपराध समेट लें और इनके लिए नरक का दण्ड है। (१७९) अल्लाह ऐसा

नहीं कि जिस दशा में तुम हो अच्छे बुरे की परीक्षा बिना इसी दशा मे धर्मवालों को रहने दे और अल्लाह ऐसा भी नही कि तुमको गैब की बातें बता दे । हाँ अल्लाह अपने पैगम्बरो मे से जिसको चाहता है चुन लेता ही तो अल्लाह और उसके पैगम्बरो पर विश्वास करो और यदि विश्वास करोगे और बचते रहोगे तो तुमको बडा फल मिलेगा। (१८०) और जिन लोगो को खुदा ने अपनी कृपा से दिया है और वह उसमे कृपणता करते हैं वह इसको अपने पक्ष मे भला न समझें अपितु वह उन के पक्ष मे खराबी है- जिस धन की कृपणता करते हैं प्रलय के दिन के निकट उसकी हसली वना कर उनके गले मे पहिनायी जायगी और नभ व पृथ्वी का स्वामी अल्लाह ही है और जो तुम कर रहे हो अल्लाह को उसका ज्ञान है। (१८१) (रुकू १८)

जो लोग अल्लाह को निरावलम्बी और अपने को धनवान बताते हैं उनकी वकवाद अल्लाह ने सुनी। यह मनुष्य जो अकारथ पैगम्बरों का वध करते चले आये हैं उसके साथ हम इनकी इस वकवाद को भी लिखे रखते हैं और इनका उत्तर हमारी ओर से यह होगा कि नरक का दण्ड भोगा करो। (१८२) यह उन्ही कामो का वदला है जिनको तुमने पहले से अपने हार्थों लिया है अन्यथा अल्लाह तो अपने मनुष्यों पर किसी प्रकार का अत्याचार नही करता। (१८३) यह जो कहते हैं कि अल्लाह ने हम से कह रक्खा है कि जव तक कोई पैगम्बर हमको ऐसी भेंट न दिखावे कि उसको अग्नि चट कर जाय तब तक हम उस पर विश्वास नहीं करते। उनसे कहो कि मुझ से पहले पैगम्बर तुम्हारे पास खुली २ निशानियाँ लाये जिसको तुम माँगते हो तो यदि तुम सच्चे होतो तुमने उनका किसलिए बध किया। (१८४) इस पर भी वह तुमको झुटलावेंगे। तुमसे पहले पैगम्बर स्पष्ट चमत्कार लाये थे और*

---

* धार्मिक छोटे-छोटे ग्रंथ सहीफे कहलाते हैं। यह भी आसमानी किताबें हैं।

छोटी पुस्तके (सहीफे) और खुली पुस्तके भी लाये थे फिर भी लोगो ने उनको झुठलाया था। (१८५) प्रत्येक को मरना है और पूरा-पूरा बदला तुमको प्रलय ही के दिन दिया जायगा तो जो व्यक्ति नरक से दूर हटा दिया गया और उसको बैकुण्ठ मे स्थान दिया गया तो समझो उसने मनमाना फल पाया और ममार का जीवन तो केवल छल की पूजी है। (१८६) तुम्हारे धन और तुम्हारी जानो मे अवश्य तुम्हारी परीक्षा की जावेगी और जिन मनुष्यो को तुमसे पहिले पुस्तक दी जा चुकी है उनसे और मुशरकीन से तुम बहुत सी हानि की बातें जरूर सुनोगे और यदि सतोष किये रहे और सयम किया तो निस्सदेह ये साहस के कार्य हैं। (१८७) और ईश्वर ने पुस्तक वालो से स्वीकृति ली कि मनुष्यो से इसका अर्थ स्पष्ट कह देना और इसको छिपाना नही परन्तु उन्होने उसको अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया और उसके बदले थोडे से दाम प्राप्त किये सो बुरा है जो यह मनुष्य ले रहे हैं। (१८८) और जो अपने किये से प्रसन्न होते हैं और जो किया नही उस पर अपनी प्रशसा चाहते हैं ऐसे मनुष्यो का कदापि विचार न करना कि यह मनुष्य दण्ड से बचे रहेंगे अपितु उनके लिए दुखदायी दण्ड है। (१८९) नभ व पृथ्वी का अधिकार अल्लाह ही को है और अल्लाह प्रत्यक वस्तु पर शक्तिशाली है। (१९०) (रुकू १९)

नभ और पृथ्वी की आकृति और रात और दिन को बदलने से बुद्धिमानो के लिए चिन्ह हैं। (१९१) जो खडे और बैठे और लेटे ईश्वर का स्मरण करते हैं और नभ तथा पृथ्वी की आकृति मे ध्यान देते हैं—हमारे पालनकर्त्ता! तूने इनको अकारथ नही बनाया तेरी जाति पवित्र है हमे नरक के दण्ड से बचा। (१९२) ऐ हमार पालन-कर्त्ता! जिसको तूने नरक मे डाला उसको तू ने नीच बनाया और दण्ड प्राप्त करने वालो का कोई भी सहायक नही होगा। (१९३) ऐ हमारे पालनकर्त्ता! हमने विज्ञाप्ति करनेवाले मुहम्मद को सुना कि वह धर्म की विज्ञप्ति कर रहे थे कि अपने पालनकर्ता पर विश्वास करो तो

हमने विश्वास कर लिया बस ऐ हमारे पालनकर्ता ! हमारे अपराध क्षमा कर और हमारे अपराधो को दूर कर और भले मनुष्यो के साथ हमको मृत्यु दे। (१९४) ऐ हमारे पालनकर्ता ! तूने जैसी प्रतिज्ञा अपने पैगम्बरो के द्वारा हमसे की है उसे पूर्ण कर और प्रलय के दिन हमको बदनाम न कर। तू वचनो के प्रतिकूल तो किया ही नही करता। (१९५) फिर उनके पालनकर्ता ने उनकी प्रर्थना मान ली कि हम तुम मे से किसी परिश्रमिक का परीश्रम निरर्थक नही जाने देंगे। पुरुष हो या स्त्री तुम सब एक जाति के हो तो जिन मनुष्यों ने हमारे लिए देश छोड़े और अपने घरो से निकाले गये, हम उनके अपराधो को अवश्य क्षमा कर देंगे। उनको ऐसे उपवनो मे प्रविष्ट करेगे जिनके नीचे नहरें बह रही होगी, यह अल्लाह के पास से फल मिलता है और अच्छा फल तो अल्लाह ही के पास है। (१९६) नगरो मे काफिरो का चलना-फिरना तुम को कही धोखे मे न डालदे। (१९७) तनिक सा लाभ है फिर इनका स्थान नरक मे है और वह बुरा स्थान है। (१९८) परन्तु जो मनुष्य अपने पालनकर्ता से डरते रहेगे उनके लिए उपवन है जिनके नीचे नहरे बह रही होगी और वह उन मे सदैव रहेगे यह केवल अल्लाह के पास है अत. भलाई करनेवालो के लिए भला है। (१९९) पुस्तक वालो मे से कुछ मनुष्य ऐसे हैं जो ईश्वर पर विश्वास रखते हैं और जो पुस्तक तुम पर अवतरित है तथा जो उन पर अवतरित हुई है उनको मानते हैं। अल्लाह के समक्ष झुके रहते है। अल्लाह की आयतों के बदले मे कम मूल्य नही लेते, यही वह मनुष्य हैं जिनके बदले पालनकर्ता के पास मे मिलेगे। ऐ ईमानवालो स्थिर रहो और सामना करने मे दृढ रहो और धर्म मे लगे रहो और अल्लाह से डरो जिससे तुम मनमाने फल पाओ। (२००) (रुकू २०)



सूरे निसा

[स्त्रियों का अध्याय]

यह मदीने मे अवतरित हुई इसमे १७७आयतें और २४ रुकू है

आरम्भ अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त दयायान तथा कृपालु है। ऐ मनुष्यो ! अपने पालनकर्ता से डरो जिसने तुमको एक व्यक्ति* मे उत्पन्न किया है उससे उसकी पत्नि को उत्पन्न किया है और उन दो से बहुत पुरुष और स्त्रियाँ फैला दिए और जिस ईश्वर का लगाव दे देकर तुम अपने कितने ही काम पूर्ण कर लेते हो उसका और अपने सम्बन्धियो का लिहाज रखा, अल्लाह तुम्हारा रखवाला है । (१) अनाथो** के धन उनको दे दो और अच्छे धन के बदले पाप का धन मत लो और उनका धन अपने धन मे मिलाकर खा-पी मत डालो। यह बडा पाप है। (२) यदि तुमको इस बात का डर हो कि अनाथो बालिकाओ मे न्याय न रख सकोगे तो अपनी इच्छा के अनुकूल दे दो और तीन-तीन चार-चार स्त्रियो से विवाह कर लो परन्तु यदि तुमको इस बात की शका हो कि उनसे समान व्यवहार न कर सकोगे तो एक ही पत्नी करना या जो तुम्हारे अधिकार मे हो उस पर सतोष करना।

---

*यानी सबसे पहले हजरत आदम को पैदा किया फिर उनकी बीवी (हव्वा) को बनाया और फिर इन्ही से आदमी की नसल चली। जितने हैं, सब आदम की संतान हैं इसलिए जात-पात का कोई प्रश्न ही नही उठता और न कोई ऊँच या नीच है। सब जन्म से एक समान है।

**जिस लड़के का बाप मर जाय उसके वारिसो को चाहिए कि उसका माल न लें। जब वह जवान हो जाय तो उसको उसके बाप का छोड़ा माल जरूर वापिस कर दें।

यह प्रयत्न उचित है। (३) स्त्रियो का उनके मिहर प्रसन्नता से दे डालो फिर यदि वह अपनी प्रसन्नता से उसमे से कुछ तुमको छोड दें तो उसका उपयुक्त प्रयोग करो। (४) धन जिसका ईश्वर ने तुम्हारे लिए अवलम्ब बनाया है मूर्खो को न दो पर उसमे से उनके खाने-पहनने मे व्यय करो तथा उनको नम्रता से समझा दो। (५) निराश्रितो को सुधारते रहो। जब विवाह के योग्य हो जाएँ उस समय यदि उनमे बुद्धिमत्ता देखो तो उनका धन उनको दे दो और ऐसा न करना कि उनके बडे होने के भय से शीघ्र ही उसका धन खा डालो। जो सामर्थ्य वाला हो उसे बचा रखना चाहिए और जिसे अत्यन्त आवश्यकता हो वह नियम के अनुसार खा ले। और जब उनका धन उन्हें सौंपने लगो तो उसके साक्षी कर लो अन्यथा हिसाब लेने को अल्लाह पर्याप्त है। (६) माता-पिता और सम्बन्धियो की छोडी हुई जायदाद मे थोडा बहुत पुरुषो का भाग है शेष उस मे *स्त्रियो का भी भाग है और वह भाग हमारा ठहराया हुआ है। (७) जब बटवारे के समय सम्बन्धी, अनाथ बच्चे और निर्धन आ उपस्थित हो तो उसमे से उनको भी कुछ दे दिया करो और उनको नम्रता से समझा दो। (८) उन मनुष्यो को डरना चाहिए कि यदि अपने पीछे निर्बल सतान छोड जाते तो उन पर उनको दया आती। अत उन्हें चाहिए कि अल्लाह से डरें और ठीक प्रकार बात करें। (९) जो मनुष्य व्यर्थ अनाथो का धन तितर-बितर करते हैं वह अपने पेट मे बस अगारे भरते है और अब नरक मे पडेगे। (१०) (रुकू १)।

तुम्हारी सतान मे अल्लाह तुमसे कहता है कि लड़के को दो लडकियो के समान भाग मिलेगा, फिर यदि लडकियाँ दो से अधिक हों तो छोडी हुई जायदाद मे उनका भाग दो तिहाई है और यदि अकेली हो तो उसको आधा। मृतक के माता-पिता दोनो मे प्रत्येक को छोडी

---

*अरब मे इस्लाम से पहले लड़कियों को अपने माँ-बाप की जायदाद मे से कुछ न मिलता था।

हुई *जायदाद का छटवाँ भाग उस दशा मे मिले कि मृतक की सतान हो और यदि उसके सतान न हो और उसके सरक्षक माँ-बाप हो तो उसकी माता को एक तिहाई भाग परन्तु यदि मृतक के भाई हो तो माता का छटवाँ भाग मृतक का वसीयत और कर्ज के दे देने के पश्चात मिलेगा। तुम अपने पिता और पुत्रो को नही जान सकते कि लाभ पहुचने के विचार से उनमे कौन-सा तुम्हारे अधिक निकट है। भागो का अधिकारी अल्लाह का ठहराया हुआ है अल्लाह निस्सन्देह जानकार है। (११) यदि तुम्हारी पत्नियाँ मर जाये तो यदि उनकी सतान नही हो तो उनके छोडे हुए धन मे तुम्हारा आधा भाग है और यदि उनके सतान है तो उनके छोडे हुए धन मे तुम्हारा चौथाई भाग है उनकी वसीयत और कर्ज चुकाने के पश्चात और यदि तुम कुछ छोड मरो और तुम्हारे कोई सतान न हो तो पत्नियो का चौथाई भाग है और यदि तुम्हारे सतान हो तो तुम्हारी जायदाद मे से पत्नियो का आठवाँ भाग है जो तुम्हारी वसीयत और कर्ज के चुकाने के पश्चात दिया जायगा और यदि किसी पुरुष या स्त्री की पूजी मे यदि उसके पिता या पुत्र न हो और उसके भाई या बहिन हो तो उनमे से प्रत्येक का छटवाँ भाग और यदि एक से अधिक हो तो एक तिहाई मे सब सम्मिलित है मृतक की वसीयत और कर्ज के चुकाने के पश्चात यदि मृतक ने औरो को हानि न पहुचाई हो। यह अल्लाह की आज्ञा है और वह जानता है तथा सहन करता है। (१२) यह अल्लाह की सीमाए है और जो अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा पर चलेगा उसको अल्लाह ऐसे उपवनो मे प्रविष्ट करेगा जिसके नीचे नहरे बह रही होगी वे उनमे सदैव रहेगे और यह बडी सफलता है। (१३) जिसने अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा न मानी और अल्लाह की सीमाओ से आगे बढ गया उसको नरक मे प्रविष्ट करेगा वह उसमे सदैव रहेगा और उसको जिल्लत की मार दी जायगी। (१४) (रुकू २)।

*** मरे की छोडी हुई जायदाद।**

और तुम्हारी स्त्रियो मे से जो स्त्री अनाचार की अपराधिन हो तो उन पर अपसे मनुष्यो मे से चार की साक्षी लो, यदि साक्षी प्रमाणित करे तो उनको घरो मे वन्द रखो यहाँ तक कि मृत्यु उनका काम समाप्त कर दे या अल्लाह उनके लिए कोई मार्ग निकाले। (१५) और जो दो व्यक्ति तुम मे से अनाचार के अपराधी हो तो उनको मारो पीटो फिर यदि क्षमा मागें और अपनी दशा सुधार लें तो उनका विचार छोड़ दो क्योकि अल्लाह वडा क्षमा प्रार्थना स्वीकार करने वाला कृपालु है। (१६) पर अल्लाह प्रार्थना स्वीकार करता है उन्ही की जो ना समझी से कोई बुरा कार्य कर वैठे फिर यदि वह शीघ्र क्षमा माँग ले तो अल्लाह भी ऐसो को क्षमा कर देता है, और अल्लाह औपचारिक वाला है तथा सव जानना हैं। (१७) उन मनुष्यो को क्षमा नही करता जो बुरे काम करते रहे यहा तक कि उनमे से जब किसी के सामने मृत्यु आ खड़ी हो तो कहने लगे कि अब मैं क्षमा माँगता हू और उनको भी क्षमा नही जो काफिर ही मर जाते हैं। यही हैं जिनके लिए हमने कठोर दण्ड तैयार कर रखे हैं। (१८) ऐ धर्मवालो ! तुमको उचित नही कि स्त्रियो को वपौती समझकर शक्ति से उन पर अधिकार कर लो जो कुछ तुमने उनको दिया है उसमे से कुछ छीन लेने की कामना से उनको वन्दी न रखो कि दूसरे से विवाह न करने पावें या उनसे कोई स्पष्ट अनाचार प्रकट हो और पत्नियो के साथ अच्छे व्यवहार से रहो सहो और तुमको पत्नी नापस द हो तो अचरज नही कि तुमको एक वस्तु नापसन्द हो और अल्लाह उसमे बहुत भलाई तथा उन्नति दे। (१९) यदि तुम्हारा विचार एक पत्नी को वदलकर उसके स्थान पर दूसरी पत्नी करने का हो तो यदि तुमने पहली पत्नी को बहुत-सा धन दे दिया हो तो उसमे से कुछ भी न लेना। क्या किसी प्रकार का पाप लगाकर स्पष्ट अनुचित वात करके अपना दिया हुआ लेते हो। (२०) दिया हुआ कैसे ले लोगे जबकि तुम एक दूसरे के साथ सगत कर चुके हो और पत्नियाँ तुमसे पक्का वादा ले चुकी है। (२१) जिन स्त्रियो के साथ

तुम्हारे पिता ने विवाह किया हो तुम उनके साथ विवाह न करना जो हो चुका सो हो चुका। यह बडी लज्जा और अनोखी बात थी और बहुत ही बुरा नियम था। (२२) (रुकू ३)।

तुम्हारी मातायें, पुत्रियाँ और तुम्हारी बहनें और तुम्हारी बूआयें और तुम्हारी मौसियाँ और भान्जियाँ, भतीजियाँ और तुम्हारी मातायें जिन्होने तुमको दूध पिलाया और दूध मे सम्मिलित बहनें और तुम्हारी सासें इनसे सम्भोग तुम्हारे लिए पाप है। जिन स्त्रियो के साथ तुम सगत कर चुके हो उनकी पूर्वपति से पैदा हुई पुत्रियाँ जो तुम्हारी गोदो मे पोषित होती है उसके आगे भी पाप है। इन पत्नियो के साथ तुमने भोग न किया हो तो तुम पर कुछ अपराध नही और तुम्हारे पुत्रो की बहुयें और दो बहिनो का एक साथ पत्नि बनाकर रखना भी तुम पर पाप है। परन्तु जो हो चुका सो हो चुका। निस्सन्देह अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है। (२३)



पांचवां पारा (वल्मुहसनात)

सूरे निसा

ऐसी स्त्रियां जिनका पति जीवित है उनको लेना भी पाप है परन्तु जो बन्दी होकर तुम्हारे हाथ लगी हो उनके लिए तुमको ईश्वर की आज्ञा है और इनके अतिरिक्त अन्य सब स्त्रियाँ पुण्य हैं जिनको तुम धन देकर विवाह करना चाहो नकि मस्ती निकालने को। फिर जिन स्त्रियो से तुमने आनन्द उठाया हो तो उनसे जो मिहर ठहरा था उनको सोप दो, ठहराये पीछे आपस मे प्रसन्न होकर जो और ठहरा लो तो तुम पर इस मे कुछ पाप नही। अल्लाह ज्ञाता तथा सामर्थ्यवाला है। (२४) और तुममे से जिसको मुसलमान पत्नियों से विवाह करने की शक्ति मिहर आदि के कारण न हो तो बान्दियां

ही सही जो तुम मुसलमानो के कब्जे मे आ जायें शर्त यह कि वे विश्वास रखती हो और अल्लाह तुम्हारे विश्वास को खूब जानता है। तुम आपस मे एक हो पस बान्दीवालो की आज्ञा से उनके साथ विवाह कर लो और नियमानुसार उनके मिहर उनको सोप दो। परन्तु शर्त यह है कि विवाह किया जाय, बाजारी स्त्रियो जैसा सम्बन्ध न हो और न छिपकर प्रेम रखती हो। यदि विवाह किये पीछे काम करें तो जो दण्ड पत्नि को उसकी आधी लौडी को। लौडी से विवाह करने की आज्ञा उसी को है जिसको तुम मे से पाप मे फंस जाने का डर है और यदि उसके बिना सतुष्ट रहो तो तुम्हारे पक्ष मे भला है और अल्लाह क्षमा करनेवाला कृपालु है। (२५) (रुकू ४)

अल्लाह चाहता है कि जो तुमसे पहले हो गये हैं उनके नियम तुमसे खोल-खोलकर बताया करे और तुमको उन्ही नियमो पर चलाये और तुमको क्षमा करे और सामर्थ्यवाला अल्लाह जानता है। (२६) अल्लाह चाहता है कि तुम पर ध्यान दे और जो मनुष्य विषय वासनाओ के पीछे पडे है अर्थ यह वे सच्चे मार्ग से बहुत दूर हट गये हैं। (२७) अल्लाह चाहता है कि तुमसे भार हलका करे क्योकि मनुष्य निर्बल उत्पन्न किया गया है। (२८) ऐ धर्मवालो! एक दूसरे का धन व्यर्थ मत खाओ परन्तु आपस मे स्वीकृति से व्यापार करो और आपस मे मार-काट मत करो। अल्लाह तुम पर कृपालु है। (२९) और जो शक्ति मे ऐसा करेगा हम उसको आग मे झोक देंगे और यह अल्लाह के लिए साधारण है (३०) जिनसे तुमको मना किया जाता है यदि तुम उनमे से बडे-बडे पापो से बचते रहोगे तो हम तुम्हारे छोटे अपराध उतार देगे और तुम को प्रतिष्ठा का स्थान देंगे। (३१) ईश्वर ने जो तुममें से एक को दूसरे पर उन्नति दे रक्खी है उसकी कुछ कामना मत करो। पुरुषो ने जैसे कर्म किये हो उनको उनका भाग और स्त्रियो ने जैसे कर्म किया हो उनको उनका भाग और अल्लाह से उसकी दया माँगते रहो। अल्लाह प्रत्येक वस्तु से जानकार है। (३२) और

माता-पिता और सम्बन्धियो जो तर्का (उत्तराधिकार) छोडकर मरे तो हमने प्रत्येक के उस धन के अधिकारी ठहरा दिये है और जिन मनुष्यो के साथ तुम्हारावादा है तो उनका भाग उनको दो। प्रत्येक वस्तु अल्लाह के समक्ष है। (३३) (रुकू ५)

पुरुष स्त्रियो के सिरमौर है, कारण यह है कि अल्लाह ने एक को एक पर प्रधानता दी है और इसलिए भी कि वे अपने धन मे से भी उन पर व्यय करते है, तो जो भली हैं कहा मानती हैं, ईश्वर की कृपा से पीठ पीछे रक्षा रखती हैं और तुमको जिन पत्नियो की बुरी आदत से भय हो उनको समझा दो, फिर नमाते तो उनके साथ सोना छोड़ने दो और उन्हे मारो, फिर यदि तुम्हारी बात मानने लगें तो उन पर पाप न लगाओ क्योकि अल्लाह सर्वोपरि है। (३४) और यदि तुम पति पत्नियो मे खट-पट का संदेह हो तो पुरुष की ओर से एक पच और स्त्री की ओर से एक पच ठहराओ, यदि पचो का इरादा होगा तो अल्लाह दोनो मे मिलाप करा देगा, अल्लाह सावधान है। (३५) अल्लाह ही की पूजा करो और उसके साथ किसी को मत मिलाओ और माता-पिता, सम्बन्धी और अनाथो और निराश्रितो और निकट पडोसियो और परदेशी पडोसियो और पास के बैठनेवालो और मुसाफिरो और जो तुम्हारे अधिकार मे हो इन सबके साथ भलाई करते रहो और अल्लाह उन मनुष्यो से प्रसन्न नही होता जो इतरायें, बड़ाई मारते फिरे। (३६) वे जो कजूसी करे और दूसरो को भी कजूसी करने की सम्मति दें और अल्लाह ने जो अपनी कृपा से उन को दिया है उसको छिपायें हमने ऐसे काफिरो के लिए जिल्लत का दण्ड तैयार कर रक्खा है। (३७) वे जो मनुष्यो के दिखाने को धन व्यय करते हैं और अल्लाह और प्रलय पर विश्वास नही रखते और राक्षस जिसका साथी हो तो वह बुरा साथी है। (३८) और यदि अल्लाह और प्रलय पर विश्वास लाते और जो कुछ ईश्वर ने उनको दे रक्खा था उसको व्यय करते तो उनका क्या बिगडता था और अल्लाह तो इनसे जानकार ही है। (३९)

अल्लाह रत्ती भर अत्याचार नही करता अपितु भलाई हो उसको बढाता है और अपने पास से वडा बदला दे देता है। (४०) उस समय क्या दशा होगी जव हम प्रत्येक गुट के साक्षी को वुलालेगे और ऐ मोहम्मद तुम्हे इन पर साक्षी के रूप मे वुलायेंगे। (४१) जिन मनुष्यो ने मना किया और पैगम्वर की आज्ञा न मानी उस दिन इच्छा करेगे कि कोई उनके किये पर मिट्टी फेर दे और ईश्वर से वे कोई बात भी नही छिपा सकेगे। (४२) (रुकू ६)

ऐ धर्मवालो! जब तुम नशे* मे होगे तव नमाज न पढा करो। जब तक न समझो कि क्या कहते हो और यदि नहाने की आवश्यकता हो तो भी नमाज के निकट न जाना जव तक कि स्नान न कर लो हाँ मार्ग मे चले जा रहे होगे या तुम बीमार होवो या राहगीर यात्रा पर होवो या तुममे से कोई शौचसे आवे या स्त्रियो से प्रसग करके आया हो और तुमको पानी न मिल सके तो पवित्र मिट्टी ले कर मुह और हाथ पर मल लो। अल्लाह क्षमा करने वाला है। (४३) क्या तुमने उन मनुष्यो पर दृष्टि नही की जिनको पुस्तक से भाग दिया गया था, वह अव मार्ग से भटके हुए हैं और चाहते है कि तुम भी मार्ग छोड दो। (४४) अल्लाह तुम्हारे शत्रुओ को खूब जानता है। अल्लाह पर्याप्त मित्र और सहायक है। (४५) यहूद मे कुछ ऐसे भी हैं जो वातो का उनके वास्तविक अर्थ से वदलते है** और कहते हैं हमने न सुना और न माना और अन्य कोई भी न सुने जिह्वा मरोड़-मरोड कर धर्म मे लाने के लिये राइना का उदाहरण देते है। यदि वह कहते

---

*यह हुक्म उस वक्त का है, जब शराब पीना मना न था। अब शराब मना है।

** जो कुछ तौरात में है उस को छिपाते हैं और शब्दों को उलट-पलट कर कुछ का कुछ अर्थ कर देते हैं। इसी को तहरीफ कहते हैं।

हमनेसुना और माना और तू सुन और हम पर दृष्टि कर तो उनके लिए भला होता और यही उचित था परन्तु ईश्वर ने उनको न मानने के कारण उन पर लान्छना की है। उनमे से कम विश्वास लाते हैं। (४६) पुस्तकवालो ! जो हमने अवतरित किया है वह उस पुस्तक को जो तुम्हारे पास है प्रमाणित करता है। उस पर इमसे पूर्व कि मुख बिगाड कर हम उलटे उनको पीछे की ओर लगा देवें* या जिम प्रकार हमने**शनीचर वालो को ताडना दी थी उसी प्रकार उनको भी ताडना दें, विश्वास करलो और जो ईश्वर को स्वीकार है वह तो होकर ही रहेगा। (४७) ईश्वर के समान अन्य को मानने वाले को ईश्वर क्षमा नही करता इसके नीचे जिमको चाहे क्षमा करे और जिसने ईश्वर के अतिरिक्त किसी और को पूजा उसने बडा पाप बाँधा है। (४८) क्या तुमने उन मनुष्यो पर दृष्टि नही की, जो स्वयं बडे पवित्र बनते है। वास्तव मे अल्लाह जिसको चाहता है पवित्र बनाता है और अत्याचार तो किसी पर रत्ती के बराबर भी न होगा। (४९) देखो यह मनुष्य अल्लाह पर कैसे झूठ बाँध रहे हैं और यही स्पष्ट अपराध पर्याप्त है। (५०) (रुकू ७)

क्या तुमने इन मनुष्यो पर दृष्टि नही की जिनको पुस्तक से भाग दिया गया, वह राक्षस को मानते हैं और काफिरो के विषय मे कहते है कि मुसलमानो से तो ये ही अधिक सीधे मार्ग पर हैं। (५१) ऐ

---

*यानि इसके पहले कि खुदा का कोप आये और तुम्हारे रूप बदल जाये जैसे शनिवार के दिन मछली पकड़नेवालों की शक्लें बदल गई थीं।

**यहूदियों को शनीवार के दिन मछली का शिकार खेलने की आज्ञा न थी। उन्होंने शुक्रवार के दिन नदी के किनारे गढे खोदे ताकि शनिवार को उसमे मछलिया आजायें और शनिवार को उनको पकड़ कर कहें कि यह शिकार तो शुक्रवार का है।

पैगम्बर यही मनुष्य हैं जिनको अल्लाह ने फटकार दिया है और जिनको अल्लाह फटकारे उसका कोई सहायक नही होगा। (५२) यदि इनके पास राज्य का कोई भाग हो तो ये मनुष्यो को तिल बराबर भी न देगे। (५३) ईश्वर ने जो मनुष्यो को अपनी कृपा से वस्तुएँ दी है उस पर जलते हैं अतः इब्राहीम के वश को हमने पुस्तक कुरान और ज्ञान और बडा भारी राज्य दिया है। (५४) फिर मनुष्यो मे से कुछ ने तो उस पर विश्वास किया और कुछ ने मुँह मोडा। विधर्मियो को ज्वलित नरक पर्याप्त है। (५५) जिन मनुष्यो ने हमारी आयतो से मना किया हम उनको अग्नि मे झोकेंगे। जब उनकी खाले जल जावेगी उनको दूसरी खाल बदल देगे जिससे दण्ड भोगे। अल्लाह शक्तिशाली तथा औपचारिक है। (५६) जिन्होने विश्वास किया और अच्छे काम किए हम उनको ऐसे उपवनों मे प्रविष्ट करेंगे जिनके नीचे नहरे बह रही होगी। वे उनमे सदैव रहेंगे उनमें उनके लिए पत्नियाँ साफ सुथरी होगी और हम उनको घनी छायो में ले जाकर रखेंगे। ((५७) अल्लाह तुमको आज्ञा देता है कि धरोहर वालो की धरोहर दे दिया करो और जब मनुष्यो के आपस के झगडे चुकाओ तो न्याय के साथ निर्णय करो अल्लाह तुमको अच्छी शिक्षा देता है, अल्लाह सुनता तथा देखता है। (५८) ऐ धर्मवालो, अल्लाह के पैगम्बर की और जो तुममे से राज्य करने वाले हैं उनकी आज्ञा मानो फिर यदि किसी बात मे तुम्हारा झगडा हो तो ईश्वर और पैगम्बर की ओर ले जाओ, यदि तुम अल्लाह पर और प्रलय पर विश्वास रखते हो तो यह भला है और परिणाम भी अच्छा है। (५९) (रुकू ८)।

क्या तुमने उनकी ओर नही देखा जो दावा करते हैं कि वह जो तुम पर अवतरित हुआ और जो तुमसे पहले अवतरित हुआ इसे मानते हैं और फिर भी चाहते हैं कि झगड़ा राक्षस* के पास ले जावें यद्यपि

*मुनाफिक जानते थे कि मुहम्मद साहब न्याय के समय किसी का पक्ष नहीं ले सकते, इसलिए अपने झगड़े को यहूदी विद्वानो के पास ले जाते थे जो घूस खाते थे।

उनको आज्ञा दी जा चुकी है कि उसकी बात न मानें और राक्षस चाहता है कि उनको भटका कर बडी दूर ले जावे। (६०) और जब उनसे कहा जाता है कि जो अल्लाह ने अवतरित किया है उसकी ओर और पैगम्बर की ओर आओ तो तुम इन मना करने वालो को देखते ही हो कि वह तेरी ओर आने से रुकते हैं। (६१) यह कैसी लज्जा की बात है कि जब इन्ही कर्मो के कारण इन पर कोई विपत्ति पडती है तो तुम्हारे पास अल्लाह की सौगन्ध खाते हुए आते हैं कि हमारा स्वार्थ तो भलाई और मेल मिलाप*का था। (६२) यह ऐसे हैं कि जो इनके हृदय मे है ईश्वर प्रतीत है अत इनके पीछे न पडो और इनको समझा दो और इनके हृदय पर प्रभाव डालनेवाली बातें कहो। (६३) और जो पैगम्बर हमने भेजा उसके भेजने से हमारा अभिप्राय यही रहा है कि अल्लाह की आज्ञा से उसका कहा माना जावे और जब इन मनुष्यो ने अपने ऊपर स्वय अत्याचार किया था। इस समय तेरे पास आते और ईश्वर से क्षमा माँगते और पैगम्बर उनको क्षमा करवाना चाहते तो अल्लाह को वडा ही क्षमा देने वाला और कृपालु पाते। (६४) तुम्हारे पालनकर्ता की सौगन्ध जब तक यह मनुष्य अपने आपसी झगडों मे तुमको न्यायाधीश न मानें और फिर तेरे न्याय से उदास न होकर मान ले तब तक विश्वास वाले न होगे। (६५) यदि हम इनको आज्ञा

*एक मुनाफिक और यहूदी मे झगड़ा हुआ। दोनो मुहम्मद साहब के पास आये। मुहम्मद साहब ने यहूदी के पक्ष मे अपना निर्णय दिया मुनाफिक हजरत उमर के पास इस विचार से गया कि वह मुझको मुसलमान समझकर मेरी जैसी कहेगे। उमर इस समय मदीने मे जज थे। जब यहूदी ने उनको बताया कि मुहम्मद साहब उसके पक्ष में फैसला कर चुके हैं तो उमर ने मुनाफिक को कत्ल कर डाला। उसके वारिस मुहम्मद साहब के पास आये कि हम समझौते लिए उमर के पास गये थे। आपके फैसले की अपील के लिए नहीं, उसी सम्बन्ध मे यह आयत उतरी।

देते कि आप अपना वध करो या घरबार छोड़ जाओ तो इनमें से थोड़े मनुष्यो के अतिरिक्त इसको न मानते । जो कुछ इनको समझाया जाता है यदि उसका पालन करते तो उनके पक्ष में भला होता और इस कारण धर्म मे दृढता से जमे रहते । (६६) इस सूरत मे हम इनको अवश्य अपनी ओर से बड़ा प्रतिकार देते । (६७) और इनको सीधे मार्ग पर अवश्य लगा देते । (६८) जो अल्लाह और रसूल का कहना माने ऐसे ही मनुष्य उनके साथी होगे, जिन पर अल्लाह ने कृपाएँ कीं अर्थात नबी सच्चे लोग, शहीद और भले सेवक और यह मनुष्य अच्छे साथी हैं । (६९) यह अल्लाह की कृपा है और अल्लाह का ही जानना पर्याप्त है । (७०) (रुकू ९)

ऐ धर्मवालो ! अपनी सावधानी रखो और पृथक-पृथक गुट बाँध-कर निकलो या इकट्ठे निकलो । (७१) तुम मे कोई-ना कोई ऐसा है जो कि अवश्य पीछे हट रहेगा, फिर यदि तुम पर कष्ट आन पड़े तो कहेगा कि ईश्वर ने मुझ पर बड़ी कृपा की जो मैं इनके साथ उपस्थित न था । (७२) और यदि ईश्वर से तुम्हे कृपा मिली तो इस प्रकार कहने लगेगा मानो ईश्वर मे और तुममे मित्रता न थी, "क्या अच्छा होता जो मै भी इनके साथ होता तो बड़ी अभिलाषा पूरी करता ।" (७३) सो जो मनुष्य स्वर्ग के बदले संसार का जीवन बेचते हैं उनको चाहिए कि ईश्वर के मार्ग मे लड़ें और फिर मारे जायँ या जीत जायँ तो हम उनको बड़ा अच्छा परिणाम देंगे । (७४) तुमको क्या हो गया है कि अल्लाह के मार्ग मे और उन बेबस मनुष्यों, स्त्रियो और बालकों के लिए शत्रुओ से नही लड़ते जो प्रार्थना कर रहे हैं कि हमारे पालन-कर्ता ने इस नगरी से हमे निकाला जहाँ के रहने वाले हम पर अत्याचार कर रहे हैं और अपनी ओर से किसी को हमारा साथी बना और अपनी ओर से किसी को हमारा सहायक बना । (७५) जो विश्वास रखते हैं वह तो अल्लाह के मार्ग मे लड़ते हैं और जो काफिर हैं वह राक्षस के पक्ष मे लड़ते हैं सो तुम राक्षस के पक्षपातियो से लड़ो राक्षस की चालें निर्बल हैं । (७६) (रुकू १०) ।

क्या तुमने उन मनुष्यो को नही देखा कि जिनको आज्ञा दी गई कि अपने हाथो को रोके रहो और नमाज पडते रहो दान दिया करो, फिर जब इन पर धर्मयुद्ध का कर्तव्य आ पडा तो एक गुट उन मे से मनुष्यो से डरने लगा जैसे कोई ईश्वर से डरता है अपितु उससे भी बढकर और शिकायत करने लगा कि ऐ हमारे पालनकर्ता तूने हम पर धर्मयुद्ध का कर्तव्य क्यो लादा, हमको थोडे दिनो का अवकाश और क्यो न दिया तो कहो कि ससार के लाभ थोडे है और जो व्यक्ति डर रखे उसके लिए स्वर्ग भला है और तुम पर तनिक भी अत्याचार न होगा। (७७) तुम कही भी हो मृत्यु तुमको आकर ले लेगी चाहे पक्के गुम्मदो (मुसलमानी मकान) मे हो। और इनको कुछ लाभ पहुच जाता है तो कहने लगते हैं कि ईश्वर की ओर से है और यदि इनको कुछ हानि पहुच जाती है तो कहने लगते है कि यह तुम्हारी ओर से है। सो पैगम्बर! तुम इनसे कह दो कि सब अल्लाह की ओर से है इन मनुष्यो की क्या दशा है कि बात नही समझते। (७८) तुमको कोई लाभ पहुँचे तो अल्लाह की ओर से है और तुमको कोई हानि पहुचे तो तेरी आत्मा की ओर से है और हमने तुम्हारी ओर सदेश पहुँचाने वाला भेजा है और ईश्वर को साक्षी पर्याप्त है। (७९) जिसने पैगम्बर की आज्ञा मानी उसने अल्लाह ही की आज्ञा मानी और जो बदल बैठा तो हमने तुमको कुछ इन मनुष्यो का ध्यान रखने वाला नही भेजा। (८०) और यह मनुष्य कह देते हैं कि हम मानते है परन्तु जब तुम्हारे पास से बाहर जाते हैं तो इनमे से कुछ मनुष्य रात्री के समय कहे के विरुद्ध मन्त्रणा करते है और जैसी-जैसी मन्त्रणा रातो को करते है अल्लाह लिखता जाता है तो इनकी कुछ चिन्ता न करो और अल्लाह पर भरोसा रखो और अल्लाह काम सभालने वाला पर्याप्त है। (८१) तो क्या यह मनुष्य कुरान मे विश्वास नही करते और यदि ईश्वर के अतिरिक्त किसी और के पास से आया होता तो अवश्य उसमे बहुत मे भेद पाते। (८२) और जब इनके पास शान्ति या भय का कोई समाचार आता है तो उसको सब पर प्रकट कर देते हैं और यदि उस

समाचार को पैगम्बर तक और अपने अधिकारियो तक पहुँचाते तो जो मनुष्य इनमे से भेद को खोद निकालने वाले है उनका पता कर लेते और यदि तुम पर अल्लाह की कृपा और उसकी दया न होती तो कुछ मनुष्यो के अतिरिक्त सब राक्षस के पीछे चल दिए होते (८३) तुम अल्लाह के मार्ग में लडो अपने अतिरिक्त तुम पर किसी और का दायित्व नही हाँ, धर्म वालो को उभारो अचरज नहीं की अल्लाह काफिरो की शक्ति को रोक दे और अल्लाह की शक्ति अधिक है और उसका दण्ड अधिक कठोर है। (८४) और जो कोई भली बात मे सिफारिश करे उसमे से उसको भी भाग मिलेगा और जो बुरी सिफारिश करे उसमे वह भी सम्मिलित होगा और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर शक्ति रखने वाला है। (८५) और तुमको कोई नमस्कार (सलाम) करे तो तुम उससे बढ़कर सलाम कर दिया करो या वैसा ही उत्तर तो अल्लाह प्रत्येक वस्तु का प्रतीकार देने वाला है। (८६) अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूजा के योग्य नहीं इसमे सन्देह नही कि प्रलय के दिन वह तुमको अवश्य एकत्रित करेगा और अल्लाह से बढ़कर किसकी बात सत्य है! (८७) (रुकू ११)।

तुम्हारी यह क्या दशा है कि काफिरो के लिए तुम दो पक्ष हो रहे हो यद्यपि अल्लाह ने उनके कर्मों के कारण उनको पलट दिया है, क्या तुम यह चाहते हो कि जिसको ईश्वर ने भटका दिया उसको सीधे मार्ग मे ले आओ। जिसको अल्लाह भटका दे सम्भव नही कि तुममे से कोई उसके लिए मार्ग निकाल सके। (८८) इनकी इच्छा यह है कि जिस प्रकार स्वय काफिर हो गये हैं उसी प्रकार तुम भी मना करने लगो जिससे तुम एक ही प्रकार के हो जाओ। तो जब तक ईश्वर के मार्ग मे देश त्याग न कर आवें इनमे से मित्र न बनाना। फिर यदि मुख मोड़ें तो उनको पकड़ो और जहाँ पाओ उनका वध करो, उनमे से मित्र और सहायक न बनाना। (८९) परन्तु जो ऐसी जाति से जा मिले है कि तुममें और उनमे सन्धि की प्रतिज्ञा है या तुम्हारे साथ लडने से

या अपनी जाति के साथ लडने से दु खी होकर तुम्हारे पास आवें तो उनसे मिलने मे हानि नही, और यदि ईश्वर चाहता और इनको तुम पर विजय देता तो यह तुमसे लडते। बस यदि तुमसे किनारा खीचा जावे और तुमसे न लडे और तुम्हारे साथ मेल करे तो ऐसे मनुष्यो पर तुम्हारे लिए अल्लाह ने कोई मार्ग नही दिया कि उन्हे लूटो या मारो (९०) कुछ और मनुष्य तुम ऐसे भी पाओगे जो तुमसे शान्ति मे रहना चाहते हैं परन्तु जब कोई उनको लडाई को ले जावे उस समय मे उलट जाते हैं सो यदि तुमसे किनारा खीचे रहें और न सन्धि करें और न अपने हाथ रोकें तो उनको पकडो और जहाँ पाओ उनका बध करो और यही वे मनुष्य है जिन पर हमने तुमको पूर्ण अधिकार दे दिया है। (९१) (रुकू १२)।

किसी धर्मवाले को उचित नही कि धर्मवाले को मार डाले परन्तु जो किसी धर्मवाले को भूल मे मार डाले तो एक धर्मवाले सेवकको छोड दे और वधित के सरक्षको को खून का मूल्य दे परन्तु यह तब है जबकि उसके संरक्षक क्षमा कर दें। फिर यदि वधित उन मनुष्यो मे का हो जो मुसलमानो के शत्रु हैं, और वह स्वय मुसलमान हो तो एक मुसलमान सेवक स्वतन्त्र करना होगा खून का मूल्य न देना होगा और यदि उन मनुष्यो मे का हो जिनसे तुम्हारी प्रतिज्ञा है तो वधित के सरक्षको को खून का मूल्य पहुचावे और एक मुसलमान सेवक स्वतन्त्र करे और जिस हत्यारे को मूल्य देने की शक्ति न हो तो निरन्तर दो महीने के वृत रक्खे। क्षमा का यह ढग अल्लाह का ठहराया हुआ है और अल्लाह जानकार और काम सम्भालनेवाला है। (९२) जो मुसलमान को जान-बूझ कर मार डाले तो उसका दण्ड नरक है जिस मे वह सदैव रहेगा और उस पर ईश्वर अप्रसन्न होगा और उस पर ईश्वर की फटकार पडेगी और अल्लाह ने उस के लिए बडा कठोर दण्ड तैयार कर रखा है। (९३) ऐ धर्मवालो! जब तुम धर्मयुद्ध मे बाहर निकलो तो अच्छी प्रकार खोज कर लिया करो और जो व्यक्ति तुम से सलाम करे

उससे यह न कहो कि तू मुसलमान नही* क्या तुम साँसारिक जीवन के लिए सामान की खोज मे हो ईश्वर के यहाँ बहुत सी वस्तुएँ हैं, पहले तुम भी तो ऐसे ही थे धन बचाने के लिये तुमने भी कलमा पढ लिया था। फिर अल्लाह ने तुम पर अपनी कृपा की। अतः अच्छी प्रकार जाँच कर लिया करो अल्लाह तुम्हारे कामो का ज्ञाता है। (९४) जिन मुसलमानो को नही और वह बैठे रहे यह मनुष्य उन मनुष्यों के समान नही जो अपने धन और जान से ईश्वर के मार्ग मे धर्मयुद्ध कर रहे हैं। अल्लाह ने धन और जान से धर्मयुद्ध करने वालो को बैठे रहने वालो पर बडी बडाई दी और ईश्वर ने सब को खूबी का बचन दिया और अल्लाह ने बडे सवाब के कारण धर्मयुद्ध करने वालो को बैठे रहने वालो पर बडी प्रधानता दी है। (९५) ईश्वर के पास पद है और उसकी क्षमा और कृपा है और अल्लाह क्षम्य तथा कृपालु है (९६) (रुकू १३)

जो मनुष्य अपने ऊपर स्वय अत्याचार कर रहे हैं उनसे देवदूत उनकी जान निकालने के पश्चात पूछते हैं कि तुम क्या करते रहे तो वह उत्तर देते हैं कि हम तो वहाँ बेवस थे इस पर देवदूत उनसे कहते हैं कि क्या अल्लाह की पृथ्वी पर इतना स्थान नही था कि तुम कही देश त्याग करके चले जाते। अर्थ यह है कि वह वोही मनुष्य हैं जिनका ठिकाना नरक है और वह बुरा स्थान है। (९७) परन्तु जो पुरुष, स्त्रियाँ और बालक इतने बेवस हैं उनसे कोई बहाना करते नही बन पड़ता और न उनको कोई मार्ग सूझ पडता है। (९८) तो आशा है कि अल्लाह ऐसे मनुष्यो को क्षमा दे दे और अल्लाह क्षमा करनेवाला

---

* मुहम्मद साहब ने एक सेना एक देश की ओर भेजी थी। इस देश मे एक मुसलमान भी था। वह अपना धन लेकर देशवालों से अलग खड़ा होगया। मुसलमान समझे इसने जान बचाने के लिए यह चाल चली है इसलिए उसको मार डाला और उसका माल लूट लिया। इस पर यह आयत उतरी।

है। (९९) और जो व्यक्ति ईश्वर के मार्ग में अपना देश त्याग करेगा उसे पृथ्वी मे अधिक स्थान और सपन्नता मिलेगी और जो व्यक्ति अपने घर से अल्लाह और उसके पैगम्बर की ओर यात्रा करने निकले और उसकी मृत्यु हो जाये तो अल्लाह के प्रति उसका कर्तव्य सिद्ध हो चुका और अल्लाह क्षमा करनेवाला कृपालु है। (१००) (रुकू १४)

जब तुम कही जाओ और तुमको भय हो कि काफिर तुमसे छेड़-छाड़ करने लगेंगे तो तुम्हारा कुछ अपराध नही यदि नमाज मे से भी कुछ घटा दिया करो। निस्सदेह काफिर तो तुम्हारे प्रकट शत्रु हैं। (१०१) जब तुम मुसलमानो साथी हो के और उनको नमाज पढाने लगो तो मुसलमानो की एक मडली तुम्हारे साथ खडी हो और अपने शस्त्र लिये रहें फिर जब प्रार्थना कर चुके तो पीछे हट जाय और दूसरी जमात जो नमाज मे सम्मिलित नही हुई आकर तुम्हारे साथ नमाज मे सम्मिलित हो और सावधान अपने शस्त्र लिए रहे। काफिरो की यह इच्छा है कि तुम अपने-अपने शस्त्रो और साज और सामान से अचेत हो जाओ तो एक दम तुम पर टूट पडे और यदि तुम को वर्षा के कारण से कुछ कष्ट पहुचे या तुम रुग्ण हो तो अपने शस्त्र उतार रखने मे तुम पर कोई अपराध नही। अपना बचाव रक्खो अल्लाह ने काफिरो के लिए नरक का दण्ड तैयार कर रक्खा है। (१०२) फिर जब तुम नमाज पूरी कर चुको तो खडे, बैठे और लेटे अल्लाह के स्मरण मे लगे रहो फिर जब तुम सतुष्ट हो जाओ तो नमाज पढो क्योकि मुसलमानो के लिये नियत समय मे नमाज पढना कर्तव्य है। (१०३) मनुष्यो का पीछा करने मे साहस न हारो यदि तुमको कष्ट पहुचता है उनको भी कष्ट पहुचता है और तुमको ईश्वर से वह आशाएँ हैं जो उनको नही और अल्लाह जाननेवाला और काम सम्भालने वाला है। (१०४) (रुकू १५)

हमने सत्य पुस्तक तुम पर अवतरित की है कि जैसा तुमको ईश्वर ने बतला दिया है उसके अनुसार मनुष्यो के आपसी झगडे चुका दिया

करो और धोखादेने वालो के पक्षपाती मत बनो। (१०५) और अल्लाह से क्षमा चाहो क्योंकि वह क्षमा करनेवाला कृपालु है (१०६) और जो मनुष्य अपने जी मे कपट रखते हैं उनकी ओर से मत झगड़ा करो क्योंकि कपटी अपराधी हैं और वे ईश्वर को पसन्द नही है। (१०७) मनुष्यो से बाते छिपाते है पर ईश्वर से नहीं छिपा सकते। यद्यपि जब रात्री को उन बातो की सलाह करते है जिससे ईश्वर प्रसन्न नही तो ईश्वर उनके साथ होता है और जो कुछ करते हैं ईश्वर के वश मे है। (१०८) सुनो तुमने साँसारिक जीवन मे उनकी ओर होकर झगड़ा कर लिया तो प्रलय के दिन उनकी ओर से अल्लाह के साथ, कौन झगडा करेगा और कौन उनका वकील होगा। (१०९) और जो कोई बुरा काम करे या आप अपनी जान पर अत्याचार करे फिर अल्लाह से क्षमा माँगे तो अल्लाह को क्षमा करने वाला कृपालु पावेगा (११०) जो व्यक्ति कोई बुराई करता है तो वह अपने ही पक्ष मे बुराई करता है और अल्लाह जानकार है। (१११) और जो व्यक्ति किसी अशुद्धि व अपराध का करने वाला हो फिर वह अपने अपराध को किसी निरअपराध पर थोप दे तो उसने अपने ऊपर स्पष्ट अपराध डाला है। (११२) (रुकू १६)

यदि तुम पर अल्लाह की कृपा और उसकी दया न होती तो उनमे से एक गुट तुमको बहका देने का विचार कर ही चुका था और यह मनुष्य बस अपने ही लिए पथभ्रष्ट कर रहे है और तेरा कुछ नही बिगाड सकते क्योकि अल्लाह ने तुम पर पुस्तक कुरान अवतरित है और तुमको ऐसी बातें सिखा दी है जिनका तुमको पता न था और तुम पर अल्लाह की बडी कृपा है। (११३) इन मनुष्यो की प्राय कानाफूमियो मे* खैर नही परन्तु जो दान मे या अच्छे काम मे या

* मुनाफिक लोग मोहम्मद साहब से कान मे बात करते थे ताकि दूसरे लोग यह समझें कि ये नबी के बड़े मित्र है। ये लोग अधिकतर दूसरे मुसलमानो की बुराई करते थे। इस पर यह आयत उतरी कि इन लोगो की सलाह अच्छी नही होती बल्कि धोखे से भरी होती है।

मनुष्यो में मेल-मिलाप की सलाह दे और जो ईश्वर की खुशी प्राप्त करने के लिए ऐसे काम करेगा तो हम उसको बड़ा बदला देंगे। (११४) और जो व्यक्ति सीधे मार्ग के स्पष्ट हुए पीछे पैगम्बर से दूर रहे और धर्मवालो के मार्ग के अतिरिक्त किसी और मार्ग पर चले तो जो मार्ग उसने पकडा है हम उमको उसी मार्ग पर चलाए जायेंगे और उनको नरक मे प्राप्ति करेंगे और वह बुरा स्थान है। (११५) (रुकू १७)

यह अपराध तो अल्लाह क्षमा नही करता कि उसके साथ कोई समकक्ष ठहराया जाये और इससे कम जिसको चाहे क्षमा करे और जिसने अल्लाह का समकक्ष ठहराया वह दूर भटक गया। (११६) ईश्वर के अतिरिक्त तो बस देवियो* ही को पुकारते है। और उसके अतिरिक्त अहकारी राक्षस को पुकारते हैं। जिसको ईश्वर ने फटकार दिया। (११७) और वह कहने लगा कि मैं तेरे भक्तो से एक नियत भाग अवश्य लिया करूंगा। (११८) और उनको अवश्य ही बहकाऊंगा और उनको आशायें अवश्य दिलाऊंगा और उनको सिखाऊंगा कि पशुओ के कान अवश्य चीरा करें और उनको समझाऊंगा कि ईश्वर की बनाई हुई सूरतो को बदला करें और जो व्यक्ति ईश्वर के अतिरिक्त राक्षस को मित्र बनाये तो वह स्पष्ट है कि हानि मे आ गया। (११९) उनको वचन देता और और उनको आशायें बधवाता है और राक्षस उनसे जो प्रतिज्ञा करता है निरा धोखा है। (१२०) ऐसो का स्थान नरक है और वहां से कहीं भागने न पायेंगे। (१२१) और जिन मनुष्यों ने विश्वास किया और उन्होने भले कार्य किये हम उनको ऐसे उपवनों मे प्रविष्ट करेंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी उनमे वे

---

* मूर्तियां स्त्रियों के रूप की होती हैं। अरब के मूर्ति पूजनेवाले उनको अपने-अपने कबीले की देवी कहते थे। और कुछ लोग कहते हैं औरतों का अर्थ यहां फरिश्तों से है जिनको काफिर खुदा की बेटियां समझते थे

सदैव रहेंगे यह अल्लाह की दृढ प्रतिज्ञा है और अल्लाह से बढ़कर बात का सच्चा कौन है। (१२२) न तुम्हारी विनती पर है और न पुस्तक वालों की विनती पर जो व्यक्ति बुरा काम करेगा उसका दण्ड भोगेगा और ईश्वर के अतिरिक्त उसको कोई साथी और सहायक न मिलेगा। (१२३) जो व्यक्ति कोई भला कर्म करे पुरुष हो या स्त्री और विश्वास भी रखता हो तो ऐसे मनुष्य स्वर्ग मे प्रविष्ट होंगे और जरा भी उनका भाग न मारा जायगा। (१२४) और उस व्यक्ति से जिसका धर्म बढ़कर है जिसने अल्लाह के आगे अपना सिर झुका दिया और वह भलाई करनेवाला भी है और इब्राहीम के धर्म पर चलता है। जो एक ही के हो रहे थे और इब्राहीम को अल्लाह ने अपना मित्र ठहराया है। (१२५) और जो कुछ नभ मे है अल्लाह ही का है जो कुछ पृथ्वी मे है अल्लाह ही का है और सब वस्तुएँ अल्लाह ही के वश मे है। (१२६) (रुकू १८)

तुमसे अनाथ स्त्रियो के साथ विवाह करने की आज्ञा माँगते हैं तो समझा दो अल्लाह तुमको उनके बारे मे आज्ञा देता है* और कुरान मे जो तुमको सुनाया जा चुका है सो उन अनाथ स्त्रियो के सम्बन्ध मे है जिनको तुम उनका भाग जो उनके लिए ठहरा दिया गया है नहीं देते और उनके साथ विवाह करने की इच्छा करते हो और भी बेबस बच्चो के बारे मे भी वही आज्ञा देता है और अनाथो के पक्ष मे न्याय का विचार रक्खो और जो कुछ भलाई करोगे अल्लाह उसको जानता है। (१२७) यदि किसी स्त्री को अपने पति की ओर से अत्याचार या हृदय फिर जाने का सदेह हो तो दोनो पर कुछ अपराध नहीं कि आपस मे मेल कर लें और मेल अच्छा है और कजूसी तो सभी के हृदय मे होती है और यदि भलाई करो और बचे रहो तो ईश्वर तुम्हारे

---

* अनाथ स्त्रियों के साथ व्याह किया जा सकता है पर उनका हक उनको अवश्य देना चाहिये यानी खाना, कपड़ा।

कामो से सावधान है। (१२८) और तुम बहुतेरा चाहो परन्तु यह तो तुम से हो नही सकेगा कि पत्नियो मे एकसा व्यवहार कर सको तो पूर्णतः एक ही ओर मत झुक पड़ो कि दूसरी को छोड बैठो और यदि मेल कर लो और बचे रहो तो अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है (१२९) यदि दोनो अलग हो जायें तो अल्लाह अपने कोप मे से दोनो को पूरा कर देगा और अल्लाह औपचारिक तथा सहनशील है। (१३०) और जो कुछ नभ मे है और जो कुछ पृथ्वी मे है अल्लाह ही का है और जिन मनुष्यो को तुमसे पहले पुस्तक मिली थी उनसे और तुमसे हमने कह रक्खा है कि अल्लाह से डरते रहो और यदि नहीं मानोगे तो जो कुछ नभ मे और जो कुछ पृथ्वी मे है अल्लाह ही का है और अल्लाह निश्चित है और सर्वगुण सम्पन्न है। (१३१) अल्लाह ही का है जो कुछ नभ और पृथ्वी मे हैं अल्लाह ही काम सँभालनेवाला पर्याप्त है। (१३२) यदि वह चाहे तुमको मिटा दे और दूसरो को ला बसाये और अल्लाह ऐसा करने पर शक्तिशाली है।(१३३) जिसको बदले की ससार मे आवश्यकता हो तो अल्लाह के पास ससार और प्रलय के फल हैं और अल्लाह सुनता देखता है। (१३४) (रुकू १९)

ऐ धर्मवालो! दृढता के साथ न्याय पर स्थित रहो और यद्यपि तुम्हारे या तुम्हारे माता-पिता और सम्बन्धियो के विरुद्ध ही हो ईश्वर मान्य साक्षी दो यदि कोई धनवान या अवलम्बित है तो अल्लाह बढकर उनकी रक्षा करने वाला है। तो तुम इच्छाओ के आधीन न हो जाओ कि न्याय से मुंह फेरने लगो* और यदि दबी वाणी से साक्षी दोगे या छुप जाओगे तो जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसका पता रखता है। (१३५) ऐ धर्मवालो! अल्लाह पर व पैगम्बर पर और उस पुस्तक पर जो उसने अपने रसूल पर अवतरित की है और उन पुस्तको

*** यानी धनवानों के डर से और निर्धनो की दुर्दशा पर तरस खाकर अथवा रिश्तेदारो के प्रेम मे फंसकर सच बात को न छिपाओ।**

पर जो पहिले अवतरित की है विश्वास करो और जो कोई अल्लाह को और उसके देवदूतो को और उसकी पुस्तक और पैगम्बरो को और अन्तिम दिन को मना करेगा वह दूर भटक गया। (१३६) जो मनुष्य विश्वास लाये फिर काफिर हुए फिर विश्वास लाये फिर काफिर हुए फिर अविश्वास मे बढते गये तो ईश्वर न तो उसको क्षमा करेगा और न उनको मार्ग ही दिखायेगा। (१३७) मुनाफिकों को शुभ सवाद सुना दो कि उनको कष्टप्रद दण्ड भोगना है। (१३८) वे जो मुसलमानो को छोड़कर काफिरो को मित्र बनाते हैं क्या काफिरो के यहाँ मान चाहते हैं सो मान तो सारा अल्लाह ही का है। (१३९) तुम पर अल्लाह पुस्तक मे यह अवतरित कर चुका है कि जब तुम सुन लो कि अल्लाह की आयतो से मना किया जारहा है और उनकी हसी उडाई जाती है तो ऐसे मनुष्यो के साथ मत बैठो यहाँ तक कि किसी दूसरे की बात मे लग जावे अन्यथा इस दशा मे तुमभी उन्ही जैसे हो जाओगे। अल्लाह मुनाफिको* और काफिरो सबको नरक मे एकत्रित करेगा (१४०) वह अविश्वासी तुम्हे तकते है तो यदि अल्लाह से तुम्हारी विजय हो गयी तो कहने लगते हैं क्या हम तुम्हारे साथ न थे और यदि काफिरो को विजय प्राप्त हुई तो उनसे कहने लगते है कि क्या हम तुम पर नही विजित हो गये थे और तुमको मुसलमानो से नही बचाया था। अल्लाह तुममे प्रलय के दिन निर्णय कर देगा और ईश्वर काफिरो को मुसलमानो पर कभी भी विजय न देगा। (१४१) रुकू २०)

काफिर ईश्वर को धोखा देते हैं यद्यपि ईश्वर उन्ही को धोखा दे रहा है और जब नमाज के लिए खडे होते हैं तो आलस्य पूर्ण खडे होते है। मनुष्यो को दिखाते है और अल्लाह को स्मरण नही करते परन्तु कुछ यो ही अविश्वास और विश्वास के मध्य पडे भूल रहे हैं। (१४२) न इन की ओर, न उन की ओर, जिसको अल्लाह भटकाये

* जाहिरा कुछ और भीतरी कुछ रखने वाले।

तो उसके लिए कोई मार्ग न पावेगा। (१४३) धर्मवालो ! धर्मवालो को छोडकर काफिरो को मित्र मत बनाओ क्या तुम ईश्वर का प्रकट अपराध अपने ऊपर लेना चाहते हो। (१४४) कुछ संदेह नही कि काफिर नरक के सब से नीचे स्थान मे होगे और तुम किसी को भी इनका साथी न पाओगे। (१४५) परन्तु जिन मनुष्यो ने क्षमा माँगी और अपनी दशा सुधार ली और अल्लाह का सहारा पकडा और अपने धर्म को ईश्वर के लिये निश्चित कर लिया तो यह मनुष्य मुसलमानो के साथ होगे और अल्लाह मुसलमानो को बडे फल देगा। (१४६) यदि तुम आभार प्रकट करो और विश्वास रक्खो तो ईश्वर को तुम्हें दण्ड देने से क्या लाभ होगा और ईश्वर मान देने वाला तथा जानने वाला है। (१४७)



छठवाँ पारा (लायुहिब्बुल्लाह) सूरे निसा

अल्लाह को पसन्द नही कि कोई मुंह फोड़कर बुरा कहे परन्तु जिस पर अत्याचार हुआ हो और वह मुंह फोडकर अत्याचारी को बुरा कह बैठे तो विवश है और अल्लाह सुनता जानता है। (१४८) भलाई खुल्लम-खुल्ला करो या छिपा कर करो या बुराई क्षमा करो तो अल्लाह शक्तिशाली क्षमा करने वाला है। (१४९) जो मनुष्य अल्लाह और उसके पैगम्बरो से फिरे हुए हैं और अल्लाह व उसके पैगम्बरो मे भिन्नता डालना चाहते हैं और कहते हैं कि हम किसी को मानते है किसी को नही। और चाहते है कि अविश्वास ऐसे और विश्वास के मध्य मे कोई मार्ग निकालें। (१५०) तो वे मनुष्य निस्सदेह काफिर हैं और काफिरो के लिए हमने नरक का दण्ड तैय्यार कर रक्खा है। (१५१) और

जो मनुष्य अल्लाह और उसके पैगम्बरो पर विश्वास लाये और उनमें से किसी एक को दूसरे से प्रथक नही समझा तो ऐसे ही मनुष्य हैं जिनको अल्लाह उनके फल देगा और अल्लाह क्षमा करने वाला है, कृपालु है। (१५२) (रुकू २१)

पुस्तक वाले तुमसे माँगते हैं कि तुम उन पर कोई पुस्तक नभ से अवतरित करो तो इनके पूर्वज मूसा से इससे भी बडी वस्तु माग चुके हैं अर्थात उन्होंने मांगा कि अल्लाह को समक्ष कर दिखाओ। फिर उनको उनकी उद्दण्डता के कारण से विद्युत ने आ दबोचा उसके पश्चात भी यद्यपि उनके पास निशानियां आ चुकी थी तो भी बछड़े को ले बैठे फिर हमने वह भी क्षमा किया। और मूसा को हमने स्पष्ट शक्ति दी। (१५३) और उनसे सच्ची प्रतिज्ञा लेने के लिए हमने तूर पर्वत को उन पर ला लटकाया और हमने उनको आज्ञा दी कि द्वार मे सिर झुकाते हुए प्रविष्ट होना और हमने उनको कहा था कि सप्ताह के दिन अनाचार न करना और हमने दृढ़ बचन कर लिया (१५४) बस उनके बचन तोड़ने और अल्लाह की आयतो को न मानने और पैगम्बरो को अकारथ बध करने के कारण और उनके इस कहने के कारण से कि हमारे हृदय पर पर्दा है। पर्दा नही अपितु उनकी मनाई के कारण से ईश्वर ने उन पर मुहर कर दी है बस कुछ गिने हुए के अतिरिक्त विश्वास नही लाते। (१५५) और उनकी मनई के कारण से और मरियम के संबंध में बड़े बुरे शब्द बकने के कारण से (१५६) और उनके इस कहने के कारण से कि हमने मरियम के बेटे ईसा मसीह को जो रसूल थे बध कर डाला और न तो उन्होने उन को बध किया और न उनको सूली पर चढाया परन्तु उनको ऐसा ही प्रतीत हुआ और वे इस विषय में मतभेद डालते हैं और संदेह मे पड़े हैं। इनको इनकी सूचना तो है नहीं परन्तु केवल अनुमान के पीछे दौडे चले जा रहे हैं और निश्चय ही ईसा का मनुष्यो ने वध नहीं किया। (१५७) अपितु उनको अल्लाह ने अपनी ओर उठा लिया और अल्लाह अपार शौर्य-

चारिक है। (१५८) जितने पुस्तक वाले हैं अवश्य उनकी मृत्यु से पहले सब के सब उन पर विश्वास लावेंगे और प्रलय के दिन ईसा उनका साक्षी होगा। (१५९) अन्त को यहूदियो की उद्दण्डता के कारण से हमने पवित्र वस्तुएँ जो उनके लिए पथ्य थी उन पर कुपथ्य कर दी हैं और इस कारण से कि वे प्राय ईश्वर के मार्ग से रोकते थे। (१६०) और इस कारण से कि बारम्बार उनको व्याज लेने की मनाई कर देने पर भी व्याज लेते थे और इस कारण से कि मनुष्यो के धन को अकारण नष्ट करते थे और इनमे जो मनुष्य नही मानते उनके लिए हमने कष्ट-प्रद दण्ड आयोजित कर रक्खा है। (१६१) परन्तु उन पुस्तक वालों मे से जो विद्या मे निपुण है और विश्वास वाले हैं और जो पुस्तकें तुम पर अवतरित है और जो तुमसे पहिले अवतरित हुई है मानते हैं और नमाज पढते और दान देते और अल्लाह और प्रलय पर विश्वास रखते हैं। हम उन्ही को बडा फल देंगे। (१६२) (रुकू २२)

हमने तुम्हारी ओर ऐसा सन्देशा भेजा है जैसा हमने नूर और दूसरे पैगम्बरो की ओर और जो उनके पश्चात हुए भेजा था और हमने इब्राहीम और इस्माईल, इस्हाक और याकूब और याकूब की सतान, ईसा, आयूब, यूनिस, हारू और सुलेमान की ओर ईश्वर सदेश भेजा था और हमने दाऊद को जवूर पुस्तक दी थी। (१६३) और कितने पैगम्बर हैं जिनकी दशा हम पहिले तुम से वर्णन कर चुके हैं और कितने पैगम्बर है जिन की दशा हमने तुम से वर्णन नही की और अल्लाह ने मूसा से बातें की थी। (१६४) और कितने पैगम्बर शुभसवाद देनेवाले और डराने वाले आ चुके हैं जिससे पैगम्बरो के पीछे ईश्वर पर लाञ्छन देने का अवसर न रहे ईश्वर विजयी और चमत्कार पूर्ण है। (१६५) परन्तु जो कुछ ईश्वर ने तुम्हारी ओर अवतरित किया है अल्लाह साक्षी देता है कि उसे समझ कर अवतरित किया है और देवदूत साक्षी देते हैं और अल्लाह की साक्षी पर्याप्त है (१६६) जो मनुष्य मना करने वाले हुए और ईश्वर के मार्ग से रुके

वह बड़ी दूर भटक गये हैं। (१६७) जो मनुष्य काफिर हुए और अत्याचार करते रहे उनको ईश्वर न तो क्षमा करेगा और न उनको मार्ग ही दिखलायेगा। (१६८) अपितु नरक का मार्ग बतायेगा जिसमे वे सदैव रहेंगे और अल्लाह के निकट यह सरल है। (१६९) ऐ मनुष्यो ! पैगम्बर तुम्हारे पास तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से ठीक बात लेकर आये हैं। अतः विश्वास करो तुम्हारा भला होगा और यदि न मानोगे तो जो कुछ नभ और पृथ्वी में है अल्लाह ही का है और अल्लाह चमत्कार पूर्ण तथा जानकार है। (१७०) पुस्तकवालो अपने धर्म में सीमा से बढ़ न जाओ और ईश्वर के विषय मे सत्य बात निकालो। मरियम के पुत्र ईसामसीह बस अल्लाह के पैगम्बर है और ईश्वर की आज्ञा जो उसने मरियम की ओर कहला भेजी थी और आत्मा स्वय अल्लाह की ओर से आई बस अल्लाह और उसके पैगम्बरो पर विश्वास करो और तीन ईश्वर * न कहो। मान जाओ तुम्हारा भला होगा अल्लाह एक है इस योग्य नहीं कि उसके कोई संतान** हो उसी का है जो कुछ नभ मे और पृथ्वी मे है और अल्लाह काम का सम्भालने वाला पर्याप्त है। (१७१) (रुकू २३)

मसीह को ईश्वर का भक्त होने मे कदापि लज्जा नही और न देवदूतो को जो निकट हैं और जो ईश्वर का भक्त होने से लज्जा करे अहंकार करें तो ईश्वर शीघ्र इन सबको खीच बुलायेगा। (१७२) फिर जो मनुष्य विश्वास करे और भले काम की ईश्वर को पूरा प्रतिकार देगा और अपनी दया से अधिक भी देगा और जो लज्जा रखते और अहंकार करते हैं ईश्वर उनको कठोर दण्ड देगा। (१७३) और ईश्वर के अतिरिक्त उनको न कोई साथी मिलेगा और न सहायक

---

* ईसाई ईश्वर, ईसा और मरियम तीनों को खुदा बताते थे।

** खुदा को आदमी जैसा न समझो। उनके लिए बेटी-बेटा रखना शोभा नहीं देता। इसलिए हजरत ईसा ईश्वर-पुत्र नहीं, पैगम्बर थे।

(१७४) ऐ मनुष्यो! तुम्हारे पास तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से हुज्जत* आ चुकी और हमने तुम पर जगमगाता हुआ प्रकाश कुरान अवतरित करा दिया। (१७५) सो जो मनुष्य अल्लाह पर विश्वास करे और उसी का सहारा पकडो तो अल्लाह उनको शीघ्र अपनी कृपा और दया मे ले लेगा, और उनको अपनी ओर का सीधा मार्ग दिखला देगा। (१७६) तुम से आज्ञा माँगते हैं तो कह दो कि अल्लाह कलाला (जिसके सतान ब बाप-दादा न हो उसे कलाला कहते हैं) के विषय में तुमको आज्ञा देता है कि यदि कोई ऐसा पुरुष मर जावे जिसके सतान न हो और उसके बहन हो तो बहन को उसके धनका आधा और यदि बहनो के संतान न हो तो उसका सरक्षक वही भाई फिर, यदि बहनें दो हो तो उनको इसके धन मे से दो तिहाई और यदि भाई-बहन मिले जुले हो तो दो स्त्रियो के भाग के समान पुरुषो का भाग होगा। तुम्हारे भटकने के विचार से अल्लाह तुमसे खोल-खोल कर वर्णन करता है और अल्लाह सब कुछ जानता हैं। (१७७) (रुकू २४)



सूरे मायदा

यह मदीने में अवतरित हुई, इसमें १२० आयतें १६ रुकू हैं।

आरम्भ अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त दयावान तथा कृपालु है। ऐ धर्मवालो वचन पूरा करो। (१) मुसलमानो अल्लाह के नाम की वस्तुएें लेना पुण्य न समझो और न**. माननीय महीना और चढाये

---

* स्पष्ट निशानी ऐसी निशानी है जिससे सत्य और असत्य में भेद किया जा सके।

**अदब वाले महीनो में लड़ाई न करो।

के पशु जो मक्के को जायँ और न उनकी जिनके गलो मे पट्टे* बांध दिये गये हों न उनको जो मान वाले घर को अपने पालनकर्ता की दया और प्रसन्नता ढूंढ ने जाते हो और जब अहराम**से निकलो तो आखेट करो। कुछ मनुष्यों ने तुमको पूजनीय मसजिद से रोका था। यह शत्रुता तुमको अनाचार करने का कारण न हो और भलाई तथा सयम में एक दूसरे के सहायक होवो और अपराध और अनाचार मे एक दूसरे के सहायक न बनो और अल्लाह से डरो क्योकि अल्लाह का दण्ड कठोर है। (२) मरा हुआ, लोहू और सूअर का मांस और जो ईश्वर अतिरिक्त किसी और के नाम पर चढ़ाया गया हो और जो गला घुटने से मर गया और जो चोट से मरा हो और जो ऊपर से गिर कर मरा हो और सींगो से मारा हुआ हो यह सब वस्तुऐं तुम पर कुपथ्य कर दी गईं और जिसको दांतवालो ने खाया हो जिसको हलाल कर लो और जो पत्थरों (कावे के निकट वाले पत्थर) पर बध किया गया हो कुपथ्य है। पांसे डाल कर बाँटना पाप है यह पाप का कार्य है। काफिर तुम्हारे धर्म की ओर से निराश हुए तो उनसे न डरो। आज हम तुम्हारे धर्म को तुम्हारे लिए पूर्ण कर चुके और हमने तुम पर अपनी कृपा पूर्ण कर दी और हमने तुम्हारे लिए इस्लाम धर्म को पसन्द किया फिर जो भूख से व्याकुल हो और अपराध की ओर उसकी इच्छा न हो तो अल्लाह क्षम्य तथा कृपालु है। वह ऊपर कुपथ्य वस्तुऐं खा सकता है। (३) यदि तुम से पूछते हैं कि कौन-कौन सी वस्तुऐं उनके

*एक काफिर कुछ ऊंटचुरा लेगया था। मुसलमानों ने देखा कि यह उन के गले में पट्टे डालें हुए कावे की ओर कुर्बानी के विचार से लिए जा रहा हैं : उन्होने उन ऊंटों को उस दगाबाज से छीन लेना चाहा। इस पर यह आयत उतारी।

**अहराम—मुसलमान हज्ज (यात्रा) प्रारम्भ से समाप्ति तक एक कपड़ा पहिनते हैं उसे अहराम कहते हैं। उनके उतार देने के बाद शिकार करना न करना तुम्हारी इच्छा पर निर्भर है।

लिए उचित की गई हैं सो तुम उनको समझा दो कि निर्वल वस्तुऐं तुम्हारे लिए उचित हैं और आखेटक पशु जो तुमने आखेट के लिए सिखला रक्खे हो उनके आखेट किये हुए पशु उचित हैं जैसा तुमको ईश्वर ने सिखला रक्खा है वैसा ही तुमने उनको सिखला दिया है तो जो तुम्हारे लिए पकड़ रक्खें तो उसको खा लो परन्तु आखेटक पशु के छोडते समय ईश्वर का नाम ले लिया करो और अल्लाह से डरते रहो क्योंकि ईश्वर क्षण भर मे हिसाब ले लेगा। (४) आज पवित्र वस्तुऐं तुम्हारे लिए उचित कर दी गईं और पुस्तकवालों का खाना तुम्हारे लिए पवित्र और तुम्हारा खाना उनके लिए पवित्र है और मुसलमान परिणीता पत्नियाँ और जिन मनुष्यों को तुमसे पहिले पुस्तक दी जा चुकी है उनमे की परिणीता पत्नियाँ तुम्हारे लिए उचित हैं पर शर्त यह है कि उनके मिहर उनको दे दो और तुम्हारी इच्छा विवाह न करने की हो न मस्ती निकालने और न चोरी छिपे प्रेम करने की और जो धर्म को न माने तो उसका किया अकारथ होगा। प्रलय मे वह हानि उठानेवालो मे होगा। (५) (रुकू १)

मुसलमानो ! जब नमाज के लिए तय्यार हो तो अपने मुँह हाथ कुहनियो तक धो लिया करो और अपने सिर को म न लिया करो पैरो को मुरवा तक धो लिया करो और यदि अपवित्र होवे तो स्नान कर लिया करो और यदि बीमार होवो या तुममे से कोई पाखाने से आया हो या तुमने स्त्रियो से सहवास किया हो और तुम को जल न मिल सके तो शुद्ध मिट्टी लेकर उससे तयम्मुम अर्थात अपने मुँह और हाथो को मल लिया करो। अल्लाह तुम पर किसी प्रकार की कठोरता करना नही चाहता अपितु तुमको सुन्दर रखना चाहता है और यह कि तुम अपनी कृपा का भार पूरा करो जिसमें तुम धन्यवाद करो (६) और अल्लाह ने जो तुम पर कृपायें की है उनका स्मरण करो और उसका कर्तव्य जो तुम पर ठहराया गया है जब तुमने कहा कि हमने सुना और माना और ईश्वर से डरते रहो क्योंकि अल्लाह हृदय की

बातें जानता है। (७) मुसलमानों ईश्वर के लिए न्याय के साथ साक्षी देने को तय्यार रहो और मनुष्यो की शत्रुता से न्याय न छोडो, न्याय समय से अधिक निकट है और अल्लाह से डरते रहो अल्लाह तुम्हारे कार्यों से सावधान है। (८) जो विश्वास लाये और उन्होंने अच्छे काम किये अल्लाह से उनका प्रण है कि उनके लिये दान और बदला है। (९) और जिन मनुष्यों ने मना किया और हमारी आयतो को झुठलाया वह नारकीय हैं। (१०) ऐ मुसलमानो ! अल्लाह ने जो तुम पर कृपाएं की हैं उनको स्मरण करो कि जब कुरेश जाति ने तुम पर हाथ फेंकने की इच्छा की थी तो ईश्वर ने उनकें हाथो को रोक दिया और अल्लाह से डरते रहो और मुसलमानो को चाहिए कि अल्लाह ही पर भरोसा रक्खें। (११) (रुकू २)

अल्लाह इसराईल के पुत्रों से वचन ले चुका है और हमने उन्ही मे के द्वादश सरदार उठाये और अल्लाह ने कहा था कि हम तुम्हारे साथ हैं यदि तुम नमाज पढ़ो और दान दो और हमारे पैगम्बरों को मानो और उनकी सहायता करो और प्रसन्नचित से ईश्वर को कर्ज देते रहो तो हम अवश्य तुम्हारे अपराध तुम से दूर कर देंगे और अवश्य जो उपवनों में प्रविष्ट करेंगे जिनके नीचे नहरे बह रही होंगी इसके पश्चात जो तुममें से फिरेगा तो निस्संदेह वह सीधे मार्ग से भटक गया। (१२) बस उन्ही मनुष्यों को उनका प्रण तोडने के कारण से हमने फटकार दिया और उनके हृदयो को कट्टर कर दिया कि वह बातो को उनके ठीक अर्थ से बदलते है और उनको जो शिक्षा दी गई थी उससे लाभ लेना भूल गये और उनमे से कुछ मनुष्यों के अतिरिक्त उन सबसे छल की सूचना तुमको होती ही रहती है तो उन के अपराध क्षमा करो और बीती भुला दो क्योंकि अल्लाह भलाई वालो को चाहता है। (१३) और जो मनुष्य अपने को इसाई कहते हैं हमने उनसे वचन लिया था। तो जो कुछ उनको शिक्षा दी गई थी उससे लाभ उठाना भूल गये। फिर हमने उनमे शत्रुता और ईर्षा प्रलय के दिन तक के

लिये लगा दी और अन्तत ईश्वर उनको बतला देगा जो कुछ करते थे। (१४) ऐ पुस्तक वालो ! तुम्हारे पास हमारा पैगम्बर आ चुका है और पुस्तक मे से जो कुछ तुम छिपाते रहे हो वह उसमे से बहुत कुछ तुमसे स्पष्ट वर्णन करता है और बहुत-सी बातो को जान-बूझकर बताता है। अल्लाह की ओर से तुम्हारे पास प्रकाश और कुरान आ चुका है। (१५) जो ईश्वर की इच्छा पर चलते हैं उनको अल्लाह कुरान के द्वारा ठीक मार्ग दिखलाता है और अपनी कृपा में उनको अन्धेरे से निकालकर प्रकाश मे लाता है और उनको सीधा मार्ग दिखलाता है। (१६) जो मनुष्य मरियम के पुत्र मसीह को ईश्वर कहते हैं वही काफिर हैं। ऐ पैगम्बर इन से कहो कि यदि अल्लाह मरियम के पुत्र मसीह को और उनकी माता को और जितने मनुष्य पृथ्वी मे हैं सबको मार डालना चाहे तो ऐसा कौन है जो उसकी इच्छा को रोके और नभ और पृथ्वी और जो कुछ नभ और पृथ्वी के मध्य मे है अल्लाह ही का है। जो चाहता उत्पन्न करता है और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर शक्तिशाली है। (१७) और यहूदी व ईसाई कहते हैं कि हम अल्लाह के पुत्र और उसके प्यारे है। कहो कि वह तुम्हारे अपराधो के बदले मे तुमको दण्ड ही क्यो दिया करता है। अपितु ईश्वर ने जो उत्पन्न किये हैं उन्ही मे मानव तुम भी हो। ईश्वर जिसको चाहे क्षमा करे और जिसको चाहे दण्ड दे और नभ और पृथ्वी और जो कुछ नभ व पृथ्वी के मध्य मे है सब अल्लाह ही के वश मे है और उसी की ओर लौट कर जाना है। (१८) ऐ पुस्तक वालो ! पैगम्बरो की कमी* पड़े पीछे हमारा पैगम्बर तुम्हारे पास आया है जिससे तुम न कहो कि हमारे पास कोई शुभ सवाद सुनाने और डराने वाला नही आया। बस शुभसवाद सुनाने वाला आ चुका अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर शक्तिशाली है। (१९) (रुकू ३)

*** मुहम्मद साहब के छः सौ वर्ष पहिले से कोई नबी नहीं आया था।**

जब मूसा ने अपनी जाति से कहा कि भाइयो अल्लाह ने जो तुम पर कृपाए की है उनको स्मरण करो। उसने तुममे पैगम्बर बनाये और तुमको राजा बनाया। और तुमको वह पदार्थ दिये हैं जो समस्त संसार के मनुष्यो में से किसी को नही दिये। (२०) भाइयो! पवित्र पृथ्वी जो ईश्वर ने तुम्हारे भाग्य में लिख दी है उसमे प्रविष्ट हो और पीठ न फेरना* नही तो उलटे हानि मे आ जाओगे। (२१) वह कहने लगे कि ऐ मूसा! उस देश में तो बड़े शक्तिशाली मनुष्य हैं और जब तक वह वहाँ से न निकलें हम उसमें पैगम्बर न रक्खेंगे हाँ वे उसमे से निकल जावें तो हम अवश्य प्रविष्ट होंगे। (२२) भय मानने वालो मे से दो मनुष्य यूशा और कालिब थे जिन पर ईश्वर ने कृपा की। वह बोल उठे उन पर चढाई करके बैतुल मुकद्दस के द्वार मे घुस पड़ो और जब द्वार मे घुस पड़ो तो निस्सदेह तुम्हारी विजय है और यदि तुम विश्वास रखते हो तो अल्लाह ही पर भरोसा रक्खो। (२३) वह बोले ऐ मूसा जब तक उसमे शत्रु हैं हम उसमे न जावेंगे। हाँ तुम और तुम्हारे ईश्वर जाओ और उनसे युद्ध करो हम तो यही बैठे हैं। (२४) मूसा ने कहा कि ऐ मेरे पालनकर्ता अपना जीवन और अपने भाई के अतिरिक्त कोई मेरे वश मे नही। तू हममे और इन आज्ञाकारी मनुष्यो मे भेद डाल दे। (२५) ईश्वर ने कहा कि वह देश चालीस वर्ष तक इनको न मिलेगा। वन मे भटकते फिरेगे। तू अयज्ञाकारी मनुष्यो पर दुःख न कर। (२६) (रुकू ४)

ऐ पैगम्बर इन मनुष्यो को आदम के दो पुत्र हाबील और काबील की सत्य दशा पढ़कर सुनाओ कि जब दोनो ने भेंट** चढाई उनमे से एक अर्थात हाबील की स्वीकार हुई और दूसरे अर्थात काबील की

* जब काफिर से लडना पडे तब न भागना।

** कहते हैं यह भेट इसलिये चढ़ाई गई थी कि जिसकी भेंट स्वीकार हो उसके साथ एक सुन्दरी का व्याह हो।

अस्वीकृत हुई । तो काबील कहने लगा मैं तुझको अवश्य मार डालूँगा । उसने उत्तर दिया अल्लाह तो केवल सयमी को स्वीकार करता है । (२७) यदि मेरे मार डालने की इच्छा से तू मुझ पर अपना हाथ चलाएगा तो मैं तुझे वध करने के लिए तुझ पर अपना हाथ न चलाऊँगा क्योकि मैं अल्लाह से जो ससार का पालने वाला है । मैं उससे डरता हू । (२८) मै यह चाहता हू कि तू मेरा और अपना पाप समेट ले और नरकवासियो मे हो जावे और अत्याचारियो को यही दण्ड है । (२९) इस पर भी उसके हृदय ने उसको अपने भाई के मार डालने पर उतारू किया और अन्तत उसको मार डाला और हानि मे आ गया । (३०) इसके पीछे अल्लाह ने एक कौवा भेजा वह पृथ्वी को खोदने लगा जिससे काबील को दिखाए कि अपने भाई के अपमान को क्योंकर छिपाये अत. वह कौवे को पृथ्वी खोदते देखकर बोल उठा । हाय मैं इस कौवे के समान भी बुद्धिमान नही हुआ कि भाई के शव को छिपाता यह सोचकर वह पछताया (३१) इस कारण से हमने इसराईल के पुत्रो को आज्ञा दी की जो कोई किसी जान के बिना बदले या देशीय झगडे के बिना मनुष्यो को मार डाले और जिसने मरते को बचा लिया तो मानो उसने समस्त मनुष्यों को बचा लिया और उन इसराईल के पुत्रों के पास हमारे रसूल खूली-खुली निशानियाँ लेकर आ भी चुके हैं। इसके पश्चात इनमे से बहुत से देश मे अत्याचार करते फिरते हैं। (३२) जो मनुष्य अल्लाह और पैगम्बर से लड़ते और दंगा के अर्थ से देश मे दौडे फिरते हैं उनका दण्ड तो यही है कि मार डाले जाय या उनको सूली दी जाय या उनके हाथ पाँव उल्टे काट दिये जायें अर्थात सीधा हाथ काटा जाया तो बायाँ पैर काटा जावे या बायाँ हाथ तो सीधा पैर या उनको देश-निकाला दिया जाय । यह तो ससार मे उनकी अपमान हुआ और प्रलय मे बडा दण्ड है। (३३) परन्तु जो मनुप्य तुम्हारे वश मे आने से पहिले क्षमा माँग लें तो जाने रहो कि अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है। (३४) (रुकू ५)

ऐ मुसलमानो ! अल्लाह से डरो और उस तक पहुचने के

उपाय ढूँढते रहो और उसके मार्ग मे जान लडा दो सम्भवत. तुम्हारा भला हो। (३५) जिन मनुष्यो ने मना किया यदि उसके पास वह सब हो जो पृथ्वी मे है और उतना ही उसके साथ और भी हो जिससे प्रलय के दिन दण्ड के बदले मे उसको दे निकलें उनसे स्वीकार नही किया जाएगा और उनके लिए कठोर दण्ड है (३६) वे चाहेगे कि अग्नि से निकल भागें परन्तु वह वहाँ से नही निकलने पायेंगे और उनके लिये यह सदैव का दण्ड है। (३७) यदि पुरुष चोरी करे तो या स्त्री चोरी करे तो उनके कर्म के बदले मे दोनो के हाथ काट डालो। दण्ड ईश्वर से है और अल्लाह प्रवलहस्त ज्ञाता है। (३८) अपने अपराध के पीछे क्षमा माँग ले और अपने को सम्भाल ले तो अल्लाह उसकी क्षमा प्रार्थना स्वीकार कर लेता है क्योंकि अल्लाह क्षम्य तथा कृपालु है। (३९) क्या तुझको पता नही कि नभ और पृथ्वी मे अल्लाह ही का राज्य है जिसको चाहे दण्ड दे और जिसको चाहे क्षमा करे अल्लाह सर्वशक्तिवान है। (४०) ऐ पैगम्बर जो मनुष्य अविश्वास करते हैं और कुछ ऐसे हैं जो अपने मुह से तो कह देते हैं कि विश्वास लाए और उनके हृदय विश्वास नही करते तो इनके कारण तू उदास न हो और कई यहूदी हैं जो झूठी बातो को ढूँढते फिरते हैं और दूसरे मनुष्यो के लिए जो तुम्हारे पास नही आए बातो को स्वस्थान कर देते हैं और मनुष्यो से कहते हैं कि यदि तुमको यही आज्ञा दी जाय तो उसको मानना और यदि तुमको यह आज्ञा न मिले तो मानने से बचना और जनको अल्लाह विपत्ति में फसा हुआ रखना चाहे तो उसके लिए ईश्वर पर तुम्हारा कुछ भी बस नही चल सकता। यह वह मनुष्य हैं कि ईश्वर भी इनके हृदय को पवित्र करना नही चाहता। इन मनुष्यो की संसार मे बदनामी है और प्रलय मे इनके लिए बड़ा कठोर दण्ड है। (४१) झूठी बातो को ढूढते फिरते हैं, पाप का खाते हैं तो यदि यह तुम्हारे पास आवें तो तुम इनमे निर्णय करो या इनसे अलग हो और यदि तुम इनसे अलग रहोगे तो वे तुमको किसी प्रकार की भी हानि नही पहुंचा सकेंगे और यदि निर्णय करो तो इनमे न्याय के साथ

निर्णय करना क्योकि अल्लाह् न्याय करनेवालो को मित्र रखता है। (४२) और यह मनुष्य क्यो तुम्हारे पास झगडे तै करने को लाते हैं जब कि स्वय इनके पास तौरात है, उसमे ईश्वर की आज्ञा है फिर इसके पश्चात वह उससे फिर जाते हैं और वे अपनी पुस्तक पर भी विश्वास नही रखते। (४३) (रुकू ६)

हमने तौरात अवतरित की जिसमें ज्ञान और प्रकाश है। आज्ञा मानने वाले पैगम्बर उसी के अनुसार यहूदियो को आज्ञा दिया करते थे और यहूदियो के पुजारी और काविल भी उसी के अनुसार यहूदियों को आज्ञा दिया करते थे और यहूदियो के पुजारी और काविल भी उसी के अनुसार आज्ञा देते थे क्योकि वह सब अल्लाह की पुस्तक के रक्षक और साक्षी ठहराये गए थे। अत ऐ यहूदियो तुम मनुष्यो से न डरो और हमारा ही भय मानो, हमारी आयतो के बदले मे निम्न लाभ मत लो और जो ईश्वर की अवतरित की हुई पुस्तक के अनुसार आज्ञा न दें तो यही मनुष्य काफिर हैं। (४४) और हमने तौरात मे यहूद को लिखित आज्ञा दी थी कि जान के बदले जान, आँख के बदले आँख नाक के बदले नाक, कान के बदले कान, दाँत के बदले दाँत और सब वातो का वदला इसी प्रकार समान है, फिर जो बदला क्षमा कर दे तो वह उसकी शांती होगी और जो ईश्वर की अवतरित की हुई के अनुसार आज्ञा न दे तो वही मनुष्य अन्यायी हैं। (४५) इसके पश्चात इन्ही के पैरो पर हमने मरियम के पुत्र ईसा को चलाया, वह तौरात को जो उनके पहले से थी प्रमाणित करते थे और उनको हमने ईंजील दी जिसमे ज्ञान और प्रकाश है और तौरात जो उसके पहिले से थी उसको प्रमाणित भी करती है और सयमियो के लिए नसीहत है। (४६) और इजील वालो को चाहिए कि जो ईश्वर ने उसमे आज्ञाए अवतरित की हैं उसी के अनुसार आज्ञा दिया करें और जो ईश्वर के अवतरित किए हुए के अनुसार आज्ञा न दे तो यही मनुष्य अवज्ञाकारी है। (४७) और हमने तुम्हारी ओर सच्ची पुस्तक अवतरित की कि जो पुस्तकें

इनके पहिले है और उनकी रक्षा करती है तो जो कुछ ईश्वर ने अवतरित किया है तुम उसी के अनुसार इन मनुष्यो मे आज्ञा दो और जो कुछ सत्य वात तुमको पहुँची हैं उसे छोडकर इनकी आकाँक्षाओं का समर्थन मत करो। हमने तुमसे प्रत्येक के लिए एक नीति और नियम दिया है और यदि अल्लाह चाहता है तो तुम सवको एक ही धर्म पर कर देता। परन्तु यह चाहा गया है कि जो आज्ञाएँ दी हैं उनमे तुम्हारा परीक्षण किया सो तुम भले कामो की ओर चलो तुम सवका अल्लाह ही की ओर लौट कर जाना है। तो जिन-जिन वातो मे तुम लोग भेद करते रहे हो वह तुमको वता देगा (४८) ऐ पैगम्वर जो पुस्तक ईश्वर ने अवतरित की है उसी के अनुसार इन मनुष्यो को आज्ञा दो और उनकी इच्छाओ का समर्थन न करो और इन यहूदियो से डरते रहो कि जो ईश्वर ने तुम्हारी ओर अवतरित की है उसकी किसी आज्ञा से यह मनुष्य कही तुमको भटका न दे, फिर यदि न मानें तो ध्यान रखो कि ईश्वर ने इनके कई अपराधो के कारण इनको दण्ड पहुचाना चाहा है और मनुष्यों मे वहुत से अवज्ञाकारी है। (४६) क्या ये मूर्खता की आज्ञा चाहते हैं और जो विश्वास करने वाले हैं उनके लिए अल्लाह से श्रेष्ठ आज्ञा देने वाला कौन हो सकता है। (५०) (रुकू ७)

मुसलमानो! यहूद और ईसाई को मित्र न वनाओ, यह एक दूसरे के मित्र है और तुममे से कोई इनको मित्र वनायेगा तो निस्सन्देह वह इन्ही मे का है क्योकि ईश्वर अत्याचारियो को सीधा मार्ग नही दिखलाया करता। (५१) तो जिन लोगो के हृदय मे फूट का रोग है तुम उनको देखोगे कि यहूदियो मे कहते फिरते हैं कि हमको तो इस वात का भय लग रहा है कि हम पर विपत्ति न आ जावे। सो कोई दिन जाता है कि अल्लाह विजय या कोई आज्ञा अपनी ओर से भेजेगा तो उस पर जो अपने हृदय मे छिपाते थे चकित होगे। (५२) और मुसलमान कहेगे कि क्या यह वही मनुष्य हैं जो वड़े जोर से अल्लाह

की कसम खाते थे कि हम तुम्हारे साथ है इनका सब किया अकारथ हुआ और हानि मे आ गये। (५३) मुसलमानो ! तुममे से कोई अपने धर्म से फिर जाय तो ईश्वर ऐसे मनुष्य उपस्थित करेगा जिनको वह मित्र रखना होगा और वह उसको मित्र रखते होगे, मुसलमानो के साथ नरक, तथा काफिरो के साथ कठोर होगे। अल्लाह के मार्ग मे अपनी जानें लडावेंगे और किसी की रुष्ठता का भय नही रखेगे। यह ईश्वर की दया है जिसको चाहे दे और बहुत जानने वाला है। (५४) बस तुम्हारे तो यही मित्र हैं अल्लाह और अल्लाह का पैगम्बर और मुसलमान जो नमाज पढते तथा दान देते तथा भुके रहते है। (५५) और जो अल्लाह और अल्लाह के पैगम्बर और मुसलमानो का मित्र होकर रहेगा तो अल्लाहवालो ही की विजय है। (५६) (रुकू ८)

मुसलमानो ! जिन्होने तुम्हारे धर्म को हसी और खेल बना रखा है अर्थात जिनको तुमसे पहिले पुस्तक दी जा चुकी है उन्हे तथा काफिरो को मित्र मत बनाओ और यदि तुम विश्वास रखते हो तो ईश्वर से डरते रहो। (५७) जब तुम नमाज के लिए बाँग देकर बुलाते हो तो यह मनुष्य नमाज को हंसी और खेल बनाते हैं यह इसलिए कि वह अज्ञान हैं। (५८) कहो कि ऐ पुस्तकवालो (यहूद) ! क्या तुम हमसे इसलिए शत्रुता रखते हो कि हम अल्लाह पर और जो हमारी ओर अवतरित है उस पर और जो पहले अवतरित हो चुकी है उस पर विश्वास ले आये हैं और यह है कि तुममे के प्राय अवज्ञाकारी हैं। (५९) कहो कि मैं तुमको बताऊ तो ईश्वर के निकट बुरे बदले के योग्य हैं। वह जिस पर ईश्वर ने धिक्कार दिया और उन पर अपना कोप किया और किसी को बन्दर और सूअर बना दिया था जो राक्षस को पूजने लगे तो यह मनुष्य पद मे हमसे कही खराब ठहरे और सीधे मार्ग से बहुत भटक गए। (६०) जब तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं हम विश्वास लाये यद्यपि मनाह हो को साथ लेकर आये थे और

उसी को साथ लिये गए और जा छिपाये हुए थे अल्लाह उसको खूब जानता है। (६१) और तुम इनमे से बहुतेरो को देखोगे कि अपराध की बात और अत्याचार तथा पाप का धन खाने पर गिरे पडते हैं। क्या ही बुरे ये काम हैं जो वे करते है ? (६२) इनके पुजारी और पण्डित इनको झूठ बोलने और पाप का धन खाने से क्यों नहीं मना करते। ये क्या ही बुरे काम है जो वह कर रहे हैं। (६३) और यहूदी कहते है कि ईश्वर का हाथ*सीमित है। इन्ही के हाथ सीमित हो जाय और इनके कहने पर इनको धिक्कार है। अपितु ईश्वर के दोनो हाथ फैले हुए हैं जिस प्रकार चाहता है व्यय करता है और लो तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से तुम पर अवतरित है अवश्य उनमे से बहुतेरो की नटखटी और मनाई के अधिक होने के कारण होगा और हमने इनके मध्य आपस मे शत्रुता और ईर्षा प्रलय तक डाल दी है। जब जब युद्ध की अग्नि भडकाते हैं अल्लाह उसको शान्त कर देता हे और देश मे उत्पात फैलाते-फिरते हैं और अल्लाह उत्पातियो को मित्र नही रखता। (६४) यदि पुस्तक वाले विश्वास लाते और डरते तो हम इनसे इनके अपराध अवश्य उतार देते और इनको पदार्थो के उपवनो मे भी अवश्य प्रविष्ट करते। (६५) यदि यह तौरात और इजील और उनको जो उन पर इनके पालनकर्ता की ओर से अवतरित है स्थिर रखते तो अवश्य उन पर ईश्वर की कृपाये वर्पा के समान बरसती कि ऊपर से और पाँव के तले (जमीन पर गिरी) तक खाते। इनमे से कुछ मनुष्य सीधे हैं और इनमे से प्राय. तो बहुत ही बुरा कर रहे हैं। (६६) (रुकू ९)

---

*यहूदी जब धनवान होते तो खुदा को फकीर कहते थे और जब फकीर हो जाते तो कहते खुदा बड़ा कजूस है उसने अपनी दया का हाथ इसलिए रोक लिया है। उस पर ये आयत उतरी कि खुदा के दोनों हाथ खुले हैं। वह जब चाहे और जिसको जितना चाहे उतना दे, उसको कोई रोक नहीं सकता।

ऐ पैगम्बर ! जो तुम पर तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से अवतरित की है उसे मनुष्य तक पहुचा दो और यदि तुमने न किया तो तुमने ईश्वर का सन्देश नही पहुचाया और अल्लाह तुमको मनुष्यो से बचायेगा क्योकि अल्लाह उनको जो काफिर हैं मार्ग नही दिखायेगा । (६७) कहो कि ऐ पुस्तकवालो ! जब तक तुम तौरात और इजील और जो तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से तुम पर अवतरित हैं उसे न मानो तब तक तुम मार्ग पर नही हो । और जो तुम पर तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से कुरान अवतरित हुआ है उनमे से बहुतेरो के अहकार और अविश्वास को ही बढ़ायेगा अत तू काफिर पर खेद न कर । (६८) इसमे कुछ सन्देह नही जो मुसलमान हैं और यहूदी हैं और साबी और ईसाई हैं जो कोई अल्लाह और प्रलय पर विश्वास लाये हैं और नेक काम करे तो ऐसे मनुष्य पर न भय होगा और न वह उदासीन रहेंगे । (६९) हम याकूब के पुत्रो से पता करा चुके हैं और हमने इनकी ओर बहुत पैगम्बर भी भेजे जब कभी कोई पैगम्बर इनके पास ऐसी आज्ञा लेकर आया जिनको उनके हृदय नही चाहते थे तो बहुतो ने झुठलाया और कुछ ने उनका वध किया । (७०) और समझे कोई विपत्ति नही आएगी । परन्तु सब अधे और बहरे हो गये फिर ईश्वर ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली फिर भी इनमे से बहुतेरे अधे और बहरे बने रहे और जो कुछ कर रहे हैं अल्लाह देख रहा है । (७१) जो मनुष्य कहते हैं कि ईश्वर तो यही मरियम के पुत्र मसीह हैं यह मनुष्य काफिर हो गये और मसीह समझाया करते थे कि ऐ याकूब के पुत्रो अल्लाह की प्रार्थना करो क्योकि वह मेरा और तुम्हारे पालनकर्ता है और सदेह नही कि जिसने अल्लाह का समकक्ष ठहराया बैकुण्ठ उस पर पाप हो चुका और उसका ठिकाना नरक है और अत्याचारियो का कोई भी सहायक नही । (७२) जो कहते हैं ईश्वर तो इन्ही तीन मे का एक है निस्सन्देह वे काफिर हो गये यद्यपि एक ईश्वर के अतिरिक्त और कोई पूजित नही और जैसी-जैसी बातें ये कहते हैं यदि उनसे नही आवें सो जो इनमे से काफिर हैं इन पर कठोर होगी । (७३) वह क्या नही

ईश्वर के समक्ष क्षमा माँगकर अपराव क्षमा करते यद्यपि अल्लाह क्षमा करनेवाला कृपालु है। (७४) मरियम के पुत्र मसीह तो केवल एक पैगम्बर हैं इनसे पहले पैगम्बर हो चुके हैं और इनकी माता सच्ची थी। दोनों खाना खाते थे देखो तो सही हम प्रमाण ले किस प्रकार खोल खोलकर इन मनुष्यो से वर्णन करते हैं फिर भी देखो कि यह किधर उल्टे भटकते चले जा रहे हैं। (७५) कहो क्या तुम ईश्वर के अतिरिक्त ऐसी वस्तुओ की पूजा करते हो जो तुम्हें लाभ हानि पहुचा सकती और अल्लाह सुनता और जानता है। (७६) कहो कि ऐ पुस्तकवालो अपने धर्म मे अकारण असीमितता मत करो और न उनकी आकाँक्षाओ पर चलो जो पहले भटक चुके हैं और वहुतेरो को भटका चुके हैं और स्वयं सीधे मार्ग से भटक गये हैं। (७७) (रुकू १०)

याकूव के पुत्रों में से जिन मनुष्यो ने अविश्वास किया उन पर दाऊद और मरियम के पुत्र ईसा की ओर से फटकार पड़ी—यह इससे कि वे अपराधी थे और सीमा से वढ़ गये थे। (७८) जो बुरा काम कर बैठते थे उससे मानते न थे। वह बुरे काम थे जो वे किया करते थे। (७९) तुम उनमे से बहुतेरों को देखोगे कि काफिरों से मित्रता रखते हैं उन्होने अपने लिए बुरी तैयारी भेजी है कि ईश्वर उनसे नाराज हुआ और यह सदैव दण्ड भोगेंगे। (८०) और यदि अल्लाह पर और पैगम्बर पर तथा जो पुस्तक उन पर अवतरित हुई उस पर विश्वास रखने तो काफिरो को मित्र न बनाते परन्तु इनमे से बहुतेरे अवज्ञाकारी हैं।(८१) मुसलमानो के साथ शत्रुता के विषय मे यहूदियो को और मुश्रिकीन को तुम सबसे बड़ा कठोर पाओगे और मुसलमानो के साथ शत्रुता के विषय में सब मे उनको निकट पायेगा जो कहते हैं कि हम ईसाई हैं यह इस कारण से है कि इनमे पादरी और पण्डित हैं और यह मनुष्य घमण्ड नही करते। (८२)



सातवाँ पारा (व इजासमिऊ)

और जो कुछ पैगम्बर पर अवतरित है उसे सुनते हैं तो तू उनकी आँखो को देखता है कि उनसे आसू बहते हैं इसलिए कि उन्होने सत्य बात को पहिचान लिया है। कहते हैं कि ऐ हमारे पालनकर्ता हम तो विश्वास ले आये तू हमको साक्षिओ मे लिख । (८३) और हमको क्या हुआ है कि हम अल्लाह को न मानें और सत्य बात जो हमारे पास आई है उस पर विश्वास न करें। हमें आशा है कि पालनकर्ता की दृष्टि मे हम अच्छे समझे जायेंगे। (८४) तो इनके इस बात के बदले मे ईश्वर ने इनको ऐसे उपवन दिये जिनके नीचे नहरें बह रही है वे उनमे सदैव रहेगे भलाई करनेवालो का यही बदला है। (८५) और जिन मनुष्यो ने न माना और हमारी आयतो को झुठलाया यही नरक वासी हैं। (८६) (रुकू ११)

मुसलमानो ! ईश्वर ने जो स्पष्ट वस्तुए तुम्हारे लिए पुण्य कर दी हैं उनको पाप मत करो और सीमा से न बढो क्योकि अल्लाह सीमा से बढनेवालो को नही चाहता। (८७) ईश्वर ने जो तुमको सुथरी भोग्य वस्तुएँ दी हैं उनको खाओ और जिस पर तुम्हारा विश्वास है उससे डरते रहो। (८८) तुम्हारी निरर्थक कसमो पर ईश्वर नही पकड़ेगा हाँ पक्की कसम खा लो तो ईश्वर पकडेगा तो इस पाप की शान्ति के लिए दस भूखो को साधारण भोजन देना है जैसा अपने घर वालो को खिलाते हो या उनको कपडे बना देना है या एक सेवक छोड़ देना है फिर जिसमे सामर्थ्य न हो तो तीन दिन के रोजे रखे यह तुम्हारी कसमो की शान्ति है जबकि तुम कसमें खा चुके हो तो अपनी कसमों को रोके रहो। इस प्रकार अल्लाह अपनी आज्ञा तुमको सुनाता है कि सम्भवत तुम आभार मानो। (८९) मुसलमानो ! मदिरा, जुआ, मुर्तीक और पाँसे यह गन्दे राक्षसी कर्म हैं इनसे बचो सम्भवत. इनसे तुम्हारा भला हो। (९०) राक्षस तो यही चाहता है कि मदिरा और जुए के

कारण तुम्हारी आपस मे शत्रुता और ईर्षा डलवा दे और तुमको ईश्वर की स्मृति से और नमाज से रोके तो क्या तुम रुकना चाहते हो। (९१) और अल्लाह की और पैगम्बर की आज्ञा मानो और बचते रहो इस पर भी यदि तुम फिर बैठोगे तो जाने रहो कि हमारे पैगम्बर का कर्तव्य तो केवल स्पष्ट कह देना मात्र था। (९२) जो मनुष्य विश्वास लाये और उन्होंने अच्छे काम किये तो जो कुछ खा-पी चुके उसमें उन पर पाप नही रहा जबकि उन्होने अपवित्र वस्तुएँ से परहेज किया और विश्वास लाये और भले काम करने लगे और अल्लाह अच्छे काम करनेवालो को चाहता है। (९३) (रुकू १२)

मुसलमानों! एक जरा से आखेट से जिस तक तुम्हारे हाथ और भाले पहुंच सकें एहराम की दशा में ईश्वर अवश्य तुम्हारी परीक्षा करेगा जिससे अल्लाह पता करे कि कौन अदृष्ट से डरता है फिर इसके पश्चात जो असीमितता करे तो उनको दुख दाई दण्ड है। (९४) मुसलमानों! जबकि तुम एहराम की दशा मे होवो तो आखेट मत करो और जो कोई तुममें से जान बूझ कर मारेगा तो जैसे जीव को मारा है उसके बदले मे वैसा ही पशु जो तुममे के दो न्यायी ठहरा दें देना पडेगा और भेंटें काबे मे भेजना या उसके बदले में भूखो को खिलाना या उसके समान रोजे रखना जिससे अपने किये का फल भोगो जो हो चुका उसे ईश्वर ने क्षमा किया। यदि और करेगा तो अल्लाह उससे बदला लेनेवाला है। (९५) समुद्री आखेट और खाने की समुद्री वस्तुऐं तुम्हारे लिए भोग्य की जाती है जिससे तुमको और यात्रियो को लाभ पहुचे और बन का आखेट जब तक एहराम मे रहो तुम पर पाप है और अल्लाह से डरते रहो जिसके समीप जाना है। (९६) ईश्वर ने काबे को जो कि प्रमुख स्थान है मनुष्यो की रक्षा के लिए निर्मित किया है और पवित्र महीनो को और बली को और जो आभूषण इत्यादि उनके गले मे लटक रहे हैं बनाया है यह इसलिए कि तुमको ध्यान रहे कि जो कुछ नभ और जो कुछ पृथ्वी मे है अल्लाह जानता है और यह कि

अल्लाह प्रत्येक वस्तु से जानकार है। (९७) जाने रहो कि अल्लाह दण्ड देने मे कठोर है और यह भी कि अल्लाह क्षमा करने वाला दयालु हैं। (९८) पैगम्बर का कर्तव्य केवल इसे तुम तक पहुचा देना है और जो तुम प्रकट मे करते हो और जो छिपा कर करते हो अल्लाह सब कुछ जानता है। (९९) कहो कि पवित्र और अपवित्र समान नही हो सकतीं चाहे अपवित्र की अधिकता तुम को अच्छा लगे तो हे बुद्धिमानों ईश्वर से डरते रहो सम्भवत. तुम्हारा भला हो। (१००) (रुकू १३)

मुसलमानों। ऐसी बातें न पूछा करो कि जो यदि तुम पर प्रकट कर दी जाय तो तुमको बुरी लगें और ऐसे समय मे जबकि कुरान अवतरित हो रहा है उन बातो का भेद पूछोगे तो तुम पर प्रकट भी कर दिया जायगा अल्लाह ने इन बातो को क्षमा किया और अल्लाह क्षमा करने वाला तथा सहन करने वाला है। (१०१) तुमसे पहिले भी मनुष्यो ने ऐसी ही बातें पूछी थी फिर जानने पर पैगम्बरो से मना करने लगे। (१०२) खुदा ने न वाहीरा (कनकटी ऊटनी) और न साइबा (ऊटनी जो साँड की तरह छोडी जाती थी) और न वसीला (वह ऊँटनी जिसके पहिलौठी के दो वच्चे स्त्री जातीक हो) और न हाम (ऊँट जिसकी नस्ल से कई वच्चे हो गये हो) इनके विषय मे ईश्वर ने कुछ नही कहा अपितु काफिरो ने ईश्वर पर बुरी बातें कही है और इनपे वहुतेरे अनसमझ हैं। (१०३) जब इनसे कहा जाता है जो अल्लाह ने कुरान अवतरित किया है उसकी ओर पैगम्बर की ओर चलो तो कहते हैं कि जिस पर हमने अपने पिता-पितामह को पाया है हमारे लिए पर्याप्त है भला यदि जो इनके पिता कुछ न जानते और सीधे मार्ग पर न हो तो भी क्या ये उन्ही के मार्ग पर चलेंगे (१०४) मुसलमानो! तुम अपनी जानो का ध्यान रक्खो जब तुम सीधे मार्ग पर हो तो कोई भी पथभ्रष्ट तुम को हानि नही पहुचा सकता तुम सब को अल्लाह की ओर लौटकर जाना है तो जो कुछ करते रहे हो तुमको वह बतायेगा। (१०५) मुसलमानो! जब

तुममे से किसी के सामने मृत्यु आ खड़ी हो तो वसीयत करते समय तुममे के दो विश्वासी साक्षी हो या यदि तुम कही को यात्रा करो और मृत्यु आ जाय तो विधर्मी ही के दो साक्षी हो यदि तुमको सदेह हो तो उन दोनो को नमाज के पश्चात रोक लो फिर वह दोनों अल्लाह की कसमें खायँ कि हम रिश्वत के लालच से कसम नही खाते चाहे वह व्यक्ति रिश्तेदार ही क्यो न हो और हम ईश्वर की साक्षी को नहीं छिपाते और यदि ऐसा करें तो हम निस्सदेह अपराधी हैं। (१०६) फिर यदि पता हो जाय कि वह दोनो सत्य को छिपा ले गये तो इनके स्थान पर दो उन मनुष्यो मे से खडे हों जिन्होने इनको असत्य ठहराया हो उनमे से जो निकट के हो फिर वह अल्लाह की कसमे खाय कि पहिले दो साक्षियो से हमारी साक्षी अधिक सत्य है और हमने असीमितता नही की ऐसा किया हो तो हम निस्सदेह अत्याचारी हैं। (१०७) इस प्रकार की कसम से यह बात सोचने के योग्य है कि मनुष्य जैसी की तैसी साक्षी दें या डरें की हमारी कसम उनकी कसम के पश्चात उल्टी पडेगी और अल्लाह से डरते रहो और सुन लो अल्लाह आज्ञा न मानने वालो को मार्ग नही वतलाता। (१०८) (रुकू १४)

जव अल्लाह पैगम्वरो को एकत्रित करके पूछेगा कि तुमको क्या उत्तर मिला वह कहेंगे कि हमको कुछ पता नही अदृष्य बातें तो तू ही खूब जानता है। (१०९) उस दिन अल्लाह कहेगा कि ऐ मरियम के पुत्र ईसा! हमने तुम पर और तुम्हारी माता पर जो-जो कृपाएं की हैं स्मरण करो जवकि पवित्र आत्मा से तुम्हारी सहायता की, गोद में और वडे होकर भी तुम मनुष्यो से वात चीत करते थे और जवकि हमने तुम को पुस्तक और बुद्धमानी और तौरात और इन्जील सिखलाई और जवकि तुम हमारी आज्ञा से चिडिया का रूप मिट्टी से वनाते फिर उसमें फूंक मार देते तो वह हमारी आज्ञा से पक्षी वन जाते और जवकि तुम जन्म के अन्धे और कोढ़ी को हमारी आज्ञा से ठीक

कर देते और जबकि तुम हमारी आज्ञा से मृतकों को निकाल खडा करते और जबकि हमने याकूब के पुत्रो बनी इसराईल को तुम्हारे मार डालने से रोका कि जिस समय तुमने उनको निशानी दिखलाई। तो उनमे से जो तुम्हारा विश्वास नही करते थे कहने लगे कि यह तो केवल स्पष्ट जादू है। (११०) और जब हमने हवारियो* के हृदय में डाला कि हम पर और हमारे पैगम्बर पर विश्वास लाओ तो उन्होने कहा हमने विश्वास किया और तू इस बात का साक्षी रह कि हम आज्ञाकारी हैं। (१११) जब हवारियो ने प्रार्थना की कि ऐ मरियम के पुत्र ईसा ! क्या तुम्हारे पालनकर्ता से हो सकेगा कि हम पर नभ से एक थाल उतारे तो कहा यदि तुम विश्वास रखते हो तो ईश्वर से डरो। (११२) वह बोले हम चाहते हैं कि उसमे से कुछ खायें और हमारे हृदय मे विश्वास हो जाय और हम पता करलें कि तूने हमसे सत्य कहा और हम इसके साक्षी हैं। (११३) ईसा, मरियम के पुत्रने कहा कि ऐ अल्लाह, हमारे पालनकर्ता, हम पर नभ से एक थाल उतार, थाल हमारे लिए अर्थात हमारे अगलो और पिछलो के लिए ईद**निश्चित हो और तेरी ओर से निशानी हो और हमको आजीवका दे और तू सब आजीवका देनेवालो मे से अच्छा है। (११४) अल्लाह नें कहा निस्सदेह हम वह थाल तुम लोगो पर उतारेंगे। तो जो व्यक्ति फिर भी तुममे से अविश्वास करता रहेगा तो हम उसको ऐसी कठिन दण्ड देंगे कि समस्त ससार मे किसी को भी ऐसा नही दिया होगा (११५)) (रुकू १५)

उस दिन अल्लाह पूछेगा कि ऐ मरियम के पुत्र ईसा, क्या तुमने मनुष्यो से यह बात कही थी कि ईश्वर के अतिरिक्त मुझको और मेरी

*** हवारी—ईसा के साथी।**

****कहा जाता है कि यह थाल इतवार के दिन उतरा था। ईसाई इसीलिए इस दिन बड़ी खुशी मनाते हैं।**

माता को दो ईश्वर मानो? बोला कि तेरी जात पवित्र है मुझसे क्यो कर हो सकता है कि मैं ऐसी बात कहू जिसके कहने का मुझको कोई अधिकार नही यदि मैं ऐसा कहता तो मुझे अवश्य ही पता होता तू मेरे हृदय की बात नही जानता। अदृष्य की बातें तो तू ही खूब जानता है। (११६) तूने जो मुझको आज्ञा दी थी बस वही मैंने इनको कह सुनाई थी कि अल्लाह जो मेरा और तुम्हारा पालनकर्ता है उसी की पूजा करो और जब तक मैं इन मनुष्यो मे रहा मैं उनका दर्शक रहा फिर जब तूने मुझको उठा लिया तो तू ही इनका दर्शक हो गया और तू सब वस्तुओ का साक्षी है। (११७) यदि तू इनको दण्ड दे तो यह तेरे भक्त हैं और यदि तू इनको क्षमा करे तो निस्संदेह तू प्रबल चमत्कार वाला है। (११८) अल्लाह ने कहा कि यह वह दिन है कि सच्चे भक्तो को उनकी सच्चाई काम आयेगी उसके लिए उपवन होगे जिनके नीचे नहरें बह रही होगी वे उसमे सदैव रहेंगे अल्लाह उनसे प्रसन्न और वह अल्लाह से प्रसन्न यही बड़ी सफलता है। (११९) नभ और पृथ्वी तथा जो कुछ नभ और पृथ्वी मे है सब पर अल्लाह ही का अधिकार है और वह सर्वशक्तिमान है। (१२०) (रुकू १६)



सूरे अनआम

यह मक्के में अवतरित हुई इसमें १६५ आयतें २० रुकू

आरम्भ अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त दयावान तथा कृपा[illegible]

हर प्रकार की बड़ाई अल्लाह ही को है जिसने नभ और पृथ्वी को बनाया और अंधेरा और उजाला बनाया। इस पर भी काफिर अपने पालनकर्ता का समकक्ष औरो को ठहरते हैं। (१) वही है जिसने

तुमको मिट्टी से उत्पन्न किया फिर एक अवधि ठहरा दी और एक नियत समय उसके पास है फिर भी तुम सन्देह करते रहो। (२) और नभ मे और पृथ्वी मे वही अल्लाह है जो कुछ छिपा कर और जो प्रकट मे करते हो उमका उसे ज्ञान है और कुछ तुम कमाते हो उसे प्रतीत है। (३) और तेरे पालनकर्ता की, निशानियो मे से कोई निशानी उनके पास नही पहुचती। परन्तु वह उनसे मुँह फेरते है। (४) जब सब इनके पास आया उसको भी झुठला दिया तो यह मनुष्य जो प्रलय की हँसी उडा रहे हैं उसकी सत्यता इनको आगे चलकर प्रतीत हो जायगी। (५) क्या इन मनुष्यो ने दृष्टि नही की हमने इनसे पहिले कितने गुटो का नाश कर दिया जिनकी हमने देश मे ऐसी जड बाँध दी थी कि तुम्हारी ऐसी जड नही बाँधी और हमने उन पर खूब वर्षा बरसायी और उसके नीचे से नहरें चालू कर दीं। फिर हमने उनके अपराधो के कारण से उनका नाश करा दिया और उनके पीछे और दूसरी सबे निकाल खडी की। (६) यदि हम कागज पर पुस्तक तुम पर उतारते और यह मनुष्य उसको अपने हाथो से छू भी लेते टटोलते तो भी काफिर कहेंगे कि यह स्पष्ट ज़ादू है। (७) कहते हैं कि इस पर कोई देवदूत क्यो नही अवतरित हुआ और यदि देवदूत को भेजते तो झगडा ही समाप्त हो गया था फिर उनको अवकाश न मिलता। (८) और यदि देवदूत को पैगम्बर बनाते तो उसको भी मनुष्य के रूप मे ही बनाकर भेजते। और हम उन पर वही सन्देह डालते जो सन्देह यह डाल रहे हैं। (९) और तुमसे पहिले भी पैग-म्बर की हँसी उडाई जा चुकी है तो जिन मनुष्यो ने पैगम्बरो से हसी की वह उल्टी उन्ही पर पडी। (१०) (रुकू १)

कहो कि देश मे घूमो फिर देखो झुठलाने वालो को कैसा फल मिला। (११) यदि कोई पूछे कि जो कुछ नभ और पृथ्वी मे है किसका है तो कह दो कि अल्लाह का है इसने स्वय ही मनुष्यो पर छुपा करने को अपने ऊपर आवश्यक कर लिया है वह प्रलय के दिन

तक जिसके आने मे कोई भी सन्देह नही तुम को अवश्य एकत्रित करेगा जो अपनी जानों की हानि कर रहे हैं वही विश्वास नही लाते। (१२) और उसी का है जो कुछ रात्री और दिन मे बसता है और वह सुनता और जानता है। (१३) पूछो कि ईश्वर जो नभ और पृथ्वी को उत्पन्न करने वाला है क्या उसके अतिरिक्त काम सम्भालने वाला बनाऊं और वह जीविका देता है और कोई उनको जीविका नही देता। कह दो मुझको तो यह आज्ञा मिली है कि सबसे पहिले मैं मुसलमान बनूं और मुशरिको मे न हू। (१४) कहो कि यदि मैं अपने पालनकर्ता की आज्ञा न मानु तो मुझको प्रलय के दिन के कठिन दण्ड से भय लगता है। (१५) उस दिन जिससे दण्ड टल गया तो उस पर ईश्वर ने कृपा की और यह बडी सफलता है। (१६) यदि अल्लाह तुमको कष्ट पहुचाये तो उसके अतिरिक्त कोई उसको दूर करने वाला नही और तुमको भलाई पहुचाये तो वह प्रत्येक वस्तु पर शक्तिशाली है। (१७) और वह अपने भक्तो पर अधिकारी है और वही चमत्कार वाला तथा सावधान है। (१८) यदि पूछो कि साक्षी किस वस्तु की बडी है कह दो कि ईश्वर जो मेरे और तुम्हारे मध्य साक्षी है और यह कुरान मेरी ओर इसीलिये ईश्वरीय सन्देश है कि इसके द्वारा तुमको और जिसे पहुँचे डराऊ क्या तुम पक्के बनकर इस बात की साक्षी देते हो अल्लाह के साथ दूसरे पूजित भी हैं। कहो कि मैं तो साक्षी नहीं देता तुम इन से कहो कि वह तो केवल अकेला पूजित है और जिन वस्तुओं को तुम ईश्वर का समकक्ष बनाते हो मैं उनको नही मानता। (१९) जिन मनुष्यो को हमने पुस्तक दी है यह तो जैसा अपने पुत्रो को पहिचानते हो वैसे ही इस मोहम्मद को भी पहिचानते हैं जिन्होने अपनी जानो को सकट मे डाला वही विश्वास नही लाते। (२०) (रुकू २)

जो व्यक्ति ईश्वर पर झूठी बुराई बांधे या उसकी आयतो को झुठलाये उससे बढ़कर अत्याचारी कौन है अत्याचारियो को किसी

प्रकार नही होगा। (२१) और एक दिन होगा जबकि हम इन सब को एकत्रित करेंगे फिर उन मनुष्यो से जो समकक्ष ठहराते थे पूछेगे कि कहाँ है तुम्हारे वह समकक्ष जिनका तुम दावा करते थे। (२२) फिर इनको कुछ उज्र न रहेगा परन्तु यो कहेगे कि हमको ईश्वर पालनकर्ता की कसम हम मुशरिक ही न थे। (२३) देखो किस प्रकार अपने ऊपर आप झूठ बोलने लगे और इनकी झूठी बातें इनसे गई गुजरी हो गई। (२४) इनमे से ऐसे भी है कि तुम्हारी ओर कान लगाते हैं और उनके हृदयो पर हमने पर्दे डाल दिये इनके कानो मे बोझ है जिससे तुम्हारी बात न समझ सकें और यदि यह सब कार्य भी देख लें तो भी विश्वास लाने वाले न हो यहाँ तक कि जब तुम्हारे पास तुमसे झगडे हुए आते है तो काफिर बोल उठते हैं कि कुरान तो केवल अगलो की कहानियाँ हैं। (२५) यह मनुष्य कुरान से दूसरे को मना करते और उससे माँगते है और अपनी जानो को ही मारते हैं और नही समझते है। (२६) और जब नरकाग्नि के सामने खडे किये जायेंगे तो उसके गुण देखकर कहेगे कि यदि ईश्वर की कृपा से हम फिर ससार मे भेजे जाय तो अपने पालनकर्ता की आयतो को न झुठलाए और धर्म वालों में से हो। (२७) अपितु जिसको पहिले छिपाते थे उनके आगे आई और यदि ससार मे वापस भेज दिये जाय तो जिस वस्तु से इनको मना किया गया है उसको फिर दुबारा करेगे और यह झूठे हैं। (२८) और कहते है कि जो हमारी सासारिक जीवन है इसके अतिरिक्त और किसी प्रकार का जीवन नही और मेरे पीछे फिर जी उठने वाले नही। (२९) यदि तू देखे जबकि वह मनुष्य अपने पालनकर्ता के सामने लाकर खडे किया जायगा तो पूछेगा क्या यह सत्य न था कहेंगे अपने पालनकर्ता की कसम अवश्य सत्य था वह कहेगा कि अपने अविश्वास का दण्ड भोगो। (३०) (रुकू ३)

जिन मनुष्यो ने अल्लाह के सामने होने को झूठा जाना निस्सन्देह वह मनुष्य हानि मे रहे यहाँ तक कि जब एकदम प्रलय इन पर आ उप-

स्थित होगी तो चिल्ला उठेगे कि शोक हमने संसार में अपराध किया और अपने वोभ अपनी पीठ पर लादे होगे देखो तो बुरा है जिसको यह मनुष्य लादे होंगे। (३१) सांसारिक जीवन तो निरा खेल और तमाशा है और कुछ सन्देह नही जो मनुष्य संयमी हैं उनके लिये अन्तिम रात्री परलोक का घर कही अच्छा है क्या तुम नही समभते। (३०) हम इस बात को जानते हैं कि यह जैसी-जैसी बातें कहते हैं निस्सदेह तुमको दु:ख होता है पस यह तुमको नही झुठलाते अपितु अत्याचारी अल्लाह की आयतो को मना करते है। (३३) तुमसे पहले भी पैगम्बर झुठलाये जा चुके हैं तो उन्होने मनुष्यो के झुठलाने पर और उनको हानि पहुचाने पर सन्तोष किया यहाँ तक हमारी सहायता उनके पास आ पहुची और कोई ईश्वर की बातो का बदलने वाला नही और पैगम्बरो के सन्देश तमको पहुच चुके है। (३४) और यदि इनका अहकार तुमको बुरा लगता है और तुमसे हो सके कि पृथ्वी के अन्दर सुरग लगाओ या नभ मे कोई सीढी और कोई निशानी इनको लाकर दिखाओ सौर अल्लाह को स्वीकार होता तो इनको सीधे मार्ग पर प्रसन्न कर देता तो देखो तुम कही मूर्खों मे न हो जाना। (३५) वही मानने हैं जो सुनते हैं और मृतको को ईश्वर जीवित कर देगा फिर उसी की ओर जायंगे। (३६) कहते हैं कि इसके पालनकर्ता की ओर से कोई निशान क्यो नही उतरा कहो कि अल्लाह निशान के उतारने मे शक्तिमान है। परन्तु इनमे के प्राय. अनसमझ हैं। (३७) क्या कोई रेगने वाला जीव और दो परो से उड़ने वाला पक्षी पृथ्वी मे नही है कि तुम मनुष्यों के समान अपनी सव रखता हो। कोई वस्तु नही जिसे हमने पुस्तक मे न लिखा हो फिर अपने पालनकर्ता के सामन जायेंगे। (३८) जो हमारी आयतो को झुठलाते हैं अन्धेरे मे गूंगे और बहरे हैं ईश्वर जिसे चाहे उसे भटका दे और जिसे चाहे उसे सीधे मार्ग पर लगा दे। (३९) पूछो कि भला देखो तो सही यदि ईश्वर का दण्ड तुम्हारे सामने आ उपस्थित हो या प्रलय तुम्हारे सामने आ खडी

हो तो क्या ईश्वर के अतिरिक्त दूसरे को पुकारोगे यदि तुम सच्चे हो। (४०) दूसरे को तो नही उसी एक ईश्वर को पुकारोगे तो जिसके लिये पुकारोगे यदि उसकी इच्छा मे आयेगा तो उसको दूर कर देगा और जिनको तुम समकक्ष बनाते हो भूल जाओगे। (४१) (रुकू ४)

तुमसे पहिले बहुत से समाजो की ओर पैगम्बर भेजे थे फिर हमने उनको कठिनाई और कष्ट मे डाला जिससे वह हमारे सामने गिड़गिडायें। (४२) तो जब उन पर हमारा दण्ड आया था नही गिड-गिडाये, परन्तु उनके हृदय कठोर हो गये थे और जो काम करते थे राक्षस ने उनको भला बतलाया। (४३) फिर जो शिक्षा उनको दी गई थी उसे भूल गये तो प्रत्येक वस्तु के द्वार उन पर खोल दिये जब उनको पाकर प्रसन्न हुए एकाएक हमने उनको धर पकडा और वह निराश होकर रह गये। (४४) अत्याचारियो की जड कट गई और ईश्वर की सराहना हो जो सारे ससार का स्वामी है। (४५) पूछो कि भला देखो तो सही यदि ईश्वर तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें छीन ले और तुम्हारे हृदय पर मुहर लगा दे तो ईश्वर के अतिरिक्त और कोई ऐसा पूजित है कि यह पदार्थ तुमको ला दे, देखो तो किस प्रकार हम प्रमाण समय-समय पर वर्णन करते हैं इस पर भी यह मुंह फेर चले जाते हैं। (४६) तो कहो देखो तो सही यदि ईश्वर का दण्ड एकाएक या बताकर तुम पर आ उतरे तो अपराधियो के अतिरिक्त दूसरा कोई न मारा जायगा। (४७) पैगम्बरो को हम केवल इस अर्थ से भेजा करते हैं कि शुभसवाद सुनावें और डरावें तो जो विश्वास लाया और उसने सुधार कर लिया तो ऐसे मनुष्यो पर न डर होगा और न वह उदास होगे। (४८) जिन मनुष्यो ने हमारी आयतो को झुठलाया उनको आज्ञा न मानने के कारण दण्ड होगा। (४९) कहो कि मैं तुमसे नही कहता कि मेरे पास ईश्वर के कोष हैं और न मैं अदृश्य को जानता हू और न मैं तुमसे कहता हूं कि मैं देवदूत हू मैं तो

बस उसी पर चलता हूं जो मेरी ओर ईश्वर का संदेशा भेजा गया है पूछो कि कभी अन्धा और जिसको दीख पड़ता है समान हो सकते है क्या तुम नही सोचते (५०) (रुकू ५)

कुरान क द्वारा उन मनुष्यो को डराओ जो इस बात का भय रखते हैं कि अपनेपालन कर्ता के सामने लाकर उपस्थित किये जायँगे ईश्वर के अतिरिक्त न कोई उनका मित्र होगा और न सिफारिश करने वाला। सम्भवत: वे बचते रहे। (५१) जो मनुष्य प्रात: व सध्या अपने पालनकर्ता ही की ओर मुँह करके उससे दुआयें मागते है उनको मत निकालो। न तो उनका उत्तरदायित्व किसी प्रकार तुम्हारे ऊपर है और न तुम्हारी उत्तरदायित्व किसी प्रकार उनके ऊपर है कि उनको धक्के देने लगो तो तुम अत्याचारियो मे होगे। (५२) इसी प्रकार हमने एक को एक से जाँचा जिससे वह यो कहें कि क्या हममे इन्ही पर अल्लाह ने कृपा की है, क्या अल्लाह को सच्चे मानने वाले प्रतीत नही हैं। (५३) जो हमारी आयतो पर विश्वास करते हैं वे जब तुम्हारे पास आया करें तो उनको संतोष दिलाया करो और कहो कि तुम अच्छे रहो तुम्हारे पालनकर्ता ने कृपा करना अपने ऊपर ले लिया है कि जो कोई तुम मे से मूर्खता के कारण कोई अपराध कर बैठे फिर किये पीछे क्षमा प्रार्थना और सुधार कर ले तो वह क्षम्य तथा कृपालु है· (५४) इसी प्रकार हम आयतो को खोल-खोल कर वर्णन करते है जिससे अपराधी को मार्ग दृष्टीगोचर हो जाय। (५५) (रुकू ६)

कह दो कि मुझको इस बात का निषेध है कि मैं उनकी प्रार्थना करूँ जिनको तुम ईश्वर के अतिरिक्त बुलाते हो। कहो मैं तुम्हारी आकाँक्षा पर तो चलता नही ऐसा करूँ तो मैं इस दशा मे पथभ्रष्ट हो चुका और उन मनुष्यो मे न रहा जो सीधे मार्ग पर हैं। (५६) तू कह कि मुझे अपने पालनकर्ता की साक्षी पहुची और तुमने उसको झुठलाया जिसकी तुम शीघ्रता मचा रहे हो वह मेरे पास तो नही है।

अल्लाह के अतिरिक्त और किसी का अधिकार नही, वह सच बात बोलता है और वह सब निर्णायको से अच्छा है। (५७) कहो कि जिस की तुम शीघ्रता मचा रहे हो यदि मेरे पास होता तो मेरे और तुम्हारे मध्य झगडा मिट गया होता और अल्लाह अत्याचारियो से भली प्रकार परिचित है। (५८) उसी के पास अदृष्ट की कुञ्जियां हैं जिनको उसके अतिरिक्त कोई नही जानता और जो बन और नदी मे है जानता है और कोई पत्ता तक नही हिलता जो उसे पता नही और पृथ्वी के अन्धेरे मे एक दाना नाज न सूखा और न हरा जो उसकी खुली पुस्तक मे न हो। (५९) और वही है जो रात्री के समय तुम्हारी आत्माओ को अधिकार मे लेता है और जो कुछ तुमने दिनमे किया था जानता है फिर दिन के समय तुमको उठा खडा करता है जिससे अवधि निश्चित रहे जीवन पूरा हो। फिर उसी की ओर लौट जाना है। फिर जो कुछ तुम करते रहे हो वह तुमको बतलायेगा। (६०) (रुकू ७)

वहाँ अपने भक्तो पर आज्ञा करता है और तुम पर दर्शक भेजता है यह तक कि जब तुम मे से किसी को काल आता है तो हमारे देव-दूत उसकी आत्मा निकालते हैं और वह कोताही नही करते। (६१) फिर ईश्वर की ओर जो उनका काम सँभालनेवाला सच्चा है वापिस बुलाये-जाते हैं। सुन रखो कि उसी की आज्ञा है और वह सबसे अधिक शीघ्र हिसाब लेने वाला है। (६२) पूछोकि तुमको वन और नदी के अधेरो से कौन बचाता है वही जिसे तुम गिडगिडा कर चुपके से पुकारते हो कि यदि ईश्वर हमको इस सकट से बचा ले तो हम उसके आभारी हो। (६३) ऐ पैगम्बर कहो कि इनसे और प्रत्येक प्रकार की कठोरता से ईश्वर ही तुमको बचाता है फिर भी तुम समकक्ष ठहराते हो। (६४) कहो कि-वही इस पर अधिकारी है कि तुम्हारे ऊपर से या तुम्हारे पैरो के नीचे से कोई दण्ड तुम्हारे लिए निकाल खड़ा करे या तुमको विभाजित करके भिडा मारे और तुममे से किसी

को किसीके युद्ध का आनन्द चखाये। देखो तो सही हम आयतो को किस प्रकार फेर-फेरकर वर्णन करते हैं सम्भवत. वे समझे। (६५) और कुरान को तुम्हारी जाति नें झुठलाया यद्यपि वह सच्चा है कहो कि मैं तुम पर अधिकारी नही। (६६) प्रत्येक बातका एक समय निश्चित है और तुमको पता हो जायगा। (६७) और जब ऐसे मनुष्य तुम्हारी दृष्टी मे आजाय जो हमारी आयतो की जो हमारी आयतो की हँसी उडा रहे हो तो उनसे हट जाओ यहाँ तक कि हमारी आयतो के अतिरिक्त दूसरी बातों मे लग जाय और यदि राक्षस तुमको भुला दें तो शिक्षा के पीछे अत्याचारियो के साथ न बैठना। (६८) सयमियो पर ऐसे मनुष्यो के हिसाब का किसी प्रकार का उत्तरदायित्व नही परन्तु शिक्षा देना। सम्भवत. वे भय धारण कर ले। (६९) जिन्होने अपने धर्म को खेल और तमाशा बना लिया और संसार के जीवन ने उनको धोखे मे डाल रक्खा है, ऐसे मनुष्यो को छोड दो और कुरान के द्वारा समझाते रहो कहो कोई व्यक्ति अपने कर्म के बदले पकड़ा न जाये कि ईश्वर के अतिरिक्त न कोई उसका साथी होगा और न सिफारिशी। और बदला यदि वह सब भी दे तो भी उससे न लिया जाय यही वह मनुष्य हैं जो अपने काम के कारण पकडे गये इनको पीने के लिए उबलता हुआ पानी और दुखदायी दण्ड होगा क्यो कि यह मना किया करते थे। (७०) (रकू ८)

पूछो क्या हम ईश्वर को छोड़ कर उनको अपनी सहायता के लिए बुलावें जो न हमको लाभ पहुचा सकते हैं और न हानि और जब अल्लाह हमको सीधा मार्ग दिखा चुका तो क्या हम उसके पश्चात भी उल्टे पैरो लौट जाय जैसे किसी व्यक्ति को भूत बहकाकर ले जाय और बन में सताता फिरे उसके कुछ साथी है वह उसको सीधे मार्ग की ओर बुला रहे हैं कि हमारे पास आ ऐ पैगम्बर इनसे कहो कि अल्लाह का मार्ग ही सीधा मार्ग हैं और हमको आज्ञा मिली है कि हम समस्त ससार के पालने वाले के विश्वासपात्र होकर रहें। (७१)

और नमाज़ पढ़ते और ईश्वर से डरते रहें और वही है जिसके सामने एकत्रित होगे। (७२) और वही है जिसने नभ और पृथ्वी को अपना किया और जिस दिन फर्मायेगा कि हो* वह होजायगा। उसका कहा सच्चा है और जिस दिन नरसिंह फूका जायगा उसी का साम्राज्य होगा और वह छिपी और खुली का ज्ञाता है और वह औपचारिक तथा सावधान है। (७३) जब इब्राहीम ने अपने पिता आज** से कहा क्या तुम मूर्तियो को पूज्य मानते हो, मैं तो तुमको और तुम्हारी कौम को स्पष्ट तथा भटके हुओ मे पाता हू। (७४) इसी प्रकार हम इब्राहीम को नभ और पृथ्वी का प्रबन्ध दिखलाने लगे जिससे यह विश्वास करने वालो मे से होजावे। (७५) तो जब उन पर रात्री छा गई उनको एक तारा दीख पड़ा तो कहने लगे कि यही मेरा पालन-कर्ता है फिर जब वह छिप गया तो बोले कि अन्त हो जाने वाली वस्तुओ को तो मैं नही चाहता (७६) फिर जब चन्द्रमा को देखा कि बडा जगमगा रहा है तो कहने लगे यही मेरा पालनकर्ता है फिर जब अस्त हो गया तो बोले यदि तुमको मेरा पालनकर्ता नही दिखलाई देगा तो निस्सदेह मे भूले हुए मनुष्यो मे हो जाऊँगा। (७७) फिर जब सूर्य को देखा कि बड़ा जगमगा रहा है तो कहने लगे मेरा यही पालनकर्ता सबसे बडा है, फिर जब वह छिप गया तो बोले भाइयो जिन वस्तुओ को तुम ईश्वर का समकक्ष मानते हो मेरा तो उनसे कुछ सम्बन्ध नही। (७८) मैंने तो एक ही का होकर अपना ध्यान उसी की ओर कर लिया है जिसने नभ और पृथ्वी को बनाया मैं तो

---

* अर्थात प्रलय आ जायगी।

**इब्राहीम के बाप का नाम क्या था? कुरान मे आजर बताया गया है और तौरात मे तारख लिखा है। लोगो का विचार है कि उनके दो नाम थे।

मुशरिकीन में से नहीं हूं। (७९) उनके गुट के मनुष्य उनसे झगड़ने लगे कहा क्या तुम मुझसे ईश्वर के एक होने के सम्बन्ध में झगड़ते हो यद्यपि वह तो मुझको सीधा मार्ग दिखा चुका है और जिनको तुम उसका समकक्ष मानते हो मैं तो उन से कुछ डरता नहीं अतिरिक्त इसके कि ईश्वर की इच्छा हो परन्तु हां मेरे पालनकर्ता की विद्या में सब वस्तुएं समाई हुई हैं क्या तुम ध्यान नहीं करते। (८०) जिन वस्तुओं को तुम समकक्ष करते हो मैं उनसे क्यों डरने लगा जबकि तुम इस बात से नहीं डरते कि तुमने अल्लाह के साथ ऐसी वस्तुओं को समकक्ष ईश्वरीय बनाया जिनके प्रमाण पत्र ईश्वर ने तुम्हारे लिए नहीं उतारे तो दोनों समाजों में से कौन सा शान्ती का अधिक अधिकारी है, यदि बुद्धि रखते हो तो कहो। (८१) जो मनुष्य ईश्वर पर विश्वास लाये और उन्होंने अपने धर्म में अत्याचार नहीं मिलाया यही वे मनुष्य हैं जो शान्ति चाहने वाले हैं और वे ही सीधे मार्ग पर हैं। (८२) (रुकू ९)

यह हमारा प्रमाण था जो हमने इब्राहीम को उनकी जाति की बात के अनुकूल करने लिए बताई है। हम जिनको चाहते हैं उनका पद ऊंचा कर देते हैं। ऐ पैगम्बर तुम्हारा पालनेवाला चमत्कार वाला है और सब कुछ जानता है। (८३) और हमने इब्राहीम को इसहाक और याकूब दिये, उन सबको सावधान किया और पहले नूह को भी हमने सावधान कर दिया था और उन्हीं के वंश में से दाऊद, सुलेमान, ऐयूब, यूसुफ मूसा और हारू को सावधान किया था और हम भलों को ऐसा ही बदला देते हैं। (८४) अतः जकरिया, यहिया, ईसा और इलयास भलों में हैं। (८५) इस्माईल, इलयास, यूनिस और लूत सभी को खूब समस्त संसार के मनुष्यों पर ऊंचाई दी। (८६) इनके बड़ों और इनकी संतान और इनके भाईबन्दों में से कुछ को हमने चुना और इनको सीधा मार्ग दिखला दिया। (८७) यह अल्लाह की शिक्षा है अपने सेवकों में से जिनको चाहे इस प्रकार का उपदेश

दे और यदि वह समकक्ष मानते होते तो इनका दिया धरा इनसे निरर्थक हो जाता। (८८) यह वह मनुष्य है जिनको हमने पुस्तक और अधिकार दिया और पैगम्बरी भी दी तो यह मक्का के काफिर यदि इनका मान न करें तो हमने इन पर मनुष्य निश्चित कर दिये हैं* जो इनके न माननेवाले नही हैं। (८९) उन्हें अल्लाह ने शिक्षा की कि तू उनकी शिक्षा पर चल। कह दो कुरान पर तुमसे कुछ परिश्रमिक नही माँगता यह कुरान तो समस्त संसार के मनुष्यो के लिए उपदेश है। (९०) (रुकू १०)

उन्होने जैसा मान अल्लाह का करना चाहिए था वैसा उसका मान न किया, कहने लगे कि ईश्वर ने किसी मनुष्य पर कोई वस्तु नही अवतरित की। पूछो कि वह पुस्तक किसने अवतरित की जिसे मूसा लेकर आये जो मनुष्यो के लिए प्रकाश है और उपदेश है, तुमने उसके प्रथक-प्रथक पृष्ठ बनाकर प्रकट किया और बहुतेरे पृष्ठ तुम्हारे स्वार्थ के विरुद्ध हैं उनको मनुष्यो से छिपाते हो और उसी पुस्तक के द्वारा तुमको वे बातें बताई गई हैं जिनको न तुम जानते थे और न तुम्हारे पूर्वज। कहो कि वह पुस्तक अल्लाह ने अवतरित की थी फिर उनको छोड़ दे कि अपनी सधो मे खेल करें। (९१) और यह पुस्तक नभ की है जिसको हमने अवतरित किया उन्नतवाली है और जो पुस्तकें इससे पहले की है उनको प्रमाणित करती है और ऐ पैगम्बर हमने इसको इस कारण से अवतरित किया है कि तुम मक्कावालो को और जो मनुष्य उनके आस-पास रहते हैं उनको डराओ और जो व्यक्ति प्रलय का विश्वास रखते हैं वह तो इस पर विश्वास ले आते हैं और वह अपनी नमाज की खबर रखते हैं। (९२) उससे बढ़कर और अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बांधे या दावा करे कि मुझ पर ईश्वर का सदेश आया है यद्यपि उसकी ओर कुछ भी ईश्वर का सदेशा न आया हो और जो कहे कि जैसे अल्लाह अवतरित करता

*जैसे मदीने के रहने वाले जो अनसार कहलाते हैं।

है वैसे ही मैं भी अवतरित करता हू अतः अत्याचारी जब मृत्यु की बेहोशियो मे पड़े होगे और देवदूत हाथ फैला के कहेंगे अपनी जानें निकालो अब तुमको नरक का दण्ड दिया जायेगा इसलिए कि तुम ईश्वर पर व्यर्थ झूठ बोलते और उसकी आयतो से अकडा करते थे। (९३) और पहली बार जैसा हमने तुमको उत्पन्न किया था वैसे ही अकेले तुम हमारे पास एक-एक करके आओगे और जो कुछ हमने तुमको दिया था अपनी पीठ पीछे छोड आये और तुम्हारी सिफारिश करनेवालो को हम तुम्हारे साथ नही देखते जिनको तुम समझते थे कि यह तुममें सम्मिलित हैं अब तुम्हारे आपस के मेल टूट गये और जो दावे तुम किया करते थे तुमसे व्यतीत हो गये। (९४) (रुकू ११)

वह दाने और गुठली का फाड़नेवाला है और मृतक से जीवित और जीवित से मृतक निकालता है यही तुम्हारा ईश्वर है फिर तुम कहाँ भटके चले जा रहे हो। (९५) उसी के किये से प्रातःकाल पौ फटती है और उसी ने विश्राम के लिए रात्री और हिसाब के लिए सूर्य और चद्रमा बनाये है यह उसी की बुद्धी के कृत्य है। (९६) वही है जिसने तुम्हारे लिए तारे बनाये जिससे वन और नदी के अन्धेरे मे उनसे शिक्षा पाओ जो लोग समझदार हैं उनके लिए हमने निशानियाँ खूब विस्तार से वर्णन कर दी हैं। (९७) और वही है जिसने तुम सबको एक देह से उत्पन्न किया फिर कहीं तुमको ठहराव है और कही सौगात रहना पिता की कमर और माता का पेट जो लोग समझते हैं उनके लिए हम निशानियाँ स्पष्ट वर्णन कर चुके हैं। (९८) और वही है जिसने नभ से पानी बरसाया फिर उससे प्रत्येक प्रकार के अकुर निकाले फिर अकुर से हमने हरी-हरी टहनियाँ निकाल खडी कीं कि उनसे हम गुथे हुए दाने निकालते है और खजूर के गुच्छे मे से झुके पड़ते हैं और अगूर के उपवन और जैतून अनार रूप मे मिलते-जुलते और स्वाद मे मिलते-जुलते नही इनमें से प्रत्येक वस्तु जब पकती है तो उसका फल और फल का पकना देखो। निस्सन्देह जो

मनुष्य विश्वास रखते हैं उनके लिए इनमें निशानियाँ हैं। (९९) और मुशरिको ने भूतो को ईश्वर का समकक्ष बना खड़ा किया यद्यपि ईश्वर ही ने भूतो को उत्पन्न किया और बे जाने-बूझे ईश्वर से पुत्रियो का होना ठहराते हैं ईश्वर के विषय मे जैसी जैसी बातें यह वर्णन करते हैं वह पवित्र है जो इन बातो से बहुत दूर है। (१००) (रुकू १८)

वह नभ और पृथ्वी का बनानेवाला है और उसकी सतान क्यों होने लगी उसके कोई स्त्री नही और उसी ने प्रत्येक वस्तु को बनाया है और यही प्रत्येक वस्तु का ज्ञाता है। (१०१) यही अल्लाह तुम्हारा पालनकर्ता है उसके अतिरिक्त और कोई के योग्य नही और वही सब वस्तुओ का बनानेवाला है तो उसी की प्रार्थना करो और वहीं प्रत्येक वस्तु की रक्षा करनेवाला है। (१०२) आँखें उसको बतला नही सकती और वह आँखो को खूब जानता है और वह बडा बारीक देखनेवाला सावधान है। (१०३) मनुष्यो तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से सूझ की बातें तुम्हारे पास आ ही चुकी हैं फिर जिसने देखा अपना भला किया और जो अंधा रहा अपने लिए बुराई की मैं तुम्हारा रक्षक नही हूं। (१०४) इसी प्रकार हम आयतो को वर्णन करते थे जिससे उनको कहना पडे कि तुमने पढ़ा है और जो बुद्धी रखते है हम उनको कुरान अच्छी प्रकार समझा दें। (१०५) ऐ पैगम्बर ! कुरान जो तुम्हारे पालनकर्ता के यहाँ से संदेश भेजा गया है उसी पर चले जाओ ईश्वर के अतिरिक्त कोई पूजित नही और मुशरिकीन से दूर रहो। (१०६) यदि ईश्वर चाहता तो वे समकक्ष न ठहराते और हमने तुमको इन पर दर्शक नही किया और न तुम इन पर वकील हो। (१०७) और ये ईश्वर के अतिरिक्त जिनको पुकारते है उनको बुरा *न कहो कि यह मूर्खता के कारण व्यर्थ ईश्वर को बुरा कह बैठे,

*कुछ मुसलमान बुतों को काफिरों के सामने गाली देने लगे थे। ऐसा करने से उन्हे रोका गया है ताकि काफिर उलट कर खुदा को बुरा न कहने लगे।

इसी प्रकार हमने प्रत्येक समाज के काम उनको अच्छे कर दिखलाये* हैं फिर इनको पालनकर्ता की ओर लौटकर जाना है तो जैसे-जैसे काम कर रहे थे उनको ईश्वर बतायेगा। (१०८) और मक्केवाले अल्लाह की कठिन कसम खाकर कहते है कि यदि कोई निशानी उनके सामने आये तो वह अवश्य विश्वास ले आयेंगे, तुम समझा दो कि निशानियाँ तो अल्लाह के ही पास हैं और तुम क्या जानो यह तो निशानी आने पर भी विश्वास नही लायेंगे। (१०९) और हम उनके हृदय और उनकी आँखो को उलट देगे जैसे कुरान पर प्रथम बार विश्वास नही लाये थे और हम इनको छोड देगे कि पड़े भटका करें। (११०) (रुकू १३)

आठवाँ पारा (वलौ अन्नना)

और यदि हम इन पर देवदूतों को भी अवतरित कर दें या स्वयं भी इनसे बातें करें और प्रत्येक वस्तु उनके सामने जीवित कर दे तब भी यह सब कभी भी विश्वास न लावेंगे परन्तु इनमे के प्राय. नही समझते। (१११) इस प्रकार हमने प्रत्येक पैगम्बर के लिये मनुष्य और भूतों मे से राक्षस उत्पन्न किये और जो एक दूसरे को मुलम्मा-जैसी असत्य बात धोखा देने को सिखाते है सो उनको छोड दे और उनके असत्य को (११२) जिससे जो मनुष्य प्रलय का विश्वास नही रखते उनके हृदय उनकी बातों की ओर ध्यान दें और वह उनकी बातो से राजी हो और जो बुरे काम यह करते हैं उसका दण्ड पायें। (११३)

*हर एक अपनी बातों को अच्छा समझता है।

क्या मैं ईश्वर के अतिरिक्त कोई और पंच तलाश करूँ यद्यपि उसने तुम मनुष्यो की ओर पुस्तक भेजी जिसमे विस्तार है वह मनुष्य जिनको हमने पुस्तक दी है इस बात को जानते हैं कि कुरान वास्तविकता मे पालनकर्ता की ओर अवतरित है सो तू सन्देह करने वालो मे न हो जाना। (११४) और तेरे पालनकर्ता की बात सत्य और न्याय की है। कोई उसकी बात को बदल नही सकता और वह सुनता और सब कुछ जानता है। (११५) और बहुत से मनुष्य संसार मे ऐसे हैं कि यदि उनके कहे पर चलो तो तुमको ईश्वर के मार्ग से भटका दें, यह तो केवल अपने अनुमान पर चलते और निरा अनुमान लगाते हैं। (११६) जो मनुष्य ईश्वर के मार्ग से भटके हुए हैं उन्हे तो पालनकर्ता खूब जानता है और जो सीधे मार्ग पर हैं उनको भी खूब जानता है। (११७) बस यदि तुम को उसकी आज्ञाओ का विश्वास है तो जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो उस वस्तु को खाओ। (११८) क्या कारण है कि तुम उसमे से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो यद्यपि जो वस्तुएे ईश्वर ने तुम पर निषिद्ध कर दी हैं वह पूर्ण रूप से तुम से वर्णन कर दी है। वह वस्तु कि निषेध तो है परन्तु भूख इत्यादि के कारण से तुम उस पर विवश हो जाओ तो वह भी निषेध नही और बहुत से तो बिना समझे अपनी इच्छाओ के अनुसार बहकाते हैं। जो सीमा से बाहर हो जाते हैं तुम्हारा पालनकर्ता उनको खूब जानता है। (११९) स्पष्ट और छिपे हुए अपराध से दूर रहो, जो अपराध करते हैं उनको अपने काम का फल मिलेगा। (१२०) जिस पर ईश्वर का नाम न लिया गया हो उसमे से मत खाओ और उसमे से खाना पाप है और राक्षस अपने मित्रो के हृदयमे डालते हैं कि तुमसे झगडा करे और यदि तुमने उनका कहा मान लिया तो तुम मुशरिक हो जाओगे। (१२१) (रुकू १४)

एक व्यक्ति जो मृत था हमने उसमे जीवन डाला और उसको

प्रकाश दिया* वह मनुष्यों मे उसको लिए फिरता है क्या वह उस व्यक्ति जैसा हो जायगा जो अंधेरे मे है। वहाँ से निकल नही सकता। इसी प्रकार काफिरो को जो कुछ भी कर रहे हैं भला दिखाई देता है। (१२२) और इसी प्रकार हमने प्रत्येक बस्ती मे बड़े-बड़े अपराधी उत्पन्न किये जिससे वहाँ उत्पात करते रहे। और जो उत्पात वह करते हैं अपने ही जानो के लिए करते हैं और नही समझते। (१२३) और जब मक्कावालो के पास कोई आयत आती हैं तो कहते हैं कि जैसी ईश्वर के पैगम्बर को दी गई है जब तक हमको न दी जाये हम तो विश्वास लाने वाले नही हैं। ईश्वर जिस पर अपना सन्देश भेजता है खूब जानता है। जो अपराधी हैं उनको नरक मिलेगा और धोखा देने वालो को कठोर दण्ड होगा। (१२४) जिसको ईश्वर सीधा मार्ग दिखाना चाहता है उसके हृदय को इस्लाम के लिए खोल देता है और जिस व्यक्ति को भटकाना चाहता है उसके हृदय को क्षुद्र कर देता है माना शक्ति से नभ पर विश्वास से भागने के लिए चढता है। जो विश्वास नही लाते उन पर उसी प्रकार अल्लाह की फटकार पडती है। (१२५) और यह तुम्हारे पालनकर्ता का सीधा मार्ग है। जो ध्यान देते हैं उनके लिए हमने आयतें विस्तार के साथ वर्णन की हैं। (१२६) उनके लिए तेरे पालनकर्ता के यहाँ शान्ति का घर है और जो उसके अनुसार कार्य करते हैं उसके बदले मे वहा उनकी सूचना देनेवाला होगा। (१२७) और जिस दिन ईश्वर सबको एकत्रित करेगा कहेगा ऐ भूतों के समाज! आदम के पुत्रो मे से तो तुमने अच्छा बडा समाज अपनी ओर कर लिया और आदम की संतान मे से जो राक्षस के मित्र हैं कहेंगे कि हे हमारे पालनकर्ता! हम एक दूसरे से लाभ उठाते रहे हैं और जो समय हमारे लिए नियत किया था हम उस तक पहुच गये। ईश्वर कहेगा कि तुम्हारा स्थान नरक है उसी मे सदैव रहोगे। आगे ईश्वरेच्छा। निस्सन्देह तुम्हारा पालनकर्ता चमत्कारवाला और

---

* अर्थात ज्ञान दिया।

ज्ञाता है। (१२८) और इसी प्रकार हम कुछ अत्याचारियो को किन्ही के ऊपर नियुक्त कर देंगे ! यह उनकी कमाई का फल है। (१२९) (रुकू १५)

फिर हम भूतो और आदम के पुत्रो दोनो से सम्मुख होकर पूछेंगे कि क्या तुम्हारे पास तुम्ही मे के पैगम्बर नही आये कि तुमसे हमारी आज्ञाएँ वर्णन करें और प्रलय के आने से तुमको डराये। वह कहेंगे हम अपने ऊपर आप ही साक्षी देते हैं और ससार के जीवन ने उनको धोखे मे रक्खा और उन्होने आप ही अपने ऊपर साक्षी दी कि निस्सदेह वे काफिर थे।(१३०) यह सब इस कारण से है कि तुम्हारा पालनकर्ता बस्तियो के अत्याचार से आक्रान्त करने वाला नही और यहाँ के रहने वाले बेसुध हो। (१३१) और जैसे-जैसे कर्म किये हैं उन्ही के अनुसार सबके पद होगे और जो कुछ कर रहे हैं तुम्हारा पालनकर्ता उससे असावधान नहीं। (१३२) और तेरा पालनकर्ता निश्चिन्त और दयावाला है चाहे तुमको ले जाय और तुम्हारे पश्चात जिसको चाहे तुम्हारे स्थान पर नियुक्त करे जैसा दूसरो की सतान मे से तुमको उत्पन्न कर दिया। (१३३) जो तुमको वचन दिया। अर्थात दण्ड सो आने वाला है। और तुम रोक नही सकते। (१३४) कहो कि भाइयों तुम अपने स्थान पर काम करो मैं अपने स्थान पर काम करता हू। फिर आगे चल कर तुमको प्रतीत हो जायगा कि अन्त मे किसका काम अच्छा है अत्याचारियो का भला न होगा। (१३५) ईश्वर की उपजाई हुई खेती और चौपायो मे अल्लाह का भी एक भाग ठहराते हैं तो अपने विचारो के अनुसार कहते हैं कि इतना तो ईश्वर का और इतना हमारे समकक्षो का अर्थात उन पूजितो का जिनको ईश्वर का समकक्ष मान रक्खा है) फिर जो भाग इनके माने हुए समकक्षो का होता है वह अल्लाह कि ओर नही पहुचता और जो अल्लाह का है वह हमारे समकक्षो को पहुच जाता है क्या बुरा न्याय करते है।

(१३६) इसी प्रकार प्रायः मुशरिकों की दृष्टी में उनके समकक्षों ने सन्तान अर्थात कन्याओं को मार डालना पसद किया और उनके धर्म मे मदेह डाल दिया और ईश्वर चाहता तो यह ऐसा काग न करते सो उनको छोड़ दो वे जाने और उनका झूठ जाने। (१३७) और कहते हैं कि चौपाये और खेती पाप हैं कि उनको उस व्यक्ति के अतिरिक्त जिनको हम अपने विचार के अनुसार चाहे नही खा सकते और कुछ चौपाये ऐसे हैं कि उनको पीठ पर सवार होना व लादना मना है और कुछ चौपाये ऐसे हैं जिनको काटने के समय उन पर अल्लाह का नाम नही लेते ईश्वर पर झूठ बाँधते हैं कि उसने ऐसा कहा है वह कटोर दण्ड देगा। (१३८) कहते है कि इन चौपायो के पेट से जो बच्चा जीवित निकले वह हमारे मनुष्यों के लिए भोग्य और हमारी स्त्रियों पर निषेध है और यदि मरा हुआ हो तो पुरुष और स्त्री उस मे मम्मलित हैं ईश्वर इनको इन बातो का दण्ड देगा वह चमत्कारवाला सावधान है। (१३९) निस्सदेह वह मनुष्य हानि मे हैं जिन्होनें पागलपना और नीचता से अपने बच्चो को मार डाला और अल्लाह ने जो जीवका उनको दी थी ईश्वर पर झूठ बाँध कर उसको पाप कर लिया—यह मनुष्य भटक गये और मार्ग पर नही आये। (१४०) (रुकू १६)

वही है जिसने उपवन उत्पन्न किए और खजूर के वृक्ष और खेती जिनके कई प्रकार के फल होते है और जैतून और अनार एक दूसरे से मिलने-जुलते और नही भी मिलते-जुलते हैं यह सब वस्तुएँ जब फलें इनके फल खाओ और इनके काटने के दिन अधिकार अल्लाह का अर्थात दान दे दिया करो और अपव्यय मत करो क्योकि अपव्यय करने वालो को ईश्वर पसद नही करता। (१४१) चौपाओ मे बोझ उठाने वाले उत्पन्न किये जसे ऊट और कोई पृथ्वी से लगे हुए जो नही लादे जाते जैसे भेड-वकरी और ईश्वर ने जो तुमको जीविका दी है उसमे से खाओ और राक्षस का अनुकरण न करो क्योकि वह तुम्हारा स्पष्ट

शत्रु है।(१४२) आठ पुरुष और स्त्री अर्थात चार युगल उत्पन्न किये हैं, भेडो मे से दो और बकरियो मे से दो, ऐ पैगम्बर पूछो कि ईश्वर ने दो पुरुषो को निषेध कर दिया है या दो स्त्रियो को या जो इन दो स्त्रियो के बच्चो (पेटो) मे हैं, यदि तुम सच्चे हो तो मुझको प्रमाण-पत्र बतलाओ। (१४३) ऊँटो मे से दो और गाय से दो ऐ पैगम्बर पूछो दो नरो को निषेध कर दिया है या दो मादीनो को या बच्चा जो मादीनो के पेट मे है तुमको इन वस्तुओ के निषेध कर देने की आज्ञा दी थी उस समय तुम क्या उपस्थित थे ? तो उस व्यक्ति से बढकर अत्याचारी कौन होगा जो मनुष्यो को मार्ग से भटकने के लिए अनसमझे ईश्वर पर झूठ बाँधे। ईश्वर अत्याचारियो को मार्ग नही दिखाता। (१४४) (रुकू १७)

कहो कि कोई भक्षक कुछ खाय मेरी ओर जो ईश्वर का सन्देश आया है उसमे तो मैं कोई वस्तु पाप नही पाता परंतु यह कि वह वस्तु मृत्यु हो या बहता हुआ खून या सूअर का मांस, वस्तुएँ अपवित्र हैं या अवज्ञा का कारण हो या ईश्वर के अतिरिक्त किसी दूसरे के नाम पर काटा हो उस पर भी जो व्यक्ति विवश हो तो तेरा पालनकर्ता क्षमा करनेवाला कृपालु है। (१४५) यहूदियो पर हमने समस्त नाखून वाले जानवरो को पाप बताया और हमने गाय और बकरियो मे से चर्बी को भी पाप बताया वह चर्बी जो उनकी पीठ पर लगी हो या अतडियो पर या हड्डी से मिली हो। यह हमने उनको उनकी चचलता का दण्ड दिया था और हम सच्चे है। (१४६) इस पर भी यह मनुष्य तुमको झुठलावे तो कहो कि तुम्हारा पालनकर्ता बडा दयालु है और अपराधी से उसका दण्ड नही टलता। (१४७) मुशरिक कहेगे कि यदि ईश्वर चाहता तो हम और हमारे पिता-पितामह मुशरिक न होते और न हम किसी वस्तु को पाप करते। इसी प्रकार उनके अगलो ने झुठलाया है यहाँ तक कि हमारा दण्ड का आनन्द

चखा। पूछो कि-क्या तुम्हारे पास कोई प्रमाणपत्र भी है। उसको हमारे लिए निकालो। निरे भ्रम पर चलते और निरे अनुमान ही भगाते हो। (१४८) कहो अल्लाह की इज्जत पूर्ण हुई फिर यदि वह चाहता तो तुम सबको मार्ग दिखला देता। (१४९) कहो कि अपने साक्षियो को उपस्थित करो जो इस बात की साक्षी दे कि अल्लाह ने यह वस्तु इनको पाप की है बस यही साक्षी भी दे तो तुम उनके साथ उन जैसी न कहना और न उन मनुष्यो की हार्दिक आकाँक्षाओ पर चलना जिन्होने हमारी आयतों को झुठलाया और जो प्रलय का विश्वास नहीं रखते और वह दूसरे को पालनकर्ता के समान समझते हैं। (१५०) (रुकू १८)

कहो कि आओ मैं तुमको वह वस्तुए पढकर सुनाऊं जो तुम्हारे पालनकर्ता ने तुम पर पाप की हैं। यह कि किसी वस्तु को ईश्वर का समकक्ष मत ठहराओ और मात-पिता के साथ भलाई करते रहो और निर्धनता के भय से अपने बच्चो को मार डालो, हम तुमको जीविका देते हैं और उनको भी निर्लज्जा की बातें जो स्पष्ट हों और छिपी हुई हो उनमे से किसी के पास भी मत फटकना और जिस जान को अल्लाह ने पाप कर दिया है उसे मार न डालना। यदि अधिकार पर, यह वह बातें हैं जिनकी आज्ञा ईश्वर ने तुमको दी है जिससे तुम समझो। (१५१) अनाथ के धन के पास मत जाना। अतिरिक्त इसके कि उसकी भलाई हो और जब तक कि वह बालिग न हो जायें। और न्याय के साथ पूरी-पूरी नाप या तोल करो। हम किसी व्यक्ति पर उसकी शक्ति से बढ़कर बोझ नहीं डालते और जब कुछ कहो तो सम्बन्धी ही क्यों न हो न्याय की कहो और अल्लाह की प्रतिज्ञा को पूरा करो यह वह बातें हैं जिनकी तुमको ईश्वर ने आज्ञा दी है सम्भतः तुम ध्यान दो। (१५२) यही हमारा सीधा मार्ग है तो इसी पर चले जाओ और दूसरे मार्ग पर न पड़ना यह तुमको ईश्वर के मार्ग से बिछुडेंगे यह बातें हैं जिनकी ईश्वर ने तुमको आज्ञा दी है सम्भवत. तुम बचते रहो। (१५३)

फिर हमने मूसा को पुस्तक दी जिससे भलाई करने वालो पर हमारी कृपा पूरी हुई और उसमे समस्त बातो को आज्ञाओ का वर्णन उपस्थित है और उपदेश और दया है और यह पुस्तक मूसा को इसलिए दी गई कि सम्भवत वह अपने पालनकर्ता से मिलने का विश्वास लाये। (१५४) (रुकू १६)

यह पुस्तक हमने अवतरित की है उन्नतशील है तो इसी पर चलो और डरते रहो सम्भव. तुम पर दया की जाय। (१५५) और ऐ मुशरिकीन अरब ! हमने यह इसलिए अवतरित की कि कही यह न कह बैठो कि हमसे पहले बस दो ही समाजो पर पुस्तक अवतरित हुई थी और हम तो उसके पढने पढाने से बिलकुल असावधान थे। (१५६) या यह कहने लगो कि यदि हम पर यह पुस्तक अवतरित हुई होती तो हम अवश्य इनको पढकर सच्चे मार्ग पर होते। तो अब तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से तुम्हारे पास प्रमाण और उपदेश और दया आ गई हैं तो उससे बढकर अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह की आयतो को झुठलाए और उनसे मित्रता धारण करे और जो मनुष्य हमारी आयतो से मित्रता धारण करते हैं हम शीघ्र उनकी मित्रता के बदले उनको बड़ा दुखदाई दण्ड देंगे। (१५७) यह मनुष्य इसी बात की बाट देख रहे हैं कि देवदूत इनके पास आयें या तुम्हारा पालनकर्ता इनके पास आये या तुम्हारे पालनकर्ता का कोई चमत्कार प्रकट हो। जिस दिन तुम्हारे पालनकर्ता का कोई चमत्कार स्पष्ट होगा तो जो व्यक्ति उससे पहले विश्वास नही लाया या अपने धर्म मे उसने कुछ भलाई न की थी अब उसका विश्वास लाना उसको कुछ भी लाभकारी न होगा तो कहो कि मार्ग देखो हम भी मार्ग देखते है। (१५८) जिन मनुष्यो ने अपने धर्म मे भेद डाला और कई समाज बन गए तुमको उनसे कोई काम नही उनकी समस्या ईश्वर के हाथ मे है। फिर जो कुछ किया करते थे उनको बतायेगा। (१५९) जिसने भलाई की तो उसका दस-गुना उसको मिलेगा और जिसने बुराई की तो वह उसके सामने दण्ड

भुगतेगा और उन पर अत्याचार नहीं होगा। (१६०) कहो मुझको तो मेरे पालनकर्ता ने सीधा मार्ग बता दिया है कि वही इब्राहीम का उचित धर्म है कि वह एक ही के हो रहे थे और मुशरिकों मे से न थे। (१६१) कहो कि मेरी नमाज और मेरी पूजा तथा मेरा जीना और मेरा मरना अल्लाह के लिए है जो सारे संसार का पालनकर्ता है (१६२) कोई उसके समान नहीं और मुझको ऐसी ही आज्ञा मिली है और मैं उसके विश्वासपात्रों मे पृथक हू। (१६३) पूछो कि क्या मैं ईश्वर के अतिरिक्त कोई और पालनकर्ता ढूँढूँ बस समस्त वस्तुओं का पालनकर्ता है-और प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्म का उत्तरदाई है और कोई व्यक्ति किसी दूसरे का बोझ नही उठायेगा फिर तुमको अपने की ओर जाना है तो जिस बात मे झगडते थे वह तुमको बतलायेगा। (१६४) और वही है जिसने पृथ्वी मे तुमको उत्तराधिकारी बनाया है और तुममे से किसी के पद किसी से ऊँचे किए जिससे जो पदार्थ तुमको दिये हैं उनमें तुम्हारी जाँच करे। तुम्हारा पालनकर्ता शीघ्र दण्ड देनेवाला है और वह क्षम्य तथा कृपालु है। (१६५) (रुकू २०)



सूरे आराफ

यह सूरत मक्के में अवतरित हुई, इसमें २०६ आयत और २४ रुकू हैं

आरम्भ अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त दयावान तथा कृपालु है। अलिफ-लाम-मीम-स्वाद। (१) यह पुस्तक तेरी ओर इसलिये अवतरित हुई कि तेरा हृदय सकुचित न हो कोई सन्देह न रहे जिसने तू इसके द्वारा डरावे और धर्म वालो को शिक्षा मिले। (२) जो तुम्हारे

पालनकर्ता की ओर से तुम पर अवतरित हुआ है इसी पर चले जाओ और ईश्वर के अतिरिक्त और मार्ग बताने वाले के पीछे मत चलो तुम कम ध्यान देते हो। (३) और कितनी बस्तियाँ हमने नष्ट की और रात्री के समय या दोपहर. दिन को सोते समय हमारा दण्ड उन पर पहुचा। (४) जब हमारा दण्ड उन पर पहुचा तो और कुछ न बोल सके यही कहा कि हम पापी थे। (५) तो जिन की ओर पैगम्बर भेजे गये थे हम उनसे अवश्य पूछेंगे और पैगम्बर से भी पूछेंगे। (६) फिर हम अपने ज्ञान से उनको सब हाल सुना देंगे और हम कही छिपे न थे। (७) और भार उस दिन ठीक होगा। तो जिनकी भार अधिक हो सो वही मनुष्य इच्छा की पूर्ती प्राप्त करेंगे। (८) जिनके कामो का भार हल्का ठहरेगा उन्होने अपनी जानें सकट मे डाली कि हमारी आयतो पर अत्याचार करते थे। (९) हमने तुमको पृथ्वी मे स्थान दिया और उसी में तुम्हारे लिए जीवन की सामग्री इकट्ठी की तुम बहुत कम आभार मानते हो। (१०) (रुकू १)

हमने ही तुमको उत्पन्न किया और फिर तुम्हारा रूप बनाया और फिर हमने देवदूतो को आज्ञा दी कि आदम के आगे तो झुक गये परन्तु वह इबलीस* झुकने वालो मे न हुआ। (११) पूछो कि तुमको किस वस्तु ने माथा नवाने से रोका—बोला मैं आदम से अच्छा हू, मुझको तूने अग्नि से उत्पन्न किया और उसको मिट्टी से उत्पन्न किया। (१२) बोला तू यहाँ से चला जा क्योकि तुझे उचित नही है कि घमण्ड करे सो निकल तू नीचो मे है। (१३) वह बोला कि जिस दिन मनुष्य उठा खडे किए जायँगे उस दिन तक का मुझे अवकाश दे। (१४) कहा तुझको अवकाश दिया गया। (१५) इस पर राक्षस बोला जैसा तूने मेरी मार्ग मे मारा है मैं भी तेरे मार्ग पर मनुष्यो की घात मे जा बैठूँगा।

---

*इबलीस—उसे कहते हैं जिसका जुल्म उसी पर हो आगे न बढ़े।

(१६) फिर उन पर आगे से और पीछे से और दाहिनी और बाईं ओर से आऊँगा और तू उनमें बहुतों को आभारी नही पावेगा। (१७) कहा कि पापी निकाला हुआ यहाँ से निकल। आदम के पुत्रो मे से जो तेरा समर्थन करेगा हम निस्सन्देह तुम सबसे नरक भर देंगे। (१८) और हमने आदम से कहा कि ऐ आदम, तुम और तुम्हारी स्त्री स्वर्ग मे रहो और जहाँ से चाहो खाओ परन्तु इस वृक्ष के पास न फटकना नही तो तुम पापी होगे। (१९) फिर राक्षस ने पति-पत्नि दोनो को बहकाया जिससे उनकी स्मरण करने की वस्तुए जो उनसे छिपी थी उन्हे खोल दिखा दें और कहने लगा तुम्हारे पालनकर्ता ने जो इस वृक्ष के फल खाने से तुमको मना किया है तो इसका कारण यही है कि कही ऐसा न हो कि तुम दोनों देवदूत बन जाओ या अमर हो जाओ। (२०) और उसने कसम खाई कि मैं तुम्हारी भलाई चाहने वाला हूं। (२१) अत. धोखे से उनको प्रसग के लिए आकर्षित कर लिया तो ज्योही उन्होने वृक्ष चखा तो दोनो के पर्दे करने की वस्तुए उनको दिखाई देने लगी और अपने ऊपर पत्ते ढाँपने लगे, उनके पालनकर्ता ने उनका पुकारा। क्या हमने तुमको इस वृक्ष की मनाई नही की थी और तुमसे नही कह दिया था कि राक्षस तुम्हारा प्रकट शत्रु है। (२२) दोनो कहने लगे कि ऐ हमारे पालनकर्ता! हमने अपने को आप नष्ट किया और यदि तू हमको क्षमा नही करेगा और हम पर दया नही करेगा तो हम मिट जायंगे। (२३) कहा कि तुम पति-पत्नि और राक्षस तीनों स्वर्ग से नीचे उतर जाओ, तुममें एक का एक शत्रु है और तुमको एक विशेष समय तक पृथ्वी पर रहना होगा और एक समय तक वर्तना होगा। (२४) कहा कि पृथ्वी ही मे तुम सब जीवन व्यतीत करोगे और उसी मे मरोगे और उसी मे से निकाल खड़े किये जाओगे। (२५) (रुकू २)

ऐ आदम के पुत्रो, हमने तुम्हारे लिए वस्त्र उतारे हैं जो तुम्हारी पर्दे की वस्तुओ को छिपाये और सुन्दरता और संयम के वस्त्र भले हैं।

ये ईश्वर की निशानियां हैं, सम्भवत. तुम ध्यान दो। (२६) ऐ आदम के पुत्रो राक्षस तुमको भटका न दे जिस प्रकार कि उसने तुम्हारे माता-पिता को* स्वर्ग से निकलवाया कि उनसे उनके वस्त्र उतरवा दिये जिससे उनकी पर्दा करने की वस्तुएं उन पर प्रकट कर दे वह और उसकी सतान तुमको देखते हैं जिधर से तुम उनको नहीं देखते। हमने राक्षस को उन्ही मनुष्यों का मित्र बनाया है जो विश्वास नही लाते। (२७) और जब किसी बुरे काम के अपराधी होते हैं तो कहते हैं कि हमने अपने बड़ों को इसी पर चलते पाया और अल्लाह ने हमको इसकी आज्ञा दी है ऐ पैगम्बर कहो कि अल्लाह तो बुरे काम की आज्ञा नहीं देता। तुम मूर्ख ईश्वर पर क्यो झूठ बोलते हो। (२८) ऐ पैगम्बर कहो कि मेरे पालनकर्ता ने न्याय की प्रत्येक मसजिद मे सीधा मुंह रखने की आज्ञा है और विशुद्ध उसी की सेवा ध्यान मे रखकर उसको पुकारो जिस प्रकार तुमको पहिले उत्पन्न किया था उसी तरह तुम दुबारा भी उत्पन्न होगे। (२६) उसी ने एक गुट को शिक्षा दी और एक गुट को भटका दिया। मनुष्यो ने ईश्वर को छोड़कर राक्षस को पकडा और समझते हैं कि वह सीधी मार्ग पर है। (३०) ऐ आदम के पुत्रो! प्रत्येक नमाज के समय से कपड़ो सजकर आया करो और खाओ और पीयो और अपव्यय न करो क्योंकि ईश्वर अपव्यय करने वालो को नहीं चाहता। (३१) (रुकू ३)

कहो अल्लाह ने जो आसायश और खाने की साफ वस्तुएं अपने भक्तो के लिए उत्पन्न की हैं किसने पाप बताई है** समझा दो कि ससार के जीवन मे जो वस्तुएं धर्म वालो के लिए हैं प्रलय के दिन यह विशेषकर उन्ही को दी जायगी। इसी प्रकार हम समझदारो को

---

* आदम और हव्वा।

** मक्के वालों की धारणा थी कि कुछ प्रकार के खान-पान मना हैं। ये ऐसी चीजें थीं जैसे ऊंटनी के पेट से निकला हुआ बच्चा।

आयतें विस्तार के साथ वर्णन करते हैं। (३२) कहो कि केवल निर्लज्जता के कामो को मना किया है उनमें जो खुले और छिपे हों और अपराध और अकारण असीमितता और इस बात को कि तुम किसी को ईश्वर का समकक्ष ठहराओ जिसको उसने कोई प्रमाणपत्र नहीं उतारा और यह कि ईश्वर पर पाप लगाने लगो जो तुम्हें प्रतीत नही। (३३) प्रत्येक जाति की एक अवधि है फिर जब उनकी मृत्यु आवेगी तो न एक घडी घटेगी और न घड़ी बढेगी। (३४) ऐ आदम के पुत्रो ! जब कभी तुम्ही मे से पैगम्बर तुम्हारे पास पहुचे और हमारी आयतें तुमको पढ़कर सुनावें तो जो कोई डरेगा और अपनी दशा का सुधार करेगा तो उस पर न तो भय उतरेगा और न वह उदास होगे। (३५) और जो हमारी आयतो को झुठलायेंगे और उनसे अकड बैठेंगे वही नरकीय होगे कि सदैव नरक में रहेंगे। (३६) उससे बढकर कौन अत्याचारी होगा जो ईश्वर पर झूठे जंजाल बांधे या उसकी आयतो को झुठलाए। यही मनुष्य हैं जिनको भाग्य के लिखे हुए में से उनका भाग उनको पहुचेगा यहाँ तक कि जब हमारे देवदूत उनकी आत्माए निकालने के लिए उपस्थित होगे कि अब वह कहाँ हैं जिनको तुम ईश्वर के अलावा बुलाया करते थे, तो वह कहेंगे कि वह तो हमसे छिप गये और अपने ऊपर स्वयं साक्षी देंगे कि वह काफिर थे। (३७) कहा कि भूत और मनुष्य के गुटों मे जो तुमसे पहिले हो चुके हैं मिल कर नरकाग्नि मे प्रविष्ट हो। जब एक गुट नरक मे जायगा तो अपने साथियो पर अधिकार करेगा यहाँ तक कि जब सबके सब नरक मे एकत्रित होगे तो उनमे से पिछला गुट अपने से पहिले गुट के पक्ष मे बुरी प्रार्थना करेगा कि ऐ हमारे पालनकर्ता ! इन्ही मनुष्यों ने हमको भटका दिया तू इनको नरक का दूना दण्ड दे। कहेगा कि प्रत्येक को दूना दण्ड परन्तु तुमको प्रतीत नहीं। (३८) और उनमे के पहिले मनुष्य पिछले मनुष्य से कहेंगे अब तो तुमको हम पर किसी प्रकार अत्याचार नही रहा तो अपने किये का दण्ड भुगतो। (३९) (रुकू ४)

निस्सदेह जिन्होने हरारी आयतो को झुठलाया और उनसे अकड बैठें न तो उनके लिये आकाश के द्वार खोले जायगे और न स्वर्ग मे प्रविष्ट होने पायेंगे जब तक ऊट सुई के छिद्रमे से न निकले अर्थात कभी नही और अपराधियो को हम ऐसा दण्ड दिया करते हैं। (४०) कि उनके लिए नरकाग्नि का बिछौना होगा और उनके ऊपर से अग्नि का ही ओढना और अहकारियो को हम ऐसा ही दण्ड दिया करते हैं। (४१) जो लोग विश्वास लाये और उन्होंने अच्छे काम किये, हम तो किसी व्यक्ति पर उस की सामर्थ्य से अधिक बोझ नही डाला करते। यही मनुष्य स्वर्ग निवासी होगे और वह उसमे सदैव रहेंगे। (४२) और जो कुछ उनके हृदय मे क्षोभ होगा हम निकाल देंगे उनके नीचे नहरें बह रही होगी और बोल उठेंगे कि ईश्वर का धन्यवाद है जिसने हमको इसका मार्ग दिखलाया और यदि ईश्वर हमको उपदेश न करता तो हम मार्ग न पाते। निस्सदेह हमारे पालनकर्ता के पैगम्बर सत्यता लेकर आये थे और इन मनुष्यो से पुकारकर कह दिया जायगा कि यही स्वर्ग है जिसके स्वामी तुम अपने कार्यो के कारण वना दिये गए हो। (४३) स्वर्ग के रहनेवाले मनुष्य नारकीय मनुष्यों को पुकारेंगे कि हमारे पालनकर्ता ने जो हमसे प्रण किया था हमने तो सच्चा पाया तो क्या जो तुम्हारे पालनकर्ता ने प्रण किया था तुमने भी सच्चा पाया। वह कहेग हाँ, इतने मे पुकारनेवाला उनमे पुकार उठेगा कि अत्याचारियो पर ईश्वर का धिक्कार। (४४) जो ईश्वर के मार्ग से रोकते और उसमे बुराई ढूँढते और प्रलय से इन्कार रखते थे। (४५) स्वर्ग और नरक के मध्य मे एक आड होगी अर्थात आराफ उसके सिरे पर कुछ मनुष्य हैं जो प्रत्येक को उनके रूपो से पहचानते हैं वैकुण्ठवासियो को पुकार कर सलामआलेकुम करेंगे। आराफवाले स्वय वैकुण्ठ मे नही गए परन्तु वह आशा कर रहे हैं। (४६) और जब उनकी दृष्टी नरकवासियो की ओर जा पडी तो उन की खराबियाँ देखकर ईश्वर से प्रार्थना करने लगेंगे कि ऐ हमारे

पालनकर्ता ! हमको अपराधी लोगो के साथ न कर। (४७) (रुकू ५)

आराफ वाले कुछ नारकीय मनुष्यों को जिन्हें उनके रूपो से पहिचानते होगे पुकारकर कहेंगे कि तुम्हारा धन का एकत्रित करना और घमण्ड करना क्या काम आया। (४८) क्या यही मनुष्य हैं जिनके विषय में तुम कसमें खाकर कहा करते थे कि अल्लाह इन पर अपनी दया नहीं करेगा। बैकुण्ठ मे चले जाओ तुम पर न डर होगा और न तुम उदास होगे। (४६) और नरकीय पुकार पर स्वर्गवालो से कहेंगे कि हम पर थोडा सा जल डाल दो या तुमको जो ईश्वर ने जीविका दी है उसमें से कुछ हमको दे डालो। वह कहेंगे कि ईश्वर ने यह दोनो वस्तुएँ काफिरों पर पाप कर दी हैं। (५०) कि जिन्होने अपने धर्म को हँसी और खेल बना रक्खा है और सांसारिक जीवन इनको धोखे मे डाले हुए था तो आज हम इनको भुलावेगे जैसे यह मनुष्य अपना इस दिन को मिलना भूले और हमारी आयतो को मना करते रहे। (५१) हमने इनको कुरान पहुचा दिया, समझ-बूझकर उसमे हर प्रकार का विस्तार भी कर दिया। धर्मवाले मनुष्यो के पक्ष मे शिक्षा और दया है। (५२) क्या मक्के वाले प्रलय के घटित होने की बाट देखते हैं। जब वह दिन आयेगा तो जो लोग उसको पहले से भूले हुए थे वह स्वीकार करलेंगे कि निस्सदेह हमारे पालनकर्ता के पैगम्बर सत्य बात लेकर आये थे तो क्या हमारे कोई सिफारशी हैं कि हमारी सिफारिश करे या हमको ससार मे फिर लौटा दिया जाय जो जैसे कर्म हम किया करते थे उनके विरुद्ध काम करें। निस्सदेह इन मनुष्यो ने स्वयं अपनी हानि की और जो झूठी बातें उड़ाया करते थे वह भूल गये। (५३) (रुकू ६)

तुम्हारा पालनकर्ता अल्लाह है जिसने छः दिन मे पृथ्वी और नभ को उत्पन्न किया फिर सिहांसन पर जा विराजा—वही रात्री को दिन का पर्दा बनाता है। रात दिन के पीछे चली आती है। और उसी ने सूर्य और चन्द्रमा और तारो को बनाया कि यह सब ईश्वर के विश्वास-

पात्र आज्ञाकारी हैं। सुन रक्खो कि प्रत्येक वस्तु ईश्वर ही की उत्पन्न की हुई है और ईश्वर ही की आज्ञा है जो ससार का पालनेवाला और उन्नतिवाला है। (५४) अपने पालनकर्ता से गिडगिडा कर और चुपके से प्रार्थना करते रहो वह सीमा से बढने वालो को नही पसन्द करता (५५) और देश के सुत्ररे पीछे उसमे उत्पात मत फैलाओ और डर से और आशा से ईश्वर को पुकारो ईश्वर की कृपा भले मनुष्यो के समीप है। (५६) और वही है जो अपनी दया के आगे शुभसवाद देने को वायु भेजा करता है यहाँ तक कि वह पानी के भरे बादल उठा लाती है तो हम किसी शुष्क बस्ती की ओर उस बादल को हाँक देते हैं फिर बादल से पानी बरसाते हैं फिर पानी से हर प्रकार के फल निकलते हैं इसी प्रकार हम प्रलय के दिन मृतको को निकाल खड़ा करेंगे। सम्भवत. तुम ध्यान दो। (५७) जो भूमि अच्छी है उसमें ईश्वर की आज्ञा से उसकी उपज अच्छी होती है और जो पृथ्वी खराब है उसकी उपज खराब ही होती है इसी प्रकार हम उदाहरणो से उन मनुष्यो के लिए वर्णन करते हैं जो सच को मानते हैं। (५८) (रुकू ७)

निस्सदेह हमने ही नूह पैगम्बर को इनकी जाति की ओर भेजा तो उन्होने समझाया कि भाइयो अल्लाह की प्रार्थना करो उसके अतिरिक्त कोई तुम्हारी प्रार्थना के योग्य नही, मुझको तुमसे बडे दिन के दण्ड का भय है। (५९) उसकी जाति के सरदारो ने कहा कि हमारे निकट तो तुम स्पष्टतया भटके हुए हो। (६०) नूह ने कहा भाइयो मैं बहका नही रहा अपितु मे तो ससार के पालनेवाले का भेजा हुआ हू। (६१) तुमको अपने पालनकर्ता का सदेश पहुचाता हू और तुम्हें शिक्षा देता हू और मैं अल्लाह से ऐसी बातें जानता हू जिनको तुम नही जानते। (६२) क्या तुम इस बात से आश्चर्य करते हो कि तुममे ही से एक व्यक्ति के द्वारा तुम्हारे पालनकर्ता की आज्ञा तुमको पहुची जिससे वह तुमको ईश्वर के दण्ड से डराये और तुम बचो और सम्भवत तुम पर दया की जाय। (६३) जिन्होने उसे झुठलाया तो हमने नूह को और

उन मनुष्यों को जो उसके साथ थे नौका * में बचा लिया और जिन मनुष्यो ने हमारी आयतो को झुठलाया था उनको डुबो दिया । वह अपना भला-बुरा न देख पाते थे अन्धे थे । (६४) (रुकू ८)

आद एक जाति का नाम था की ओर उनके भाई हूद (पैगम्बर) को भेजा उन्होने समझाया कि भाइयो अल्लाह की प्रार्थना करो उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई पूजित नही क्या तुम नही डरते । (६५) उस जाति के सरदार जो अविश्वासी थे कहने लगे कि हमको तू पागल प्रतीत होता है और हम तुमको झूठा समझते हैं । (६६) उसने कहा भाइयो ! मै पागल नही अपितु ससार के पालनकर्ता का भेजा हुआ हूं । (६७) तुमको अपने पालनकर्ता का सदेश पहुचाता हू । और मैं तुम्हारा सच्चा हितैशी हू । (६८) क्या तुम इस वात से अचम्भा करते हो कि तुम्ही मे से एक व्यक्ति के द्वारा तुम्हारे पालनकर्ता की आज्ञा तुमको पहुची जिससे तुमको डरावे और स्मर्ण करो जब उसने तुमको नूह की जाति के पश्चात सरदार बनाया और तब का विस्तार तुमको अधिक दिया । तो अल्लाह के पदार्थो को स्मरण करो, सम्भवत. तुम्हारा भला हो । (६९) उन मनुष्यो ने पूछा क्या तुम हमारे पास इसलिए आये हो कि हम केवल एक ईश्वर की पूजा करने लगे जिनको हमारे बडे पूजते रहे उनको छोड बैठे । वस यदि सच्चे हो तो जिसका हमको डर दिखाते हो उसे ले जाओ । (७०) हूद ने उत्तर दिया कि तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से तुम पर दण्ड और कोप पडा क्या तुम मुझसे कई नामो मे झगड़ते हो जिनको तुमने और तुम्हारे बड़ो ने गढ रक्खे हैं । अल्लाह ने उनका कोई प्रमाणपत्र नही भेजा तो तुम दण्ड की प्रतीक्षा करो । मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर

---

*नूह के समय मे एक भयंकर बाढ़िया आई थी । नूह को इसका समाचार पहले ही मिल गया था इसलिए उन्होंने एक किश्ती बना रखी थी । जो उसमे बैठे वे बचे, शेष डूब गये ।

रहा हू । (७१) अन्ततः हमने अपनी दया से हूद को और उन मनुष्यों को जो उनके साथ थे बचा लिया और जो मनुष्य हमारी आयतो को झुठलाते थे और न मानते थे उनकी जड़ें काट डाली। (७२) (रुकू ६)

समूद्र की ओर उनके भाई सालेह को भेजा सालेह ने कहा कि भाइयो ईश्वर ही की पूजा करो उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई पूजित नही । तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से तुम्हारे पास एक उदाहरण स्पष्ट आ चुका कि यह ईश्वर की भेजी हुई ऊँटनी तुम्हारे लिए एक चमत्कार है तो इसे छुटी फिरने दो कि ईश्वर की पृथ्वी मे से जहाँ चाहे चरें और किसी प्रकार की हानि पहुँचने की इच्छा से इसको छूना भी नही अन्यथा तुमको दुखदाई दण्ड होगा। (७३) स्मरण करो जब उसने तुमको आद (जाति) के पश्चात सरदार बनाया और तुमको पृथ्वी पर इस प्रकार से बसाया कि तुम मैदान मे महल खडे करते और पर्वतो को काटकर घर बनाते हो। अल्लाह की कृपाओ को स्मरण करो और देश में उत्पात मत फैलाते फिरो।(७४) सालेह की जाति मे जो मनुष्य अभिमानी सरदार थे निर्धनो से जो उनमें से विश्वास ले आये थे पूछने लगे क्या तुमको खूब पता है कि सालेह ईश्वर का पैगम्बर है। उन्होंने उत्तर दिया जो उनको आज्ञा देकर हमारी ओर भेजा गया है हमारा तो उस पर विश्वास है। (७५) जिनको बडा घमण्ड था कहने लगे कि जिस वस्तु पर तुम विश्वास ले आये हो हम तो उसे नही मानते। (७६) फिर उन्होने ऊँटनी को काट डाला और अपने पालनकर्ता की आज्ञा से अहकार किया और कहा कि ऐ सालेह, जिसका तुम हमको दिखलाते थे यदि तुम पैगम्बर हो तो हमे लाकर दिखाओ ।(७७) बस उनको भूकम्प ने घेर लिया और अपने घरो मे बैठे के बैठे रह गये। (७८) सालेह उनसे यो कहता हुआ चला गया कि भाइयो मैं तो अपने पालनकर्ता का सन्देश तुमको पहुँचा चुका और तुम्हारा भला चाहा परन्तु तुम नही चाहते भला चाहनेवालो को। (७९) ईश्वर ने लूत को भेजा और अपनी जाति से उसने कहा समस्त ससार मे तुमसे पहले

किसी ने ऐसी निर्लज्जता नहीं की। (८०) क्या तुम स्त्रियों को छोड़ कर सहवास के लिए पुरुषो पर दौड़ते हो अपितु तुम सीमा पर नहीं रहते हो। (८१) लूत की जाति का उत्तर यही था कि वह कहने लगे कि इन मनुष्यों को अपनी बस्ती से निकाल बाहर करो। यह ऐसे मनुष्य हैं जो पवित्र साफ बनना चाहते हैं। (८२) बस हमने लूत को और उनके घरवालों को बचाया परन्तु उसकी पत्नि रह गई वह पीछे रहनेवालों में थी। (८३) हमने इन पत्थरों की वर्षा बरसायी तो देखना कि अपराधियो का अन्त कैसा हुआ। (८४) (रुकू १०)

मदाइनवालो की ओर उनका भाई शोएब पैगम्बर भेजा गया। उसने कहा हे भाइयों! अल्लाह की पूजा करो, उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई पूजित नही। तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से तुम्हारे पास उदाहरण स्पष्ट हो चुका है तो नाप और तोल पूरा किया करो और मनुष्यों को उनकी वस्तुएँ कम न दो और ठीक होने के पश्चात पृथ्वी में उत्पात न करो, यह तुम्हारे लिए भला है यदि तुम्हें विश्वास हो (८५) और प्रत्येक मार्ग पर डराने और रोकने को न बैठो और अल्लाह के मार्ग में दोष मत ढूंढ़ो और स्मरण करो कि तुम थोड़े थे फिर ईश्वर ने तुम्हें बढ़ाया और देखो कि उत्पात करनेवालों का कैसा परिणाम हुआ। (८६) यदि तुममें से एक गुट ने मेरी पैगम्बरी को माना है और एक ने नही माना। चाहिए कि तुम सन्तोष करो जब तक अल्लाह हमारे मध्य निर्णय करे, वह सबसे बढकर निर्णय करनेवाला है (८७)।

नवाँ पारा (कालल्पलउ)

शोएब की जाति के घमण्डी सरदार बोले कि हे शोएब या तो तुम हमारे धर्म में लौट आओ नहीं तो हम तुमको और जो तेरे साथ विश्वास लाये हैं अपने नगर से निकाल देंगे। शोएब ने कहा क्या हम

उस दशा मे भी लौट जावें जबकि हम उसके विरुद्ध हैं। (८८) जबकि ईश्वर तुम्हारे धर्म से हमे पृथक कर दिया फिर भी यदि उसमे लौट आवें तो हमने ईश्वर पर झूँठ बांधा और हमारा काम नही कि उसमें आवें परन्तु यदि हमारा ईश्वर चाहे तो हो सकता है हमारा पालनकर्ता अपने ज्ञान से प्रत्येक वस्तु को जानता है अल्लाह पर हमने भरोसा किया। ऐ ईश्वर! हममे और हमारी जाति मे तू ठीक न्याय कर क्योकि तू सबसे अच्छा न्यायाधीश है। (८९) शोएब की जाति के सरदार जो अविश्वासी थे बोले कि यदि शोएब के मार्ग पर चलोगे तो तुम नष्ट होगे। (९०) फिर उन्हे भूचाल ने घेरा, वे अपने घरो मे बैठे के बैठे रह गए। (९१) जिन मनुष्यो ने शोएब को झुठलाया मानो उन बस्तियो मे कभी थे ही नही। जिन मनुष्यो ने शोएब को झुठलाया मानो वही नष्ट हुए। (९२) शोएब उनसे हट गया और कहा ऐ जाति मैंने ईश्वर का सन्देशा तुम्हें पहुंचाया और तुम्हारा भला चाहा, फिर जिन मनुष्यो ने न माना उन पर क्यों दु.ख करूं। (९३) (रुकू ११)

जिस बस्ती मे हमने पैगम्बर भेजा वहाँ के रहनेवालो पर हमने कठोरता भी की और विपत्ति भी डाली जिससे यह मनुष्य गिडगिडायें (९४) फिर हमने बुराई के स्थान पर भलाई को बदला यहाँ तक कि मनुष्य खूब बढ़े और कहने लगे कि इस प्रकार की कठोरता और चैन तो हमारे बडो को भी पहुँच चुका है तो हमने उनको अचानक धर पकडा जब वह असावधान थे। (९५) और यदि बस्तियोवाले विश्वास लाते और सयम करते तो हम नभ और पृथ्वी को उन पर खोल देते परन्तु उन्होने झुठलाया तो उन पापो के दण्ड में जो वह करते थे हमने उनको पकडा। (९६) तो क्या बस्तियो के रहनेवाले इससे निर्भय हैं कि उन पर हमारा दण्ड रात।रात पडे और वह सोये हुए पडे हों। (९७) या बस्तियो के रहनेवाले इससे निर्भय हैं कि हमारा दण्ड दिन दहाडे उन पर पडे जबकि वह खेल कूद रहे हो। (९८) तो क्या

अल्लाह के दाँव से निर्भय हो गये हैं सो अल्लाह के दाँव से तो वही मनुष्य निर्भय होते हैं जो नष्ट होने वाले हैं। (९९) रुकू १२)

जो वहाँ के मनुष्यो के जाने के वाद पृथ्वी के स्वामी होते हैं क्या इस बात की सूझ नही रखते कि यदि हम चाहें तो इनके अपराधो के बदले इन पर विपत्ति डालें और हम इनके दुख पर मुहर कर दें तो यह मनुष्य नही सुनते। (१००) ऐ पैगम्बर यह कुछ बस्तियाँ हैं जिनकी दशा हम तुमको सुनाते हैं और इनके पैगम्बर इन मनुष्यो के पास चमत्कार भी लेकर आये परन्तु यह ऐसी तबियत के न थे कि जिस वस्तु को पहले झुठला चुके हो उस पर विश्वास ले आवे। काफिरो के हृदय पर ईश्वर इस प्रकार मुहर लगा दिया करता है। (१०१) हमने तो इनमे से बहुत सो को वचन का पक्का न पाया और हमने इनमे से बहुतो को अवज्ञाकारी पाया। (१०२) फिर उनके पश्चात हमने मूसा को चमत्कार देकर फिरऔन और उसके सरदारो की ओर भेजा तो इन मनुष्यो ने असीमितता की। देखना कि उत्पतियों का कैसा परिणाम हुआ। (१०३) और मूसा ने कहा कि ऐ फ़िरऔन मैं ससार के पालनकर्ता का भेजा हुआ हू। (१०४) कि सत्य के अतिरिक्त ईश्वर के विषय मे दूसरी वात न कहूँ। मैं तुम्हारे के पास तुम्हारे पालनकर्ता से चमत्कार लेकर आया हू। तू इसराईल के पुत्रो को मेरे साथ कर दे। (१०५) बोला कि यदि तू कोई चमत्कार लेकर आया है तथा सच्चा है तो लाकर दिखा। (१०६) इस पर मूसा ने अपनी लाठी डाल दी तो क्या देखते हैं कि वह स्पष्टतया एक अजगर ही गई (१०७) और अपना हाथ निकाला तो लोगो को स्वेत दिखाई देने* लगा। (१०८) (रुकू १३)

---

*मूसा को दो चमत्कार मिले थे— (१) उनकी लाठी अजगर बन जाती थी, (२) उनका हाथ इतना चमकता था कि उसकी ओर आख भर के देखा नहीं जाता था।

फिरऔन के मनुष्यो मे से जो दरबारी थे कहने लगे कि यह तो बडा बुद्धिमान जादूगर है। (१०६) चाहता है कि तुमको तुम्हारे देश से निकाल बाहर करे तो क्या राय देते हो। (११०) सबसे मिलकर कहा कि मूसा और उसके भाई हारू को इस समय ढील दे और गाँवो मे कुछ सन्देशवाहक भेजिये। (१११) कि समस्त जानकर जादूगरो को आप के मम्मुख लाकर उपस्थित करें। (११२) निदान जादूगर फिरऔन के पास उपस्थित हुए, कहने लगे कि यदि हम विजयी हो जाये तो हमको इनाम मिलना चाहिए। (११३) कहा—हाँ! और अवश्य तुम मेरे पास रहा करोगे। (११४) जादूगरो ने कहा—ऐ मूसा, या तो तुम अपना डडा लाकर डालो और या हम ही डाले। (११५) मूसा ने कहा तुम्ही डालो। जब उन्होने अपनी लाटियाँ और रस्सियाँ डाल दी तो जादू के जोर से लोगो की नजरबन्दी कर दी कि चारो ओर साँप ही साँप दिखलाई देने लगे और इनको भय मे डाल दिया और बडा जादू लाये। (११६) और हमने मूसा की ओर ईश्वरीय सन्देश भेजा कि तुम भी अपनी लाठी डाल दो। मूसा ने लाठी डाल दी तो क्या देखते हैं कि जादूगरो ने जो झूठ-मूठ बना खडा किया था उसको वह लीलने लगा। (११७) बस सत्य बात प्रमाणित हो गई और जो कुछ जादूगर ने किया था झूठा हो गया। (११८) बस फिरऔन और उसके मनुष्य उस अखाडे मे हारे और जलील हो गए। (११९) जादूगर सिर नवाने मे गिर पडे। (१२०) बोल उठे कि हम तो ससार के पालनकर्ता पर विश्वास लाए। (१२१) जो मूसा और हारू का पालनकर्ता है। (१२२) फिरऔन बोला अभी मैंने आज्ञा ही नही दी और तुम विश्वास ले आए हो। न हो यह तुम्हारा धोखा है जो नगर मे तुमने बाँधा है जिसमे यहाँ के मनुष्यो को इस नगर से निकाल दो, सो तुमको अब प्रतीत हो जाय। (१२३) तुम्हारे हाथ और तुम्हारे पाँव उल्टे अर्थात दाहिना हाथ तो बायाँ हाथ तो दाहिना पैर कटवाऊँ फिर तुम सबको सूली पर चढाऊगा। (१२४) वह कहने लगे हमको तो अपने पालनकर्ता की ओर लौटकर जाना है। (१२५)

और तू हमसे इसलिए शत्रुता करता है कि हमने अपने पालनकर्ता के चमत्कार जब हमारे पास पहुचे मान लिए हैं। ऐ हमारे पालनकर्ता ! हमे सन्तोष दे और हमे मुसलमान ही मान। (१२६) (रुकू १४)

फिरऔन के मनुष्यो मे से सरदारो ने कहा कि क्या मूसा और उसकी जाति को रहने दोगे कि देश मे उत्पात फैलाते फिरें और वह तुझको और तेरी मूर्तियो को छोड़ दें। उसने कहा अब हम इनके पुत्रो को मारेंगे और उनकी स्त्रियो को रखेंगे और हम उन पर सवार रहेंगे। (१२७)*मूसा ने अपनी जाति से कहा अल्लाह से सहायता माँगो और सन्तोष करो देश तो सब अल्लाह ही का है, अपने सेवको मे से जिसको चाहता है उसको स्वामी बना देता है और डरने वालों का परिणाम भला होगा। (१२८) और वह कहने लगे कि तुम्हारे आने से पहले हमको दु ख मिला और तेरे आने के पश्चात भी। मूसा ने कहा कि समीप है कि पालनकर्ता तुम्हारे शत्रु को मार डाले और तुमको राजा करे फिर देखें तुम कैसे काम करते हो। (१२९) (रुकू १५)

हमने फिरऔन के मनुष्यो को अकालो और उपज की कमी में फंसाया जिससे वह मान जावें। (१३०) फिर जब उनको कोई भलाई पहुचती तो कहते यह हमारे ही कारण से हैं और यदि उन पर कोई विपत्ति आती तो मूसा और उनके साथियो का भाग्य बुरा बताते सुनो जी उनका अभाग्य ईश्वर के यहाँ है परन्तु उनमे के बहुतेरे नही जानते। (१३१) फिरऔन के मनुष्यो ने मूसा से कहा तुम कोई-सी निशानी हमारे सामने लाओ कि उसके द्वारा तुम हम पर अपना जादू

---

*फिरऔन के दरबारियो ने मूसा और उसके साथियों को मार डालने की राय दी थी। फिरऔन ने उनसे कहा—"इनके मर्द मार डाले जायं और औरतें लौंडियाँ बना ली जायं ताकि दूसरे इस दुर्दशा से सबक लें।"

चलाओ तो हम तो तुम पर विश्वास लानेवाले नही हैं । (१३२) फिर हमने उन पर ब्वण्डर भेजा और टीडियाँ, जुएँ और मेडक और खून यह सब पृथक थे इस पर भी वह अकडे रहे और वे अपराधी थे। (१३३) और जब उन पर दण्ड पडा तो बोले ऐ मूसा । तुमसे जो ईश्वर ने प्रण कर रखा है उसके सहारे पर अपने पालनकर्ता से हमारे लिए पुकारो यदि तुमने हम पर से दण्ड को टाल दिया तो हम अवश्य तुम पर विश्वास ले आवेंगे और इसराईल के पुत्रो को भी तुम्हारे साथ भेज देंगे। (१३४) फिर जब हमने एक विशेष समय के लिए जिस समय उनको पहूँचना था दण्ड को उनसे उठा लिया तो वह तत्काल वचाव के विरुद्ध हो गये । फिर हमने उनसे बदला लिया। (१३५) और नदी मे डुबो दिया*क्योकि वह हमारी आयतों को झुठलाते और उनसे मुँह मोडा करते थे । (१३६) पृथ्वी जिसमे हमने उन्नति दी थी हमने उनको उसके पूर्व और पश्चिम का स्वामी कर दिया जो फिरऔन के यहाँ कमजोर हो रहे थे और इसराईल की सन्तान पर तेरे पालनकर्ता का अच्छा प्रण पूरा हो गया उनके सन्तोष के कारथ से और जो फिरऔन और उसके कवीले के मनुष्यो ने वनाया था हमने नष्ट कर दिये । (१३७) हमने इसराईल के पुत्रो को समुद्र पार उतार दिया तो वह ऐसे मनुष्यो के निकट पहुचे जो अपनी मूर्तियो को पूजते थे उनको देखकर इसराईल के पुत्र मूसा से कहने लगे कि ऐ मूसा जिस प्रकार इन मनुष्यो के पास मूर्तियाँ है एक हमारे लिए भी वना दो, मूसा ने उत्तर दिया कि तुम मूर्ख हो । (१३८) यह मनुष्य जो

---

*मूसा ने और फिरऔन से ४० वर्ष लड़ाई रही । मूसा कहते थे कि बनी इसराईल को उनके साथ भेज दिया जाय लेकिन फिरऔन न मानता था । उनके शाप से फिरऔन के देश पर यह सब आफते आईं मूसा को पकडने के लिए फिरऔन ने उनका पीछा किया । मूसा तो नदी को पार कर गये लेकिन फिरऔन डूब गया ।

हैं नष्ट होने वाले हैं और जो काम यह कर रहे हैं झूठे है । (१३९) मूसा ने यह भी कहा क्या ईश्वर के अतिरिक्त कोई पूजित तुम्हारे लिए पहुचा दूं यद्यपि उसी ने तुमको ससार के मनुष्यो पर उन्नति दी है। (१४०) और ऐ इसराईल के पुत्रो वह समय स्मरण करो जब हमने तुमको फिरऔन के मनुष्यो से बचाया था कि वह तुमको बडे दु ख देते थे, तुम्हारे पुत्रो को मार डालते और तुम्हारी स्त्रियो को जीवित रखते और इसमे तुम्हारे पालनकर्ता की बडी कृपा थी ।(१४१) (रुकू १६)

हमने मूसा से तीस रात्रियो का प्रण किया और हमने दस रात्रियो और मिलाई। तब मेरे पालनकर्ता की अवधि चालीस रात पूरी हुई और मूसा ने अपने भाई हारू से कहा कि मेरी जाति मे प्रतिनिधि बने रहना और सभाल रखना और झगडालुओ के मार्ग न चलना। (१४२) और जब मूसा हमारे प्रण के अनुसार तूर पर्वत पर उपस्थित हुए *और उनके पालनकर्ता ने उनसे बाते की तो मूसा ने कहा कि ऐ हमारे पालनकर्ता ! तू मुझको दिखला कि मैं तेरी ओर एक दृष्टि देखूं । कहा तुम हमको कभी भी न देख सकोगे, परन्तु हाँ पर्वत पर दृष्टि करो । बस यदि पर्वत अपने स्थान पर ठहरा रहे तो तू भी हमे देख सकेगा फिर जब उसका पालनकर्ता (प्रकाश) पर्वत पर प्रकट हुआ तो उसको खण्ड-खण्ड कर दिया और मूसा मूर्छा खाकर गिर पडा फिर जब होश मे आया तो बोल उठा कि तू पवित्र है, मैं तेरे सामने क्षमायाचना करता हू और तुझ पर विश्वास लानेवालो मे प्रथम हू। (१४३) ईश्वर ने कहा ऐ मूसा हमने तुमको अपनी पैगम्बरी और आपस की बात-चीत से मनुष्यो पर मान दिया तो जो सहीफे तौरात हमने तुमको किया है उसको लो औ आभारी बने रहो। (१४४) और

---

*हजरत मूसा ४० दिन तूर पहाड़ पर रहे। यह इसलिए कि तौरात का उतरना इसी बात पर निर्भर था।

हमने तौरात की तख्तियो मे मूसा के लिए हर प्रकार की शिक्षा और हर वस्तु का ब्योरा लिख दिया था। तू इसको दृढता से पकडे रह—अपनी जाति को आज्ञा दो कि इस पुस्तक की अच्छी-अच्छी बातो को पल्ले बाँधे रहो और उनको यह भी समझाओ मैं तुम्हे अवज्ञाकारियो का घर दिखाऊँगा। (१४५) जो मनुष्य अकारण देश मे अकडते फिरते हैं हम उनको अपनी निशानियो से फेर देंगे और उनके हृदय को ऐसा कठोर कर देंगे कि यद्दि हृव चमत्कार भी देखे तो भी उन पर विश्वास न लावें और यदि सीधा मार्ग देख पावें तो उसको अपना मार्ग न मानें और यदि पथभ्रष्टता का मार्ग देख पावें तो उसको मार्ग बना लें यह कमी उनमे इससे उत्पन्न हुई कि उन्होने हमारी आयतो को झुठलाया और उनसे असावधानी करते रहे। (१४६) और जिन मनुष्यो ने हमारी आयतो को और प्रलय के आने को नही माना किया-धरा सब अकारथ—यह दण्ड उनको उन्ही कामो की दी जायगा। (१४७) (रुकू १७)

मूसा के पीछे उनकी जाति ने अपने आभूषण को गलाकर उसका एक बछडा बना खडा किया। वह शरीर था जिसकी वाणी भी गाय की-सी थी और उसकी पूजा करने लगे। उन्होने यह न देखा कि वह न उनसे बात करता है और न मार्ग दिखा सकता है। उन्होने उसको देवता मान लिया और वे अन्यायी थे। (१४८) जब पछताये और समझे कि हम वहके तब बोले कि हमारा पालनकर्ता हम पर दया न करे और हमारे अपराध क्षमा न करेगा तो हम हानि मे आ जायेंगे। (१४९) जब मूसा अपनी जाति की ओर कुपित और दुःख मे भरे हुए लौटे तो बोले तो बोले कि मेरे पीछे मेरी अनुपस्थिति मे तुमने बुरा कार्य किया। क्या तुमने अपने पालनकर्ता की आज्ञा की शीघ्रता की और मूसा न तौरत को फेंक दिया और अपने भाई के सिर को पकडकर उनको अपनी ओर खीचने लगा। कहा ऐ मेरे सगे भाई! मनुष्यो ने मुझको नाचीज समझा और शीघ्र मुझको मारने वाले थे तो

शत्रुओ को मुझ पर हंसने का अवसर न दो और मुझको अत्याचारियों के साथ मिलाइये। (१५०) मूसा ने कहा कि ऐ मेरे पालनकर्ता! मेरा और मेरे भाई का अपराध क्षमा कर और हमको अपनी दया मे ले और तू सब दया करने वालों से बड़ा है (१५१) (रुकू १८)

जो मनुष्य बछडे को ले बैठे उन पर उनके पालनकर्ता का कोप पडेगा और संसार के जीवन मे जिल्लत और झूठ बांधने वालों को हम इसी प्रकार दण्ड किया करते हैं। (१५२) जिन्होने बुरे काम किये फिर इसके पश्चात छोड़ दिया और विश्वास लाये तो तुम्हारा पालनकर्ता क्षमा माँगने के पश्चात क्षमा करने वाला कृपालु है। (१५३) और जब मूसा का कोप जाता रहा तो उन्होंने तख्तियो को उठा लिया और तख्तियों मे उन मनुष्यो के लिए जो अपने पालनकर्ता से डरते हैं शिक्षा और दया है (१५४) और मूसा ने हमारे प्रण के समय के लिए अपनी जाति में ७० मनुष्य चुने* फिर जब उनको भूचाल ने आ घेरा तो मूसा ने कहा ऐ हमारे पालनकर्ता! यदि तू चाहता तो उन्हे और मुझे पहिले ही मार डालता। क्या तू हमे कुछ मूर्खों के काम से मारे डालता है। यह सब तेरा परीक्षा करना है जिसे चाहे उसे विचलाये और जिसको चाहे मार्ग दे। तू ही हमारा काम का संभालने वाला है। तू हमारे अपराध क्षमा कर और हम पर दया कर और तू समस्त क्षमा करने वालो से अच्छा है। (१५५) और इस संसार और प्रलय की अच्छाई हमारे नाम लिख दे, हम तेरी ही ओर लग गये। ईश्वर

---

*इसराईल की संतानों ने कहा था कि मूसा अपने मन से एक पुस्तक गढ़ लाये हैं। हम तो जब इसे खुदा की ओर से उतरी माने जब मूसा और खुदा से हमारे सामने बात हो। मूसा ७० आदमियों को लेकर पहाड़ पर गये। वहाँ इन्होने बातें सुनी तो कहने लगे "हम खुदा को देखें तो मानें।" इस पर एक बिजली ने उनको जला कर राख कर दिया।

ने कहा कि हमारा दण्ड उसी पर आता है जिसे हम दण्ड दिया चाहते हैं। और हमारी दया सब वस्तुओ पर एकमी है, तो हम उसको उन मनुष्यो के नाम लिख लेंगे जो डरते और दान देते और जो हमारी आयतो पर विश्वास लाते हैं। (१५६) जो पैगम्बर विना पढे मोहम्मद का समर्थन करते हैं जिनको अपने यहाँ तौरात और इजील मे लिखा हुआ पाते हैं वह उनको अच्छे काम की आज्ञा देता है और बुरे काम से मना करता है और पवित्र वस्तुओ को उनके लिए भोग्य ठहराता और अपवित्र वस्तुओ को उन पर पाप करता है और उनसे उनके बोझ और तौक उन पर से दूर करता है। तो जो मनुष्य उन पर विश्वास लाये और उनका पक्ष लिया और उनको सहायता दी और जो, ज्योति कुरान इनके साथ भेजी गई है उसको मानने लगे वही मनुष्य सफल हैं। (१५७) (रुकू १९)

कहो कि मनुष्यो मे तुम सब की ओर उस ईश्वर का भेजा हुआ हू कि नभ और पृथ्वी का राज्य उसी का है उसके अतिरिक्त और कोई पूजित नही। वही जीवित करता और मारता है तो अल्लाह पर विश्वास लाओ और उसके रसूल और पैगम्बर बिना पढे मोहम्मद पर कि अल्लाह और उसकी पुस्तको पर विश्वास रखते हैं और उन्ही का समर्थन करो जिससे तुम सीधे मार्ग पर आ जाओ। (१५८) और मूसा की जाति मे से कुछ मनुष्य ऐसे है जो सत्य बात का उपदेश और सत्य ही के अनुसार न्याय करते है। (१५९) और हमने याकूब के पुत्रो को बाँट कर एक-एक दादा की सतान के बारह गुट बनाये और जब मूसासे उस की जाति ने पानी माँगा तो हमने मूसा की ओर वही ईश्वर का सदेश भेजा कि अपनी लाटी इस पाषाण पर मारो, लाठी का मारना था कि पत्थर से बारह सोते फूट निकले। प्रत्येक गुट ने अपना-अपना घाट ढढ लिया और हमने याकूब के पुत्रो पर बादल की छाया की और उन पर मन और सलवा उतारा कि यह सुथरी जीविका है जो हमने तुमको दी है खाओ और उन मनुष्यो ने आज्ञोलघन किया हमारा कुछ

नुकसान नही किया बल्कि अपना ही नुकसान करते रहे अर्थात उनका आना बन्द हुआ। (१६०) और जब इसराईल* के पुत्रो को आज्ञा दी गई कि इस गाँव उरीहा मे बसो और इन मे से जहाँ से तुम्हारा जी चाहे खाओ और हित्तुन अपराध से दूर हो, कहो और द्वार मे मस्तक नवाये हुए प्रविष्ट हो हम तुम्हारे अपराध क्षमा कर देंगे और भलो को अधिक भी देंगे। (१६१) तो जो मनुष्य उनमे से अत्याचारी थे वह दुआ जो उनको सिखाई गई थी बदलकर कुछ और कहने लगे तो हमने उनको चचलता के बदले नभ से उन पर दण्ड उतारा। (१६२) (रुकू २०)

इसराईल के पुत्रों से उस गाँव की दशा पूछो जो नदी के किनारे था, जब वहाँ के मनुष्य शनीवार के दिग असीमितता करने लगे कि जब उनके शनीवार का दिन होता तो मछलियाँ उनके सामने आकर एकत्रित होती और जब उनके शनीवार का दिन न होता तो न आती। यो हमने उन्हें जाँचा इसलिए कि यह मनुष्य आज्ञा न मानने वाले थे (१६३) और जब उनमे से एक समाज ने कहा जिन मनुष्यों को ईश्वर मार डालता या उनको कठिन दण्ड मे फँसाना चाहता है तुम क्यो उपदेश देते हो। उन्होंने उत्तर दिया कि तुम्हारे पालनकर्ता के सामने पाप दूर करने के लिए और सम्भवतः यह मनुष्य रुक जायं (१६४) तो जब वह शिक्षाएँ जो उनको की गई थी भुला दिया तो जो मनुष्य बुरे काम से मना करते थे उनको हमने बचा लिया और अत्याचारियो को उनकी अवज्ञा के बदले हमने कठिन दण्ड मे फसाया (१६५) फिर जिस काम मे उनको मना किया जाता था जब उसमें सीमा से बढ गये तो हमने उनको आज्ञा दी कि फटकारे हुए बन्दर,

*इसराईल की संतान यानी याकूब के बारह बेटे। इन बेटों की संतान अलग अलग एक-एक गुट है।

बन जाओ। (१६६) जब तुम्हारे पालनकर्ता ने जता दिया था कि वह अवश्य उन पर प्रलय के दिन तक ऐसे अधिकारी नियुक्त रखेगा जो उनको बुरे कष्ट पहुचाते रहेंगे। तुम्हारा पालनकर्ता शीघ्र दण्ड देता है और वह निस्सदेह क्षमा करनेवाला कृपालु है। (१६७) हमने यहूद को विभाजित करके देश मे पृथक-पृथक कर दिया, उनमे से कुछ भले थे और कुछ भले नही थे और हमने उनका सुख और दुःख से परीक्षण किया सम्भवतः वह फिरें। (१६८) फिर उनके पश्चात ऐसे अयोग्य पुस्तक के स्वामी बने कि इस नाचीज ससार की वस्तुएँ ली और कहते है कि यह अपराध तो हमारा क्षमा होजायगा और यदि इसी प्रकार की कोई सांसारिक वस्तु उनके सामने आजावे तो उसे ले लेते हैं—क्या इन मनुष्यो से वह भाग जो पुस्तक तौरात मे लिखी है नही हुई कि सच बात के अतिरिक्त दूसरी बात ईश्वर की ओर न कहेंगे—जो कुछ उसमे है उन्होने उसको पढ लिया और जो मनुष्य सयमी है प्रलय का घर उनके पक्ष मे कही अच्छा है ऐ याकूब के पुत्रो क्या तुम नही समझते। (१६९) और जो मनुष्य पुस्तक को दृढता से पकडे हुए हैं और नमाज पढते हैं तो हम ऐसे अच्छे काम करने वालो के पुण्य को समाप्त नही होने देंगे। (१७०) और जब हमने उन पर पर्वत को इस प्रकार जा लटकाया कि मानो वह शामयाना था और वे समझे कि यह उन पर गिरेगा, तो हमने कहा जो पुस्तक तुमको दी है उसे दृढता के साथ लिए रहना और जो कुछ उसमे है उसे स्मरण रखना सम्भवत तुम सयमी बनो। (१७१) और स्मरण करो वह समय जब तुम्हारे पालनकर्ता ने आदम के पुत्रो से उनकी पीठो से उनकी सतान को निकाला था और उनके विपक्ष मे स्वय उन्ही को साक्षी बनाया, क्या मै तुम्हारा पालनकर्ता नही हू। सब बोले हाँ! यह साक्षी हमने इसलिये ली कि प्रलय के दिन न कहने लगो कि हम सब बात से असावधान ही रहे। (१७२) या कहने लगो कि ईश्वर का समकक्ष ठहराना तो हमारे बडो ही ने निकाला था और हम उनके पश्चात उन्ही की सतान थे तो ऐ ईश्वर क्या तू हमको उन

मनुष्यो के अपराधो के बदले मे मारे देता है जिन्होने भूल की। (१७३) और इसी प्रकार आयतो को हम विस्तार के साथ वर्णन करते है सम्भवत: वह फिरें। (१७४) और ऐ पैगम्बर इन मनुष्यो को उस व्यक्ति की दशा पढकर सुनाओ जिसको हमने अपनी आयते तथा चमत्कार दी थी फिर वह आयतो मे से निकल गया फिर राक्षस उसके पीछे लगा और वह भूले हुओ मे जा मिला। (१७५) यदि हम चाहते तो उनकी उन्नति से उसका पद ऊँचा करते परन्तु उसने नीचे मे गिरना चाहा और अपनी हार्दिक आकाँक्षाओ के पीछे लग गया तो उसका दृष्टान्त कुत्ते कैसा हो गया कि यदि उसको भगा दोगे तो जीभ बाहर लटकाये रहे और यदि उसको उसी की दशा पर छोड़े रक्खो तो भी जीभ लटकाये रहे, यही दृष्टान्त उन मनुष्यो का है जिन्होने हमारी आयतो को झुठलाया तो यह कथा वर्णन करो जिससे यह मनुष्य सोचे। (१७६) जिन मनुष्यो ने हमारी आयतो को झुठलाया उनकी बुरी दृष्टान्त है और वह कुछ अपना ही बिगाड़ते रहे हैं। (१७७) जिनको ईश्वर मार्ग दिखाये वही मार्ग पाते हैं और जिनको वह पथभ्रष्ट करे वही लोग हानि मे हैं। (१७८) और हमने बहुत से भूत और मनुष्य नरक ही के लिए उत्पन्न किये हैं उनके हृदय तो हैं परन्तु उनसे समझने का काम नही लेते और उनके आँखें भी हैं परन्तु उनसे देखने का काम नही लेते और उनके कान भी हैं उनसे सुनने का काम नही लेते। साराँश यह कि यह मनुष्य पशुओ के समान हैं अपितु उनसे भी गिरे हुए है यही असावधान हैं। (१७९) और अल्लाह के सब नाम अच्छे हैं तो उसके नाम लेकर उसको जिस नाम से चाहो पुकारो और जो मनुष्य उसके नामो मे बुराई करते हैं उनको छोड़ दो, वह अपने किये का परिणाम पावेंगे। (१८०) और हमारे ससार मे ऐसे मनुष्य भी है जो सच बात की शिक्षा और उसी के अनुसार न्याय भी करते हैं। (१८१) (रुकू २२)

जिन मनुष्यो ने हमारी आयतो को झुठलाया हम उन्हें इस प्रकार कि उनको सूझ भी न हो शनै:-शनै: नरक की ओर ले जायेंगे।

(१८२) और हम उनको ससार मे अवकाश देते हैं, हमारा दाँव निस्संदह पक्का है। (१८३) क्या इन मनुष्यो ने बिचार नही किया कि इनके साहिब को अर्थात मोहम्मद को किसी प्रकार का पागलपन तो नही है यह तो स्पष्ट रूप से ईश्वर के दण्ड से डरानेवाला है। (१८४) क्या इन मनुष्यो ने नभ और पृथ्वी के प्रबन्ध और ईश्वर की उत्पन्न की हुई किसी वस्तु पर भी दृष्टी नही की और न इस बात पर कि आश्चर्य नही इनको मृत्यु ने घेरा हो। तो अब इतना समझाये पीछे और कौन सी बात है जिसको सुनकर विश्वास ले आवेगे। (१८५) जिसको ईश्वर पथभ्रष्ट करे तो फिर उसका कोई भी राह दिखाने वाला नही और ईश्वर ही उसको छोडे हुए है कि अपनी चचलता मे पडे भटका करे। (१८६) ऐ पैगम्बर मनुष्य तुमसे प्रलय के सम्बन्ध मे पूछते है कि कही उसका ठिकाना भी है। तुम उत्तर दो कि उसका ज्ञान तो मेरे पालनकर्ता को है। बस वही उसको उसके समय पर लाकर दिखावेगा। वह एक बडी भारी घटना नभ और पृथ्वी मे होगी—प्रलय की बहुत ऐसे पूछते हैं मानो तुम उसकी खोज मे लगे रहे हो तो इनसे कहो कि इसका ज्ञान तो बस ईश्वर ही को है परन्तु प्राय मनुष्य नही समझते। (१८७) ऐ पैगम्बर! इन मनुष्यो मे कहो मेरी अपनी स्वय की लाभ हानि भी मेरे वश मे नही परन्तु जो ईश्वर चाहे होकर रहता है और यदि मे अदृष्ट जानता होता तो अपना बहुत सा लाभ कर लेता और मुझको किसी प्रकार का दुख न होता मैं तो उन मनुष्यो को जो विश्वास लाना चाहते है नरक का भय और स्वर्ग का शुभ-सवाद खबरी सुनानेवाला हू। (१८८) (रुकू २३)

वही है जिसने तुमको एक शरीर से उत्पन्न किया और उससे उसकी स्त्री को निकाला जिससे पुरुष स्त्री की ओर ध्यान दे, तो जब पुरुष का स्त्री से सहवास हुआ तो स्त्री के एक हल्का सा गर्भ रह गया फिर वह उस गर्भ को लिए-लिए फिरती थी फिर जब गर्भ के कारण अधिक बोझ हो गया तो पति-पत्नि दोनो मिलकर ईश्वर से प्रार्थना

करने लगे कि ऐ ईश्वर यदि तू हमको पूरा बच्चा देगा तो हम तेरी बड़ी कृपा मानेंगे। (१८९) फिर जब उनको पूरा बच्चा दिया तो उस सतान मे जो ईश्वर ने उनकी दी थी ईश्वर के लिए समकक्ष ठहराया सो ईश्वर के बनावटी साफी से ईश्वर की प्रतिष्ठा बहुत ऊँची है। (१९०) क्या वह ऐसे को ईश्वर का समकक्ष बनाते हैं जो किसी वस्तु को उत्पन्न नही कर सकते और वह स्वयं उत्पन्न किये हुए हैं। (१९१) वह न इनकी सहायता करने की शक्ति रखते हैं और न आप अपनी सहायता कर सकते हैं। (१९२) यदि तुम उनको सच्चे मार्ग की ओर बुलाओ तो तुम्हारी शिक्षा पर न चल सकें चाहे तुम उनको बुलाओ या चुप रहो दोनो बातें तुम्हारे लिए समान हैं। (१९३) ऐ मुशरिको तुम ईश्वर के अतिरिक्त जिन मनुष्यो को बुलाते हो वह भी तुम जैसे सेवक हैं यदि तुम सच्चे हो तो उन्हें उस दशा मे पुकारो जब वह तुम्हे उत्तर दे सकें। (१९४) क्या उनके ऐसे पाव हैं जिनसे चलते हैं या उनके ऐसे हाथ हैं जिनसे पकड़ते हैं उनकी ऐसी आँखें हैं जिनसे दिखते हैं या उनके ऐसे कान हैं जिनसे सुनते है ऐ पैगम्बर इन मनुष्यो से कहो कि अपने ठहराये हुए देवताओ को बुलाओ फिर सब मिलकर मुझ पर अपना दाँव कर चलो और मुझको तनिक भी अवकाश मत दो। (१९५) अल्लाह जिसने इस पुस्तक को अवतरित किया है वही मेरा काम सम्भालनेवाला है और वही अच्छे भक्तो का पक्ष करता है। (१९६) और उसके अतिरिक्त जिनको तुम बुलाते हो न वह तुम्हारी सहायता कर सकते हैं न अपनी सहायता कर सकते है। (१९७) यदि तुम उनको सीधे मार्ग की ओर बुलाओ तो तुम्हारी एक न सुनें और वह तुझको ऐसे दिखलाई देते कि मानो वह तेरी ओर देख रहे है यद्यपि वह देखते नही। (१९८) ऐ पैगम्बर क्षमा को पकड़ो और मनुष्यो से भले काम करने को कहो और मूर्खो से पृथक रहो। (१९९) और यदि राक्षस के गुदगुदाने से गुदगुदी तुम्हारे हृदय में उत्पन्न हो तो ईश्वर से शरण माँगो वह सुनता और जानता है। (२००) जो सयमी हैं जब कभी राक्षस की ओर का कोई विचार

उनको छू भी जाता है तो जान जाते हैं और वह उसी क्षण देखने लगते हैं। (२०१) इनके भाई इनको पथभ्रष्ट मे घसीटते हैं फिर कोताही नही करते। (२०२) और जब तुम इन मनुष्यो के पास कोई आयत नही लाते तो कहते है कि क्यो कोई आयत नही बनाई। (२०३) तुम कहो कि मैं तो जो कुछ मेरे पालनकर्ता के यहाँ से मेरी ओर वही ईश्वरीय सवाद आया है उसी पर चलता हू यह शिक्षा और दया और सोच-समझ की बाते धर्मवालो के लिए तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से हैं और जब कुरान पढा जाया करे तो उसको कान लगा कर सुनो। और चुप रहो सम्भवतः तुम पर कृपा की जाय। (२०४) और अपने हृदय मे गिडगिड़ा कर और डर डर कर और धीमी वाणी से प्रातः साय अपने पालनकर्ता को स्मरण करते रहो और भूले न रहो। (२०५) जो तुम्हारे पालनकर्ता के निकट के हैं उसकी पूजा से मुह नही फेरते और उसकी पवित्रता की माला फेरते हैं और उसी के सामने सिर नवाते हैं। (२०६) (रुकू २४)



सूरे अन्फाल

मदीने में अवतरित हुई, इसमें ७५ आयतें, १० रुकू है

आरम्भ अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त दयावान तथा कृपालु है। ऐ पैगम्बर मुसलमान सैनिक तुमसे लूट के धन*की आज्ञा पूछते है, कह दो कि लूट का धन तो अल्लाह और पैगम्बर का है, तुम ईश्वरसे डरो और आपस मे मेल करो। यदि तुम मुसलमान हो तो अल्लाह और

*वह माल जो मुसलमानो को लड़े पीछे हाथ आए।

उसके पैगम्बर की आज्ञा मानो। (१) मुसलमान वही हैं कि जब ईश्वर का नाम लिया जाता है तो उनके हृदय धडक जाते हैं और जब ईश्वर की आयते उनको पढकर सुनाई जाती हैं तो वह उनके विश्वास को अधिक कर देती है और वह अपने पालनकर्ता पर भरोसा रखते हैं। (२) जो नमाज पढते और हमने जो उनको जीविका दी है उसमे मे व्यय करते हैं। (३) यही सच्चे मुसलमान हैं, इनके लिए इनके पालन्कर्ता के यहाँ पद हैं और क्षमा और मान की जीविका। (४) जैसे तुमको तुम्हारे पालनकर्ता ने तुम्हारे घर से निकाला और मुसलमानो का गुट प्रसन्न न था। (५) कि वह मनुष्य प्रकट हुए पीछे तुम्हारे साथ सच बात में झगड़ा करने लगे। मानो उनको मृत्यु की ओर ढकेला जाता है और वह मृत्यु को आँखो से देख रहे हैं। (६) जब ईश्वर तुम मुसलमानो से प्रतिज्ञा करता था कि दो समाजो * मे से कोई-सा एक तुम्हारे हाथ आ जायगा और तुम चाहते थे कि जिसमे काँटा न लगे वह तुम्हारे हाथ आ जाय और अल्लाह की इच्छा यह थी कि अपनी आज्ञा से अधिकार को स्थिर करे और काफिरो की जड काट डाले। (७) जिससे सच को सच झूठ को झूठ कर दिखावे। चाहे काफिरो को भले ही बुरा लगे। (८) यह वह समय था कि तुम अपने पालनकर्ता के आगे विनती करते थे तो उसने तुम्हारी सुन ली कि हम निरन्तर सहस्त्र देवदूतो से तुम्हारी सहायता करेंगे। (९) और यह देवदूतो की सहायता जो ईश्वर ने की केवल प्रसन्न करने को और इसलिए कि तुम्हारे हृदय उसके कारण सन्तुष्ट हो जाय अन्यथा जीत तो अल्लाह की ही ओर से है। निस्सन्देह अल्लाह प्रबन्ध अधिकारी है। (१०) (रुकू १)

---

*अबूजहल या अबुसुफियान के समाज, जिनकी मक्के मे धाक बैठी थी। उनमे मे एक तुम्हारे साथ आ जायेगा। अत आबसुफियान बाद मे मुसलमानो के साथ आ गए।

यह वह समय था कि ईश्वर अपनी ओर से सन्तोष के लिए ओघ को तुम पर उतार रहा था और नभ से तुम पर पानी वरसाया जिससे उसके द्वारा तुमको पवित्र करे और राक्षसी मलीनता को तुममे दूर कर दे और जिससे तुम्हारे हृदयो का साहस बधावे और उनी के द्वारा तुम्हारे पॉव जमाये रखे। (११) ऐ पैगम्वर यह वह समय था कि तुम्हारा पालनकर्ता देवदूतो को आज्ञा दे रहा था कि हम तुम्हारे साथ है तुम मुसलमानो को स्थिर रखो हम शीघ्र काफिरो के हृदय मे भय डाल देगे बस तुम इनकी गरदने मारो और इनके टुकडे-टुकडे कर डालो। (१२) यह इस बात का दण्ड है कि उन्होने अल्लाह और उनके पैगम्वर का सामना किया और जो अल्लाह और उसके पैगम्वर का विरोध करेगा तो अल्लाह की मार बडी कठिन है। * (१३) यह तुम भुगत लो और जान लो कि काफिरो को नरक का दण्ड है। (१४) ऐ मुसलमानो! जब काफिरो से तुम्हारे लश्कर की मुठभेड हो जाय तो उनको पीठ न दिखाना। (१५) और जो व्यक्ति ऐसे अवसर पर काफिरो को अपनी पीठ दिखायेगा वह ईश्वर के कोप मे आ गया और उसका ठिकाना नरक है और वह वहुत ही बुरा स्थान है परन्तु यह कि कला-कौशल करता हो दुख या सेना में जा मिलता हो। (१६) वस काफिरो को तुमने वध नही किया अपितु उनको अल्लाह ने वध किया और जब तुमने तीर चलाये तो तुमने तीर नही चलाये अपितु अल्लाह ने तीर चलाये और वह मुसलमानो पर कृपा किया चाहता था निस्सन्देह अल्लाह सुनता और जानता है। (१७) वह बात जान लो कि ईश्वर को काफिरो के प्रयत्नो के असफल कर देना स्वीकार है। (१८) तुम जो विजय माँगते थे वह विजय तुम्हारे सामने आ गई और यदि वचे रहोगे तो यह तुम्हारे पक्ष मे भला होगा और यदि तुम फिर कर आओगे तो हम भी फिरकर आवेगे और तुम्हारा जत्था कितना ही वहुत हो कुछ भी तुम्हारे काम नही आयेगा और जानो कि अल्लाह मुसलमानो के साथ है। (१९) (रुकू २)

मुसलमानों ! अल्लाह और उसके पैगम्बर की आज्ञा मानो और उसमें सिर न उठाओ और तुम सुन ही रहे हो । (२०) और उन मनुष्यों जैसे न बनो जिन्होने कह दिया कि हमने सुना यद्यपि वह सुनते नही । (२१) अल्लाह के निकट सब जीवो मे निकृष्ट बहरे गूँगे है जो नही समझते । (२२) यदि अल्लाह इनमे भलाई पाता तो इनको सुनने की योग्यता भी अवश्य देता परन्तु यदि ईश्वर इनको सुनने की योग्यता दे तो भी यह मुह फेरकर उल्टे भागे । (२३) मुसलमानो ! जब पैगम्बर तुमको ऐसे धर्म की ओर बुलाते है जो तुममे नई आत्मा फूंकता है तो तुम अल्लाह और पैगम्बर की आज्ञा मानो और जाने रहो कि मनुष्य और उसके हृदय के मध्य ईश्वर आ जाता है और यह कि तुम उसी के सामने प्रस्तुत किए जाओगे । (२४) और उस विपत्ति से डरते रहो जो विशेषकर उन्ही पर नही आयेगी जिन्होंने तुममें से सिर उठाया है और जाने रहो कि अल्लाह की मार बडी कठोर है । (२५) और स्मरण करो जब तुम पृथ्वी मे, मक्का मे थोडे-से थे निर्बल समझे जाते थे, इस बात से डरते थे कि मनुष्य तुमको शक्ती से पकड़कर न उडा ले जाय, फिर ईश्वर ने तुमको स्थान दिया और अपनी सहायता से तुम्हारी सहायता की और अच्छी-अच्छी वस्तुए तुम्हें खाने को दी इसलिए कि तुम धन्यवाद दो ।(२६) मुसलमानो ! अल्लाह और रसूल की धरोहर मत मारो न आपस की धरोहर मारो और तुम तो जानते हो । (२७) जाने रहो कि तुम्हारे धन और तुम्हारी दौलत बखेडे है और और अल्लाह के यहाँ बडा परिणाम है । (२८) (रुकू ३)

मुसलमानो ! यदि तुम ईश्वर से डरते रहोगे तो वह तुम्हारे लिए निर्णय कर देगा और तुम्हारे पाप तुमसे दूर कर देगा और तुमको क्षमा करेगा और अल्लाह बडा दयालु है । (२९) जब काफिर तुम पर धोखा करते थे कि तुमको पकडकर रखें या तुमको मार डालें या तुमको देश-निकाला कर दे और काफिर चाल करते थे और अल्लाह भी चाल करता था और ईश्वर सब चाल चलने वालो से अच्छी चाल चलनेवाला

है। (३०) जब हमारी आयते इन काफिरो को पढकर सुनाई जाती है तो कहते है हमने सुन लिया यदि हम चाहे तो हम भी इसी प्रकार की बाते कह ले, यह तो आगे के मनुष्यो की कहानियाँ है। (३१) जब काफिर कहने लगे कि ऐ अल्लाह यदि तेरी ओर से यही सच है तो हम पर नभ से पत्थर बरसा या हम पर कडा दण्ड डाल। (३२) ईश्वर ऐसा नही है कि तुम इनमे रहो और वह इनको दण्ड दे और अल्लाह ऐसा नही है कि मनुष्य क्षमा माँगे और वह इनको दण्ड दे। (३३) क्योकर अल्लाह उन्हे दण्ड न देगा जबकि वह मसजिद अर्थात काबा के घर से मनुष्यो को रोकते है। यद्यपि वह उसके अधिकारी नही उसके अधिकारी तो सयमी है परन्तु इनमे के बहुतेरे नही समझते। (३४) काबा के घर के पास सीटियाँ और तालियाँ बजाने के अतिरिक्त उनकी नमाज ही क्या थी तो ऐ काफिर जैसा तुम मना करते रहे हो उसके बदले दण्ड भुगतो। (३५) इसमे सन्देह नही कि यह काफिर अपना धन व्यय करते है कि ईश्वर मार्ग से रोके सो अभी और धन व्यय करेगे फिर वही धन इनके लिए मे दुख का कारण होगा और अन्त मे हार जायेंगे। काफिर नरक की ओर हाँके जायेगे। (३६) जिससे अल्लाह अपवित्र को पवित्र से पृथक करे और अपवित्र को एक दूसरे के ऊपर रखकर उन सबका ढेर लगाए फिर उस ढेर को नरक मे झोंक दे, यही मनुष्य है जो हानि मे रहे। (३७) (रुकू ४)

काफिरो से कहो कि यदि मान जायेंगे तो उनके पिछले अपराध क्षमा कर दिये जायेंग और यदि फिर उत्पात करेंगे तो अगले मनुष्यो की चाल पड चुकी है जैसा उनके साथ हुआ है इनके साथ भी होगा। (३८) काफिरो से लडते रहो यहाँ तक कि उत्पात न रहे और सब ईश्वर ही का धर्म हो जाय। बस यदि मान जावे तो जो कुछ यह करेगे अल्लाह उसको देख रहा है। (३९) यदि सिर उठावे तो तुम समझते रहो कि अल्लाह तुम्हारा सहायक और अच्छा सहायक है। (४०)

दसवाँ पारा (वालमू)

और जान रक्खो कि जो वस्तु तुम लूटकर लाओ उसका पाँचवाँ भाग ईश्वर का और पैगम्बर का और पैगम्बर के सम्बन्धियो का अनाथो का और निर्धन और यात्रियो का यदि तुम ईश्वर का और उस अदृश्य सहायक का विश्वास रखते हो जो हमने अपने सेवक पर निर्णय के दिन उतारी थी जिस दिन कि मुसलमानो और काफिरो के दो लश्कर एक दूसरे से गुथ गये थे और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर शक्तिशाली है। (४१) यह वह समय था कि तुम मुसलमान युद्ध भूमि के उस सिरे पर थे और काफिर दूसरे सिरे पर और काफला नदी के किनारे तुमसे नीचे की ओर को उतर गया था, यदि तुमने आपस म युद्ध का ठहराव किया होता तो अवश्य प्रतिज्ञा भग करनी पडती। परन्तु ईश्वर को जो कुछ करना स्वीकार था उसने पूरा कर दिखलाया जिससे मर जाये जो सूझकर मरे और जो जीवे तो सूझकर जीवे और अल्लाह सुनता और जानता है। (४२) ऐ पैगम्बर, उसी समय की घटना यह भी है जबकि ईश्वर ने तुमको थोड़े काफिर दिखलाये और यदि उन्हे तुमको बहुत कर दिखाता तो तुम अवश्य साहस छोड दते और युद्ध के विषय मे भी अवश्य आपस मे झगडने लगते। परन्तु ईश्वर ने बचाया निस्सन्देह वह हार्दिक विचारो से जानकार है। (४३) जब तुम एक दूसरे से लड मरे काफिरो को तुमने मुसलमानो की आंखो मे थोडा कर दिखलाया और काफिरो की आखो मे तुमने मुसलमानो को बहुत कर दिखाया जिससे ईश्वर को जो कुछ करना स्वीकार था पूरा कर दिखाये और अन्तत सब कामो का सहारा अल्लाह ही पर जाकर ठहरता है। (४४) (रुकू ५)

मुसलमानो ! जब किसी सेना से तुम्हारी मुठभेड हो जाया कर तो जमे रहो और अल्लाह को खूब स्मरण करो सम्भवत तुम लक्ष्य प्राप्त करो। (४५) अल्लाह और पैगम्बर की आज्ञा मानो और

आपस मे झगडा न करो नही तो साहस छोड दोगे और तुम्हारी हवा उखड जायगी और ठहरे रहो और अल्लाह ठहरने वालो का साथी है। (४६) उन काफिरो जैसे न बनो जो अभिमान के मारे औरो को दिखाने के लिए अपने घरो से निकल खडे हुए और ईश्वर को मार्ग से रोकते थे और जो कुछ भी यह करते हैं अल्लाह के वश मे है। (४७) जब राक्षस ने उन काफिरो के कर्म उनको अच्छे कर दिखलाय और कहा आज मनुष्यो मे कोई ऐसा नही जो तुम को जीत सके और मैं तुम्हारा सहायक हू फिर जब दोनो सेनाए आमने-सामने आई वह अपने उल्टे पॉव हटा और कहने लगा कि मुझको तुमसे कोई सम्बन्ध नही, मैं वह वस्तु देख रहा हू जो तुमको सूझ पडती, मैं तो अल्लाह से डरता हू और अल्लाह की मार बडी कठोर है। (४८) (रुकू ६)

जब मुनाफिको और मनुष्यो के हृदय मे अस्वीकृति की बीमारी थी कहते थे मुसलमान घमण्डी है और जो ईश्वर पर भरोसा रक्खेगा तो अल्लाह प्रबल और चमत्कार वाला है। (४६) और ऐ पैगम्बर तुम देखोगे जबकि देवदूत काफिरो की जान निकालते हैं इनके मुखो गुन्धियो पर मारते जाते है और कहते जाते है कि देखो नरक के दण्ड को भोगो। (५०) यह तुम्हारे उन बुरे कामो का बदला है जो तुमने अपने हाथो पहले से भेजे हैं और इसलिए कि ईश्वर तो सेवको पर किसी प्रकार का अत्याचार नही करता। (५१) जैसी गति फिरऔन की जाति और उनके अगलो की। कि उन्होने ईश्वर की आयतो से मना किया तो ईश्वर ने उनके अपराधो के बदले उनको धर पकडा अल्लाह प्रबल है उसकी मार बडी कठोर है। (५२) यह इसलिए कि ईश्वर ने जो पदार्थ किसी जाति को दिये हो जब तक कि वह आप ही न बदले जो उनके जी मे है ईश्वर की आदत नही कि उसमे कुछ हेर-फेर करे और अल्लाह सुनता और जानता है। (५३) जैसी गति फिरऔन और उन मनुष्यो की हुई जो उनसे पहिले थे कि उन्होने अपने पालनकर्ता की आयतो को झुठलाया तो हमने उनके पापो के

बदले मार डाला और फिरऔन के मनुष्यों को डुबो दिया और वह अन्यायी पशु थे वैसे ही इनकी गति होगी। (५४) अल्लाह के निकट सबसे बुरा वह है जो अस्वीकार करते हैं फिर नही मानते। (५५) जिससे तुमने प्रण किया। उस अपने प्रण को प्रत्येक बार तोड़ते हो और नही डरते। (५६) सो यदि तुम उनको युद्ध मे पाओ तो उन पर ऐसा जोर डालो कि जो मनुष्य उनकी सहायता पर है इनको भागते देखकर उनको भी भागना हो पडे सम्भवत: यह लोग सीख लें। (५७) और यदि तुमको किसी जाति की ओर से दगा का सन्देह हो तो समानता का ध्यान रखकर उन्ही की ओर फेंक मारो, अल्लाह धोखेबाजो को नही चाहता। (५८) (रुकू ७)

काफिरो यह न समझे कि हमारे वश से निकल गये वह कदापि हरा नही सकते। (५९) मुसलमानो, सैनिकत्व की शक्ति से और घोडो के बाँधे रखने से जहाँ तक तुमसे हो सके काफिरो के सामने के लिए साज व सामान इकट्ठा किये रहो कि ऐसा करने से अल्लाह के शत्रुओ पर और अपने शत्रुओं पर अपनी धाक बैठाये रक्खोगे और उनके अतिरिक्त दूसरो पर भी जिनको तुम नही जानते अल्लाह उनसे जानकार है और ईश्वर के मार्ग मे जो कुछ भी व्यय करोगे वह तुमको पूरा-पूरा भर दिया जायगा। (६०) ऐ पैगम्बर यदि यह मनुष्य सन्धि की ओर झुकें तो तुम भी उसकी ओर झुको और अल्लाह पर भरोसा रक्खो क्योकि वही सुनता-जानता है। (६१) यदि उनकी इच्छा तुमसे छल करने की होगी तो अल्लाह तुमको पर्याप्त है वही सबसे शक्तिशाली है। जिसने अपनी सहायता का और मुसलमानो की तुमको शक्ति दी। (६२) और मुसलमानो के हृदयो मे आपस मे प्रेम उत्पन्न कर दिया। यदि तुम पृथ्वी पर के सारे कोष भी व्यय कर डालते तो भी उनके हृदय में प्रेम न उत्पन्न न कर सके परन्तु अल्लाह ने उन मनुष्यो मे प्रेम उत्पन्न कर दिया वह प्रबल चमत्कार वाला। (६३) ऐ पैगम्बर ! अल्लाह और मुसलमान जो तुम्हारे आज्ञाकारी हैं तुमको पर्याप्त है। (६४) (रुकू ८)

ऐ पैगम्बर ! मुसमलानो को लडने पर उत्तेजित करो कि यदि तुम मे से जमे रहने वाले बीस भी होगे तो दो सौ पर अधिक शक्तिशाली बैठेगे यदि तुम मे से सौ होगे तो सहस्र काफिरो पर अधिक शक्तिशाली बैठेगे क्योंकि यह ऐसे मनुष्य हैं जो समझते ही नही। (६५) अब ईश्वर ने तुम पर अपनी आज्ञाओ का भार हल्का कर दिया और उसने देखा कि तुममे निर्बलता है तो यदि तुममे से जमे रहने वाले सौ होगे दो सौ पर अधिक शक्तिशाली रहेगे और यदि तुममे मे सहस्र होगे ईश्वर के आज्ञा से वह दो सहस्र पर अधिक शक्तिशाली बैठेगे। अल्लाह उन मनुष्यो का साथी भी है जो जमे हैं। (६६) पैगम्बर जब तक देश में अच्छी प्रकार मारधाड न लें उनके पास बन्दियो का रहना उचित नही। तुम तो ससार के धन-धान्य चाहने वाले हो और अल्लाह प्रबल चमत्कार वाला है। (६७) यदि ईश्वर के यहाँ से आज्ञा लिखित पहिले से न हो चुकी होती तो जो कुछ तुमने लिया है* उसमे अवश्य तुमको बुरा ही दण्ड मिलता। (६८) तो जो कुछ तुमको लूट से हाथ लगा है उसको पाकर समझकर खाओ और अल्लाह से डरते अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है। (६९) (रुकू ९)

ऐ पैगम्बर ! वे बन्दी जो तुम मुसलमानो के अधिकार मे हैं उनको समझा दो कि यदि अल्लाह देखेगा कि तुम्हारे हृदय मे भलाई है तो जो तुमसे छीना गया है उससे अच्छा तुमको देगा और तुम्हारे अपराध भी क्षमा करेगा और अल्लाह क्षम्य तथा कृपालु है। (७०) और ऐ पैगम्बर यदि यह मनुष्य तुम्हारे साथ छल करना चाहेंगे तो पहिले भी अल्लाह से छल कर चुके हैं तो उसने इनको बन्दी करा दिया और

---

* बद्र की लडाई मे बहुत-से काफिरों को मुसलमानो ने पकड़ लिया था। उनको फिदया कुछ रुपया या माल लेकर छोड़ दिया था। (जो कुछ) का अर्थ है वही धन या माल जिसके बदले कैदियो को छोड दिया गया था।

अल्लाह जानकार और चमत्कार वाला है। (७१) जो लोग विश्वास लाये और उन्होंने देश त्याग किया और अल्लाह के मार्ग में अपनी तन-धन से प्रयत्न किया और जिन मनुष्यों ने स्थान दिया और सहायता की यही मनुष्य एक के स्वामी एक और जो मनुष्य विश्वास तो ले आये और देश त्याग नहीं किया तो तुम मुसलमानों को उनके स्वामी होने से कुछ सम्बन्ध नहीं जब तक देश त्याग करके तुममें न आ मिले। हाँ, यदि धर्म के विषय में तुमसे सहायता चाहे तो तुमको उनकी सहायता करनी आवश्यक है, परन्तु उस जाति की बराबरी में नहीं कि तुममें और उनमें प्रण हो और जो कुछ भी तुम करते हो अल्लाह उसको देख रहा है। (७२) और काफिर भी आपस में मित्र है यदि ऐसा न करोगे तो देश में उत्पात फैल जायगा और देश में बड़ा उत्पात होगा। (७३) और जो विश्वास लाये उन्होंने मुहाजरीन देश त्याग किया और अल्लाह के मार्ग में प्रयत्न किया और जिन मनुष्यों ने स्थान दिया और सहायता की, यही पक्के मुसलमान हैं। इनके लिए क्षमा और मान की जीविका है। (७४) और जो मनुष्य बाद को विश्वास लाये और उन्होंने देश त्याग किया और तुम मुसलमानों के साथ होकर धर्म-युद्ध किया तो वह तुम्हीं में सम्मिलित है और सम्बन्धी अल्लाह की आज्ञा के अनुसार अनजान की निस्बत अधिक अधिकारी हैं। अल्लाह प्रत्येक वस्तु का ज्ञाता है। (७५) (रुकू १०)



सूरे तौबा*

मदीने में अवतरित हुई इसमें १२९ आयतें और १६ रुकू हैं

जिन मुशरिकों के साथ तुमने प्रण कर रक्खा था अल्लाह और उसके पैगम्बर की ओर से उनको स्पष्ट उत्तर** है। (१) तो ऐ मुशरिको शान्ति के चार महीने जीकाज, जिलहिज्ज, मुहर्रम और रजब देश मे चलो-फिरो और जाने रहो कि तुम अल्लाह को हरा नही सकोगे और अल्लाह काफिरो को नरक देने वाला है। (२) और बडे हज्ज के दिन अल्लाह और उसके पैगम्बर की ओर से मनुष्यो को सूचना दी जाती है कि अल्लाह और उसका पैगम्बर मुशरिको से पृथक है। बस यदि तुम क्षमायाचना करो तो यह तुम्हारे लिये भला है और यदि फिरे रहो तो जान रक्खो कि तुम अल्लाह को हरा नही सकोगे और काफिरो को दुखदाई दण्ड का शुभसवाद सुना दो। (३) हाँ मशरिको मे से जिनके साथ तुमने प्रण कर रक्खा था फिर उन्होने तुम्हारे साथ किसी प्रकार की कमी नही की और न तुम्हारे सामने किसी की सहायता की। वह पृथक हैं तो उनके साथ जो प्रण है उसे उस समय तक जो उनके साथ ठहरी थी पूरा करो क्योंकि अल्लाह उन मनुष्यो को जो बचते हैं उन्हें वह चाहता है। (४) फिर जब

---

* इस सूरत के आरम्भ में ईश्वर ने बिस्मिल्लाह का उच्चारण नही भेजा, क्योंकि ये आयतें उस समय उतरी हैं जब मुशरिकों ने मुसलमानो के साथ किया हुआ समझौता तोड डाला था और इसलिए ईश्वर उनसे बहुत रुष्ट था।

** यानी मुशरिको ने अपना प्रण तोडा तो मुसलमान भी उस समझौते का पालन नहीं करेंगे। यह हुदैबिया की सधि की ओर इशारा है।

मान के महीने निकल जावें तो मुशरिकों को जहां पाओ बध करो और उनको बन्दी करो । उनको घेर लो और हर घात के स्थान उनकी ताक मे बैठो, फिर यदि वह क्षमा सूचना करें और नमाज पढ़ें और दान करें तो उनका मार्ग छोड़ दो । अल्लाह क्षमा करनेवाला कृपालु है । (५) और ऐ पैगम्बर मुशरिकों मे से यदि कोई मनुष्य तुमसे शरण माँगे तो शरण दो । यहा तक कि वह ईश्वर का शब्द सुन ले फिर उसको उसके सुख के स्थान पर वापस पहुंचा दो इस कारण से कि यह मनुष्य धानकार नहीं । (६) (रुकू १)

अल्लाह और उसके पैगम्बर के निकट मुशरिको का प्रण क्योकर स्थिर रह सकता है जबकि उन्होंने उसको तोड़कर रख दिया है। परन्तु जिन मनुष्यों के साथ तुमने मसजिद पाप के निकट प्रण हुदेबिया की सन्धी की थी, तो जबतक वह तुममें सीधे रहें तुम भी उनसे सीधे रहो क्योकि अल्लाह उन मनुष्यों को जो बचते हैं पसन्द करता है । (७) क्यो कर प्रण रह सकता है यदि तुमसे जीत जावें तो तुम्हारे पक्ष मे सम्बन्ध और प्रण की नम्रता न करेंगे—अपने मु ह को बात से प्रसन्न करते हैं और उनके हृदय नहीं मानते और उनमे बहुत अवज्ञाकारी हैं । (८) यह मनुष्य ईश्वर की आयतों के बदले मे थोडा सा लाभ पाकर ईश्वर के मार्ग से रोकने लगते हैं । यह जो कर रहे हैं बुरे काम हैं । (९) किसी मुसलमान के विषय में न तो सम्बन्ध का विचार रखते हैं और न प्रण का और यही मनुष्य असीमितता पर हैं (१०) फिर यदि यह मनुष्य क्षमायाचना करें और नमाज पढ़ें और दान दें तो तुम्हारे धर्मी भाई और जो मनुष्य समझदार हैं उनके लिए हम अपनी आयतो को खोल कर वर्णन करते हैं । (११) और यदि यह मनुष्य प्रण किये पीछे अपनी कसमो को तोड डालें और तुम्हारे धर्म मे आक्षेप करें तो तुम कुफ्र के अगुओ से लडो, उनकी कसमे कुछ नही, सम्भवत. यह मान जावें । (१२) तुम इन मनुष्यो से क्यो न लड़ो जिन्होने अपनी कसमों को तोड़ डाला और पैगम्बर के निकाल

देने का विचार किया और तुमसे छेड़खानी भी प्रथम इन्होंने ही आरम्भ की तुम इन मनुष्यों से डरते हो। बस यदि तुम विश्वास रखते हो तो तुमको अल्लाह से अधिक डरना चाहिए। (१३) इन मनुष्यों से लड़ो ईश्वर तुम्हारे ही हाथों इनको दण्ड देगा और इनकी अपकीर्ति करेगा और इन पर तुमको विजय देगा और मुसलमानों के हृदय का कोप ठण्डा करेगा। (१४) और इनके हृदय में जो कोप है उसको भी दूर करेगा और अल्लाह जिसकी चाहे क्षमा स्वीकार कर ले और अल्लाह ज्ञाता चमत्कारवाला है। (१५) क्या तुमने ऐसा समझ रक्खा है कि छूट जाओगे और अभी-अभी अल्लाह ने उन मनुष्यों को देखा तक नहीं जो तुममें से प्रयत्न करते हैं और अल्लाह और उसके पैगम्बर और मुसलमानों को छोड़ कर किसी को अपना मित्र नहीं बनाते। जो कुछ भी तुम कर रहे हो अल्लाह को उसकी सूचना है। (१६) (रुकू २)

मुशरिकों को कोई अधिकार नहीं कि अल्लाह की मसजिद आबाद रक्खें और अपने ऊपर कुफ्र को मानते जायें। यही मनुष्य हैं जिनका किया-धरा सब निरर्थक हुआ और यही मनुष्य सदैव नरक में रहने वाले हैं। (१७) अल्लाह की मसजिद को वही आबाद रखता है जो अल्लाह और प्रलय पर विश्वास लाता है और नमाज़ पढ़ता और दान देता रहा है और जिस ने ईश्वर के अतिरिक्त किसी का भय न माना तो ऐसे मनुष्यों पर आशा की जा सकती है कि ये शिक्षा पाने वालों में होंगे। (१८) क्या तुमने हाजियों* के पानी मिलाने और माननीय मसजिद आबाद रखने को उस व्यक्ति के कामों जैसा समझ लिया है जो अल्लाह और प्रलय पर विश्वास लाता और अल्लाह के मार्ग में युद्ध करता है। अल्लाह के निकट तो यह मनुष्य एक दूसरे के

---

* हज्ज यात्रा करने वाला।

समान नहीं और अल्लाह अत्याचारियों को सीधा मार्ग नही दिखलाया करता। (१९) जो मनुष्य विश्वास लाये और उन्होने देश त्याग किया और अपने जान व धन से अल्लाह के मार्ग में युद्ध किये,अल्लाह के यहाँ पदों में कहीं बढ़ कर है और यही हैं जो सफल हैं।(२०)इनका पालनकर्ता इनको अपनी कृपा और स्वीकृति और ऐसे उपवनों का मंगल समाचार देता है जिनमें इनको सदैव का आराम मिलेगा। (२१) उन उपवनों मे सदैव रहेंगे अल्लाह के यहाँ बड़ा बदला है। (२२) मुसलमानो! यदि तुम्हारे पिता और तुम्हारे भाई विश्वास के मुकावले मे अविश्वास को भला समझे तो उनको मित्र मत बनाओ और जो तुममे से ऐसे पिता-भाइयो केसाथ मित्रता रखेगा तो यही मनुष्य अन्यायी हैं।(२३) ऐ पैगम्बर! मुसलमानों को समझा दो कि यदि तुम्हारेपिता और तुम्हारे पुत्र और तुम्हारे भाई और तुम्हारी स्त्रियाँ और तुम्हारे कुटुम्बी और धन जो तुमने कमाये हैं और व्यापार जिनके मंदा हो जाने का तुमको सन्देह हो और मकानात जिनको तुम्हारा दिल चाहता है अल्लाह और उसके पैगम्बर और अल्लाह के मार्ग में धर्मयुद्ध करने से तुमको अधिक प्यारे हो तो सन्तोष करो यहाँ तक जो कुछ ईश्वर को करना है वह लाकर उपस्थित करे और अल्लाह उन मनुष्यो को जो सिर उठावें उपदेश नहीं दिया करता। (२४) (रुकू ३)

अल्लाह बहुत-से अवसरों पर तुम्हारी सहायता कर चुका है और विशेषकर हुनैन के युद्ध के दिन जबकि तुम्हारी अधिकता के तुमको घमंडी*कर दिया था तो वह तुम्हारे कुछ भी काम न आती और

*मक्के की विजय के बाद मुसलमानों की संख्या बढ गई थी। जब उनको हवाजिन जाति के चढ़ाई करने के इरादे का पता लगा तो कहने लगे कि उनको मार भगाना क्या मुश्किल है। हम लगभग १६००० हैं और हमारे शत्रु केवल ४ या ५ हजार। खुदा को उनका घमंड बुरा लगा। हवाज़िन ने उन पर ऐसा कड़ा धावा किया कि ७०

पृथ्वी अधिक होने पर भी तुम पर तगी करने लगी। फिर तुम पीठ फेरकर भाग निकले। (२५) फिर अल्लाह ने अपने पैगम्बर पर और मुसलमानो पर अपनी सन्तोष उतारा और ऐसी सेनाएँ भेजी जो तुमको दिखलाई*नही पडती थी और काफिरो को बडी कठोर मार दी और काफिरो का यही दण्ड है। (२६) फिर उसके पश्चात ईश्वर जिसको चाहे क्षमा देगा और अल्लाह क्षमा करनेवाला कृपालु है। (२७) मुसलमानो, मुशरिक तो मलीन हैं तो इस वर्ष के पश्चात माननीय मसजिद के निकट भी न फटकने पायें और यदि तुमको निर्धनता का खटका हो तो ईश्वर चाहेगा तो तुमको अपनी दया से धनवान कर देगा। ईश्वर जानकार चमत्कार वाला है। (२८) पुस्तकवाले जो न ईश्वर को मानते हैं और न प्रलय को और न अल्लाह और उसके पाप की पैगम्बर की हुई वस्तुओं को पाप समझते हैं और न सच्चे धर्म को मानते है,इनसे लडो यहाँ तक कि निर्लज्ज होकर अपने हाथो से** जजिया दे। (२९) (रुकू ४)

यहूद कहते हैं कि उजेर अल्लाह के पुत्र हैं और ईसाई कहते हैं कि मसीह अल्लाह के पुत्र हैं यह उनके मुह का कहना है, उन्ही काफिरो कैसी बाते बनाने लगे जो इनसे पहले हैं, ईश्वर इनको पूछे, किधर को भटके चले जा रहे हैं। (३०) इन मनुष्यो ने अल्लाह को छोडकर अपने विद्वानो और अपने यतियो और मरियम के पुत्र मसीह को ईश्वर

सैनिकों को छोड़कर सब भाग खड़े हुए। अहंकार का यह परिणाम हुआ। बाद मे खुदा की मदद से जीत हुई।

*फरिश्तो की सेना ने हुनैन के युद्ध मे मुसलमानों की, सहायता की, तब उनको विजय प्राप्त हुई। इस लड़ाई मे जितना लूट का माल मुसलमानो के हाथ लगा उतना किसी और लड़ाई मे नहीं लगा।

**जजिया उस कर को कहते हैं जो मुसलमान-शासक अपने खिलाफ मजहब वालो से किया करते थे।

बना खड़ा किया यद्यपि इनको यही आज्ञा दी गई थी कि एक ही ईश्वर की पूजा करते रहना, उसके अतिरिक्त कोई पूजित नहीं, वह उनकी शिर्क से पवित्र है। (३१) चाहते हैं कि ईश्वर के प्रकाश को मुह से बुझा दें और ईश्वर को स्वीकार है कि हर प्रकार पर अपने प्रकाश को पूर्ण करे, काफिरो को भले ही बुरा लगे। (३२) वही है जिसने अपने पैगम्बर को उपदेश और सच्चा धर्म देकर भेजा जिससे उसको सम्पूर्ण धर्म पर विजय दी। मुशरिको को भले ही बुरी लगे। (३३) मुसलमानो! प्राय विद्वान और यती मनुष्यो के धन निरर्थक खाते और ईश्वर के मार्ग से रोकते हैं और जो मनुष्य सोना और चाँदी एकत्रित करते रहते है और उसको ईश्वर के मार्ग मे व्यय नही करते तो उनको दुखदाई दण्ड का शुभसवाद सुना दो। (३४) जबकि उस सोने चादी को नरकाग्नि मे तपाया जायगा फिर उससे उनके माथे और उनकी करवटें और उनकी पीठें चिन्हित की जायेगी और कहा जायगा यह है जो तुमने अपने लिए एकत्रित किया था, लो अपने एकत्रित किए का आनन्द चखो। (३५) जिस दिन ईश्वर ने नभ और पृथ्वी उत्पन्न किये हैं, ईश्वर के यहाँ महीनो की गिनती अल्लाह की पुस्तक मे १२ महीने हैं जिनमे से चार आदरणीय हैं। सीधा मार्ग तो यह है मुसलमानो, इन चार महीने मे अपनी जानो पर अत्याचार न करना लड़ना नही और तुम मुसलमान सब मुशरिको से लडो जैसे वह तुम सबसे लडते है। जाने रहो कि अल्लाह संयमियो का साथी है। (३६) महीनो का हटा देना भी एक अधिक अस्वीकृति है। जिसके कारण से काफिर भटकते रहते हैं, एक वर्ष एक महीने को पुण्य समझ लेते हैं और उसी को दूसरे वर्ष पाप ठहराते हैं। अल्लाह ने जो पाप माने हैं उस गिनती के अनुसार अल्लाह के पाप माने हुए को पुण्य कर लें। इनके बुरे आचरण इनको भले दिखाई देते है और अल्लाह काफिरो को उपदेश नही दिया करता। (३७) (रुकू ५)

मुसलमानो, तुमको क्या हो गया है कि जब तुमसे कहा जाता है कि धर्मयुद्ध के लिए निकलो तो तुम पृथ्वी पर ढेर हो जाते हो,

क्या प्रलय के बदले सांसारिक जीवन पर सन्तोष कर बैठे हो। प्रलय के बदले मे जीवन के सुख बिलकुल नाचीज हैं (३८) यदि तुम न निकलोगे तो ईश्वर तुमको वही दुखदाई मार देगा और तुम्हारे बदले दूसरे मनुष्य लाकर उपस्थित करेगा और तुम उसका कुछ भी नहीं बिगाड सकोगे और प्रत्येक वस्तु पर शक्तिशाली है। (३९) यदि तुम पैगम्बर की सहायता न करोगे तो उसी ने अपने पैगम्बर की सहायता उस समय भी की थी जब काफिरो ने उनको मक्का से निकाल बाहर किया था, जब वह दोनो अबूबकर और मोहम्मद, सौर की कदरा मे छिपे थे उस समय पैगम्बर अपने साथी को समझा रहे थे कि मत डरो अल्लाह हमारे साथ है। फिर अल्लाह ने पैगम्बर पर अपना सतोष उतारा और उनकी ऐसी सेनाओ से सहायता दी जिनको तुम न देख सके और काफिरो की बात नीची रही और अल्लाह ही की बात ऊँची है और अल्लाह प्रवल चमत्कार वाला है। (४०) हल्के और भारी सशस्त्र हो या निशस्त्र तो पैगम्बर के बुलाने पर निकल खडे हुआ करो और अपनी जान व धन से ईश्वर के मार्ग मे युद्ध करो, यदि तुम जानते हो तो यह तुम्हारे पक्ष मे भला है। (४१) यदि प्रत्यक्ष लाभ होता और यात्री भी साधारण सी होती तो तुम्हारे साथ चलते, परन्तु इनको यात्रा दूर प्रतीत हुई और ईश्वर की कसम खा-खाकर कहेगे कि यदि हमसे बन पडता तो हम अवश्य तुम्हारे साथ निकल खडे होते। यह मनुष्य स्वय अपनी जानो को सकट मे डाल रहे हैं और अल्लाह को पता है कि यह मनुष्य झूठे हैं। (४२) (रुकू ३)

ऐ मोहम्मद! ईश्वर तुझे क्षमा करे। तूने क्यो उनको इस युद्ध मे न जाने की आज्ञा दी, इससे पहले कि तुझे उज्र मे सच्चे और झूठे प्रतीत हो। (४३) जो मनुष्य ईश्वर का और प्रलय का विश्वास रखते हैं वह तो तुझसे इस बात का अवकाश माँगते कि अपनी जान व धन से धर्मयुद्ध सम्मिलित न हो। और अल्लाह सयमियो को खूब जानता है। (४४) तुमसे छुट्टी चाहनेवाले वही मनुष्य हैं जो अल्लाह

और प्रलय का विश्वास नही रखते। उनके हृदय सन्देह मे पडे हैं तो वह अपने सन्देह मे अचम्भित हैं। (४५) और यदि यह मनुष्य निकलने का विचार रखते होते तो उसके लिए कुछ तैयारी करते परतु अल्लाह को इनका स्थान से हिलना ही ना पसन्द हुआ तो उसने इनको आलसी बना दिया और कह दिया कि जहाँ और बैठे हैं तुम भी उनके साथ बैठे रहो। (४६) यदि यह मनुष्य तुममे निकलते तो तुममे और अधिक खराबियाँ ही डालते और तुममे उत्पात फैलाने के अर्थ से तुम्हारे मध्य दौडे-दौड़े फिरते और तुममें उनके भेदी उपस्थित हैं और अल्लाह अत्याचारियो को जानता है।* (४७) उन्होने पहले भी उत्पात डलवाना चाहा और तुम्हारे लिए तदबीरो की उलट-पलट करते ही रहे यहाँ तक कि सच्ची प्रतिज्ञा आ पहुंची और ईश्वर की आज्ञा पूरी हुई और उनको बुरा लगा। (४८) इनमें वह जो कहता है कि मुझको छुट्टी दे और मुझको विपत्ति मे न डाल। सुनो जो यह मनुष्य विपत्ति मे तो पडे ही हैं और नरक काफिरो को घेरे हुए है। (४९) यदि तुम को कोई भलाई पहुचे तो उनको बुरा लगता है कि हमने पहिले से ही अपना काम करा लिया था और प्रसन्नता से वापिस चले जाते हैं। (५०) कहो कि जो कुछ ईश्वर ने हमारे लिए लिख दिया है वही हमको पहुंचेगा, वही हमारा काम का सम्भालने वाला है और मुसलमानो को चाहिये कि अल्लाह ही पर भरोसा रक्खें। (५१) पैगम्बर! इन मनुष्यो से कहो कि तुम हमारे पक्ष मे दो भलाइयो मे* एकको तो प्रतीक्षा करते रहो और हम पक्ष मे इस बात के प्रतीक्षक हैं कि ईश्वर

---

*यह हाल है उन लोगों का जो दावा मुसलमान होने का करते थे मगर दिल मे मुसलमानो का बुरा चाहते थे। जब इससे कहा जाता था कि लडाई के लिए तैयार हो तो एक न एक बात बना देते थे। इनका सरदार अब्दुल्लाह-बिन-उबैया था।

* विजय या शहादत (धर्म मे शरीर त्याग) के बाद स्वर्ग।

तुम पर अपने यहाँ से कोई दण्ड उतारे या हमारे हाथो से तुम्हें मरवा डाले तो तुम प्रतीक्षा मे रहो हम तुम्हारे साथ प्रतीक्षा मे है। (५२) पैगम्बर इन मनुष्यो से कहो कि तुम हृदयोल्लास से व्यय करो या अप्रसन्नता से, ईश्वर तुमसे स्वीकार नही करेगा क्योकि तुम अवज्ञाकारी हो। (५३) और उनका दिया इसलिए स्वीकार नही होता कि उन्होने अल्लाह और उसके पैगम्बर की आज्ञा नही मानी और नमाज को अनमने से पढते है और बुरे हृदय से व्यय करते हैं। (५४) तू इनके धन और सन्तान से अचम्भा न कर, ईश्वर सासारिक जीवन मे इनको धन और सन्तान के कारण से दण्ड देना चाहता है और वह काफिर ही मरेंगे। (५५) अल्लाह की कसमे खाते हैं कि वह तुममे है यद्यपि वह तुममे नही है अपितु वह डरपोक हैं। (५६) गुफा मे घुस बैठने के स्थान पर कही बचाव पावें तो रस्सी तुडा-तुडाकर दौड पडे। (५७)इनमे से कुछ मनुष्य ऐसे है कि दान मे तुम पर पाप लगाते हैं फिर यदि इनको उसमे से दिया जाय तो प्रसन्न रहते हैं और यदि इनको उसमे से न दिया जाय तो वह तत्क्षण ही बिगड बैठते हैं। (५८) जो ईश्वर ने और उसके पैगम्बर ने इनको दिया था यदि यह उसको प्रसन्नता से ले लेते और कहते कि हमको अल्लाह पर्याप्त है, आगे को अपने काम मे काम मे अल्लाह और पैगम्बर हमको देगा। हम तो अल्लाह ही से लौ लगाये बैठें हैं। (५९) (रुकू ७)

दान का धन साधुओ का भाग है और निर्धनो का और उनका काम करने वालो का जो दान पर है और उन मनुष्यो के लिये जिनके हृदय इस्लाम की ओर लगाना स्वीकार है। सेवको को छुटने और कर्जदारो मे और धर्म युद्ध मे और यात्रियो मे दान के धन का व्यय ठहराया गया है और अल्लाह जानने वाला चमत्कार वाला है। (६०) उनमे मे कुछ ऐसे है जो पैगम्बर को हानि देते और कहते है कि

यह व्यक्ति का बडा कच्चा* है पैगम्बर इन मनुष्यो से कहो वह तुम्हारे लिये भलाई का सुनाने वाला है, वह अल्लाह का विश्वास करता है और मुसलमानो का भी विश्वास रखता है। और जो मनुष्य तुममे से विश्वास लाये है उनके लिये दया है और जो लोग अल्लाह के पैगम्बर को हानि देते है उनको कठोर दण्ड होनी है। (६१) तुम्हारे सामने ईश्वर की कसमे खाते हैं जिससे तुमको प्रसन्न कर ले यद्यपि अल्लाह और उसका पैगम्बर अधिक अधिकार रखते हैं कि यह सच्चे मुसलमान है तो पैगम्बर को प्रसन्न कर। (६२) क्या इन्होने अभी तक इतनी बात नही समझी कि जो अल्लाह और उसके पैगम्बर का विरोध करना है उसके लिए नरकाग्नि है जिसमे वह सदैव रहेगा। यह बडा अपमान है। (६३) मुनाफिक डरते हैं कि ईश्वर की ओर से मुसलमानो पर ऐसी सूरत उतरे कि जो कुछ इनके हृदय मे है मुसलमानो को बता दे। कहो कि हँसे जाओ जिस बात से तुम डर रहे हो ईश्वर वही बात** निकालेगा। (६४) यदि तुम इन मनुष्यो से पूछो तो वह अवश्य यही उत्तर देगे कि हम तो इसी प्रकार बातें-चीतें और हसी-मजाक कर रहे थे। कहो कि तुमको हसी करनी थी तो ईश्वर के ही साथ और उसी की आयतो और उसी के पैगम्बर के साथ। (६५) बातें न बनाओ सच तो यह है कि तुम विश्वास लाये पीछे काफिर हो गये। यदि हम तुम में से एक गुट के अपराध क्षमा भी कर दें तो भी दूसरो को अवश्य दण्ड देंगे। (६६) (रुकू ८)

---

* कुछ मुनाफिक कहते थे कि मुहम्मद साहब से जो कोई हमारे बारे में कुछ कह देता वह उसको सच मान लेते हैं और जब हम आकर कसम खा लेते हैं तो हमको सच्चा समझने लगते हैं। इसका जवाब दिया गया है कि वह तुम्हारी बातो को भली भाँति जानते हैं लेकिन तुम पर दया करते है।

** यानी तुम्हारा झूठ खुल जायेगा।

मुनाफिक पुरुष और मुनाफिक स्त्रियाँ सबकी एक चाल है। बुरे काम की राय दें और भले कामो से मना करें और अपनी मुट्ठियाँ दान से बन्द रखते हैं। इन मनुष्यो ने अल्लाह को भुला दिया तो अल्लाह ने भी इन्हे भुला दिया। कुछ सन्देह नही कि मुनाफिक अहँकारी है। (६७) मुनाफिक पुरुषो और मुनाफिक स्त्रियो और काफिरो के पक्ष मे ईश्वर ने नरकाग्नि का प्रण कर लिया है कि यह मनुष्य सदैव उसमे रहेंगे। यही उनको पर्याप्त है और ईश्वर ने इनको फटकार दिया है और इनके लिए सदैव के लिए दण्ड है। (६८) जैसा उदाहरण तुम से पहिलो का था वह तुमसे बहुत अधिक शक्तिशाली थे और धन और सन्तान भी अधिक रखते थे। तो वह अपने भाग के लाभ उठा चुके सो तुमने भी अपने भाग के लाभ उठाये। जैसे तुमसे पहिलो ने अपने भाग के लाभ उठाये थे और जैसी बाते वह मनुष्य किया करते थे तुम भी वैसी ही बातें करने लगे। इन्ही मनुष्यो का ससार और प्रलय मे करा-धरा निरर्थक हुआ और यही हानि मे रहे। (६९) क्या इनको उन मनुष्यो की सूचना नही मिली जो इनसे पहिले हो चुके है। नूह की जाति और आद और समूद और इब्राहीम की जाति और मादयन के मनुष्य और उल्टी हुई बस्तियो के रहने वाले कि इनके पैगम्बर इनके पास स्पष्ट चमत्कार लेकर आए। सो ईश्वर ने इन पर अत्याचार नही किया परन्तु यह मनुष्य स्वय अपने ऊपर अत्याचार करते थे। (७०) मुसलमान पुरुष और मुसलमान स्त्रियाँ आपस मे मित्र हैं। भले काम करने का उपदेश देते और बुरे काम से रोकते और नमाज पढते और दान देते और अल्लाह और उसके पैगम्बर की आज्ञा पर चलते हैं। यही मनुष्य हैं जिन पर अल्लाह अवश्य दया करेगा। अल्लाह प्रबल चमत्कार वाला है। (७१) धर्म वाले पुरुषो और धर्म वाली स्त्रियों से अल्लाह ने उपवनो का प्रण कर लिया है जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। उनमें सदैव रहेगे और सदा रहने वाले स्वर्ग मे अच्छे मकान है और ईश्वर की बडी प्रसन्नता और बडी सफलता है। (७२) (रकू ९)

ऐ पैगम्बर! काफिरो और मुनाफिकों से धर्म युद्ध करो और उन पर कठोरता करो और उनका ठिकाना नरक है और वही बुरा स्थान है। अल्लाह की सौगन्धें खाते हैं कि हमने नही कहा यद्यपि अवश्य उन्होने अस्वीकृति के शब्द कहे और मुसलमान हुए पीछे काफिर हो गये और उद्दण्डता करना चाहा। (७३) जिन पर उनकी शक्ति नही हुई और यह मनुष्य किस पर विगडे। इसी पर न कि अपनी कृपा से अल्लाह ने और उशके पैगम्बर ने इनको धनवान कर दिया। सो यह मनुष्य यदि अव भी क्षमायाचना करें तो इनके पक्ष में अच्छा होगा और यदि न माने तो अल्लाह इनको संसार तथा नरक मे दुखदाई दण्ड देगा और पृथ्वी पर न कोई इनका सहायक होगा। (७४) इनमे से कुछ मनुष्य ऐसे भी हैं जिन्होने ईश्वर के साथ प्रण किया था कि यदि वह अपनी दया से हमको धन देगा तो हम अवश्य दान किया करेंगे और अवश्य भले काम करने वाले रहेंगे। (७५) फिर जव ईश्वर ने अपनी कृपा से उनको धन दिया जो उसमे कंजूसी करने लगे और मुँह मोड़ करके फिर बैठे। (७६) तो फल यह हुआ कि ईश्वर ने उनके हृदयो मे भेद डाल दिया इसलिए कि उन्होने ईश्वर से प्रतिज्ञा की थी उसको पूरा नही किया और झूठे बोले। (७७) क्या उन्होने इतना भी न समझा कि अल्लाह इनके भेदो को और छुपकर बातें करने को जानता है और यह कि अल्लाह अदृष्ट की बातो से भी खूब भिज्ञ है। (७८) यही तो हैं कि मुसलमानो मे जो मनुष्य प्रसन्नता से पुण्य करते हैं उन पर पाखडी होने का दोप लगाते हैं और जो मनुष्य अपने परीश्रम के अतिरिक्त अधिक शक्ति नही रखते उन पर दोष लगाते हैं। इसलिए उन पर हँसते है। सो अल्लाह इन मुनाफिको पर हसता* है और उनके लिए

---

*मुहम्मद साहव ने खैरात करने का हुक्म दिया तो जिस मुसलमान से जितना हो सका ले आया। अव्वुर्रहमान चार हजार दरम लाये और आनिम केवल ४ सेर जौ। मुनाफिक कहने लगे अव्वुर्रहमान अपनी

दुखदाई दण्ड है। (७९) ऐ पैगम्बर तुम इनके पक्ष मे क्षमा प्रार्थना करो या उनके पक्ष मे न करो, यदि तुम सत्तर वार भी इनके लिए क्षमा माँगो तो भी ईश्वर कदापि इनको क्षमा नही करेगा। यह इनके इस कर्म का दण्ड है कि उन्होने अल्लाह और उसके पैगम्बर के साथ अविश्वास किया और अल्लाह द्रोही मनुष्यो को शिक्षा नहीं दिया करता। (८०) (रुकू १०)

जो मुनाफिक अपनी जिद्द से पीछे छोड दिये गये वह ईश्वर के पैगम्बर के विरुद्ध अपने घरो मे बैठे रहगे से बहुत प्रसन्न हुए और ईश्वर के मार्ग मे अपनी जान और धन से युद्ध करना उनको अनुचित लगा और समझाने लगे कि ग्रीष्म मे घरसे न निकलना ऐ पैगम्बर इन मनुष्यो से कहो कि नरक की अग्नि की उष्णता बहुत कठिन है। हा शोक ! इनको इतनी समझ होती। (८१) तो यह मनुष्य थोडा हँसेंगे और वहुत रोवेंगे और यही उनकी कमाई का परिणाम है। (८२) तो ऐ पैगम्बर यदि ईश्वर तुमको इन मुनाफिको के किसी गुट की ओर लौटाकर ले जाय और निकलने की तुमसे आज्ञा चाहे तो तुम कह देना कि तुम न तो कभी मेरे साथ निकलोगे और न मेरे साथ होकर किसी शत्रु से लडोगे। तुम पहली वार घरो मे बैठ रहो। (८३) ऐ पैगम्बर यदि इनमे से कोई मर जाय तो तुम कदापि उस पर नमाज न पढना और न उसकी कब्र पर खडे होना। उन्होने अल्लाह और उसके पैगम्बर के साथ अविश्वास किया और वह अन्यायी की दशा मे ही मर गये। (८४) और इनके धन और इनकी सतान पर तू अचम्भा न कर। ईश्वर धन और सतान के कारण से इनको ससार मे आनन्द देना चाहता है और जव इनकी जान निकले तो काफिर ही मरेंगे।

अमीरी जताता है और आसिम को देखो लोहू लगा के शहीदों मे नाम करने चले हैं। इस पर ये आयतें उतरी।

(८५) और ऐ पैगम्बर जब कोई सूरत अवतरित की जाती है कि अल्लाह पर विश्वास लाओ और उसके पैगम्बर के साथ युद्ध करो तो इन मे से सामर्थ्यवाले तुमसे आज्ञा मांगने लगे हैं और कहते हैं कि हमको छोड़ जाओ कि बैठने वालो के साथ हम भी घरो मे बैठे रहे। (८६) इनको स्त्रियो के साथ जो पीछे रहा करती हैं पीछे बैठे रहना पसन्द आया और इनके हृदय पर मुहर कर दी गई है यह मनुष्य समझते नहीं हैं। (८७) परन्तु पैगम्बर ने और जो उनके साथ विश्वास लाये हैं अपनी जान और धन से ईश्वर के मार्ग मे युद्ध किया यही मनुष्य हैं जिनके लिए इस लोक तथा परलोक को सर्वगुण है और यही लक्ष पानेवाले हैं (८८) इनके लिए अल्लाह ने स्वर्ग के उपवन तैयार कर रक्खे है जिनके नीचे नहरें वह रही होगी उनमे सदैव रहेगे। यही बडी सफलता है। (८९) (रुकू ११)

ऐ पैगम्बर ! देहातियों मे से बहाना करनेवाले उज्र करते आये जिससे उनको आज्ञा दी जाय। जिन मनुष्यो ने अल्लाह और उसके पैगम्बर से झूठ बोला था वह बैठे रहे ! इनमे से जिन्होने अस्वीकार किया उनको शीघ्र ही कठोर दण्ड मिलेगा। (९०) ऐ पैगम्बर निर्बलो पर कुछ अपराध नही और न रुग्णो पर और न उन मनुष्यो पर जिनको व्यय की शक्ति नही शर्त यह कि अल्लाह और उनके पैगम्बर की भलाई मे लगे रहें। भलाई करने वालो पर कोई दोष नही अल्लाह क्षमा करनेवाला कृपालु है। (९१) उन पर अपराध नही है जो तुम्हारे पास आते हैं कि सवारी दे और तुमने कहा कि मेरे पास कोई वस्तु नही जिस पर सवार कर दूं। यह सुनकर वह लौट गये और व्यय की शक्ति न होने के कारण उनकी आँखो से आँसू बहते थे। (९२) अपराध तो उन्ही पर है जो धन होने पर भी बचना चाहते हैं और स्त्रियो के साथ जो पीछे बैठी रहा करती हैं रहना पसन्द करते हैं और अल्लाह ने उनके हृदय पर मुहर की है वह नही समझते। (९३)

ग्यारहवाँ पारा (यातजिरून)

मुसलमानो जब तुम मुनाफिको के पास वापस जाओगे तो तुम्हारे सामने अड़चन प्रस्तुत करेंगे तो ऐ पैगम्बर ! इनसे कह देना कि बातें न बनाओ, हम किसी प्रकार तुम्हारा विश्वास करने वाले नही । अल्लाह तुम्हारी दशा हमको बता चुका है और अभी तो अल्लाह और उसके पैगम्बर जो तुम्हारे कर्मों को देखेंगे फिर तुम उसकी ओर लौटाये जाओगे जो वर्तमान और भविष्य को जानता है फिर जो कुछ तुम करते रहे हो तुमको बतायेगा । (६४) जब तुम लौटकर उनके पास जाओगे तो यह मनुश्य अवश्य तुम्हारे सामने ईश्वर की कसमे खायेंगे जिससे तुम इनको क्षमा करो । सो इनको जाने दो क्योकि यह अपवित्र हैं और इनका स्थान नरक हैं । यह उनकी कमाई का फल है । (६५) यह तुम्हारे सामने कसमे खायेंगे जिससे तुम इन से प्रसन्न हो जाओ सो यदि तुम इनसे प्रसन्न हो जाओ तो अल्लाह इन अवज्ञाकारी मनुष्यो से प्रसन्न न होगा । (६६) गाँव के मनुष्य अस्वीकृति और भेद मे बडे कठोर हैं । ईश्वर ने जो अपने पैगम्बर पर पुस्तक अवतरित की है उसकी आज्ञाओ को समझने के योग्य नही और अल्लाह ज्ञाता और चमत्कार वाला है । (६७) ग्रामीणो मे से कुछ ऐसे हैं कि उनको जो व्यय करना पडता है उसको दण्ड समझते है और तुम मुसलमानो के भले मे ससार के फेरो के प्रतीक्षक हैं । इन्ही पर समय के बुरे फेर का प्रभाव पडे । अल्लाह सुनता और जानता है (६८) और ग्रामीणो मे से कुछ ऐसे भी है जो अल्लाह का और प्रलय का विश्वास रखते हैं और जो कुछ ईश्वर के मार्ग मे व्यय करते हैं उसमे ईश्वर के पास का और पैगम्बर की प्रार्थनाओ का मार्ग समझते हैं । तो सुन रक्खो वह उनके लिये निकट है । अल्लाह अवश्य उनको अपनी शरण मे ले लेगा । अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है । (६६) रुकू १२)

देशत्यागियो और सहायता करनेवालो में से जो मनुष्य मुसलमानी मत स्वीकार करने मे सबसे पहले अगुआ हुए और वह मनुष्य जो सच्चे हृदय से धर्म मे प्रविष्ट हुए ईश्वर उनसे प्रसन्न है और वह ईश्वर से प्रसन्न हुए और ईश्वर ने उनके लिए उपवन तैयार कर रक्खे हैं जिनके नीचे नहरे बह रही होगी, वे उनमे सदैव रहेगे। यही बडी सफलता है। (१००) तुम्हारे समीप के कुछ ग्रामीणो मे से कपटी हैं, और स्वय मदीने मे रहनेवालो मे से जो भेद पर अडे बैठे हैं ऐ पैगम्बर तुम इनको नही जानते। हम इनको जानते है सो हम इनको दोहरो मार देंगे फिर वडे दण्ड की ओर लौटाये जायेंगे। (१०१) कुछ ऐसे मनुष्य हैं जिन्होने अपने अपराध को मान लिया है और उन्होने कुछ काम भले और कुछ बुरे मिश्रित किये थे आश्चर्य नही कि अल्लाह उनकी क्षमा स्वीकार करे क्योकि अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है। (१०२) ऐ पैगम्बर, यह मनुष्य अपने धन का दान दें तो इनके धन का दान ले लिया करो कि दान के स्वीकार करने से तुम इनको पवित्र करते हो और उनको शुभ आशीर्वाद दो क्योकि तुम्हारी प्रार्थना इनके लिए सतोप है और अल्लाह सुनता-जानता है। (१०३) क्या इन मनुष्यो को इसकी सूचना नही कि अल्लाह अपने सेवको की क्षमा स्वीकार करता है और वही दान लेता और अल्लाह ही वडा क्षमा प्रार्थना स्वीकार करने वाला कृपालु है। (१०४) और ऐ पैगम्बर ! इनको समझा दो कि तुम अपने स्थान पर काम करते रहो सो अभी तो अल्लाह पैगम्बर और मुसलमान तुम्हारे कामो को देखेंगे और अवश्य मरे पीछे तुम उसकी ओर जो दृष्ट और अदृष्ट को जानता है लौटाये जाओगे। फिर जो कुछ तुम करते रहे हो वह वतावेगा। (१०५) कुछ ऐसे मनुष्य है जो ईश्वर की आज्ञा की प्रतीक्षा मे हैं। वह या तो उनको दण्ड देवे या उनकी क्षमा प्रार्थना स्वीकार करे और अल्लाह जानने वाला और चमत्कारवाला है। (१०६) जिन्होने इस अर्थ से एक मसजिद बना खडी की कि हानि पहुचाये और स्वीकार करें और मुसलमानो मे फूट डाले और उन मनुष्यो को शरण दें जो अल्लाह

और उसके पैगम्बर के साथ पहिले लड चुके हैं और पूछा जायगा तो सौगन्धें खाने लगेंगे कि हमने तो भलाई के अतिरिक्त और किसी प्रकार की इच्छा नही की और अल्लाह साक्षी देता है कि ये झूठे हैं। (१०७) अत ऐ पैगम्बर तुम उसमे कभी खडे भी न होना । हां वह मसजिद जिसकी नीव पहले दिन से सयम पर रक्खी गई है वह इस योग्य है कि तुम उसमें खड़े हो। उसमे ऐसे मनुष्य हैं जो पवित्र रहने को पसद करते हैं और अल्लाह पवित्रता से रहने वालो को पसद करता है। (१०८) भला जो मनुष्य ईश्वर के भय से और उसकी प्रसन्ता पर अपने भवन की नीव रक्खे । फिर वह उसको नरक की अग्नि में ले गिरे और ईश्वर अत्याचारियो को उपदेश नही दिया करता (१०९) यह भवन जो इन मनुष्यों ने बनाई हैं इसके कारण से इन मनुष्यो के हृदय मे सदैव संदेह रहेगा यहा तक कि इनके हृदय के टुकडे टुकडे हो जावें । अल्लाह विजयी और बड़ा चमत्कार वाला है। (११०) (रुकू १३)

अल्लाह ने मुसलमानों से उनकी जानें और उनका धन क्रय किए हैं कि उनके बदले उनको बैकुण्ठ देगा जिससे अल्लाह के मार्ग मे लड़ें और मारें और मरें, यह ईश्वर की दृढ प्रतिज्ञा है जिसका पूरा करना उसने अपने ऊपर आवश्यक कर लिया है और यह प्रण तौरात, इंजील और कुरान मे है और ईश्वर से बढकर अपने प्रण का पूरा और कौन हो सकता है। तो अपने सौदे का जो तुमने ईश्वर के साथ किया है आनन्द मनाओ और यही बडी सफलता है (१११) क्षमाएँ माँगने वाले, प्रार्थना करनेवाले, बडाई करनेवाले, यात्रा करने वाले, रुकू करने वाले, वन्दना करने वाले, अच्छे काम की राय देने वाले, बुरे काम से मना करने वाले और अल्लाह ने जो मर्यादा बाँध दी हैं उनको दृष्टि मे रखनेवाले यही मोमिन हैं और ऐ पैगम्बर ऐसे मुसलमानो को शुभ-सवाद सुना दो। (११२) जब पैगम्बर और मुसलमानो को प्रतीत हो गया कि मुशरिकीन नारकीय होंगे तो उनको यह भला नही लगता कि

उनके लिए क्षमा चाहें। चाहे वह सम्बन्धी भी क्यों न हो। (११३) इब्राहीम ने अपने पिता के लिए क्षमा की प्रार्थना की थी सो एक प्रण से जो इब्राहीम ने अपने पिता से कर लिया था। फिर जब उनको प्रतीत हो गया कि यह ईश्वर का शत्रु है तो पिता से सम्बन्ध छोड दिया। इब्राहीम बड़े कोमल हृदय और सहनशील थे। (११४) और अल्लाह की शान से बाहर है कि एक जाति को शिक्षा दिये पीछे मार्ग से उन्हें भटकाये जब तक उनको वह वस्तुएँ न बतलावें जिनसे वह बचते रहें। अल्लाह प्रत्येक वस्तु से जानकार है। (११५) और नभ और पृथ्वी का राज्य अल्लाह ही का है वही जीवन देता और मारता है, अल्लाह के अतिरिक्त तुम्हारा कोई सहायक नही। (११६) ईश्वर ने पैगम्बर पर कृपा की और देशत्यागी और सहायता करने वालों पर जिन्होंने तंगी के समय में पैगम्बर का साथ दिया जबकि इनमे से कुछ के हृदय डगमगा चले थे, फिर उसी ने इन पर अपनी कृपा की। इसमें सन्देह नही कि ईश्वर इन सब पर अत्यन्त दया रखता है। (११७) उन तीनों * पर जो पीछे रखे गये थे यहाँ तक कि जब पृथ्वी चौड़ी होने पर भी तंगी करने लगी और वह अपने जीवन से भी तंग आ गये थे और समझ लिया कि ईश्वर के अतिरिक्त और कही शरण नहीं फिर ईश्वर ने उनकी क्षमा स्वीकार कर ली जिससे वे बच्चे रहें। निस्सन्देह अल्लाह बड़ा क्षमा प्रार्थना स्वीकार करनेवाला कृपालु है। (११८) (रुकू १४)

---

*तीन मुसलमान तबूक की लड़ाई में भाग नहीं ले सके थे। उन पर कुछ ऐसी आपत्ति पड़ी कि वे अपनी मृत्यु को अपने जीवन की अपेक्षा अधिक अच्छा समझने लगे। अन्त मे उन्होंने क्षमा चाही। उनके नाम यह हैं (१) मुरारा-बिन-रबी (२) काब-बिन-मालिक और (३) हिलाल-बिन-उनया।

मुसलमानो ! ईश्वर से डरो, सच बोलनेवालो के साथ रहो। (११९) मदीनावाले और उनके समीप के ग्रामीणो को उचित न था कि ईश्वर के पैगम्बर से पीछे रह जावें और न यह कि पैगम्बर की जान की चिन्ता न करके अपनी जानो की चिन्ता में पड़ जावें । यह इसलिए उनको ईश्वर के मार्ग मे प्यास और परिश्रम और भूख का कष्ट पहुचता हो और जिन स्थानो मे काफिरो को इनका चलना बुरा लगता है वहाँ चलते हैं और शत्रुओ से जो कुछ मिल जाता है तो प्रत्येक काम के बदले इनका कर्म अच्छा लिख जाता है । अल्लाह सच्चे हृदयवालो के परिणाम को निरर्थक नही होने देता । (१२०) थोडा या बहुत जो कुछ व्यय करते हैं और जो मैदान उनको तै करने पडते हैं यह सब इनके नाम लिख जाता है जिससे अल्लाह इनको इनके कर्मों का अच्छे से अच्छा बदला देवें । (१२१) और उचित नही कि मुसलमान सब के सब निकल खड़े हो ऐसा क्यो न किया कि उनका प्रत्येक समाज मे से कुछ मनुष्य निकलते कि धर्म की समझ उत्पन्न करते और जब अपनी जाति मे वापस जाते तो उनको डराते जिससे वह मनुष्य बचें । (१२२) (रुकू १५)

मुसलमानों । अपने समीप के काफिरो से लड़ो और चाहिए कि वह तुमसे दृढता अनुभव करें और जाने रहो कि अल्लाह उन मनुष्यों का साथी है जो बचते हैं। (१२३) जिस समय कोई सूरत अवतरित की जाती है तो कपटियो से मनुष्य पूछने लगते हैं कि भला इससे तुम में से जिनका धर्म बढा दिया, सो यह जो धर्मवाले हैं उसने उनका तो धर्म बढ़ाया और यह प्रसन्नता मनाते हैं। (१२४) और जिनके हृदय मे कपट का रोग है तो इससे उनकी अपवित्रता और बढ़ी और यह मनुष्य काफिर ही मरेंगे। (१२५) क्या नही देखते कि यह मनुष्य प्रत्येक वर्ष एक या दो बार विपत्ति मे पड़ते रहते हैं इस पर भी न तो क्षमा ही माँगते हैं और न शिक्षा ही मानते हैं । (१२६) जब कोई

सूरत अवतरित की जाती है तो उनमें से एक दूसरे की ओर देखने लगते हैं और कहते हैं कि तुमको कोई देखता *है या नही फिर चल देते हैं। अल्लाह ने इनके हृदय को फेर दिया इसलिए वह बिलकुल नहीं समझते। (१२७) तुम्हारे पास तुम्ही मे के एक पैगम्बर आए हैं तुम्हारा दुःख इनको कठिन प्रतीत होता है। वह तुम्हारी भलाई चाहता है और धर्मवालों पर प्रेम रखनेवाला और कृपालु हैं। (१२८) इस पर भी यह मनुष्य सिर उठायें तो कह दो कि मुझको तो अल्लाह पर्याप्त है, उसके अतिरिक्त कोई पूजित नही है, उसी पर भरोसा रखता हूं और अर्श जो बड़ा हैं उसका भी वही स्वामी है। (१२९) (रुकू १६)



सूरे यूनिस

मक्के में अवतरित हुई इसमें १०९ आयतें और ११ रुकू है

आरम्भ अल्लाह के नाम से जो दयावान तथा कृपालु है। अलिफ लाम, रा। यह ऐसी पुस्तक की आयतें हैं जिससे वैदिक की बातें हैं। (१) क्या मक्कावालो को इस बात का अचरज हुआ कि हमने उन्हीं मे के एक व्यक्ति की ओर इस बात का सन्देश भेजा कि मनुष्यो को डराओ और धर्मवालों को शुभसंवाद सुनाओ कि उनके पालनकर्ता

---

*मुनाफिकों को हर समय भय बना रहता था कि कोई मुसलमान उनको ताड़ न जाय, इसलिए जब कोई आयत उनके विषय में उतरती थी तो वह एक दूसरे को देखने लगते और तुरन्त भाग खड़े होते।

के पास उनका बडा आदर है। काफिर कहने लगे हो यह तो स्पष्टतया जादूगर है। (२) तुम्हारा पालनकर्ता वही अल्लाह है जिसने ६ दिन मे नभ और पृथ्वी को बनाया फिर सिंगासन पर जा विराजा। प्रत्येक काम का प्रबन्ध कर रहा है कोई सिफारिशी नहीं परन्तु उसकी आज्ञा हुए पीछे। यही अल्लाह जो तुम्हारा पालनकर्ता है तो उसी की पूजा करो, क्या तुम विचार नही करते। (३) उसी की ओर तुम सबको लौटकर जाना अल्लाह का प्रण सच्चा है। उसी ने प्रथमबार संसार को बनाया है फिर उनको दुबारा जीवित करेगा जिससे जो मनुष्य विश्वास लाये और उन्होंने अच्छे काम किए, न्याय के साथ उनको बदला दे। काफिरों के लिए उनकी अस्वीकृति दण्ड में पीने को उबलता पानी और दुखदाई दण्ड होगी। (४) वही जिसने सूर्य को प्रकाशमय बनाया और चाँद को प्रकाशित किया और उनका मार्ग निश्चित किया जिससे तुम वर्षों को गिनती और हिसाब पता कर लिया करो। यह सब ईश्वर ने विचार से बनाया है। जो मनुष्य समझ रखते हैं उनके लिए पते निर्णय करता है। (५) जो मनुष्य डर मानते हैं उनके लिए रात्री और दिन के आने-जाने मे और जो कुछ ईश्वर ने नभ और पृथ्वी में उत्पन्न किया हैं निशानियाँ हैं। (६) जिन मनुष्यो को हमसे मिलने की आशा नही और ससार के जीवन से प्रसन्न हैं और विश्वास के साथ जीवन व्यतीत करते हैं और जो मनुष्य हमारी निशानियो से अचेत हैं (७) यही मनुष्य हैं जिनके कर्मों के बदले उनका स्थान नरक मे होगा। (८) जो मनुष्य विश्वास लाये और उन्होंने भले काम किये उनके विश्वास की बुद्धि से उनको उनका पालनकर्ता मार्ग दिखा देगा कि आराम के उपवनो मे रहेंगे और उनके नीचे नहरें बहती होगी। (९) उनमे पुकार उठेंगे ऐ ईश्वर तू पावन है और उनमे उनकी प्रार्थनाए सुख का प्रणाम होगा। उनकी अन्तिम प्रार्थना होगी, "अल्हम्द लिल्लाह रब्बुल आलमीन" अर्थात हर प्रकार की प्रशसा के योग्य है जो समस्त ससार का पालनकर्ता है। (१०) (रुकू १)

जिस प्रकार मनुष्य लाभों के लिए शीघ्रता किया करते हैं यदि भी उनको शीघ्रता से हानि पहुंचा दिया करता तो उनको मृत्यु आ चुकी होतो और हम उन पर मनुष्यो को जिन्हें हमारे पास आने की आशा नही छोड़े रखते हैं कि अपनी चंचलता में पड़े भटका करें। (११) जब मनुष्य को कष्ट पहुंचता है तो पड़ा या बैठा या खड़ा हमको पुकारता है फिर जब हम उनके कष्ट को उससे दूर कर देते हैं तो ऐसे चल देता है कि मानो उस कष्ट के लिए जो उसको पहुच रही थी हमको पुकारा ही न था। जो मनुष्य सभा से पग बाहर रखते हैं उनको उनके काम इसी प्रकार अच्छे कर दिखाये गये हैं। (१२) और तुमसे पहले कितने समाज हुए। जब उन्होंने उद्दण्डता पर कमर बाँधी हमने उनको मार डाला। उनके पैगम्बर उनके पास स्पष्ट चमत्कार लेकर और उनको विश्वास लाना प्राप्त न हुआ। पापियों को हम इस प्रकार दण्ड दिया करते हैं। (१३) फिर उनके पीछे हमने पृथ्वी में तुमको उत्तराधिकारी बनाया जिससे देखे तुम कैसे काम करते हो। (१४) जब हमारी स्पष्ट आज्ञाए इन को पढ़कर सुनाई जाती हैं तो जिन मनुष्यों को हमारे पास आने की आशा नही वह पूछते हैं कि इसके अतिरिक्त और कोई कुरान लाओ। कहो कि मेरी तो ऐसी सामर्थ्य नही कि अपनी ओर से उसको बदलूं। मेरी ओर जो ईश्वरीय सन्देश आता है मैं तो उसी पर चलता हूं। यदि मैं अपने पालनकर्ता की अवज्ञा करूं तो मुझे बड़े दिन को दण्ड का भय लगता है। (१५) कहो यदि ईश्वर चाहता तो मैं न तुमको पढ़कर सुनाता और न ईश्वर तुमको इससे संकेत करता, इससे पहिले मैं चिरकाल तक तुम मे रह चुका हू क्या तुम नही समझते*। (१६) तो उससे बढकर अत्याचारी

* अर्थात मैं ४० वर्ष से तुम लोगो के साथ जीवन व्यतीत कर रहा हूँ। मैंने इससे पहले कोई दावा नबी होने का नहीं किया। अब कर रहा हूँ तो जान लो कि जो कुछ कह रहा हूँ अपनी ओर से नहीं कह रहा हू अपितु ईश्वर ही की आज्ञा से कह रहा हूं।

कौन है जो ईश्वर पर झूठ बाँधे या उसकी आयतो को झुठलाये। अपराधियो का भला नही होता। (१७) और ईश्वर के अतिरिक्त ऐसी वस्तुओ को पूजते हैं जो उनको हानि या लाभ नही पहुचा सकती और कहते हैं कि अल्लाह के यहाँ हमारे सिफारशी हैं। कहो क्यो तुम अल्लाह को ऐसी वस्तु की सूचना देते हो जिसे वह न नभ मे पाता है और न पृथ्वी मे और वह इस शिर्क से पवित्र और अधिक ऊ चा है। (१८) मनुष्य एक ही ढँग पर थे। भेद तो उनमे पीछे हुआ और यदि तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से प्रण पहले से न हुआ होता तो जिन वस्तुओ मे यह भेद डाल रहे हैं उनके मध्य उनका निर्णय कर दिया गया होता। (१९) मक्के वाले कहते हैं इसको उसके पालनकर्ता की ओर से कोई चमत्कार क्यो नही दिया कहो कि अदृश्य की सूचना तो बस ईश्वर को ही है तो तुम प्रतीक्षा करो। मैं तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वालो मे (२०) (रुकू २)

जब मनुष्यो को कष्ट पहुचने के पश्चात हम कृपा का स्वाद चखा देते हैं तो बस हमारी आयतो मे बहाना लगाते हैं कहो अल्लाह की युक्ति अधिक चलती है वह कहता है हमारे देवदूत तुम्हारे कर्म लिखते हैं। (२१) वही है जो तुम को वन और नदी मे फिराता है यहाँ तक कि कोई समय तुम किश्तियो मे होते हो और वह मनुष्यो को अनुकूल हवा की सहायता से चलता है और मनुष्य उनसे प्रसन्न होते है। किश्ती को तूफानी वायु आवे और लहरें हर ओर से उन पर आने लगें और वह समझें कि अब हम घिर गये तो अन्तरतम से ईश्वर ही को मानकर उससे प्रार्थनाए माँगने लगते हैं कि यदि तू हमको इस कष्ट से बचावे तो हम अवश्य धन्यवाद दें। (२२) फिर जब उसने बचा दिया तो वह निरर्थक की उद्दण्डता करने लगते है। मनुष्यो, तुम्हारी उद्दण्डता तुम्हारी ही जानो पर पडेगी। यह सासारिक जीवन के सुख हैं अन्तत तुम्हें हमारी ही ओर लौटकर आना है तो जो कुछ भी तुम

करते रहे तुमको बता देंगे। (२३) सांसारिक जीवन तो उदाहरण उस पानी जैसी है कि हमने उसको नभ से बरसाया फिर पृथ्वी की उपज जिसको मनुष्य और चौपाये खाते हैं पानी के साथ मिल गई यहाँ तक कि जब पृथ्वी ने अपना शृंगार कर लिया और सुन्दर हुई और खेत वालों ने समझा कि वह उस उपज पर वशीभूत हो गये और रात्री के समय या दिन के समय हमारी आज्ञा उस पर आयी। फिर हमने उसका ऐसा कटा हुआ ढेर कर दिया कि मानो कल उसका निशान न था। जो मनुष्य सोचते हैं उनके लिए आयतें वर्णन करते हैं। (२४) अल्लाह स्वर्ग की ओर बुलाता है और जिसको चाहता है। (२५) जिन मनुष्यों ने भलाई की उनके लिए भलाई है और कुछ बढ़कर मुंहो पर कालिमा न छाई न अपकीर्ति। यही वैकुण्ठबासी हैं कि वह वैकुण्ठ में सदैव रहेंगे। (२६) और जिन मनुष्यों ने बुरे कर्म किये तो बुराई का बदला वैसा ही बुराई और उन पर अपकीर्ति छा रही होगी। अल्लाह से कोई उनको बचाने वाला नही मानो अन्धेरी रात्री के भाग उनके मुंह पर अड़ा दिये हैं, यही नरकीय हैं कि वह नरक मे सदैव रहेंगे। (२७) और जिस दिन हम उन सबको एकत्रित करेंगे फिर मुशरिकीन को आज्ञा देंगे कि तुम और जिनको तुमने देवता बनाया था वह तनिक अपना स्थान पर ठहरें। फिर हम उनके आपस में फूट डाल देंगे और उनके देवता कहेंगे कि हमारी पूजा तो तुम कुछ करते ही नही थे। (२८) हमारे और तुम्हारे मध्य बस ईश्वर ही साक्षी है, हमको तो तुम्हारी पूजा की बिलकुल सूचना ही नही थी। (२९) वही प्रत्येक व्यक्ति अपने काम को जो उसने किये हैं जाँच लेगा और सब मनुष्य अपने सच्चे स्वामी अल्लाह की ओर लौटाये जायगे और झूठ पाप लगाते रहे हैं वह सब उनसे निम्न हो जायंगे। (३०) (रुकू ३)

ऐ पैगम्बर! मनुष्यों से इतना तो पूछो कि तुमको नभ और पृथ्वी से कौन जीविका देता है या कान और आँखो का कौन स्वामी है और

कौन मृत से जीवित निकालता है और कौन जीवित से मृत करता है और कौन प्रबन्ध चला रहा है, तो तुरन्त ही बोल उठेंगे कि अल्लाह। सो कहो कि फिर तुम उससे क्यो नही डरते। (३१) फिर यही अल्लाह तो तुम्हारा सच्चा पालनकर्ता है, तो सच्चाई के खुल जाने के पश्चात दूसरो मार्ग चलना पथभ्रष्टता नही तो और क्या है सो तुम किधर को फिरे चले जा रहे हो। (३२) इसी प्रकार तुम्हारे पालनकर्ता की आज्ञा अवज्ञाकारियो पर सत्य हुई कि यह किसी प्रकार विश्वास नही लावेंगे। (३३) पूछो कि तुम्हारे देवताओं मे कोई ऐसा भी है कि ससार को प्रथम बनाये करे फिर उनको दुबारा बनाया करें। कहो अल्लाह हो सृष्टि को प्रथम बार उत्पन्न करता है फिर उनको दुबारा उत्पन्न करेगा तो अब तुम किधर को उलटे चले जा रहे हो। (३४) पैगम्बर इनसे पूछो कि तुम्हारे देवताओं मे से कोई ऐसा है जो सच्चा मार्ग दिखा सके। कहो अल्लाह ही सच्चा मार्ग दिखलाता है, तो क्या जो सत्य मार्ग दिखावे उसका अधिकार नही कि उसी का समर्थन किया जाय या जो ऐसा है कि जब तक दूसरा उसको मार्ग न दिखलाये वह स्वय भी मार्ग नही पा सकता। तो तुमको क्या हो गया है जाने कैसा न्याय करते हो। (३५) और इन मनुष्यो मे से प्राय. अनुमान पर चलते हैं सो केवल अनुमान अधिकार या सत्यता के सामने काम नही आते। जैसा-जैसा यह कर रहे हैं ईश्वर भली प्रकार जानता है। (३६) यह पुस्तक कुरान इस प्रकार की नही कि ईश्वर के अतिरिक्त और कोई इसे अपनी ओर से बना लावे। अपितु जो पुस्तकें इसके पहिले की है उनका प्रमाण है और उन्हीं का विस्तार है। इसमे सन्देह नही कि यह ईश्वर ही की अवतरित की हुई है। (३७) क्या वह कहते हैं कि इसे स्वयं मुहम्मद पैगम्बर ने बना लिया है तू कह दे कि यदि सच्चे हो तो एक ऐसी ही सरत तुम भी बना लाओ और ईश्वर के अतिरिक्त जिसे चाहो बुला लो। (३८) और उस वस्तु को झुठलाने लगे जिसके समझने की इन्हें शक्ति नही अभी तक इनका इसके प्रमाणित करने का

अवसर ही नही आया। इसी प्रकार उन मनुष्यो ने भी झुठलाया था जो इनसे पहिले थे। तो पैगम्बर देखो अत्याचारियो को कैसा फल मिला। (३६) और इनमे से कुछ मनुष्य ऐसे हैं कि जो कुरान पर विश्वास ले आवेंगे और कोई-कोई नही लावेगे और तुम्हारा पालन-कर्ता उत्पातियो को खूब जानता है। (४०) और ऐ पैगम्बर यदि तुम को झुठलावें तो कह दो कि मेरा करना मुझको और तुम्हारा करना तुमको। तुम मेरे काम के उत्तरदाइ नही और न मैं तुम्हारे काम का उत्तरदाई हूँ। (४१) और पैगम्बर इनमे से कुछ मनुष्य हैं जो तुम्हारी ओर कान लगाते हैं क्या इससे तुमने समझ लिया कि यह मनुष्य विश्वास लावेंगे, तो क्या तुम बहरो को सुना सकोगे जो बुद्धि भी नही रखते हैं। (४२) और इनमे से कुछ मनुष्य है जो तुम्हारी ओर* ताकते हैं तो क्या तुम अन्धो को मार्ग दिखा दोगे जो इनको सूझ पडता हो। (४३) अल्लाह तो जरा भी मनुष्यो पर अत्याचार नही करता परन्तु स्वयं अपने ऊपर अत्याचार करते हैं। (४४) और जिस दिन मनुष्यो को एकत्रित करेगा तो मानो ससार मे सारे दिन भी नही अपितु घडी भर संसार मे रहे होगे। आपस एक दूसरे को पहचानेंगे जिन मनुष्यो ने ईश्वर के मिलाप को झुठलाया वह बडे छोटे मे आ गये और उनको मार्ग ही न सूझा। (४५) जैसे-जैसे प्रण हम इनसे करते है चाहे इनमें से कुछ को तुमको दिखावेंगे या तुमको प्रण लेवेंगे। इन का तो लौटकर हमारी ओर आना है जो कुछ यह कर रहे हैं ईश्वर देख रहा हैं। (४६) और प्रत्येक समाज का एक पैगम्बर है तो जब वह उनका पैगम्बर अपने समाज मे आता है तो उसके समाज न्याय

---

* अन्धों को आवाज सुनाई जा सकती है। बहरों को इशारे से कोई बात समझाई जा सकती है लेकिन जो अन्धा और बहरा हो यानी किसी प्रकार की समझने की शक्ति ही न रखता हो उसको समझाना निरर्थक है।

के साथ निर्णय होता है और मनुष्यो पर अत्याचार नही होता। (४७) पूछते हैं कि यदि तुम हो तो यह प्रण प्रलय का कब पूरा होगा। (४८) ऐ पैगम्बर, इनसे कहो कि मेरा अपना लाभ व हानि भी मेरे हाथ मे नही। परन्तु जो ईश्वर चाहता है वही होता है। उसके ज्ञान मे हर समाज का एक समय नियत है। जब उनकी मृत्यु आ जाती है तो घडी भर भी पीछे नही हट सकती और न आगे बढ सकती है। (४९) ऐ पैगम्बर इनसे पूछो कि भला देखो तो सही यदि ईश्वर का दण्ड रातो-रात तुम पर आ उतरे या दिन-दहाड़े आ जाय तो पाप लोग इससे पहिले क्या कर लेंगे। (५०) सो क्या जब आ पडेगी तभी उसका विश्वास करोगे, क्या अब विश्वास लाये और तुम तो इसके लिए शीघ्रता मचा रहे थे। (५१) फिर प्रलय के दिन अवज्ञाकारियो को आज्ञा होगी कि अब सदैव का दण्ड चक्खो, तुमको दण्ड दिया जा रहा है, यही तुम्हारी कमाई का बदला है। (५२) तुमको पूछते है कि जो कुछ तुम उनसे कहते हो क्या यह सच है ? कहो कि पालनकर्ता की सौगन्ध सत्य है और तुम भाग कर ईश्वर को हरा न सकोगे। (५३) (रुकू ५)

जिस-जिसने ससार मे अवज्ञा की है कि अपने छुटकारे के लिए यदि समस्त कोष पृथ्वी के जो उनके अधिकार मे हो दे निकले परन्तु दण्ड को देख उनको लज्जा खानी पडेगी और मनुष्यो मे न्याय के साथ निर्णय कर दिया जायगा और उन पर अत्याचार न होगा। (५४) स्मरण रक्खो जो नभ और पृथ्वी मे है अल्लाह ही का है। स्मरण रक्खो कि अल्लाह का प्रण सच्चा है परन्तु अधिकतर मनुष्य विश्वास नही करते। (५५) वही जीवन देता और मारता है और उसकी ओर तुमको लौट कर जाना है। (५६) तुम्हारे पास शिक्षा आ चुकी और हृदय के रोग को दवा और धर्म वालो के लिए सावधानी* और दया

* यानी कुरान मे अच्छी-अच्छी शिक्षाएं हैं और सच्ची-सच्ची धर्म की बातें। इनसे हृदय के रोग (असत्य) मिट जाते हैं।

आ चुकी है। (५७) पैगम्बर, इनसे कहो कि यह कुरान अल्लाह की कृपा और कृपादृष्टि है और मनुष्यो को चाहिए कि ईश्वर की कृपा और देन अर्थात कुरान को पाकर प्रसन्न हों कि जिन सांसारिक सुखों के पीछे पड़े हैं यह उनसे कहीं बढ़कर है। (५८) ऐ पैगम्बर, इनसे कहो कि भला देखो तो सही, ईश्वर ने तुमको जीविका दी अब तुम उसमें से पाप और पुण्य ठहराने लगे। इनसे पूछो ईश्वर ने तुम्हें क्या ऐसी आज्ञा दी है या उस पर झूठा पाप लगाते हो। (५९) जो ईश्वर पर झूठ बाँधते हैं वह प्रलय के दिन क्या समझेंगे अल्लाह मनुष्यों पर कृपा रखता है बहुत से आभार मानने वाले नहीं होते। (६०) (रुकू ६)

ऐ पैगम्बर तुम किसी दशा में हो और जो कोई सी कुरान की आयत भी पढ़कर सुनाओ और तुम भी कोई कर्म करते हो—जब तुम उसमें लगे रहते हो हम तुमको देखते रहते हैं और तुम्हारे पालनकर्ता से जरा भी कुछ छिपा नहीं रह सकता न पृथ्वी में और न आकाश में और कण से छोटी वस्तु हो या बड़ी प्रकाशित पुस्तक में लिखी हुई है। (६१) स्मरण रक्खो कि ईश्वर जिनको चाहता है उनको न भय होगा और न वे उदास होंगे। (६२) यह मनुष्य जो विश्वास लाये और डरते रहे इनको यहाँ सांसारिक जीवन में भी शुभ सवाद है।(६३) प्रलय मे भी ईश्वर को बातों में भेद नही आता है यह बड़ी सफलता है। (६४) ऐ पैगम्बर इनकी बातो से तुम उदास न हो क्योंकि सारी शक्ति अल्लाह की है वह सुनना जानता है। (६५) स्मरण रखो कि जो नभ मे है और जो पृथ्वी मे है सब अल्लाह ही का है और जो मनुष्य ईश्वर के अतिरिक्त देवताओ को पुकारते हैं कुछ पता नही कि किम पर चलते हैं। वह केवल वहम पर चलते हैं और निरा अनुमान दौडाते हैं। (६६) वही है जिसने तुम्हारे लिए रात्री को बनाया जिससे तुम उसमे विश्राम करो और दिन को जिससे तुम उसके प्रकाश मे देखो-

भालो । रात-दिन के बनाने मे उन मनुष्यो को जो सुनते हैं निशानियाँ हैं। (६७) कहते है कि ईश्वर ने पुत्र बना रखा है, वह पवित्र है इच्छारहित है जो कुछ नभ मे हैं और जो कुछ पृथ्वी मे है उसी का है तुम्हारे पास इसका कोई प्रमाण तो है नही तो क्या बेजाने-बूझे ईश्वर पर झूठ बोलते हो। (६८) ऐ पैगम्बर इन मनुष्यो से कह दो कि जो ईश्वर पर झूठा पाप बाँधते हैं उनकी इच्छापूर्ति नही होती। (६९) ससार के लाभ हैं फिर उनको हमारी ओर लौटकर आना है तब उनके कुफ्र के दण्ड मे हम उनको कठोर दण्ड देंगे। (७०) (रुकू ७)

ऐ पैगम्बर इन मनुष्यो को नूह की दशा पढकर सुनाओ कि जब उन्होने अपनी जाति से कहा कि भाइयो, यदि मेरा कहना और ईश्वर की आयतें पढ़कर समझना तुम पर असह्य बीतता है तो मेरा भरोसा अल्लाह पर है बस तुम और तुम्हारे देवता अपनी बात ठहरा लो फिर तुम्हारी बात तुम पर छिपी न रहे, फिर जो कुछ तुमको करना है मेरे साथ कर चुको और मुझे अवकाश न दो। (७१) फिर यदि तुम मुंह मोड बैठे तो मैंने तुमसे कुछ परिश्रमिक नही माँगा, मेरा परिश्रमिक तो बस ईश्बर ही पर है और मुझको आज्ञा दी गई है कि मैं उसकी सेवा मे रहु। (७२) फिर मनुष्यो ने उनको झुठलाया तो हमने नूह को और जो मनुष्य उसके साथ नावो मे थे उनको बचा लिया और जिन मनुष्यो ने हमारी आयतो को झुठलाया उन सबको डुबोकर दूसरे मनुष्यो को अधिकारी बनाया तो जो मनुष्य डराये गये हैं उनका कैसा परिणाम हुआ। (७३) फिर नूह के पश्चात हमने पैगम्बरो को उनकी जाति की ओर भेजा तो यह पैगम्बर उनके पास चमत्कार लेकर आये। इस पर भी जिस वस्तु को पहले झुठला चुके थे उस पर विश्वास न लाये। इसी प्रकार हम अवज्ञाकारियो के हृदय पर मुहर कर दिया करते हैं। (७४) फिर इनके पश्चात हमने मूसा

और हारू को अपने निशान लेकर फिरऔन और उसके दरबारियो की तरफ भेजा, तो वे अकड बैठे और यह मनुष्य कुछ अपराधी थे (७५) तो जब इसके पास हमारी ओर से सच बात पहुँची तो वह कहने लगे कि यह तो अवश्य स्पष्ट जादू है। (७६) मूसा ने कहा कि जब सच बान तुम्हारे पास आई तो क्या तुम उसके विषय मे कहते हो क्या यह जादू है ? और जादूगरों का भला नही होता। (७७) वह कहने लगे क्या तुम इस अर्थ से हमारे पास आये हो कि जिस पर हम अपने बड़ो को पाया उससे हमको फिरा दो और देश में तुम दोनो की सरदारी हो और हम तो तुम पर विश्वास लानेवाले नही हैं। (७८) और फिर-औन ने आज्ञा दी कि प्रत्येक जानकार जादूगर को हमारे सामने लाकर उपस्थित करो। (७९) फिर जब जादूगर आ उपस्थित हुए तो उनसे मूसा से कहा कि* जो तुमको डालना स्वीकार है डालो। (८०) तो जब उन्होंने डाल दिया तो मूसा ने कहा कि यह जो तुम लाये हो जादू है अल्लाह इसको झूठ करेगा क्योंकि अल्लाह उत्पातियो को काम नही बनाने देता। (८१) और अपनी आज्ञा से सच को सच करता है चाहे अपराधियो को बुरा ही क्यों न लगे। (८२) (रुकू ८)

इन सारी बातो पर मूसा ही के कुटुम्ब के केवल थोड़े से विश्वास लाये और सो भी फिरऔन और उसके सरदारों से डरते-डरते कि कही कोई विपत्ति उनके ऊपर न डाले। फिरऔन देश मे बहुत बढा-चढ़ा था और वह असीमितता किया करता था। (८३) और मूसा ने समझाया कि भाईयो ! यदि तुम अल्लाह पर विश्वास रखते हो तो उसी पर भरोसा करो। (८४) इस उन्होंने उत्तर दिया कि हमको ईश्वर ही का भरोसा है। ऐ हमारे पालनकर्ता ! इस पर इस अत्या-चारी जाति की शक्ति न आजमा। (८५) अपनी कृपा से हमको काफिर जाति से बचा। (८६) हमने मूसा और उसके भाई की ओर

*अर्थात जो जादू तुम कर सकते हो मेरे ऊपर कर डालो।

आज्ञा भेजी कि मिस्र मे अपने मनुष्यो के घर बना लो और अपने घरो को मसजिदें बना दो और नमाज पढो और धर्मवालो को शुभ-सवाद सुना दो। (८७) मूसा ने प्रार्थना की कि ऐ मेरे पालनकर्ता! तूने फिरऔन और उसके सरदारो को ससार के जीवन मे आदर, सत्कार और धन दे रखा है और ऐ हमारे पालनकर्ता यह इसलिए दिए है कि वह तेरे मार्ग से भटकावें, तो ऐ हमारे पालनकर्ता! इनके धन भेट दे और इनके हृदय को कठोर कर दे कि यह दुखदाई दण्ड के देखे बिना विश्वास न लावे (८८) कहा तुम दोनो अपनी मार्ग पर रहो और मूर्खों के मार्ग मत चलना। (८९) हमने इसराईल की सन्तान को पार उतार दिया। फिर फिरऔन और उसके लश्करियो ने उद्दण्डता और छेड़-छाड के मार्ग से उनका पीछा किया। यहाँ तक कि जब फिरऔन डूबने लगा तब कहने लगा कि मैं विश्वास लाया कि जिस पर इसराईल के पुत्र विश्वास लाये हैं। उसके अतिरिक्त कोई पूजित नही और मैं अवज्ञाकारियो मे हूँ। (९०) इसका उत्तर मिला कि अब तू यो बोला पहले निरन्तर अवज्ञा करता रहा और तू उत्पातियो मे था। (९१) तो आज तेरे शरीर को हम बचावेंगे कि जो मनुष्य तेरे पश्चात आनेवाले हैं तू उनके लिए शिक्षा हो और बहुत से मनुष्य हमारी निशानियो से सोये हुए हैं। (९२) (रुकू ९)

हमने इसराईल की सन्तान को एक सच्चे ठिकाने से जा बैठाया और उनको सुन्दर-सुन्दर पदार्थ दिये और उनमे भेद नही पडा। जब तक ज्ञान न आया यह मनुष्य जिन-जिन बातो मे भेद डालते रहते हैं तुम्हारा पालनकर्ता प्रलय के दिन उन भेदो का निर्णय कर देगा। (९३) तो पैगम्बर, यह कुरान जो हमने तुम्हारी ओर अवतरित किया है यदि इसके विषय मे तुमको किसी प्रकार का सन्देह हो तो तुमसे पहले जो मनुष्य पुस्तको को पढते हैं उनसे पूछ देखो कुछ सन्देह नही कि तुम पर तुम्हारे पालनकर्ता की ओर सच्ची पुस्तक अवतरित है तो

कदापि सन्देह करनेवालो में न होना । (९४) और न उन मनुष्यो मे होना जिन्होने ईश्वर की आयतों को झुठलाया तो तुम भी हानि उठाने वालो मे हो जाओगे । (९५) ऐ पैगम्बर जिन पर पालनकर्ता की बात ठीक आई वे विश्वास न लावेंगे । (९६) वह तो जब तक दुखदाई दण्ड को न देख लेंगे किसी प्रकार विश्वास लानेवाले नही है चाहे पूरा चमत्कार उनके सामने आ उपस्थित हो । (९७) तो यूनुस जाति के अतिरिक्त और कोई बस्ती ऐसी क्यों न हुई कि विश्वास ले आती और उनको विश्वास लाना लाभ देता तो जब विश्वास ले आये तो हमने साँसारिक जीवन मे उसे अपकीर्ति के दण्ड को क्षमा कर दिया और उनको एक समय तक रहने दिया । (९८) और ऐ पैगम्बर ! तुम्हारा पालनकर्ता चाहता तो जितने आदमी पृथ्वी के धरातल मे है सबके सब विश्वास ले आते । तो क्या मनुष्यों को विवश कर सकते हो कि वह विश्वास ले आवें । (९९) किसी व्यक्ति के पक्ष मे नही कि बिना आज्ञा ईश्वर के विश्वास ले आवे । मालिश उन्ही पर डालता है जो बुद्धि को काम मे नहीं लाते । (१००) निशानियाँ और डरावे उनको कोई उपकारी नही । (१०१) तो क्या वैसे ही सकट की प्रतीक्षा मे हैं जैसी पहले मनुष्यों पर आ चुकी है । ऐ पैगम्बर इन मनुष्यो से कह दो कि तुम भी प्रतीक्षा करो मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वालो मे हूँ । (१०२) फिर हम अपने पैगम्बरो को बचा लेते हैं और इसी प्रकार उनकी जो विश्वास लाये हमने अपने लिए आवश्यक कर लिया है कि विश्वास वालों को बचा लिया करें । (१०३) (रुकू १०)

ऐ पैगम्बर ! इन मनुष्यो से कहो कि यदि मेरे धर्म के सम्बन्ध मे सदेह हो तो ईश्वर के अतिरिक्त तुम जिनकी पूजा करते हो, मैं तो उनकी पूजा नही करता अपितु मैं अल्लाह ही को पूजता हूँ जो कि

---

*गन्दगी से अभिप्राय है कुफ्र और शिर्क या अपवित्र विचार ।

तुमको मार डालता है और मुझको आज्ञा दी गई है कि मैं विश्वास वालो मे रहूं। (१०४) यह कि धर्म की ओर अपना मुंह किये सीधे मार्ग चला जाऊंगा और मुशरिकों से कदापि न होऊंगा। (१०५) और ईश्वर के अतिरिक्त किसी को न पुकारना कि वह तुमको न तो लाभ ही पहुचा सकता है और न तुमको हानि ही पहुंचा सकता है। यदि तुमने ऐसा किया तो उसी समय तुम भी अत्याचारियो मे होगे। (१०६) यदि ईश्वर तुमको कोई कष्ट पहुचावे तो उसके अतिरिक्त उसका दूर करने वाला नही और यदि किसी प्रकार का सुख पहुँचाना चाहे तो कोई उसकी कृपा को रोकने वाला नही। अपने दासो मे से जिसे चाहे लाभ पहुँचावे और वह क्षमा करने वाला कृपालु है। (१०७) कह दो मनुष्यो सत्य बात तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से तुम्हारे पास आ चुकी। फिर सच्चा मार्ग पकडो तो अपने ही लिये और जो भटका सो भटक कर अपना ही खोता है और मैं तुम्हारा नायक नही। (१०८) और ऐ पैगम्बर तुम्हारी ओर से आज्ञा भेजी जाती है उसी चले जाओ और जब तक अल्लाह न्याय न करे ठहरे रहो और वही न्यायाधिशो मे भला है। (१०९) (रुकू ११)

सूरे हूद

मदीने में अवतरित हुई इसमें १२३ आयतें और १० रुकू हैं

आरम्भ अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त दयावान तथा कृपालु है। अलिफ-लाम-रा। यह पुस्तक कुरान पूर्णरूपेण सावधान की ओर से है जिसकी आयतें स्पष्ठता के साथ वर्णन की गई है। (१) ईश्वर के अतिरिक्त किसी की पूजा मत करो, मैं उसी की ओर से तुमको डराता और शुभ सम्वाद सुनाता हूं। (२) यह कि अपने पालनकर्ता से क्षमा

माँगो और उसी के सामने क्षमायाचना करो, तो वह तुमको एक समय निश्चित तक अच्छी प्रकार बसाये रक्खेगा और जिसने अधिक किया है वह उसको अधिक देगा और यदि मुँह मोड़ो तो मुझको तुम्हारे विषय में बड़े दिन के दण्ड का भय है। (३) तुमको अल्लाह की ओर लौटकर जाना है और वह हर वस्तु पर शक्ति रखता है। (४) ऐ पैगम्बर सुनो कि यह अपने सीनों को दुहरा किये डालते है जिससे ईश्वर से छिपे रहें। जब वह अपने कपड़े ओढते हैं ईश्वर उनकी भूली हुई स्पष्ट बातो से सावधान है। वह हृदय के भेद जानता। (५)



बारहवाँ पारा (वमामिन दाब्बतिन)

जितने पृथ्वी में चलायमान हैं उनकी जीविका अल्लाह ही के जिम्मे है और वही उनके ठिकाने को और उनकी सौंपे जाने के स्थान को जानता है। सब कुछ खुली पुस्तक मे है। (६) वही है जिसने नभ और पृथ्वी को ६ दिन मे बनाया और उसका सिहासन (किब्रियाई) पानी पर था जिससे तुम को जाँचे कि तुममे किसके कर्म अच्छे हैं और यदि तुम कहो कि मेरे पीछे तुम उठाकर खड़े किये जाओगे तो जो मनुष्य नही मानते हैं अवश्य कहेंगे कि यह तो स्पष्ट जादू है। (७) और यदि हम दण्ड को इनसे गिनती के कुछ दिन तक रोके रहें तो अवश्य कहने लगेगे कि कौन सी वस्तु दण्ड को रोक रही। सुनो जी जिस दिन दण्ड इन पर उतरेगा इनसे किसी के टाले टलने वाला नही और जिसकी यह हँसी उड़ा रहे थे वह इनको घेर लेगी। (८) (रुकू १)

यदि हम मनुष्य को अपनी कृपा का स्वाद दें फिर उसको उससे छीन लें तो वह निराश और आभार न मानने वाला होता है। (९) यदि तुमको कोई कष्ट पहुंचा हो और उसके पश्चात उसको आराम मिलावें तो कहने लगता है कि मुझसे सब कठिनाईयाँ दूर हो गई

क्योकि वह बहुत ही प्रसन्न हो जानेवाला तथा झूठी प्रशंसा करनेवाला है। (१०) परन्तु दृढ रहते हैं और भले काम करते हैं यही हैं जिनके लिए दान और बड़ा परिणाम है। (११) तो क्या जो आज्ञा तुम पर भेजी जाती है तुम उसमे से थोड़ी सी छोड देना चाहते हो। इस कारण कि तग होकर वे कहते हैं कि इस व्यक्ति को कोप*नही मिला। या उसके साथ कोई देवदूत क्यो नही आया। सो तुम डरानेवाले हो। और हर वस्तु ईश्वर ही के वश मे है। (१२) ऐ पैगम्बर क्या काफिर कहते हैं कि इसने कुरान को अपसे हृदय से वना लिया है तो इनसे कहो कि यदि तुम सच्चे हो तो तुम भी इसी प्रकार की वनाई हुई दस सूरतें ले आओ और ईश्वर के अतिरिक्त जिसको तुमसे बुलाते वन पडे बुला लो यदि तुम सच्चे हो। (१३) बस यदि काफिर तुम्हारा कहना न करे तो जाने रहो कि कुरान ईश्वर ही के ज्ञान से अवतरित हुआ है और यह कि उसके अतिरिक्त किसी की प्रार्थना नही करनी चाहिए तो क्या अब तुम आज्ञा मानते हो। (१४) जिनका अर्थ सांसारिक जीवन और ससार मे सुख चाहना है हम उनके काम का बदला संसार मे उन को पूरा-पूरा भर देते हैं वह ससार मे घाटे मे नही रहते। (१५) यही वह मनुष्य है जिनके लिए प्रलय मे नरक के अतिरिक्त और कु नही और जो काम ससार मे इन मनुष्यों ने किये, निरर्थक हुए और इनका किया धरा निष्काम हुआ। (१६) तो क्या जो अपने पालनकर्ता के खुले मार्ग पर हो और उनके साथ उन्ही मे का एक साक्षी हो औ

---

*इनकारी कहते थे कि मुहम्मद रसूल हैं तो इनके पास अधिक धन होना चाहिए या इनके साथ एक फरिश्ता निरंतर चलना चाहिए जो इनके रसूल होने का साक्षी हो। इन बातो से मुहम्मद साहब को बड़ा दुःख होता था। इन आयतों मे यह बताया गया है कि नबी के लिए इस आडम्बर की आवश्यकता नहीं।

कुरान से पहिले मूसा की पुस्तक हो जो मार्ग दिखाने वाली और कृपालु है। वह मनुष्य इनको मानते हैं और गुटों में से जो इस कुरान से अस्वीकार करते हो उनका अन्तिम स्थान नरक है तो ऐ पैगम्र तुम कुरान की ओर से संदेह मे न रहना इसमे कुछ सदेह नही कि वह तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से सत्य है। परन्तु प्रायः मनुष्य विश्वास नही लाते। (१७) जो ईश्वर पर झूठ कलंक लगाये उससे बढकर अत्याचारी कौन है। यही मनुष्य अपने पालनकर्ता के सामने उपस्थित किये जावेगे और साक्षी देगे कि यही हैं जिन्होने अपने पालनकर्ता पर झूठ बोला था। सुनो अत्याचारियो पर ईश्वर ही की मार है। (१८) जो ईश्वर के मार्ग से रोकते और उसमे टेढापन चाहते हैं और है जो प्रलय को अस्वीकार करते है। (१९) यह मनुष्य न ससार ही मे ईश्वर को हरा सकेंगे और ईश्वर के अतिरिक्तन इनका कोई सहायक खड़ा होगा इनको दोहरा दण्ड होगा क्योकि न सुन सकते थे न इनको सूझ पड़ता था। (२०) यही मनुष्य है जिन्होंने स्वयं अपनी हानि कर ली और झूठ जो बाँधा था खो गया। (२१) अवश्य यही मनुष्य प्रलय मे सबसे अधिक घाटे में होंगे। (२२) जो मनुष्य विश्वास लाये और अच्छे काम किये और अपने पालनकर्ता के समक्ष विनती करते रहे यही स्वर्ग मे रहनेवाले हैं कि यह स्वर्ग में सदैव रहेंगे। (२३) दो गुटो का उदाहरण अन्धे और बहिरे और आँखो वाले और सुननेवाले जैसा है। क्या दोनो का उदाहरण समान हो सकता है ? क्या तुम ध्यान नहीं *करते ? (२४) (रुकू २)

---

*अविश्वासी अन्धों के समान हैं कि ईश्वर की निशानियां नहीं देखते और बहरों के समान हैं कि रसूल की बातें नहीं सुनते और मुसलमान आँख और कानवाले हैं कि ईश्वर की निशानियों को देखते हैं और रसूल की बातों पर कान धरते हैं।

और हम ही ने नूह को उनकी जाति की ओर भेजा कि मैं तुमको स्पष्ट भय सुनाने आया हू । (२५) ईश्वर के अतिरिक्त पूजा न किया करो । मुझको तुम्हारे विषय मे प्रत्येक दिन दण्ड का भय है । (२६) इस पर उनकी जाति के सरदार जो नही मानते थे कहने लगे कि हमको तो तुम हमारे ही जैसे मनुष्य दिखाई देते हो और हमारे निकट केवल मनुष्य तुम्हारे सहायक हो गये है जो हम मे नीच हैं और हम तो तुम मे अपने से कोई विशेषता नही पाते अपितु हम तुमको झूठा समझते हैं । (२७) नूह ने कहा भाइयो भला देखो तो सही यदि मैं अपने पालनकर्ता के खुले मार्ग पर हू और उसने मुझको अपनी सरकार से देन दी है फिर वह मार्ग तुमको दिखाई नही देता तो क्या हम उसको तुम्हारे गले मढ रहे हैं और तुम उसको ना पसद कर रहे हो । (२८) भाइयो, मैं इसके बदले मैं तुमसे रुपयो का चाहने वाला नही हू । मेरा पारीश्रमिक तो अल्लाह ही पर है और मैं मनुष्यो को जो विश्वास ला चुके हैं निकालनेवाला नही हू क्योंकि इनको भी अपने पालनकर्ता के यहाँ जाना है परन्तु मैं देखता हू कि तुम मूर्ख हो । (२९) भाइयो यदि मैं इनको निकाल दू तो ईश्वर के सामने कौन मेरी सहायता को खडा हो जायगा, क्या तुम नही समझते । (३०) मैं तुमसे दावा नही करता कि मेरे पास ईश्वरीय कोष है और न मैं अदृष्ट जानता हू और न मैं कहता हू कि मैं देवदूत हू और जो तुम्हारी दृष्टी मे तुच्छ हैं मैं उनके सम्बन्ध मे यह भी नही कह सकता कि ईश्वर उन पर दया नही करेगा इनके हृदय की बात को अल्लाह ही खूब जानता है यदि ऐसा कहू तो मैं अत्याचारियो मे हूँगा । (३१) वह बोले नूह तूने हमसे झगडा किया और बहुत झगडा किया, यदि तू सच्चा है तो जिससे हमको डराता है उसको हम पर ले आ । (३२) नूह ने कहा कि ईश्वर को स्वीकार होगा तो वही दण्ड को भी तुम पर लायेगा और तुम हटा न सकोगे । (३३) और जो मैं तुम्हारे लिए शिक्षा चाहू यदि ईश्वर ही को तुम्हारा वह करना स्वीकार नही है तो मेरी शिक्षा तुम्हारे काम नही आ सकती । वही तुम्हारा पालनकर्ता है और उसी की ओर

तुमको लौटकर जाना है। (३४) ऐ पैगम्बर जिस प्रकार नूह को झुठलाया था क्या तुमको झुठलाते हैं और तुम पर हठ करते और कहते हैं कि कुरान को इसने स्वयं बना लिया है तुम उनको उत्तर दो कि यदि कुरान मैंने स्वयं बना लिया है तो मेरा अपराध मुझ पर है और जो अपराध तुम करते हो मेरा कुछ उत्तरदायित्व नही। (३५) (रुकू ३)

और नूह की ओर ईश्वरीय संदेश आया कि तुम्हारी जाति मे जो विश्वास ला चुके हैं उनके अतिरिक्त अब कदापि कोई विश्वास नही लावेगा और जैसे-जैसे अत्याचार यह लोग करते रहे हैं तुम इसका दु:ख न करो। (३६) हमारे सामने और हमारी इगित के अनुसार एक नाव बनाओ और अवज्ञाकारियों के सम्वन्ध मे हमसे कुछ न कहो। क्योकि यह अवश्य डूबेंगे। (३७) अतः नूह ने नाव बनानी आरम्भ की और जब कभी उनकी जाति के माननीय मनुष्य उनके पास से होकर गुजरते तो उनसे हंसी करते नूह ने उत्तर दिया कि यदि तुम हम पर हँसते हो तुम पर हम हँसेंगे। (३८) थोडे दिनों पश्चात तुमको प्रतीत हो जायगा कि किस पर दण्ड उतरता है जो उसकी अपकीर्ती करे और सदैव का दण्ड उसके सिर पड़े। (३९) यहाँ तक कि हमारी आज्ञा जब आ पहुंची और अल्लाह के कोप से तनूर ने जोश मारा तो हमने आज्ञा दी कि हर प्रकार में से दो-दो के जोडे और जिसके विषय मे प्रथम आज्ञा हो चुकी है उसको छोड़ कर अपने घर वाले और जो विश्वास ला चुके हैं उनको नौका में बैठा लो। (४०) और उनके साथ विश्वास भी थोड़ा ही लाये थे और उसने कहा सवार हो उसमे और नौका का बहाना और ठहरना अल्लाह के नाम से है और अल्लाह क्षम्य तथा कृपालु है। (४१) नौका इनको ऐसी लहरो मे, जो पर्वत के समान थीं ले गई और नूह का पुत्र पृथक था तो नूह ने उसे पुकारा कि पुत्र हमारे साथ बैठ ले और काफिरों के साथ मत रह। (४२) वह बोला मैं अभी किसी पर्वत के सहारे जा लगता हूं वह मुझको पानी से बचा

लेगा। नूह ने कहा कि आज के दिन अल्लाह के कोप से बचने वाला कोई नही परन्तु ईश्वर ही जिस पर अपनी कृपा करे और दोनो के मध्य एक लहर आ गई और दूसरो के साथ नूह का पुत्र भी डूब गया। (४३) आज्ञा हुई कि ऐ पृथ्वी अपना पानी सोख ले और ऐ नभ थम जा और पानी उतर गया और काम समाप्त कर दिया गया और नौका जूदी *पर्वत पर ठहर गई और आज्ञा हुई कि अत्याचारियो दूर रहो (४४) और नूह ने अपने पालनकर्ता को पुकारा और विनती की कि पालनकर्ता मेरा पुत्र मेरे मनुष्यों मे है और तूने जो प्रण किया था सत्य है और तू सब अधिकारियो से बड़ा अधिकारी है। (४५) ईश्वर ने कहा कि नूह तुम्हारा पूत्र तुममे नही था क्योंकि इसके कर्म बुरे थे। जो तू नही जानता वह बात न पूछ। मैं तुमको समझाये देता हूँ कि मूर्खों मे न हो। (४६) कहा ऐ मेरे पालनकर्ता ! मैं तेरी ही शरण माँगता हू कि जो मैं नही जानता था उसके विषय मे तुझ से पूछा और यदि तू मेरा अपराध नही क्षमा करेगा तो मैं नष्ट हो जाऊगा। (४७) आज्ञा दी गयी है कि ऐ नूह ! हमारी ओर से अभय और दैन के साथ नौका से उतरो। तुम पर और उन मनुष्यो पर जो तेरे साथ वालो से उत्पन्न हुए हैं दैनें हैं और कुछ गुटो को लाभ देंगे फिर उनको हमारी ओर से दुख की मार पहुचेगी। (४८) यह अदृष्ट की सूचनाएँ हैं ऐ मोहम्मद हम तेरी ओर ईश्वरीय सदेश भेजते हैं इससे पहले तू और तेरी जाति के मनुष्य इन बातो को न जानते थे, तो तू सतोष कर सयमियों का परिणाम भला है। (४९) (रुकू ४)

और आद की ओर हमने उन्ही के भाई हूद को भेजा। उन्होंने समझाया कि भाइयो, ईश्वर ही की पूजा करो, उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई दूसरा मानने-वाला नही तुम सब झूठ कहते हो। (५०) भाईयो इसके बदले मैं तुमसे कुछ पारीश्रमिक नही माँगता, मेरा पारीश्रमिक

* यह एक पहाड़ का नाम है जो शाम देश मे है।

तो उसी के मत्थे है जिसने मुझको उत्पन्न किया तो क्या तुम नहीं समझते। (५१) भाइयों, अपने पालनकर्ता से माँगो फिर उसके सामने क्षमा माँगो कि वह तुम पर खूब बरसते हुए बादल भेजेगा और दिन पर दिन तुम्हारी शक्ति को बढ़ावेगा और उद्दण्डता करके उससे मुँह न मोड़ो : (५२) वह कहने लगे ऐ हूद ! तू हमारे पास कोई प्रमाण लेकर नहीं आया और तेरे कहने से हम अपने पूजितों को न छोड़ेंगे और हम तुम पर विश्वास न लावेंगे। (५३) हम तो यही समझते है कि तुम पर हमारे प्रार्थियों में से किसी की मार पड़ गई है। हूद ने उत्तर दिया कि मैं ईश्वर को साक्षी करता हूं और तुम भी साक्षी रहो कि ईश्वर के अतिरिक्त जो तुम देवता बनाते हो मैं तो उन से दुखित हूं। (५४) तो तुम सब मिल कर मेरे साथ अपनी बदी करो और मुझको क्षमा न दो। (५५) मैंने अपने और तुम्हारे अल्लाह पर भरोसा किया। जितने जीव हैं सभी की चोटी उसके हाथ में है। मेरा पालनकर्ता सीधे मार्ग पर है। (५६) इस पर भी यदि तुम फिरे रहो तो जो आज्ञा मेरे द्वारा भेजी गयी थी वह मैं तुमको पहुचा चुका और मेरा पालनकर्ता तुम्हारे अतिरिक्त दूसरे मनुष्यों को तुम्हारे स्थान पर लाकर उपस्थित करेगा और मेरा पालनकर्ता हर वस्तु का रक्षक है। (५७) और जब हमारी आज्ञा आई तो हमने अपनी कृपा से हूद को और उन को जो उनके साथ विश्वास लाये थे बचा लिया और उनको कठिन दण्ड से बचा लिया। (५८) यह आद है जिन्होंने अपने पालनकर्ता की आज्ञाओं से मना किया और उसके पैग़म्बरो की आज्ञा न मानी। प्रत्येक निर्दय शत्रु की आज्ञा पर चलते रहे। (५९) इस संसार मे लांछन उनके पीछे लगा दी गई और प्रलय के दिन भी देखा आद ने अपने पालनकर्ता को अस्वीकार किया। देखो आद जो हूद की जाति के थे फटकारे गये। (६०) (रुकू ५)

समूद की ओर हमने उनके भाई सालेह को भेजा तो उन्होंने कहा कि भाइयो ईश्वर ही की पूजा करो, उसके अतिरिक्त तुम्हारा

कोई पूजित नही। उसने तुमको पृथ्वी से बना खडा किया और तुमको उसमे बसाया और उससे क्षमा माँगो और उसी के सामने क्षमा याचना करो। मेरा पालनकर्ता पास है और प्रार्थना स्वीकार करने वाला है। (६१) वह कहने लगे ऐ सालेह इससे पहिले तो हम मे तुमसे आशा की जाती थी कि तुम हर प्रकार हमारा साथ दोगे सो क्या तुम हमको उनकी पूजा से मना करते हो जिनको हमारे पिता पितामह पूजने चले आये हैं और उसकी ओर तुम हम को बुलाते हो हमको उसके विषय मे सन्देह है। (६२) उत्तर दिया कि भाइयो, देखो तो सही यदि मुझे अपने पालनकर्ता से सूझ मिल गई है और उसने मुझ पर अपनी कृपा की है और यदि मैं उसकी अवज्ञा करने लगू तो ऐसा कोन है जो ईश्वर के विरुद्ध मे मेरी सहायता को खडा हो। तो तुम मेरी हानि ही कर रहे हो। (६३) और भाइयो, यह ईश्वर की ऊँटनी तुम्हारे लिए एक निशानी है, तुम इसको छुटा रहने दो कि ईश्वर की पृथ्वी मे से खाती फिरे और इसको किसी प्रकार की हानि न पहुचाना अन्यथा तुरन्त ही तुमको दण्ड मिलेगा। (६४) तो मनुष्यो ने उसको मार डाला तो सालेह ने कहा तीन दिन अपने घरो मे बस लो यह प्रण असत्य नही होगा। (६५) तो जब हमारी आज्ञा आई तो हमने सालेह को और उन मनुष्यो को जो उनके साथ विश्वास लाये थे अपनी कृपा से उस दिन की अपकीर्ती से बचा लिया, तुम्हारा पालनकर्ता वही प्रबल विजयी है। (६६) जिन मनुष्यो ने असीमितता की थी उनको कडक ने पकड लिया, वे अपने घरो मे बैठे रह गये। (६७) मानो उनमें बसे ही न थे। देखो समूद ने अपने पालनकर्ता की अवज्ञा की देखो समूद दुतकारे गये। (६८) और हमारे देवदूत इब्राहीम के पास शुभसंवाद लेकर आये उन्होने प्रणाम किया। इब्राहीम ने प्रणाम का उत्तर दिया फिर इब्राहीम ने देर न की और भुना हुआ बछडा ले आया (६९) (रुकू ६) फिर जब देखा कि उनके हाथ खाने की ओर नहीं

उठते तो उनसे बुरा विचार हुआ और जी ही जी मे उनसे डरे*। वह बोले डर मत हम तो देवदूत हैं लूट की जाति की ओर भेजे गये। (७०) इब्राहीम की पत्नि भी खड़ी थी वह हँसी, फिर हमने उसको इसहाक और इसहाक के पश्चात याकूब का शुभसंवाद दिया। (७१) वह कहने लगी हाय मेरी कमबख्ती, क्या मेरे संतान होगी मैं तो बुढिया हू और यह मेरे पति भी बूढे हैं हमारे यहाँ सतान का होना अचरज की बात है। (७२) देवदूत बोले क्या तू ईश्वर की प्रकृति से अचम्भा करती है, ऐ बैत के**रहने वाले, तुम पर ईश्वर की कृपा और उसकी देनें है वह सराहनीय गुणोवाला है। (७३) फिर जब इब्राहीम से भय दूर हुआ और उनको शुभसंवाद मिला लूत की जाति के सम्बन्ध मे हम से झगड़ने लगे। (७४) इब्राहीम बड़े कोमल हृदय रुजू करने वाल थे। (७५) इब्राहीम इस विचार को छोड दो तुम्हारे पालनकर्ता की आज्ञा आ पहुंची है और उन मनुष्यो पर ऐसा दण्ड आनेवाला है जो टल नहो सकती। (७६) और जब हमारे देवदूत लूत के पास आये तो उनका आना उनको बुरा लगा और उनके आने के कारण से संकुचित हृदय हुए और कहने लगे यह तो बड़ी विपत्ति का दिन है। (७७) लूत की जाति के मनुष्य दौड़े-दौडे लूत के पास आये और यह मनुष्य पहिले से ही बुरे काम किया करते थे। लूत कहने लगे कि भाइयो, यह मेरी पुत्रियाँ हैं यह तुम्हारे लिए अधिक पवित्र हैं तो ईश्वर से डरो और मेरे अतिथियों मे मेरी अपकीर्ती न करो।

---

* इब्राहीम ने जब देखा कि उनके घर आने वाले उनके खाने की ओर हाथ नहीं बढ़ाते तो उनको डर लगा कि ये आनेवाले हमको कोई हानि पहुंचाना चाहते हैं, इसीलिए हमारे नमक से बच रहे हैं। उस समय मनुष्य जिसका खाना नहीं खाते थे उसे अपना शत्रु समझते थे।

** अर्थात इब्राहीम के घर वाली (पत्नी)

क्या तुममे कोई भला मनुष्य नही। (७८) उन्होने उत्तर दिया कि तुमको तो पता है कि हमको तो तुम्हारी पुत्रियो से कोई सम्बन्ध नही। हमारे विचार से तुम भली-भाँति ज्ञाता हो। (७६) लूत बोले आज मुझमे तुम्हारे समान शक्ति होती या मैं किसी शक्तिशाली सहारे का आसरा पकड़ पाता। (८०) देवदूत बोले कि ऐ लूत। हम तुम्हारे पालनकर्ता के भेजे हुए है। यह कदापि तुम तक नही पहुच पायेंगे तो तुम अपने मनुष्यो को लेकर कुछ रात्री से निकल भागो और तुममें से कोई मुड-कर न देखो परन्तु तुम्हारी पत्नि देखे कि जो दण्ड इन मनुष्यो पर उतरनेवाला है वह उस पर भी अवश्य उतरेगा। इनके प्रण का समय प्रात है। क्या प्रात.काल निकट नही। (८१) फिर जब हमारी आज्ञा आई तो ऐ पैगम्बर हमने बस्ती लौट दो और उस पर जमे हुए खजड के पत्थर बरसाये। (८२) जिन पर तुम्हारे पालनकर्ता के यहाँ निशान किया हुआ था और यह अत्याचारियो से दूर नही। (८३) (रुकू ७)

मदियन* की ओर उनके भाई शुऐब को भेजा। उन्होने कहा भाइयो, ईश्वर ही की पूजा करो, उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई पूजित नही और नाप और तौल मे कमी न किया करो। मै तुमको स्मृद्ध देखता हू और मुझको तुम्हारे विपय मे दण्ड के दिन का भय है जो आ घेरेगा। (८४) भाइयो, नाप और तौल न्याय के साथ पूरा किया करो और मनुष्यो को उनकी वस्तुए कम न दिया करो और देश मे उत्पात मत मचाते फिरो। (८५) यदि विश्वास रखते हो तो अल्लाह का दिया जो कुछ बच रहे वही तुम्हारे लिए अच्छा है। मैं तुम्हारी रक्षा करने वाला तो नही हू। (८६) वह कहने लगे कि ऐ शुऐब !

---

* हजरत इब्राहीम के बेटे का नाम मदियन था। फिर उनकी सन्तान का नाम पड़ गया।

क्या तुम्हारी नमाज ने तुमको यह सिखाया है कि जिनको हमारे पिता-पितामह पूजते आये हैं हम उनको छोड बैठें या अपने धन में जिस प्रकार चाहें व्यय न करें, हाँ तुम ही तो सहनशील और भले निकले हो। (८७) शुऐब बोले भाइयो, भला देखो तो सही यदि मुझको अपने पालनकर्ता की ओर से सूझ हुई और वह मुझको अपने से अच्छी जीविका देता है मैं नही चाहता कि जिससे तुमको मना करता हू और वही काम पीछे से स्वय करू, मैं तो जहाँ तक हो सके सुधार चाहता हू और मेरा सफल होना तो बस ईश्वर ही से है। मैंने तो उसी पर भरोसा किया और उसी की ओर ध्यान देता हूं। (८८) भाइयो, मेरी हठ मे आकर कहीं ऐसा अपराध न कर बैठना कि जैसी विपत्ति नूह व हूद की जाति व सालेह की जाति पर आई थी वैसी ही विपत्ति तुम पर भी आवे और लूत की जाति भी तुमसे दूर नही। (८९) अपने पालनकर्ता से क्षमा माँगो, फिर उसी के सामने क्षम याचना करो मेरा पालनकर्ता कृपालु और चाहने वाला है। (९०) वह कहने लगे कि ऐ शुऐब ! जो बातें तुम कहते हो उनमे से बहुत-सी तो हम नही समझते। इसके अतिरिक्त हम तुमको अपने मे निर्बल पाते है और यदि तुम्हारे कुटुम्ब के मनुष्य नही होते तो हम तुम पर पथराव करते और तू हम पर सरदार नही। (९१) शुऐब ने उत्तर दिया कि भाइयो अल्लाह से बढकर तुम पर मेरे कुटुम्ब का दबाव है और तुमने ईश्वर को अपनी पीठ पीछे डाल दिया। जो कुछ तुम करते हो मेरा पालनकर्ता उसको जानता है। (९२) भाइयो, तुम अपने स्थान पर काम करो, मैं अपने स्थान पर काम करता हू। आगे तुमको प्रतीत हो जावेगा कि किस पर दण्ड उतरता है जो उसकी अपकीर्ति कर दे और कौन झूठा है। मार्ग देखते रहो और मैं तुम्हारे साथ मार्ग देखता हू। (९३) जब हमारी आज्ञा आ पहुची तो हमने अपनी कृपा से शुऐब को और उन मनुष्यो को जो उनके साथ विश्वास लाये थे बचा लिया और जो मनुष्य अवज्ञा करते थे उनको चिघाड़ ने आ पकड़ा तो अपने

घरो मे मरे रह गये। (६४) मानो उनमे बसे ही न थे। सुन रखो कि जैसे समूद ईश्वर के यहाँ से दुतकारे गये, मदीअन वाले भी दुतकारे गये। (६५) (रुकू ८)

हमने मूसा को फिरऔन और उसके दरबारियो की ओर अपनी निशानियो और प्रत्यक्ष प्रमाण के साथ पैगम्बर बनाकर भेजा। (६६) तो मनुष्य फिरऔन के कहने पर चले और फिरऔन की बात कुछ मार्ग की न थी। (६७) प्रलय के दिन फिरऔन अपनी जाति के आगे-आगे होगा और उनको नरक मे ले जा प्रविष्ट करेगा और बुरा घाट है जिस पर उतरे हैं। (६८) इस ससार मे लाँछना उनके पीछे लगा दी गई और प्रलय के दिन भी बुरा धर्म है जो दिया गया। (६९) ऐ पैगम्बर यह बस्तियो की सूचनायें हैं जो हम तुमसे वर्णन करते हैं, इनमे से कोई तो उस समय स्थिर है और कोई उजड गई है। (१००) हमने इन मनुष्यो पर अत्याचार किया तो ऐ पैगम्बर जब तुम्हारे पालनकर्ता की आज्ञा आई तो ईश्वर के अतिरिक्त जिन देवी-देवता को वह पुकारा करते थे, वह उनके नाश के कारण हुए। (१०१) और ऐ पैगम्बर जब बस्तियो के मनुष्य अत्याचार करने लगते हैं और तुम्हारा पालनकर्ता उनको पकडता है तो उसकी पकड ऐसी ही है, निसन्देह उसकी पकड दृढ तथा दुखदाई है। (१०२) इनमे उस मनुष्य के लिये जो प्रलय को दण्ड से डरे एक निशानी है। प्रलय का दिन वह दिन होगा जब मनुष्य एकत्रित किये जावेंगे और वह दिन देखने का है। (१०३) और हमने उसमे एक नियत समय तक देर की है। (१०४) जब वह दिन आवेगा तो ईश्वर की आज्ञा के बिना कोई व्यक्ति बात नही कर सकेगा फिर कोई अभागे कोई भाग्यवान होगे (१०५) तो जो अभागे हैं वह नरक मे होगे, वहाँ उनको चिल्लाना और चीखना होगा। (१०६) जब तक नभ व पृथ्वी है सदैव उसीमे रहेंगे परन्तु ऐ पैगम्बर जिसको तुम्हारा पालनकर्ता चाहे। तुम्हारा पालनकर्ता जो चाहता है कर डालता है। (१०७) और जो मनुष्य भाग्यवान हैं वह स्वार्थ मे होगे जब तक नभ

और पृथ्वी है निरन्तर उसी में रहेंगे, परन्तु जिसको ईश्वर चाहे खूब देता है। (१०८) तो ऐ पैगम्बर यह मुशरिकन जिसकी पूजा करते हैं उसके सम्बन्ध मे तुम किसी प्रकार के सन्देह में मत पड़ना। जैसी पूजा पहिले उनके पिता-पितामह पूजते आये हैं वैसी ही पूजा यह भी करते हैं और हम इनका भाग बिना कम-ज्यादा किये पूरा-पूरा पहुचा देंगे। (१०९) (रुकू ९)

हमने मूसा को पुस्तक तौरात दी थी तो मनुष्य उसमे भेद डालने लगे और ऐ पैगम्बर यदि तुम्हारा पालनकर्ता एक बात पहिले से न कह चुका होता तो मनुष्यो मे निर्णय कर दिया गया होता। (११०) यह मनुष्य कुरान की ओर से ऐसे सन्देह पड़े हुए हैं जिसने इनके दुखी कर रखा है। जब समय आवेगा तुम्हारा पालनकर्ता इनको इनके कर्मों का बदला अवश्य देगा क्योकि जैसे-जैसे कर्म यह कर रहे हैं उसको सब ज्ञात है। (१११) तो ऐ पैगम्बर अपने साथियो सहित जिन्होने तुम्हारे साथ क्षमा प्रार्थना की जैसी आज्ञा हुई है सीधे चले जाओ और सीमा से न बढो और जो कुछ तुम कर रहे हो ईश्वर देख रहा है। (११२) मुसलमानो जिन मनुष्यो ने अवज्ञा की, उनकी ओर मत झुकना और नही तो नरकाग्नि तुम्हारे लगेगी और ईश्वर के अतिरिक्त तुम्हारा सहायक कोई नही है, अवज्ञा की ओर झुकने की दशा मे उसकी ओर से भी तुमको सहायता नही मिलेगी। (११३) ऐ पैगम्बर दिन के दोनो सिरे अर्थात प्रात. सन्ध्या और रात्री के पहिले नमाज पढा करो क्योकि भलाइयाँ अपराधो को दूर कर देती है जो मनुष्य ईश्वर का वर्णत करने वाले हैं उनके पक्ष मे यह स्मरण दिलाना है। (११४) ऐ पैगम्बर ठहरे रहो क्योकि अल्लाह अच्छे कामों के बदले को निरर्थक नही होने देता। (११५) तो जो समाज तुमसे पहिले हो चुके हैं उनमे ससार की इतना परोपकार करने वाले क्यो न हुए कि देश मे विद्रोह मचाने से मना करते, परन्तु थोड़े जिनको हमने बचा लिया। और जो अत्याचारी थे वही मार्ग चले जिसमे ऐश पाया और

यह मनुष्य पापी थे। (११६) और ऐ पैगम्बर तुम्हारा पालनकर्ता ऐसा नही है कि बस्तियो को निरर्थक मार डाले और वहाँ के मनुष्य भले हो। (११७) यदि तुम्हारा पालनकर्ता चाहता तो मनुष्यो का एक ही मत कर देता परन्तु मनुष्य सदैव भेद डालते रहेंगे। (११८) परन्तु जिस पर तुम्हारा पालनकर्ता कृपा करे और इसीलिए तो इनको उत्पन्न किया है और तुम्हारे पालनकर्ता का कहा हुआ पूरा हो कि हम भूतो और मनुष्यो से नरक भर देंगे। (११९) ऐ पैगम्बर दूसरे पैगम्बरो के जितने किस्से हम तुमसे वर्णन करते है उनके द्वारा हम तुम्हारे हृदय को साहस बधाते हैं और इनमे सच बात तुम्हारे पास पहुची और धर्म वालो के लिए शिक्षा तथा ज्ञान है। १२०) ऐ पैगम्बर जो मनुष्य विश्वास नही लाते उनसे कह तो कि तुम अपने स्थान पर काम करो हम भी काम करते हैं। (१२१) तुम अपना भी मार्ग देखो और हम भी मार्ग देखते हैं। (१२२) नभ और पृथ्वी की छिपी बाते अल्लाह ही के पास हैं और प्रत्येक काम अन्तत उसी पर जाकर सहारा लेता है तो ऐ पैगम्बर उसी की पूजा करो और उसी पर भरोसा रक्खो और जो कुछ तुम कर रहे हो तुम्हारा पालनकर्ता उससे अनभिज्ञ नही। (१२३) (रुकू १०)

सूरे यूसुफ

मक्के में अवतरित हुई, इसमें १११ आयतें और १२ रुकू है

आरम्भ अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त दयावान तथा कृपालु है। अलिफ-लाम-रा। यह *सूरत खुली पुस्तक अर्थात कुरान की आयतें

* कुछ यहूदियो ने मक्के के बड़े लोगो से लोगो से कहा था कि मुहम्मद साहब से पूछो कि याकूब की संतान शाम देश से मिस्र क्यो कर आई। इसी प्रश्न के उत्तर मे यह सूरत उतरी।

हैं। (१) हमने इस कुरान को अरबी भाषा में अवतरित किया है। जिससे तुम समझ सको। (२) ऐ पैगम्बर हम तुम्हारी ओर उसी ईश्वरीय वाणी के द्वारा यह सूरत भेज कर तुमको एक अच्छा किस्सा सुनाते है और तुम इससे पहले अज्ञान थे। (३) एक समय था कि यूसुफ ने अपने पिता से कहा कि ऐ पिता! मैंने ११ सितारो और सूर्य तथा चन्द्रमा को देखा है कि यह सब मुझको सिर झुका रहे हैं। (४) याकूब ने कहा बेटा पुत्र कही अपने स्वप्न को अपने भाइयो से न कह बैठना कि वह तुझको किसी न किसी विपत्ति मे फँसाने की मन्त्रणा करने लगेंगे। राक्षस मनुष्य का स्पष्ट शत्रु है (५) जैसा तूने स्वप्न मे देखा है वैसा ही होगा कि तेरा पालनकर्ता तुझको मेरे साथ मे स्वीकार करेगा। तुझको स्वप्न की बातों की कल बैठना सिखायेगा और जिस प्रकार ईश्वर ने अपनी देन पहले तेरे पितामह इसहाक और इब्राहीम पर पूर्ण की थी उसी प्रकार तुझ पर और याकूब की सन्तान पर पूरा करेगा तेरा पालनकर्ता जानकार और चमत्कार वाला है। (६) (रुकू १)

ऐ पैगम्बर, यहूद जो पूछते हैं उनके लिए यूसुफ और उनके भाइयो मे निशानियाँ हैं। (७) जब यूसुफ के भाइयो ने आपस मे कहा कि इसके बावजूद कि भाइयों का बड़ा सघ है तो भी यूसुफ और उसका भाई* हमारे पिता को हमसे बहुत अधिक प्यारे है, हमारा पिता स्पष्ट गलती मे है। (८) तो या तो यूसुफ को मार डालो या उसको किसी स्थान पर फेंक आओ तो पिता का पक्ष तुम्हारी ही ओर रहेगा और उसके पश्चात तुम्हारे सब काम ठीक हो जायेंगे। (९) उनमे से एक कहने वाला बोल उठा कि यूसुफ को जान से न मारो। हाँ तुमको मारना है तो उसको अन्धे कुएं मे डाल दो कि कोई मार्ग से चलता

---

* यूसुफ के एक सगे भाई थे और ग्यारह सौतेले।

काफिला उसको निकाल लेगा। (१०) तब सबने मिलकर याकूब से कहा कि ऐ पिता, इसका क्या कारण है कि आप यूसुफ के सम्बन्ध मे हमारा विश्वास नही करते यद्यपि हम तो उसके हितैषी है। (११) उसको कल हमारे साथ भेज दीजिये कि वन के फल इत्यादि खा आयें और खेलें और हम उसकी रक्षा के उत्तरदाई हैं। (१२) याकूब ने कहा कि तुम्हारा इसको ले जाना तो मुझ पर कठिन गुजरता है और मैं इस बात से भी भयभीत हू कि ऐसा न हो कही तुम इससे बेसुध हो जाओ और इसको भेडिया खा जावे (१३) और हम इतने सब हैं तो इस सूरत मे हम अकरमण्य ठहरे। (१४) अन्तत जब यह मनुष्य याकूब की आज्ञा से यूसुफ को अपने साथ ले गये और सब ने इस बात का एका कर लिया कि इसको किसी अन्ध कूप मे डाल दें तो जैसा ठहराया था वैसा ही किया और उसी समय हमने यूसुफ की ओर वही ईश्वरीय वाणी भेजी कि कि तुम एक दिन इनको इनके इस बुरे व्यवहार को जतलाओगे और वह तुमको नही जानेंगे*। (१५) अर्थ यह मनुष्य यूसुफ को कुए मे गिरा थोडी रात्री गये रोते पीटते पिता के समीप आये। (१६) कहने लगे ऐ पिता! जानो हम तो जाकर कबड्डी खेलने लगे और यूसुफ को हमने सामान के पास छोड दिया। इतने मे भेड़िया उसे खा गया और यद्यपि हम सत्य भी कहते हो तो भी आपको हमारी बात का विश्वास न आवेगा। (१७) युसुफ के कुर्त्ते पर झूठमूठ का खून भी लगाये। याकूब ने उनका बयान सुनकर और खून सना कुर्ता देखकर कहा कि यूसुफ को भेडिये ने तो नही खाया अपितु तुमने अपने मुंह उजागर करने के लिए अपने हृदय से एक बात बना ली है। खैर सन्तोष अच्छा है और जो तुम कहते हो ईश्वर ही सहायता करे।

---

* यूसुफ जब कुएं मे गिराये गये तो यह वही आई और जब उनके भाई मिस्र मे अनाज लेने आये तो सच सिद्ध हुई।

(१८) और एक काफिला आ गया, उन्होंने अपने भिश्ती को भेजा। ज्यों ही उसने अपना डोल लटकाया यूसुफ उसमे आ बैठे पुकार उठा अहा ! यह तो लड़का है। काफिले वालों ने यूसुफ को व्यापार का धन कह कर छिपा रक्खा और इस दशा को छिपाने की जो तदबीरें वह कर रहे थे अल्लाह को खूद ज्ञात थीं। (१९) इतने मे तो भाइयो को यूसुफ की सूचना लगी और उन्होंने उसको अपना सेवक बना कर बेचा। काफिले वालों ने कम मूल्य अर्थात कुछ दिरहम के बदले मे उसको मोल ले लिया और वह यूसुफ की इच्छा न रखते थे। (२०) (रुकू २)

अन्तत: मिस्र के मनुष्यों मे मिस्र के शासक से जिसने यूसुफ को मोल लिया उसमें अपनी स्त्री जुलैखा से कहा इसको अच्छी प्रकार रक्खो अचरज नही यह हमको लाभ पहुंचाये या इसको हम पुत्र ही बना लें और यों हमने यूसुफ को देश मे स्थान दिया और अर्थ यह था कि हम उनकी बातों की कल बैठना सिखायें और अल्लाह अपने विचार पर दृढ़ है परन्तु प्राय. मनुष्य नही जानते। (२१) जब यूसुफ अपने यौवन को पहुंचा, हमने आज्ञा और ज्ञान दिया हम भलाई करने वालों को इसी प्रकार बदला दिया करते हैं। (२२) जुलेखा जिसके घर में यूसुफ थे उसने उनसे अनाचार का विचार किया और द्वार बन्दकर दिये और कहा शीघ्र आओ यूसुफ ने कहा अल्लाह बचावे व तुम्हारा पति मेरा स्वामी है, उसने मुझको अच्छी प्रकार रक्खा है मैं उसकी धरोहर मे बुराई नहीं कर सकता क्योंकि अत्याचारी मनुष्य भलाई नही पाते। (२३) वह तो यूसुफ के साथ बुरी इच्छा कर ही चुकी थी और यूसुफ को अपने पालनकर्ता की ओर प्रमाण कि वह मेरा स्वामी है उस समय न सूझ गई होती तो वह भी उसके साथ बुरी इच्छा कर बैठे होते। इसी प्रकार हमने यूसुफ को दृढ़ रखा कि उससे व्यभिचार और निर-लज्जता उनसे दूर रखें, कुछ सन्देह नहीं कि वह हमारे चुने सेवको में

से था। (२४) और दोनों द्वार की ओर भागे और स्त्री ने पीछे से यूसुफ का कुर्ता फाड* लिया और स्त्री का पति द्वार के पास मिल गया। वह पति से पेशबन्दी के ढग पर बोली कि जो व्यक्ति तेरी पत्नि के साथ अनाचार की इच्छा करे बस उसका यही दण्ड है कि कैद कर दिया जाय या कडा दण्ड दिया जाय। (२५) यूसुफ ने कहा कि यह स्त्री स्वय मुझसे मेरी चाहने वाली हुई थी और उसके कुटुम्ब वालो मे से साक्षी ने यह बात बताई कि यूसुफ का कुर्ता देखा जाय यदि आगे से फटा है तो स्त्री सच्ची और यूसुफ झूठा। (२६) और यदि इसका कुर्ता पीछे से फटा है तो स्त्री झूठी और यूसुफ सच्चा। (२७) तो जब यूसुफ के कुर्ते को पीछे से फटा हुआ देखा तो उसने कहा कि यह तुम स्त्रियो के चरित्र हैं, कुछ संदेह नही कि तुम स्त्रियो के वड़े चरित्र हैं। (२८) यूसुफ इसको जाने दो और स्त्री तू अपने अपराध की क्षमा माँग क्योकि प्रत्यक्ष तेरा ही अपराध था। (२९) (रुकू ३)

नगर मे स्त्रियो ने चर्चा थी कि अजीज**की स्त्री अपने सेवक से अनुचित स्वार्थ प्राप्त करना चाहती है। सेवक का प्रेम उसके हृदय मे स्थान पकड गया है। हमारे निकट तो वह स्पष्टतया अपराधी हैं। (३०) तो जव मिस्र के अजीज की स्त्री ने इनके ताने सुने, उनको बुलवा भेजा और उनके लिए एक महफिल की तैयारी की और फल काट-काट कर खाने के लिए एक-एक छुरी उनमे से प्रत्येक को दी और ठीक समय पर यूसुफ से कहा कि इनके सामने बाहर आओ और जरा अपना रूप तो दिखाओ फिर जब स्त्रियो ने यूसुफ को देखा तो उन पर

---

* यानी यूसुफ जब भागे और जुलेखा ने उनको दौड़कर पकड़ना चाहा तो यूसुफ का कुर्ता उसके हाथ से आकर फट गया।

** "अजीज" पहले मिस्र के वजीर का खिताब या बाद को मुल्क खिताब बादशाह का होगया था।

यूसुफ की ऐसी शान बैठी कि उन्होने अपने हाथ काट लिए और कहने लगीं अल्लाह की कसम यह मनुष्य तो नहीं, हो न हो यह एक बड़ा देवदूत* है। (३१) अजीज मिस्र की स्त्री बोली बस यही तो है जिसके सम्बन्ध मे तुमने मुझको लाँछना दी कि मैंने अपना अनुचित स्वार्थ इससे प्राप्त करना चाहा था। परन्तु उसने बचाया और उसको मैं इससे कह रही हूं यदि उसको नही करेगा तो अवश्य बन्दी किया जावेगा और अवश्य जलील होगा। (३२) यह सुनकर यूसुफ ने प्रार्थना की कि ऐ मेरे पालनकर्ता! जिसकी ओर यह स्त्री मुझको बुला रही है बन्दी रहना मुझको उससे कहीं अधिक पसंद है यदि इनके चरित्रों को तूने मुझसे दूर नही किया तो मैं इनसे मिल जाऊगा और मूर्खों में हो जाऊंगा। (३३) तो यूसुफ के पालनकर्ता ने उनकी सुनली और उनसे स्त्रियो के चरित्रो को दूर कर दिया ईश्वर सुनता जानता है। (३४) फिर जब मनुष्यों ने यूसुफ की निष्कलंक निशानियाँ देख लीं, उसके पश्चात भी जुलेखा की हृदयशान्ती और यूसुफ को उसकी दृष्टी से दूर रखने के लिए उनको यही उचित प्रतीत हुआ कि एक समय तक उसको बन्दी रक्खें। (३५) (रुकू ४)

यूसुफ के साथ दो मनुष्य बन्दीगृह में प्रविष्ट हुए उन्होंने स्वप्न देखे कि यूसुफ को बुजुर्ग समझकर स्वप्नफल पूछने के अर्थ से एक ने कहा कि मैं देखता हूं कि सुरा निचोड़ रहा हूं और दूसरे ने कहा कि मैं देखता हूं कि अपने सर पर रोटियाँ उठाये हुए हूं और पक्षी उनमें से खा-खा जाते हैं। यूसुफ हमको हमारे इस स्वप्न का स्वप्नफल बताओ क्योंकि तुम हमको भले इन्सान दिखाई देते हो। (३६) यूसुफ ने उत्तर दिया कि जो खाना तुमको अब मिलनेवाला है वह तुम तक आने नहीं पावेगा कि उसके स्वप्न का स्वप्नफल बता दूंगा**यह उन बातो में से

---

* अर्थात ये मनुष्य नहीं वरन स्वर्गीय नवयुवक जान पड़ता है।

**यानी बहुत जल्दी।

जो मुझको मेरे पालनकर्ता ने सिखलाई है। मैं आरम्भ से उन मनुष्यों का धर्म छोडे बैठा हूं जो ईश्वर पर विश्वास नही रखते और प्रलय को अस्वीकार करनेवाले हैं। (३७) मैं अपने पिता-पितामह इब्राहीम और इसहाक और याकूब के धर्म पर चल रहा हूँ। हमारा काम नही कि ईश्वर के साथ किसी वस्तु को देवता बनावें। यह विश्वास ईश्वर की एक कृपा है जो उसने सब पर और मनुष्यो पर की है परन्तु प्रायः मनुष्य कृतज्ञता प्रकट नही करते। (३८) बन्दीगृह के मित्रो! जुदे-जुदे पूजित अच्छे या एक ईश्वर शक्तिशाली। (३९) तुम ईश्वर के अतिरिक्त कई नामो ही की पूजा करते हो जो तुमने और तुम्हारे पिता पितामह ने गढ रखे हैं। ईश्वर ने तो इनका कोई प्रमाण नही दिया। साम्राज्य तो एक अल्लाह ही का हैं और उसने आज्ञा दी है कि केवल उसी की प्रार्थना करो, यही सीधा मार्ग है, परन्तु प्रायः मनुष्य नही जानते। (४०) ऐ बन्दीगृह के मित्रो! तुममे से एक तो अपने स्वामी को सूरापान करायेगा और दूसरा फाँसी पर लटकाया जायगा और पक्षी उसका सिर खायेंगे। जिस बात को तुम पूछते थे निर्णय हो चुका है। (४१) और जिस मानव के विषय मे यूसुफ ने समझाया था कि इन दोनो मे से एक का छुटकारा हो जायगा उससे कहा अपने स्वामी के पास मेरी चर्चा करना कि मैं अकारण बन्दी हूं। सो राक्षस ने उसको अपने स्वामी से चर्चा करना भुला दिया तो यूसुफ कई वर्ष बन्दीगृह में रहे। (४२) (रुकू ५)

इस मध्य मे सम्राट ने वर्णन किया कि मैं सात मोटी गायें देखता हूं उनको सात दुबली खायें खा रही हैं और सात हरी बालें हैं और दूसरी सात सूखी। दरबार के मनुष्यो! यदि तुमको स्वप्न का स्वप्न-फल देना आता हो तो मुझ से इस स्वप्न विषय मे अपनी राय प्रकट करो। (४३) उन्होने कहा कि यह तो कुछ उडते विचार हैं और ऐसे विचारो का फल हमको नही आता। (४४) वह व्यक्ति जो यूसुफ के उन दो साथियो मे से छुटकारा पा गया था और उसको एक अवधि

के पश्चात यूसुफ का किस्सा स्मरण हुआ, बोल उठा कि मुझको बन्दी-गृह तक जाने की आज्ञा हो तो मैं यूसुफ से पूछ कर इसका फल तुमको बताऊँ। (४५) उसको आज्ञा हुई और उसने यूसुफ से जाकर कहा कि ऐ यूसुफ! बड़ा सच्चा स्वप्नफल बतानेवाले हो। भला इस विषय में तो तुम अपनी राय हमसे प्रकट करो कि सात मोटी गायों को सात दुबली गायें खाती हैं और सात हरी बालें और दूसरी सात बालें सूखी इसका उत्तर दो तो मैं मनुष्यों के पास लौट जाऊं जिससे इस फल का वर्णन उनको पता हो। (४६) यूसुफ ने कहा स्वप्न का फल यह है कि तुम सात वर्ष तक निरन्तर काश्तकारी करते रहोगे तो जो उपज काटो उसको उसी की बालो ही मे रहने देना जिससे गल्ला गले सड़े नही परन्तु हाँ उतना लेलेना जो तुम्हारे खाने के काम में आये। (४७) फिर इसके पश्चात सात वर्ष बड़े कठिन अकाल के आयेंगे कि जो कुछ तुमने पहले से इन वर्षों के लिए एकत्रित कर रखा होगा खाजायेंगे परन्तु हाँ थोड़ा जो कुछ तुम बीज के लिए बचा रखोगे उतना ही मनुष्यों से बच जायगा। (४८) फिर उसके पश्चात एक ऐसा वर्ष आयेगा जिसमें मनुष्यों के लिए वर्षा होगी और खेती के अतिरिक्त उस वर्ष अंगूर भी खूब फलेंगे मनुष्य मदिरा के लिए उसके रस भी निचोड़ेंगे। (४९) (रुकू ६) सारांश यह कि *साकी ने यह सब स्वप्न-फल जाकर सम्राट से कहा।

सम्राट ने आज्ञा दी कि यूसुफ को हमारे सामने लाओ तो जब चोबदार यूसुफ के पास यह आज्ञा लेकर पहुंचा तो उन्होने कहा तुम अपनी सरकार के पास लौट जाओ और उनसे पूछो कि उन स्त्रियों की भी दशा प्रतीत है जिन्होंने मुझको देखकर अपने हाथ काट लिये थे

---

*साकी का अर्थ है पिलानेवाला। यह व्यक्ति चूँकि पानी आदि पिलाया करता था इसीलिए इस नाम से याद किया गया।

अर्थात वह मेरे पीछे पड़ी थी या मैं उनके पीछे पड़ा था इनके चरित्रों को मेरा पालनकर्ता जानता है। (५०) अतः सम्राट ने इन स्त्रियों को बुलवाकर उनसे पूछा कि जिस समय तुमने यूसुफ को अपना अर्थ व्यभिचार का प्राप्त करना चाहा था उस समय तुमको क्या मामला पेश आया। उन्होंने अर्ज किया "हाशा लिल्लाह" हमने तो यूसुफ मे किसी प्रकार की बुराई नही पाई इस पर अजीज की पत्नि बोल उठी कि अब सब बात प्रकट हो गई। मैंने यूसुफ से अपना अनुचित स्वार्थ प्राप्त करना चाहा था और यूसुफ सच्चो मे है। (५१) यह माजरा चोबदार ने यूसुफ से वर्णन किया। यूसुफ ने कहा मैंने कभी की दबी दबाई बात इसलिए उखाडी कि मिस्र के अजीज को पता होजाय कि मैंने उसकी पीठ पीछे उसकी धरोहर मे खयानत नही की और यह भी पता रहे कि खयानत करने वालो की तदबीरो को ईश्वर चलने नही देता। (५२)



तेरहवाँ पारा (वमा उबरिउ)

मैं यूसुफ अपने विषय मे नही कहता कि मैं पवित्र हू क्योंकि इन्द्रियाँ तो बुराई के लिए उभारती ही रहती हैं परन्तु यह कि मेरा पालनकर्ता अपनी कृपा करे कुछ सन्देह नही कि मेरा पालनकर्ता क्षमा करने वाला दयालु है। (५३) समाज ने आज्ञा दी कि यूसुफ को हमारे सामने लाओ कि हम उसको अपनी सेविकाई के लिए रखेंगे, जब यूसुफ से बात-चीत की तो कहा आज तूने विश्वासपात्र होकर हमारे पास स्थान पाया। (५४) यूसुफ ने अर्ज किया मुझको देशीय कोष पर नियुक्त कर दीजिये, मैं अत्यन्त निगहबान और चतुर हू। (५५) यो हमने यूसुफ को देश में स्थान दिया कि उसमें जहाँ चाहे रहे। हम

जिस पर चाहते हैं अपनी कृपा करते हैं और अच्छे काम करने वालो के परिणाम निरर्थक नही होने देते। (५६) और जो मनुष्य विश्वास लाये और संयम करते रहे इनका अन्तिम परिणाम भला है। (५७) (रुकू ७)

यूसुफ के भाई आये, और यूसुफ के पास गये, तो यूसुफ ने उनको पहचान लिया और उन्होंने यूसुफ को नही पहचाना। (५८) जब यूसुफ ने भाइयों का सामान उनके लिए तैयार कर दिया तो कहा अपने सौतेले भाई इब्नयामीन को लेते आना, क्या तुम नहीं देखते कि हम नाप तौल पूरी कर देते हैं और हम सबसे अच्छे मेजमान हैं (५९) फिर यदि तुम उसको हमारे पास न लाये तो तुमको हमारे यहाँ अन्न मिलेगा और तुम हमारे पास न आना। (६०) उन्होने कहा कि हम जाते ही उसके पिता से उसके संबन्ध में विनती करेंगे और अवश्य हमको करना है। (६१) यूसुफ ने अपने सेवको को आज्ञा दी कि इन की पूंजी उन्ही की बोरियों में रख दो जिससे जब मनुष्य अपने बाल-बच्चो की ओर लौटकर जायें तो अपनी पूंजी को पहचानें अचरज नही यह फिरे भी आवें (६२) तो जब अपने पिता के पास लौटकर गये तो निवेदन किया कि ऐ पिता, हमे अन्न की मनाही कर दी गई है सो आप हमारे भाई को भी हमारे साथ भेज दीजिये कि हम अन्न लावें और हम उसकी रक्षा के जिम्मेदार हैं। (६३) कहा कि मैं इस पर तुम्हारा क्या विश्वास करूं परन्तु वैसा ही यकीन जैसा मैंने पहले इसके भाई पर किया था सो ईश्वर सबसे अच्छी रक्षा करनेवाला है और वह सब कृपालुओं से अधिक कृपालु है। (६४) जब इन मनुष्यो ने अपना सामान खोला तो देखा कि इनकी पूंजी भी इनको लौटा दी गई है फिर पिता की ओर आये और कहने लगे कि ऐ पिता ! हमे और क्या चाहिए, यह हमारी पूंजी फिर हमको लौटा दी गई है अब हमको आज्ञा दो कि बिनयामीन को साथ लेकर जावें अपने घर

के लिए सामग्री लावे और हम अपने भाई बिनयामीन की रक्षा करेंगे और एक बार ऊट भर अन्न और लावेंगे, यह अन्न थोडा है । (६५) पिता ने कहा जब तक तुम ईश्वर की कसम खाकर मुझको पूरा वचन न दोगे कि तुम इसको अवश्य मेरे पास फिर आओगे । परन्तु यह कि तुम स्वय ही घिर जाओ तो विवशता है । ऐरा वचन किये बिना तो मे इसको तुम्हारे साथ कदापि नही भेजूँगा । तो जब उन्होने पिता को अपना पक्का वचन दे दिया तो पिता ने कहा कि वचन जो हम कर रहे हैं अल्लाह उसका साक्षी है । (६६) और पिता ने उनको चलते ममय यह भी चेतावनी दी कि लडको देखो एक द्वार से प्रवेश न होना कि कही बुरी दृष्टि न लग जाय अपितु प्रथक-प्रथक द्वारो से प्रविष्ट होना और मैं ईश्वर की किसी वस्तु से नही वचा सकता । आज्ञा तो अल्लाह ही की है मैंने उसी पर विश्वास कर लिया है और भरोसा करने वालो को चाहिए कि उसी पर भरोसा करे । (६७) और जब वह उसी प्रकार जैसे उनके पिता ने उनसे कह दिया था मिस्र मे प्रविष्ट हुए तो यह चतुराई ईश्वर के सामने इनकी कुछ भी काम नही आ सकती थी बह तो याकूब की एक हार्दिक इच्छा थी जिसको उन्होने पूरा किया और इसमे सदेह नही कि याकूब भी हमारे सिखाये से सावधान था परन्तु प्राय. मनुष्य नही जानते । (६८) (रुकू ८)

जब यूसुफ के पास गये तो यूसुफ ने अपने भाई को अपने पास बैठा लिया कहा कि मैं तुम्हारा भाई यूसुफ हू सो जो बुरा व्यवहार वह तुम्हारे साथ करते रहे हैं उसका कुछ दुःख मत करो । (६९) फिर जब यूसुफ ने भाइयो को उनका सामान साथ पहुचा दिया तो अपने भाई की बोरी मे पानी का कटोरा रखवा दिया । फिर एक करने वाले ने पुकारा कि काफिले वालो हो न हो तुम्ही चोर हो । (७०) यह मनुष्य पुकारने वालो की ओर घिरकर पूछने लगे कि क्यो जी तुम्हारी क्या वस्तु खो गई है । (७१) उन्होने कहा राजकीय माप

हमको नही मिलता और जो व्यक्ति उसे लाकर प्रस्तुत करे उसको एक बोझ ऊँट पारितोषिक मिलेगा और मैं उसका स्वामी हू। (७२) यह सुनकर यह कहने लगे देश में उत्पात करने की इच्छा से नहीं आये और न हम कभी चोर थे। (७३) कटोरे के ढूँढ़ने वाले बोले कि यदि तुम झूठे निकले तो फिर चोर को क्या दण्ड। (७४) वह कहने लगे कि चोर को यह दण्ड कि जिसकी बोरी मे कटोरा निकले वही* स्वय उसके बदले मे जावे अर्थात कटोरे के बदले समाज का सेवक। हम तो अत्याचारियो को इसी प्रकार का दण्ड दिया करते हैं। (७५) अन्ततः यूसुफ ने अपने भाई की बोरी से पहले दूसरे भाइयों की बोरियो की तलाशी लिवाना आरम्भ की, फिर अपने भाई के बोरे से कटोरा निकलवाया। यों हमने यूसुफ के लाभ के लिए बहाना किया सम्राट मिस्र के नियम के अनुसार वह अपने भाई को नही रोक सकते थे, परन्तु यह कि यदि ईश्वर को स्वीकार होता तो कोई दूसरा मार्ग निकलता है। हम जिसको चाहते हैं उसके पद ऊँचे कर देते हैं, कई सावधानी करनेवालो से एक सावधान बढ़कर है। (७६) जब इब्नयामीन के बोरे से कटोरा निकला तो भाई कहने लगे कि यदि इसने चोरी की हो तो अचरज की बात नही इससे पहले इसका भाई यूसुफ**भी चोरी कर चुका है तो यूसुफ ने इसका उत्तर देना चाहा परन्तु उनको अपने हृदय मे रखा। इन पर उसको प्रकट न होने दिया

---

*इब्राहीम न्याय-शास्त्र के अनुसार चोर को एक वर्ष तक माल वाले मनुष्यों की गुलामी (दासता) करनी पड़ती थी। मिस्र में चोर को मार-पीट कर उससे दूना भरना भराते थे। यूसुफ ने अपने भाई को अपने पास रोक रखने के लिए यह उपाय किया था।

**यूसुफ के भाइयों ने यूसुफ पर झूठ लफंट लगाया है। और कुछ कहते हैं कि यूसुफ अपने घर से छिपाकर गरीबों को अन्न या भोजन दे आते थे, इसलिए उनके भाइयों ने उन पर चोरी का दोष लगाया है।

और कहा कि तुम बडे नीच हो और जो कहते हो ईश्वर ही इसको खूब जानता है। (७७) कहने लगे ऐ अजीज ! इसके पिता बहुत बूढे हैं, सो आप कृपा करके इसके स्थान पर हममे से किसी को रख लीजिए हमको तो आप बडे कृपा करने वाले प्रतीत होते हैं। (७८) यूसुफ ने कहा अल्लाह बचावे कि हम उस व्यक्ति को छोडकर जिसके पास हमने अपनी वस्तु पाई है किसी दूसरे व्यक्ति को पकड रखे। ऐसा करें तो हम अपराधी ठहरें। (७९) (रुकू ९)

तो जब यूसुफ से निराश हो गये तो अकेले मन्त्रणा करने बैठे। जो सबमे बड़ा था बोला कि क्या तुमको पता नही कि पिताजी ने ईश्वर की कसम लेकर तुमसे पक्का वचन लिया है और पहले यूसुफ के साथ मैं तुमसे एक अपराधी हो ही चुका है। तो जब तक मुझको पिता आज्ञा न दें या जब तक ईश्वर मेरे लिए कोई सूरत न निकाले मैं तो उस स्थान से टलने वाला नही ईश्वर ही सबसे बढकर पूर्ति करने वाला है। (८०) तो तुम पिता की सेवा मे लौट जाओ और प्रार्थना करो कि पिता ! आपके लडके ने चोरी की हमने वही बात कही है जो हमको प्रतीत हुई है और वह जो हमने इब्नयामीन की रक्षा का जिम्मा लिया था तो कुछ हमको अदृष्ट की सूचना नही थी। (८१) आप उस बस्ती से पूछ लीजिये जहाँ हम थे और काफिले से जिसमें हम आये हैं और हम बिलकुल सत्य कहते हैं। (८२) जब से वह बातें कही गईं तो वह बोले कि इब्नयामीन ने तो चोरी नही की अपितु तुमने अपने हृदय से एक बात बना ली है तो खैर अब सतोष अच्छा है मुझको तो आशा है कि अल्लाह मेरे सब लड़को को मेरे पास लावेगा क्योंकि वह ज्ञाता चमत्कार वाला है। (८३) याकूब पुत्रो से अलग जा बैठे और कहने लगे 'हाय यूसुफ' और शोक के मारे उनकी दोनो आँखें श्वेत हो गई थी और वह जी ही जी मे घुटा करते थे। (८४) पिता की यह दशा देखकर पुत्र कहने लगे कि ईश्वर की कसम तुम तो सदैव यूसुफ ही की स्मृति मे लगे रहोगे यहाँ तक कि

बीमार हो जाओगे या मर ही जाओगे। (८५) याकूब ने कहा मैंने तुमसे तो कुछ नही कहता जो चिन्ता और दुःख मुझको है उसकी पुकार ईश्वर ही से करता हूं और ईश्वर ही की ओर से मुझको वह बाते पता हैं जो तुमको पता नही। (८६) लडको एक बार फिर मिस्र जाओ और यूसुफ और उसके भाई की टोह लगाओ और ईश्वर की कृपा से विश्वास हो क्योकि ईश्वर की कृपा से वही निराश हुआ करते हैं जो काफिर है। (८७) तो जब यूसुफ तक पहुँचे तब गिड़-गिड़ाने लगे कि उजीज ! हम पर और हमारे बाल-बच्चो पर कठिनाई पड रही है और हम कुछ थोडी-सी पूँजी लेकर आये हैं, हमको पूरा अन्न दिलवा दीजिए और हमको अपना दान दीजिए क्योकि अल्लाह दान करने वालो को अच्छा बदला देता है। (८८) अब तो यूसुफ मे ही न रहा गया और कहने लगे कि तुमको कुछ स्मरण भी है, जिस समय तुम मूर्खता पर थे तो तुमने यूसुफ और उसके भाई के साथ क्या किया था । (८९) इसके कहने से भाइयो को ध्यान हुआ और कहने लगे क्या सच तुम्ही यूसुफ हो ? यूसुफ ने कहा मैं ही यूसुफ हू और यह मेरा ही भाई है हम पर अल्लाह ने कृपा की। जो कोई संयमी हो और दृढ़ रहे तो अल्लाह भला करने वालो के परिणाम को निरर्थक नही होने देता ? (९०) बोले ईश्वर की कसम कुछ सन्देह नही कि तुमको अल्लाह ने हमसे अधिक पसन्द रक्खा और हम ही अपराधी थे। (९१) यूसुफ ने कहा अब तम पर कोई अपराध नही। ईश्वर तुम्हारे अपराध क्षमा करे और वह सब कृपालुओ से अधिक कृपालु है। (९२) तुम्हारे कहने से प्रतीत हुआ कि पिता की आँखें जाती रही है तो मेरा यह कुर्ता ले जाओ और इसको पिता के मुंह पर डाल दो कि, वह देखने लगेंगे और अपने पूरे कुटुम्ब को मेरे पास ले आओ। (९३) (रुकू १०)

काफिला (व्यापारियो का झुंड) मिस्र से चला ही था कि उनके पिता ने कहा कि मेरा कहना निरर्थक न बनाओ तो एक बात कहूं कि

मुझको तो यूसुफ़ जैसी गन्ध आ रही है। (६४) तो जो पुत्र याकूब के पास ठहरे थे वह कहने लगे की ईश्वर की कसम तुम तो अपनी पुरानी गलती मे हो। (६५) फिर जब यूसुफ को जीवन मिलने का समाचार देने याकूब के पास आया यूसुफ का कुर्ता याकूब के मु ह पर डाल दिया उनको तुरन्त ही दिखलाई देने लगा। अब याकुब ने पुत्रो से कहा कि क्या मैं तुमसे नही कहा करता था कि मैं अल्लाह की ओर से वह बातें जानता हू जो तुम नही जानते। (६६) यह बोले पिता, ईश्वर से हमारे अपराध क्षमा करवा दे, हमी अपराधी थे। (६७) याकूब ने कहा मैं अपने पालनकर्ता से तुम्हारे अपराधो को क्षमा कराऊगा, वही क्षम्य तथा कृपालु है। (६८) फिर जब यह अन्तिम बार यूसुफ ने अपने माता पिता को प्रणाम करके उन्हें अपने पास स्थान दिया और सबकी ओर सबोधन करके कहा कि नगर मिस्र मे प्रविष्ट हो और ईश्वर ने चाहा तो सब उनके आगे सुख के साथ रहोगे। (६६) मिस्र के नियम के अनुसार यूसुफ ने अपने माता-पिता को सिहासन पर ऊ चा बैठाया और सब नियमानुसार यूसुफ को ताजीम के लिए उनके आगे सर झुका कर साष्टाग दण्डवत की और यूसुफ ने अपसा स्वप्न स्मरण करके अपने पिता से निवेदन किया कि हे पिता ! वह जो मैंने पहले स्वप्न देखा था यह उस स्वप्न का फल* है। मेरे पालन-कर्ता ने आज उस स्वप्न को सत्य कर स्खिलाया और उसके अतिरिक्त उसने मुझ पर कृपाए कि मुझको बन्दीगृह से निकाला और तुमको गाँव से ले आया और यद्यपि मुझ मे और मेरे भाइयो मे राक्षस ने उत्पात डलवा दिया था बाहर से तुम सबको मुझ से ला मिलाया। निस्सदेह मेरे पालनकर्ता को जो स्वीकार होता है वह उसका ढग खूब

---

* यूसुफ ने ११ सितारो और चाँद-सूरज को स्वप्न मे सिजदा करते देखा था। वह यही ग्यारह भाई और उनके मा-बाप थे।

जानता है क्योंकि वह जानकार और चमत्कारवाला है। (१००) यूसुफ का मन संसार से तृप्त हो गया और ईश्वर से मिलने का शौक हुआ तो उन्होंने प्रार्थना की ऐ मेरे पालनकर्ता! तूने मुझको को साम्राज्य दिया और मुझको स्वप्न की बातो का स्वप्नफल कहना भी सिखलाया। नभ और पृथ्वी के उत्पन्न करनेवाले संसार और प्रलय दोनों मे तू ही मेरा काम संभालनेवाला है मुझको भले मनुष्यों वाली मृत्यु दे। (१०१) ऐ पैगम्बर यह कुछ अदृष्ट की बातें हैं जिनको हम उसी के द्वारा तुम्हे भेजते हैं। और तू उनके पास न था जिस समय यूसुफ के भाइयो ने अपना पक्का विचार कर लिया था। कि यूसुफ को कुएँ मे डाल दें। और वह उनके मारने के ढंग सोच रहे थे। (१०२) बहुत मनुष्य विश्वास लाने वाले नही यद्यपि तू कितना ही चाहे। (१०३) और तू उनसे उस पर कुछ भलाई नही माँगता यह कुरान और तो नही परन्तु सब संसार को शिक्षा है। (१०४) (रुकू ११)

नभ और पृथ्वी में कितनी निशानियाँ हैं जिन पर से होकर मनुष्य जाते हैं और उन ध्यान नही देते। (१०५) और प्रायः मनुष्यों की दशा यह है कि ईश्वर को मानते हैं और शिर्क भी करते हैं। (१०६) तो क्या इससे निकट हो गये हैं कि इन पर प्रलय आ जावे और इनको सूचना भी न हो। (१०७) ऐ पैगम्बर! इन से कहो मेरा ढंग तो यह है कि सबको ईश्वर की ओर समझ-बूझ कर बुलाता हूं। मैं और जो मनुष्य मेरे* है और अल्लाह पवित्र है मैं मुशरिकों में नही हूं। (१०८) और पैगम्बर हमने तुमसे पहले भी वस्तियो ही के रहनेवाले मनुष्य ही पैगम्बर बनाकर भेजे थे कि हमने उनपर ईश्वरीय वाणी भेजी थी तो क्या यह मनुष्य देश में चले-फिरे नही कि देख लेते कि जो मनुष्य इनसे पहले हो गये है उनका कैसा फल हुआ और संयमियो के के लिए परलोक-वास अच्छा हैं। तो क्या तुम नही समझते। (१०९)

---

*अर्थात मैं और मेरे अनुयायी ही अल्लाह की ओर बुलाते हैं।

यहाँ तक कि पैगम्बर निराश हो गये और विचार करने लगे कि उनसे झूठ कहा था तो हमारी सहायता उनके पास आ पहुची तो जिसको हमने चाहा बचा लिया और अपराधियो से तो हमारा दण्ड टल ही नही सकता। (११०) निस्सदेह बुद्धिमानो के लिए इन मनुष्यो की दशा से शिक्षा है। यह कुरान कोई बनाई हुई बात तो नही है अपितु जो देवी पुस्तकें इससे पहले हैं उनका प्रमाण है और इसमे उन मनुष्यो के लिए जो विश्वास वाले हैं प्रत्येक वस्तु का ब्योरे के अनुसार वर्णन है और शिक्षा और आज्ञा है। (१११) (रुकू १२)



सूरे राद

मक्के में अवतरित हुई इसमें ४३ आयतें और ६ रुकू हैं

आरम्भ अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त दयावान तथा कृपालु है। अलिफ-लाम-मीम-रा। पैगम्बर यह पुस्तक कुरान की आयतें हैं और तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से जो कुछ तुम पर अवतरित हैं यह सत्य है किन्तु बहुत मनुष्य नही मानते। (१) अल्लाह वह है जिसने नभ को बिना किसी सहारे के ऊँचा बना खड़ा किया जैसा कि तुम देख रहे हो फिर सिहासन पर जा विराजा और चाँद सूर्य को काम मे लगाया कि प्रत्येक समय निश्चित तक चला जा रहा है। वही सारे ससार का प्रबन्धकर्ता है अपनी प्रकृति की निशानियाँ विवरण के साथ वर्णन करता है जिससे तुम को अपने पालनकर्ता से मिलने का विश्वास हो। (२) वह है जिसने पृथ्वी को विस्तृत किया और उसमे पर्वत और नदी बना दी और उसमें प्रत्येक प्रकार के फलो के दो दो रूप उत्पन्न किये। रात्री को दिनसे ढाँपता है इन बातो मे उन मनुष्यो के लिए जो ध्यान करते है निशानियाँ हैं। (३) और पृथ्वी मे पास-पास कई खेत

हैं और अंगूर के उपवन और खेती और खजूर के पेड, जड़ मिली और बिना मिली यद्यपि सबको एक ही पानी दिया जाता है और फलो मे हम एक को एक पर गुण देते है उसमे निशानियाँ है उनको जो समझते हैं। (४) और यदि तू अचरज की बात चाहे तो उनका कहना अचरज है कि जब हम मिट्टी हो जायँगे तो क्या हम नये बनेंगे। यही मनुष्य हैं जिन्होने अपने पालनकर्ता से मना किया और यही हैं जिनकी गर्दनो मे प्रलय के दिन तौंक* होगे। यही नरकवासी है और सदैव नरक ही मे रहेगे। (५) और ऐ पैगम्बर भलाई से पहले यह तुमसे बुराई की शीघ्रता मचा रहे हैं यद्यपि इनसे पहिले कहावते चली आती है और ऐ पैगम्बर! इसमे कुछ रोक नही कि तुम्हारा पालनकर्ता मनुष्यो व उनके उच्छृंखलता के होने पर भी क्षमा करने वाला है और तुम्हारे पालनकर्ता की मार भी बडी कठोर है। (६) काफिर कहते हैं कि इस पर इसके पालनकर्ता की ओर से निशानी**क्यो नही अवतरित हुई ? पैगम्बर तुम तो केवल डराने वाले हो और प्रत्येक जाति को एक मार्ग बताने वाला है। (७) (रुकू १)

प्रत्येक मादा जो बच्चा पेट मे लिए हुए है उसको अल्लाह ही जानता है और पेट का घटना-वढना उसी को ज्ञात रहता है और उसके यहाँ प्रत्येक वस्तु का अनुमान है। (८) स्पष्ट और अदृश्य का जानने वाला सबसे ऊचा है। (९) तुम में जो कोई बात चुपके से कहे और जो व्यक्ति पुकार कर कहे और जो रात्री के समय छिपा हो और दिन मे गलियो मे फिरता हो उसके निकट समान है। (१०) उस सेवक के आगे और पीछे पहरेवाले हैं जो उसको अल्लाह की आज्ञा से बचाते

---

*तौंक जो कैदियो के गले में डाला जाता था।

**काफिर कहते थे कि जैसे हजरत ईसा मरे हुए लोगों को जिला देते थे वैसे ही मोहम्मद साहब क्यों नहीं करते या हजरत मूसा की तरह आश्चर्यजनक लाठी ही खुदा से माग लें तो हम उनको रसूल समझें

हैं। ईश्वर किसी जाति की दशा नही बदलता जब तक वह अपने हृदय के विचार न बदले और जब ईश्वर किसी जाति पर कोई विपत्ति डालनी चाहे, तो वह टल नही सकती और ईश्वर के अतिरिक्त उन मनुष्यों का कोई सहायक नही। (११) और वही है डराने और आशा दिलाने के लिए विद्युत का प्रकाश तुम को दिखाता और बोझिल बादलो को उभारता है। (१२) कडक उसकी बड़ाई के साथ पवित्रता बतलाती है और देवदूत उसके भय के मारे और विद्युत भेजते हैं। फिर जिस पर चाहता है उस पर डालता है और यह ईश्वर की बात में झगडते हैं यद्यपि उसके दाँव कठोर हैं। (१३) उसी को सच्चा पुकारना है और जो मनुष्य इसके अतिरिक्त पुकारते हैं वह उनकी कुछ नही सुनते। परन्तु जैसे एक व्यक्ति अपने दोनो हाथ पानी की ओर फैलावे जिससे पानी उसके मुँह मे आ जावे यद्यपि वह उस तक कभी नही पहुचेगा। और जितनी काफिरो की पुकार है सब पथभ्रष्टता है। (१४) और जिस प्रकार नभ व पृथ्वी मे है बस और विवश अल्लाह ही के आगे सिर झुकाये हुए हैं और इसी प्रकार प्रात' और संध्या उनके साये भी दण्डवत करते हैं। (१५) ऐ पैगम्बर! इन मनुष्यों से पूछो कि नभ और पृथ्वी पालनेवाला कौन है? कहो कि अल्लाह। कहो क्या तुमने ईश्वर के अतिरिक्त काम के संभालने वाले बना रक्खे हैं जो अपने स्वयं को खुद हानि-लाभ के स्वामी नही। कहो भला कही अन्धा और आँखो-वाला समान है। या कही अधेरा और प्रकाश समान है? या कहीं इन्होने अल्लाह के ऐसे देवता ठहरा रक्खे हैं कि उसी कैसी सृष्टि उन्होने भी उत्पन्न कर रक्खी है और अब उनको ससार के सम्बन्ध मे सन्देह हो गया है? ऐ पैगम्बर! इनसे कहो कि अल्लाह ही प्रत्येक वस्तु का उत्पन्न करने वाला है और वह अकेला प्रबल है। (१६) उसीने नभ से पानी बरसाया, फिर अपने अनुमान से नाले बह निकले। फिर फूला हुआ झाग जो ऊपर आ गया था उसको रेले ने ऊपर उठा लिया और जो जेवर दूसरे सामान के लिए धातो को अग्नि मे तपाते है उसमे उसी प्रकार का झाग होता है। यो अल्लाह सच और झूठ का उदाहरण बतलाता है कि

पानी सत्य के स्थान पर है और झाग असत्य स्थान पर है सो झाग तो खराब जाता है और पानी मनुष्यों के काम आता है वह पृथ्वी में ठहरा रहता है अल्लाह इस प्रकार उदाहरण वर्णन करता है। (१७) जिन मनुष्यों ने अपने पालनकर्ता का कहा माना उनको भलाई है और जिन्होंने उसकी आज्ञा न मानी जो कुछ पृथ्वी पर है यदि सब उनके पास हो और उसके साथ उतना और तो वह मनुष्य अपने छुडवाई के बदले में उसको दे डालें। परन्तु छुटकारा कहाँ ? यही मनुष्य हैं जिनसे बुरी प्रकार हिसाब लिया जायगा और उनका अन्तिम स्थान नरक है और वह बुरा स्थान है। (१८) (रुकू २)

भला जो व्यक्ति इस बात को समझता है कि जो तुम्हारे पालन-कर्ता की ओर से तुम पर अवतरित हुआ है सत्य है उस मनुष्य के समान है जो अंधा हो बस वही मनुष्य समझते हैं जिनको समझ है(१९) वे जो अल्लाह के प्रण को पूरा करते हैं और वचन को नहीं तोडते। (२०) ईश्वर ने जिनको जोड़े रखने* की आज्ञा दी है वह उनको जोड़े रहते हैं और अपने पालनकर्ता से डरते और प्रलय के दिन बुरी प्रकार हिसाब लिए जाने का खटका रखते हैं। (२१) जिन्होने अपने पालन-कर्ता के लिए कष्ट पर सन्तोष किया और नमाजें पढी और हमारे दिए मे से चुपके और स्पष्ट ईश्वर के मार्ग मे व्यय किया और बुराई के मुकाबले भलाई की, यही मनुष्य हैं जिनको ससार का फल अच्छा है। (२२) सदैव रहने के उपवन हैं जिनमें वह जायेंगे और उनके बड़ो और उनकी पत्नियों और उनकी सतानें जो भला काम करने वाले होगे सब उनके साथ जायेंगे और स्वर्ग के प्रत्येक द्वार से देवदूत उनके पास आते हैं। (२३) प्रणाम करेंगे और कहेंगे कि संसार मे जो तुम

---

*खुदा ने नाता तोड़ने की आज्ञा नहीं दी। जो अपने नाते-रिश्ते वालों को छोड़ देते हैं या उनसे बुराई करते हैं वह पापी हैं।

सन्तोष करते रहे हो सो तुम को खूब अच्छा परिणाम मिला है। (२४) जो ईश्वर के साथ पक्का प्रण व वचन किये पीछे उसे तोडने और जिनके जोडे रखने का ईश्वर ने आज्ञा दी है उनको तोडते और देश मे उत्पात फैलाते हैं, यही मनुष्य हैं जिनके लिए फटकार है और उनका परिणाम बुरा है। (२५) अल्लाह जिसकी जीविका चाहता है बढा देता है और जिसकी चाहता है कम कर देता है और वे काफिर सासारिक जीवन से प्रसन्न हैं यद्यपि ससार का जीवन प्रलय के सामने बिलकुल अगण्य है। (२६) (रुकू ३)

जो मनुष्य अविश्वासी हैं कहते हैं कि इस पर इसके पालनकर्ता की ओर से कोई चमत्कार क्यो नही मिला ! तुम इनसे कहो अल्लाह जिसको चाहता है भटकाया करता है और जो रुजू होता है उसको अपनी ओर का मार्ग दिखाता है। (२७) जो विश्वास लाये और उनके हृदय को ईश्वर की स्मृति से चैन होता है सुन रखो कि ईश्वर के स्मरण से हृदयो को चैन हुआ करता है। (२८) जो मनुष्य ईमान लाये और अच्छे काम किए उनके लिए प्रलय मे सुख है और स्वर्ग मे उनका अच्छा ठिकाना है(२९)ऐ पैगम्बर! जिस प्रकार हमने और पैग-म्बर भेजे थे इसीप्रकार हमने तुमको भी एक गुट मे भेजा है जिनसे पहले और समाज गुजर चुकी है जिससे जो ईश्वरीय वाणी उसी के द्वारा तुम पर पहुची है वह उनको पढकर सुना दो और यह मनुष्य अविश्वासी है तो कहो कि वही मेरा पालनकर्ता है, उसके अतिरिक्त किसी की प्रार्थना नही करनी चाहिए मैं उसी का भरोसा रखता हूँ और उसकी ओर चित्त लगाता हूँ। (३०) और यदि कोई कुरान ऐसा होता जिससे पर्वत चलने लगते या उसकी उन्नति से पृथ्वी के भाग हो सकते या उससे मृतक जी उठे और बोलने लगे तो वह यही होता, अपितु सब काम अल्लाह के हैं तो क्या धर्म वालो को इस पर सन्तोष नही होता कि यदि ईश्वर चाहे तो सबको मार्ग पर लावे। और जो मनुष्य नास्तिक हैं इनको इनके कर्म को दण्ड मे कष्ट पहुचाता रहेगा

या इनकी बस्ती के आस-पास उतरेगा यहाँ तक कि ईश्वर का वचन पूरा हो ईश्वर प्रण के विरुद्ध नहीं करता। (३१) (रुकू ४)

ऐ पैगम्बर तुमसे पहले भी पैगम्बरों की हंसी उड़ाई जा चुकी है सो हमने अविश्वासियों को ढील दी है फिर उनको धर पकड़ा तो हमारा दण्ड कैसा कठोर था। (३२) तो क्या जो प्रत्येक व्यक्ति के काम की सूचना रखता है और यह मनुष्य अल्लाह के लिए दूसरे देवता ठहराते हैं ऐ पैगम्बर! उनसे कहो कि तुम इनके नाम तो लो क्या तुमई श्वर को ऐसे देवताओं का समाचार देते हो जिनको वह पृथ्वी मे नही जानता या ऊपरी बातें बनाते हो। बात यह है कि नास्तिको को अपनी चालाकियाँ भली प्रतीत होती हैं और मार्ग से रुके हुए हैं और जिसको ईश्वर पथभ्रष्ठ करे तो कोई उनको मार्ग दिखाने वाला नही। (३३) इनके लिए साँसारिक जीवन मे दण्ड है और प्रलय का दण्ड बहुत कठोर है और ईश्वर से कोई इनको बचाने वाला नही। (३४) सयमियो के लिए जिस स्वर्ग का प्रण किया जा रहा है उसके नीचे नहरें वह रही हैं, उसके फल सदावहार हैं और छाँह भी। यह उनके लिए फल है जो संयम करते रहे और अविश्वासियो का परिणाम नरक है। (३५) जिनको हमने पुस्तक दी है वह जो तुम पर अवतरित हुई है उससे प्रसन्न होते हैं और दूसरे गुट उसकी कुछ बातों से अस्वीकृति रखते हैं, तुम इन से कहो कि मुझको तो यही आज्ञा मिली है कि मैं ईश्वर ही की प्रार्थना करूँ और किसी को उसका समकक्ष न बनाऊं तुमको उसी की ओर बुलाता हू और उसी की ओर मेरा स्थान है। (३६) और ऐसा ही हमने इसको अरबी आज्ञा में अवतरित किया है और यदि इसके पश्चात भी जबकि तुमको ज्ञान हो चुका है तुमने इनकी इच्छाओ का समर्थन किया तो ईश्वर के सामने न कोई तुम्हारा सहायक होगा और न कोई बचाने वाला। (३७) (रुकू ५)

तुमसे पहले भी हमने पैगम्बर भेजे और हमने उनको पत्नियां

भी*दी और सतान भी और किसी पैगम्बर की शक्ति न थी कि ईश्वर की आज्ञा के बिना कोई कर्तव्य दिखलावें। प्रत्येक लिखा हुआ है। (३८) ईश्वर जिसको चाहे मिटा देता है और जिसको चाहता है स्थिर रखता है और उसके पास वास्तविक पुस्तक है। (३९) जैसे-जैसे प्रण इनको हम करते हैं चाहे कुछ प्रण हम तुम्हारे जीवन मे तुमको पूरे कर दिखावें और चाहे तुमको संसार मे उठा लेवें। प्रत्येक दशा मे पहुचा देना तुम्हारा काम है और हिसाब लेना हमारा। (४०) क्या यह मनुष्य इस बात को नही देखते कि हम देश को सब ओर से दबाते** चले आते हैं और अल्लाह आज्ञा देता है कोई उनकी आज्ञा को टाल नही सकता और वह बडा शीघ्र हिसाब लेने वाला है। (४१) जो मनुष्य इन मक्का के काफिरो के पहले जो गुजरे हैं उन्होंने भी बहाने किए सो सब बहाने तो अल्लाह ही के हाथ मे हैं जो व्यक्ति जो कुछ कर रहा है ईश्वर को ज्ञान है और अस्वीकार करने वालो को शीघ्र ज्ञात हो जायगा कि पिछला घर किसका है। (४२) और काफिर कहते हैं कि तुम पैगम्बर नही हो तो इनसे कहो कि मेरे और तुम्हारे मध्य अल्लाह और जिनके पास पुस्तक है वे साक्षी है। (४३) (रुकू ६)



*कुछ यहूदी कहते थे कि नबी तो वह है जो बालबच्चों के झगड़े से दूर रहे और मुहम्मद साहब ऐसे नहीं हैं, इसलिए कैसे नबी हैं। इस पर यह आयतें उतरी।

**अर्थात इस्लाम फैलता जाता है इन्कार का क्षेत्र कम होता जाता है।

सूरे इब्राहीम

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ५२ आयतें और ७ रुकू हैं

आरम्भ अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त दयावान तथा कृपालु है। अलिफ-लाम-रा यह पुस्तक हमने तुम पर इस आशय से अवतरित की है कि मनुष्यों को उनके पालनकर्ता की आज्ञा से अघेरो से निकालकर प्रकाश की ओर उसके मार्ग पर जो प्रवल और प्रशंसा के योग्य है लायें। (१) अल्लाह का जो कुछ है नभ मे है और जो कुछ पृथ्वी मे है और अविश्वासियों को एक कठोर दण्ड में खराबी है। (२) जो मनुष्य प्रलय के सामने संसार का जीवन पसंद करते और अल्लाह के मार्ग से मनुष्यों को रोकते और उसमे ऐब ढूँढ़ते हैं यही मनुष्य बड़ी भूल पर हैं। (३) जब कभी हमने कोई पैगम्बर भेजा तो उसी की भाषा में * बातचीत करता हुआ भेजा जिससे वह उनको समझा सके। इस पर भी ईश्वर जिसको चाहता है फिर भटकाता है और जिसको चाहता है मार्ग देता है और वह प्रवल चमत्कार वाला है। (४) हमने ही मूसा को अपनी निशानियाँ देकर भेजा था कि अपनी जाति को कुफ्र के अंधेरे से निकालनर धर्म के प्रकाश मे लाओ और उनको ईश्वर के धर्म का स्मरण कराओ क्योकि उनमे जो सत्य मानने वाले अचल हैं उनके लिए निशानियाँ हैं। (५) और उसी समय की चर्चा यह भी है कि मूसा ने अपनी जाति से कहा कि भाइयो अल्लाह ने जो तुम पर कृपाए की हैं उनको स्मरण करो। जबकि उसने तुमको फिरऔन के मनुष्यो से बचाया, वह तुमको बुरा दण्ड देते और तुम्हारे पुत्रो का

*काफिर चाहते थे कि कुरान अरबी के बदले किसी और भाषा मे होता तो हम कुछ उस पर ध्यान भी देते। अरबी तो मुहम्मद की बोली है। सम्भवतः अपने मन से बना लिया हो।

ढूँढ-ढूँढकर वध करते और तुम्हारी स्त्रियो को जीवित रखते थे और इसमे तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से बडी सहायता थी। (६) (रुकू १)

जब तुम्हारे पालनकर्ता ने जता दिया था कि यदि अधिकार मानोगे तो हम तुमको और अधिक देन देंगे और यदि तुमने जघन्यता की तो हमारी मार कठोर है। (७) और मूसा ने कहा कि यदि तुम और जितने मनुष्य पृथ्वी के धरातल पर हैं वह सब ईश्वर से मना करने वाले हो जाओ तो ईश्वर निश्चिन्त और प्रशसा के योग्य है। (८) क्या तुमको उनके समाचार नही पहुँचे जो तुमसे पहले नूह की आद की और समूद की जाति मे हो गये हैं। जो उनके पश्चात हुए जिनकी सूचना ईश्वर ही को है उनके पगम्बर चमत्कार ले-लेकर उनके पास आये तो उन्होने अपने हाथो को उन्ही के मुखो पर उलट दिया अर्थात उनको नही माना और बोले जो आज्ञा लेकर तुम भेजे गये हो हम उनको नहीं मानते और जिस मार्ग की ओर तुम हमको बुलाते हो हम उसी के विषय मे धोखे मे हैं। (९) उनके पैगम्बरो ने कहा क्या ईश्वर पर सदेह है जो नभ और पृथ्वी का बनाने वाला है। वह तुमको इसीलिए बुलाता है कि तुम्हारे अपराध क्षमा करें और एक प्रण तक जो हो चुका है तुमको ससार मे रहने दे। वह कहने लगे कि तुम भी हमारे समान मनुष्य हो। तुम चाहते हो कि जिन वस्तुओ को हमारे बडे पूजते आये हैं उनसे हमको रोक दो तो हमको कोई स्पष्ट चमत्कार ला दिखाओ। (१०) उनके पैगम्बरो ने उनसे कहा कि हम तुम्हारे ही समान मनुष्य हैं परन्तु ईश्वर अपने भक्तो मे से जिन पर चाहता है कृपा करता है और हमारी सामर्थ्य नही कि हम कोई चमत्कार लाकर तुमको दिखावें। अल्लाह ही पर धर्म वालो को भरोसा रखना चाहिए। (११) हम अल्लाह पर भरोसा क्यो न रखें हमारे ढग उसी ने हमको बताये और जैसा-जैसा दुख तुम हमको दे रहे हो हम उन पर सतोष करेंगे और भरोसा करने वालो को चाहिए कि ईश्वर ही पर भरोसा करे। (१२) (रुकू २)

काफिरों ने अपने पैगम्बरों से कहा कि हम तुमको अपने देश से निकाल देंगे या तुम फिर हमारे धर्म में आ जाओ। इस पर पैगम्बरों के पालनकर्ता ने उनकी ओर वही ईश्वरीय सदेश भेजा कि हम इन अहंकारी मनुष्यो को अवश्य नष्ट करेंगे। (१३) और इनके पीछे अवश्य तुमको उसी पृथ्वी पर बसायेंगे, यह उस व्यक्ति का है जो हमारे सामने खड़े होने से डरे और हमारे दण्ड से डरे। (१४) पैगम्बरों ने चाहा कि उनका और काफिरों का झगड़ा निर्णय हो जावे और प्रत्येक अक्खड़ हठी अपूर्ण इच्छा के रह जाए। (१५) इनके पश्चात उसको नरक है और उसको पीप का पानी पिलाया जायगा। (१६) उसको पियेगा और उसको लीलना कठिन होगा और मृत्यु उसको हर दिशा घूँट-घूँट आती हुई दृष्टिगोचर होगी और वह नही मरेगा और उसके पीछे दुखदाई दण्ड है। (१७) जो मनुष्य अपने पालनकर्ता को नही मानते उनका उदाहरण ऐसा है कि उनके कर्म मानो राख का ढेर हैं कि आँधी के दिन उसको हवा ले उडे जो यह मनुष्य कर गये हैं उनमें से कुछ भी इनके हाथ नही आवेगा यही अन्तिम कोटि की असफलता है। (१८) क्या तूने इस बात पर दृष्टि नही की कि ईश्वर ने नभ और पृथ्वी को जैसे चाहिए बनाया। यदि चाहे तो तुम को मिटा दे और नई सृष्टि को लाकर बसाये। (१९) और यह ईश्वर के लिए कुछ कठिन नहीं (२०) और सब मनुष्य ईश्वर के आगे निकल खडे होंगे तो निर्बल अहंकारियों से कहेंगे कि हम तो तुम्हारे पीछे थे सो क्या तुम ईश्वर के दण्ड मे से कुछ हम पर से हटा सकते हो। वह बोले यदि ईश्वर हमको मार्ग पर लाता तो हम भी तुमको मार्ग पर लाते अब तो असंतोष करें तो हमारे लिए समान है, हमको किसी प्रकार छुटकारा नहीं। (२१) (रुकू ३)

जब निर्णय हो चुकेगा तो राक्षस कहेगा कि ईश्वर ने तुम से सच्चा प्रण किया था और जो प्रण मैंने तुमसे किया था झूठ था और तुम पर मेरी कुछ शक्ति न थी। बात तो इतनी ही थी कि मैंने तुमको अपनी

ओर बुलाया और तुमने मेरा कहा मान लिया तो अब मुझे दोष न दो अपितु अपने को दोष दो। न तो मैं तुम्हारी पुकार को पहुच सकता हू और न तुम मेरी पुकार पर पहुच सकते हो। मैं तो मानता ही नहीं कि तुम मुझको पहले देवता बनाते थे। इसमे सदेह नही कि जो अत्याचारी हैं उनको कठोर दण्ड है। (२२) और जो विश्वास लाये और उन्होंने भले काम किये स्वर्ग के उपवन मे प्रविष्ट किये जायेंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी अपने पालनकर्ता की आज्ञा से उनमे सदैव रहेंगे वहां उनको प्रणाम किया जायगा। (२३) क्या तुमने नही देखा कि ईश्वर ने अच्छी बात का कैसा उदाहरण दिया है कि मानो एक पवित्र वृक्ष है उसकी जड़ दृढ है और उसकी शाखाऐं नभ मे है। (२४) अपने पालनकर्ता की आज्ञा से हर समय अपने फल देता है और अल्लाह मनुष्यो के लिए उदाहरण बतलाता है जिससे वह सोचें। (२५) निम्न बात का उदाहरण बुरे वृक्ष जैसा है जो पृथ्वी के ऊपर से उखड गया उसको कुछ ठहराव नही। (२६) जो मनुष्य लाये हैं उनको दृढ बात से अल्लाह ससार मे दृढ और प्रलय मे दृढ करता है और अल्लाह अन्यायियो को बिचला देता है और अल्लाह जो चाहता है करता है। (२७) (रुकू ४)

ऐ पैगम्बर क्या तुमने उन मनुष्यों को नही देखा जिन्होंने अल्लाह के अच्छे पदार्थों के बदले मे आभार न मानना और अपनी जाति को मृत्यु गृह मे ले जा उतारा*। (२८) कि उसमे प्रविष्ट होंगे और वह बुरा स्थान है। (२९) इन मनुष्यों ने अल्लाह के सामने दूसरे पूजित खडे किये हैं। जिससे उसके मार्ग से बिचलाये। ऐ पैगम्बर मनुष्यो से कहो कि खैर कुछ दिन ससार मे और बस लो, फिर तो तुमको नरक की ओर जाना ही है। (३०) ऐ पैगम्बर हमारे सेवक जो विश्वास

---

* मक्के के नेता जिन्होने अपनी जाति को अनेक बुराइयों मे डाला

लाये है उनसे कहो नमाज पढ़ा करें और इससे पहले प्रलय का दिन आवे जबकि न सौदा है न मैत्री। हमारी दी हुई जीविका मे से चुपके और स्पष्ट व्यय करते रहें। (३१) अल्लाह वही है जिसने नभ और पृथ्वी उत्पन्न किया और नभ ने पानी बरसाया। फिर पानी के द्वारा फल निकाले कि वह तुम्हारी जीविका है। नौकाओं को तुम्हारे अधिकार मे किया जिससे उसकी आज्ञा से नदी मे चले और नदियो को भी तुम्हारे अधिकार मे कर दिया (३२) और सूर्य व चन्द्रमा को जो चक्कर खाते है एक नियम पर तुम्हारे काम मे लगाया और रात-दिन को तुम्हारे अधिकार मे कर दिया। (३३) तुमको प्रत्येक वस्तु मे से जो कुछ माँगा दिया और यदि ईश्वर की कृपाओ को गिनना चाहो तो पूरा-पूरा गिन सकोगे मनुष्य बड़ा अन्यायी और बडा ही कृपा न मानने वाला है। (३४) (रुकू ५)

जब इब्राहीम ने प्रार्थना की कि मेरे पालनकर्ता ! इस नगर मक्का को शान्ति का स्थान बना और मुझको और मेरी संतान को मूर्ति-पूजा से बचा। (३५) पालनकर्ता इन मूर्तियो ने बहुत से मनुष्यो को भटकाया है सो जिसने मेरा मार्ग गहा वह मेरा है जिसने मेरा कहना न माना सो तू क्षमा करने वाला है। (३६) ऐ हमारे पालनकर्ता ! मैंने तेरे प्रतिष्ठित घरके पास इस उजाड भूमिका मे जहाँ खेती नही अपनी कुछ संतान बसाई है जिससे यह नमाजें पढे, तो ऐसा कर कि मनुष्यो के हृदय इनकी ओर को लगे और फलो से इनको जीविका दे जिससे यह धन्यवाद दे* (३७) हमारे पालनकर्ता जो हम छिपाते और जो स्पष्ट करते है तुझको ज्ञात है और पृथ्वी और नभ मे अल्लाह से कोई

* इन आयतों में हजरत इस्माईल और उनकी माँ बीबी हाजिरा की कहानी की ओर संकेत किया गया है। इन लोगों को हजरत इब्राहीम ने अपनी दूसरी बीबी सारा के कहने से एक जंगल में डाल दिया था।

वस्तु छिपी नही। (३८) ईश्वर को धन्य है जिसने मुझको बुढापे मे इस्माईल और इसहाक दो पुत्र दिये। मेरा पालनकर्ता पुकार को सुनता है। (३९) ऐ मेरे पालनकर्ता! मुझको मेरी सतान को शक्ति दे कि मै नमाज पढता रहू और ऐ मेरे पालनकर्ता! मेरी प्रार्थना स्वीकार कर। (४०) ऐ हमारे पालनकर्ता! जिस दिन काम का हिसाब होने लगे मुझको और मेरी माँ और पिता को और धर्मवालो को क्षमा करना (४१) (रुकू ६)

ऐ पैगम्बर! ऐसा न समझना कि ईश्वर इन अत्याचारियो के काम से वेसुध है और ईश्वर इनको उस दिन तक का अवकाश देता है जबकि आँखें फटी की फटी रह जायेंगी। (४२) अपने सिरको उठाये दौडते फिरेंगे दृष्टि उनकी ओर न करेंगे और उनके हृदय जड जायेंगे। (४३) ऐ पैगम्बर मनुष्यो को उस दिन से डरा जबकि उन पर दण्ड उतरेगा तो अन्यायी कहेंगे कि हमारे पालनकर्ता हमको थोडी सी अवधि का अवकाश और दे। तो हम तेरे बुलाने पर उठ खडे होगे और पैगम्बरो के पीछे हो जायेंगे। क्या तुम पहले सौगन्ध नही खाया करते थे कि तुमको किसी प्रकार की घटती न होगी। (४४) जिन मनुष्यो ने स्वय अपने ऊपर अत्याचार किये। उन्ही के घरो मे तुम भी रहे और तुम जान चुके थे कि हमने उनके साथ कैसा व्यवहार किया और हमने तुम्हारे लिए उदाहरण भी बतला दिये थे। (४५) यह अपना बहाना कर चुके और उनकी चालें ईश्वर की दृष्टी मे थी और उनकी चाले ऐसी न थी कि पर्वतो को स्थान से हटा दें। (४६) सो ऐसा विचार न करना कि ईश्वर जो अपने पैगम्बरो से प्रण कर चुका है उसके विरुद्ध करेगा अल्लाह प्रबल बदला लेनेवाला है। (४७) जबकि पृथ्वी बदलकर दूसरे प्रकार की पृथ्वी कर दी जावेगी और नभ और सब मनुष्य एक ईश्वर प्रबल के सामने निकल खडे होगे। (४८) और ऐ पैगम्बर! तुम उसी दिन पथभ्रष्टो को जजीरो मे जकड़े हुए देखोगे। (४९) गन्धक के उनके

कुत्ते होंगे और उनके मुँहों को आग ढाँके लेती होगी। (५०) इस अर्थ से कि ईश्वर प्रत्येक व्यक्ति को उसके किये का बदला दे। अल्लाह शीघ्र हिसाब लेने वाला है। (५१) यह कुरान मनुष्यो के लिए एक संदेश है और अर्थ यह है कि इनके द्वारा मनुष्यो को डराया जाय और ज्ञात हो जाय कि ईश्वर एक है और जो मनुष्य बुद्धि रखते है शिक्षा को पकड़ें। (५२) (रुकू ७)

चौदहवां पारा (रुब्रमा)

सूरे हिज्र

मक्के में अवतरित हुई इसमें ९९ आयतें और ६ रुकू हैं

आरम्भ अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त दयावान तथा कृपालु है। अलिफ-लाम-रा। यह पुस्तक "स्पष्ट कुरान" की आयतें हैं (१) काफिर बहुत सी इच्छायें करेंगे कि ईमानदार होते (२) तो ऐ पैगम्बर इनको रहने दो कि खायें और लाभ उठावें और आशाओं पर भूले रहे फिर पीछे प्रतीत हो जायगा। (३) हमने कोई बस्ती नही उजाड़ी परन्तु उसकी आयु पहले से निश्चित थी। (४) कोई समाज न अपनी आयु से आगे बढ़ सकता है और न पीछे रह सकता है। (५) मक्का के काफिर कहते हैं कि ऐ व्यक्ति! तुझ पर कुरान अवतरित हुआ है। तू पागल है। (६) यदि तू सच्चा है तो देवदूतो को हमारे सामने क्यों नही बुलाता। (७) सो हम फरिश्तो को नही अवतरित करते परन्तु निर्णय के लिये और फिर उनको अवकाश भी न मिलेगा। (८) हम ही ने

शिक्षा कुरान अवतरित की है और हम ही उसके संरक्षक भी हैं। (९) और हमने तुमसे पहले भी अगले मनुष्यो के समाज मे पैगम्बर भेजे थे। (१०) जब-जब उनके पास पैगम्बर आये उनकी हसी उड़ाई। (११) इसी प्रकार हमने अपराधियो के हृदयो मे ठट्ठेबाजी डाली है। (१२) यह कुरान पर विश्वास नही लावेंगे और यह रिवाज पहले से चला आया है। (१३) यदि हम इन के लिए नभ का एक द्वार खोल दें और यह मनुष्य सब दिन चढते रहे। (१४) तो भी यही कहेंगे हो न हमारी दृष्टी बाँध दी गई है और हम पर किसी ने जादू कर दिया है (१५) (रुकू १)

हमने नभ मे बुर्ज बनाये और देखनेवालों के लिए उसको तारो से सजाया। (१६) और हर निकाले हुए दुष्ट से हमने उसकी रक्षा की। (१७) परन्तु चोरी छिपा कोई बात सुन भागे दहकता हुआ अगारा एक तारा उसको खदेरने को उसके पीछे होता है। (१८) और हमने पृथ्वी को विस्तृत किया और हमने उसमे पर्वत गाड दिये और हमने इससे प्रत्येक वस्तु उचित उत्पन्न की। (१९) हमने पृथ्वी मे तुम्हारे खाने का सामान एकत्रित किया और इनको जिनको तुम जीविका नही देते, (२०) और जितनी वस्तुऐं हैं हमारे यहाँ सबके कोष है। परन्तु हम एक परिणाम ज्ञात करके उनको भेजते रहते हैं। (२१) हमने हवाओ को जो बादलो को पानी से बोझदार करती हैं चलाया। फिर हमने नभ से पानी बरसाया फिर हमने वह तुम्हें पिलाया और तुम ने उसको एकत्रित करके नही रक्खा। (२२) और हम ही जीवन देते हैं और हमही मारते हैं और हम ही रक्षक होगे। (२३) और हम तुम्हारे अगलो और पिछलो को जानते हैं। (२४) ऐ पैगम्बर ! तुम्हारा पालनकर्ता इनको एकत्रित करेगा। वह चमत्कारवाला तथा ज्ञाता हैं। (२५) (रुकू २)

हमने सडे हुए गारे से जो सूखकर खनखनाने लगता है मनुष्य को उत्पन्न किया। (२६) और हम भूतो को पहले लू की अग्नि से उत्पन्न

कर चुके थे। (२७) और ऐ पैगम्बर उस समय को स्मरण करो जबकि तुम्हारे पालनकर्ता ने देवदूतो से कहा कि मैं सड़े हुए गारे से जो खन-खनाने लगता है एक मनुष्य को उत्पन्न करनेवाला हू। (२८) तो जब मैं उनको पूरा बना चुकूँ और उसमें आत्मा फूँक दूँ तो तुम उसके आगे दंडवत करना। (२९) अत समस्त देवदूत सब के सब दण्डवत करने लगे। (३०) परन्तु इबलीस जिसने दण्डवत करनेवालो मे सम्मिलित होने से मना किया। (३१) इस पर ईश्वर ने कहा ऐ इबलीस ! तुमको क्या हुआ कि तू दण्डवत करने वालों मे सम्मिलित नही हुआ। (३२) वह बोला कि मैं ऐसे व्यक्ति को दण्डवत न करूँगा जिस को तूने सड़े हुए गारे से उत्पन्न किया जो खनखनाने लगता है। (३३) ईश्वर ने कहा बस स्वर्ग से निकल तू फटकारा हुआ है। (३४) प्रलय के दिन तक तुझ पर फटकार होगा। (३५) कहाकि ऐ मेरे पालनकर्ता तू मुझ को उस दिन तक का अवकाश दे जबकि मृतक उठा खडे किये जावेंगे। (३६) ईश्वर ने कहा कि तुझको अवकाश दिया गया। (३७) प्रलय के समय के दिन तक। (३८) दुष्ट ने कहा ऐ मेरे पालनकर्ता ! जैसा तूने मेरा मार्ग मारा मैं भी संसार मे इन सबको वसन्त दिखाऊँगा और इन सब को मार्ग से बहकाऊँगा। (३९) अतिरिक्त उनके जो मेरे चुने भक्त हैं। (४०) ईश्वर ने कहा कि यही हम तक सीधा मार्ग है। (४१) जो हमारे सेवक हैं उन पर तेरा किसी प्रकार का वश न होगा परन्तु उन पर* जो पथभ्रष्टो मे से तेरे पीछे हो जायँ। (४२) ऐसे समस्त मनुष्यो के लिए नरक का वचन हैं। (४३) उसके सात द्वार हैं, हर द्वार के लिए नरकीय मनुष्यों की टोलियां भिन्न-भिन्न होगी। (४४) (रुकू ३)

---

* आदमी दो तरह के हैं। (१) खुदा की राह चलने वाले, (२) राक्षस की राह चलनेवाले। यह दूसरे ही नरकवासी हैं।

सयमी स्वर्ग के उपवनो और चश्मों मे हो। (४५) जीवन के साथ धैर्य से इन उपवनो मे आओ। (४६) इनके हृदयो मे जो द्वेष है उसको निकाल दो एक दूसरे के आमने-सामने सिहासनो पर भाई हो कर बैठो। (४७) इनको वहाँ स्वर्ग मे किसी प्रकार का दुख न होगा और न यह वहाँ से निकाले जावेंगे। (४८) हमारे सेवको को चेता दो कि मैं क्षमा करने वाला दयालु हू। (४९) हमारी मार दुख की मार है। (५०) इनको इब्राहीम के अतिथि की दशा सुनाओ। (५१) जब इब्राहीम के पास आये तो प्रणाम किया। इब्राहीम ने कहा हम तुमसे डरते है। (५२) वह बोले आप न कीजिये, हम आपको एक योग्य पुत्र की शुभ सम्वाद सुनाते हैं। (५३) इब्राहीम ने कहा क्या तुम मुझे शुभ सम्वाद देते हो जबकि मुझे बुढापा आ चुका है तो अब काहे का शुभ सम्वाद सुनाते हो। (५४) वह कहने लगे हम आपको सच्चा समाचार सुनाते हैं सो आप निराश न हो। (५५) इब्राहीम ने कहा कि पथ भलो के अतिरिक्त ऐसा कौन है जो अपने पालनकर्ता की कृपा से निराश हो। (५६) इब्राहीम ने कहा कि ईश्वर के भेजे हुए देवदूतो फिर अब तुमको क्या काम है। (५७) उन्होने उत्तर दिया कि हम एक अपराधी कबीले की ओर भेजे गये हैं। (५८) अच्छा! लूत का कुटुम्ब हम बचा लेंगे। (५९) परन्तु उनकी स्त्री* अवश्य रह जायगी। (६०) (रुकू ४)

फिर जब ईश्वर के भेजे देवदूत लूत की जाति के पास आये (६१) तो लूत ने कहा कि तुम अनजाने-से हो। (६२) वह कहने लगे नही अपितु जिसमे तुम्हारी जाति को सन्देह था उसी को लेकर आये हैं। (६३) और हम सच आज्ञा लेकर तुम्हारे पास आये हैं और हम सच

---

* लूत की स्त्री ईमानदार न थी। वह और लोगों के साथ नष्ट हो गई।

कहते हैं। (६४) तो कुछ रात रहे तुम अपने मनुष्यों को लेकर निकल जाओ और तुम इनके पीछे रहना और तुममें से कोई मुड़ कर न देखे और जहाँ कोई आज्ञा दी गयी है उसी ओर को चले जाना। (६५) हमने लूत के हृदय मे यह बात जमा दी थी प्रातःकाल होते-होते इनकी जड काट दी जावेगी। (६६) और नगर के मनुष्य खुशियाँ मनाते हुए आये। (६७) लूत ने उनसे कहा कि यह मेरे अतिथि हैं सो मेरा अपकीर्ति मत करो। (६८) और ईश्वर से डरो और मेरा अपमान मत करो। (६९) वह बोले क्या हमने तुमको ससार के मनुष्यों का पक्ष लेने से नही रोका था। (७०) लूत ने कहा यदि तुमको करना है तो यह मेरी बेटियाँ हैं इनसे विवाह कर लो। (७१) ऐ पैगम्बर तुम्हारी जान की कसम वह अपनी मस्ती मे बेसुध हैं। (७२) अर्थ यह के सूर्य के निकलते-निकलते उनको एक बडे जोर की वाणी ने घेर लिया। (७३) खैर हमने उस बस्ती को उलट-पलट दिया और उन पर ककर पत्थर बरसाये। (७४) इसमे उन मनुष्यों के लिए जो समझ जाते है निशानियाँ हैं। (७५) और वह* बस्ती अभी तक सीधे मार्ग पर है। (७६) निस्सन्देह इसमें विश्वास लाने वालों के लिए निशानी हैं। (७७) और वन** के रहने वाले निश्चय अहंकारी थे। (७८) तो उनसे हमने बदला लिया और दोनो नगर अब पथ पर हैं। (७९) (रुकू ५)

हिज्र के रहने वालो ने पैगम्बरों को झुठलाया। (८०) हमने उनको निशानियाँ दी फिर भी वह उनसे मुख मोडे रहे। (८१) शान्ति से पर्वतो को काट-काट घर बनाते थे। (८२) तो उनको प्रातः होते होते बड़े जोर की वाणी ने घेर लिया। (८३) और जो उपाय करते थे

---

* मक्के से शाम जाते हुए दिखाई देती है।

** एक वन था। उसके पास एक नगर था। हजरत शुऐब उस बस्ती के नबी थे।

उनके कुछ भी काम न आये। (८४) हमने नभ और पृथ्वी को और जो कुछ नभ व पृथ्वी में है विचार ही से बनाया है और प्रलय अवश्य आने वाली है सो इस प्रकार किनारा पकड़ा।(८५) तुम्हारा पालनकर्ता उत्पन्न करने वाला ज्ञाता है। (८६) और हमने तुझको सात आयतें* सूरे फातिहा और बड़े पद का कुरान दिया। (८७) मनुष्यों को जो वस्तुएं प्रयोग को दी हैं तुम इन पर अपनी दृष्टि न दौड़ाओ। और इन पर दुख न करना और अपनी बाँहों को धर्म वालों के लिये झुका। (८८) और कह दो कि मैं तो स्पष्टतया डराने वाला हूं। (८९) जैसे हमने इन पर पहुचाया है। (९०) जिन्होंने बाँटकर कुरान के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। (९१) तेरे पालनकर्ता की कसम है कि हम सबसे पूछेंगे। (९२) बस तुमको जो आज्ञा हुई है उसे खोलकर** सुना दो (९३) मुशरिकीन की बिल्कुल चिन्ता न करो। (९४) हम तेरी ओर से ठट्ठा करने वालों को पर्याप्त हैं। (९५) जो ईश्वर के साथ दूसरे देवता ठहराते हैं इनको आगे चलकर ज्ञात हो जायगा। (९६) और हम जानते हैं कि तेरा जी उनकी बातों से रुकता है। (९७) सो तू अपने पालनकर्ता के गुणों का स्मरण कर और दण्डवत करने वालों में से हो। (९८) और जब तक तुझको विश्वास पहुंचे तब तक तू अपने पालनकर्ता की पूजा कर। (९९) (रुकू ६)



* यानी सूरे फातिहा जिसे नमाज में पढ़ते हैं।

** ३ वर्ष तक मुहम्मद साहब लोगों को चुपके-चुपके और छुपा-छुपा के इस्लाम का मत स्वीकार करने का उपदेश देते रहे। इसके उपरान्त यह आयत उतरी। इस समय से आपने निर्भीकता पूर्वक खुल्लमखुल्ला इस्लाम का प्रचार आरम्भ कर दिया।

सूरे नहल

मदीने में अवतरित हुई, इसमें १२८ आयतें, १६ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त दयावान तथा कृपालु है। ईश्वर की आज्ञा आये तो उसके लिए शीघ्रता मत करो। इनके शिर्क से जात-पात और ऊंची है (१) वही अपने सेवको में से जिसकी ओर चाहता है भेजता है, इस बात से चेता दो कि हमारे अतिरिक्त कोई पूजित नही सो हमसे डरते रहो। (२) उसी ने विचार से नभ और पृथ्वी को बनाया। तो यह मनुष्य जो समकक्ष बनाते हैं वह उससे ऊंचा है। (३) उसी ने मनुष्य को बून्द वीर्य से उत्पन्न किया। इस पर वह एकदम से खुल्लमखुल्ला झगड़ने लगा* (४) और उसी ने चारपायो को उत्पन्न किया जिसमे तुम मनुष्यो के शीतकाल के वस्त्र और कई लाभ हैं और उनमे से तुम किसी-किसी को खा लेते हो। (५) और जब सन्ध्या के समय घर वापस लाते हो और जब प्रात' को चराने ले जाते हो तो इस कारण से तुम्हारी शोभा भी है। (६) और जिन नगरो तक तुम जान तोडकर भी पहुंच सकते। चारपाये वहाँ तक तुम्हारे बोझ उठा ले जाते हैं। तुम्हारा पालनकर्ता बड़ा दयालु हृदय और कृपालु है। (७) उसने घोडो, खच्चरो और गधो को तुम्हारी शोभा और सवारी के लिए बनाया और वही उन वस्तुओ को उत्पन्न

---

* कहते हैं कि एक इन्कारी एक दिन पुरानी हड्डियाँ लाया और हाथ से उनको मलकर महीन करके आटे की तरह बना लिया और फिर उसको मुंह से फूंक दिया। वह राख हवा मे उड़ गई। इस पर उसने कहा कि अब इसे कौन जिलायेगा। इस आयत मे इसी की तरफ इशारा है और यह बताया गया है कि जो ईश्वर एक बूंद से आदमी को उत्पन्न करता है वह उसको मरे पीछे फिर उठा सकता है।

करता है जिनको तुम नहीं जानते। (८) और धर्म के मार्ग दो प्रकार के हैं, एक सीधा मार्ग ईश्वर तक है और दूसरा टेढा और ईश्वर चाहता तो तुम सबको सीधा मार्ग दिखा देता। (६) (रुकू १)

वही है जिसने नभ से पानी बरसाया। जिसमे से कुछ तुम्हारे पाने का है और उससे पेड पोषण पाते है। जिनमे तुम अपने ढोरो को चराते हो। (१०) उसी पानी से ईश्वर तुम्हारे लिए खेती और जैतून खजूर और अगूर और हर प्रकार के फल उत्पन्न करता है जो मनुष्य ध्यान करते हैं उनके लिए इसमें निशानी है। (११) और उसी ने रात और दिन और सूर्य और चन्द्रमा और सितारो को तुम्हारे काम मे लगा रक्खा है और सितारें और तारे उसी के आज्ञाकारी हैं। जो बुद्धि रखते है उनके लिए इन वस्तुओ मे निशानियाँ हैं। (१२) जो वस्तुऐ तुम्हारे लिए पृथ्वी पर पृथक-पृथक रग की उत्पन्न कर रक्खी हैं इनमे उन मनुष्यो को जो सोच विचार को काम मे लाते हैं निशानियाँ हैं। (१३) वही जिसने नदी को आधीन कर लिया जिससे तुम उसमे से मछलियाँ निकालकर उनका ताजा माँस खाओ और उसमे से कभी-कभी मोती इत्यादि निकालो जिनको तुम पहनते हो और तू नौकाओ को देखता है कि फाडती हुई नदी मे चलती हैं जिससे तुम ईश्वर की कृपा ढ़ढ़ो और आभार प्रकट करो। (१४) पर्वत पृथ्वी पर गाड़े जिससे पृथ्वी तुम्हे लेकर किसी दूसरी ओर न झुकने पावे और नदियाँ और मार्ग बनाये सम्भवत तुम मार्ग पाओ। (१५) और पते बनाये और मनुष्य तारो से मार्ग का पता करते हैं। (१६) तो क्या जो उत्पन्न करे उसके समान हो गया वह जो कुछ भी उत्पन्न नही कर सकता फिर क्यो तुम नही समझते। (१७) और यदि ईश्वर के पदार्थो को गिनना चाहे तो उनकी पूरी गिनती न गिन सकोगे ईश्वर वडा क्षमावान और कृपालु है। (१८) और कुछ तुम छिपाते हो और जो कुछ प्रकट करते हो अल्लाह जानता है। (१९) और ईश्वर के अतिरिक्त जिनको पुकारते हैं वह कोई वस्तु उत्पन्न नही कर सकते अपितु वह स्वय बनाये

जाते हैं (२०) मृतक हैं जिनमें जीवन नही और ध्यान नही रखते कि प्रलय मे सब उठाये जावेंगे। (२१) (रुकू २)

मनुष्यो तुम्हारा एक ईश्वर है सो जो मनुष्य पिछले जीवन का विश्वास नही करते उनके हृदय अविश्वासी हैं और वह घमडी हैं। (२२) यह मनुष्य जो कुछ छिपाकर करते और जो प्रकट करते हैं अल्लाह जानता है। वह घमंडियों को पसंद नही करता। (२३) और जब इनसे पूछा जाता हैं कि तुम्हारे पालनकर्ता ने क्या अवतरित किया है तो यह उत्तर देते हैं कि अगलों की क़हानियाँ। (२४) फल यह है कि प्रलय के दिन अपने पूरे बोझ और जिन मनुष्यो को बिना समझे बूझे भटकाते हैं उनके भी बोझ उन्ही को उठाने पडेंगे। देखो तो बुरा बोझ यह मनुष्य अपने ऊपर लादे चले जाते हैं। (२५) (रुकू ३)

इनसे पहले मनुष्य धोखा दे चुके हैं। तो ईश्वर ने उनके भवन की जड़ से सूचना ली। तो उसकी छत उन्ही पर उनके ऊपर से गिर पडी और जिधर से उनको सूचना भी न थी दण्ड ने उनको आ घेरा। (२६) फिर प्रलय के दिन ईश्वर इनको अपकीर्ति करेगा और पूछेगा कि हमारे समकक्ष जिनके विषय में तुम लड़ा करते थे कहाँ हैं। जिन मनुष्यो को समझ दी गई थी वह बोल उठेंगे कि आज के दिन अपकीर्ति और खराबी काफिरों पर है। (२७) जिस समय देवदूतो ने इनकी आज्ञाएँ निकाली थीं यह स्वयं अपने ऊपर अत्याचार कर रहे थे। तब [illegible] करते हुए आ मिलेंगे और कहेंगे कि हम तो किसी प्रकार की बुराई नही किया करते थे। जो कुछ तुम करते थे अल्लाह उससे खूब ज्ञाता है। (२८) नरक के द्वार से नरक मे जा प्रविष्ठ हो, उसी मे सदा रहो। घमंड करने वालो का बुरा स्थान है। (२९) और जो संयमी हैं उनसे पूछा जाता हैं कि तुम्हारे पालनकर्ता ने क्या अवतरित किया? तो उत्तर देते हैं कि अच्छा जिन मनुष्यों ने भलाई की उनके लिए इस संसार में भी भलाई हैं और अन्तिम स्थान कही अच्छा हैं और संयमी का घर

अच्छा है। (३०) अर्थात उनको सदैव रहने के उपवन हैं जिनमे जो प्रविष्ट होगे उनके नीचे नहरें बह रही होंगी और जिस वस्तु को उनका जी चाहेगा वहाँ उनके लिए उपस्थित होगी। संयमियों को अल्लाह ऐसा ही बदला देता है। (३१) जिनकी जानें देवदूत पवित्र होने की दशा मे निकालते है। देवदूत नमस्कार करते और कहते हैं कि जैसे कर्म तुम करते रहे हो उनके बदले स्वर्ग मे जा प्रविष्ट हो। (३२) काफिर क्या इसी बात की बाट देखते हैं कि देवदूत उनके पास आवेंगे या अल्लाह उनके पास आज्ञा भेजेगा। ऐसा ही उनके अगनो ने किया और ईश्वर ने उन पर अत्याचार नही किया अपितु वह अपने ऊपर आप अत्याचार करते हैं। (३३) फिर उन कर्मों के बुरे फल उनको मिले और उनकी ठट्ठेबाजी ने उन्हें घेर लिया। (३४) (रुकू ४)

मुशरिकीन कहते हैं कि यदि ईश्वर चाहता तो हम और हमारे बडे उसके अतिरिक्त और की प्रार्थना न करते और न हम उनके बिना किसी वस्तु को पाप* ठहराते और ऐसा ही इनके अगलो ने कहा था। पैगम्बरो पर केवल स्पष्ट सदेश पहुचा देना है। (३५) हमने पत्येक समाज मे एक पैगम्बर भेजा है कि ईश्वर की पूजा करो और दुष्ट से बचते रहो। सो उनमे से कुछ पथभ्रष्ट सिद्ध हुए। पृथ्वी पर चलो-फिरो और देखो कि झुठलाने वालो को कैसा फल मिला। (३६) यदि तू इन मनुष्यो को सीधे मार्ग पर लाने को ललचाये सो ईश्वर जिसको बिचलाना चाहता है उसको मार्ग नही दिया करता और कोई ऐसे मनुष्यो का सहायक नही होता। (३७) वह ईश्वर की बडी कठोर कसमे खाते हैं कि जो मर जाता है उसको ईश्वर पुन नही उठाता ऐ पैगम्बर! उनसे कहो कि अवश्य उठा खडा करेगा वचन सत्य है परन्तु प्राय मनुष्य नही

---

* मुशरिक ऊंटों के बच्चों को बुतो के नाम पर छोड़ देते थे और न उनपर सवार होतेथे और न सामान लादते और न उसका गोश्त खाते थे और कहते थे कि खुदा इस बात को न चाहता तो हम न करते।

जानते। (३८) वह इसलिए उठायेगा कि जिन वस्तुओं पर यह झगडते थे ईश्वर उन पर प्रकट कर दे और काफिर जानलें कि वह झूठे थे। (३९) जब हम किसी वस्तु को चाहते हैं तो हमारा कहना उसके विषय मे इतना ही होता है कि हम उसको कष्ट देते हैं कि हो और वह हो जाता है (४०) (रुकू ५)

जिन पर अन्याय हुआ और अन्याय होने पर उन्होंने ईश्वर के लिये देश छोड़ा। हम उनको अवश्य संसार में स्थान देंगे और प्रलय का परिणाम कही बढ़कर है यदि उनको ज्ञात होता। (४१) यह मनुष्य जिन्होंने संतोष किया और अपने पालनकर्ता पर भरोसा किया। (४२) हमनें तुमसे पहिले मनुष्य पैगम्बर बनाकर भेजे थे और उनकी ओर वही ईश्वरीय वाणी भेज दिया करते थे सो यदि तुमको स्वयं ज्ञात नही तो स्मरण रखने वालो से पूछ देखो। (४३) हमने तुम पर यह कुरान अवतरित किया जिससे जो आज्ञाऐं मनुष्यों के लिए उनकी ओर भेजी गई हैं तुम उनको अच्छी प्रकार समझा दो और सम्भवतः वह सोचें (४४) तो जो बुराई का ढंग करते हैं क्या उनको इस बात का बिलकुल भय नही कि ईश्वर उनको पृथ्वी धंसा दे या जिधर से उनको सूचना भी न हो दण्ड उन पर आ गिरे। (४५) या उनके चलते फिरते ईश्वर उनको पकड़ ले जिसे वह हरा नही सकते। (४६) या उनको खटका हुए पीछे धर पकडे सो इसमे संदेह नही कि तुम्हारा पालनकर्ता बडा कृपालु है। (४७) क्या उन मनुष्यो ने ईश्वर की सृष्टि मे से ऐसी वस्तुओ की ओर नही देखा कि उसके साये दाहिनी ओर और बाई ओर को अल्लाह के आगे सिर झुकाये हुए हैं और वह विनय को प्रगट कर रहे हैं। (४८) जितनी वस्तुऐं नभ मे और जितने जीव पृथ्वी मे हैं सब अल्लाह ही के आगे सिर झुकाये हैं और देवदूत ईश्वर की आज्ञा से दण्डवत किये हुए हैं और घमड नही करते। (४९) अपने पालनकर्ता से जो उनके ऊपर है डरते रहते हैं और जो आज्ञा उनको दी जाती है उसको पूर्ण करते हैं। (५०) (रुकू ६)

ईश्वर ने आज्ञा दी है कि दो पूजित न ठहराओ बस वही ईश्वर एक पूजित है उससे डरो। (५१) और उसी का है जो कुछ नभ तथा पृथ्वी मे है और उसी का सदैव न्याय है सो क्या तुम ईश्वर के अतिरिक्त दूसरी वस्तुओ से डरते हो। (५२) और जितने पदार्थ तुमको मिले हैं ईश्वर ही की ओर से हैं। फिर जब तुमको कोई कष्ट पहुचता है तो उसी के समकक्ष बिलबिलाते हो। (५३) फिर जब वह कष्ट को तुम पर से दूर कर देता है तो तुम में से एक गुट अपने पालनकर्ता का समकक्ष ठहराता है। (५४) जिससे जो देन हमने उनको दी थी उनका आभार प्रदर्शित न करें और लाभ भी उठा लो फिर अन्ततः प्रलय मे तो तुमको ज्ञान हो जायगा। (५५) और हमने जो इनको जीविका दी है उसमे यह मनुष्य जिन्हे नही जानते भाग ठहराते हैं।* सो ईश्वर की कसम तुम जैसे झूठ बाँधते हो तुमसे अवश्य पूछा जायगा। (५६) ईश्वर के लिए देवदूतो को पुत्रियाँ ठहराते हैं और वह पवित्र है और अपने लिए जो चाहे सो ठहराते हैं यानी पुत्र।** (५७) और जब इनमे से किसी को पुत्री के उत्पन्न होने का शुभसंवाद दिया जाता है तो मारे दुख के उसका मुँह काला पड जाता है और विष का घूट पीकर रह जाता है। (५८) मनुष्यो से पुत्री की लाज के मारे जिसके उत्पन्न होने का उसको शुभ सम्वाद सुना दिया गया है वह सोचता है कि इस अपकीर्ति को सहकर***जीता रहने दे या उसको मिट्टी मे गाड

---

* काफिर खेती ऊंट और दुम्बे के बच्चों मे एक भाग ईश्वर का ठहराते और एक भाग मूर्तियों का रखते।

* मुशरिक देवदूतो को ईश्वर की पुत्रियां बताते थे। इतना नहीं समझते थे कि ईश्वर को संतान की आवश्यकता होती तो उसको पुत्र रखना उचित था।

* अरब में पुत्री का किसी घर मे जन्म लेना बहुत बुरा समझा जाता था। पुत्री वाला यही चाहता था कि उसको दण्ड दे।

दे। देखो तो इन मनुष्यों की क्या बुरी राय है। (५९) उनकी बुरी बातें हैं जो प्रलय का विश्वास नही करते और अल्लाह की कहावत सबसे ऊपर है और वही प्रबल चमत्कार वाला है। (६०) (रुकू ७)

यदि ईश्वर सेवकों को उनके अन्याय को दण्ड में पकड़े तो पृथ्वी के धरातल पर किसी जीव को शेष न छोड़ेगा परन्तु एक समय नियत तक इनको अवकाश देता है। फिर जब इनको मृत्यु आवेगी तो न एक घड़ी पीछे रह सकते और न एक घड़ी आगे बढ़ सकते हैं। (६१) जिन वस्तुओं को आप नही पसन्द करते हैं और अपनी जिह्वा से असत्य बोलते हैं कि इनके लिए भलाई है उनके लिए नरकाग्नि है अपितु नरक में अग्रगामी है। (६२) ईश्वर की कसम है तुममें पहले हमने बहुत समाजों की ओर पैगम्बर भेजे। तो राक्षस ने उनके बुरे काम उनको अच्छे कर दिखाये। सो वही राक्षस इस युग में इनका मित्र है। और इनको कडा दण्ड है। (६३) हमने तुम पर पुस्तक इसीलिए अवतरित की है कि जिन बातों में यह आपस में भेद डाल रहे हैं वह इनको अच्छी प्रकार समझा दे। इसके अतिरिक्त यह कुरान धर्म वालो के लिए शिक्षा और दया है। (६४) अल्लाह ही ने नभ से पानी बरसाया फिर उसके द्वारा ही पृथ्वी को उसके मरे पीछे जिलाया। जो मनुष्य सुनते हैं उनके लिए निशानी हैं। (६५) (रुकू ८)

और तुम्हारे लिए चौपाओं मे भी सोचने का स्थान है कि उनके पेट मे जो है उससे गोबर और खून मे से हम तुमको शुद्ध दूध पिलाते हैं जो पीने वालो को भला लगता है। (६६) और खजूर तथा अंगूर के फलों मे से तुम मदिरा * और अच्छी जीविका बनाते हो। जो

---

* मदिरा पीना इस आयत के उतरने के समय मना न था। बाद को मना हुआ है।

मनुष्य बुद्धि रखते हैं उनके लिए इन वस्तुओ मे निशानी है । (६७) ऐ पैगम्बर तुम्हारे पालनकर्ता ने शहद की मक्खी के हृदय मे यह बात डाल दी कि पर्वतो मे और वृक्षो मे तथा मनुष्य जो ऊँची-ऊँची टट्टियाँ बना लेते हैं उनमे छत्ते बनाएँ । (६८) फिर हर प्रकार के फल को चूस रस और अपने पालनकर्ता के सरल ढँगो पर चल । मक्खियो के पेट से पीने की एक वस्तु शहद निकलती है उसकी रगतें कई प्रकार की होती है । मनुष्यों के रोग जाते रहते हैं । विचार करने वालो के लिए इसमे पता है । (६९) और ईश्वर ने ही तुमको उत्पन्न किया । फिर वही तुमको मारता है और तुममे से कोई निकम्मी उम्र अर्थात बुढ़ापे को पहुचते हैं कि जाने पीछे कुछ न जान सकें बुड्ढा बेअक्ल हो जाय अल्लाह ज्ञान वाला चमत्कार वाला है । (७०) (रुकू ९)

ईश्वर ही ने तुममे से किसी को किसी पर जीविका मे बढती दी, तो जिनकी अधिक जीविका दी गई है वह अपनी जीविका लौटा कर अपने सेवक को नही देते कि जीविका मे इनका भाग समान है तो क्या यह मनुष्य ईश्वर के पदार्थों के अविश्वासी है । (७१) तुम्ही मे से ईश्वर ने तुम्हारे लिए पत्नियो को उत्पन्न किया और तुम्हारी स्त्रियों से तुम्हारे लिए पुत्री और परपौत्रो को उत्पन्न किया । तुमको अच्छी वस्तुए खाने को दी तो क्या झूठे पूजितो के पदार्थ देने का विश्वास करते हैं और अल्लाह की कृपा को नही मानते । (७२) और ईश्वर के अतिरिक्त उनकी प्रार्थना करते है जो नभ और पृथ्वी से इनको भोजन देने का कुछ भी अधिकार नही रखते है । (७३) तो ईश्वर के लिए उदाहरण मत बनाओ । अल्लाह जानता है और तुम नही जानते । (७४) एक उदाहरण ईश्वर वर्णन करता है कि एक सेवक है दूसरे की सम्पत्ति पर जो किसी बात का अधिकार नही रखता और एक व्यक्ति है जिसको हमने अच्छे भोजन दे रक्खे हैं तो वह उसमे से छिपे और खुले कोष व्यय करता है क्या यह दोनो समान हो सकते हैं । सब प्रशसा अल्लाह को है परन्तु इनमे बहुत से नही समझते । (७५)

ईश्वर एक दूसरा उदाहरण देता है कि दो मनुष्य हैं उनमें का एक गूंगा और सेवक भी है कि स्वय कुछ नही कर सकता है और वह अपने स्वामी को बोझ भी है कि जहाँ कही उसको भेजे उससे कुछ भी ठीक नही बनता। क्या ऐसा सेवक और वह व्यक्ति समान हो सकते हैं जो मनुष्यों को समानता की सीमा पर स्थिर रहने को कहता और स्वयं भी सीधे मार्ग पर है। (७६) (रुकू १०)

नभ और पृथ्वी की छिपी बातें अल्लाह ही को ज्ञात हैं और प्रलय का घटित होना तो ऐसा है कि जैसा कि आख का झपकना अपितु वह इससे भी निकट है निस्सदेह अल्लाह हर वस्तु पर शक्तिशाली है। (७७) अल्लाह ही ने तुमको तुम्हारी माताओ के उदर से निकाला। तुम कुछ भी नही जानते थे और तुमको कान, आँख और हृदय दिये जिससे तुम धन्यवाद करो। (७८) क्या मनुष्यो ने पक्षियो को नही देखा जो नभ के मध्य मे उडते हैं। उनको ईश्वर ही रोके रहता है। जो मनुष्य विश्वास रखते हैं उनके लिए इसमे निशानियाँ हैं। (७९) और अल्लाह ही ने तुम्हारे लिए तुम्हारे घरों को ठिकाना बनाया और चौपायो की खालो से तुम्हारे लिए डेरे बनाये कि तुम अपने कूच के समय और अपने ठहरने के समय उनको हल्का पाते हो और चारपायो की ऊन और उनके रुयाँ और उनके बालो से बहुत से सामान और काम की वस्तुए बनाई एक समय निश्चित तक इनसे लाभ उठाओ। (८०) और अल्लाह ही ने तुम्हारे लिए अपनी उत्पन्न की हुई वस्तुओ की छाया बनायी और तुम्हारे लिए कुर्ते बनाये जो तुम्हें गर्मी सर्दी से बचायें और कुछ लोहे के बख्तर कुर्ते बनाये जो तुमको दूसरे की चोट से बचावे। यो ईश्वर अपनी कृपाए तुम पर पूरे करता है सम्भवत. तुम उसको मानो। (८१) फिर यदि मुँह मोड़ें तो तुम्हारे जिम्मे स्पष्टतया सुना देता है। (८२) ईश्वर की कृपा को पहचानते हैं फिर जान बूझकर उनसे मुकरते हैं और उनमे से प्रायः कृतघ्न हैं। (८३) (रुकू ११)

जब हम प्रत्येक गुट मे से साक्षी बनाकर उठा खड़ा करेंगे काफिरो को बात करने की आज्ञा नही दी जायेगी और न उनसे क्षमाप्रार्थना के लिए कहा जायगा। (८४) जिन मनुष्यो ने उद्दण्डता की है जब दण्ड को देख लेंगे तो न तो इनसे दण्ड ही हलका किया जायगा और न उनको अवकाश दिया जायगा। (८५) और जो मनुष्य ईश्वर के समकक्ष बनते रहे जब वह अपने समकक्षो को देखेंगे तब बोल उठेंगे कि हमारे पालनकर्ता यही हैं वह हमारे देवता जिनको हम तेरे अतिरिक्त पुकारा करते थे तो उन देवताओ की बात उलटी,उलटी उन्ही की ओर फेंक मारेंगे कि तुम निरे झूठे हो। (८६) और वह मनुष्य उस दिन ईश्वर के आगे सिर झुका देंगे और जो झूठ बांधते थे वे उनको भूल जावेंगे। (८७) जो अविश्वासी हैं और मनुष्यो को ईश्वर के मार्ग से रोकते हैं उनके उत्पात के उत्तर मे हम उनके पक्ष मे दण्ड पर दण्ड बढाते जावेंगे। (८८) जब हम प्रत्येक गुट मे उन्ही मे का एक पैगम्बर उनके सामने खडा करेंगे और पैगम्बर तुमको इनके सामने साक्षी बना कर लावेंगे और ऐ पैगम्बर हमने तुम पर पुस्तक अवतरित की है जिसमें, प्रत्येक वस्तु का वर्णन, मार्ग की सूझ, शिक्षा और दया है और शुभ सम्वाद धर्म वालो के लिए है। (८९) (रुकू १२)

अल्लाह न्याय करने और भलाई करने और सम्बन्धियो को धन का सहारा देने की आज्ञा देता है और निर्लज्जता के कामो और बुरे कामो और अत्याचार करने से मना करता है, तुम को शिक्षा देता है, सम्भवत. तुम ध्यान रक्खो। (९०) और जब तुम आपस मे प्रतिज्ञा कर लो तो अल्लाह की कसम को पूरा करो और कसमो को उनके पक्के किये पीछे न तोड़ो जो तुम करते हो अल्लाह उसका ज्ञाता है।(९१)उस स्त्री जैसे मत बनो—जिसने अपना सूत काते पीछे टुकड़े-टुकडे करके तोड डाला। आपस के झगडे के कारण अपनी कसमो को मत तोडने लगो कि एक गुट दूसरे गुट से शक्तिशाली है। ईश्वर इस भेद से तुम्हारी जांच करता है और जिन वस्तुओ मे तुम भेद डालते हो प्रलय के दिन

ईश्वर तुम पर प्रकट करेगा। (९२) ईश्वर चाहता तो तुम सब को एक ही गुट बना देता परन्तु वह जिसको चाहता है पथभ्रष्ट करता है और जिसको चाहता है सुझाता है और जो कुछ तुम करते रहे हो उसकी तुमसे पूछ होगी*(९३)अपनी कसमों को अपने आपस के झगड़ेका कारण न बनाओ कि मनुष्य के पैर जमे पीछे उखड़ जायं और ईश्वर के मार्ग से रोकने के बदले में तुमको दण्ड चखना पडे और तुमको बड़ा दण्ड हो। (९४) और अल्लाह की कसम के बदले तुच्छ लाभ मत लो। जो ईश्वर के यहाँ है वही तुम्हारे पक्ष मे बहुत अच्छा है यदि तुम समझो। (९५) जो तुम्हारे पास है निपट जायगा और जो अल्लाह के पास है शेष रहेगा और जिन्होने सन्तोष किया उनके अच्छे काम का बदला भला देंगे। (९६) जो व्यक्ति अच्छे काम करेगा पुरुष हो या स्त्री और वह विश्वास भी रखता हो तो हम उसका अच्छा जीवन व्यतीत करा देंगे और उनके कामों का जो करते थे देंगे। (९७) तो ऐ पैगम्बर जब तुम कुरान पढने लगो फटकारे हुए दुष्ट से ईश्वर की शरण माँग लिया करो। (९८) जो मनुष्य विश्वास रखते हैं और अपने पालनकर्ता पर भरोसा करते हैं उन पर राक्षस का कुछ वश नहीं चलता। (९९) उसका बस तो उन्ही पर चलता है जो उसके साथ मेलजोल रखते हैं ईश्वर का समकक्ष ठहराते हैं। (१००) (रुकू १३)

ऐ पैगम्बर जब हम एक आयत को बदल कर उसके स्थान पर दूसरी आयत अवतरित करते है और जो आज्ञा देता है उसको वही खूब जानता है तो काफिर तुम से कहने लगते हैं कि तू तो अपने हृदय से बनाया करता है अपितु इनमे से प्रायः नही समझते*। (१०१)

---

* अर्थात काफिरों को धोखे से न मारो क्योंकि इससे कुफ्र नहीं मिटता और इससे अपने ऊपर बवाल पड़ता है।

* यह नहीं समझते कि पहले आज्ञा को क्यों बदला।

ऐ पैगम्बर कहो कि सत्य तो यह है कि इस कुरान को तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से पवित्रात्मा जिब्रील लेकर आये हैं जिससे जो मनुष्य विश्वास ला चुके हैं ईश्वर उनको अचल रक्खे और धर्मवालो के पक्ष मे मार्ग की सूझ और शुभसवाद है। (१०२) ऐ पैगम्बर हमको खूब ज्ञात है कि काफिर कुरान के विषय मे यह सदेह करते हैं कि हो न हो इस व्यक्ति को अमुक* मनुष्य सिखलाया करता है, सो जिस व्यक्ति की ओर अपेक्षा करते हैं उसकी बोली बिभाषा है कुरान सब अरबी भाषा है। (१०३) और जो मनुष्य ईश्वर की आयतो पर विश्वास नही लाते ईश्वर उन्हें सच्चा मार्ग नही दिखलाता और उनको दुखदाई दण्ड है। (१०४) हृदय से झूठ बनाना तो उन्ही मनुष्यो का काम है जिनको ईश्वर की आयतो का विश्वास नही और यही मनुष्य झूठे हैं। (१०५) जो व्यक्ति विश्वास लाये पीछे ईश्वर की अस्वीकृति पर विवश किया जाय परन्तु उसका हृदय विश्वास की ओर से संतुष्ट हो परन्तु जो कोई विश्वास लाये पीछे ईश्वर के साथ अस्वीकार करे और अविश्वास भी करे तो जी खोलकर, ऐसे मनुष्यो पर ईश्वर का कोप और उनके लिए बडा दण्ड है। (१०६) यह इस कारण से कि उन्होने ससार के जीवन को प्रलय पर पसद किया और इस कारण से कि अल्लाह अविश्वासियो को शिक्षा नही दिया करता। (१०७) यही वह मनुष्य हैं जिनके हृदय पर और जिनके कानो पर और जिनकी आँखो पर अल्लाह ने मुहर कर दी है और यही वे सुध हैं। (१०८) अवश्य प्रलय मे यही मनुष्य घाटे मे रहेंगे। (१०९) फिर जिन मनुष्यो ने विपत्ति आये पीछे घरबार छोडे फिर ईश्वर के मार्ग मे धर्मयुद्ध किये और डटे रहे, तुम्हारा पालनकर्ता क्षमा करनेवाला दयालु है। (११०) (रुकू १४)

---

* एक आदमी का एक सेवक रूमी नसरानी मक्के मे था। यह पैगम्बरो का हाल सुनाने के लिए मुहम्मद साहब के पास आकर बैठा करता था। काफिर कहने लगे यही आदमी मुहम्मद को सिखाता है कि यह कहो और वह कहो।

जबकि वह दिन आवेगा प्रत्येक मनुष्य अपनी जाति के लिए झगडने के लिए उपस्थित होगा। प्रत्येक व्यक्ति को उसके कामके का पूरा-पूरा बदला दिया जावेगा और मनुष्य पर अत्याचार न होगा। (१११) ईश्वर ने एक गाँव का उदाहरण वर्णन किया है कि वहाँ के मनुष्य शांति व धैर्य से थे, हर ओर से उनकी जीविका उनके पास बेखटके चली आती थी। फिर उन्होने ईश्वर की कृपाओ पर जघन्यता की, तो उनके कामो के बदले मे अल्लाह ने उनको भूख और भय का उनका ओढना और बिछौना बना दिया। (११२) और उन्ही में का एक पैगम्बर उनके पास आया तो उन्होने उसको झुठलाया, उस पर ईश्वरीय दण्ड से उनको पकड़ा और वे अपराधी थे। (११३) तो ईश्वर ने जो तुझको पुण्य और पवित्र जीविका दी है उसको खाओ और यदि अल्लाह ही की पूजा करो और उसका धन्यवाद करो। (११४) उसने तुम पर मृत को और खूनको और सूअर के माँस को और उसको जो अल्लाह के अतिरिक्त किसी और के लिए आरक्षित किया जाय पाप किया, फिर जो व्यक्ति भूख से विवश हो न शक्ति से और न असीमितता से तो अल्लाह क्षमा करनेवाला दयालु हैं। (११५) झूठ-मूठ जो कुछ तुम्हारी जिह्वा पर आवे न कह दिया करो कि यह पुण्य है और यह पाप ईश्वर पर झूठ बाँधते हो और झूठ बाँधनेवालो का भला नही होता। (११६) थोड़े से सुख है और तत्पश्चात उनको दुखदाई दण्ड है। (११७) और ऐ पैगम्बर हमने यहूदियो पर वह वस्तुऐं जो पहले तुमसे वर्णन कर चुके हैं पाप कर दी थी। हमने उन पर अत्याचार नहीं किया अपितु वह स्वयं अपने ऊपर अत्याचार किया करते थे। (११८) फिर जो मनुष्य पागलपन से अपराध करते थे फिर उसके पश्चात क्षमा माँगी और सुधार किया तो तुम्हारा पालनकर्ता क्षमा करने वाला दयालु है। (११९) (रुकू १५)

निस्सदेह इब्राहीम मनुष्यो के अगुआ हो गये हैं। ईश्वर के आज्ञाकारी सेवक जो एक ईश्वर के होकर रहे थे और शिर्कवालो मे से न

थे। (१२०) ईश्वर ने उनको चुन लिया था और उनको सीधा मार्ग दिखला दिया था और हमने उनको ससार मे भलाई दी। (१२१) और प्रलय मे भी वह भले मनुष्यो मे होगे। (१२२) फिर ऐ पैगम्बर हमने तुम्हारी ओर आज्ञा भेजी कि इब्राहीम के ढग का समर्थन करो जो एक के होकर रहे थे और शिर्कवालो मे से न थे। (१२३) हफ्ते की ताजीम तो उन्ही पर आवश्यक की गई थी जिन्होंने उसमे भेद डाले और जिन-जिन बातो मे यह मनुष्य आपस मे भेद डालते रहे है प्रलय के दिन तुम्हारा पालनकर्ता उनमे उन बातो का निर्णय कर देगा। (१२४) ऐ पैगम्बर समझ की बातो और शिक्षाओ से अपने पालनकर्ता के मार्ग को ओर बुलाओ और उनकी ओर अच्छी प्रकार विचार करके जो कोई ईश्वर के मार्ग से भटका उसे और जिसने सीधा मार्ग पकडा उसे तुम्हारा पालनकर्ता खूब जानता है। (१२५) यदि कठोरता भी करो तो वैसी ही कठोरता करो जैसी तुम्हारे साथ की गई हो और यदि सन्तोष करो तो हर दशा मे सन्तोष करनेवालो के लिए सन्तोष अच्छा है। (१२६) और सन्तोष करो और ईश्वर की सहायता से सतोष कर सकोगे और इन पर पछतावा न कर और उनके छल से दुख मत कर। (१२७) अल्लाह सयमियो और भले काम करनेवालो का साथी है। (१२८) (रुकू १६)

पन्द्रहवाँ पारा (सुभानल्लजी)

सूरे बनी इसराईल

मक्के में अवतरित हुई, इसमें १११ आयतें और १२ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त दयावान तथा कृपालु है। वह पवित्र है जो अपने भक्त को रातों रात मसजिद पाप अर्थात काबे घर से

मसजिद अक्सा अर्थात बैतुल मुकद्दस तक ले गया जिस के आस-पास हमने खूबियाँ दे रक्खी हैं और इसे ले जाने से अर्थ यह था कि हम उनको अपनी प्रकृति के नमूने दिखलावें। वह सुनता और जानता है। (१) और हमने मूसा को पुस्तक तौरात दी और उसको इसराईल की संतान के लिए आज्ञा ठहराई और उनसे कह दिया कि हमारे अतिरिक्त किसी को अपना काम सँभालनेवाला न बना। (२) ऐ उन मनुष्यो की संतान ! जिनको हमने नूह के साथ नौका मे सवार कर लिया था वह हमारे आभारी सेवक थे। (३) हमने इसराईल के पुत्रो से पुस्तक मे स्पष्ट कह दिया था कि तुम अवश्य देश में दो वार उत्पात करोगे और बड़ा अत्याचार करोगे। (४) फिर जब पहला वचन आया तो हमने तुम्हारे मुकाबले मे अपने ऐसे सेवक उठा खड़े किये जो बड़े लडने वाले थे और वह नगरों के अन्दर फैल गये और प्रण होना ही था। (५) फिर हमने शत्रुओं पर तुम्हारे दिन फेरे और धन से और पुत्रो से तुम्हारी सहायता की और तुमको बड़े जत्थे वाला वना दिया। (६) यदि तुम भलाई करो या बुराई अपनी ही प्रतिज्ञाओ के लिए है। फिर जब दूसरे उत्पात का समय आया तो फिर हमने अपने दूसरे भक्तों को उठाकर खड़ा किया कि तुम्हारे मुँह बिगाड़ दे और जिस प्रकार पहली वार मसजिद मे घुसे थे उसी प्रकार उसमें घुसें और जिस वस्तु पर अधिकार पावें तोड़-फोड़ उसका सत्यानाश करें। (७) अचरज नही तुम्हारा पालनकर्ता तुम पर कृपा करे और यदि तुम फिर पहली सी उद्दण्डता करोगे तो हम भी दण्ड में लौटेंगे और हमने काफिरों के लिए नरक का बन्दीगृह तैयार कर रक्खा है। (८) यह कुरान वह मार्ग दिखाता है जो बहुत सीधा है। विश्वास वालो को और जो भले कर्म करते हैं इस बात का शुभसंवाद देती हैं। और जो भला काम करते हैं उनको बड़ा फल मिलेगा। (९) जो मनुष्य प्रलय का विश्वास नहीं रखने उनके लिए हमने कठिन दण्ड तैयार किया है। (१०) (रुकू १)

मनुष्य जिस प्रकार भलाई माँगता है उसी प्रकार बुराई माँगने

लगता है और मनुष्य बड़ा असंतोषी है। (११) हमने रात और दिन को दो नमूने बनाये, फिर रात के नमूने को मिटा दिया। दिन का निशान देखने को बना दिया जिससे तुम अपने पालनकर्ता से जीविका ढूंढ़ो और वर्षों की गिनती और हिसाब को जानो और हमने सब बातें खूब ब्यौरे के साथ वर्णन कर दी हैं। (१२) और प्रत्येक मनुष्य का भाग्य उसकी गर्दन से लगा दिया है और प्रलय के दिन हम उसके कर्मों का लेखा निकाल कर उसके सामने प्रस्तुत करेंगे, उसको अपने सामने खुला हुआ देख लेगा। (१३) और हम उससे कहेंगे कि वह अपना लेखा पढ़ ले, आज अपना हिसाब लेने के लिए तू स्वयं ही पर्याप्त है। (१४) जो मनुष्य सीधे मार्ग पर चला तो वह अपने ही लिए सीधा मार्ग चलता है और जो भटका तो उसके भटकने से अपराध का दण्ड भी उसी को भुगतना पडेगा और कोई दूसरे के बोझ को अपने ऊपर न लेगा और जब तक हम पैगम्बर को भेज न लें किसी को उसके अपराध का दण्ड नही दिया करते। (१५) हमको जब किसी गांव को मार डालना स्वीकार होता है, हम उसके भली दशा के मनुष्यो को आज्ञा देते हैं। फिर वह उसमे अवज्ञा करते हैं तब उन पर यह दण्ड सिद्ध हो जाता है। फिर हम उस बस्ती को मार कर नष्ट कर देते हैं। (१६) और नूह के पश्चात हमने कितनी बस्तियो को मार डाला और ऐ पैगम्बर तुम्हारा पालनकर्ता अपने सेवको का अपराध जानने और देखने को पर्याप्त है। (१७) जो व्यक्ति ससार का चाहने वाला हो तो हम जिसे देना चाहते हैं उसीमे उसको उसी समय दे देते हैं*। फिर हमने उसके लिए नरक ठहरा रक्खा है जिसमे वे बुरी प्रकार से फटकारे हुए प्रविष्ट होगे। (१८) और जो व्यक्ति परलोक का चाहने वाला है।

---

* कुछ लोग इसी जीवन मे सफलता प्राप्त करना चाहते हैं और उस जीवन को सफल बनाने की चेष्टा नहीं करते जो आगे चलकर मरे पीछे होगा। ऐसे लोग अपना ही बुरा करते हैं।

और उसके लिए जैसा परिश्रम करना चाहिए वसा उसके लिए प्रयत्न करता है और वह विश्वास भी रखता है तो यही है जिनका परिश्रम सफल होगा। (१६) ऐ पैगम्बर वह संसार के चाहने वाले और यह परलोक के चाहने वाले सबको हम तुम्हारे पालनकर्ता के दान से सहायता सहायता देते हैं और तुम्हारे पालनकर्ता का दान बन्द नहीं। (२०) देखो हमने एक को एक से कैसा बढ़ाया और प्रलय मे बड़े पद हैं और बड़ी बढ़ती है। (२१) ऐ पैगम्बर ईश्वर के साथ किसी दूसरे की उपासना नहीं करना। नही तो तुम दुर्दशा पाकर बैठे रह जाओगे। (२२) (रुकू २)

तुम्हारे पालनकर्ता ने आज्ञा दे दी है कि उसके अतिरिक्त किसी की उपासना न करना और माता-पिता के साथ इच्छा व्यवहार करो। यदि माता-पिता में से एक या दोनो तेरे सामने बुड्ढे हो जावें तो उनके आगे हूं भी मत करना और न उनको झिड़कना और उनके साथ आदर के साथ बोलना, (२३) प्रेम से दीनता के साथ उनके सामने सिर झुकाये रखना और प्रार्थना करते रहना कि हे मेरे पालनकर्ता! जिस प्रकार उन्होने मुझे छोटे से पाला है इसी प्रकार तू भी इन पर अपनी कृपा कर। (२४) तुम्हारे हृदय की बात को तुम्हारा पालनकर्ता खूब जानता है, यदि तुम भले हो तो वह क्षमा प्रार्थना करने वालो के अपराध क्षमा करने वाला है। (२५) सम्बन्धी निर्धन और यात्री को उसका भाग पहुंचाते रहो और अनुचित मत उड़ाओ। (२६) अनुचित उड़ाने वाले दुष्टो के भाई हैं और राक्षस अपने पालनकर्ता का बड़ा ही जघन्य है। (७) यदि मुझे अपने पालनकर्ता से जीविका की तलाश में आशातीत होकर इनसे मुंह फेरना पड़े * तो नम्रता से

---

* अर्थात कोई ऐसा समय आये जिसमें तुमको कमाने की चिन्ता हो और तुम उनको कुछ न दे सको, तो उनको भंली-भांति समझा दो कि तुम उस समय कोई उनकी सहायता नहीं कर सकते।

इनको समझा दो। (२८) अपना हाथ न तो इतना सिकोड़ो कि मानो गर्दन मे बधा है न बिल्कुल उसको फैला ही दो कि तू फटकारा हुआ हारकर बैठ रहे। (२९) ऐ पैगम्बर तुम्हारा पालनकर्ता जिसकी जीविका चाहता है बढ़ा देता है और जिसकी जीविका चाहता है कम कर देता है। वह अपने सेवको को जानता देखता है। (३०) (रुकू ३)

निर्धनता से अपनी सन्तान को मार मत डालो। उनको और तुमको हम जीविका देते हैं संतान का जान से मारना बडा भारी पाप है। (३१) व्यभिचार के पास न फटकना क्योकि वह निरलज्जता है और बुरा चलन है। (३२) किसी की जान को जिसका मारना अल्लाह ने पाप कर दिया है निरर्थक बध न करना परन्तु भाग पर और जो व्यक्ति अत्याचार से मारा जाय तो हमने उसके सरक्षक को अधिकार दे दिया है तो उसको चाहिए कि खून मे अत्याचार न करे। क्योकि उसकी सहायता होती है। (३३) जब तक अनाथ योवन को न पहुचे उसके धनके पास मत जाओ परन्तु जिस प्रकार अच्छा हो और प्रण को पूरा करो क्योकि प्रण की पूछ होगी। (३४) और जब तौल करो तो पैमाने को पूरा भर दिया करो और तौल कर देना हो तो डडी सीधी रखकर तौला करो। यह अच्छा है और इसका अन्त भी अच्छा है। (३५) ऐ ध्यान देनेवालो जिसबात का तुझको ज्ञान नही उसके अन्ध-विश्वास से पीछे न हो क्योकि कान और आख और हृदय इन सबसे पूछ ताछ होनी है। (३६) पृथ्वी मे अकड कर न चल क्योकि न तो तू पृथ्वी को फाड सकता है और न पहाड़ो की ऊँचाई को पहुच सकता है। (३७) ऐ पैगम्बर इन बातो की बुराई ईश्वर को नापसन्द है। (३८) ऐ पैगम्बर यह बातें उन बुद्धि की बातो मे से हैं जिनको तुम्हारे पालनकर्ता ने तुम्हारी ओर आज्ञा किया है। ईश्वर के साथ और किसी की उपासना न करना नही तो तू फटकारा हुआ अपराधी होकर नरक मे डाल दिया जायगा। (३९) ऐ शिर्कवालो क्या तुम्हारे पालनकर्ता

ने तुमको पुत्रों के लिए चुन लिया है और स्वयं पुत्रियाँ ले बैठा अर्थात देव दूतत्तियाँ यह तो तुम बड़ी बात कहते हो। ४०) (रुकू ४)

हमने इस कुरान में कई प्रकार से समझाया जिससे यह मनुष्य समझें परन्तु इससे इनकी घृणा ही बढती जाती है। (४१) ऐ पैगम्बर इन मनुष्यो से कहो कि यदि ईश्वर के साथ जैसा यह मनुष्य कहते हैं कोई और पूजित होते तो इस सूरत में वे दूसरे पूजित सिंहासन के स्वामी ईश्वर की ओर मार्ग निकालते*। (४२) जैसी बातें यह मनुष्य कहते हैं इनसे वह पवित्र और बहुत ऊंचा है। (४३) नभ और पृथ्वी और जो नभ और पृथ्वी मे है उसका नाम लेता है और जितनी वस्तुएं हैं सब उसकी प्रशन्सा के साथ उसका नाम लेती हैं, परन्तु तुम उनके पढ़ने को नहीं समझते। वह सहनशील और बड़ा क्षमा करने वाला है। (४४) ऐ पैगम्बर जब तुम कुरान पढ़ते हो तो हम तुममें और उन मनुष्यों मे जिनको प्रलय का विश्वास नहीं एक परदा कर देते हैं। (४५) उनके हृदय पर आड़ है जिससे कुरान को समझ न सकें और उनके कामो मे एक प्रकार का बोझ डालते हैं जिससे सुन न सकें। और जब कुरान में अकेले ईश्वर की चर्चा करते हैं तो काफिर घृणा करके उल्टे भाग खड़े होते हैं। (४६) जब यह तुम्हारी ओर कान लगाते हैं तो जिस इच्छा से सुनते हैं तब कहते हैं कि तुम तो एक मनुष्य के पीछे पड़े हो जिस पर किसी ने जादू कर दिया है। (४७) ऐ पैगम्बर देखो तुम्हारे विषय में कैसी-कैसी बातें बकते हैं तो यह मनुष्य भटक गये और अब मार्ग नहीं पा सकते। (४८) और कहते हैं जब हड्डियां और टुकडे-टुकड़े हो गया तो क्या हमको नये सिरे से उत्पन्न करके उठा खड़ा किया जायगा। (४९) ऐ पैगम्बर कहो कि तुम पत्थर या लोहा (५०) या और वस्तु बन जाओ या कोई वस्तु जो तुम्हारी समझ मे बडी हो। उस पर पूछेंगे कि हमको पुन. कौन जीवित कर सकेगा। कहो कि वही ईश्वर जिसने तुमको पहली बार उत्पन्न किया था। इस पर यह तुम्हारे आगे सिर मटकाने लगेंगे और

पूछेंगे कि भला प्रलय कब आवेगी। तुम इनसे कहो आश्चर्य नहीं कि निकट ही आ लगी हो। (५१) जब ईश्वर तुमको बुलायेगा तो तुम उसकी प्रशंसा करते फिरे चले आओगे और विचार करोगे कि बस थोड़े ही दिन तुम रहे। (५२) (रुकू ५)

हमारे मानने वालों को समझा दो कि ऐसी कहें जो भली हो क्योंकि दुष्ट मनुष्यो मे झगड़ा डलवाता है और राक्षस मनुष्य का स्पष्ट शत्रु है। (५३) मनुष्यो तुम्हारा पालनकर्ता तुम्हारी दशा से खुब परिचित है चाहे तुम पर दया करे और चाहे तुमको दण्ड दे और हमने तुमको मनुष्यों का ठेकेदार बनाकर तो नही भेजा (५४) और जो नभ और पृथ्वी मे है तुम्हारा पालनकर्ता उससे खूब परिचित है और हमने किन्ही पैगम्बरो पर किन्ही को बढ़ोती दी और हमी ने दाऊद को जबूर दी। (५५) ऐ पैगम्बर ! मनुष्यो से कहो कि ईश्वर के अतिरिक्त जिनको तुम स्वयं समझते हो पुकारो सो न तो तुम्हारा कष्ट ही दूर कर सकेंगे और न उसको बदल सकेंगे। (५६) यह जिनको शिर्कवाले बुलाते हैं वह अपने पालनकर्ता की ओर मार्ग ढूंढते हैं कि कौन भक्त अधिक समीप है और उसकी कृपा की आशा रखते हैं और उसकी मार से डरते हैं निस्सन्देह तेरे पालनकर्ता की मार भय की वस्तु है। (५७) कोई अवज्ञाकारियो की बस्ती नही जिसे प्रलय से पहले हम नष्ट न कर देंगे या उसको कठोर दण्ड न देंगे। यह बात पुस्तक में लिखी जा चुकी है। (५८) हमने चमत्कारो का भेजना बन्द किया क्योंकि अगले मनुष्यों ने उनको झुठलाया। हमने समूद को उंटनी का स्पष्ट चमत्कार दिया था फिर भी मनुष्यो ने उसे सताया और हम चमत्कार केवल डराने के विचार से भेजा करते हैं। (५९) जब हमने तुमसे कहा कि तुम्हारे पालनकर्ता ने मनुष्यो को हर ओर से रोक रक्खा है जो हमने तुमको दिखावा दिखाया सो मनुष्यो के जाँचने को दिखाया और वृक्ष जिस पर कुरान मे लाँछना की गई है उसके पश्चात भी हम इन मनुष्यों को डराते हैं परन्तु हमारा डराना इनके अहंकार को बढ़ाता है। (६०) (रुकू ६)

हमने देवदूतों को आज्ञा दी कि आदम को दण्डवत करो तो सभी ने नमस्कार किया परन्तु इबलीस झगडने लगा कि क्या मैं ऐसे मनुष्य को नमस्कार करूं जिसे तूने मिट्टी से बनाया। (६१) कहने लगा कि भला देख तो यही वह मनुष्य है जिसको तूने मुझ पर बढ़ती दी है यदि तू मुझको प्रलय तक का अवकाश दे तो मैं अतिरिक्त थोड़े मनुष्यों के इसकी सब सन्तान की जड़ काटता रहूंगा। (६२) ईश्वर ने कहा चल दूर हो, जो मनुष्य इनमें से तेरा समर्थन करेगा सो तुम सबको नरका दण्ड पूरा बदला होगा। (६३) इनमें से जिसे अपनी बातो से बहका सके बहका ले और उन पर अपने सवार और प्यादे चढ़ा ला और उनके साथ धन और सन्तान में साझा लगा और इनसे प्रण कर और राक्षस तो इनसे जितने प्रण करता है सब धोखे के होते हैं। (६४) हमारे सेवकों पर तेरा किसी प्रकार का वश न होगा और तुम्हारा पालनकर्ता काम का संभालने वाला है। (६५) तुम्हारा पालनकर्ता वह है जो तुम्हारे लिए नदी में नाव को चलाता है जिससे तुम उसकी कृपा ढूंढो। ईश्वर तुमपर कृपालु है। (६६) जब नदी मे तुमको दुख पहुंचता है तो जिनको तुम उसके अतिरिक्त पुकारा करते थे भूल जाते हो। परन्तु जब वह तुमको शुष्कता की ओर निकाल लाता है तो तुम फिर मुंह मोड़ते हो और मनुष्य बड़ा ही जघन्य है। (६७) सो क्या तुम इस बात से निडर हो गये हो कि वह तुमको वन की ओर धंसा दे या तुम पर पत्थर बरसावे और उस समय तुम अपना सहायक न पाओ। (६८) या तुम इस बात से निडर हो कि ईश्वर फिर तुमको लौटाकर पुन. उसी नदी में ले जावे और तुम पर हवा का झोंका भेजे और तुम्हारी जघन्यती के दण्डस्वरूप तुमको डुबो दे। फिर तुम अपने लिए हम पर दावा करने वाला न पाओ। (६९) निस्सन्देह हमने मानव का सन्तान को मान दिया और शुष्कता और नदी में उनको सवारी दी है और अच्छी वस्तुओ मे उन्हें जीविका दी और जितने मनुष्य हमने उत्पन्न किये हैं उनमे बहुतसों पर उनको बढ़ती दी। (७०) (रुकू ७)

बड़ी बढती तो उस दिन की है जब हम प्रत्येक गुट को उनके अग्रगामियो समेत बुलायेंगे। तो जिनका लेखा उनके हाथ मे दिया जायगा वह अपने लेखे को पढ़ने लगेंगे और उन पर एक मे रत्ती के समान भी अन्याय न होगा। (७१) जो इसमे अन्धा* रहा वह प्रलय मे भी अन्धा होगा और मार्ग से बहुत दूर भटका हुआ होगा। (७२) और ऐ पैगम्बर जो हमने कुरान तुम्हारी ओर भेजा है मनुष्य तो तुमको इससे विचलाने मे लगे थे जिससे इसके अतिरिक्त तुम झूठ हमारी ओर विचार करो और यह मनुष्य तुमको मित्र बना लेते हैं। (७३) यदि हम तुम दृढ़ न रखते तो तू भी थोड़ा इनकी ओर को झुकने लगा था। (७४) ऐसा होता तो हम तुमको जीते और मेरे दुहरे दण्ड का आनन्द चखाते, फिर तुमको हमारे मुकाबले मे कोई सहायक न मिलता। (७५) यह मनुष्य तो तुमको मक्के की पृथ्वी से घबराहट उत्पन्न करा रहे थे जिससे तुमको यहाँ से निकाल बाहर करे और ऐसा होता तो तुम्हारे पीछे यह मनुष्य भी कुछ दिन से अधिक न रहने पाते। (७६) तुमसे पहले जितने पैगम्बर हमने भेजे हैं उनका यही नियम रहा है जो नियम हमारे निर्वाचित है मे भेद होता न पाओगे। (७७) (रुकू ८)

ऐ पैगम्बर सूर्य के ढलने से रात्री के अंधेरे तक नमाजें पढा करो करो और कुरान प्रात पढना चाहिए। निस्सन्देह कुरान का प्रातःकाल ईश्वर के सामने होना है। (७८) और रात्री के एक भाग मे कुरान (नमाज तहज्जद) पढा करो और यह कर्तव्य से अधिक बात तेरे लिए है, सम्भवतः तुम्हारा पालनकर्ता तुमको प्रशंसनीय स्थान मे पहुचाये। (७९) प्रार्थना किया करो कि ऐ मेरे पालनकर्ता! मुझको अच्छे स्थान

* अर्थात ईश्वर को इस जीवन मे नहीं पहचानता और उसके प्यारों की आज्ञा का पालन नहीं करता वह दूसरी दुनिया मे बड़े घाटे में रहेगा।

पर पहुंचा और मुझको सच्चा मार्ग दिखला और अपने पास से मुझको साम्राज्य में सहायता दें। (८०)

ऐ पैगम्बर! मनुष्यों से कह दो कि सत्य धर्म आया है और असत्य धर्म मिट गया है और निस्सन्देह झूठ तो मिटने वाला ही था। (८१) हम कुरान में ऐसी-ऐसी बातें अवतरित कहते हैं जो धर्म वालों के लिए औषधी और कृपा है और शीघ्रता करने वालों को तो इससे हानि ही और होती है। (८२) जब तक मनुष्य को आराम देते हैं तो उल्टा हमसे मुंह फेरता है और पार्व खाली करता है और जब उसको कष्ट पहुंचती है तो आशा तोड़ बैठता है। (८३) ऐ पैगम्बर! इन मनुष्यों से कहो कि प्रत्येक अपने ढंग पर काम करता है, फिर जो ठीक सीधे मार्ग पर है तुम्हारा पालनकर्ता उसको खूब जानता है। (८४) (रुकू ९)

ऐ पैगम्बर आत्मा के विषय में तुमसे पूछते हैं तो कह दो, आत्मा मेरे पालनकर्ता की ओर से और तुम को थोड़ा ही ज्ञान दिया गया है। (८५) ऐ पैगम्बर यदि चाहें तो जो कुरान हमने तुम्हारी ओर भेजा है उसको उठा* ले जावें, फिर तुमको उसके लिए हमारे मुकाबले में कोई सहायक न मिलेगा। (८६) परन्तु तुम्हारे पालनकर्ता ही की कृपा से तुम पर उसका बड़ा ही पोषण है। (८७) ऐ पैगम्बर! इन मनुष्यों से कहो कि यदि सब मनुष्य और भूत ऐसा कुरान बनाने को एकत्रत हो तो भी ऐसा न बना सकेंगे चाहे उनमे एक दूसरे की बड़ी सहायता करे। (८८) इतने पर भी कि हमने इस कुरान मे मनुष्यों के लिए सभी उदाहरण वर्णन किये हैं बहुत-से मनुष्य अकृतज्ञ ही रह। (८९) ऐ पैगम्बर! मक्का के काफिर तुमसे कहते हैं कि हम तो उस

---

* अर्थात कुरान को हम भुला देना चाहें तो ऐसा भुला दें कि किसी को इसका कुछ शब्द भी स्मरण न रह जाय।

समय तक तुम पर विश्वास लाने वाले नही जब तक हमारे लिए पृथ्वी से कोई चश्मा वहाँ न निकालो। (९०) या खजूरो और अंगूरों का तुम्हारा कोई उपवन हो और उसके मध्य में तुम नहरें चालू कर दिखाओ। (९१) या जैसा तुम कहा करते थे कि नभ के टुकडे-टुकडे हम पर ला गिरावो या ईश्वर देवदूतों को लाकर सामने खडा करे। (९२) या कोई तुम्हारा स्वर्ण का घर हो या तुम नभ मे चढ जाओ और जब तक तुम हमको लेखा न अवतरित करो जिसे हम आप पढ़ लें तब तक हम तुम्हारे चढने का विश्वास करने वाले नही। कहो कि अल्लाह पवित्र है, मैं एक भेजा हुआ मनुष्य हूँ। (९३) (रुकू १०)

जब मनुष्यो के पास ईश्वर की ओर से शिक्षा आ चुकी तो उनको विश्वास लाने से इसके अतिरिक्त और कोई रोकने वाला नही हुआ। परन्तु यही कहने लगे क्या ईश्वर ने मनुष्यो को पैगम्बर बना के भेजा है। (९४) ऐ पैगम्बर तू मनुष्यो से कह कि पृथ्वी मे यदि देवदूत होते और विश्वास से चलते-फिरते तो हम नभ से देवदूत ही को पैगम्बर बनाकर उनसे पास भेजते। (९५) ऐ पैगम्बर! इनसे कहो कि हमारे और तुम्हारे मध्य मे अल्लाह ही पर्याप्त है, वह अपने सेवको से परिचित है और उन्हें देख रहा है। (९६) और जिसको ईश्वर शिक्षा दे वही सच्च मार्ग पर है और जिसे भटकावे तो ऐर पथ भूलो के लिए तुम ईश्वर के अतिरिक्त कोई सहायक नही पाओगे और प्रलय के दिन हम उन मनुष्यो को उनके मुंह के बल अन्धे और गूंगे और बहरे करके उठावेंगे। उनका स्थान नरक है जब नरकाग्नि बुझाने को होगी हम उनके लिए और अधिक भडकावेंगे। (९७) यह उनका दण्ड है कि उन्होंने हमारी आयतो से अस्वीकार किया और कहा कि जब हम हड्डियाँ और टुकडे-टुकडे हो जायगे तो क्या हम पुन: जन्म लेग। (९८) क्या इन मनुष्यो ने इस बात पर दृष्टि नही की ईश्वर जिसने नभ और पृथ्वी को उत्पन्न किया है इस बात पर भी सशक्त है कि इन जैसे मनुष्य पुनः उत्पन्न करे और उनके लिए पुन उत्पन्न करने

को एक अवधि नियत कर रक्खी है जिसमे किसी प्रकार का सन्देह नही इस पर भी अन्यायी मनुष्य अस्वीकार ही करते हैं। (९९) ऐ पैगम्बर! इन से कहो यदि मेरे पालनकर्ता की दया के कोष तुम्हारे अधिकार में होते तो व्यय हो जाने के भय से तुम उन्हें बन्द ही रखते और मनुष्य बड़ा ही संकुचित हृदय है। (१००) (रुकू ११)

हमने मूसा को स्पष्ट निशानियाँ दी तो ऐ पैगम्बर इसराईल के पुत्रों से पूछ कि जब मूसा इसराईल की संतान के पास आये तब फिरऔन ने उससे कहा कि मूसा मेरे अनुमान मे तुम पर किसी ने जादू कर किया है। (१०१) मूसा ने उत्तर दिया कि तू जान चुका है कि नभ और पृथ्वी तेरे पालनकर्ता की ही यह निशानियाँ हैं और ऐ फिरऔन मेरे विचार में तेरी विपत्ति आई है। (१०२) फिर फिरऔन ने इसराईल की सन्तान को दुखी करके देश से निकाल देना चाहा तो हमने उसको और उसके साथियों को सबको डुबो दिया। (१०३) फिरऔन के पीछे हमने याकूब के पुत्रों से कहा कि देश में बसना फिर जब प्रलय का प्रण आवेगा तो तुमको समेट कर एकत्रित करेंगे। (१०४) और पैगम्बर सच्चाई के साथ हमने कुरान को अवतरित किया और सच्चाई के साथ वह अवतरित होगा और हमने तो तुमको बस शुभ सम्वाद देने वाला और डराने वाला भेजा है। (१०५) कुरान को हमने थोड़ा-थोड़ा करके अवतरित किया कि तुम आकाश के साथ उसे मनुष्यो को पढ़कर सुनाओ और हमने उसे धीरे-धीरे अवतरित किया है। (१०६) ऐ पैगम्बर! इन मनुष्यों से कहो कि तुम कुरान से पहले ज्ञान दिया गया है जब उनके सामने पढ़ा जाता है तो ठोडियो के बल दण्डवत करते हैं। (१०७) कहने लगते हैं कि हमारा पालनकर्ता पवित्र है और उसका प्रण पूरा होना ही था। (१०८) ठोडियों के बल गिर पड़ते हैं, रोते और कुरान के कारण से उनकी विनम्रता अधिक होती जाती है। (१०९) ऐ पैगम्बर! तुम इन से कहो कि तुम ईश्वर को अल्लाह कह कर पुकारो या रहमान (दयालु) कह कर

पुकारो, जिस नाम से भी पुकारो तो उसके सब नाम अच्छे हैं और पैगम्बर तू अपनी नमाज जोर से न पढ और न धीमी वाणी से अपितु इनके मध्य का मार्ग पकड़ा। (११०) और कहो कि हर प्रकार से ईश्वर को सराहना है जो न तो सन्तान रखता है और न उसके राज्य मे कोई उसका समकक्ष है। वह निर्बल नही कि उसको किसी की सहायता को आवश्यकता हो। उसकी बड़ाइयाँ समय-समय पर करते रहा करो। (१११) (रुकू १२)



सूरे कहफ

मक्के में अवतरित हुई इसमें ११० आयतें और १२ रुकू हैं

आरम्भ अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त दयावान तथा कृपालु है। प्रत्येक प्रकार की प्रशंसा ईश्वर ही को है जिसने अपने सेवक पर कुरान अवतरित किया और उसमे कोई बुराई नही रक्खी। (१) बिल्कुल सीधी बात है जिससे ईश्वर की ओर से कठोर दण्ड से डराये और जो धर्म वाले हैं और अच्छे काम करते हैं और इस बात का शुभ सम्वाद दे कि उनको अच्छा परिणाम स्वर्ग है। (२) जिसमे वह सदैव रहेंगे। (३) उन मनुष्यो को ईश्वर के दण्ड से डरा जो कहते हैं कि ईश्वर सन्तान रखता है। (४) न तो उन्ही को इस बात की कुछ खोज है और न इनके बडो को। क्या बुरी बात है जो इनके मुंह से निकलती है, जो कहते हैं निरी झूठ है। (५) इस बात को न माने तो सम्भवत. तुम दुख के मारे इनके पीछे अपनी जान दे डालोगे। (६) जो पृथ्वी पर है हमने उसको पृथ्वी की शोभा बनाई है जिससे इनमे मनुष्यो को

जाचे कि कौन अच्छे कर्म करता है। (७) और हम सब वस्तुओं को जो पृथ्वी पर हैं चटियल मैदान बना देंगे। (८) क्या तुम ऐसा विचार करते हो कि कोटर और कन्दरा के रहने वाले हमारी निशानियों मे से अनोखे थे। (९) जब कुछ युवक कन्दरा मे जा बैठे और प्रार्थना की कि हे हमारे पालनकर्ता! हम पर अपनी ओर से कृपा कर और हमारे कार्य को पूरा कर। (१०) फिर कई वर्ष के लिए हमने कन्दरा मे उनको सुला दिया। (११) फिर हमने उनको उठाया जिससे हम देख लें कि दो गुटों मे से किसको ठहरने की अवधि स्मरण है। (१२) (रुकू १)

हम उनकी दशा ठीक-ठीक तुमसे कहते हैं कि वह थोड़े युवक थे जो अपने पालनकर्ता पर विश्वास लाये और हम उनको अधिक ही शिक्षा देते रहे। (१३) और हमने उनके हृदय पर गाँठ लगा दी कि जब उठ खड़े हुए और बोल उठे कि हमारा पालनकर्ता नभ और पृथ्वी का स्वामी है—हम तो उसके अतिरिक्त किसी पूजित को न पुकारेंगे यदि हम ऐसा करें तो हमने बड़ी ही अनुचित बात कही। (१४) यह हमारी जाति है जिन्होंने अल्लाह के अतिरिक्त कई पूजित समझ रक्खे हैं, इनका कोई स्पष्ट प्रमाणपत्र क्यों नहीं प्रस्तुत करते। जिसने ईश्वर पर झूठ बाँधा उससे बढ़कर कौन अपराधी है। (१५) जब तुमने अपनी जाति के मनुष्यों से और ईश्वर के अतिरिक्त जिनकी यह मनुष्य पूजा करते हैं उनसे किनारा खींच लिया तो कन्दरा में चल बैठो, तुम्हारा पालनकर्ता अपनी दया तुम पर फैला देगा और तुम्हारे काम में सुभीते करेगा। (१६) जब सूर्य निकले तो तू देखेगा कि वह उनकी कन्दरा से दाहिनी ओर को बचता हुआ रहता है और जब डूबता है तो उनसे बाईं ओर को कतरा जाता है और उस कन्दरा के अन्दर बड़ा चौड़ा स्थान भी है। यह ईश्वर की निशानियों में से है और जिसको वह पथ-भ्रष्ट करे तो फिर तुम कोई उसको मार्ग पर लाने वाला न पाओगे। (१७) (रुकू २)

तू उनको समझे कि जागते हैं यद्यपि वह सो रहे हैं और हम दाहिनी ओर को और बाई ओर को उनकी करवटें बदलते रहते हैं और उनका कुत्ता चौखट पर अपने दोनों हाथ फैलाये हैं। यदि तू उन मनुष्यो को झाँक कर देखे तो उनसे डरेगा और उल्टे पैर भाग खड़ा होगा। (१८) और इसी प्रकार हमने उनको जगा दिया था जिससे आपस मे बातें करें। उनमे से एक बोल उठा भला तुम कितनी देर ठहरे होगे। वह बोले कि हम एक दिन या दिन से भी कम। फिर बोले कि जितनी अवधि तुम कन्दरा मे रहे तुम्हारा पालनकर्ता ही अच्छी प्रकार जानता है। तू अपने मे से एक को अपना यह रुपया देकर नगर की ओर भेज जिससे वह देखे कि किसके यहाँ अच्छा भोजन है, तो उसमें से खाना तुम्हारे पास ले आये और चुपके से लेकर चला आये और किसी को तुम्हारी सूचना न होने दे। (१९) यदि मनुष्य तुम्हारी सूचना पा जावेंगे तो तुम पर पत्थरो की वर्षा करेंगे या तुमको उलटा फिर अपने धर्म मे कर लेवेंगे और ऐसा हुआ तो फिर तुमको कभी स्वर्ग नही मिलेगा। (२०) इसी प्रकार हलने उन्हें सूचित कर दिया था कि जान लें कि ईश्वर का प्रण सत्य है और प्रलय मे कुछ भी सन्देह नही। अब खबर पाये पीछे मनुष्य उनके सम्बन्ध में आपस मे झगडने लगे तो किसी-किसी ने कहा उन कहफ वालो पर एक भवन बनाओ और उनकी दशा को उनका पालनकर्ता ही भली प्रकार जानता है। उनके विषय मे जिनकी राय प्रबल रही उन्होने कहा हम उनके मकान पर एक मसजिद बनावेगे। (२१) कोई-कोई कहते हैं कहफवाले तीन थे चौथा उनका कुत्ता और कोई कहते हैं कि पाँच थे और छठवाँ कुत्ता छिपी बातो मे अनुमान चलाते हैं और कहते हैं कि सात थे और आठवाँ उनका कुत्ता। ऐ पैगम्बर! इन से कहो कि इस गिनती को तो मेरा पालनकर्ता ही जानता है, इनको बहुत थोड़े जानते हैं। तो ऐ पैगम्बर कहफवालो के विषय मे झगडा मत करो, सिहावलोकन का झगडा और कहफवालो के सम्बन्ध मे इनमे से किसी से पूछ-ताछ मत करो। (२२) (रुकू ३)

किसी काम के विषय में न कहा करो कि मैं इसको कल करूंगा परन्तु यह कहो कि ईश्वर चाहे तो इस काम को कल कर दूंगा, (२३) यदि कभी भूल जाया करो तो अपने पालनकर्ता को स्मरण करो और कह दो सम्भवतः मेरा पालनकर्ता इससे अधिक सीधा मार्ग मुझको बतावे। (२४) और कहफ़वा अपनी * गुफा में ३०० वर्ष रहे और ६ साल और (२५) ऐ पैगम्बर! इस पर भी मनुष्य इस अवधि को न मानें तो उनसे कहो कि जितनी अवधि कहफवाले गुफा मे रहे अल्लाह खूब जानता है। नभ और पृथ्वी की अदृष्ट का ज्ञान उसी को है, क्या ही देखने वाला और क्या ही सुनने वाला है। उसके अतिरिक्त मनुष्यों का कोई काम सम्भालनेवाला नही और न वह अपनी आज्ञा मे किसी को सम्मिलित करता है। (२६) और ऐ पैगम्बर तुम्हारे पालनकर्ता की पुस्तक से जो तुम पर आज्ञा उतरी है उसको पढ़ो, कोई उसकी बातों को बदल नही सकता और उसके अतिरिक्त तुम कहीं शरण न पाओगे। (२७) और जो मनुष्य प्रातः और संध्या अपने पालनकर्ता को स्मरण करते हैं और उसी की स्वीकृति चाहते हैं तू उनके साथ मिला रह और तेरी दृष्टी उन पर से हटने न पावे क्या सांसारिक जीवन के भोग ढूंढ़ता है और ऐसे व्यक्ति कहा न मान जिसके हृदय को हमने अपनी स्मृति दी से भुला दिया है और वह अपनी इच्छाओ के पीछे पड़ा है और उसकी सांसारिकता सीमा से बढ़ गई है। (२८) और ऐ पैगम्बर! इन मनुष्यों से कहो कि यह कुरान तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से सत्य

---

* कहफवालों का हाल इतिहास में लिखा है। इनकार करनेवालों ने उनके विषय मे मुहम्मद साहब से पूछा। आपने इस आशा पर कि वही (आयत) उतरेगी कह दिया कल बताऊंगा परन्तु आयत १८ दिन न आई। यह इसलिए कि आप जान लें कि हर बात का अधिकार ईश्वर को है और आगे से यों कहा करें कि यदि ईश्वर ने चाहा तो ऐसी-ऐसी बातें मैं इस समय करूंगा।

है बस जो चाहे माने और जो चाहे न माने, अस्वीकृतियो के लिए तो हमने ऐसी अग्नि तैयार कर रक्खी है जिसकी कनातें उनको चारो ओर से घेर लेंगी और प्रार्थना करेंगे तो जिस पानी से उनकी विनय की पहुच की जायगी। वह इस प्रकार गरम होगा जैसे पिघला हुआ ताँबा और वह मुँहो को भून डालेगा। क्या ही बुरा पानी है और क्या बुरा आराम है। (२९) जो मनुष्य विश्वास लाये और उन्होने शुभ काम किये जो व्यक्ति शुभ काम करे हम उसके बदले को निरर्थक नही होने दिया करते। (३०) यही मनुष्य हैं जिनके रहने के लिए स्वर्गिक उपवन हैं। इन मनुष्यो के मकानों के नीचे नहरें बह रही होगी। वहाँ सोने के कंकन पहिनाये जायेंगे और वह महीन और मोटे रेशमी हरे कपडे पहनेंगे और वहाँ सिहासन पर तकिये लगाये बैठेंगे। क्या ही अच्छा बदला है और कितना आराम है। (३१) (रुकू ४)

ऐ पैगम्बर इन मनुष्यो से उन दो मनुष्यो का उदाहरण वर्णन करो जिन मे से एक को हमने अंगूर के दो उपवन दिये थे और हमने उनके आस-पास खजूर के पेड़ लगा रक्खे थे और हमने दोनो उपवनो के मध्य स्थान मे खेती लगा रक्खी थी। (३२) दोनो उपवन अपने फल लाये और फल लाने मे किसी प्रकार की कमी नही की और दोनो के मध्य हमने नहर चालू की। (३३) तो उपवनो के स्वामी के पास एक दिन जिस दिन भिन्न-भिन्न उपज उपस्थित थी यह मनुष्य अपने किसी मित्र से बातें करते-करते बोल उठा कि मैं तुझ से धन मे और मनुष्यो मे अधिक हू। (३४) यह बातें करता हुआ वह अपने उपवन मे गया और घमड और कृतघ्नता से अपने पर स्वय ही बुरा कर रहा था कहने लगा कि मैं नही समझता कि यह उपवन कभी मिट जावे। (३५) मैं नही समझता कि प्रलय आनेवाली है और यदि मे अपने पालनकर्ता की ओर लौटाया जाऊंगा तो जहाँ लौटकर जाऊँगा इससे बढकर वहाँ पाऊँगा। (३६) उसका मित्र जो उससे बातें करता जाता था बोल

उठा कि क्या तू इसका अविश्वास करनेवाला है जिसने तुझको मिट्टी से फिर उत्पन्न किया, फिर तुझ को पूरा मनुष्य बनाया। (३७) परन्तु मैं तो यह विश्वास रखता हूं कि वही अल्लाह मेरा पालनकर्ता है और मैं अपने पालनकर्ता के साथ किसी को समकक्ष नही करता। (३८) जब तू अपने उपवन में आया तो तूने क्यों नही कहा कि यह सब ईश्वर की इच्छा से हुआ अन्यथा मुझमे तो ईश्वरकी सहायता के बिना कुछ भी बल नही, यदि धन और संतान के विचार से तू मुझको अपने से कम समझता है। (३९) तो अचरज नही मेरा पालनकर्ता तेरे उपवन से बढकर मुझको दे और तेरे उपवन पर नभ से कोई बला उतरे कि वह प्रात. को साफ मैदान होकर रह जाय। (४०) या उसका पानी बहुत नीचे उतर जाय और तू उसको किसी प्रकार ढूंढकर न ला सके। (४१) उसकी उपज फेर मे आ गई तो वह उस लागत पर जो उपवन में लगाई थी अपने दोनो हाथ मलता रह गया और वह अपनी टट्टियों पर गिर पड़ा था और कहता जाता था कि क्या अच्छा होता यदि अपने पालनकर्ता के साथ किसी को साझी न ठहराता। (४२) उसका कोई ऐसा जत्था न हुआ कि ईश्वर के अतिरिक्त उसकी सहायता करता और न वह बदला ले सका। (४३) इसी से सब सच्चे अधिकार ईश्वर को हैं, वही बढ़कर और अच्छा बदला देनेवाला है। (४४) (रुकू ५)

ऐ पैगम्बर इन मनुष्यों से वर्णन करो कि सांसारिक जीवन का उदाहरण पानी जैसा है जिसको हमने नभ से बरसाया तो पृथ्वी की उपज पानी के साथ मिल गई फिर चूर-चूर- होकर रह गई जिसे हवायें उडाये-उड़ाये फिरती हैं और अल्लाह सर्वशक्तिमान हैं। (४५) ऐ पैग-म्बर धन और सन्तान सांसारिक जीवन की शोभा है और अच्छे काम जिनका प्रभाव देर तक शेष रहे तुम्हारे पालनकर्ता के निकट उत्साह के विचार से बढ़कर है और आशा से भी बढकर हैं। (४६) मनुष्यो उस दिन की चिन्ता से बेखटके न हो, जिस दिन हम पर्वतों को हिलावेंगे

और ऐ पैगम्बर तुम पृथ्वी को देख लोगे कि खुला मैदान पडा है और हम मनुष्यों को घेर बुलावेंगे और उनमे से किसी को नही छोड़ेंगे। (४७) पाँति के पाँति तुम्हारे पालनकर्ता के सामने प्रस्तुत किये जायँगे जैसा हमने तुमको पहली बार उत्पन्न किया वैसे ही तुम हमारे सामने आये परन्तु तुम यह विचार करते रहे कि हम तुम्हारे लिए कोई समय ही नही ठहरावेंगे। (४८) और मनुष्यो के कर्म का रजिस्टर रक्खा जायगा तो ऐ पैगम्बर तुम अपराधियो को देखोगे कि जो कुछ रजिस्टर मे है उससे डर रहे हैं और कहते जाते हैं कि हाय हमारा दुर्भाग्य यह कैसा रजिस्टर है और जो कुछ इन मनुष्यो ने किया था कोई छोटी या बड़ी बात ऐसी नही जो उसमे न लिखी हो वह सब कर्मलेखे मे लिखा हुआ पावेंगे और तुम्हारा पालनकर्ता किसी पर अन्याय नही करेगा। (४६) (रुकू ६)

जब हमने देवदूतों को आज्ञा दी कि आदमके आगे सिर झुकाओ तो इबलीस जो भूतो की जाति मे से था के अतिरिक्त सिर झुकाया अपने पालनकर्ता की आज्ञा से निकल भागा तो मनुष्यो क्या मुझे छोड़-कर इबलीस को और उसके कुटुम्ब को मित्र बनाते हो यद्यपि वह तुम्हारे पुराने शत्रु हैं और अत्याचारियो का फल बुरा हुआ। (५०) हमने नभ और पृथ्वी के उत्पन्न करते समय अपितु स्वय राक्षस के उत्पन्न करते समय भी राक्षस को नही बुलाया और हम ऐसे न थे कि मार्ग भुलानेवालो को अपना सहायक बनाते। (५१) और मनुष्यो उस दिन की चिन्ता से बेखटके न हो जिस दिन ईश्वर आज्ञा देगा कि जिनको तुम हमारा समकक्ष समझा करते थे उनको बुलाओ या उनको बुलावेंगे परन्तु वह इनको उत्तर ही न देंगे और हम इनके मध्य मे आड कर देंगे। (५२) मार डालने वाले और अपराधी नरकाग्नि को देखेंगे और समझ पावेंगे कि वह उसमे गिरने वाले हैं और उनको उनसे कोई भागने का मार्ग नही मिलेगा। (५३) (रुकू ७)

हमने इस कुरान को मनुष्यों के लिए प्रत्येक प्रकार का उदाहरण वर्णन किये हैं परन्तु मनुष्य अधिक झगड़ालु है। (५४) जब मनुष्यों के पास शिक्षा आ चुकी तो अब विश्वास लाने और अपने पालनकर्ता से क्षमा माँगने से इनको उसके अतिरिक्त और कौन काम रोकनेवाला हो सकता था कि अगले मनुष्यों जैसा चलन इनको भी मिले या हमारी दण्ड इनके सामने आ उपस्थित हो। (५५) हम पैगम्बरो को केवल इसलिए भेजा करते हैं कि शुभसंवाद सुनावें और डरावें और जो अस्वीकार करनेवाले हैं असत्य बातों का प्रमाणपत्र पकड़ कर झगड़े किया करते है जिससे झगड़े से सबको डिगावें और इन मनुष्यों ने हमारी आयतों को और हमारे दण्ड को जिसमे इनको डराया जाता है हँसी बना रक्खा है। (५६) और उससे बढ़कर अत्याचारी कौन है जो ईश्वर की आयतो से समझाये जाने पर फिर उसकी ओर से मुँह फेरे और अपने पहिले कामों को भूल जावे। हम ही ते इनके हृदयो पर पर्दे डाल दिये जिससे सत्य बात समझ न सकें और इनके कानो मे एक प्रकार का बोझ उत्पन्न कर दिया है। और ऐ पैगम्बर यदि तुम इनको सत्य मार्ग की ओर बुलाओ तो यह कभी मार्ग पर आने वाला नहीं। (५७) और तुम्हारा पालनकर्ता बड़ा क्षमा करनेवाला कृपालु है। यदि इनके काम के बदले में इनको पकडना चाहता तो तुरन्त ही इन पर दण्ड उतार देता है परन्तु इनके लिए एक अवधि है जिससे इधर कही शरण नही पा सकते। (५८) आद और समूद की यह बस्तियाँ जिनको तुम देखते हो इन्होंने भी जब उच्छृंखलता की हमने उनको मिटा दिया और इनके मार डालने की भी हमने एक अवधि नियत कर रक्खी है। (५९) (रुकू ८)

ऐ पैगम्बर जब मूसा* खिज्र के मिलाप के विचार से चले तो उन्होंने अपने सेवक यूशा से कहा कि जब तक मैं दोनों नदियो के मिलने के

* एक दिन हजरत मूसा से किसी ने पूछा, "तुमसे भी अधिक ज्ञान किसी को है ?" मूसा ने कहा, "हम नहीं जानते।" यदि उन्होने यों

स्थान पर न पहुंच लूं निरन्तर चलूंगा या में कारन्न तक चला ही जाऊंगा। (६०) फिर जब वह दोनो उन दो नदियों के सगम पर पहुचे तो दोनो अपनी मछली भुनी हुई भूल गये तो मछली ने नदी मे सुरंग के समान अपना मार्ग बना लिया। (६१) फिर जब आगे बढ गये तो मूसा ने अपने सेवक से कहा कि हमारा जलपान तो हमको दो। हमारी इस यात्रा से तो हमको बड़ी थकावट हुई। (६२) सेवक ने कहा आपने यह भी देखा कि जब उस पत्थर के पास ठहरे तो मैं मछली भूल गया और राक्षस ही ने मुझको भुला दिया कि मैं आप से उसका वर्णन करता और मछली ने अनोखे ढंग से नदी में जाने का अपना मार्ग कर लिया। (६३) मूसाने कहा कि वही है जिस की हम खोज मे थे फिर दोनो अपने पैरो के निशानो के खोज लगाते—लगाते उलटे पाँव फिरे। (६४) तो उन्होंने हमारे मानने वालो मे से एक सेवक अर्थात खिज्र को पाया जिस पर हमने अपनी कृपा की और अपनी ओर उसको एक ज्ञान सिखाया था। (६५) मूसा ने खिज्र से कहा कि क्या मे तेरे साथ इस शर्त पर रहू कि जो ज्ञान तुझको सिखाया गया है तू कुछ मुझको भी सिखा दे। (६६) खिज्र ने कहा तू मेरे साथ न ठहर सकेगा। (६७) और जो वस्तु तुम्हारे ज्ञान के घेरे से बाहर है उस पर तू कैसे सन्तोष कर सकता है। (६८) मूसा ने कहा कि जो ईश्वर ने चाहा तू मुझको सतोष करने वाला पावेगा और मैं तेरी किसी आज्ञा को न टालूंगा। (६९) खिज्र ने कहा यदि तुझको मेरे साथ रहना है तो जब तक मैं तुझसे किसी बात की चर्चा न करूं तू मुझसे कोई प्रश्न न कर। (७०) (रुकू ९)

कहा होता कि हम ऐसे अल्लाह के बहुतेरे बन्दे हैं, तो बहुत उचित होता इस लिए उन पर वही (आयत) आई कि एक सेवक हमारा है जो नदी के संगम पर रहता है उससे मिलो। वह तुमसे अधिक ज्ञान रखता है।

फिर मूसा और खिज्र दोनों यहाँ तक चले कि जब दोनों नौका में सवार हुए तो खिज्र ने एक तख्त तोड़ कर शेष नौका को फाड़ दिया। मूसा ने कहा कि तूने क्या नौका को इसलिए फाड़ा कि नौका के मनुष्यो को समुद्र में डुबो दे। तूने एक अनोखी बात की है। (७१) खिज्र ने कहा क्या मैंने न कहा था कि तू मेरे साथ न ठहर सकेगा (७२) मूसा ने कहा कि तू मेरी भूल-चूक न पकड़ और मेरे काम के कारण मुझ पर कठोरता मत डाल। (७३) फिर दोनो और बढे यहां तक कि मार्ग में एक लड़के से मिले तो खिज्र ने उसको मार डाला। मूसा ने कहा क्या बिना किसी जान के बदले तूने एक निरपराध मनुष्य को मार डाला, तूने बड़ा अनुचित कार्य किया है। (७४)



पवित्र कुरान

दूसरा भाग

सूरे कह्फ़

सोलहवाँ पारा (काल अलम अकुल)

खिज्र ने कहा क्या मैंने तुमसे नही कहा था कि मेरे साथ तुम सन्तोष नही कर सकोगे। (७५) मूसा ने कहा कि इसके बाद अगर मैं तुमसे कुछ भी पूछूं तो मुझको अपने साथ न रखना फिर मैं तुमसे कुछ उज्र न करूगा। (७६) फिर आगे बढे यहा तक कि गाँववालो के पास पहुचे और वहा के लोगो से खाने को माँगा उन्होने उनको खाना देना मजूर न किया। इतने मे उन्होंने गाँव मे एक दीवार देखी जो गिरा चाहती थी। खिज्र ने उसको खडा कर दिया। इस पर मूसा ने कहा अगर तुम चाहते हो इन लोगो से दीवार के खडे कर देने की मजदूरी ले सकते थे। (७७) खिज्र ने कहा अब मुझमे और तुझमे जुदाई पड गई जिस पर तू सन्तोष न कर सका। मैं तुझको उसकी सच्चाई बताये देता हू। (७८) नाव तो गरीबो की थी। वह नदी मे चलाकर पेट पालते थे। मैंने चाहा कि उसको ऐबदार कर दूं क्योकि इनके सामने की तरफ एक बादशाह था जो हर एक नाव को जब्त कर लिया करता था। (७९) और वह जो लडका था उसके माता-पिता ईमानवाले थे, हमको यह डर हुआ कि यह लडका

सरकशी और इन्कार से उनके सिरों पर न बला डाले (८०) इसलिए हमने यह इरादा किया कि उसको मार दिया और उनका पालनकर्ता उसके बदले में उसको पाक और उससे अच्छे विचार वाला पुत्र देगा। (८१) रही दीवार सो शहर के दो अनाथ लड़को की थी, उसके नीचे उन्ही लड़को का धन गड़ा हुआ था और उसका पिता अच्छा आदमी था। बस तुम्हारे पालनकर्ता ने चाहा कि दोनो लड़के अपनी जवानी को पहुँच कर अपना धन निकाल लें। तुम्हारे पालनकर्ता की यह कृपा थी और मैंने जो कुछ किया सो अपने आप से नहीं किया अपितु ईश्वर की आज्ञा से यह उसका भेद है जिस पर तुम सन्तोष न कर सके। (८२) (रुकू १०)

ऐ पैगम्बर लोग तुमसे जुलकरनैन सिकन्दर का हाल पूछते हैं। तुम कहो कि मैं तुमको उनका थोड़ा-सा हाल पढ़कर सुनाता हू। (८३) हमने उसको तमाम जमीन पर सामर्थ्यवान किया और हमने उसको हर तरह के साज-समान दिए। (८४) वह एक सामान के पीछे पड़ा यात्रा की तय्यारी की। (८५) यहाँ तक कि जब सूरज के डूबने की जगह पर पहुँचा तो उसको सूरज ऐसा दिखाई दिया कि वह काली-काली कींचड़ के कुण्ड मे डूब रहा है और देखा कि उस कुण्ड के करीब एक जाति बसी है। हमने कहा कि ऐ जुलकरनैन! चाहो इनको दण्ड दो या इनको भला बनाओ। (८६) जुलकरनैन ने कहा जो सरकशी करेगा उसको तो हम दण्ड देंगे, वह अपने पालनकर्ता के सामने लौटकर जायगा और वह भी उसे बुरी मार देगा। (८७) और जो विश्वास लाये और अच्छे काम करे उसके बदले मे उसको भलाई मिलेगी और हम उससे नर्मी से पेश आयेंगे। (८८) उसने यात्रा की तैयारी की। (८९) यहाँ तक कि जब वह सूरज के निकलने की जगह पहूंचा तो उसको ऐसा मालूम हुआ कि सूरज कुछ लोगो पर निकलता है जिनके लिए हमने सूरज के इधर कोई आड़ नही रखी। (९०) ऐसा ही था और जुलकरनैन के पास जो कुछ था

हमको उससे पूरी जानकारी थी। (९१) फिर वह एक सामान के पीछे पडा। (९२) यहाँ तक कि जब चलते-चलते एक पहाड़ की घाटी के बीच मे पहुँचा तो किनारों के इधर एक जाति को पाया जो भाषा व बात को नही समझते थे। (९३) उन लोगो ने अपनी बोली मे कहा कि ऐं जुलकरनैन! इस घाटी के उधर से याजूज और माजूज* मुल्क मे आकर फसाद करते हैं तो हम आपके लिए चन्दा जमा कर दें (९४) जुलकरनैन ने कहा कि मेरे पालनकर्ता ने जो मुझे सामर्थ्य दी है काफी है चन्दे की आवश्यकता नहीं बल से मेरी सहायता करो, मैं तुममे और उसमें एक दीवार खीच दूंगा। (९५) लोहे की सिलें हमको ला दो वे लाये यहाँ तक कि जब जुलकरनैन ने दोनो किनारो के बीच को पाटकर बराबर कर दिया तो आज्ञा दी कि अब इसको धौंको यहां तक कि अब लोहे की दीवार को लाल अंगारा कर दिया तो कहा कि अब हमको ताँबा ला दो कि उसको पिघलाकर इस दीवार पर डाल दें। (९६) गरज इस तदवीर से ऐसी ऊँची और मजबूत दीवार तैयार हो गई कि याजूज माजूज न उस पर चढ़ सकते थे और न उसमे सूराख कर सकते थे। (९७) जुलकरनैन ने कहा कि यह मेरे पालनकर्ता की कृपा है। लेकिन जब मेरे पालनकर्ता का वादा आवेगा तो इस दीवार** को गिरा देगा और मेरे पालनकर्ता का वादा सच्चा है। (९८) और हम उस दिन किसी को किसी मे मौज करने के लिए छोड देंगे और नरसिंगा फूंका जावेगा, फिर हम सब लोगो को जमा करेंगे। (९९) और उसी दिन काफिरो के सामने नरक पेश करेंगे। (१००) जिनकी आखें हमारी यादगारी से पर्दे मे

---

*याजज और माजूज दो जातियो के नाम हैं। यह घाटी पार करके लूटकार किया करते थे।

**यह लोहे की दीवार भी प्रलय के निकट गिर पड़ेगी।

थीं और वह सुन न सकते थे।* (१०१) (रुकू ११)

क्या काफिर इस ख्याल में है कि हमको छोड़कर हमारे बन्दों को काम का संभालने वाला बनावें। हमने काफिरों की मेहमानी के लिए नरक तैयार कर रखा है। (१०२) कहो तो बताऊँ कि किसके काम अकारथ हैं। (१०३) वह मनुष्य जिनकी दुनियाँ की जिन्दगी में कोशिश गई गुजरी हुई और वह इसी ख्याल मे हैं कि वह अच्छे काम कर रहे हैं (१०४) यही वह मनुष्य हैं जिन्होने अपने पालनकर्ता की आयतो को और उनके सामने हाजिर होने को न माना तो इनके काम अकारथ हो गये तो प्रलय के दिन हम इनकी तौल न खड़ी करेंगे (१०५) यह नरक उनका बदला है कि उन्होने मना किया और हमारी आयतो और हमारे पैगम्बरों की हंसी उडाई। (१०६) जो मनुष्य विश्वास लाये और नेक काम किये उनकी मेहमानी के लिए जन्नत के बाग हैं। (१०७) जिनमे वह हमेशा रहेंगे, यहाँ से उठना नहीं चाहेंगे। (१०८) ऐ पैगम्बर! इन लोगो से कहो कि अगर मेरे पालनकर्ता की बातो को लिखने के लिए समुद्र स्याही हो, वह लिखते-लिखते समाप्त हो जाय चाहे वैसा समुद्र और भी सहायता को लिया जाय। (१०९) ऐ पैगम्बर कहो कि मैं तुम्ही जैसा आदमी हूँ मेरे पास यह वहीईश्वरीय सन्देश आया है कि तुम्हारा पूजित केवल एक ईश्वर ही है तो जिसको अपने पालनकर्ता के मिलने की इच्छा होवे उसे भले काम करना चाहिए और किसी को अपने पालनकर्ता की पूजा में शामिल न करना चाहिए। (११०) (रुकू १२)



*यानी जो लोग तुम्हारे बताये मार्ग पर न चलते थे और बताने वाले की बात न सुनते थे।

सूरे मरियम

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ९८ आयतें और ६ रुकू है

अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मेहरवान है । काफ-हा-या-ऐन-स्वाद । (१) ऐ पैगम्बर यह उस मेहरवानी का हाल है जो तुम्हारे पालनकर्ता ने अपने सेवक जकरिया पर की थी । (२) कि जब उन्होने अपने पालनकर्ता को दवी आवाज से पुकारा । (३) बोले कि ऐ पालनकर्ता ! मेरी हड्डियाँ सुस्त पड़ गई हैं और सिर बुढापे से भडक उठा है । और ऐ मेरे पालनकर्ता ! मैं तुझसे माँग कर खाली नही रहा । (४) अपने पीछे मुझको भाई बन्दो से डर है और मेरी बीवी बांझ है, बस अपनी तरफ से मुझको एक बेटा दे । (५) जो मेरा वारिस हो और याकूब की सन्तान का वारिस हो और ऐ मेरे पालनकर्ता ! उसे मनमाना बना । (६) ईश्वर ने कहा जकरिया, हम तुमको एक लडके की शुभ सूचना देते हैं जिनका नाम यहिया होगा । और इससे पहिले हमने इस नाम का कोई आदमी उत्पन्न नही किया । (७) जकरिया ने कहा ऐ मेरे पालनकर्ता ! मेरे यहाँ लडका कैसे हो सकता है जब कि मेरी पत्नि बाँझ है और मैं बिल्कुल बूढ़ा हो गया हू (८) कहा ऐसा हा तुम्हारा पालनकर्ता कहता है कि तुमको इसमे बेटा देना हमारे लिये आसान है और पहिले तुम्ही को हमने पैदा किया हालाँकि तुम कुछ भी न थे । (९) जकरिया ने निवेदन किया कि ऐ मेरे पालनकर्ता ! मुझे कोई निशानी बता । कहा कि तुम्हारी निशानी यही है कि तुम बराबर तीन रात दिन लोगो से बात नही कर सकोगे। (१०) फिर जकरिया कोठे से निकलकर लोगो के सामने आया तो इशारे से उनको समझा दिया कि सुबह और शाम ईश्वर की पूजा मे लगे रहो । (११) गरज यहिया पैदा हुआ । हमने उसको आज्ञा दी ऐ यहिया ! किताब को कठोरता से लिये रहना और अभी वह लड़के

हो थे कि हमने अपनी कृपा से उनको पैगम्बरी दी। (१२) और दया और शुद्ध स्वभाव दिया और वह सयमी था। (१३) और अपने मा-बाप की सेवा करता था और जबरदस्त बेहुक्म न था। (१४) और सलाम है उस पर जिस दिन पैदा हुआ और जिस दिन मरेगा और जिस दिन दुबारा जिन्दा होगा। (१५) (रुकू १)

ऐ पैगम्बर कुरान में मरियम का जिक्र करो कि जब वह अपने लोगों से अलग होकर पूरब की तरफ जा बैठी। (१६) और लोगों की तरफ पर्दा कर लिया तो हमने अपनी आत्मा को उनकी तरफ भेजा, फिर हमारी आत्मा पूरा मनुष्य बनकर उसके सामने आई। (१७) मरियम कहने लगी अगर तुम संयमी हो तो मैं ईश्वर की शरण चाहती हू। (१८) बोले कि मैं तेरे पालनकर्ता का भेजा हुआ फरिश्ता हूं, इसलिए आया हूं कि तुमको एक पवित्र लड़का दे जाऊं। (१९) वह बोली कि मेरे यहाँ कैसे लडका हो सकता है जबकि मुझे किसी मनुष्य ने नही छुआ और मैं कभी बदकार नही रही। (२०) शुद्धात्मा ने कहा ऐसा ही तुम्हारा पालनकर्ता कहता है कि यह मामला मुझ पर आसान है और मनुष्यों के लिये हम उसको एक निशानी और दया अपनी ओर से किया चाहते हैं और यह काम पहिले सृष्टि के आदि से ठहर चुका है। (२१) इस पर मरियम के गर्भ रह गया और वह फिर गर्भ लेकर कही अलग दूर के मकान में जा बैठी। (२२) फिर उसको एक खजूर के पेड की जड़ के पास जनने का दर्द उठा। मरियम ने कहा अगर मैं इससे पहिले मर चुकी होती और भूली-बिसरी हो गई होती। (२३) उसको उसके नीचे से आवाज आई कि उदास न हो, तेरे पालनकर्ता ने तेरे नीचे एक झरना बहा दिया है। (२४) और खजूर की डालो को अपनी ओर हिलाओ उससे तेरे लिए पक्के खजूर गिरेंगे। (२५) फिर खाओ और झरने का पानी पियो और पुत्र को देख कर आँखें ठण्डी करो। फिर कोई आदमी दिखलाई पड़े और वह तुझसे पूछे तो इशारे से कह देना कि मैंने दयालु रहमान का रोज़ा

रक्खा है। सो मैं आज किसी मनुष्य से न बोलूँगी। (२६) फिर मरियम लड़के को गोद मे लिये अपनी जाति के लोगो के पास आई। वह देख कर कहने लगे कि ऐ मरियम! यह तूफान कहाँ से लाई (२७) हारूँ की बहिन! न तो तेरा बाप ही व्यभिचारी था और न तेरी माता ही व्यभिचारिणी थी। (२८) तो मरियम ने बच्चे की ओर इशारा किया कि जो कुछ पूछना है उससे पूछ लो। वह कहने लगे कि हम गोद के बच्चे से कैसे बात करें। (२९) इस पर बच्चा बोला कि मैं अल्लाह का सेवक हू, उसने मुझको किताब इन्जील दी और मुझको पैगम्बर बनाया। (३०) और कही भी रहू मुझको बरकत दी और मुझको आज्ञा दी कि जब तक जिन्दा रहूं नमाज पढ़ूँ और जकात दूँ। (३१) और मुझको अपनी माँ का सेवक बनाया और मुझको जालिम और अभागा नही बनाया। (३२) और मुझ पर सलाम है कि जिस दिन मैं पैदा हुआ और जिस दिन मैं मरूंगा और जिस दिन दुबारा जिन्दा उठ खडा हूंगा। (३३) यह ईसा मरियम का पुत्र है, सच्ची-सच्ची बातें जिसमे लोग झगड़ा करते हैं। (३४) ईश्वर ऐसा नही कि बेटा बनावे, वह पवित्र है। जब वह किसी काम का करना ठान लेता है तो इतना कह देता है कि हो और हो जाता है। (३५) अल्लाह मेरा और तुम्हारा पालनकर्ता है तो उसी की पूजा करो वही सीधी राह है। (३६) फिर आपस मे फूट न डालने लगो, सो उन मनुष्यो के हाल पर अफसोस है जो इन्कार करते हैं कि बडे दिन प्रलय मे फिर हाजिर होना पडेगा। (३७) जिस दिन यह लोग हमारे सामने आवेंगे, क्या कुछ सुनेंगे क्या कुछ देखेंगे लेकिन जालिम आज के दिन खुली गुमराही भटकने में पड़े हैं। (३८) और इन लोगो को पछतावे के दिन से डराओ जब काम का फैसला कर दिया जावेगा और यह लोग भूल और ईमान नही लाते। (३९) हम जमीन के वारिस होगे और उन लोगो के भी जो तमाम जमीन पर हैं और हमारी ओर सबको लौटकर आना होगा (४०) (रुकू २)

और कुरान में इब्राहीम का हाल बताओ कि वह बड़े ही सच्चे पैगम्बर थे। (४१) जब उन्होंने अपने पिता से कहा कि ऐ पिता! आप क्यों इन मूर्तियों की पूजा करते है जो न सुनते और न देखते और न कुछ काम आपके आ सकते हैं। (४२) ऐ पिता! मुझको ईश्वर की ओर से ऐसी सूचना मिली है जो तुझको नही मिली। सो तू मेरे पीछे हो, तुझको सीधी राह दिखाऊंगा। (४३) ऐ पिता! राक्षस को न पूज क्योंकि राक्षस ईश्वर से फिरा हुआ है। (४४) ऐ पिता! मुझको इस बात से डर है कि ईश्वर से कोई दण्ड न आ लगे और तू राक्षस का साथी हो जावे। (४५) इब्राहीम के पिता ने कहा कि ऐ इब्राहीम क्या तू मेरे पूजितों से फिर हुआ है। अगर तू नही मानेगा तो मैं तुझको पथराव कर दूंगा और अपनी खैर चाहता है तो मेरे सामने से दूर हो। (४६) इब्राहीम ने कहा अच्छा तो मेरा सलाम जुदाई है, मैं अपने पालनकर्ता से तेरे लिए क्षमा मांगूंगा वह मुझ पर मेहरबान है। (४७) मैं तुम मूर्ति पूजा वालो को और इन मूर्तियों से जिनको तुम ईश्वर के सिवाय पुकारा करते हो अलग होता हूं और अपने पालनकर्ता को पुकारूंगा, आशा है कि मैं अपने पालनकर्ता से दुआ मांगकर अभागा नहीं बनूंगा। (४८) तो जब इब्राहीम उन मूर्ति पूजकों से और उन मूर्तियो से जिनको वह ईश्वर के अतिरिक्त पूजते थे अलग हो गये, हमने उनको इसहाक और याकूब* दिये और सबको हमने पैगम्बर बनाया। (४९) और अपनी कृपा से उनको सब कुछ दिया और उनके लिए सच्चे और बड़े शब्द कहे। (५०) (रुकू ३)

और किताब मे मूसा का वर्णन करो कि वह चुना हुआ और पैगम्बर था। (५१) और हमने उसको पहाड़ तूर की दाहिनी ओर की

---

* इब्राहीम के बेटे और पोते। यहाँ इस्माईल का नाम नहीं लिया क्योंकि वह इब्राहीम के साथ नहीं रहे।

पुकारा और भेद कहने के लिए उसको पास बुलाया। (५२) और अपनी कृपा से उसके भाई हारू को पैगम्बर बनाकर छोड दिया। (५३) और कुरान मे इस्माईल का वर्णन कर कि वह वादे का सच्चा और पैगम्बर था। (५४) और अपने घर वालो को नमाज और जकात की आज्ञा देता और ईश्वर को पसन्द था। (५५) और पुस्तक मे इद्रीक का वर्णन कर कि वह मच्चा पैगम्बर था। (५६) और हमने उसको उठा कर बड़ी ऊची जगह दाखिल किया। (५७) यह लोग हैं जिन पर अल्लाह ने कपा की और आदम की सन्तान हैं और उन लोगो की सन्तान हैं जिनको हमने नूह के साथ नाव मे सवार कर लिया था और इब्राहीम और इसराईल की सन्तान हैं और लोगों की सन्तान मे से हैं जिनको हमने सच्ची राह दिखलाई और चुन लिया। जब अल्लाह की आयते उनको पढकर सुनाई जाती थी सिर झुकाते थे और रोते थे। (५८) फिर उनके बाद ऐसे नालायक पैदा हुए जिन्होने जाते छोड दी और बुरी इच्छाओ के पीछे पड गये सो उनकी गुमराही उनके आगे आवेगी। (५९) मगर जिसने क्षमा माँगी और ईमान लाये और अच्छे काम लिये तो ऐसे लोग बागो मे दाखिल होंगे और उन पर अत्याचार न होगा। (६०) यानी बिना देखे बाग जिनका ईश्वर ने अपने दासो मे वादा कर रक्खा है। उसका वादा आने वाला है। (६१) वहाँ कोई बुरी बात उनके कान मे न पड़ेगी सिवाय सलाम* के और वहाँ उनको खाना सुवह शाम मिला करेगा। (६२) यही वह स्वर्ग है जिसे अपने दासो मे से जो सयमी होगा उसे उसका वारिस बनायेंगे। (६३) और ऐ पैगम्बर हम**फरिश्ते तुम्हारे पालनकर्ता की बिना आज्ञाके दुनियामे नही

---

* यह स्वर्ग का वर्णन है। सलाम से यहाँ अच्छी और पवित्र बातों से प्रयोजन है।

* यह उत्तर उस प्रश्न का है जो मुहम्मद साहब ने जिब्रील स पूछा था। एक बार वह कई दिन के बाद आये तो नबी ने रोज न आने

आ सकते। जो कुछ हमारे आगे होने वाला है और जो कुछ हमसे पहले हो चुका है और जो कुछ इन दोनों के बीच मे है सब उसी की आज्ञा से है और तेरा पालनकर्ता भूलने वाला नहीं। (६४) आसमान जमीन का पालने वाला और उन चीजों का जो नभ-पृथ्वी के बीच में हैं तो उसी की पूजा में लगे रहो और उसकी पूजा को बरदाश्त करो, भला तुम्हारी जाम मे जैसा कोई और भी है। (६५) (रुकू ४)

और आदमी पूछा करता है कि जब मैं मर जाऊंगा तो क्या दुबारा जीवित हो जाऊंगा। (६६) क्या आदमी याद नही करता कि हमने पहले इसको पैदा किया था और वह कुछ भी न था। (६७) तो ऐ पैगम्बर तेरे पालनकर्ता की कसम हम उन्हें राक्षस के साथ इकट्ठा करेंगे और नरक के गिर्द घुटनों के बल बिठलायेंगे। (६८) फिर हर गुट में से उन लोगों को अलग करेंगे जो ईश्वर से अकड़े फिरते थे। (६९) फिर जो लोग नरक मे जाने के योग्य हैं हम उनको खूब जानते हैं। (७०) और तुममें से कोई नहीं जो नरक मे होकर न गुजरे, यह वादा तेरे पालनकर्ता पर लाजिम हो चुका है। (७१) फिर हम संयमियों को बचा लेंगे और अवज्ञाकारियों को उसी में पड़ा छोड देंगे। (७२) और जब हमारी खुली आयतें लोगों को पढ़कर सुनाई जाती हैं तो काफिर मुसलमानों से पूछने लगते हैं कि हक दोनो फकीरो में से दर्जा किसका अच्छा है और मजलिस किसकी अच्छी। (७३) और हम इससे पहले बहुत-सी जमातों को जो समान और दिखावे में अच्छी थी मिटा चुके हैं। (७४) ऐ पैगम्बर कहो कि जो मनुष्य भूले हुए हैं ईश्वर उसको लम्बा खींचे* यहाँ तक कि जब उस चीज को देख लें जिसका उनसे

का कारण पूछा। जिब्रील ने कहा, "मैं ईश्वर की आज्ञा से आता हूँ। अपनी ओर से नहीं आता।

* यानी ढील दिये जाता है।

प्रण किया जाता है यानी दण्ड या प्रलय तो उस समय इनको मालूम हो जायगा कि अब किसका रुतबा बुरा और किसका कमजोर है। (७५) और जो लोग सीधी राह पर हैं अल्लाह उनको ज्यादा शिक्षा देता है और अच्छे काम का जिनका प्रभाव बाकी रहे अच्छा बदला मिलता है और उनका लौट आना भी अच्छा है। (७६) भला तुमने उस मनुष्य को देखा जिसने हमारी आयतो से मना किया और कहने लगा प्रलय होगी तो वहाँ भी मुझको धन और सन्तान मिलेगी*। (७७) क्या उसको गैब की खबर लग गई है या इसने ईश्वर से प्रण कर लिया है। (७८) कदापि नही जो कुछ यह बकता है हम लिख लेते हैं और इसका दण्ड बढ़ाते चले जायगे। (७९) और यह जो धन और सन्तान उसके पास है अन्त मे हम उससे ले लेवेंगे और यह अकेले हमारे सामने आवेगा। (८०) और मुशरिको ने जो ईश्वर के अलावा पूजित बना रक्खे हैं ताकि वे इनके सहायक हों। (८१) कभी नही यह पूजित इनकी पूजा को मना करेंगे और उलटे इनके शत्रु हो जायगे। (८२) (रुकू ५)

क्या तुमने नही देखा कि हमने राक्षसो को काफिरो पर छोड़ रक्खा है कि वह उनको बढावा देते रहते है। (८३) तो तुम इन राक्षसो पर दण्ड आने की जल्दी न करो हम उनके लिए दिन गिन रहे हैं। (८४) जिस दिन हम सयमियो को ईश्वर के सामने अतिथियो की तरह जमा करेंगे। (८५) और पापियो को प्यासे नरक की ओर हाँकेंगे। (८६)

---

* एक काफिर धनवान ने एक मुसलमान की मजदूरी न दी और कहा, "तू अपना धर्म छोड़ दे तो मजदूरी दूंगा।" मुसलमान बोला, "तू मरकर फिर जिये तो भी मै अपना ईमान न बदलूं।" इस पर पहला बोला, "मैं फिर जिऊंगा तो यही धन और सन्तान पाऊंगा।" इस पर कहा है कि वहाँ ईमान काम आवेगा, धन नहीं।

वहाँ अनुमति का अधिकार होगा, हाँ जिसने ईश्वर से प्रण लिया है। (८७) और कोई-कोई कहते हैं कि ईश्वर पुत्र रखता है। (८८) ऐ पैगम्बर इनसे कहो कि तुम ऐसी कठिन बात कहते हो। (८९) जिससे आसमान फट पडे और जमीन फट जावे और पर्वत काँप कर गिर पड़े। (९०) इसलिए कि ईश्वर के लिए पुत्र सिद्ध करते हैं। (९१) और इस-लिए कि ईश्वर के योग्य नही कि पुत्र बनावे। (९२) आकाश और पृथ्वी मे कोई नही है जो ईश्वर के आगे दास होकर न आवे। (९३) ईश्वर ने इनको घेर लिया और गिन रक्खा है। (९४) और यह सब प्रलय के दिन अकेले उसके सामने आवेगे। (९५) जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये उनके लिए ईश्वर मित्र पैदा करेगा। (९६) तो हमने इस कुरान को तुम्हारी भाषा में इस लिए आसान कर दिया है कि तुम इस से संयमियों को खुशखबरी सुनाओ, झगडालुओ को दण्ड से डराओ। (९७) और इनसे पहले हम बहुत से सम्प्रदायों गुटो को मार चुके हैं भला अब तुम उनमे से किसी को देखते हो या उनमें से किसी की आवाज सुनते हो। (९८) (रुकू ६)

सूरे ताहा

मक्के में अवतरित हुई, इसमें १३५ आयतें और ८ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो बहुत ही कृपालु है। ता-हा। (१) ऐ पैगम्बर हमने तुम पर कुरान इसलिए नही उतारा* कि तुम कष्ट उठाओ

---

* जब कुरान उतरने लगा तो पैगम्बर साहब पहले से अधिक खुदा की पूजापाठ करने लगे। रात-रात भर खड़े होकर नमाज पढ़ते। इसको देखकर काफिर कहते, "कुरान तो आपके लिए मुसीबत बन गया। इसके उत्तर में यह आयतें उतरीं और ज्यादा पूजापाठ से रोका।

(२) हाँ यह कुरान शिक्षा है उसी के लिए जो ईश्वर से डरता है। (३) यह उसका उतारा हुआ है जिसने पृथ्वी और ऊँचे आकाश को पैदा किया। (४) रहमान कृपालु अर्श तख्त पर विराज रहा है। (५) उसी का है जो कुछ नभ मे है और जो कुछ पृथ्वी मे है और जो कुछ दोनो के बीच मे है और जो कुछ मिट्टी के नीचे है, उसी का है। (६) और अगर तू पुकार कर बात करे तो वह भेद को और छिपी हुई बात को जानता है। (७) अल्लाह के सिवाय कोई पूजित नही अच्छे नाम उसी के हैं। (८) और क्या तुमने मूसा की पक्की बात सुनी है। (९) जब उनको आग* दिखलाई दी तो उन्होंने अपने घर के लोगो से कहा ठहरो मुझको आग दिखाई दी है, आश्चर्य नही उससे तुम्हारे लिए प्रकाश-ज्ञान ले आऊँ या आग से मार्ग का पता मालूम करूँ। (१०) फिर जब मूसा वहाँ आये तो उनको वहाँ आवाज आई कि हे मूसा! (११) मैं तेरा पालनकर्ता हूं, तू अपनी जूतियाँ उतार डाल, तू तोवा के पाक मैदान मे है। (१२) और मैंने तुमको पैगम्बरो के लिए चुना है तो जो कुछ आज्ञा होती है उसको कान लगा कर सुनो। (१३) कि मैं ही अल्लाह हू मेरे सिवाय कोई पूजित नही तुम मेरी ही पूजा किया करो और मेरी याद के लिए नमाज पढा करो। (१४) प्रलय आने वाली है मैं उसके समय को छिपाता हू ताकि हर आदमी डर से नेक काम करने का प्रयत्न करे। (१५) और प्रलय मे उसको प्रयत्न का बदला मिले। तो ऐसा न हो कि जो आदमी प्रलय का यकीन नहीं रखता और अपनी दिली इच्छा के पीछे पड़ा है तुमको प्रलय से रोके

---

*मूसा जब मदयन से मिस्र को चले तो उनके साथ बहुत सी बकरियाँ और उनकी स्त्री भी थी। रास्ते मे स्त्री को प्रसव की पीड़ा उठी। इस समय बड़ी सर्दी थी और वह जंगल मे भटक रहे थे। इतने से मूसा को दूर से आग दिखाई दी। यह आग न थी बल्कि ईश्वर की लीला थी। इन आयतो मे इसी बात का विवरण है।

रक्खे कि तू बरबाद हो जावे। (१६) और मूसा तुम्हारे दाहिने हाथ में यह क्या है? (१७) मूसा ने कहा यह मेरी लाठी है, मैं इस पर सहारा लगाता हू और इसी से अपनी बकरियो के लिए पत्ती झाडता हू और इसमे मेरे और भी मतलब हैं। (१८) कहा! ऐ मूसा! इसको जमीन पर डाल दे। (१९) इस पर मूसा ने लाठी डाल दी तो क्या देखते हैं कि वह एक भागता हुआ साँप बन गई। (२०) कहा इसको पकड़ लो और डरो मत, हम इसको फिर वैसा ही कर देंगे। (२१) और अपने हाथ को सिकोड कर अपनी बगल मे रख लो और फिर निकालो तो वह बिना किसी तरह की बुराई के सफेद निकलेगा, यह दूसरा चमत्कार है। (२२) हम तुमको अपने बडे प्रमाण दिखलाये (२३) अच्छा तू फिरऔन के पास चला जा, उसने बहुत सिर उठा रक्खा है। (२४) (रुकू १)

मूसा ने कहा हे मरे पालनकर्ता! मेरा हृदय खोल दे। (२५) और मेरे काम को मेरे लिए आसान कर। (२६) और मेरी जीभ की गाँठ खोल दे। (२७) ताकि लोग मेरी बात समझे* (२८) और मेरे घरवालो मे से काम बनाने वाला सहायक दे। (२९) मेरे भाई हारू को। (३०) उससे मेरी हिम्मत बँधा (३१) और मेरे काम मे उस मिला दे। (३२) ताकि हम दोनो तेरी पवित्रता अधिक बना सकें। (३३) और तेरी यादगारी मे बहुत लगे रहे। (३४) तू हमारे हाल को खूब देख रहा है। (३५) कहा मूसा तुम्हारी अभिलाषा पूरी हुई। (३६) और हम तुम पर एक बार और भी कृपा कर चुके हैं। (३७) हमने तुम्हारी माँ को आज्ञा भेजी जिसका हाल आगे बताया जाता है। (३८) यह कि

---

* कहा जाता है कि मूसा हकलाकर बात करते थे। इसलिए प्रार्थना की कि उनकी जीभ की गाँठ खुल जाय और वह ठीक-ठीक बोलने लगे।

उस मूसा को संदूक में रखकर नदी मे डाल दो। नदी उस सन्दूक को किनारे पर लगा देगी। उसको हमारा शत्रु और मूसा का शत्रु फिरऔन ले लेगा*और ऐ मूसा ! हमने तुझ पर अपनी तरफ से प्रेम दिया। और अर्थ यह था कि तेरा हमारी ओर से पालन-पोषण हो। (३६) जबकि तुम्हारी बहिन विदेशी बनकर कहती फिरती थी कि मैं तुमको ऐक ऐसी धाय बतला दूँ जो उसको पाले। हमने तुमको फिर तुम्हारी मा के पास पहुचा दिया ताकि उसकी आँखें ठन्डी रहें और दुख और तूने एक आदमी को मार डाला तो हमने तुमको उस दुख से छुटकारा दिया। अत यह कि हमने तुमको खूब ठोक-बजाकर आजमाया। फिर तू कई वर्ष मदियन के लोगो मे रहा। फिर तू भाग्य से यहाँ आया। (४०) और मैंने तुझको अपने लिए चुन लिया है। (४१) तुम और तुम्हारा भाई हमारे चमत्कार लेकर जाओ और हमारी यादगारि मे सुस्ती न करना। (४२) दोनो फिरऔन के पास जाओ, उसने बहुत सिर उठा रक्खा है। (४३) फिर उससे नर्मी से बात करो शायद वह समझ जावे या डरे। (४४) दोनो भाइयो ने प्रार्थना की कि ऐ हमारे पालनकर्ता! हम इस बात से डरते हैं कि हम पर ज्यादती और सरकशी न करने लगे। (४५) कहते डरो मत हम तुम्हारे साथ सुनते और देखते हैं। (४६) अभिप्राय यह कि उसके पास जाओ और उससे कहा कि हम दोनो आपके पालनकर्ता के भेजे हुये हैं। तू इसराईल के पुत्रो को हमारे साथ

---

* फिरऔन बनी इसराइल के बेटों को मार डालता था क्योंकि उसे मालूम था कि उसके राज्य को उलटने के लिए बहुत शीघ्र एक बच्चा पैदा होने वाला है। जब मूसा का जन्म हुआ तो उनकी मा डरीं कि यह भी मार न डाले जायें। उनको स्वप्न मे बताया गया कि बच्चे को संदूक मे रख कर नदी मे डाल दो। उन्होने ऐसा ही किया। संदूक बहता हुआ फिरऔन के बाग मे आया। फिरऔन की स्त्री असिया ने उसे उठाया और मूसा को अपना बेटा बना लिया।

भेज दे और इनको दुख न दे। हम तेरे पालनकर्ता से चमत्कार लेकर आये हैं और अच्छाई उसी के लिए है जो सच्ची राह की पैरवी करे। (४७) हम पर हुक्म उतरा है कि सजा उसी पर होगी जो ईश्वर के कार्यों को झुठलाये और उससे मुँह मोड़े। (४८) फिरऔन ने पूछा तुम दोनों भाइयों का पालनकर्ता कौन है। (४९) मूसा ने कहा हमारा पालनकर्ता वह है जिसने प्रत्येक वस्तु को उसकी शक्ल दी फिर उसको मार्ग दिखलाया। (५०) फिरऔन ने पूछा भला अगले लोगों का क्या हाल है? (५१) मूसा ने कहा इन बातों का ज्ञान मेरे पालनकर्ता के यहाँ किताब में मौजूद है। मेरा पालनकर्ता न भटकता है न भूलता है। (५२) उसी ने तुम लोगों के लिए जमीन का बिछौना बनाया और तुम लोगों के लिए जमीन सड़कें निकाली और आसमान से पानी बरसाया फिर हम ही के द्वारा भाँति-भाँति की पैदावारें निकलीं। (५३) खाओ और अपने चौपायों को चराओ इनमें बुद्धिमानों के लिए प्रमाण हैं। (५४) (रुकू २)

इसी पृथ्वी से हमने तुमको उत्पन्न किया और इसी में तुमको लौटा कर लायेंगे और इसी से तुमको पुनः निकाल खड़ा करेंगे। (५५) और हमने फिरऔन को अपनी सभी निशानियाँ दिखलाईं, इस पर भी वह झुठलाता और इनकार ही करता रहा। (५६) कहा कि मूसा, क्या तू हमारे पास इसलिए आया है कि अपने जादू से हमको हमारे देश से निकाल दे। (५७) हम भी ऐसा ही जादू तेरे सामने ला उपस्थित करेंगे। तू हमारे और अपने बीच एक प्रण ठहरा कि न हम उसके विरुद्ध करें और न तू खुले मैदान में हो। (५८) मूसा ने कहा तुम्हारा वादा* सजनई के दिन है और यह कि मनुष्य दिन चढ़ एकत्र हों। (५९) यह सुनकर फिरऔन लौट गया फिर गया फिर उसने अपने हथ-

---

* यह कार्य त्यौहार पर उठा रखा ताकि बहुत-से लोग उसको देखें।

झण्डे जमा किये फिर आ उपस्थित हुआ। (६०) मूसा ने फिरऔनियों से कहा कि तुम्हारी शामत आई है, ईश्वर पर जादू की झूठा दोषारोपण मत लगाओ नही तो वह सजा से तुम्हें बरबाद कर देगा। और जिसने ईश्वर पर झूठ बांधा वह लक्ष्य को नहीं पहुंचा। (६१) फिर वह आपस मे अपने काम पर झगड़ने लगे और चुपके-चुपके विचार करने लगे। (६२) सब ने कहा यह दोनों जादूगर हैं। चाहते हैं कि अपने जादू से तुमको तुम्हारे देश से निकाल बाहर करें और तुम्हारे मिस्रियों के सुन्दर धर्म को मिटा देवें। (६३) तो तुम भी कोई अपना उपाय उठा न रक्खो, पक्ति बनाकर आओ और जो आज ऊपर रहा वही जीत गया। (६४) जादूगरो ने कहा कि मूसा या तो यह हो कि तू अपनी वस्तु मैदान में डाल और या यह हो कि हम पहले डालें। (६५) मूसा ने कहा नही तुम ही डालो चलो, तो बस मूसा को उनके जादू की वजह से एसा मालूम हुआ कि उनकी रस्सियां और लाठियां सांप बन कर इधर-उधर दौड़ रही हैं। (६६) फिर मूसा अपने जी ही जी मे डर गया। हमने कहा मूसा डरो मत। (६७) तुम ऊंचे रहोगे। (६८) और तुम्हारे दाहिने हाथ मे जो लाठी है उसको मैदान मे डाल दो कि इन जादूगरो ने जो जादू बना खडा किया है सबको हड़प कर जावे। जो जादू बना खड़ा किया है जादूगरों का कार्य और जादूगर कही भी जाय उसको छुटकारा नही। (६९) आशय मूसा की लाठी ने सांप बन कर जादूगरो की सँपोलियो को हडप कर लिया तो यह देखकर जादूगरों ने दण्डवत की। कहने लगे हम हारू और मूसा के पालनकर्ता पर ईमान लाये। (७०) फिरऔन ने कहा क्या इससे पहले कि हम तुमको आज्ञा दें तुम मूसा पर विश्वास ले आये। हो न हो यह मूसा तुम्हारा बड़ा गुरु है, जिसने तुमको जादू सिखाया है तुम्हारे हाथ और तुम्हारे पैर उल्टे काट डालूँ और तुमको खजूरो के तनो पर सूली चढाऊं और तुमको ज्ञात हो जायगा कि हम दो पँथियो मे किसकी मार अधिक सख्त और स्थायी है। (७१) जादूगर बोले कि खुले-खुले चमत्कार जो हमारे सामने आये उन पर, और जिस ईश्वर ने हमको पैदा किया है

उस पर तो हम तुझको किसी तरह विजय देने वाले नहीं हैं। तू जो करने वाला है, कर डाल। तू संसार की इसी जिन्दगी पर आज्ञा चला सकता है। (७२) और हम अपने पालनकर्ता पर विश्वास लाये है जिससे वह हमारे पापो को क्षमा करे और जादू का जिस पर तूने हमको विवश किया। और अल्लाह की कृपा चिरस्थायी है। (७३) कुछ सन्देह नही कि जो आदमी अपराधी होकर अपने पालनकर्ता के सामने गया उसके लिए नरक है, जिसमे वह न तो मरेगा ही और न जिन्दा ही रहेगा। (७४) और जो ईमानदार ईश्वर के सामने उपस्थित होगा और उसने अच्छे काम किये होगे तो यही लोग हैं जिनके उच्च-पथ होंगे। (७५) रहने के बाग जिनके नीचे नहरें बह रही होगी उन मे हमेशा रहेंगे और जो मनुष्य पवित्र रहें उनका यही बदला है। (७६) (रुकू ३)

और हममें मूसा की ओर आज्ञा भेजी कि हमारे भक्तों इसराईल के पुत्रो को रातों-रात मिस्र से नदी मे लाठी मारकर उनके लिए सूखी सड्क बनाकर निकाल ले जा। (७७) तू उनके पकडे जाने का भय और सन्देह न कर। फिरऔन ने अपनी सेना लेकर इसराईल के पुत्रों का पीछा किया, फिर नदी का जैसा कुछ बहाव उन फिरऔन पर आया सो आया वे डूब गये। (७८) और फिरऔन ने अपनी जाति को पथ-भ्रष्ट किया और सीधा मार्ग न दिखाया। (७९) ऐ इसराईल के पुत्रों! हमने तुमको तुम्हरे शत्रु फिरऔन से छुटकारा दिलाया और तुमसे तूर के दाहिनी ओर का वादा किया* और हमने

* कहते हैं कि फिरऔन के नदी में डूब जाने के बाद मूसा की कौम ने उनसे एक किताब मांगी जिसमे उपदेश और काम की बातें हों मूसा ने ७० आदमियों को साथ लिया और तूर की ओर इसी विचार से गये और हारू को अपनी जगह छोड़ गये। यहाँ से वह ४० दिन के बाद तौरात लेकर लौटे। इसी बीच में सामरी ने एक सोने का बछड़ा

तुम पर मन* और सलाव** उतारा। (८०) और कहा अच्छी दिन-चर्या जो हमने तुमको दी है खाओ और इसके बारे मे नटखटी मत करो। ऐसा करोगे तोम तुम पर हमारा क्रोध उतरेगा और जिस पर हमारा क्रोध उतरा तो वह नरक के गढे जा गिरा। (८१) और जो व्यक्ति स्वीकार करे और विश्वास लाये और शुभ कार्य करे फिर सही मार्ग पर स्थिर रहे तो हम उसके क्षमा करने वाले हैं। (८२) और ऐ मूसा ! तुम जल्दी करके अपनी जाति से कैसे आगे आ गये ? (८३) कहा कि वह भी मेरे पीछे आ रहे हैं और ऐ मेरे पालनकर्ता ! मैं जल्दी करके इसलिए तेरी ओर बढ आया हू कि तू प्रसन्न हो। (८४) कहा तुम्हारे पीछे हमने तुम्हारी जाति को एक और बला मे फाँस दिया है और उनको सामरी ने भटका दिया है। (८५) फिर मूसा क्रोध और दुख की दशा में अपनी जाति की ओर वापस आये। कहने लगे कि भाइयो ! क्या तुमसे तुम्हारे पालनकर्ता ने भली किताब का वचन नही किया था, तो क्या तुमको मुद्दत लम्बी मालूम हुई या तुमने चाहा कि तुम पर तुम्हारे पालनकर्ता का क्रोध आ उतरे और इस कारण से तुमने उस वचन के खिलाफ किया ? (८६) कहने लगे कि हमने अपने आप से वचन नही तोडा बल्कि जाति के जेवरो का बोझ हम पर लदा था। अब सामरी के कहने से उसे आग मे ला डाला और इसी तरह सामरी ने भी। (८७) फिर सामरी ही ने लोगो के लिए बछडा बनाया जिसकी आवाज बछडे-जैसी थी फिर कहने लगे यही तो तुम्हारी पूजित है और मूसा का पूजित है और वह मूसा बछडे को भूल लर तूर चला गया है। (८८) क्या इन लोगो को इतनी बात भी नही सूझ पडती थी

बनाया और इसमें कुछ ऐसे कर्तव्य दिखाये कि लोगो को बाडा आश्चर्य हुआ और इसी कारण सच्चे मार्ग से भटक गये।

*मीठी चीज जो रात में पत्तो पर जम जाती है।

**बटर-जैसी चिड़िया का मांस।

कि बछड़ा इनकी बात का न तो उलट कर उत्तर दे सकता है और न इनके किसी हानि-लाभ पर अधिकार रखता है। (८९) (रुकू ४)

और हारूँ ने बछडे की पूजा से पहले इनसे कह दिया था कि भाइयों ! इस बछड़े के कारण से तुम्हारी परीक्षा की जा रही है, वर्ना तुम्हारा पालनकर्ता कृपालु है, तो मेरे कहे पर चलो और मेरी बात मानो। (९०) कहने लगे जब तक मूसा हमारे पास लौट कर न आये हम तो बराबर उसी पर जमे बैठे रहेंगे। मूसा ने हारूँ की ओर इंगित किया कहा (९१) कि हारूँ ! जब तुमने इनको देखा था कि यह लोग पथभ्रष्ट हो गये (९२) तो क्यों तुमने मेरा शिक्षा का ध्यान न किया ? क्यों तुमने मेरा कहा न माना ? (९३) वह बोले कि ऐ मेरे माँ जाये भाई ! मेरे सिर और दाढ़ी को मत पकड़ो* । मैं इस बात से डरा कि तुम वापस आकर कही यह न कहने लगो कि तुम इसराईल के पुत्रों मे फूट डाल दी और मेरी बात का विचार न किया। (९४) जब मूसा ने सामरी से पूछा कि, सामरी ! तेरा क्या मतलब है, (९५) कहा मुझे वह चीज दिखाई दी जो दूसरों को नही दिखाई दी, तो मैंने जिबराईल देवदूत के पर के निशान से एक मुट्ठी मट्टी भर ली, फिर उसको बछडे के पेट में डाल दिया और वह बछड़े की बोली बोलने लगा और यही बात मुझे उस समय भली लगी। (९६) मूसा ने कहा चल दूर हो इस जीवन में तेरी यह सजा है कि जिन्दगी भर कहता फिरे कि मुझे छू न जाना**इसीलिए सामरियों के हाथकी चीज यहूदी नही खाते और तेरे लिए प्रलय की सजा का एक वचन है जो किसी तरह नही टलेगा और अपने पालनकर्ता अर्थात बछडे की ओर देख जिस पर तू जमा

---

* यानी मुझसे न बिगड़ और मुझे लज्जित न कर।

** सामरी को आगे चलकर ऐसा बुरा रोग लगा कि वह सबसे अलग रहने लगा और जो कोई उसको हाथ लगा देता उसको भी ताप चढ़ आती। ऐसा मालूम होता था कि उसे क्षय का रोग लगा था।

बैठा था, इनको हम जला देंगे और नदी मे बहा देंगे। (९७) लोगो ? तुम्हारा पूजित एक ईश्वर है, जिसके अतिरिक्त कोई पूजित नही, उसके ज्ञान मे हर एक चीज छिप रही है। (९८) ऐ पैगम्बर ! इसी प्रकार हम बीते हुए समाचार तुमको सुनाते हैं और हमने पास से कुरान दिया। (९९) जिन लोगो ने इससे मु ह फेरा प्रलय के दिन एक बोझ लादे होगे। (१००) और इसी हाल मे हमेशा रहेंगे और क्या ही बडा बोझ है जो वह लोग प्रलय के दिन उठाये होगे। (१०१) जिस दिन नरसिहा फू का जायगा और हम दिन अपराधियो की जमा के दिन, उनकी आँखें डर के मारे नीली होगी। (१०२) वह आपस मे चुपके-चुपके कहेंगे कि दुनिया मे हम लोग दस ही दिन ठहरे होगे। (१०३) जैसी-जैसी बातें यह लोग उस दस दिन करेंगे हम उनसे अच्छी प्रकार जानकार हैं, जो इनमे आर्थिक जानकार होगा वह कहेगा नही तुम दुनिया मे ठहरे होगे तो बस एक दिन*। (१०४) (रुकू ३)

और ऐ पैगम्बर ! तुमसे पर्वतों के विषय पूछते हैं कि प्रलय के दिन इनका क्या हाल होगा तो कहा कि मेरा पालनकर्ता इनको उड़ा देगा। (१०५) और पृथ्वी को मैदान चौरस कर छोड़ेगा। (१०६) जिसमे तू न तो कही मोड देखेगा और न कही ऊंचा नीचा। (१०७) उस दिन वे सब लोग बिना इधर-उधर को मुडे उसके उसके पीछे हो जावेंगे और मारे डर के ईश्वर कृपालु के आगे सबकी आवाजें बैठ जायगी। काना-फूसी के सिवाय और कुछ न सुनेगा। (१०८) उस दिन किसी की सिफारिश काम न आवेगी, मगर जिसकी कृपालु ने इजाजत दी और उसका बोलना पसन्द आया। (१०९) जो कुछ लोगो के सामने हो रहा है और जो उनसे पहले हो चुका है वह सब कुछ जानता है और लोग खोज करके भी उसे काबू मे नही

---

* कयामत का दिन इतना लम्बा होगा कि दुनिया वाले उसे अपने सारे जीवन से भी अधिक बडा समझेंगे।

ला सकते। (११०) और प्रलय के दिन सदैव जीवित रहनेवाले के सामने मुँह रगड़ते होंगे और उस दिन के लिए जो व्यक्ति अत्याचार का बोझ लादेगा उसी की बरबादी है। (१११) और जो अच्छे काम करेगा और वह विश्वास भी रखता होगा तो उसको अन्याय का डर न होगा। (११२) और ऐसे ही हमने अरबी भाषा मे कुरान उतारा है और उसमें भाँति-भाँति के भय सुना दिये हैं जिससे लोग बच चलें या उनमे विचार पैदा हो। (११३) बस ईश्वर सब से ऊचा वास्तविक सम्राट है और तू कुरान के लेने मे जल्दी न कर जब तक कि उसका उतरना पूरा न हो और प्रार्थना कर कि ऐ मेरे परवरदिगार ! मेरी समझ बढ़ा*। (११४) और हमने मनुष्य से एक वचन लिया था, सो मनुष्य भूल गया और हमने उसमे धैर्य न पाया। (११५) (रुकू ६)

और जब हमने देवदूतो से कहा कि मनुष्य के आगे दण्डवत करो, तो सब ही ने दण्डवत की, मगर इबलीस ने इन्कार किया। (११६) तो हमने मनुष्य से कहा कि ऐ मनुष्य ! यह इबलीस तुम्हारा और तुम्हारी स्त्री का शत्रु है तो ऐसा न हो कि कही तुम दोनो को स्वर्ग से निकलवा दे। (११७) और यहाँ स्वर्ग मे तो तुम को ऐसा सुख है कि न तो तुम भूखे रहोगे न नगे। (११८) और यहाँ तुम न प्यासे होगे न धूप मे रहोगे। (११९) फिर शैतान ने मनुष्य को बहकाया और कहा ऐ मनुष्य ! कहो तो तुमको कल्पतरु का वृक्ष बता दूँ कि जिसको खाकर हमेशा जीते रहो और ऐसी सल्तनत जो पुरानी न हो। (१२०) अन्ततः दोनो ने वृक्ष के फल को**खा लिया तो उन पर उनके

---

* मुहम्मद साहब इस डर से कि उतरनेवाली आयतें भूल न जायें उन्हें जल्दी से उतारने के बीच ही में याद करने लगते थे। यह बात खुदा को अच्छी न लगी और ऐसा करने से उनको रोक दिया।

**आदम को एक पेड़ के पास जाने से मना किया गया था। शैतान ने उनको बहकाया और वह उसकी बातों में आगये। उसका परिणाम

पर्दे की चीजें जाहिर हो गई और अपने को स्वर्ग के उपवन के पत्तो से ढाँकने लगे और आदम ने अपने पालनकर्ता की आज्ञा न मानी और भटक गया। (१२१) फिर उनके पालनकर्ता ने उनको चुन लिया और उनकी ओर ध्यान दिया और मार्ग दिखलाया। (१२२) कहा कि तुम दोनों यहा स्वर्ग से नीचे उतर जाओ, तुम मे से एक दूसरे के शत्रु होगे, फिर अगर तुम्हारे पास हमारी तरफ से शिक्षा आवे तो जो हमारी शिक्षा पर चलेगा न भटकेगा न दुख झेलेगा। (१२३) और जिसने हमारी याद से मुँह मोडा तो उसका जीवन दुख मे ही होगा और प्रलय के दिन हम उसको अन्धा उठावेंगे। (१२४) वह कहेगा हे मेरे पालन-कर्ता! तूने मुझको अन्धा क्यो उठाया और मैं तो देखता था। (१२५) ईश्वर कहेगा ऐसे ही हमारी आयतें तेरे पास आई मगर तूने उनकी कुछ खोज न की और इसी तरह आज तेरी खोज न की जायगी। (१२६) और जो आदमी हद से बढ चला और और अपने पालनकर्ता की आयतो पर विश्वास न लाया हम उसको ऐसा ही बदला दिया करते हैं और अन्त का दण्ड दुनिया के दण्ड से बहुत ही सख्त और देर तक की है। (१२७) क्या लोगों को इससे अनुभव न हुआ कि इनसे पहिले हमने कितने गुटो को मार डाला जो अपने गिरोहो मे चलते-फिरते थे। जो लोग बुद्धिमान हैं उनके लिए इसी मे प्रमाण हैं। (१२८) (रुकू ७)

यदि पालनकर्ता ने पहले से एक बात न कही होती और सीमा स्थिर न की होती तो सजा का आना आवश्यक बात थी। (१२९) ऐ पैगम्बर! जैसी बातें यह काफिर कहते हैं उन पर सतोष करो और सूरज के निकलने से पहिले और उसके डूबने से पहले अपने पालनकर्ता

यह हुआ कि उनके बदन से जन्नत के कपड़े छिन गये और वह अपने को पत्तों से ढाँकने लगे। इस पेड़ के बारे मे भिन्न-भिन्न विचार हैं, किन्तु अधिकतर लोग उसे गेहूँ का पेड़ बताते हैं।

की प्रशंसा के साथ माला फेरा करो। और रात के समय में और दोपहर दिन के लगभग माला फेरा करो, शायद तुमको खुशी मिल जाय (१३०) और ऐ पैगम्बर! हमने जो भिन्न प्रकार के मनुष्यों को दुनिया के जीवन में ऐश्वर्य के साधन प्रयोग के लिए दे रक्खे हैं तू उनकी ओर दृष्टि न दौड़ा कि उनकी उनमैं परीक्षा ले और तुम्हारे पालनकर्ता की दिनचर्या कही अच्छी और स्थिर है। (१३१) और अपने घरवालो पर नमाज की देखभाल रखो और उसके नियमवद्ध रहो। हम तुमसे कोई दिनचर्या नही माँगते, हम तुमको रोजी देते हैं और अन्त में नियमवालों ही का भला है। (१३२) और यहूद और ईसाई कहते हैं कि यह पैगम्बर अपने पालनकर्ता की ओर से हमारे पास कोई प्रमाण क्यो नही लाता, क्या अगली किताबों की साक्षी इनके पास नहीं पहुंची। (१३३) और यदि हम कुरान से पहले किसी सजा से उनको मरवा देते तो वह कहते ऐ हमारे पालनकर्ता! तुमने हमारी ओर कोई पैगम्बर क्यो न भेजा कि बदनाम होने से पहले हम तेरी आज्ञा पर चलते। (१३४) ऐ पैगम्बर! इनसे कहो कि सभी बाट देख रहे हैं तुम भी करो तो आगे चलकर तुम समझ लोगे कि सीधा मार्ग पर कौन है, और किसने मार्ग पाया। (१३५) (रुकू ८)



सत्रहवाँ पारा (इकतरबलिन्नास)

सूरे अम्बिया

मक्के में अवतरित हुई इसमें ११२ आयतें और ७ रुकू हैं

ईश्वर के नाम से जो बहुत ही कृपालु आरम्भ करता हू। लोगो के के हिसाब का समय नजदीक आ लगा, इस पर भी भूल में अनभिज्ञ हैं। (१ उनके पास उनके पालनकर्ता की ओर से जो नया हुक्म आता

है उसे ऐसे बेपरवाह होकर सुनते हैं कि हसी-खेल बनाते हैं। (२) उन के दिल ध्यान नही देते हैं और यह अन्यायी चुपके-चुपके कानाफूसी करते हैं कि यह मुहम्मद है ही क्या ? तुमही जैसा एक व्यक्ति, फिर जानते-बूझते क्यो जादू मे पडते हो। (३) पैगम्बर ने कहा तुम लोग काना-फूसी करते हो ? जितनी बातेँ आकाश और पृथ्वी मे होतीं हैं मेरे पालनकर्ता को ज्ञात हैं और वह सुनता-जानता है। (४) बल्कि कहने लगे कि यह तो विचारो का सिरदर्द है बल्कि इसने यह झूठी-झूठी बातें अपने दिल से गढ़ ली हैं, बल्कि यह तो कवि है नही तो कोई चमत्कार दिखावे जैसे अगले पैगम्बरो ने दिखलाये हैं। (५) जिस बस्ती को हमने उससे पहले मार डाला वह चमत्कार देखकर भी ईमान न लाई तो क्या यह विश्वास ले आवेंगे ? (६) और हमने पहले भी आदमी ही पैगम्बर बना कर भेजे थे। हम उन्हें वही ईश्वरीय सदेश दिया करते थे, तो यदि तुमको ज्ञात नही तो किताब वालो से पूछ देखो (७) और सबने उनके ऐसे शरीर भी नही बनाये थे कि खाना न खाते हो, न वे लोग दुनिया में हमेशा रहनेवाले अमर ही थे*। (८) फिर हमने उनको दण्ड का वादा सच्चा कर दिखाया तो उन पैगम्बरों को और जिनको हमने चाहा दण्ड से बचा दिया। जो लोग सीमा से बढ़ गये थे। हमने उनको मार डाला। (९) हमने तुम्हारी तरफ किताब उतारी है जिसमे तुम्हारा जिक्र है। क्या तुम नही समझते ? (१०) (रुकू १)

और हमने बहुत सी बस्तियो को जहाँ के लोग दुष्ट प्रकृति थे तोड़ फोड कर बराबर कर दिया और उनके बाद दूसरे लोग उठा खड़े किये।

---

* इस्लाम के न माननेवालो का विचार था कि नबी या रसूल कोई साधारण मनुष्य नहीं हो सकता। नबी होने के लिए असाधारण लक्षणों की आवश्यकता बताते थे।

** यमन निवासियो ने अपने नबी का बध कर डाला था।

(११) तो जब उन नष्ट होने वालों ने हमारे दण्ड की आहट पाई तो उस वस्ती से भागने लगे। (१२) हमने कहा भागो मत और उसी दुनिया के ऐश्वर्य साधना की ओर लौट जाओ जिसमे अब तक चैन करते थे और अपने मकानो की ओर जाओ शायद तुम्हारी कुछ पूछ हो। (१३) वह कहने लगे हाय हमारा दुर्भाग्य, हम ही अपराधी थे। (१४) बस वह लोग बराबर यही पुकारा किये, यहाँ तक कि हमने उनको कटे हुए खेत बुझे हुए अगारे जैसा बरबाद कर दिया। (१५) और हमने आकाश और पृथ्वी को और जो कुछ आकाश और पृथ्वी मे है उसको खेल के लिए पैदा नही किया। (१६) यदि हमको खेल बसाना मन्जूर नही था। (१७) बात यह है कि हम सच को झूठ पर खीच मारते हैं तो वह झूठ के सिर को कुचल देता है और झूठ उसी समय नष्ट हो जाता है और मनुष्यो ! तुम पर दुख है कि तुम ऐसी बातें बनाते हो। (१८) और जो आकाश और जो पृथ्वी मे है उसी का है और जो है ईश्वर के पास वह न तो उसकी पूजा से गर्व करते हैं और न थकते हैं। (१९) रात दिन उसकी याद मे लगे रहते हैं, सुस्ती नही करते। (२०) क्या इन मनुष्यो ने जमीन की चीजो से ऐसे पूजित बनाये हैं जो इनको बना खड़ा करते हैं ? (२१) यदि पृथ्वी-आकाश मे ईश्वर के अतिरिक्त और पूजित होते तो पृथ्वी आकाश दोनो बर्बाद हो गये होते। तो जैसी-जैसी बातें यह लोग बनाते हैं ईश्वर जो सब का मालिक है वह इनसे पवित्र है। (२२) जो कुछ वह करता है उसकी पूछ-ताछ उससे नही होती और लोगो से पूछ-ताछ होती है। (२३) क्या लोगो ने ईश्वर के सिवाय दूसरे पूजित बना रखे हैं ? ऐ पैगम्बर तुम इन लोगो से कहो कि अपनी दलील तो पेश करो जो मेरे साथ हैं उनकी किताब कुरान और जो मुझ से पहिले हो चुके हैं उनकी किताबें तौरात इन्जील आदि मौजूद हैं। बात यह है कि इनमे से प्राय: लोग सच को न समझ कर मुँह मोटते हैं। (२४) और ऐ पैगम्बर हमने तुमसे पहले जब कभी कोई पैगम्बर भेजा तो उस पर हम आज्ञा उतारते रहे कि हमारे सिवाय कोई पूजित नहीं। हमारी ही पूजा करो

(२५) और कोई-कोई कहते हैं कि दयालु ईश्वर बेटे रखता है *। उसकी जात पाक ह। देवदूत ईश्वर के बेटे नही बल्कि मानवीय सेवक हैं। (२६) उसके आगे बढकर बात नही कर सकते और वह उसी के आदेश पर काम करते हैं। (२७) इनका अगला पिछला हाल उसको मालूम है और यह देवदूत किसी की सिफारिश नही कर सकते, मगर उसके लिए जिससे ईश्वर खुश हुआ और वह खुद ईश्वर के भय से काँपते हैं। (२८) और जो उनमे से यह दावा करें कि ईश्वर नही मैं पूजित हू तो उसको हम नरक की दण्ड देंगे। अन्यायियो को हम ऐसे ही दण्ड दिया करते हैं। (२९) (रुकू २)

क्या जो लोग इन्कार करने वाले है, उन्होंने नही देखा कि आकाश और जमीन दोनो का एक पिडा सा था। सो हमने उसको तोडकर जमीन और आकाश को अलग-अलग किया और पानी से तमाम जानदार चीजें बनाई, तो क्या इस पर भी लोग ईमान नही लाते ? (३०) और हम ही ने जमीन मे पहाड रखे ताकि लोगो को लेकर झुक न पडे और हम ही ने चौड़े-चौडे रास्ते बनाये ताकि लोग राह पावें। (३१) और हम ही ने आकाश को बचाव की छत बनाया और वे आसमानी निशानियो को ध्यान मे नही लाते। (३२) और वही है जिसने रात और दिन और सूरज और चन्द्रमा को पैदा किया कि तमाम चक्र दायरे मे फिरा करते हैं। (३३) और ऐ पैगम्बर ! हमने तुमसे पहले किसी आदमी को अमर नही किया, बस अगर तुम मर जाओगे तो क्या यह लोग हमेशा रहेगे। (३४) हर जीव को मौत चखनी है और हम तुमको बुराई और भलाई से आजमाकर जाँचते हैं और तुम सब को हमारी तरफ लौटकर आना है। (३५) और ऐ पैगम्बर ! जब इन्कार करने वाले तुमको देखते है तो आपस मे तुम्हारी हँसी उडाने

---

* जैसे ईसाई हजरत ईसा को और यहूदी हजरत मोजेस को ईश्वर का पुत्र बताते थे।

लगते हैं कि क्या यही है जो तुम्हारे पूजितों की नहीं मानते हैं। (३६) आदमी जल्दी का पुतला बनाया गया है। हम तुमको अपनी निशानियाँ दिखाये देते हैं तुम जल्दी मत मचाओ। (३७) और इन्कार करने वाले कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो यह प्रलय का प्रण कब पूरा होगा? (३८) कभी इन्कार करने वाले उस समय को जानें जबकि आग आ घेरेगी, न अपने मुँह से रोक सकेंगे और न अपनी पीठ पर से और न उनको सहायता मिलेगी। (३९) लेकिन वह एक दम से उन पर आ पड़ेगी और इनके होश खो देगी। फिर यह उसे न हटा सकेंगे और न इनको समय मिलेगा। (४०) और ऐ पैगम्बर! तुमसे पहले पैगम्बरों के साथ भी हँसी की जा चुकी है तो जो लोग जिस दण्ड की हँसी उड़ाया करते थे उसने आकर इनको पकड़ा। (४१) (रुकू ३)

ऐ पैगम्बर! इन लोगो से पूछो कि रहमान से तुम्हारी रात दिन कौन चौकीदारी कर सकता है मगर वह ईश्वर के नाम से मुँह मोड़े हैं। (४२) क्या हमारे बजाय इनके कोई और पूजित हैं जो इनको बचा सकते हैं, न वह आप अपनी सहायता कर सकते हैं और न वह हमारे साथी हैं। (४३) बल्कि हमने इन लोगो को और इनके पुरखो को दुनियाँ मे बसाया, यहां तक कि इन पर बहुत सी उम्र गुज़र गई यह घमण्डी हो गये। तो क्या यह लोग इस बात को नही देखते कि हम देश को चारो तरफ से दबाते चले आते हैं*। अब क्या वह कुरेश जीतने वाले हैं। (४४) ऐ पैगम्बर! कहो कि मैं ईश्वरी संदेश इलहाम से डराता हूं, मगर यह लोग बहरे हैं और बहरो को डराया जाय तो वह पुकार नही सुनते। (४५) और ऐ पैगम्बर! अगर इनको तुम्हारे पालन कर्ता का दण्ड की हवा भी लग जाय तो बोल उठेंगे कि दुःख है कि

*यानी मुसलमान धीरे-धीरे अपने शत्रुओ को पराजित करते जाते हैं और उनके देश पर अपना अधिकार जमाते जाते हैं।

हम ही अपराधी थे। (४६) और प्रलय के दिन लोगो के काम की तौल के लिए हम सच्ची तराजू* लगा देंगे तो किसी पर ज़रा भी अत्याचार न होगा और अगर राई के दाने बराबर भी अलग होगा तो हम उसे तौलने के लिए लावेंगे और हिसाब लेने के लिए हम काफी हैं। (४७) और हमने मूसा और हारू को विवेक करने वाली किताब तौरात दी और रोशनी और शिक्षा डरने वालो के लिए। (४८) जो बिन देखे ईश्वर से डरते और उस घडी प्रलय से काँपते हैं। (४९) और यह क़ुरान शुभ शिक्षा है जो हमी ने उतारी है, सो क्या तुम लोग इसको नही मानते? (५०) (रुकू ४)

और इब्राहीम को हमने शुरू ही से अच्छी समझ दी थी और हम उनसे जानकर थे। (५१) जब उन्होने अपने बाप और अपनी जाति से कहा कि यह मूर्ति क्या हैं जिनकी पूजा पर जमे बैठे हो? (५२) वह बोले कि हमने अपने बाप दादो को उन्हीं की पूजा करते देखा है। (५३) इब्राहीम ने कहा कि ठीक हो कि तुम और तुम्हारे बडे जान बूझ कर भूल मे पडे रहे। (५४) वह बोले क्या तू हमारे पास सच्ची बात लेकर आया है या हसी करता है? (५५) इब्राहीम ने कहा आकाश और पृथ्वी का स्वामी तुम्हारा ईश्वर है जिसने इनको पैदा किया और मैं इसी बात का कायल हू। (५६) ईश्वर की सौगन्ध तुम्हारे पीठ फेरे पीछे मैं तुम्हारे मूर्तियो के साथ मकर करूगा। (५७) इब्राहीम ने मूर्तियो को तोड़-फोड टुकडे-टुकड़े कर दिया, मगर उनके बडे मूर्त को इस कारण से रहने दिया कि वह उसकी तरफ आवेंगे। (५८) जब लोगो को मूर्तियो के तोडे जाने का हाल मालूम हो गया तो उन्होने कहा हमारे पूजितो के साथ यह काम किसने किया वह कोई अन्यायी है। (५९) बोले कि वह नौजवान जिसको इब्राहीम के नाम से पुकारा

---

*सत्य और असत्य तथा पुण्य और पाप मे बतानेवाली तराजू।

जाता है, उसको हमने इन मूर्तियो का जिक्र करते हुऐ सुना है। (६०) लोगो ने कहा उसको आदमियो के सामने ले आओ ताकि लोग साक्षी रहें। (६१) गरज इब्राहीम बुलाये गये और लोगो ने पूछा कि इब्राहीम हमारे पूजितो के साथ यह क्या हरकत तूने की है ? (६२) इब्राहीम ने कहा नही वल्कि यह जा इन सव मे बड़ी मूर्ति है उसने यह हरकतकी होगी और अगर यह मूर्ति वोल सकते हो तो इन्ही देखो। से पूछ(६३) उस पर लोग अपने जी में सोचे और आपस मे कहने लगे कि लोगों ! तुम्ही अन्यायी हो। (६४) फिर अपने सिरों के बल औंधे उसी गुम-राहों मे ढकेल दिये गये और इब्राहीम से वोले कि तुमको मालूम है कि यह मूर्ती वोला नहीं करती। (६५) इब्राहीम ने कहा क्या तुम ईश्वर के सिवाय ऐसे पूजितो को पूजते हो कि जो न तुमको कुछ लाभ ही पहुचा सकें और न कुछ हानि ही पहुचा सकते हैं। (६६) अफसोस तुम पर और उन चीजो पर जो तुम ईश्वर के सिवाय पूजते हो क्या तुम नही समझते हो ? (६७) वह कहने लगे कि अगर तुमको कुछ करना है तो इब्राहीम को आग मे जला दो और अपने पूजितों की सहायता करो। (६८) इसलिए उन मनुष्यो ने इब्राहीम को आग मे झोक दिया हमने आग की आज्ञा दी कि ऐ आग ! इब्राहीम के लिए ठण्डी और आराम देने वाली हो जा। (६९) और लोगो ने इब्राहीम के साथ बुराई करनी चाही थी, तो हमने उन्ही को असफल किया। (७०) और इब्राहीम को और लूत को सही-सलामत निकालकर उस जमीन मे ले जा दाखिल किया जिसमे हमने लोगो के लिये तरह तरह की बरकतें रखी हैं। (७१) और इब्राहीम को एक वेटा इसहाक और पोता याकूब दिया और सभी को हमने नेक बक्त किया। (७२) और उनको पेशवा वनाया कि हमारी आज्ञा से उनको शिक्षा देते थे और उनको नेक काम करने और नमाज पढने और जकात देने के लिये कहला भेजा और वे हमारी पूजा मे लगे रहते थे। (७३) और लूत को हमने आज्ञा और समझा दी और उनको उस शहर से जहाँ के लोग गन्दे काम करते थे वचा निकाला। इसमे सन्देह नही कि वह बड़े बुरे और अनाचार थे।

(७४) और लूत को हमने अपनी कृपा मे ले लिया क्योकि वह नेक-बख्तो मे था। (७५) (रुकू ५)

और ऐ पैगम्बर! नूह ने जब हमको पहले पुकारा तो हमने उनके सुन ली और उसको और उसके लोगो को बड़ा दुख से बचाया। (७६) और फिर हमने उसे उस जाति पर जो आयतो को झुठलाया करते थे जीत दी। और वह लोग बुरे थे, हमने उन सबको डुबो दिया (७७) और ऐ पैगम्बर! दाऊद और सुलेमान जबकि यह दोनो एक खेती के बारे मे, जिसमे कुछ लोगो की बकरियाँ जा पडी थी, फैसला करने लगे और हम उनके फैसले को देख रहे थे। (७८) फिर हमने फैसला सुलेमान को समझा दिया और हमने दोनो की आज्ञा समझा दी थी और पहाडो और पक्षियो को दाऊद के अधीन कर दिया कि उनके साथ ईश्वर की पवित्रता बयान करें और करने वाले हम थे। (७९) और दाऊद को हमने तुम लोगो के लिए एक पहनाव यानी बख्तर बनाना सिखा दिया था ताकि लडाई मे तुमको बचाये, तो क्या तुम धन्यवाद करते हो ? (८०) और हमने जोर की हवा को सुलेमान तावे कर दिया था कि उनकी आज्ञा से देश शाम की ओर चलती थी जिसमे हमने बरकतें दे रखी थी और हम सब चीजो से जानकार थे। (८१) और कितने देवो को अधीन किया जो सुलेमान के लिए गोते लगाते ताकि जवाहरात निकाल लावे और हम ही उनकी थामे रहते थे। (८२) और ऐ पैगम्बर! ऐयूब जब उसने अपने पालनकर्ता को पुकारा कि मुझे दुख पडा है और तू सब दया करने वालो से ज्यादा दया करने वाला है। (८३) और हमने उसकी सुन ली और जो दुख उनका था उसको दूर कर दिया और जो मनुष्य उसके मर गये थे जिला दिये, बल्कि उतने ही और अधिक कर दिये, हमारी कृपा थी और पूजा करने वालो के लिये यादगार है। (८४) और इस्माईल और इद्रीस और जल किफ्ल यह सब साबिर थे। (८५) और हमने इनको अपनी कृपा मे ले लिया, क्योकि यह लोग अच्छो मे हैं। (८६) और मछली

वाले यूनिस* को याद करो जब नाराज होकर चल दिये और समझे कि हम उसे पकड़ न सकेंगे तो अँधेरों के अन्दर चिल्ला उठे कि तेरे सिवाय कोई पूजित नहीं, मैं अन्यायियो मे हूं। (८७) हमने उसकी सुन ली और उसको दुख से छुटकारा दिया और हम ईमान वालों को इसी तरह बचा लिया करते हैं। (८८) और जकरिया ने जब पालनकर्ता को पुकारा कि ऐ मेरे पालनकर्ता ! मुझको अकेला निस्संतान मत छोड और तू सब वारिसों से अच्छा है। (८९) तो हमने उसकी सुन ली और बेटा यहिया दिया और उसकी पत्नि को उसके लिए भला चगा कर दिया। यह लोग नेक कामों मे जल्दी करते थे और हमको आशा और भय से पुकारते रहते और हमसे दबे रहते थे। (९०) और वह पत्नि मरियम जिसने अपनी शर्म की यानी शिहवत की जगह की हिफाजत की, तो हमने उसमें अपनी रूह फुंक दी और हमने उसको और उसके बेटे ईसा को दुनिया जहान के मनुष्यो के लिए निशानी करार दिया। (९१) वह तुम्हारे दीन के लोग सब एक दीन पर हैं और मैं तुम्हारा पालनकर्ता हू, सो सब हमारी ही पूजा करो। (९२) और मनुष्यों ने आपस में फूट न करके दीन को टुकड़े-टुकड़े कर डाला, सब हमारी ही तरफ लौट कर आने वाले हैं। (९३) (रुकू ६)

सो जो आदमी नेक काम करे और वह ईमान भी रखता हो तो उसका प्रयत्न व्यर्थ होने वाला नही है और हम उसका लिखते जाते हैं। (९४) और जिस बस्ती को हमने नष्ट कर दिया हो यह ठीक नही कि वह मनुष्य लौट कर आवें। (९५) हाँ इतना जरूर ठहरना पड़ेगा

---

* हजरत यूनिस ने अपनी जाति से कहा था कि ईश्वर का गजब उतरने वाला है। जब उन्होंने ऐसा न देखा तो अपनी कौम से शरमिन्दा होकर भाग गये। रास्ते मे उनको एक मछली निगल गई। उसी के पेट में उन्होंने यह प्रार्थना।

कि याजूज-माजूज खोल दिये जावें, वह हर बुलन्द से लुढकते हुए चले आवेंगे। (९६) और सच्चा वादा पास आ पहुचे तो एकदम से काफिरो की आँखें खुली की खुली रह जावें और बोल उठे कि हम तो सुस्ती मे रह गये बल्कि हम ही अपराधी थे। (९७) तुम जिन और चीजो को अल्लाह के सिवाय पूजते हो, यह सब नरक का ईन्धन बनेंगे और तुमको नरक मे जाना होगा। (९८) अगर यह पूजित अल्लाह होते तो नरक मे न जाते और वह सब इसमे सदैव रहेंगे। (९९) इन मनुष्यो की नरक मे चिल्लाट लगी होगी वह वहाँ न सुन सकेंगे। (१००) जिन मनुष्यो के लिए हमारी तरफ से भलाई है वह नरक से दूर रखे जायेंगे। (१०१) उसकी भनक भी उसके कानो मे न पडेगी और वह अपनी मनमानी मुरादो मे हमेशा रहेगे। (१०२) और उनको प्रलय की बडी भारी घबराहट मे भी डर न होगा और देवदूत उनको हाथोहाथ लेंगे और कहेंगे कि यही तो तुम्हारा दिन है जिसका प्रण तुमसे कर दिया गया था. (१०३) जिस दिन हम आसामान को इस तरह लपेटेंगे जैसे तूमार मे कागज लपटते है, जिस तरह हमने पहले पैदाइश शुरू की हम उसे दुहरावेंगे, वादा हमारे जिम्मा है, हमें करना है। (१०४) और हम जबूर मे शिक्षा के बाद यह बात लिख चुके हैं कि हमारे नेक बन्दे पृथ्वी के वारिस होंगे। (१०५) जो मनुष्य पूजा करने वाले ईश्वर के हैं उनके लिए इसमे शिक्षा है। (१०६) और ऐ पैगम्बर ! हमने तुमको ससार के मनुष्यो पर कृपा करके भेजा है। (१०७) ऐ पैगम्बर ! कहो कि मुझको तो आज्ञा आई है कि अकेला ईश्वर ही तुम्हारा पूजित है तो क्या तुम आज्ञा पालन करते हो ? (१०८) पस अगर न मानें तो कहो कि मैंने तुमको एकसा तौर पर सदैव भेज दो और मैं नही जानता कि जिस दण्ड का तुमसे प्रण किया जाता है करीब आ लगी है या दूर। (१०९) वह खुली बात को जो मैंने जाहिरा कही जानता है और तुम्हारी छिपी हुई बातें भी जानता है। (११०) और मैं नही जानता, शायद ईश्वर को उसमें तुमको जाँचना है और एक समय तक बर्तने देना मँजूर है। (१११)

पैगम्बर ने बताया है कि मेरा पालनकर्ता ठीक निर्णय कर देगा और वह हमारा रहमान है जिससे हम उन बातो के मुकाबले मे जो तुम बताते हो सहायता माँगते हैं। (११२) (रुकू ७)

सूरे हज्ज

मक्के में अवतरित इसमें ७८ आयतें और १० रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु और दयावान है। लोगों ! अपने पालनकर्ता से डरो क्योकि प्रलय का भूचाल एक बड़ी चीज है। (१) जिस दिन यह तुम्हारे सामने आ मौजूद होगी हर दूध पिलानेवाली अपने दूध-पीते बच्चे को भूल जायगी और गर्भवती अपना गर्भ गिरा देगी और लोग नशे में दिखाई देंगे हालाँकि वह मतवाले नही। बल्कि ईश्वर का दण्ड बड़ा कठिन है। (२) और लोगो मे कुछ ऐसी भी हैं जो बेजाने ईश्वर के बारे मे झगड़ते और राक्षस के पीछे हो जाते हैं। (३) राक्षस के बारे मे लिखा है कि जो कोई उसका मित्र बने या जिस का वह मित्र बने उसे भटकाकर नरक की राह बतावेगा। (४) लोगो अगर तुमको जी उठने में संदेह है तो हमने तुमको मिट्टी से, फिर धातु से, फिर खूनके लोथड़े से, फिर पूरी और अधूरी बनी हुई बोटी से पैदा किया ताकि तुम पर जाहिर करें और पेट मे हम जिसको चाहते हैं नियत समय तक ठहराये रखते हैं। फिर तुमको बच्चा बनाकर निकालते हैं ताकि तुम अपनी जवानी को पहुचो। और कोई-कोई तुममे से मर जाता है और कोई सबसे ज्यादा निकम्मी उम्र की तरफ लौटा कर लाया जाता है कि जाने पीछे कुछ न समझने लगे और तू पृथ्वी को सूखी देखता है। फिर जब हम उस पर पानी बरसाते है तो वह लह-

लहाने और उभरने लगती है और भाति-भाति के खाने की चीजें उगने लगती हैं। (५) यह इस बात की अपनी शक्ति की दलील है कि अल्लाह सचमुच है और मरे हुए को जिलाता हैं और वह हर चीज पर शक्तिशाली है (६) और यह कि वह प्रलय की घडी अवश्य आनेवाली है उसमे किसी तरह का सदेह नही और जो लोग कब्रो मे हैं अल्लाह उनको उठायेगा। (७) और लोगो मे कोई ऐसे भी है कि जो अल्लाह के बारे मे बिना सूझ के रोशन पुस्तक के झगड़ा करते हैं। (८) घमड से ताकि ईश्वर की राह से बहकावें। ऐसो के लिए दण्ड सजा ससार मे बदनामी है और प्रलय के दिन हम उनको जलने का दण्ड मिलेगा (९) यह उनका बदला है कि जो तूने अपने हाथो किया वर्ना ईश्वर तो अपने मनुष्यो पर अन्याय नही करता। (१०) (रुकू १)

और लोगो मे कोई-कोई ऐसे भी हैं जो ईश्वर की पूजा उखडे-उखडे करते हैं कि अगर कोई उनको लाभ पहुंचा तो उसके कारण यकीन हो गया और कोई दु ख आ पडा तो जिधर से आया था उल्टा उधर ही लौट गया। इसने संसार और परलोक दोनो ही गवाये। निस्सदेह घाटा यही है। (११) ईश्वर के अलावा उन चीजो को बुलाते हो जो फायदा नही पहुंचाती। यही भूलकर दूर पड़ना है। (१२) उन चीजो को बुलाते हो अपनी सहायता के लिए पुकारते हो जिनके फायदे से हानि ज्यादा पास है। ऐसा काम संभालने वाला भी बुरा और ऐसा साथी भी बुरा है। (१३) जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये उनको अल्लाह बागो मे भेजेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होगी अल्लाह जो चाहे करे। (१४) जिनको यह विचार हो कि ईश्वर ससार और परलोक मे उसकी सहायता करेगा तो उसको चाहिए कि ऊपर की तरफ को एक रस्सी लटकावे, फिर काट डाले, फिर देखे कि उसकी यह तदबीर क्रोध खाती है या नहीं*। (१५) और यो हमने यह

* खुदा से हटकर आदमी सफलता की आशा कैसे रख सकता है। कटी हुई रस्सी पर कैसे चढ़कर कोई पार उतर सकता है।

कुरान खुली आयतों मे उतारा है और अल्लाह जिसे चाहे समझ देवे। (१६) जो लोग ईमान लाये हैं और यहूदी और सावी, ईसाई और मजूस अग्नि पूजक और शिर्क वाले प्रलय के दिन इनके बीच अल्लाह निर्णय कर देगा। अल्लाह सब बातो को देख रहा है। (१७) क्या तूने नही देखा कि जो आसमानो मे है और जो जमीन मे है और सूर्य चन्द्रमा और नक्षत्र, सितारे और पहाड़ और पेड़ और चौपाये ईश्वर के आगे सिर झुकाये हैं और बहुत से आदमी ऐसे भी है जिनका दण्ड दिया जा चुका है और जिसको ईश्वर बदनाम करे तो कोई उसको भलाई देनेवाला नही। ईश्वर जो चाहे सो करे। (१८) यह दो गुट हैं एक दूसरे के आपस मे विरुद्ध अपने पालनकर्ता के बारे मे झगडते हैं। एक गुट ईश्वर को मानता है और एक नही मानता तो जो लोग नही मानते उनके लिए आग के कपड़े ब्योते यानी आग उनके बदन से ऐसा लिपटेगी जैसे कपड़ा है। उनके सिरो पर गर्म पानी डाला जायगा (१९) जिससे जो कुछ उनके पेट मे है और खालें गल जायेगी। (२०) और उनके लिए लोहे के हथौडे मौजूद हैं। (२१) घुटे-घुटे जब उससे निकलना चाहेगे तो उसी मे फिर ढकेल दिये जायेंगे ताकि जलने का दण्ड मिलता रहे। (२२) (रुकू २)

जो लोग विश्वास लाये और उन्होने अच्छे काम किये उनको अल्लाह बागो मे भेजेगा जिनके नीचे नहरे बह रही होगी। वहा उनको गहना पहनाया जायगा। सोने ककन और मोती और वहाँ उनको कपडे रेशमी होगे। (२३) और उनको अच्छी बात की शिक्षा दी गई थी और उनको उसी ईश्वर की राह दिखाई गई थी जो प्रशंसा के योग्य है (२४) जो लोग मना करते है और ईश्वर की राह से और मस्जिद हराम मे रोकते हैं जिसको हमने सब आदमियो लिए बनाया है, चाहे वहाँ के रहने वाले हो, सबको एकसी बनी है। और उनको जो मसजिद हराम मे शरारत से इन्कार करना चाहे हम उसे दुखदाई दण्ड देंगे। (२५) (रुकू ३)

और ऐ पैगम्बर ! जब हमने इब्राहीम के लिए काबे के घर की जगह तै कर दी और आज्ञा दी कि हमारे साथ किसी को न मिलना और हमारे घर की परिक्रमा करने वालो और ठहरने, खड़े होने, नत-मस्तक होने के लिए साफ और सुथरा रखना। (२६) और लोगो मे हज्ज के लिए पुकार दो कि लोग तुम्हारी तरफ और हरलागर ऊटो पर सवार होकर दूरी की राह से चले आवें। (२७) अपने लाभ के लिए आए खुदा ने जो जानवर उनको दिये हैं खास दिनो मे उन पर ईश्वर का नाम लें। उसमे से खाओ और दुखिया फकीर को खिलाओ (२८) फिर चाहिए कि अपना मैल-कुचैल उतार दें और अपनी मन्नते, पूरी करें, पुराने काबे की परिक्रमा करें। (२९) यह सुन चुके और जो आदमी ईश्वर के अदब की वढाई रखे तो यह उसके पालनकर्ता के यहाँ उसके प्रति अच्छा है और जो तुमको कुरान से पढकर सुनाया जाता है वह सब चौपाये तुमको हलाल हैं और मूर्ती की गन्दगी से वचते रहो और झूठी बात के कहने से बचते रहो। (३०) एक अल्लाह के हो रहो, उसके साथी साझी न ठहराओ और जो ईश्वर का साक्षी बनावे गोया वह आकाश से गिर पडा। फिर उसको पक्षियो ने उचक लिया या उसको हवा ने किसी और जगह पटक दिया। (३१) यह बात है और जो मनुष्य उन चीजो का अदब-लिहाज रखे जो ईश्वर के नाम रखी गई हैं तो यह दिलो की परहेजगारी है। (३२) तुमको चौपायो मे खास समय तक लाभ है फिर पुराने खाने के पास उनका पहुचा देना है। (३३) (रुकू ४)

हर एक गिरोह के लिए हमने कुरवानी ठहरा दी है ताकि ईश्वर ने जो उनको मवेशी दे रखे हैं उन पर ईश्वर का नाम लेवे। सो तुम सब का एक ईश्वर है, तो उसी के आज्ञाकारी वनो और गिडगिडाने वाले मनुष्यो को खुशखबरी सुना दो। (३४) जब ईश्वर का नाम लिया जाता है उनके दिल काँप उठते हैं और जो दुख उन पर आ पड़े उस पर सतोष करते और नमाज पढते और जो हमने उनको दे रखा है

उसमे से खर्च करते हैं। (३५) और हमने तुम्हारे लिए कुरबानी के ऊँटो को उन चीजों में कर दिया है जो ईश्वर के साथ नामजद की जाती है उनमें तुम्हारे लिए लाभ हैं तो उनका खड़ा रखकर उन पर ईश्वर का नाम लो * फिर जब वह किसी पहलू पर गिर पडे तो उनमे से खाओ संतोष वालों और भिखारियो को खिलाओ। हमने यो तुम्हारे वस मे इन पशुओं को कर दिया है ताकि तुम धन्यवाद दो। (३६) ईश्वर तक न तो इनके माँस ही पहुचते हैं और न इनके खून** बल्कि उस तक तुम्हारी संयम ही पहुचाता है। ईश्वर ने इनको यो तुम्हारे काबू में कर दिया है ताकि उसने जो तुमको राह दिखा दी है तो इसके बदले मे उसकी बड़ाइयाँ करो। (३७) ईश्वर धर्म वालो से उनके पाप हटाता रहता है बेशक अल्लाह किसी धोखेबाज कृतघ्नी को पसंद नही करता। (३८) (रुकू ५)

जिससे काफिर लड़ते हैं उनको भी उन काफिरो से लडने की छूट है इसलिए कि उन पर अत्याचार हो रहा है और अल्लाह उनकी सहायता करने पर शक्तिशाली है। (३६) यह वह हैं जो इस बात के कहने पर कि हमारा पालनकर्ता अल्लाह है नाहक अपने घरो से निकाल दिये गये और अगर अल्लाह एक दूसरे से न हटाया करता तो ईसाइयों की पूजा की जगहो और गिरजाओ और यहूदियो की पूजा जगहो और मुसलानों की मसजिदें, जिनमे अधिकता से ईश्वर का नाम

---

* ऊंट के हलाल करने का तरीका यह है कि उसको काबे की ओर खड़ा करते हैं फिर उसकी छाती पर भाला मारते हैं ताकि उसका सारा खून निकल जाय और जब वह गिर पड़ता तो काटते है।

**पहले कुरवानी का खून काबे की दीवारों पर छिड़कते थे। मुसलमानो को ऐसा करने से रोका गया और बतलाया गया कि ईश्वर तक केवल संयम ही पहुंचता है।

लिया जाता है, कभी के ढाये जा चुके होते। और जो अल्लाह की सहायता करेगा। अल्लाह बड़ा शक्तिशाली है। (४०) यह मनुष्य अगर इनके पाँव जमीन मे जमा दें तो नमाजे पढ़ेंगे। और दान देंगे और अच्छे काम के लिए कहेंगे और बुरे कामो से मना करेंगे और सब चीजो का अन्त तो ईश्वर ही के हाथ हैं (४१) और ऐ पैगम्बर ! अगर तुमको झुठलाएँ तो इनसे पहले नूह के गिरोह के मनुष्य और आद और समूद के द्वारा झुठलाये जा चुके हैं। (४२) और इब्राहीम की जाति और लूत की जाति। (४३) और मदीअन के रहने वाले अपने-अपने पैगम्बरो को झुठला कुके हैं और मूसा झुठलाये जा चुके है। तो हमने काफिरो का समय दिया फिर उनको धर पकडा सो हमारी नारजगी कैसी थी। (४४) वहुत बस्तियाँ जो अत्याचारी थी हमने उनको मार डाला, बस अपनी छतो पर गिर पड़ी हैं। (४५) क्या यह मनुष्य देश मे चले फिरे नही जो इनके ऐसे दिल होते कि उनके द्वारा समझते और ऐसे कान होते कि उनके द्वारा सुनते। बात यह है कि कुछ आँखें अन्धी नही हुआ करती परन्तु दिल जो छाती मे है वह अन्धे हो जाया करते हैं। (४६) और ऐ पैगम्बर ! तुमसे दण्ड की जल्दी मचा रहे हैं और ईश्वर तो कभी अपना प्रण झूठा करने का नही और सदेह नही कि तुम्हारे पालनकर्ता के यहा तुम लोगो की गिनती के अनुसार हजार वर्ष के बराबर एक दिन है। (४७) और वहुत सी बस्तियाँ जिनको हमने ढील दिया फिर उनको पकड़ा और हमारी तरफ लौटकर आना है। (४८) (रुकू ६)

ऐ पैगम्बर ! कहो कि मैं तुमको प्रत्यक्ष दण्ड से डराने वाला हू। (४९) फिर जो लोग विश्वास लाये और उन्होने नेक काम किये उनके लिए इज्जत की रोजी है। (५०) और जो लोग हमारी आयतो को हराने के लिए दौडते हैं वही नरकवासी हैं। (५१) और ऐ पैगम्बर हमने तुमसे पहले कोई ऐसे पैगम्बर नही भेजा और कोई ऐसा नबी की उसको यह मामला पेश न आया हो कि जब वह ख्याल बाँधने लगा

राक्षस ने उनके विचार मे कुछ न कुछ डाल दिया है *। फिर ईश्वर ने राक्षस के बुरे विचार को दूर और अपनी आयतो को कठोर कर दिया और अल्लाह चमत्कारी है सब खबर रखता हैं। (५२) इसलिए कि उस राक्षस के मिलाये से उन लोगो को जाचे जिनके दिलों मे बुरे विचार की बीमारी है और उनके दिल कठोर है और अपराधी तो खिलाफी मे दूर पड़े हैं। (५३) और यह इस लिए कि जिन लोगो को विद्या दी गयी है वह जान लें कि वह तेरे पालन कर्ता से सच है, फिर वह उस पर विश्वास लाये और उनके दिल उसके आगे दबे और जो विश्वास लाये हैं ईश्वर उनको सीधी राह दिखलाता है। (५४) और जो लोग मना करने वाले है वह तो हमेशा इस कुरान की तरफ सदेह ही में रहेंगे, यहाँ तक कि प्रलय अचानक उन पर आ पहुचे या बुरे दिन का दण्ड उन पर उतरे। (५५) राज्य उस दिन ईश्वर का होगा। वह लोगो में निर्णय कर देगा तो जो लोग विश्वास लाये और उन्होने अच्छे काम किये वह आराम के बागो मे होगे। (५६) और जो मना करते और हमारी आयतो को झुठलाते रहे तो यही है जिनको वदनामी का दण्ड होगा। (५७) (रुकू ७)

और जिन लोगो ने ईश्वर की राह मे घर छोड़े फिरे मारे गये या मर गये उनको जरूर अच्छी रोजी देगा और ईश्वर ही सबसे अच्छी रोजी देने वाला है। (५८) वह उनको ऐसी जगह पहुचावेगा जैसी वह चाहेंगे और अल्लाह जानकार है। (५९) यह सुन चुके और जिस आदमी ने उतना सताया जितना कि यह मनुष्य सताया गया है, फिर उस पर अधिकता हुई तो इसको ईश्वर अवश्य सहायता करेगा। ईश्वर

---

* कहा जाता है कि एक वार मुहम्मद साहव ने कुछ आयतें पढ़ीं तो राक्षस ने उनकी ही आवाज मे मूर्ति की तारीफ भी मिला दी। इस पर मुशरिक व 'त खुश हुए लेकिन रसूल को यह सुन कर वड़ा दुख हुआ।

क्षमा करनेवाला छोड देनेवाला है। (६०) यह इस कारण से है कि अल्लाह रात को दिन मे दाखिल करता है और दिन को रात मे। अल्लाह सुनता, देखता है। (६१) यह इस कारण से है कि अल्लाह ही सचमुच है और जिनको इन्कारी ईश्वर के अलावा पुकारते हैं वह झूठे हैं और इस कारण से अल्लाह ही बहुत बडा है। (६२) क्या तूने नही देखा कि अल्लाह आकाश से पानी बरसाता है फिर जमीन हरी हो जाती है नि सन्देह अल्लाह छिपी चीजें जानता है। (६३) उसी का है जो कुछ आकाश और पृथ्वी मे है। अल्लाह बेपरवाह और बडाई के योग्य है। (६४) (रुकू ८)

क्या तूने नही देखा कि अल्लाह ने इन चीजो को जो जमीन मे हैं तुम लोगो के बस में दिया है और नाव उसकी आज्ञा से नदी मे चलती है और आकाश पृथ्वी पर गिरने से थमा है मगर उसकी आज्ञा से कुछ सदेह नही कि अल्लाह आदमियो पर बडी दयालुता और प्रेम रखता है। (६५) और वही है जिसने तुममे जान डालीं। फिर तुमको मारता है। फिर जिलावेगा। नि सन्देह मनुष्य बडा कृतघ्नी है। (६६) ऐ पैगम्बर ! हमने हर गुट के लिये पूजा के उपाय बताए कि वह उन पर चलते हैं, तो इन लोगो को चाहिए कि तुझसे इस काम मे झगडा न करें और तुम अपने पालनकर्ता की तरफ बुलाये चले जाओ। नि सदेह तुम सीधी राह पर हो (६७) और अगर तुमसे झगड़ा करें तो कह दो कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे खूब जानता है। (६८) जिन बातो मे तुम आपस मे भेद डालते हो अल्लाह प्रलय के दिन झगडो का निर्णय कर देगा। (६९) क्या तुम नही जानते कि जो कुछ आकाश और पृथ्वी मे है अल्लाह उसे जानता है, यह किताब मे लिखा हुआ है, यह अल्लाह पर आसान है। (७०) और ईश्वर के अलावा उन चीजो की करते हैं जिनके लिए न तो ईश्वर ने कोई प्रमाण उतारा और न इनके पास कोई इसकी अकली दलील है और अन्यायियो का कोई सहायक न होगा। (७१) और ऐ पैगम्बर ! जब उनको हमारी खुली-खुली आयतें

पढकर सुनाई जाती हैं तो तुम काफिरो के चेहरो मे अप्रसन्नता देखते हो, करीव है कि यह लोग कुरान सुनानेवालो पर हमला कर वैठे। ऐ पैगम्बर ! कहो कि इससे वुरी और एक चीज सुनाऊँ। वह नरक है जिसका प्रण खुदा अविश्वासियो से करना है, वुरा ठिकाना है। (७२) (रुकू ६)

लोगो ! एक उदाहरण दिया है तो उनको कान लगाकर सुनो कि ईश्वर के वजाय जिनको तुम पुकारते हो एक मक्खी भी नही पैदा कर सकते, यदि उसके पैदा करने के लिए सवके सव इकट्ठे क्यो न हो जावें। और अगर मक्खी इनसे कुछ छीन ले जावे तो उसको उससे नही छुडा सकते। कैसे वादे यह वुत जो पीछा करें और उसको न पकड सके (७३) और कैसी वादी वह मक्खी* जिसका पीछा किया जाय और फिर हाथ न आवे। इन लोगो ने ईश्वर की जैसी कदर जानना चाहिए थी नही जानी और अल्लाह तो वडा ज़वर-दस्त और जीतनेवाला है। (७४) अल्लाह देवताओ मे से और आदमियो मे से ईश्वरीय संदेशा पहुंचाने के लिए चुन लेता है। अल्लाह सुनता-देखता है। (७५) वह उनके अगली और पिछली वातो को जानता है और सव कामों की पहुंच अल्लाह ही पर है। (७६) ऐ ईमानवालो ! रुकू करो और जिसदा करो और अपने पालनकर्ता की पूजा करो और भलाई करते रहो। (७७) और अल्लाह की राह मे प्रयत्न करो जैसा कि उसमे प्रयत्न करने का हक़ है। उसने तुमको चुन लिया और दीन मे किसी तरह की कठोरता नहीं की दीन तुम्हारे वाप इब्राहीम का था। उसी ने तुम्हारा नाम पहले से मुसलमान रखा और इसमे भी ताकि पैगम्वर तुम्हारे मुक़ाविले मे गवाह हो और तुम दूसरे लोगों के मुकाविले मे गवाह हो। तो नमाज़ें पढो और जकात दो और अल्लाह ही का सहारा पकड़ो, वही तुम्हारे काम का सँभालनेवाला है खुद मालिक है, और खूव ससायक है। (७८) (रुकू)

*कहते हैं कि काफिर वुतों पर शहद चढ़ाते थे और जव मक्खियां उसको चाट जात तो खुश होतीं। सो यहां वताया है कि मूर्तियां तो ऐसी

अठारहवाँ पारा (कद अफ्लहल मोमिनून)

सूरे मोमिनून

मक्के में अवतरित इसमें ११८ आयतें और ६ रुकू हैं

अल्लाह के नाम पर जो कृपालु तथा दयावान है। विश्वास वाले मुराद को पहुच गये। (१) वह जो अपनी नमाज मे नत हैं, (२) और वह जो निकम्मी बात पर ध्यान नही करते, (३) और वह जो जकात दिया करते हैं, (४) और वह जो अपनी शिहवत की जगहो की रक्षा करते हैं, (५) मगर अपनी बीवियो और स्त्रियो के बारे मे इल्जाम नही है। (६) फिर जो कोई उसके अलावा ढूँढ़े तो यही लोग हद्द से बाहर निकले हुए मर्यादा-भ्रष्ट हैं। (७) और वह जो अपनी अमानतो और प्रतिज्ञा को विचार मे रखते हैं, (८) और जो अपनी नमाज़ो के पक्के हैं, (९) यही लोग वारिस है। (१०) जो स्वर्ग के वारिस होगे वही उसमे हमेशा रहेंगे। (११) और हमने आदमी को सनी मिट्टी से बनाया है। (१२) फिर हमने उसको ठहरने वाली जगह पर वीर्य्य बनाकर रखा। (१३) फिर हमने वीर्य्य से लोथडा बनाया। फिर हड्डियो पर माँस मढा। फिर उसको एक नई सूरत मे बना खडा किया। सो अल्लाह की देन है जो सबसे अच्छा बनानेवाला हैं। (१४) फिर इसके बाद तुमको मरना है। (१५) फिर प्रलय के दिन तुम उठा खडे किये जाओगे। (१६) और हमने तुम्हारे ऊपर सात आसमाने बनाये और पैदा करने मे हम अनाडी न थे। (१७) और हमने नापकर आकाश से पानी बरसाया, फिर उसको पृथ्वी मे ठहरा दिया और हम उस पानी को ले जा सकते हैं। (१८) फिर हमने उस पानी से तुम्हारे

दुर्बल और हीन है कि अपना खाना तक मक्खियो से नहीं छीन सकतीं। वह दूसरो की क्या सहायता करेंगे।

लिए खजूरों और अंगूरों के बाग उगा दिये। तुम्हारे लिए उसमें बहुत से फल है और उनमे से ही तुम खाते हो। (१९) और सैना पहाड पर हमने एक पेड जैतून पैदा किया हैं जिससे तेल निकलता है। और रोटी डुबाने का रसा निकलता है। (२०) और तुमको चौपायो मे ध्यान करना हैं कि जो उनके पेटो मे है उसी से हम तुमको दूध पिलाते हैं और तुमको उनमे बहुत आराम हैं और उनमें तुम किन्ही-किन्ही को खाते हो। (२१) और उन पर नावो पर चढे फिरते हो। (२२) (रुकू १)

और हमने नूह को उनकी जाति की तरफ भेजा तो उसने कहा कि भाइयो! अल्लाह की पूजा करो, उसके सिवाय तुम्हारा कोई पूजित नही, तो क्या तुमको डर नही लगता? (२३) इस पर उनकी जाति के सरदार जो इन्कारी थे कहने लगे वह भी एक आदमी है जो तुमसे बडा बनना चाहता है और अगर ईश्वर को पैगम्बर ही भेजना मंजूर होता तो फरिश्तों को उतारता, हमने तो ऐसी बात अपने अगले बाप-दादा से नही सुनी। (२४) हो न हो यह एक आदमी है जिसको घमण्ड हो गया है सो एक खास समय तक उसकी राह देखो। (२५) नुह ने प्रार्थना की कि ऐ मेरे पालनकर्ता! जैसा इन्होने मुझे झुठलाया है, तू ही मेरी सहायता कर। (२६) इस पर हमने नुह को आज्ञा दी कि हमारी आँखो के सामने और हमारी आज्ञा से एक नाव बनाओ। फिर जब हमारी आज्ञा आवे और जमीन से पानी उबलने लगे तो नाव मे हरएक जीवधारी मे से नर और मादा दो-दो का जोडा और अपने घर वालों को बैठा लो, मगर उनमें से नुह की स्त्री और पुत्र के लिए आज्ञा हो चुकी है और अन्यायियो के बारे मे मुझसे न बोल। वह डुबेगे। (२७) फिर जब तुम और तुम्हारे साथी नाव मे बैठ जाओ तो कहो कि ईश्वर का धन्यवाद है, जिसने हमको अत्याचारी मनुष्यो से छुटकारा दिया। (२८) और कहा कि ऐ पालनकर्ता! मुझको बरकत का उतारना उतार और तू सब उतारने वालो से अच्छा है। (२९)

इसमे प्रमाण हैं और हम जाँचने वाले हैं। (३०) फिर हमने उनके बाद एक और गुट उठाया। (३१) और उन्ही मे से सालेह को पैगम्बर बनाकर भेजा कि ईश्वर की पूजा करो, उसके सिवाय तुम्हारा कोई पूजित नही, तो क्या तुमको डर नही लगता। (३२) (रुकू २)

और उसकी जाति के सरदार जो इन्कारी थे और प्रलय के आने को झुठलाते थे और ससार के जीवन मे हमने उनको आराम दिया था कहने लगे कि यह सालेह तुम्ही जैसा आदमी है जो तुम खाते हो यह भी खाता है और जो पानी तुम पीते हो यह भी पीता है। (३३) और अगर तुम अपने जैसे आदमी के कहने पर चलो तो तुम निस्सन्देह खराब होगे। (३४) यह मनुष्य तुमसे कहता है कि जब तुम मर जाओगे और मिट्टी और तुम्हारी हड्डियाँ रह जावेंगी तो तुम दुबारा उठाये जाओगे। (३५) जो तुम्हें प्रण किया जाता है नही हो सकता, नही हो सकता। (३६) और कुछ नही यह हमारे ससार का जीना है। हम जीते और मरते हैं और हम उठाये न जावेंगे। (३७) हो न हो यह सालेह ऐसा आदमी है जिसने ईश्वर पर झूठ बाँधा है और हम तो इसका विश्वास नही करते। (३८) सालेह ने कहा ऐ मेरे पालन-कर्ता ! मेरी सहायता कर, इन्होने मुझे झुठलाया है। (३९) ईश्वर ने कहा थोडे दिनो बाद पछतायेंगे। (४०) यद्यपि सच के अनुसार उनको चिघार ने आ पकडा और हमने उनको कूडा कर दिया कुचल दिया ताकि अन्यायी लोग दूर हो जावें। (४१) फिर उनके बाद हमने और गिरोह उठाया। (४२) कोई सगत अपने समय से न आगे बढ़ सकती न पीछे रह सकती है। (४३) फिर हम लगातार अपने पैगम्बर भेजते रहे। जब किसी गिरोह का पैगम्बर उनके पास आता तो उसे झुठलाया करते थे, तो हम भी एक के पीछे एक को हलाक करते गये और हमने उनकी कथाए बना दी। तो जो लोग नही मानते दूर हो जावें। (४४) फिर हमने मूसा और उनके भाई हारून को अपने निशा-नियाँ और खुले प्रमाण देकर भेजा। (४५) फिरऔन और उसके

दरबारियों की तरफ भेजा तो वह ाह घमण्ड में आ गये और वह चढ रहे थे। (४६) कहते क्या हम अपने जैसे दो आदमियो को मानने लगे हालाँकि उनकी जाति हमारी सेवा में है। (४७) इन लोगो ने मूसा और हारू दोनो को भुठालाया तो यह मार डाले गये। (४८) और हमने मूसा को किताब दी ताकि मनुष्य शिक्षा पावें। (४९) और* हमने मरियम के बेटे ईसा और उनकी माँ को निशानी बनाया और उन दोनो को ऊची जगह पर जहाँ पड़ाव सोता पा ठहराव दिया। (५०) (रुकू ३)

ऐ पैगम्बर! सुथरी चीजें खाओ और भले काम करो। जैसे काम तुम करते हो मै जानता हू। (५१) और यह सब एक धर्म पर थे और मैं तुम्हारा पालनकर्ता हू, मुझसे डरते रहो। (५२) फिर लोगो ने आपस मे फुट करके अपना धर्म अलग-अलग कर लिया। जो जिस गुट के पास है वह उससे रीझ रहा है। (५३) तो ऐ पैगम्बर! तुम एक समय तक इनको इनकी भूल मे रहने दो। (५४) क्या ऐसे लोग विचार करते हैं जो हम धन और सन्तान इनको दिए जा रहे हैं। (५५) इनको लाभ पहुचाने मे हम जल्दी कर रहे हैं, बल्कि यह समझते नही। (५६) जो लोग अपने पालनकर्ता से डरते हैं (५७) और जो अपमे पालनकर्ता की आयतो को मानते हैं (५८) और जो अपने पालनकर्ता के साथ शरीक नही ठहराते (५९) और जितना कुछ देते बनता है ईश्वर की राह मे देते हैं और उनके दिलो को इस बात का खटका लगा रहता कि उनको अपने पालनकर्ता की ओर लौटकर जाना है। (६०) यही मनुष्य नेक कामो से जल्दी करते हैं और उनके लिए लपकते हैं (६१) और हम किसी आदमी की ताकत से बढकर बोझ

* ईसा ने जन्म लेते ही बातचीत की "यह उनका चमत्कार था" जैसे उनकी माँ ने किसी पुरुष से मिले बिना ईसा-जैसा महान पुत्र जना यह उनका चमत्कार था।

नही डालते और हमारे यहाँ मनुष्यो के काम का रजिस्टर है जो ठीक हाल बताता है और उन पर अन्याय न होगा। (६२) लेकिन इनके दिल इस बात से भूले हैं और इन कामों के सिवाय और कामो मे लगे हैं। (६३) यहाँ तक कि जब हम इनमे से धनवान मनुष्यों को दण्ड मे धर पकड़ेंगे तो वह मनुष्य चिल्ला उठेंगे। (६४) मत चिल्लाओ आज के दिन तुम हमसे सहायता न पाओगे। (६५) कुरान मे से हमारी आयतें तुमको पढकर सुनाई जाती थी और तुम उलटे भागते थे। (६६) तुम कुरान से अकड़ते हुए उद्दण्डता करते थे। (६७) क्या इन मनुष्यो ने कुरान मे ध्यान नही दिया था। इनके पास एक बात आई जो इनके अगले पिता-दादो के पास नही आई थी। (६८) क्या यह मनुष्य अपने पैगम्बर से जानकार नही थे और उसे ऊपरी समझते हैं? (६९) क्या यह कहते हैं कि इनको जनून है बल्कि रसूल इनको सच बात लेकर आया है और इनमे से बहुतो को सच बात बुरी लगती है। (७०) और अगर सच्चा ईश्वर उनकी खुशी पर चलता तो आसमान और जमीन और जो कुछ उनके बीच मे है खराब हो गया होता, बल्कि हमने इनको इन्ही की शिक्षायें लाकर सुनाई सो वे अपनी शिक्षाओ पर ध्यान नही देते। (७१) क्या ऐ पैगम्बर! तुम इनसे कुछ मजदूरी मांगते हो तो तुम्हारे पालनकर्ता की देन भली है और वह रोजी देने वाला बेहतर है। (७२) और ऐ पैगम्बर! तू इनको सीधी राह पर बुलाता है। (७३) और जिन मनुष्यो को प्रलय का विश्वास नही है वही रास्ते से हटे हुए हैं। (७४) और यदि हम इन पर रहम कर जावें और जो कष्ट इनको पहुचता है दूर कर दें तो भटके हुए अपनी गुमा-राही मे हमेशा पडे रहेंगे। (७५) और हमने इनको दण्ड मे फांसी तो भी यह मनुष्य अपने पालनकर्ता के आगे न झुके और न आजिजी नम्रता की। (७६) यहाँ तक कि जब हम इन पर कठोर दण्ड का दरवाजा खोल देंगे तब उसमे उनकी आस टूटेगी। (७७) (रुकू ४)

और उसी ने तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बना दिये

अगर तुम बहुत ही कम कृपा मानते हो। (७८) और उसी ने तुमको ज़मीन पर फैला रखा है और तुमको इकट्ठा होना है। (७९) और वही जिलाता और मारता है और रात दिन का बदलना भी उसी का काम तो क्या तुम नहीं समझते। (८०) जो बात अगले* कहते चले आते हैं वैसा ही यह भी कहते हैं। (८१) कहते हैं कि क्या हम जब मर जावेंगे और हड्डियाँ बाकी रह जावेंगी तब क्या हम दोबारा जीवित करके उठा खड़े किये जावेंगे? (८२) हमको और हमारे बड़ों को इसका वादा पहले भी मिल चुका है, हो न हो यह अगले मनुष्यों के ढकोसले हैं। (८३) ऐ पैगम्बर! पूछो कि यदि तुम समझते हो तो बताओ कि पृथ्वी और जो कुछ उसमें है किसके हैं। (८४) कहेंगे कि अल्लाह् के उनसे कहो कि फिर क्यों नहीं ध्यान देते? (८५) ऐ पैगम्बर इनसे पूछो कि सात आसमानों का स्वामी और उस बड़े सिंहासन का स्वामी कौन है? (८६) अब बतावेंगे कि अल्लाह्। कहो फिर तुम क्यों नहीं डरते? (८७) ऐ पैगम्बर! उन मनुष्यों से पूछो कि यदि जानते हो तो बताओ कि हर चीज पर वस्तु पर अधिकार किसका है और कौन है, जो बचाता है? और उससे कोई बचा नहीं सकता। (८८) अब बतावेंगे अल्लाह् को। कहो तो फिर कहाँ से जादू पड़ जाता है? (८९) सच यह है कि हमने सच-सच बात इनको पहुंचा दी है और बेशक यह झूठे हैं। (९०) अल्लाह् ने किसी को पुत्र नहीं बनाया और न उसके साथ कोई और ईश्वर है। यदि ऐसा होता तो हर ईश्वर अपने बनाये को लिए फिरता और एक दूसरे पर चढ जाता। जैसी-जैसी बातें यह मनुष्य बयान करते हैं वह उनसे निराला है। (९१) जाहिरा और छिपी बात का जानने वाला उनसे बहुत ऊपर है और ये शरीक बताते हैं। (९२) (रुकू ५)

---

* अगले लोग भी कहते थे कि मरने के बाद कोई न जिन्दा आवेगा।

ऐ पैगम्बर ! तुम यह माँगो कि ऐ मेरे पालनकर्ता ! जिस दण्ड का वादा इनसे किया गया है यदि तू मुझे भी दिखा दे। (९३) तो ऐ मेरे पालनकर्ता ! जालिम मनुष्यो मे मुझे न शामिल कर लेना। (९४) और ऐ पैगम्बर ! हमको सामर्थ्य है कि जिस दण्ड का वादा इन काफिरों से कर रहे हैं। (९५) तुमको दिखा दें। जो कुछ यह कहते हैं हम खूब जानकार हैं। (९६) और दुआ करो ऐ पालनकर्ता ! मैं शैतान की छेड़ से तेरी शरण चाहता हूं। इससे कि शैतान मेरे पास आवे। (९८) और यहाँ तक कि जब इनमे से किसी की मौत आती है कहता है कि ऐ मेरे पालनकर्ता ! मुझे फिर ससार में भेज। (९९) ताकि जिसे मैं छोड आया हूं उसमे फिर जाकर भले काम करूं यह एक बात है जिसे वह कहता है उनके पीछे अटकाव है जब तक कि मुर्दों मे से उठाये जायें। (१००) फिर जब नरसिंहा सूर फूंका जायगा तो उस दिन मनुष्यों मे न तो रिश्तेदारियाँ बाकी रहेंगी और न एक दूसरे की बात पूछेंगे। (१०१) फिर जिनका पल्ला भारी निकलेगा तो यही मनुष्य मुराद पावेंगे। (१०२) और फिर जिनका पल्ला हल्का होगा तो वही मनुष्य हैं जो अपनी जानें हार गये और सदैव नरक में रहेंगे। (१०३) आग उसके मुहो को झुलसाती होगी और वह वहां बुरे मुंह बनाये होगे। (१०४) क्या हमारी आयतें तुमको पढ-पढकर नही सुनाई जाती थी और तुम उनको झुठलाते थे। (१०५) वह कहेंगे ऐ हमारे पालनकर्ता ! हमको हमारी कमबख्ती ने आ दबाया और हम भटके हुए थे। (१०६) ऐ हमारे पालनकर्ता ! हमको इस आग से निकाल और यदि हम फिर ऐसा करें तो निस्सदेह अपराधी होगे। (१०७) ईश्वर कहेगा दूर हो, इसी आग मे रहो और हमसे बात न करो। (१०८) हमारे सेवको मे एक गिरोह ऐसा भी था जो कहा करता था कि ऐ मेरे पालनकर्ता हम ईमान लाये, तू हमारे अपराध क्षमा कर और तू दयावानो मे भला है। (१०९) फिर तुमने उनकी हंसी उडाई, यहाँ तक कि उन्होने तुमको हमारी याद भुला दो और तुम उनसे हसी ठट्ठा करते रहे। (११०) आज हमने उनको सन्तोष का

बदला दिया, वही मुराद पावेंगे। (१११) फिर ईश्वर नरक वालों से पूछेगा कि तुम जमीन पर गिनती के कितने वर्ष रहे ? (११२) वह कहेंगे कि एक दिन या दिन से भी कम रहे होंगे। गिनने वालो से पूछ देख। (११३) बताया जायेगा तुम उसमें बहुत नहीं थोड़े ही रहे होंगे, यदि तुम जानते होते। (११४) क्या तुम विचार करते हो कि हमने तुमको बेकार पैदा किया है और यह कि तुमको हामारी तरफ फिर लौटकर आना नही है। (११५) सो ईश्वर सच्चा बादा बहुत ऊंचा है, उसके सिवाय कोई पूजित नहीं। वही बड़े सिंहासन का स्वामी है। (११६) और जो मनुष्य ईश्वर के सिवाय किसी को बुलाता है उसके पास इस की कोई प्रमाण नही। तो बस उसके पालनकर्ता के ही यहाँ उसका हिसाब होना है। निस्संदेह इन्कारी मनुष्यों का भला न होगा। (११७) और तुम प्रार्थना करो कि ऐ मेरे पालनकर्ता ! क्षमा कर और कृपा कर और तू अन्य कृपा करने वालों से भला है (११८) (रुकू ६)



सूरे नूर

मदीने में अवतरित हुई, इसमें ६४ आयतें, ६ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु और दयावान है। एक सूरत है जिसको हमने उतारा और यह/हमारा ही बांधा हुआ है और हमने इसमें खुले-खुले आज्ञा उतारे ताकि तुम याद रखो। (१) मर्द और औरत छिनाला करें तो दोनो मे से हर एक को १०० कोड़े मारो और यदि अल्लाह का और आखिर दिन को विश्वास रखते हो तो अल्लाह

की आज्ञा की तामील मे तुमको उन पर तरस न आना चाहिए और मुसलमानो को चाहिए कि जब उन पर मार पडे तो देखने आवें*। (२) व्यभिचारी आदमी व्यभिचारिणी से विवाह करेगा और शिर्क वाली औरत शिर्कवाले मर्द से विवाह करेगी और यह बात धर्मवालों के लिए हराम है। (३) और जो लोग पवित्र औरतो पर लफट लगायें और चार गवाही न ला सकें तो उनके अस्सी चाबुक मारो और कभी उनकी साक्षी कबूल न करो और ये लोग अनाचार हैं। (४) मगर जिन्होने ऐसा किए पीछे क्षमा की और अपनी आदत ठीक कर ली तो अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है। (५) और जो लोग अपनी स्त्रियो पर छिनाले का लफट लगायें और उनके पास सिवाय उनकी जानो के और गवाह न हो तो उनमे से एक की गवाही चार दफे ले लेना चाहिए कि वह सच्चों मे हैं। (६) और पाचवें दफे यो कहे कि वह अगर झूठ बोलता हो तो उस पर अल्लाह की फटकार पडे। (७) और औरत से इस तरह पर दण्ड टल सकता है कि वह चार बार ईश्वर की कसम खाकर बयान करे कि यह आदमी बिल्कुल झूठा है। (८) और पाचवें बार यो कहे कि अगर यह आदमी अपने प्रण मे सच्चा है तो मुझ पर ईश्वर ही का कोप पडे। (९) और अगर तुम पर अल्लाह की कृपा न होती तो तुम बडी आपत्ति मे पड़ जाते परन्तु अल्लाह क्षमा करनेवाला चमत्कार वाला है। (१०) (रुकू १)

जिन लोगो ने तूफान उठा खड़ा किया ** तुम ही मे एक गिरोह है। इस तूफान को अपने लिए बुरा न समझो बल्कि यह तुम्हारे लिए अच्छा हुआ। तूफान उठाने वालो मे से जितना अपराध जिसने इकट्ठा

---

* ताकि स्वयं ऐसा बुरा काम करने से डरें।

** कुछ लोगों ने मुहम्मद साहब की चहीती स्त्री हजरत आइशा पर अनाचार का लफंट लगाया था। यह आयतें उसी से सम्बन्धित हैं।

किया है उसी का फल भोगेगा और जिसने उनमें से तूफान का बड़ा भाग लिया वैसे ही उसको बड़ा दण्ड होगा। (११) जब तुमने ऐसी बात सुनी थी ईमानवाले मर्दो और ईमानवाली औरतो ने अपने हक मे अच्छे विचार क्यो नही किया और क्यो न बोल उठे कि यह प्रत्यक्ष लफंट है। (१२) जिन लोगो ने यह तूफान उठा खड़ा किया अपने बयान के प्रमाण पर चार साक्षी क्यो न लाये? फिर जब साक्षी न ला सके तो ईश्वर के नजदीक यही झूठे हैं। (१३) और अगर तुम पर संसार और प्रलय मे ईश्वर की कृपा न होती तो इस चर्चे मे तुम पर बड़ा दण्ड उतरता। (१४) जब तुमने लफंट को अपनी जबानो पर लिया और अपने मुँह से ऐसी बात कहने लगे जिनको तुम न जानते थे और तुम उसे हल्की बात समझे, हालांकि अल्लाह के पास वह बड़ी बात है। (१५) और जब तुमने ऐसी बात सुनी थी क्यो न बोल उठे कि हमको ऐसी बात मुंह से निकालना शोभा नही देता। अल्लाह तो पवित्र है और यह बड़ा लफट है। (१६) ईश्वर तुमको शिक्षा देता है कि अगर तुम धर्म रखते हो तो फिर कभी ऐसा न करना। (१७) और अल्लाह अपनी आज्ञा तुमसे खोलकर करता है और अल्लाह चमत्कार वाला जानकार है। (१८) जो लोग चाहते हैं कि ईमानवालो मे व्यभिचार की चर्चा हो उनके लिए दुनिया मे और प्रलय मे दुखदाई दण्ड है। और अल्लाह ही जानता है और तुम नही जानते। (१९) और अगर अल्लाह की कृपा तुम पर न होती तो तुम एक भयंकर विपत्ति मे पड जाते, लेकिन अल्लाह नर्मी करने वाला कृपालु है। (२०) (रुकू २)

ऐ ईमानवालों! राक्षस के कदम पर कदम न रखो और जो राक्षस के कदम पर कदम रखेगा तो राक्षस उसको बेशर्मी और बुरे काम को कहेगा और अगर तुम पर अल्लाह की कृपा और दया न होती तो तुममे से कोई कभी भी पवित्र न होता। लेकिन अल्लाह जिसे चाहता है पवित्र करता है और अल्लाह सुनता जानता है। (२१)

और तुमसे जो लोग बड़ाई वाले और सामर्थ्यवान हैं नातेदारों, मुहताजों और देश छोडने वालो को अल्लाह की राह मे देने से सौगन्ध न खा बैठें बल्कि क्षमा करे और छोड़ दें। क्या तुम नही चाहते कि अल्लाह तुम्हारे अपराध क्षमा करे और अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है ? (२२) जो लोग ईमानवालें बेखबर पवित्र औरतो पर लफट लगाते हैं ऐसे लोग दुनिया और प्रलय मे फटकारे गये हैं और उनको बडा दण्ड होगा। (२३) जब इनकी जबानें और इनके हाथ और इनके पांव इनके कामो की जो कुछ वे करते थे साक्षी देंगे, (२४) उस दिन अल्लाह इनको पूरा-पूरा बदला देगा और जान लेंगे कि अल्लाह ही सच्चा दिखाने वाला है। (२५) व्यभिचारिणी औरतें व्यभिचारी मर्दों के लिए और व्यभिचारी मर्द व्यभिचारी औरतो के लिए और पवित्र औरतें पवित्र मर्दों के लिए और पवित्र मर्द पवित्र औरतो के लिए हैं और जो लफट लगाये फिरते हैं उनसे जो अलग हैं उनके लिए क्षमा है इज्जत की रोजी है। (२६) (रुकू ३)

ऐ धर्मवालो ! अपने घरो के सिवाय और घरो मे बगैर पूछे और बिना सलाम किये न जाया करो, यह तुम्हारे हक मे भला है, शायद तुम याद रखो। (२७) फिर अगर तुमको मालूम हो कि घर मे कोई आदमी नही है तो जब तक तुम्हें आज्ञा न हो उसमे न जाओ और अगर तुमसे कहा जावे कि लौट जाओ यह तुम्हारे लिये ज्यादा सफाई की बात है और जो कुछ भी तुम करते हो अल्लाह उसको जानता है। (२८) और उजाडा हुआ मकान जिसमे तुम्हारा सामान हो उनमें चले जाने से तुम्हें पाप नही और जो कुछ तुम जाहिरा करते हो और जो कुछ तुम छिपाकर करते हो अल्लाह जानता है। (२९) ऐ पैगम्बर धर्म वालो से कहो कि अपनी आंख नीची रखे और अपनी शर्मगाहो को बुरे काम से बचाये रहें। इसमे उनकी ज्यादा सफाई है और लोग जो कुछ भी किया करते हैं अल्लाह को खबर है। (३०) और ऐ पैगम्बर ! धर्मवाली स्त्रियो से कहो कि अपनी आखें नीची रखें और

अपनी शर्मगाहों को बचाये रहें और अपना शृंगार न दिखावें, मगर जितना जाहिर है यानी मुँह, हाथ और पैर और अपने कन्धो पर ओढनी ओढे रहें और अपना शृंगार न दिखावे, सिवाय अपने पति के और अपने बाप के या अपने ससुर के या अपने पति के बेटे के या अपने भाइयों के या भतीजो के या अपने भान्जो के या अपनी मेल-जोल की औरतों के या अपने हाथ के माल यानी लौंडियो या घरके लगे हुए ऐसे सेवको के या जो मर्द तो हो मगर औरतो से कुछ गरज नही रखते हो या लडको को जिन्होने औरतों के भेद नही जाने। और चलने मे अपने पाँव ऐसे जोर से न रखें कि लोगों को उनके अन्दरूनी जेवर की खबर हो और तुम सब अल्लाह के सामने क्षमा माँगो, जिससे छुटकारा पाओ। (३१) और अपनी विधवाओ के निकाह करा दो और अपने गुलामो और लौंडियो मे से जो नेकबख्त हों उनके निकाह करा दो। अगर यह लोग मुहताज होंगें तो अल्लाह उनको मालदार बना देगा और अल्लाह गुंजाइश वाला जानकार है। (३२) और जिन लोगो का विवाह नही हुआ वे अपने को थामे रहें, यहाँ तक कि अल्लाह अपनी कृपा से उन्हे सामर्थ्य दे और तुम्हारे हाथ के माल मे से जो लिखने* के चाहनेवाले हों तो तुम उनके साथ लिख दिया करो बशर्ते कि तुम उनमें नेकी पाओ और माले खुदा मे से जो उसने तुमको दे रखा है उनको दो और तुम्हारी लौंडिया जो पवित्र रहना चाहती हैं उनको सांसारिक जीविन के लाभ की गरज से व्यभिचार पर मजबूर न करो और जो उनको मजबूर करेगा तो अल्लाह उनके मजबूर किये पीछे क्षमा करनेवाला कृपालु है। (३३) और हमने इस कुरान मे तुम्हारे पास खुली-खुली आज्ञा भेजी हैं और जो लोग तुमसे पहिले हो गुजरे हैं उनके हालात संयमी के लिए शिक्षा हैं। (३४) (रुकू ४)

---

*यानी जो सेवक अपनी आजादी के लिए एक तहरीर चाहे जिसमें उसको आजादी की शर्तों का जिक्र हो तुम ऐसी तहरीर उसको दे दो।

अल्लाह आकाश और पृथ्वी की रोशनी है। उसकी रोशनी की मिसाल ऐसी है कि जैसे एक आला है, उस आले मे एक दिया और दिया एक शीशे की कंडील मे रखा है और कंडील एक सितारे की तरह चमकता है। जैतून के बरकत के पेड से उस चिराग मे तेल जलता है जो न पूर्वी और न पश्चिमी है। उसका तेल ऐसा साफ है कि अगर उसको आँचल न छुए तो भी जल उठे। उजाले पर उजाला अल्लाह अपने उजाले की तरफ जिसको चाहता है राह दिखाता है और अल्लाह लोगो के लिए मिसालें बनाता है और अल्लाह हर चीज से जानकार है। (३५) ऐसे घरो मे जिनकी बाबत ईश्वर ने आज्ञा दी है कि उनकी बुजुर्गी की जाय और उनमे ईश्वर का नाम लिया जावे, उनमे सुबह शाम याद करते हैं। (३६) ऐसे लोग ईश्वर की पवित्रता कहते रहते हैं जो सौदागरी और लेन-देन ईश्वर के जिक्र और नमाज के पढने और तामज के देने से गाफिल नही होते, उस दिन से डरते हैं जबकि दिल और आँखें उलट जायगी। (३७) अल्लाह उनका उनके कामो का भला से भला बदला दे और उनको अपनी कृपा से बढती दे और अल्लाह जिसको चाहता है रोजगार देता है। (३८) और जो लोग इन्कार करने वाले हैं उनके काम जैसे मैदान मे चमकता हुआ रेत, प्यासा उसको पानी समझता है। यहा तक कि जब उसके पास पहुचता है तो उसको कुछ नही पाता और ईश्वर को अपने पास मौजूद पाया। उसने उसका हिसाब पूरा-पूरा चुका दिया और अल्लाह जरा देर मे हिसाब करने वाला है। (३९) उनके काम का उदाहरण बडे गहरे नदी के अन्दरूनी अंधेरो कैसी है कि नदी को लहर ने ढाँक रखा है और लहर के ऊपर लहर उसके बादल का अँधेरा है, एक के ऊपर एक अपना हाथ निकाले तो आशा नही कि उसको देख सकें। और जिसको अल्लाह ही ने उजाला नही दिया तो उसके लिए कोई उजाला नही। (४०) (रुकू ५)

क्या तूने नही देखा कि जो कुछ आकाश और पृथ्वी मे है अल्लाह की पवित्रता बताता है और पक्षी पर फैलाये उड़ते फिरते हैं। सबने

अपनी नमाज और याद का तरीका जान रखा है। और जो कुछ यह करते हैं अल्लाह उससे जानकार है। (४१) और आकाश और पृथ्वी पर साम्राज्य अल्लाह का है और अल्लाह की तरफ लौट कर जाना है। (४२) क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह बादल को हांकता है, फिर बादलों को आपस मे जोड़ता है, फिर उनको तह पर तह करके रखता है, फिर तू बादल में से मेह को निकलते हुए देखता है और आकाश मे जो ओलो के पहाड़ जमे हुए हैं जिस पर चाहता है ओले बरसाता है और जिसे चाहता है उसे बचा देता है। बादल की बिजली की चमक आँखो को उचक ले जावे। (४३) अल्लाह रात और दिन को बदलता रहता है। जो लोग सूझ रखते हैं उनके लिए ध्यान की जगह है। (४४) और अल्लाह ने तमाम जानदारों को पानी से पैदा किया है फिर उनमे से कोई जो पेट के बल चलते हैं और कोई उनमे से पाँव से चलते हैं और कोई उनमे से चार पांव से चलते हैं अल्लाह जो चाहता है बनाता है। निस्संदेह अल्लाह हर चीज पर शक्तिशाली है। (४५) हमने खुली आयतें उतारी हैं और अल्लाह जिसे चाहता है सीधी राह बताता है। (४६) कहते हैं कि हम अल्लाह पर और पैगम्बर पर ईमान ले आये और आज्ञा मानी, फिर इसके बाद इनमे का एक गुट नही मानता है और वे ईमान लाने वाले नही। (४७) और जब ईश्वर और पैगम्बर की तरफ बुलाये जाते हैं कि उनमे उनके आपस के झगड़ों का निबटारा कर दें, उनका एक गुट मुँह मोड़ता है। (४८) और अगर उनको कुछ हक पहुचता हो तो कान दबाये रसूल की तरफ चले आते हैं। (४९) क्या इनके दिलो मे कुछ रोग है या सदेह मे पड़े हैं या डरते हैं कि अल्लाह और उसका रसूल उनकी हकतलफी न कर बैठें बल्कि यही लोग अन्यायी हैं। (५०) (रुकू ६)

ईमानदारों की बात यह है कि जब ईश्वर और उनके पैगम्बर की तरफ निर्णय के लिए बुलाये जाते हैं तो कहते हैं हमने सुना और माना

और यही मनुष्य छुटकारा पाते हैं। (५१) और जो कोई अल्लाह और उसके पैगम्बर की आज्ञा माने और अल्लाह से डरे और उससे दबता रहे तो ऐसे ही मनुष्य मुराद को पहुचेंगे। (५२) और अल्लाह की पक्की सौगन्धें खा-खाकर कहते हैं कि यदि आप आज्ञा देवें तो बिला उज्र निकल खड़े हो। ऐ पैगम्बर! इन मनुष्यो से कहो कि कसमे न खाओ, तुम्हारी आज्ञाकारी की सचाई मालूम है और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह को उसकी खबर है। (५३) कहो कि अल्लाह की आज्ञा मानो और पैगम्बर का कहा मानो। फिर यदि तुम भागोगे तो जो जिम्मेदारी पैगम्बर पर है उसका उत्तर वह है और जो जिम्मेदारी तुम पर है उसके उत्तर तुम हो। यदि पैगम्बर के कहने पर चलोगे तो किनारे जा लगोगे और पैगम्बर के जिम्मे तो ईश्वर की आज्ञा साफतौर पर पहुचा देना है। (५४) तुम मे से जो मनुष्य ईमान लाये और अच्छे काम किये उनसे ईश्वर का प्रण है कि उनको संसार मे खलीफा बनायेगा जैसे इन मनुष्यों से पहले खलीफे बनाये थे। उनका दीन जो उसने उनके लिए पसंद किया उसको उनके लिए कठोर कर देगा और डर जो इनको है इनके बाद इनको शांति देगा कि हमारी पूजा किया करेंगे और किसी वस्तु को हमारा साझी न मानेंगे और जो आदमी इनके बाद इन्कारी हो तो ऐसे ही मनुष्य अवज्ञाकारी हैं। (५५) और नमाज पढ़ा करो और दान दिया करो और पैगम्बर के कहे पर चलो शायद तुम पर दया की जावे। (५६) ऐ पैगम्बर! ऐसा विचार न करना कि काफिर देश मे हमे हरा देंगे और इनका ठिकाना नरक है, और वह बुरी जगह है। (५७) (रुकू ७)

ऐ ईमान वालो! तुम्हारे हाथ के सेवक और तुम्हारे अवयस्क लडके तीन वक्तों मे तुम्हारी आज्ञा लेकर घर आवें। एक तो प्रातः की नमाज से पहले और दूसरे दोपहर को जब तुम कपडे उतारा करते हो और तीसरे रात की नमाज के बाद। यह तीनो समय तुम्हारे पर्दे के हैं। इन वक्तो के सिवाय न तुम पर कुछ पाप है और न उन पर,

क्योंकि वह तुम्हारे पास आते-जाते हैं। यों अल्लाह आयतों को तुमसे खोल-खोलकर बयान करता है और अल्लाह जानने वाला चमत्कार वाला है। (५८) जब तुम्हारे लड़के वयस्क हो जावे तो जिस तरह इनके अगले आज्ञा माँगा करते हैं इसी तरह इनको भी आज्ञा माँगनी चाहिये। इस तरह अल्लाह अपनी आयतें खोल-खोलकर कहता है और अल्लाह जानकर चमत्कार वाला है। (५९) और बड़ी-बूढ़ी औरते जिनको निकाह की आज्ञा नही यदि अपने कपडे दुपट्टा या चद्दर उतार रखा करें तो इसमे उन पर कुछ अपराध नही बशर्ते कि उनको अपना बनाव दिखाना मन्जूर न हो और यदि बचाए रखें तो उनके हक मे भला है और अल्लाह सुनता जानता है। (६०) अंधे, लगडे और बीमार तुम्हारा जानों पर भी कुछ पाप नही कि अपने पिता के घर से या माँ के घर से या अपने भाइयो के घर से या अपनी बहनों के घरो से या अपने चाचाओ के घरो से या अपनी फूफियो के घरों से या अपने मामुओ के घरो से या अपनी मौसियों के घरों से या उन घरो से जिनकी कुञ्जियाँ तुम्हारे काबू में हैं या अपने मित्रों के घरो से फिर इसमे भी तुम पर पाप नही कि सब मिल कर खाओ या अलग-अलग। फिर जब घरो मे जाने लगो तो अपने मनुष्यों को सलाम कर लिया करो। क्षेम कुशल की आशीष ईश्वर की ओर से बरकत उम्मह वाली है। यो अल्लाह आज्ञा खोल खोलकर कहता है शायद तुम समझो। (६१) (रुकू ८)

ईमान वाले हैं जो अल्लाह और पैगम्बर पर ईमान लाये हैं और जब किसी ऐसी बात के लिए, जिसमे मनुष्यो के जमा होने की जरूरत है, पैगम्बर के पास होते हैं तो जब तक पैगम्बर से आज्ञा न ले लें नही जाते हैं। ऐ पैगम्बर! जो तुमसे आज्ञा ले लेते हैं आज्ञा मे वही मनुष्य है जो अल्लाह और उसके पैगम्बर पर विश्वास लाये हैं। तो यह मनुष्य अपने किसी काम के लिए तुमसे आज्ञा मागे तो तुम इनमे से जिसको चाहो आज्ञा दे दिया करो। ईश्वर से उनके लिए क्षमा माँगो।

अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है। (६२) जब पैग़म्बर तुममे से किसी को बुलाये तो उन के बुलाने को आपस मे मामूली बुलाना न समझो जैसा तुम मे एक को एक बुलाया करता है। अल्लाह उन मनुष्य को खूब जानता है जो तुम मे से छिपकर सटक जाते हैं। तो जो मनुष्य रसूल की आज्ञा का विरोध करते हैं, उनको इससे डरना चाहिए कि उन पर कोई आफत न आ पडे या उन पर दुखदाई दण्ड आ जाये। (६३) सुनो जो अल्लाह ही का है जो कुछ आकाश और पृथ्वी मे है, तुम जिस हाल मे हो उसे मालूम है और जिस रोज ईश्वर की तरफ लौट कर लाये जाओगे तो जैसे काम करते रहे हैं ईश्वर उनको बता देगा और अल्लाह सब कुछ जानता है। (६४) (रुकू ९)



सूरे फ़ुर्क़ान

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ७७ आयतें और ६ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो दयालु तथा कृपालु है। उसका बरकत है जिसने अपने सेवक मुहम्मद पर क़ुरान उतारा ताकि तमाम संसार के लिए डराने वाला हो (१) आकाश और पृथ्वी का साम्राज्य उसी की है और वह कोई पुत्र नही रखता और न राज्य मे उसका कोई साझी है। और उसी ने हर वस्तु को पैदा किया, फिर हर एक वस्तु के लिए एक अन्दाजा ठहरा दिया। (२) और राक्षसो ने ईश्वर के सिवाय दूसरे पूजित मान लिए हैं जो किसी वस्तु को पैदा नहीं कर सकते बल्कि वह खुद बनाये हुए हैं। और अपने लिए बुरे-भले के स्वामी नही है और न मरने के और न जीने के और न जी उठने के स्वामी हैं। (३) और राक्षस क़ुरान की निस्बत कहते हैं कि यह तो निरा झूठ है

जिसको इस पैगम्बर ने गढ लिया है और दूसरे मनुष्यों ने उसकी सहायता की है। यही मनुष्य झूठ और अत्याचार पर हैं। (४) और कहते हैं कि कुरान अगले मनुष्यो की कहानियाँ है जिसको इस मुहम्मद ने किसी से लिखवा लिया है और यही सुबह शाम पढ-पढकर सुनाया जाता है। (५) ऐ पैगम्बर! कहो यह कुरान उसने उतारा है जो आकाश और पृथ्वी की सब छिपी बातो को जानता है। वह क्षमा करने वाला कृपालु है। (६) और कहते हैं कि यह कैसा पैगम्बर है जो खाना खाता और बाजारों मे फिरता है*। इसके पास कोई देवदूत क्यों नही भेजा गया कि इसके साथ होकर डराता। (७) या इस पर कोई खजाना बरसा होता या इसके पास बाग होता कि उससे खाता। और अत्याचारी कहते हैं कि तुम तो ऐसे आदमी के पीछे हो गये हो कि जिस पर किसी ने जादू कर दिया है। (८) ऐ पैगम्बर ? देखो तुम्हारी लिए कैसी बातें बनाते हैं जिससे गुमराह हो गये और फिर राह पर नहीं आ सकते हैं। (९) (रुकू १)

वह ऐसा बरकत वाला है कि चाहे तो तुम्हारे लिए ऐसे बाग दे कि जिनके नीचे नहरें बहती हों और तुम्हारे लिए महल बना दे। (१०) असली बात यह मनुष्य प्रलय को झूठ समझते हैं और मनुष्य प्रलय को झूठ समझें उनके लिये हमने नरक तैयार कर रखा है। (११) जब वह उसको दूर से देखेंगे तो उसकी चिल्लाहट और झुंझलाहट सुनेंगे। (१२) और जब नरक की किसी तंग जगह मे गठरी बाँध कर डाल दिये जायेंगे तो वहाँ मृत्यु को पुकारेंगे। (१३) देवदूत कहेंगे कि एक मृत्यु को न पुकारो बल्कि बहुत मौतो को पुकारो। (१४) ऐ

---

* काफिर समझते थे कि नबी या रसूल साधारण मनुष्य के समान नहीं रहता। उसके साथ हर समय एक फरिश्ता रहता है, जो दूसरों को बताता रहता है कि यह नबी या रसूल हैं।

पैगम्बर ? इनसे कहो कि यह बढकर है या हमेशा रहने के बाग जिसका प्रण सयमो का मिला है कि उनका बदला वह ठिकाना होगा। (१५) और जो वस्तु वह चाहेगे वहाँ मौजूद होगी। हमेशा रहेंगे। यह उनका माँगा हुआ प्रण तेरे ईश्वर पर लाजिम आ गया है। (१६) और जिस दिन ईश्वर उन राक्षसो का और पूजितो को जिनको यह ईश्वर के सिवाय पूजते है जमा करेगा फिर इनके पूजितो से पूछेगा कि क्या तुमने मेरे इन दासो को गुमराह किया था या यह आपसे आप राह भटक गये थे ? (१७) इनके पूजित कहेगे कि तू पवित्र है, हमको यह बात किसी तरह शोभा नही देती थी कि तेरे सिवाय दूसरे काम सभालने वाले बनाते बल्कि तूने इनको और इनके बडो को आराम चैन दो, यहाँ तक कि वह तेरी याद को भुला बैठे और यह माने होने वाले मनुष्य थे। (१८) हम काफिरो से कहेगे तुम्हारे इन पूजितो ने तुमको सारी बातो मे झुठलाया। अब तुम न तो हमारे दण्ड को टाल सकते हो और न सहायता ले सकते हो। और जो तुममे से ईश्वर बना कर अत्याचार करेगा हम उसको बडा दण्ड देगे। (१९) और ऐ पैगम्बर ! हमने तुमसे पहले जितने रसूल भेजे, वह खाना खाते थे और बाजारो मे चलने-फिरते थे और हमने तुममे एक दूसरे की जाँच को रखा है तो देखें ठहरे रहते हो या नही और तुम्हारा पालनकर्ता देख रहा है। (२०) (रुकू २)



उन्नीसवाँ पारा (वकालल्लजीन)

और जो मनुष्य हमसे मिलने की आशा नही रखते वह कहा करते है कि हम पर देवदूत क्यो नही उतरे या हम अपने पालनकर्ता को देखें तो विश्वास करें। इन मनुष्यो ने अपने दिलो मे अपनी बडी बडाई समझ रखी है और सीमा से बहुत बढ गये हैं। (२१) जिस दिन

मनुष्य फरिश्तो को देखेंगे उस दिन पापियो को कोई खुशी न होगी। और फरिश्तो को देखकर कहेगे कि किसी आड मे हो जाओ। (२२) और यह मनुष्य जो काम कर गये हैं अब हम उनकी तरफ ध्यान देंगे और उनको बिखरी हुई धूल कर देंगे। (२३) स्वर्ग वालो का उस दिन अच्छा ठिकाना होगा और दोपहर को सोने का स्थान भी अच्छा मिलेगा। (२४) और जिस दिन आकाश बदली से फट जायगा और फरिश्ते दर्जा बदर्जा उतारे जायगे, (२५) उस दिन रहमान का सच्चा राज्य होगा और वह दिन काफिरों को कठिन होगा। (२६) और जिस दिन अपराधी अपने हाथ चबा-चबा लेगा और कहेगा कि किसी तरह मैंने पैगम्बर के साथ राह पकडी होती। (२७) हाय मेरी कम-बख्ती मैं उस आदमी को मित्र बनाता। (२८) उसने तो शिक्षा आये पीछे भी मुझको बहका दिया और राक्षस आदमियो को समय पर धोखा देने वाला है। (२९) और उस समय पैगम्बर मुहम्मद ईश्वर से सामने कहेगे कि ऐ मेरे पालनकर्ता! मेरे गुट ने इस कुरान को बेकार समझा। (३०) और ऐ पैगम्बर! जिस तरह तुम्हारे जमाने के काफिर शत्रु हैं इसी तरह पापियों को हम हरएक पैगम्बर के शत्रु बनाते आये हैं और हिदायत देने और सहायता करने का तुम्हारा पालनकर्ता काफी है। (३१) और काफिर कहते है कि इस पैगम्बर पर कुरान सारे का सारा एकदम से क्यो नही उतारा गया? हम इसके द्वारा तुम्हारे हृदय को तसल्ली देते रहे और हमने उसे रुक-रुककर उतारा। (३२) और जो उदाहरण यह तेरे पास लाते है, हम उसका ठीक उत्तर और सच्चा बयान तुझे देते रहते हैं। (३३) जो मनुष्य औंधे मुह नरक की ओर हाँके जायँगे यही मनुष्य बुरी जगह मे होंगे और वही बहुत भटके हुए है। (३४) (रुकू ३)

और हमने मूसा को किताब तौरात दी और उनके भाई हारूँ को उनके साथ नायब कर दिया। (३५) फिर हमने आज्ञा दी कि दोनो

भाई उन मनुष्यो के पास जाओ जिन्होने हमारी आयतो को झुठलाया है तो हमने उन मनुष्यो को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। (३६) और कौम नूह ने भी जब पैगम्बरो को झुठलाया तो हमने उनको डुबो दिया और उनको मनुष्यो के लिए निशान उदाहरण बना दिया और हमने अन्यायियो को दुखदाई दण्ड तैयार कर रखा है। (३७) इसी तरह आद और समूद और खन्दक वालो और उनके बीच-बीच मे और बहुत से गुटो को हमने मार डाला। (३८) और सबो को उदाहरण दे देकर समझाया था और हमने उनका नाश कर दिया (३९) और यह मक्के के काफिर जरूर कौम लूत की उस बस्ती पर हो आये हैं जिस पर बुरा पथराव बरसाया गया था, तो क्या उन्होने उसे न देखा होगा, यदि इन मनुष्यो को मरे पीछे जी उठने की आशा ही नही। (४०) और पैगम्बर ! जब यह मनुष्य तुमको देखते है तुम्हारी हसी बनाते हैं और छेड़ने के तौर पर कहते हैं कि क्या यही है जिसका अल्लाह ने रसूल ऐ बना कर भेजा है ? (४१) यदि हम मूर्तियो की पूजा पर जमे न रहते तो इस मनुष्य ने हमको हमारे पूजितो से फिरा दिया था और कुछ रोज बाद प्रलय के दिन जब यह मनुष्य को देख लेंगे तो जान जेंगे कि कौन गुमराहा था।(४२)ऐ पैगम्बर ! क्या तुमने उस मनुष्य पर भी दृष्टि की जिसने अपनी चाह को अपना ईश्वर बना रखा है, तो क्या तुम निगरानी कर सकते हो ? (४३) या तुम विचार करते हो कि इन काफिरो मे अक्सर सुनते या समझते है ? यह तो चौपायो की तरह हैं बल्कि यह उनसे भी गये गुजरे है। (४४) (रुकू ४)

ऐ पैगम्बर ! क्या तुमने अपने पालनकर्ता की ओर नही देखा कि उसने साये को क्यो कर फैला रखा है और यदि चाहता तो उसको ठहराये रहता। फिर हमने सूर्य को साय. का कारण ठहरा दिया है। (४५) फिर हमने साया को धीरे धीरे अपनी ओर समेट लिया।(४६) और वही है जिसने तुम्हारे लिए रात को ओढना और नीद को आराम बनाया और दिन मनुष्यो के चलने फिरने के लिए बनाया। (४७)

और वही है जो अपनी कृपा के सामने हवाओ को खुशखबरी देने को भेजता है और हमने आकाश से पवित्र पानी उतारा। (४८) ताकि उसके द्वारा सूखे शहर मे जान डाल द और अपने पैदा किये हुए यानी बहुत से चारपायो और आदमियो को उससे पानी पिलावें। (४९) और हमने मनुष्यो मे पानी को तरह तरह से बाटा लेकिन अक्सर मनुष्यो ने कृतघ्नता के सिवाय कुछ न माना। (५०) और यदि हम चाहते तो हर बस्ती मे डर सुनाने वाला यानी पैगम्बर उठा खडा करते। (५१) तो ऐ पैगम्बर! तुम काफिरो का कहा न मानो और कुरान के प्रमाणो से उनका सामना बडे जोर से करो। (५२) और वही है जिसने दो नदियो को मिलाया एक का पानी मीठा मजेदार और एक का खारी कड़वा, और दोनो मे एक रोक और अटल आड बना दी। (५३) और वही है जिसने पानी वीर्य से आदमी को पैदा किया। फिर उसको किसी का पुत्र या पुत्री और किसी का दामाद बहू बनाया। और तुम्हारा पालनकर्ता हर वस्तु पर शक्तिमान है। (५४) और काफिर ईश्वर के सिवाय झूठे पूजितो को पूजते हैं जो न उनको लाभ पहुँचा सकते है और न उनको हानि पहुचा सकते हैं और काफिर तो अपने पालनकर्ता से पीठ दिए हुए हैं। (५५) और ऐ पैगम्बर! हमने तुमको खुशखबरी सुनाने और केवल डराने के लिए भेजा है। (५६) इन मनुष्यो से कहो कि मैं तुमसे इस ईश्वर की आज्ञा पर कुछ मजदूरी नही माँगता, हाँ जो चाहे अपने पालनकर्ता तक पहुंचने की राह पकडे। (५७) ऐ पैगम्बर! उस चैतन्य पर भरोसा रखो जो अमर है और बडाई के साथ उसकी पवित्रता बताते रहो और अपने दासो के पापो से वह काफी खबरदार है। (५८) जिसने आकाश और पृथ्वी और जो कुछ आकाश और पृथ्वी मे है सब को छ दिन मे पैदा किया फिर सिंहासन पर जा बैठा। वही ईश्वर रहमान है, तो उसकी खबर किसी खबरदार से पूछोगे। (५९) और जब काफिरो से कहा जाता है कि रहमान ही की पूजा के लिए झुको, तो कहते हैं कि रहमान क्या वस्तु है? क्या जिसके आगे तुम हमे सिर झुकाने को कहो उसी के आगे झुकाने लगें? और उनकी स्पष्टता बढती है। (६०) (रुकू ५)

बड़ी बरकत है उसकी जिसने आकाश मे बुर्ज बनाये और उसमे चिराग और चाँद उजाला करने वाला रखा। (६१) और वही है जिसने रात और दिन को जो एक के बाद एक आते जाते रहते हैं ठहराया, उन मनुष्यो के लिए जो गौर करना चाहे या धन्यवाद करना चाहें। (६२) और रहमान के सेवक तो वह हैं जो पृथ्वी पर नम्रता के साथ चलें और अपढ उनसे बाते करने लगते हैं तो उनको सलाम करते हैं*। (६३) और जो रात अपने पालनकर्ता के लिए सिर झुकावें और खड़े रहने मे काटते हैं। (६४) और जो कहते हैं ऐ हमारे पालन कर्ता! नरक के दण्ड को हमसे दूर रख, क्योकि उसका दण्ड बडा कठिन है। (६५) वह ठहरने की बुरा स्थान है। (६६) और जब वह खर्च करते हैं तो वृथा खर्च नही करते और न बहुत तंगी करते हैं बल्कि उनका खर्च औसत दर्जे का होता है। (६७) और जो ईश्वर के साथ किसी दूसरे पूजित को न पुकारें और वृथा किसी आदमी को जान से न मारें जिनको ईश्वर ने हराम कर रखा है, और छिनाले के भी कबूल करने वाले न हो, और कोई यह काम करेगा वह पाप का बदला भुगतेगा। (६८) प्रलय के दिन उसको दोहरा दण्ड दिया जावेगा और अपमान के साथ उसी हाल मे हमेशा रहेगा। (६९) यदि जिसने क्षमा माँगी और विश्वास लाया और नेक काम किये तो अल्लाह ऐसे मनुष्यो के पापो को नेकियो से बदल देगा और अल्लाह क्षमा करने वाला दयालु है। (७०) और जिसने क्षमा माँगी और भले काम किये वह हकीकत मे ईश्वर की ओर फिर आये हैं। (७१) और यह जो झूठ साक्षी न दें और जब बुरे कामो के पास होकर गुजरें वजेदारी के साथ गुजर जावें। (७२) और वह मनुष्य जब उनको उनके पालनकर्ता की आयतें पढ पढकर सुनाई जावें तो अन्धे और बहरे होकर उन पर नही गिरते*। (७३) और जो दुवाए माँगते है कि ऐ हमारे पालनकर्ता!

---

* यानी वह उनसे उन्हीं की तरह मूर्खता का व्यवहार नहीं करते।
* यानी वह लोग बुरी बातो से बचते रहते हैं।

हमको हमारी पत्नियो और सन्तान से आँखों की ठण्डक दे और हमको संयमियो का पेशवा बना। (७४) यही मनुष्य हैं जिनको उनके सन्तोष के बदले मे स्वर्ग मे रहने को ऊपर के मकान मिलेंगे और दुआ सलाम के साथ वहाँ उनकी अगवानी की जायगी। (७५) और यह मनुष्य स्वर्ग मे हमेशा रहेंगे। क्या अच्छी जगह ठहरने के लिए है और क्या ही अच्छा स्थान रहने के लिए है। (७६) ऐ पैगम्बर! कहो कि मेरा पालनकर्ता तुम्हारी कुछ परवाह नही करता, सो तुमने उसकी आयतो को झुठलाया, बस अब तो उसका बवाल पड़कर रहेंगा।(७७)(रुकू ६)

सूरे शुअरा

मक्के में अवतरित हुई इसमें २७७ आयतें और ११ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु तथा दयावान है। तो-सीन मीम (१) यह उसी किताब की आयतें हैं जिसका अर्थ साफ है। (२) ऐ पैगम्बर! शायद तू अपनी जान घोट मारे कि यह लोग ईमान क्यों नही लाते * ? (३) हम चाहें तो इन पर आकाश से एक निशानी उतारें। फिर तो इनकी गर्दनें उसके आगे झुककर रह जावेगी। (४) और जब कभी ईश्वर के पास से उनके पास कोई नई शिक्षा आती है तो उससे मुँह मोडते हैं। (५) यह लोग तो झुठला चुके इनको उस दण्ड की हकीकत मालूम हो जायगी जिसकी हँसी उड़ाया करते थे। (६) क्या इन लोगों ने पृथ्वी की तरफ नही देखा कि हमने भाँति-भाँति की

* मुहम्मद साहब इस बात से बहुत दुखी रहते थे कि काफिर विश्वास नहीं लाते थे। वह आयतें उनको संतोष दिला रही हैं।

अच्छी-अच्छी चीजें कितनी उसमे पैदा की हैं। (७) इनमे निशानी है। मगर इनमे से अक्सर ईमान लानेवाले नही। (८) तुम्हारा पालन-कर्ता शक्तिशाली दयावान है। (९) (रुकू १)

और ऐ पैगम्बर! जब तेरे पालनकर्ता ने मूसा को बुलाया कि इन जालिम लोगो यानी फिरऔन की कौम के पास जाओ। (१०) क्या यह मनुष्य नही डरते ? (११) मूसा ने कहा कि ऐ मेरे पालनकर्ता मैं डरता हू कि वह झुठलायेगे। (१२) और बातें करने मे मेरा दम रुकता है और मेरी जबान नही चलती हकलाती हैं इसलिए हारू को ईश्वरीय सदेशा भेज दे कि मेरे साथ चले (१३) और मेरे जिम्मे एक पाप उनका दावा भी है मैने एक किब्ती को मार दिया था सो मैं डरता हू कि मुझको मार न डाले। (१४) बताया बिल्कुल नही। तुम दोनो भाई हमारी निशानिया लेकर जाओ। हम तुम्हारे साथ सुनते रहेंगे। (१५) वह दोनो फिरऔन के पास आये और कहा कि हम सारे ससार के पालनकर्ता के भेजे हुए है। (१६) तू इसराईल के बेटो को हमारे साथ भेज दे। (१७) फिरऔन ने कहा क्या हमने तुझको अपने यहाँ रखकर बच्चे की तरह नही पाला था ? तू बरसो हमारे यहाँ रहा। (१८) और तूने एक मूर्खता भी की थी यानी किब्ती की हत्या और तू कृतघ्नी है। (१९) मूसा ने कहा कि मैं उन दिनो वह मूर्खता कर बैठा जब मैं गलती पर था। (२०) फिर जब मुझको तुमसे डर लगा मैं भाग गया। फिर मेरे पालनकर्ता ने मुझे पैगम्बर के अधिकार दिये और पैगम्बरो मे दाखिल कर लिया। (२१) और यह एहसान है जो तू मुझ पर रखता है यह कि तूने इसराईल की सतान को सेवक बना रखा है * ? (२२) फिरऔन ने पूछा तमाम जहान का पालनकर्ता

* फिरऔन ने मूसा को पाला-पोसा था और उनको बहुत दिनो अच्छी तरह रखा था। मगर मूसा ने अपनी अपेक्षा अपनी जाति का अधिकतर ख्याल किया और उनको स्वतन्त्र करना चाहा, इसीलिए यह कहा, "मेरे लालन-पालन का एहसान मुझ पर क्या रखता है जबकि तूने मेरी कौम को दास बना रखा हैं।"

कौन हैं ? (२३) मूसा ने कहा, आकाश और पृथ्वी और जो कुछ उनमे है सब का वही मालिक है, अगर तुम विश्वास करो। (२४) फिरऔन ने अपने मुसाहिबो से जो उसके आस-पास थे कहा क्या तुम मूसा की बातें नही सुनते ? (२५) मूसा ने कहा वही तुम लोगो का और तुम्हारे बाप-दादा का पालनकर्ता है (२६) फिरऔन ने कहा कि हो न हो तुम्हारा पैगम्बर जो तुम्हारे पास भेजा गया बावला है। (२७) मूसा ने कहा वही पूर्व और पश्चिम का और जो कुछ उनके बीच मे है सब का मालिक है, अगर तुम विचार रखते हो। (८) फिरऔन ने कहा अगर मेरे सिवाय किसी और को तूने ईश्वर माना तो मैं तुमको बन्दी कर दूँगा। (२९) मूसा ने कहा कि अगर मैं तुझको एक खुला हुआ चमत्कार दिखाऊँ। (३०) फिरऔन ने कहा अगर तू सच्चा है तो ला दिखा। (३१) इस पर मूसा ने अपनी लाठी डाल दी तो क्या देखते हैं कि वह एक साँप है। (३२) और अपना हाथ बाहर निकाला तो निकालने के साथ सब देखनेवालो की नजर मे बडा चमक रहा था। (३३) (रुकू २)

फिरऔन ने अपने दरबारियो से जो इर्द-गिर्द थे कहा कि इसमे संदेह नही कि यह कोई जानकार जादूगर है। (३४) और चाहता है कि तुमको अपने जादू से देश से बाहर निकाल दे, तो तुम मनुष्य क्या सलाह देते हो ? (३५) दरबारियो ने निवेदन किया कि मूसा और हारूँ को रोको और देश मे जादूगरो को जमा करने को हरकारे दौड़ाओ (३६) कि वह तमाम बडे-बडे जादूगरो को तुम्हारे पास लावें (३७) ठहरे हुए दिन जादूगर जमा किये गये। (३८) और लोगो मे मनादी करा दी गई कि अब तुम मनुष्य जमा होगे या नही। (३९) अगर जादूगर मूसा ही जीत मे रहा तो शायद हम उन्ही का दीन कबूल कर ले। (४०) तो जब जादूगर आये, उन्होंने फिरऔन से कहा कि अगर हम जीते तो हमको क्या इनाम मिलेगा ? (४१) फिरऔन ने

कहा हा जरूर, जीतने पर तुम पास बैठनेवालो मे से होगे *। (४२) मूसा ने जादूगरो से कहा जो कुछ तुमको डालना मन्जूर हो डाल चलो। (४३) इस पर जादूगरो ने अपनी रस्सियाँ और अपनी लाठियाँ डाल दी और बोले कि फिरऔन के प्रताप से हम ही जबरदस्त रहेगे। (४४) इस पर मूसा ने अपनी लाठी मैदान मे डाली तो बस वह उन जादुओ को जो जादूगर बना लाये थे एकदम से निकलने लगी। (४५) यह देखकर जादूगर सिर झुकाकर गिर पडे। (४६) और बोले कि हम तमाम संसार के पालनकर्ता पर विश्वास लाये। (४७) जो मूसा और हारूँ का पालनकर्ता है। (४८) फिरऔन ने कहा क्या तुम मेरी आज्ञा देने से पहले विश्वास लाये ? हो न हो यह मूसा तुम्हारा बडा गुरु है, जिसने तुम्हे जादू सिखलाया है सो तुमको मालूम हो जायगा। मैं तुम्हारे हाथ और पाँव उल्टे काटूँगा और तुम सबको फाँसी दूँगा। (४९) वह बोले कुछ हर्ज की बात नही, हम अपने पालनकर्ता की तरफ लौट जावेगे **। (५०) हम आशा रखते है कि हमारा पालन-कर्ता हमारे अपराधो को क्षमा कर दे, इसलिए कि हम सब से पहले विश्वास लाये है। (५१) (रुकू ३)

और हमने मूसा को आज्ञा भेजी कि हमारे बन्दो यानी इसराईल की सतान को रातो-रात निकाल ले जा क्योकि तुम्हारा पीछा किया जायेगा। (५२) इस पर फिरऔन ने शहरो मे हरकारे दौडाये (५३) कि इसराईल की सतान थोडी सी जमात है। (५४) और उन्होने हमको क्रोध दिलाया है। (५५) और हमारी जमात हथियारबन्द है।

---

* यानी हमारे दरबारियो मे से हो जाओगे, जिससे ऊँचा कोई पद नहीं हो सकता।

** यानी अधिक से अधिक तू हमको मार डालेगा और क्या कर लेगा।

(५६) गरज हमने फिरऔन के मनुष्यो को बागो से झरनो से (५७) और खजानो से और इज्जत की जगह से निकाल बाहर किया। (५८) ऐसा ही और इसराईल की सतान को उन चीजो का वारिस बनाया। (५९) तो फिरऔन के लोगो ने दिन निकलते-निकलते इसराईल के बेटो का पीछा किया। (६०) फिर जब दोनो जमातें एक दूसरे को देखने लगी तो मूसा के मनुष्य कहने लगे कि अब तो शत्रुओ ने हमको घेर लिया। (६१) मूसा ने कहा हरगिज नही, मेरे साथ मेरा पालनकर्ता है वह मुझको राह दिखलायेगा। (६२) फिर हमने मूसा को आज्ञा दी कि अपनी लाठी दरिया पर दे मारो, चुनाचे मूसा ने दे मारी। दरिया फट गया और हरएक टुकड़ा गोया एक बडा पहाड था। (६३) और उसी मौके के पास हम दूसरे मनुष्यो फिरऔन वालो को लिवा लाये। (६४) और हमने मूसा और जो मनुष्य उनके पास थे सबको बचा लिया। (६५) फिर दूसरों फिरऔन वालो को डुबो दिया। (६६) इसमें एक चमत्कार है और फिरऔन के लोगो मे से अक्सर विश्वास लाने वाले न थे। (६७) और ऐ पैगम्बर! तुम्हारा पालनकर्ता बडा कृपालु है। (६८) (रुकू ४)

और ऐ पैगम्बर! इन लोगों को इब्राहीम का हाल सुनाओ। (६९) जब उन्होने अपने बाप और अपनी जाति से पूछा कि तुम किस चीज को पूजते हो? (७०) तो उन्होने उत्तर दिया कि हम मूर्तियों को पूजते हैं और उन्ही की सेवा करते रहते है। (७१) इब्राहीम ने पूछा कि जब तुम उनको पुकारते हो तो क्या यह तुम्हारी सुनते है? (७२) या तुमको लाभ या हानि पहुचा सकते हैं? (७३) उन्होने कहा नही। मगर हमने अपने बड़ो को ऐसा ही करते देखा है। (७४) इब्राहीम ने कहा भला देखो तो जिन्हें तुम पूजते हो, (७५) तुम और तुम्हारे अगले बाप-दादे पूजिते चले आये हो। (७६) यह तो मेरे शत्रु हैं, मगर संसार का पालनकर्ता साथी है। (७७) जिसने मुझको पैदा किया वही राह दिखाये। (७८) और जो मुझको खिलाता और पिलाता

है (७९) और जब मैं बीमार पडता हू वही मुझको अच्छा करता है। (८०) और जो मुझको मारेगा और फिर जिलायेगा। (८१) और मुझे आशा है कि बदले के दिन मेरे अपराध क्षमा करेगा। (८२) ऐ मेरे पालनकर्ता! मुझको समझा दे और नेक दासो में मिलाले। (८३) और आनेवाली नस्लो मे मेरा अच्छा जिक्र जारी रख। (८४) और स्वर्ग की न्यामतों के वारिसो मे से मुझको भी एक वारिस बना। (८५) और मेरे बाप को क्षमा कर, वह गुम राहो मे से था। (८६) और जब मनुष्य दुबारा जिला कर खडे किये जायेंगे मुझको उस दिन बदनाम न कर। (८७) उस दिन धन और सतान काम न आवेगे। (८८) मगर जो पवित्र दिल लेकर ईश्वर के सामने हाजिर होगा। (८९) और स्वर्ग मे सयमियो के पास लाया जायगा। (९०) और नरक गुम राहो के वास्ते खोला जायगा। (९१) और उनसे कहा जायगा कि ईश्वर के सिवाय जिन चीजो को तुम पूजिते थे कहाँ हैं? (९२) क्या वह तुम्हारी कुछ सहायता कर सके या बदला ले सकते है? (९३) फिर वे पूजित और नह मनुष्य औधे मु ह नरक मे झोक दिये जायगे। (९४) और इबलीस का सब लश्कर औधे मुँह नरक मे ढकेल दिया जायेगा। (९५) गुमराह और उनके पूजित वहा आपस मे झगडते हुए यो कहेगे। (९६) ईश्वर की सौगन्ध हम तो जाहिरा गुमराही मे थे। (९७) जब हमने तुमको ससार के पालनकर्ता के बराबर ठहराया था, (९८) और हमको तो पूजितो पापियो ने गुमराह किया था। (९९) तो न तो कोई हमारी सिफारिश करने वाला है (१००) और न कोई मित्र। (१०१) सो यदि हमको ससार मे फिर लौटकर जाना हो तो हम ईमानवालो मे रहे। (१०२) बेशक ईब्राहीम के इस किस्से मे चमत्कार है और इब्राहीम के गिरोह मे अक्सर ईमान लाने वाले न थे। (१०३) और पैगम्बर! तेरा पालनकर्ता बडा कृपालु है। (१०४) (रुकू ५)

इसी तरह नूह की जाति ने पैगम्बरों को झुठलाया। (१०५) उनसे भाई नूह ने कहा क्या तुम ईश्वर से नही डरते? (१०६) मैं तुम्हारा अमानतदार पैगम्बर हू। (१०७) तो ईश्वर से डरो और मेरा कहा मानो। (१०८) और मैं इस समझाने पर तुमसे मजदूरी नही माँगता। मेरी मजदूरी तो ससार के पालनकर्ता पर है। (१०९) ईश्वर से डरो और मेरा कहा मानो। (११०) वह कहने लगे कि क्या हम तुम्हारी बात को मान ले और हम देखते हैं छोटे * दर्जे के लोग तुम्हारे पीछे हो गये हैं। (१११) कहा जो यह लोग करते रहे है मुझ को क्या खबर है। (११२) इनका हिसाब तो सिर्फ अल्लाह पर है अगर तुम समझो। (११३) और मैं ईमानवालो को धक्का देनेवाला नही हू। (११४) मैं तो मनुष्यो को साफ तौर पर ईश्वर के दण्ड से डरानेवाला हू। (११५) वह बोले नूह! अगर तू अपनी मूर्खता से बाज न आया तो जरूर पत्थरो से मारा जायगा। (११६) नूह ने कहा कि ऐ मेरे पालनकर्ता! मेरी जाति ने मुझको झुठलाया। (११७) तू मुझमे और इन मनुष्यो मे फैसला कर दे और मुझे और ईमानवालो को छुटकारा दे। (११८) फिर हमने नूह और उन मनुष्यो को जो भरी हुई नावो मे उनके साथ थे तूफान से बचा दिया। (११९) फिर इसके बाद हमने बाकी मनुष्यों को डुबो दिया। (१२०) इसमे अलबत्ता शिक्षा है और नूह के गिरोह के बहुत मनुष्य ईमान लाने वाने न थे। (१२१) और ऐ पैगम्बर! तुम्हारा पालनकर्ता अलबत्ता वही बडा कृपालु है। (१२२) (रुकू ६)

इसी तरह कौम आद ने पैंगम्बरो को झुठलाया। (१२३) जब उसके भाई हूद ने उनसे कहा क्या तुम ईश्वर से नही डरते? (१२४)

---

* हर सुधार करने वाले के साथ निम्न श्रेणी के लोग होते हैं, इसी तरह नूह पर ईमान लाने वाले भी थे।

मैं तुम्हारा अमानतदार पैगम्बर हू। (१२५) तो ईश्वर से डरो और मेरा कहा मानो (१२६) और मैं इस पर तुमसे कुछ बदला तो नही माँगता, मेरी उजरत तो बस ससार के पालनकर्ता पर है। (१२७) क्या तुम हर ऊंची जगह पर बेजरूरत यादगारें* बनाते हो। (१२८) और बडी कारीगरी के महल बनाते हो। गोया तुम समार मे हमेशा रहोगे। (१२९) और जब हाथ डालते हो तो बडी सख्ती** से पकड़ते हो। (१३०) तो ईश्वर से डरो और मेरा कहा मानो। (१३१) और उसके कोप से डरो, जिसने तुम्हारी तमाम वस्तु से सहायता की, जो तुमको मालूम है। (१३२) चारपायो और से पुत्रो मे (१३३) और बागो और झरनो से तुम्हारी सहायता की। (१३४) मैं तुम्हारी बाबत बडे दिन के दण्ड से डरता हू। (१३५) वह बोले तुम हमको शिक्षा करो या न करो हमको तो सब बराबर है। (१३६) वह शिक्षा देना अगले मनुष्यो का एक स्वभाव है। (१३७) और हम पर कोई दुख नही पडने का (१३८) गरज कौम आद ने हूद को झुठलाया तो हमने उनको मार डाला। इसमे एक शिक्षा है। और हूक की जाति अक्सर ईमान लाने वाली न थे। (१३९) और पैगम्बर! तुम्हारा पालनकर्ता बडा कृपालु है। (१४०) (रुकू ७)

समूद ने पैगम्बरो को झुठलाया। (१४१) फिर उनके भाई सालेह ने उनसे कहा कि क्या तुम ईश्वर से नही डरते ? (१४२) मैं तुम्हारा अमानतदार पैगम्बर हू। (१४३) तो अल्लाह मे डरो और मेरा कहा मानो। (१४४) और मैं इस पर तुमसे कुछ मजदूरी नही चाहता और मेरी मजदूरी तो ससार के पालनकर्ता पर है। (१४५) क्या जो वस्तु यहाँ है। (१४६) यानी बागो और झरनो मे। (१४७) और खेतो

---

* लोगों को ऊंची-ऊंची इमारतें बनवाने का बड़ा शौक था।

** यानी जब अत्याचार करते हो तो कठोर हो जाते हों।

और खजूर मे जिनके गुच्छे मारे बोझ के टुट पड़ते हैं। (१४८) तुम इन्ही मे छोड़ दिये जाओगे। खुशी से पर्वतो को काट-काटकार घर बनाते हो। (१४९) तो ईश्वर से डरो और मेरा कहा मानो। (१५०) और सीमा से बढ जाने वालो के कहे मे न आ जाना, (१५१) और जो देशों मे झगडे डालते है। और ठीक करते हैं। (१५२) वह बोले तुम पर तो किसी ने जादू कर दिया है। (१५३) तुय भी हम ही जैसे आदमी हो और यदि सच्चे हो तो कोई चमत्कार ला दिखाओ। (१५४) सालेह ने कहा यह ऊटनी चमत्कार है। पानी पीने की एक एक दिन की बारी इसकी है और तुम्हारे पानी पीने को एक दिन* नियुक्त है। (१५५) और इसको किसी तरह की हानि न पहुचाना वरना वडे दिन का दण्ड तुमको आयेगा। (१५६) इस पर भी मनुष्यो ने उसकी एडी के ऊपर के हिस्से काट डाले, फिर पछताये। (१५७) आखिरकार उनको दण्ड ने पकड़ लिया। इनमे भी एक वडी शिक्षा है और सालेह जाति के बहुत-से मनुष्य विश्वास लाने वाले न थे। (१५८) और ऐ पैगम्बर! तुम्हारा पालनकर्ता बड़ा कृपालु है। (१५९) (रुकू ८)

इसी तरह कौम लूत ने पैगम्बरो को झुठलाया। (१६०) जब उनके भाई लूत ने उनसे कहा क्या तुम नही डरते। (१६१) मैं तुम्हारा अमानतदार पैगम्बर हूं। (१६२) तो अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानो। (१६३) और मैं इस पर तुमसे कुछ मजदूरी नही माँगता, मेरी मजदूरी तो ससार के पालनकर्ता पर है। (१६४) क्या तुम ससार के मनुष्यो मे से लडको पर दौडते हो** (१६५) और तुम्हारे पालनकर्ता

* हजरत सालेह की ऊंटनी को भागते देखकर दूसरे मवेशी भाग जाते थे, इसलिए यह ठहरी कि एक दिन ऊंटनी घाट पर जाय, दूसरे दिन और पशु जावे।

** यह जाति स्त्री का काम सुन्दर वालको से निकालती थी। अर्थात महा पाप करती थी।

ने जो तुम्हारे लिये स्त्रियाँ दी हैं उन्हें छोड देते हो बल्कि तुम सरकश कौम हो। (१६६) वह बोले लूत! यदि तुम इन बातो से बाज न आओगे तो देश से निकाल बाहर करेंगे। (१६७) लूत ने कहा कि मै तुम्हारे इस काम का शत्रु हू। (१६८) लूत ने प्रार्थना की कि ऐ मेरे पालनकर्ता! मुझको और मेरे घर वालो को इन अपवित्र कामो से जो यह मनुष्य करते हैं छुटकारा दे। (१६९) फिर हमने लूत को और उनके घर वालो को सबको छुटकारा दिया। (१७०) यदि लूत की बूढी औरत बाकी रही*। (१७१) फिर हमने बाकी मनुष्यो को हलाक कर मारा। (१७२) और इन पर पत्थर बरसाये। बुरा पत्थरो का बरसाना था जो इन मनुष्यो पर बरसा जो हमारे दण्ड से डराये गये थे। (१७३) इनमे निशानी है। और लूत की जाति के बहुधा मनुष्य तो विश्वास लाने वाले न थे। (१७४) और तुम्हारा पालनकर्ता बडा कृपालु है। (१७५) (रुकू ९)

इसी तरह वन के रहने वालो ने पैगम्बरो को झुठलाया। (१७६) जब शुऐब ने उनसे कहा क्या तुम ईश्वर से नही डरते? (१७७) मैं तुम्हारा अमानतदार पैगम्बर हूँ। (१७८) तो ईश्वर से डरो और मेरा कहा मानो। (१७९) और मैं इस पर तुमसे कुछ मजदूरी नही चाहता, मेरी मजदूरी तो ससार के पालनकर्ता पर है (१८०) और वस्तु पैमाने से नापकर दिया करो तो नाप भर कर दिया करो। मनुष्यो को हानि पहुचाने वाले न बनो। (१८१) और तौला करो तो तराजू की डडी सीधी रखकर तौला करो। (१८२) और मनुष्यो को उनकी वस्तु जो खरीदें कमी से न दिया करो और देश मे झगडा फैलाते न फिरो। (१८३) और उस ईश्वर से डरते रहो जिसने तुमको और तुमसे

* लूत को पहले ही ईश्वर के कोप आने का समाचार मिल चुका था। उन्होंने जब अपनी पत्नी से बस्ती बाहर निकल चलने को कहा तो उसने न माना और अन्त मे नगर-निवासियो के साथ नष्ट हो गई।

अगलो को पैदा किया। (१८४) वह बोले तुम पर तो किसी ने जादू कर दिया है। (१८५) और तुम तो हमारी तरह के एक आदमी हो और हम तुमको झूठा ही समझते हैं। (१८६) और सच्चे हो तो हम पर आकाश से एक टुकडा गिरा दो। (१८७) शुऐब ने कहा जो तुम कर रहे हो मेरा पालनकर्ता उसको खूब जानता है। (१८८) गरज उन मनुष्यो ने शुऐब को झुठलाया तो उनको सायबान* के दण्ड ने आ घेरा, बेशक सायबान ही का दण्ड था। (१८९) इसमे बेशक शिक्षा है और शुऐब के गृट के बहुधा मनुष्य विश्वास लाने वाले न थे। (१९०) और तुम्हारा पालनकर्ता बडा कृपालु है। (१९१)(रुकू १०)

और यह कुरान ससार के पालनकर्ता का उतारा हुआ है।(१९२) इसको जिब्राईल अमीन ने उतारा है। (१९३) तेरे दिल पर ताकि तू डराने वालो मे हो जाय। (१९४) साफ अरबी जबान मे।(१९५) इसकी खबर अगले पैगम्बरो की पुस्तको मे है। (१९६) क्या लोगो के लिए यह प्रमाण नही है कि इसराईल के पुत्रो मे विद्वान इस होन-हार से जानकार हैं। (१९७) और यदि हम कुरान को किसी ऊपरी जबान वाले पर उसकी जबान मे उतारते (१९८) और वह उसे इन अरब वालो को पढकर सुनाते तो वह उस पर ईमान न लाते।(१९९) इसी तरह के इन्कार को हमने अपराधियो के दिल मे जमा दिया है। (२००) जब तक दण्ड न देख लें इस पर विश्वास न लावेंगे।(२०१) वह दण्ड इन पर यकायक इनके सामने आ जायगी और इनको सूचना भी न होगी। (२०२) फिर कहेगे हमे कुछ समय मिल सकता है। (२०३) क्या यह मनुष्य हमारे दण्ड के लिए जल्दी मचा रहे है। (२०४) तो पैगम्बर! जरा देखो तो सही यदि हम कुछ वर्ष इनको

---

* बादल ऐसा छाया जैसा सायबान सर पर तान दिया जाये। इस बादल से पानी की जगह आग बरसी।

ससार मे लाभ उठाने दें। (२०५) फिर जिस दण्ड का इनसे प्रण किया जाता है वह उनके सामने आवेगा। (२०६) तो वह जो इन्होने ससार के लाभ उठा लिए इनके क्या काम आ सकते हैं। (२०७) और हमने किसी गाँव को नही मारा जब तक उनके पास डर सुनाने वाले पैगम्बर न आयें। (२०८) याद दिलाने को और हमारा काम अत्याचार करना नही हैं। (२०९) और इस कुरान को जैसा यह मनुष्य विचार करते हैं राक्षस लेकर नही उतरे। (२१०) और न यह काम उनके करने का है और न वह इसको कर सकते हैं। (२११) वह तो सुनने से दूर रखे गये हैं। (२१२) तो पैगम्बर ! तुम ईश्वर के साथ किसी दूसरे पूजित को न पुकारने लगना वरना तुम भी दण्ड में फस जाओगे। (२१३) और अपने पास के रिश्तेदारो को ईश्वर के दण्ड से डराओ। (२१४) और जो ईमान वालो मे से तेरे पीछे हो गया है उससे खातिरदारी के साथ पेश आओ। (२१५) यदि मनुष्य तेरा कहा न मानें तो कह दे कि मैं तुम्हारे कर्मो से बरी हू। (२१६) और ईश्वर बड़ा कृपालु है उस पर भरोसा रखो। (२१७) तो जो तुम नमाज मे खडे होते हो तो वह तुम्हारे खडे होने को देखता है (२१८) और नमाजियो मे तेरा फिरना देखता है। (२१९) बेशक वही सुनता, जानता है। (२२०) ऐ पैगम्बर ! इन मनुष्यो से कहो कि मैं तुमको बताऊ कि किस पर राक्षस उतरा करते हैं। (२२१) वह हर झूठे कुकर्मी पर उतरा करते हैं। (२२२) राक्षस सुनी सुनाई बात उन पर डाल देते हैं और उनमे बहुतेरे झूठे ही होते हैं। (२२३) कवि की बात पर वही चले जो गुम-राह हो। (२२४) क्या तूने न देखा कि यह कवि हरएक मैदान मे सिर मारते फिरते। (२२५) और ऐसी बातें कहा करते। (२२६) मगर जो मनुष्य ईमान लाये और उन्होने अच्छे काम किये और बहुताऽयत से ईश्वर का जिक्र किया और उन पर अत्याचार हुए पीछे बदला लिया और जिन्होंने मनुष्यों पर अत्याचार किये हैं उनको जल्दी मालूम हो जायगा करवट पर उलटते हैं। (२२७) (रुकू ११)

सूरे नम्ल

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ९३ आयतें और ७ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु और दयालु है। तो-सीन। यह कुरान यानी पुस्तक की कुछ आयतें हैं। (१) ने विश्वास वालों के लिए शिक्षा और खुशखबरी है। (२) नमाज, ज ात देते और परलोक का विश्वास रखते है। (३) जो मनुष्य परलोक का विश्वास नही रखते हमने उनके काम उन्हें अच्छे कर दिखाये तो यह लोग भटके फिरते हैं। (४) यही लोग हैं जिनको बुरी तरह का दण्ड होता है और यही लोग प्रलय में ज्यादा हानि मे रहेगे। (५) और तुझको तो कुरान एक चमत्कार वाले खबरदार से मिलता है । (६) जब मूसा ने अपने घरवालो से कहा कि मुझको आग दिखलाई दी है। मैं वहाँ से तुम्हारे पास कोई खबर या एक सुलगता अँगारा लाऊँगा ताकि तुम तापो। (७) फिर जब मूसा आग पास आये तो उनको आवाज आई कि वह जो आग में है और वह जो इस आग के आस-पास है बरकत वाला है और अल्लाह तमाम ससार का पालनकर्ता और पवित्र है. (८) ऐ मूसा मैं बडा चमत्कार वाला अल्लाह हूँ। (९) और अपनी लाठी डाल। तो जब मूसा ने देखा कि लाठी चल रही है जीवित साँप की तरह तो पीठ फेर कर भागे और पीछे न देखा। हमने बताया मूसा डरो मत, हमारे पास पैगम्बर नही डरा करते। (१०) यद्वि जिसने कोई कसूर किया हो फिर अपराध के बाद नेकी की तो मैं क्षमा करने वाला कृपालु हूँ। (११) और अपना हाथ अपनी छाती पर रख फिर निकालो तो वह बेरोग सफेद निकलेगा। फिरऔन और उसकी कौम के मनुष्यो की ओर यह नये चमत्कार हैं कि वे अन्यायी हैं। (१२) जो जब उनके पास हमारे आँखें खोल देने वाले चमत्कार आये तो कहने लगे कि यह तो जाहिर जादू है। (१३) और बावजूद कि उनके दिल

कबूल कर चुके थे। यदि उन्होने हेकडी और शेखी से उन्हें न माना तो ऐ पैगम्बर! देख झगडालुओ का कैसा अन्त हुआ। (१४) (रुकू १)

और हमने दाऊद और सुलेमान को शिक्षा दी थी और दोनो ने कहा कि ईश्वर का धन्यवाद है जिसने हमको अपने बहुत से विश्वास वाले मनुष्यो पर बडप्पन दी है। (१५) और सुलेमान दाऊद के वारिस हुए और कहा लोगो! हमको ईश्वर की तरफ से पक्षी की बोली सिखाई गई है और हमको हर तरह के सामान मिले, यह ईश्वर की प्रत्यक्ष कृपा है। (१६) और सुलेमान का लश्कर जिन्नो और मनुष्यो और चीटियो मे से जमा किये गये तो वह कतार बाँध-बाँध कर खडे किये जाते थे। (१७) यहाँ तक कि जब चीटियो, के मैदान मे पहुचे तो एक चीटी ने कहा कि चीटियो अपने बिलो मे घुस जाओ। ऐसा न हो कि सुलेमान और सुलेमान का लश्कर तुमको कुचल डाले और उनको खबर भी न हो। (१८) चीटी की इस बात से सुलेमान हँसे और कहने लगे कि ऐ मेरे पालनकर्ता! मुझको सामर्थ्य दे कि जैसी कृपा तूने मुझ पर और मेरे मा-बाप पर की हैं तेरी उन कृपाओ का धन्यवाद दूँ और ऐसे अच्छे काम करता रहू कि जिनको तू पसद करता है। तू मुझे अपने आशीर्वाद से अपने अच्छे मनुष्यो मे मिला ले। (१९) और सुलेमान ने चिडियो की हाजिरी ली तो कहा कि क्या कारण है जो मैं हुदहुद को नही देखता या वह गैरहाजिर है। (२०) मैं उसको अवश्य कठोर दण्ड दूँगा या उसे हलाल कर डालूगा या वह हमारे हुजूर मे कोई कारण (गैरहाजिरी की) बतायें। (२१) फिर थोडी देर बाद हुदहुद आ गया और कहने लगा मुझको एक ऐसा हाल मालूम हुआ है जो तुम्हे मालूम नही, और मैं शहर सबा की जाची खबर लाया हू। (२२) मैंने एक औरत को देखा जो वहाँ की रानी है और हर तरह के सामान राज्य उसको मिले है और उनके यहाँ बडा तख्त है। (२३) मैंने रानी और उनके लोगो को देखा कि ईश्वर को छोड कर सूरज को

शीश नवाते हैं और राक्षस ने उनके कामों को उन्हें अच्छा कर दिखाया है और उनको सीधी राह से रोक दिया है तो उनको नहीं सूझ पडता (२४) फिर ईश्वर ही के आगे क्यों नहीं शीश नवाते जो आकाश और पृथ्वी की छपी हुई चीजो को प्रत्यक्ष करता है और जो काम तुम छिपाकर करते हो या प्रत्यक्ष करते हो वह सब से जानकार है। (२५) अल्लाह के सिवाय कोई पूजित नही, सिर्फ वही बड़े तख्त का मालिक है। (२६) कहा अब देखूंगा कि तू सच्चा है या झूठा। (२७) यह हमारी लिखावट लेकर चला जा और इनको उनकी तरफ डाल दे। फिर उनसे हट जा, फिर देख कि वह लोग क्या उत्तर देते हैं। (२८) बोली * ऐ दरबारियो ! एक इज्जत का खत मेरी तरफ डाला गया है। (२९) यह सुलेमान की तरफ से है और शुरू अल्लाह के नाम से है जो बड़ा कृपालु दयावान है। (३०) और यह कि सबसे सरकशी न करो और आज्ञाकारी बनकर हमारे सामने चले आओ। (३१) (रुकू २)

बोली ऐ दरबारियो ! मेरे मामलों में अपनी सलाह दो। जब तक तुम मेरे सामने मौजूद न हो मैं किसी काम मे पक्की आज्ञा नही दिया करती। (३२) दरबारियो ने निवेदन किया कि हम ताकतवर और बड़े लड़नेवाले हैं और तुझे अख्तियार है जैसी चाहे आज्ञा दे। देखें तू क्या आज्ञा देती है। (३३) वह बोली राजा जब किसी शहर मे दाखिल होते हैं तो उसको खबर करते हैं और वहाँ के इज्जतदारो को बेइज्जत करते हैं, ऐसा ही करेंगे। (३४) और मैं उनकी तरफ नजर भेजकर देखती हूं कि दूत क्या उत्तर लेकर आते हैं। (३५) फिर जब सुलेमान के सामने नजर लेकर आया तो सुलेमान से कहा क्या तुम लोग माल से मेरी सहायता करते हो। जो कुछ ईश्वर ने मुझको दे रखा है ठीक है, बल्कि तुम अपने इनाम से प्रसन्न रहो। (३६) ऐ दूत ! जिसने

*यानी रानी सबा का जिसका नाम बिलकीस था

तुझे भेजा है उन्ही के पास लौट जा और हम ऐसा लश्कर लेकर उनपर चढाई करेंगे कि जिनका उनसे सामना न हो सकेगा और हम वहाँ से उनको अपमानित करके निकाल देंगे। (३७) सुलेमान ने कहा ऐ दरबारियो ! कोई तुम मे ऐसा भी है कि उस औरत का तख्त मेरे पास उठा लाये उससे पहले कि वह इस पर मुसलमान होकर हाजिर हो ? (३८) इस पर जिन्नो मे से एक बोला कि दरबार के समाप्त होने के पहले मैं वह तख्त ले आऊँगा। मैं उसके उठा लाने पर अमानतदार जोरावर हू। (३९) एक आदमी जिसको किताब की शिक्षा थी बोला कि मैं आख झपकने के पहले तख्त को तुम्हारे सामने ला दू गा। सुलेमान ने तख्त को अपने पास मोजूद पाया तो बोल उठा कि यह भी मेरे पालनकर्ता का अहसान है ताकि मुझे आजमाये कि मैं धन्यवाद देता हू या कृतघ्नता करता हू। और कोई ईश्वर को धन्यवाद देता है तो वह अपने लिए धन्यवाद देता है और कोई कृतघ्नता करता है तो मेरा पालनकर्ता बेपरवाह दाता है। (४०) सुलेमान ने आज्ञा दी कि मलिका की अक्ल अजमाई के लिए उस तख्त की सूरत बदल दो ताकि हम देखे कि वह पहचानती है या उनमे होती है जो राह पर नही आते (४१) फिर जब आई तो उससे कहा गया कि ऐसा ही तख्त है ? वह बोली गोया वही है और सुलेमान से बोली कि मुझे तो इससे पहले मालूम हो गया था और मैं मान गई थी। (४२) और वह ईश्वर के बजाय सूरज को पूजती थी, उससे उसको रोका गया, क्योकि वह काफिरो मे से थी। (४३) उससे कहा गया कि महल मे दाखिल हो, तो जब उसने महल को देखा तो उसको पानी का हौज समझी और दोनो पिंडलिया खोल दी। सुलेमान ने कहा यह तो शीश महल है जिसमे शीशे जडे है। बोली ऐ मेरे पालनकर्ता ! मैंने अपना ही नुकसान किया और अब मैं सुलेमान के साथ होकर अल्लाह दोनो जहान के पालनकर्ता पर विश्वास लाई। (४४) (रुकू ३)

और हमने जाती समूत की तरफ उनके भाई सालेह को पैगम्बर। बनाकर भेजा था कि ईश्वर की पूजा करो, तो सालेह के आते ही वह लोग दो फरीक हो गये और झगडने लगे। (४५) सालेह ने कहा भाइयो! भलाई से पहले बुराई के लिए क्यो जल्दी मचाते हो अल्लाह के सामने क्यो नही क्षमा माँगते, शायद तुम पर कृपा हो। (४६) वह बोले हमने तुझे और इन लोगो को जो तेरे साथ हैं बडा ही बुरा पाया है। सालेह ने कहा तुम्हारी बदकिस्मती ईश्वर की तरफ है। बल्कि तुम लोग जाँचे जा रहे हो (४७) और शहर मे नौ आदमी थे जो देश में झगड़ा करते और सलाह न करते थे। (४८) उन्होने कहा आपस मे ईश्वर की सौगन्ध खाओ कि हम जरूर सालेह को और उसके घर वालो को रात के समय जा मारेगे। फिर उसके वारिस से कह देगे कि सालेह के घर वालो के मारे जाने के समय हम मौजूद न थे और हम बिल्कुल सच कहते हैं। (४९) गरज वह एक दाँव चले और उनको खबर भी न हुई, (५०) तो ऐ पैगम्बर! देखा कि उनके दाँव का कैसा परिणाम हुआ कि हमने उनको और उनकी सब जाति को मार डाला (५१) अब यह कि उनके घर अन्यायियो से खाली पडे हैं। इसमे उनको जो जानते है शिक्षा है। (५२) और जो मनुष्य ईमान लाये और ईश्वर से डरते थे उनको हमने बचा लिया। (५३) और लूत ने जब अपनी जाति से कहा कि तुम बेशर्मी करते हो और देखे जाते हो*। (५४) क्या तुम औरतो को छोड़कर मर्दो पर ललचाकर दौडते हो? बात यह है कि तुम बेसमझ हो। (५५) तो लूत की जाति का इसके सिवाय और कुछ उत्तर न था कि लूत के घराने को अपनी बस्ती से निकाल बाहर करो। क्योकि यह मनुष्य बडे पवित्र बनना चाहते हैं। (५६) तो हमने लूतको और उनके खानदान के मनुष्यो को दण्ड से बचा लिया, मगर उनकी बीबी जिसकी तकदीर मे लिख चुके थे कि

---

* यानी जानते हो कि यह कैसा बुरा काम है।

वह पीछे रहने वालो मे होगी। (५७) और हमने उन पर पत्थर बरसाये, सो उन लोगो पर बरसे जो डराये जा चुके थे। (५८) (रुकू ४)

ऐ पैगम्बर! कहो ईश्वर का धन्ययाद है और ईश्वर के मनुष्यों को नमस्कार है जिनको उसने मान लिया। भला अल्लाह अच्छा है या जिनको ये शरीक ठहराते हैं? (५९)



बीसवाँ पारा (अम्मन खलक)

भला आकाश व पृथ्वी किसने पैदा किये और आकाश से तुम लोगों के लिए किसने पानी बरसाया, फिर पानी के जरिये से हमने अच्छे बाग पैदा किये। तुम्हारे बस की तो बात न थी कि तुम उनके पेडो को उगा सको। क्या ईश्वर के साथ कोई और पूजित है? मगर यही लोग राह से मुडते हैं। (६०) भला किसने पृथ्वी को ठहरने की जगह बनाया और उसके बीच मे नदी नाले बनाये और उसके लिए अटल पहाड बनाये और दो समुन्द्रो मे खास सीमा रक्खी। क्या अल्लाह के साथ कोई और पूजित है, कोई नही। मगर इन लोगो मे बहुधा नही जानते (६१) भला बेचैन की पुकार कौन सुनता है जब वह पुकारे कौन औरबुराई को टाल सकता देता है और तुमको पृथ्वी मे नायब बनाता है। क्या अल्लाह के साथ कोई पूजित है तुम बहुत कम चिन्ता करते हो। (६२) भला कौन तुम लोगो को पृथ्वी और पानी के अंधियारे मे दिखाता है और कौन अपनी कृपा के आगे हवाओ को मेह की खुशखबरी देने के लिए भेजता है। क्या अल्लाह के साथ कोई और पूजित है? ईश्वर उनके शिर्क से ऊचा है (६३) कौन है जो पहले नई सृष्टि पैदा करता है और उसी तरह बार-

वार पैदा करता है और कौन है जो तुम्हें आकाश व पृथ्वी से रोजी देता है। क्या अल्लाह के साथ और कोई पूजित है ? ऐ पैगम्बर ! इन लोगो से कहो कि अगर सच्चे हो तो अपनी दलील पेश करो। (६४) कहो कि जितनी पैदाइश आकाश व पृथ्वी में है उसमे से किसी को भी ईश्वर के सिवाय छिपे हुए भेद की खबर नही। मगर अल्लाह जानता है और वह नही जानते की किस समय उठाये जायेंगे। (६५) बात यह कि उन लोगो के विचार प्रलय के बारे हार गए बल्कि इसके बारे मे इनको संदेह है, यह लोग उससे अन्धे बने हुए हैं। (६६) (रुकू ५)

और जो लोग अविश्वास वाले हैं वह कहते हैं कि जब हम और हमारे बाप—दादा मिट्टी हो जायेंगे तो क्या हम फिर निकाले जायेंगे। (६७) पहले से भी हमारे और हमारे बाप-दादों के साथ और ऐसे वादे होते चले आये हैं, यह अगले लोगो के ढकोसले हैं। (६८) ऐ पैगम्बर ! इनसे कहो कि देश मे चलो-फिरो और देखो कि अपराधियो का कैसा अन्त हुआ। (६९) और इन पर कुछ दुख न करो और जैसी जैसी तदबीरें कर रहे हैं उनसे तगदिल न हो। (७०) और कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो यह वादा कब होगा। (७१) क्या आश्चर्य जिसकी तुम जल्दी मचा रहे हो वह तुम्हारे पास आ लगी हो। (७२) और यह कि तुम्हारा पालनकर्ता लोगो पर कृपा रखता है मगर अक्सर लोग धन्यवाद नही देते। (७३) और यह कि जैसी-जैसी बातें लोगों के दिलों में छिपी हुई हैं और जो कुछ यह प्रत्यक्ष करते है, तुम्हारे पालनकर्ता को मालूम है। (७४) आकाश और पृथ्वी मे ऐसी कोई छिपी हुई बात नही जो खुली किताब लोहमहफूज मे न लिखी हो।

* काफ़िर तुम्हारी बात नहीं मान सकते। वह ऐसे बहरे और अन्धे हैं कि किसी तरह उनको सीधा मार्ग दिखाया और बताया नहीं जा सकता।

(७५) यह कुरान इसराईल के बेटो की बहुधा बातो को जिनमे शिर्क डालते हैं, प्रत्यक्ष है। (७६) और यह कुरान विश्वास वालो के हक मे हिदायत और कृपा है। (७७) ऐ पैगम्बर तुम्हारा पालनकर्ता अपनी आज्ञा से इनके बीच निर्णय कर दे और वह सबका जानकार है। (७८) तो ऐ पैगम्मर अल्लाह ही पर भरोसा रक्खो, तुम राह पर रहो। (७९) तुम मुर्दो* को नही सुना सकते और न बहरो को आवाज सुना सकते हो। ऐसी हालत मे कि वह पीठ फेर कर भाग खडे हो। (८०) और न तुम अन्धो को गुमराही से राह दिखा सकते हो तुम तो बस उन्ही को सुना सकते हो जो हमारी आयतो का विश्वास रखते हैं। तो वह मान भी जाते है। (८१) और जब प्रलय इन लोगो पर आयेगी तो हम पृथ्वी से इनके लिए एक जानवर निकालेंगे, वह इनसे बातें करेगा कि लोग हमारी बातो का विश्वास नही रखते थे। (८२) (रुकू ६)

और जब हम हरएक गुट मे से उस एक दल को जमा करेंगे जो हमारी आयतो को झुठलाया करते थे फिर कतार में खड़े किये जायगे। (८३) यहाँ तक कि जब उपस्थित होवेंगे तो ईश्वर उनसे पूछेगा कि बावजूद कि तुमने हमारी आयतो को अच्छी तरह समझा भी न था क्यो तुमने उनको झुठलाया यह नही किया तो और क्या करते रहे। (८४) और यदि यह मनुष्य सरकशी करते रहे दण्ड उन पर पूरा हुआ और यह लोग बात भी न कर सकेंगे। (८५) क्या इन मनुष्यो ने नही देखा कि हमने रात को बनाया है कि उसमे आराम करें और दिन को बनाया देखने को। इसमें उन मनुष्यो को निशानिया हैं जो ईमान रखते हैं। (८६) और जिस दिन नरसिंहा फूका जायगा तो जो आकाश मे हैं और जो पृथ्वी मे हैं सब कांप जायेंगे, मगर जिसको ईश्वर चाहे वही धैर्य से रहेगा और सब उसके सामने झुके हाजिर होगे। (८७) और तू पहाडो को देखकर ख्याल करता है कि जमे हुए है। मगर यह प्रलय के दिन बादल की तरह उडे-उडे फिरेंगे। यह भी अल्लाह की कारीगरी है जिसने हर वस्तु को खूब कठोर बनाया है।

निस्सन्देह जो कुछ भी तुम करते हो वह उससे खबरदार हैं। (८८) जो मनुष्य अच्छे कर्म लेकर आयेगा तो उनको उससे बढकर अच्छा बदला मिलेगा और ऐसे मनुष्य उस दिन डर से छूटकर चैन मे होगे। (८९) और जो बुरे काम लेकर आवेगे वह औधे मुह नरक मे ढकेल दिये जावेगे तुमको उन्ही कर्मो की सजा दी जा रही है जो तुम करते थे। (९०) ऐ पैगम्बर! इन मनुष्यो से कहो कि मुझको यही आज्ञा मिली है कि वह शहर मक्का के स्वामी की पूजा करे जिसने उसको प्रतिष्ठा दी है और सब कुछ उसी का है और मुझे आज्ञा मिली है कि आज्ञाकारी रहू। (९१) और यह कि कुरान पढ-पढकर सुनाऊ तो जो मार्ग पर आ गया सो अपने ही भले को और जो गुमराह हुआ तो तुम कह दो कि मैं तो सिर्फ डराने वाला हूँ। (९२) और कहो कि ईश्वर की बडाई हो, वह जल्दी तुमको अपनी निशानियाँ दिखलायेगा और तुम उनको पहचान लोगे और जैसे-जैसे काम तुम लोगकर रहे तुम्हारा पालनकर्ता उनसे बेखबर नही। (९३) (रुकू ७)

सूरे कसस

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ८८ आयतें और ९ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो बडा कृपालु व दयावान है। तो-सीनमीम। (१) यह खुली पुस्तक की आयते हैं। (२) ऐ पैगम्बर हम उन लोगो के लिए जो विश्वास करते हैं मूसा और फिरऔन के सच्चे हाल को तेरे सामने सुनाते हैं। (३) फिरऔन देश मिस्र मे चढ रहा था और उसने वहाँ के लोगो के अलग-अलग जत्थे कर रक्खे थे। उनमे से एक

गुट इसराईल की सन्तान को कमजोर कर रक्खा था कि उनके पुत्रो को मरवा देता और बेटियो को जीवित रखता। वह झगड़ालुओ मे से था। (४) और हमारा विचार यह था कि जो मनुष्य देश मे कमजोर समझे गये थे उन पर नेकी करें और उनको सरदार बनायें और उनको राज्य का स्वामी बनायें। (५) और उनको देश मे जमावें और फिर-औन, हामान और उनके लश्कर को जिस बात का डर है वही उनके आगे लावें। (६) और हमने मूसा की माँ को आज्ञा भेजी कि उसको दूध पिलाओ फिर जब इनकी बाबत तुमको डर होवे तो इनको नदी में डाल दे और डर न करना और न दुख करना। हम इनको फिर तुम्हारे पास पहुँचा देंगे* और इनको पैगम्बरो मे से एक पैगम्बर बनावेंगे। (७) तो फिरऔन के लोगो ने उसे बहते को उठा लिया कि उनका शत्रु दुख पहुचाने का कारण हो। कुछ सन्देह नही कि फिरऔन और हामान और उनके सिपाहियो ने गलती की थी। (८) और फिरऔन की औरत अपने पति से बोली यह मेरी और तुम्हारी आँखो की ठण्डक है, इसको मार मत डालो, आश्चर्य नही कि हमारे काम आवे। वा इसको अपना पुत्र बना लें और उनको खबर न थी। (९) और मूसा की माँ का दिल बेचैन हो गया और वह जाहिर करने वाली ही थी कि मैं उसकी माता हू। हमने उसके दिल को कठोर कर दिया ताकि वह ईमान वालो मे रहे। (१०) और सन्दूक को नदी मे डालते

---

* फिरऔन को ज्योतिषियो ने बता दिया था कि इसराईल की सन्तान मे एक बच्चा होने वाला है जो तेरे को छिन्न-भिन्न कर देगा। इसीलिए उसने हर लडके की हत्या करनी आरम्भ कर दी थी।

मूसा की माँ ने मूसा को एक काठ के सन्दूक मे रखकर नहर मे बहा दिया। वह सन्दूक बहते-बहते फिरऔन के महल के पास आया। फिरऔर ने उसको निकलवाया और मूसा को अपने पुत्र के समान पाला।

समय मूसा की माँ ने मूसा की बहिन से कहा कि इसके पीछे-पीछे चली जा। तो वह उसको दूर से ऊपर की ओर देखती रही और फिरऔन के लोगो को खबर न हुई। (११) और हमने मुसा पर पहिले ही से धाय के दूध वन्द कर रक्खे थे। कि वह किसी की छाती मुह मे लेते ही न थे। इस पर मूसा की बहिन ने कहा कि हम तुमको एक घराने का पता बतावे कि वह तुम्हारे लिए इसका पालनकर्ता करेंगे और वह इसके हित के चाहने वाले हैं। (१२) फिर हमने मूसा को उसकी माता* के पास भेजा ताकि आँखें ठण्डी हो और उदास न रहे यह भी जान ले कि अल्लाह का प्रण सच्चा है परन्तु बहुत मनुष्य नही जानते। (१३) (रुकू १)

और जब मूसा अपती जवानी को पहुचे और सम्भले, हमने उसको आज्ञा और बुद्धि दी और सुकर्मियो का हम इसी तरह वदला दिया करते है कि दो मनुष्य आपस मे लड़ रहे हैं, एक तो उनकी जाति का है और एक उनके शत्रुओ मे था। तो जो मूसा की जाति का था, इसने उस आदमी के सामने जो उनके बैरियो मे था, सहायता माँगी। तो मूसा ने उस वैरी के घूंसा मारा और उसका काम तमाम कर दिया। फिर कहने लगे कि यह तो एक शैतानी का काम हुआ। कुछ सन्देह नही कि शैतान प्रत्यक्ष गुमराह करने वाला है। (१५) मूसा ने कहा कि ऐ मेरे पालनकर्ता ! मैंने अपने ऊपर अत्याचार किया, तू मेरा पाप क्षमा कर। ईश्वर ने उसका पाप क्षमा किया। वह वहुत क्षमा करने वाला दयालु है। (१६) मूसा ने कहा ऐ मेरे पालनकर्ता जैसी तूने मुझ पर कृपा की मैं आगे कभी अन्यायियो का साथी न

---

* मूसा को दूध पिलाने के लिये मूसा की माँ ही को चुना गया क्योंकि मूसा ने अपनी माँ के सिवाय और किसी दाई का दूध मुंह से नहीं लगाया।

हू गा। (१७) सुबह को डरते-डरते शहर मे गया : इतने मे क्या देखना है कि वही आदमी जिसने कल इनसे सहायता माँगी थी आज फिर इसको पुकार रहा है। मूसा ने उससे कहा कि इसमे सन्देह नही तू तो प्रत्यक्ष खराब राह पर है। (१८) फिर मूसा ने उस किब्ती को जो इसका और उस फरियाद करने वाले दोनो का शत्रु था, पकडना चाहा, तो इसराईल की सन्तान को शक हुआ कि मुझको पकडना चाहते हैं और वह चिल्ला उठा कि मूसा जिस तरह तूने कल एक आदमी को मार डाला, क्या मुझको भी मार डालना चाहता है। बस तू यह चाहता है कि देश मे अत्याचार करता फिरे और मेल करा देने वाला नही बनाना चाहता। (१९) और शहर के परले सिरे से एक मनुष्य दौड़ता हुआ आया, उसने सूचना दी कि बडे-बडे आदमी तुम्हारे बारे मे सलाहें कर रहे है। कि तुमको मार डाले तुम निकल जाओ, मैं तेरे भले की कहता हूं। (२०) यद्यपि मूसा नगर से निकल भागे और डरते-डरते जाते थे कि देखें क्या होता है और मूसा ने प्रार्थना की ऐ मेरे पालनकर्ता! अत्याचारी मनुष्यो से छुटकारा दे। (२१) (रुकू २)

और जब मदीयन की ओर मुँह किया तो कहा मुझको अपने पालनकर्ता से आशा है कि वह मुझको सीधी राह दिखायेगा। (२२) और जब नगर मदायन के कुए पर पहुचा तो देखा कि लोग पानी पिला रहे हैं। और देखा उसने अलग दो औरतें अपनी बकरियो को रोके खडी हैं। मूसा ने उनसे पूछा कि तुम्हारा क्या प्रयोजन है वह बोलीं जब तक दूसरे चरवाहे अपने जानवरो को पानी पिलाकर हटा न ले जाय, हम अपनी बकरियो को पानी पिला नही सकती और हमारे पिता बूढे हैं। (२३) यह सुनकर मूसा ने उनके लिए पानी खींच कर उनकी बकरियो को पिला दिया, फिर हट कर छाया मे जा बैठे और कहा कि ऐ मेरे पालनकर्ता! तू अपनी कृपा के थाल मे इस समय जो मुझको भेज दे, मैं उसका चाहने वाला हू। (२४) इतने मे उन दो औरतों मे एक उनकी तरफ शरमाती चली रही है। उसने मूसा से कहा कि मेरे

पिता तुझे बुला रहे हैं* कि वह जो तूने हमारे लिए हमारी बकरियो को पानी पिला दिया था, तुमको उसकी मजदूरी देगे। जब मूसा उस बुड्ढे के पास पहुचा और उनसे हाल बताया तो उन्होने कहा, डर न कर, तू अत्याचारी मनुष्य से बच गया। (२५) फिर उन दो औरतो मे से एक ने अपने पिता से कहा कि ऐ पिता! तू इनको नौकर रख ले क्योकि अच्छे से अच्छा आदमी जो तू नौकर रखना चाहे मजबूत ईमानदार होना चाहिए। (२६) उस बुड्ढे ने मूसा से कहा कि मैं चाहता हू कि अपनी इन दो बेटियो मे से एक को तुम्हारे साथ व्याह दू। इस वचन पर तुम आठ वर्ष मेरी नौकरी करो और यदि तुम दस वर्ष पूरे करो तो तुम्हारी भलाई है और मैं तुझे कष्ट नही देना चाहता और तू मुझको ईश्वर ने चाहा तो भला आदमी पायेगा। (२७) मूसा ने कहा यह बातें मेरे और तेरे बीच हो चुकी मेरी मरजी है दोनो वादो मे से कोई सा भी वादा पूरा करूँ। मुझ पर किसी तरह का जोर नही और जो मेरे और तेरे बीच मे वचन हुआ है, अल्लाह उसका साक्षी है। (२८) (रुकू ३)

फिर जब मूसा ने वादा पूरा किया और अपनी स्त्री को लेकर चल दिया तो तूर पहाड की ओर से इसको एक आग दिखाई दी मूसा ने अपने घर के मनुष्यो से कहा कि तुम इसी स्थान ठहरो, मुझको आग दिखाई दी है। शायद वहा से तुम्हारे पास कुछ खबर ले आऊँ या आग की एक चिनगारी लेता आऊं, ताकि तुम लोग तापो। (२९) फिर जब मूसा आग के पास पहुँचे तो उस पवित्र स्थान मैदान के दाहिने किनारे पेड से उसे आवाज सुनाई दी कि मूसा हम सब संसार के पालने वाले अल्लाह हैं। (३०) और यह कि तुम अपनी लाठी जमीन पर

---

* यह दोनों लड़कियाँ हजरत शुऐब की पुत्रियाँ थीं। जब उन्होंने अपने पिता से मूसा के पानी भर कर देने का हाल बताया, तो उन्होंने मूसा को अपने पास बुला भेजा।

डाल दो। तो जब लाठी को डाला और उसको इस तरह चलते हुए देखा कि गोया वह साँप है तो पीठ फेर कर भागा और पीछे को न देखा। हमने बताया मूसा आगे आओ और डर न करो। तू बेखटके है। (३१) अपना हाथ अपने गिरेबान के अन्दर रक्खो और फिर निकलो तो वह बिना किसी बुराई के सफेद निकलेगा। डर दूर हो जाने के लिए अपनी भुजा अपनी ओर सिकोड ले। लाठी और सफेद हाथ यह दोनो चमत्कार ईश्वर के दिये हुए हैं। जो तुम्हारी मारफत फिरऔन और उसके दरबारियो की तरफ भेजे जाते है क्योकि वे अवज्ञाकारी है। (३२) मूसा ने कहा ऐ मेरे पालनकर्ता! मैंने उनमे से एक मनुष्य को मार दिया है। डर है कि मुझे मार न डालें। (३३) और मेरे भाई हारू जिसकी जबान मुझसे ज्यादा साफ हैं, सो उसको मेरे सहायता के लिए भेज कि वह मुझे सच्चा करे। मुझको डर है कि फिरऔन के मनुष्य मुझको झुठलायेंगे। (३४) बताया कि मैं तेरे भाई को तेरा सहायक बनाऊगा और तुम दोनो को ऐसी जीत देंगे कि फिरऔन के मनुष्य तुम तक पहुच न सकेंगे। तुम दोनो और जो तुम दोनो की पैरवी करें विजयी होगे। (३५) फिर जब मूसा खुले हुए चमत्कार लेकर उनके पास पहुचा वह कहने लगे यह बनाया हुआ जादू है और हमने अपने अगले बाप-दादो से ऐसी बातें नही सुनी। (३६) और मूसा ने कहा कि जो आदमी ईश्वर की तरफ से सूझ की बात लेकर आया है और जिसका अन्तिम परिणाम भला होगा और मेरे पालनकर्ता को खूब मालूम है। निस्सन्देह अन्यायियो का भला न होगा। (३७) फिरऔन ने कहा दरबारियो, मुझको तो अपने सिवाय तुम्हारा कोई ईश्वर मालूम नही। ऐ हामान* तू हमारे लिए मिट्टी की ईंटो मे आग लगा और हमारे लिए एक महल बनवा कि हम उस पर चढकर मूसा के ईश्वर को झांकें और हम मूसा को झूठा ही समझते हैं। (३८) और

* हामान फिरऔन का प्रधान मन्त्री था। इसी के कहने से फिरऔन बेगार लिया करता था।

फिरऔन और उसके लश्करो तथा देशो मे बहुत सिर उठाया और उन्होने ऐसा समझा कि वह हमारी तरफ लौटकर नही लाये जायंगे। (३९) तो हमने फिरऔन और उसके लश्करो को घर पकड़ा और उनको समुद्र मे फेक दिया, सो देख अत्याचारियो का कैसा परिणाम हुआ। (४०) और हमने उनको सरदार किया कि नरक की तरफ बुलाते रहें और प्रलय के दिन इनको सहायता मिलने की नही। (४१) और हमने इसे ससार मे उनके पीछे फटकार लगा दी और प्रलय के दिन तो उनका बुरा हाल होना है। (४२) (रुकू ४)

और अगले ग्रोहो के मार डाले पीछे हमने मूसा को किताब तौरात दी जिससे लोगो को सूझ हो और राह पकड़ें और कृपा हो, शायद वे शिक्षा पावे। (४३) और पैगम्बर जिस समय हमने मूसा की आज्ञा भेजी तू तूर के पश्चिम ओर न था और तू देखने वालो मे न था। (४४) लेकिन हमने बहुत से गुट निकाल खड़े किये और उन पर बहुत सी उम्रे गुजर गईं और न तुम मदिनन के लोगो मे रहते थे कि उनको हमारी आयतें पढ-पढ़ कर सुनाते परन्तु हम पैगम्बर भेजते रहे हैं। (४५) और तू तूर के पास उस समय न था जबकि हमने मूसा को बुलवाया था बल्कि तेरे पालनकर्ता का कृपा है कि तू उन लोगो को डरावे जिनके पास तुमसे पहले कोई डरानेवाला नही आया। शायद यह लोग शिक्षा पकड़ें। (४६) और ऐसा न हो कि इन पर अपने ही करतूत के बदले मे कोई आफत आ पड़े तो कहने लगें ऐ मेरे पालनकर्ता तूने मेरे पास कोई पैगम्बर क्यों न भेजा जिस से हम तेरी आज्ञा की पैरवी करते और ईमान वालो मे होते। (४७) फिर जब हमारी तरफ से ठीक बात उनके पास पहुंची तो कहने लगे कि जैसे चमत्कार मूसा को मिले थे ऐसे ही इस पैगम्बर को क्यो नही मिले ? क्या जो चमत्कार पहले मूसा को मिले थे लोग उनके मना करने वाले नही हुए थे ? उन्होंने कहा था कि मूसा और हारूं दोनो जादूगर हैं और एक दूसरे के साथी हैं और कहा कि हम दोनों को नही मानते। (४८)

पैगम्बर ! इन लोगो से कहो कि अगर तुम सच्चे हो तो ईश्वर के यहाँ से कोई किताब ले आओ जो इन दोनो से हिदायत मे बढकर हो, मैं उस पर चलूँ। (४६) तो अगर यह लोग तेरे कहने के अनुसार न कर दिखाये तो जान लो कि अपनी बुरी चाहो पर चलते हैं और उससे बढ़कर गुमराह कौन है कि ईश्वर विना राह बताये अपनी चाह पर चले अल्लाह अन्यायियो को राह नही दिखाता। (५०) (रुकू ५)

और हम बराबर लोगो पर आयतें आज्ञायें भेजते रहे हैं। शायद वह शिक्षा पकडें। (५१) जिन मनुष्यो को कुरान से पहले हमने किताब दी वह इस पर ईमान ले आते है। (५२) और जब उनको कुरान सुनाया जाता है तो बोल उठते हैं कि हमको तो इसका विश्वास आ आ गया कि हमारे पालनकर्ता की तरफ से भेजा हुआ ठीक है। हम तो इससे पहले के आज्ञा मानने वाले हैं। (५३) यही लोग हैं जिनको इनके सब्र के बदले दोहरा बदला दिया जायगा और नेकी से बदी का बदला करते हैं और हमने जो इनको दिया है उसमे से खर्च करते हैं। (५४) और जब वेहूदा बात सुनते हैं तो उससे किनारा पकडते हैं और कहते है कि हमारे काम हमको और तुम्हारे काम तुमको हैं हम-तुम दूर ही से सलाम करते हैं। हम बेसमझो को नही चाहते। (५५) ऐ पैगम्बर तू जिसको चाहे आज्ञा नही दे सकता बल्कि अल्लाह जिसको चाहता है आज्ञा देता है और वही राह पर आने वालो से खूब जानकार है। (५६) और लोग कहते हैं कि अगर हम तेरे साथ सच्चे दीन की पैरवी करें तो हम अपनी जगह से उचक जायें। क्या हमने उनको अदनवाले मकान मे जहाँ चैन है जगह नहीं दी कि हर तरह से फल यहाँ खिंचे चले आते हैं। इनकी रोजी हमारे यहाँ से है। मगर वह बहुधा नही जानते। (५७) और हमने बहुत सी बस्तियाँ मार डाली जो अपनी रोजी मे इतरा चली थीं। तो यह उनके घर है जो उनके पीछे आबाद नहीं हुऐ सिवाय थोडो के और हम ही वारिस हुऐ। (५८) और जब तक तेरा पालनकर्ता किसी बस्ती मे पैगम्बर भेज दे और वह उनको

हमारी आयतें पढ़कर न सुना दें तब तक वह बस्तियो को मार नहीं सकता और हम बस्तियो को तभी मार डालते हैं जबकि वहाँ के लोग पापी हो जाते है। (५६) और जो कुछ तुमको दिया गया है सासारिक जीवन मे बर्तने के लिए हैं और यहा की शोभा है और जो अलाह के यहाँ है वही बढ़कर है और वही स्थायी रहने वाला है, क्या तुम लोग नही समझते। (६०) (रुकू ६)

भला वह आदमी जिसे हमने अच्छा प्रण दिया और वह उसको मिलने वाला है क्या उसके बराबर है जिसे हमने सँसार का बर्तना बर्ता लिया फिर वह प्रलय के दिन पकड़ा हुआ आया। (६१) और जिस दिन ईश्वर काफिरो को बुलाकर पूछेगा कि जिन लोगो को तुम हमरे साझी समझते थे कहाँ है। (६२) जिन पर बात साबित हुई बोल उठेंगे कि हमारे पालनकर्ता ! यह वही मनुष्य हैं जिनको हमने बहकाया जिस तरह हम बहके थे इसी तरह हमने उनको भी बपकाया। हम तेरे सामने इन्कार करते हैं यह लोग हमको नही पूजते थे। (६३) और कहेंगे कि अपने शरीको को बुलाओ। फिर यह लोग उनको बुलायेंगे तो वह पूजित इनको उत्तर न देंगे और दण्ड कोदेख लेंगे और पछतायेंगे कि हम सच्ची राह पर होते। (६४) और जिस दिन ईश्वर काफिरों को बुलाकर पूछेगा कि पैगम्बरो को तुमने क्या उत्तर दिया। (६५) तो उस दिन उनको कोई बात न सूझ पड़ेगी और बह आपस मे पूछ-ताछ भी न कर सकेंगे। (६६) सो जिसने क्षमा की और ईमान लाया और अच्छे काम किये तो आशा है कि ऐसे मनुष्य मुक्ति पाने वाले हो। (६७) और ऐ पैगम्मर तेरा पालनकर्ता जो चाहता है पैदा करता और चुन लेता है चुनना लोगो के हाथ मे नही है। अल्लाह पवित्र है और इनके पूजितो से ऊँचा है। (६८) और जो यह लोग अपने दिलो में छिपाते और जो जाहिर करते हैं तेरा पालनकर्ता उनको खूब जानता है। (६९) और वही अल्लाह है कि उसके शिवाय कोई पूजित नही। संसार और प्रलय मे उसी की तारीफ है और उसी का साम्राज्य है

श्रौर उसी की तरफ तुम लोगो को लौटकर जाना है। (७०) ऐ पैगम्बर कहो कि देखो तो कि अगर अल्लाह प्रलय के दिन तक लगातार तुम पर रात किये रहे तो अल्लह के सिवाय कौन है जो तुम्हार लिए रोशनी ले आये। क्या तुम नही सुनते। (७१) ऐ पैगम्बर! इनसे कहो कि अगर अल्लाह प्रलय के दिन तक लगातार तुम पर दिन ही बनाये रहे तो अल्लाह के सिवाय कौन है जो पुम्हारे लिए रात लावे जिसमे चैन पाओ। क्या तुम लोग नही देखते। (७२) और अपनी कृपा से तुम्हारे लिए रात और दिन को बनाया है ताकि तुम रात मे चैन पाओ और उसकी कृपा के ढूंढने मे लगे रहो। शायद तुम कृतज्ञ हो। (७३) और जिस दिन ईश्वर मुशरिको को बुलाकर पूछेगा कि कहाँ है मेरे शरीक जिनको तुम दावा करते थे। (७४) और हर एक गिरोह मे हम एक साक्षी यानी पैगम्बर को अलग करेगे फिर कहेंगे कि अपनी दलील पेश करो तब जानेंगे कि अल्लाह की बात सच्ची है और जो बातें बनाते थे उनसे गुम होजायगी। (७५) (रुकू ७)

कारून मूसा की जाति मे से था। फिर वह उन पर अत्याचार करने लगा और हमने इनको इतना धन दे रक्खा था कि कई जोरदार मनुष्य उसकी कुन्जिया कठिनता से उठा सकते थे। तब उसकी जाति ने उससे कहा इतरा मत क्योकि अल्लाह इतराने वालो को नही चाहता (७६) और जो तुझको ईश्वर ने दे रक्खा है उससे अन्त के घर की फिक्र कर और ससार मे जो तेरा भाग गसको मत भूल और जिस तरह अल्लाह ने तेरे साथ भलाई की है तू भी भलाई कर और देश मे झगडा चाहने वाला न हो। अल्लाह झगडा करने वालो को पसद नही करता (७७) कारून बोला यह तो मुझको अपनी लियाकत से मिला है, क्या यह विचार न किया कि इससे पहले ईश्वर कितने गिरोहो का नाश कर चुका जो इस करून से ज्यादा बल और धन रखते थे और पापियों से उनके पाप न पूछे जायेंगे। (७८) फिर कारून अपनी ठसक से अपनी

जाति पर निकला तो जो लोग संसार के जीवन के चाहने वाले थे कहने लगे कि जैसा कुछ कारून को मिला है हमको भी मिले बेशक कारून बड़ा भाग्यवान है। (७९) और जिन लोगो को समझ मिली थी, बोल उठे कि तुम्हारा सत्यानाश हो, तो आदमी ईमान लाया और उसने सुकर्म किये उसके लिए ईश्वर का सवाब कारून के माल से बहुत है और यह बात सब्र करने वालों के लिए है। (८०) फिर हमने कारून और उसके घर को जमीन मे धसा दिया और, ईश्वर के सिवाय कोई गिरोह उसकी सहायता को न आया और न अपने लिए बचा सका। (८१) और जो लोग कल उस जैसे होने की इच्छा करते थे सुबह उठकर कहने लगे। अरे अल्लाह ही अपने सेवको मे से जिसकी रोजी चाहे बढ़ा दे और जिसको चाहे तंग करे। अगर ईश्वर हम पर कृपा न करता तो हमको भी धँसा देता। अरे काफिरो का भला नही होता। (८२) (रुकू ८)

यह परलोक का घर है। हमने उन लोगो के लिए कर रक्खा है जो संसार मे शेखी और झगड़ा नहीं चाहते और सयमियो का अच्छा परिणाम है। (८३) जो आदमी सुकर्म करे उसको उससे बढकर फल मिलेगा और जो कुकर्म करेगा तो जिन लोगो ने जैसा बुरा किया है वैसा ही फल पायेंगे (८४) वह ईश्वर जिसने कुरान को तुम पर कर्तव्य ठहराया है जरूर तुमको ठिकाने से लगा देगा ऐ पैगम्बर ! इनसे कहो कि मेरा पालनकर्ता जानता है कि कौन सच्चा धर्म लेकर आया है और कौन प्रत्यक्ष गुमराही मे है। (८५) और तुम्हे क्या आशा थी कि तुम पर किताब उतारी जायगी। मगर तेरे पालनकर्ता की कृपा से दी गई। तू काफिरो का साथी न हो। (८६) और ऐसा न हो कि जब ईश्वर की आज्ञा तुम पर उतर चुकी है उसके बाद यह आदमी तुमको उनसे रोकें और अपने पालनकर्ता की तरफ मनुष्यो को बुलाये चले आओ और मुशरिकों मे न हो। (८७) और अल्लाह के साथ

किसी दूसरे पूजित को न पुकारो। उसके सिबाय कोई और पूजित नही। उसकी जात के सिवाय सब चीजें मिटने वाली हैं उसी का साम्राज्य है और उसी की तरफ तुमको लौटकर जाना है। (८८) (रुकू ६)



सूरे अन्कबूत

मक्के में अवतरित इसमें ६९ आयतें और ७ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो दयावाला कृपालु है। अलिफ-लाम-मीम। (१) क्या लोगो ने यह समझ रखा है कि इतना कहने पर छूट जयेंगे कि हम ईमान ले आये और उनको आजमाया न जायगा। (२) और हमने उन लोगो को आजमाया था जो इनसे पहले थे, पस ईश्वर को चाहिए कि सच्चे भी मालूम हो जायं और झूठे भी मालूम हो जायें। (३) क्या जो लोग काम करते है उन्होने समझ रक्खा है कि हमारे काबू से बाहर हो जायेंगे। यह लोग क्या बुरी तजवीज करते हैं। (४) जिसको अल्लाह से मिलने की उम्मेद हो तो ईश्वर का समय जरूर आनेवाला है। और वह सुनता जानता है (५) और जो महनत उठाता है वह अपने ही लिए मेहनत उठाता है। ईश्वर को ससार के लोगो की परवाह नही है। (६) और जो मनुष्य ईमान लाये और उन्होने कुकर्म किये हम जरूर उनके पाप उनसे दूर कर देंगे और इनको अच्छे से अच्छे कामो का फल देंगे। (७) और हमने आदमी को अपने माता पिता के साथ अच्छा बर्ताव करने की आज्ञा दी और अगर माता-पिता जोर दे कि तू किसी को हमारा साझी ठहरा जिसकी तेरे पास कोई

प्रमाण नहीं तो तू इनका कहा न मानना। तुमको हमारी तरफ लौट कर आना है फिर जो तुम करते हो हम तुमको बता देंगे। (८) और जो ईमान लाये और उन्होने सुकर्म किये हम उनको नेक मनुष्यों मे प्रवेश करेंगे। (९) और कुछ मनुष्य ऐसे भी हैं जो कहते कि हम ईश्वर पर ईमान लाये। फिर जब उनको ईश्वर के मार्ग मे दुख पहुंचता है तो मनुष्यो के दुख को ईश्वर के दण्ड के बराबर ठहराते है और अगर तेरे पालनकर्ता की तरफ से सहायता पहुंचे तो कहने लगते हैं कि हम तुम्हारे साथ थे। भला जो कुछ संसार के दिलों मे है, क्या ईश्वर उनसे जानकार नही (१०) और जो लोग ईमान लाये हैं अल्लाह उनको जान लेगा और जान लेगा उनको धोखेबाज हैं। (११) और काफिर ईमान वालों से कहते हैं कि हमारे कायदे पर चलो और तुम्हारे पाप हम उठायेंगे हालांकि यह लोग जरा भी उनके पाप नहीं उठा सकते और यह झूठे हैं। (१२) मगर हाँ अपने बोझ उठायेंगे और अपने बोझो के साथ और भी बोझा उठायेंगे और जैसी-जैसी लफटबाजियाँ यह मनुष्य करते रहे हैं प्रलय के दिन इनके पूछा जायगा। (१३) (रुकू १)

और हमने नूह को उनकी जाति के पास भेजा तो वह पचास वर्ष कम हजार वर्ष उनमें रहे, फिर* उनको तूफान ने पकड़ लिया और वह पापी थे। (१४) फिर हमने नूह को और जो नाव मे थे उनको तूफान से बचा दिया। (१५) और हमने इसको सारे ससार के लिए शिक्षा बना दी। और इब्राहीम ने जब अपनी कौम से कहा कि ईश्वर की पूजा करो और उससे डरो यह बढ़ कर हैं अगर तुम समझ रखते हो। (१६) तुम जो ईश्वर के सिवाय मूर्ती की पूजा करते हो और झूठी-झूठी बातें बनाते हो। ईश्वर के सिवाय जिनकी तुम पूजा करते

* कहते हैं कि नूह १४०० वर्ष जीवित रहे। जब उनकी आयु ९५० वर्ष की हुई तो एक भयंकर तूफान आया जिसमें पृथ्वी में डूब गई।

तुम्हारी रोजी के मालिक नही हैं। सो रोजी ईश्वर ही से मांगो और उसी की पूजा करो और उसी को धन्यवाद दो और उसी की ओर लौटकर जाना है (१७) और यदि तुम झुठलाओगे तो तुमसे पहिले बहुत सगतें अपने पैगम्बरो को झुठला चुकी हैं और पैगम्बर के जिम्मे तो ईश्वर की आज्ञा है साफ तौर पर पहुचा देना है। (१८) क्या मनुष्यो ने नही देखा कि ईश्वर किस तरह सृष्टि को पहली बार पैदा करके फिर उसी तरह की सृष्टि बार-बार पैदा करता रहता है। यह अल्लाह के लिये एक साधारण बात है। (१९) समझाओ कि तुम देश मे चलो फिरो और देखो कि ईश्वर ने किस तरह पहली बार सृष्टि को पैदा किया। फिर ईश्वर आखिरी उठाना भी उठायेगा। बेशक अल्लाह हर वस्तु पर शक्तिमान है। (२०) जिसे चाहे दण्ड दे और जिस पर चाहे कृपा करे और तुम उसकी तरफ लौटकर जाओ। (२१) और तुम न तो पृथ्वी मे ईश्वर को हरा सकते हो और न आकाश मे और ईश्वर के सिवाय न कोई तुम्हारे काम का सभालने वाला होगा न साथी होगा। (२२) (रुकू २)

और जो मनुष्य ईश्वर की आयतो को और उससे मिलने को नहीं जानते वे हमारी कृपा से निराश हुए हैं और उनको दुखदाई दण्ड है। (२३) बस इब्राहीम की कौम के पास इसके अलावा उत्तर न था कि इसको मार डालो या जला दो। चुनाचे उनको आग मे फेंक दिया यदि ईश्वर ने उसको आग से बचा दिया। इसमे बडे पते हैं उन लोगो को जो ईमान रखते हैं। (२४) और इब्राहीम ने कहा कि तुमने जो ईश्वर के सिवाय मूर्तियो को मान रखा है केवल ससार के जीवन मे आपस की मित्रता प्यार के विचार से, फिर प्रलय के दिन तुममे से एक का एक इन्कार करेगा और एक लानत करेगा और तुम सबका ठिकाना नरक होगा और मूर्ती मे से कोई भी तुम्हारा सहायक नही होग, (२५) इस पर केवल लूत इब्राहीम पर ईमान लाये और इब्राहीम ने कहा कि

मैं तो देश छोडकर अपने पालनकर्ता की तरफ निकल जाऊंगा वह बडा चमत्कार वाला है। (२६) और हमने इब्राहीम का पुत्र इसहाक और याकूब दिया और उनके कुटुम्ब मे पैगम्बरी और पुस्तक को जारी रखा और हमने इब्राहीम को संसार मे भी उनका बदला दे दिया और प्रलय मे भी वह नेको मे हैं। (२७) और लूत को भेजा जब उन्होने अपना कौम से कहा कि बेशर्मी का काम करते हो जो तुमसे पहले ससार के मनुष्यों मे से किसी ने नही किया। (२८) क्या तुम लडको पर गिरते और मार्ग मारते और अपनो मजलिसो में बुरे काम करते हो। उस लूत की कौम का यही उत्तर था कि अगर तू सच्चा है तो हम पर ईश्वर का दण्ड ला। (२९) लूत ने कहा कि ऐ मेरे पालनकर्ता! झगड़ालु लोगो के मुकाबिले मे मेरी सहायता कर। (३०) (रुकू ३)

और जब हमारे फरिश्ते इब्राहीम के पास शुभ सन्देश लेकर आये तो उन्होंने इब्राहीम से कहा कि हम उस बस्ती के रहने वालो का नाश कर देंगे क्योकि इसके मनुष्य झगडालु हैं। (३१) इब्राहीम ने कहा कि उसमे लूत भी है। वह बोले कि जो मनुष्य उसमे हैं हमे खूब मालूम है। हम लूत को और उनके घर वालो को बचा लेंगे यदि लूत की स्त्री पीछे रह जाने वालों मे होगी। (३२) और जब हमारे देवदूत लूत के पास आये तो लूत उनसे अप्रसन्न हुआ और दिल दुखाया। देवदूतो ने कहा डर न कर और उदास न हो। हम तुझको और तेरे घर के लोगों को बचा लेंगे यदि तेरी स्त्री रह जाने वालो मे रहेगी। (३३) हम इस बस्ती के लोग जैसे कुकर्म करते रहे है उसके दण्डमे इन पर एक आकाश से आफत उतारने वाले हैं। (३४) और हमने उन मनुष्यो के लिए जो अक्ल रखते हैं उस बस्ती का जाहिरा निशान छोड रखा है। (३५) और हमने मदियन की तरह उनके भाई शुऐब को भेजा तो उन्होने कहा कि भाइयो! ईश्वर की पूजा करो और अन्त का विचार रखो और देश में झगडा फैलाते न फिरो। (३६) तो उन्होने शुऐब को झुठलाया। बस भूचाल ने उनको पकड़ा और सुबह को अपने घरो मे

बैठे रह गये (३७) और हमने कौम आद और समद को मेट दिया और तुमको उनके घर दिखाई देते हैं और राक्षस ने उनके लिए जो वह करते थे अच्छा कर दिखाया था और मार्ग से रोका था हालांकि वह सूझ-बूझ के लोग थे। (३८) और हमने कारून और फिरऔन और हामान को मिटा दिया और मूसा उनके पास खुले-खुले चमत्कार लेकर आये। वह देश मे घमण्ड करने लगे थे और हमसे जीतने वाले न थे। (३९) तो हमने सबको उनके पाप मे धर पकडा। चुनाँचे उनमे से कोई तो वह थे जिन पर हमने पत्थर बरसाये कौम आद, कोई उनमे से कोई थे जिनको बडे जोर की आवाज ने पकडा जैसे समूद और उनमे से कोई वह थे जिनको हमने जमीन मे धसाया जैसे कारून कोई उनमे से वह थे जिनको डुबो दिया जैसे फिरऔन हामान। और ईश्वर ऐसा न था कि उन पर अत्याचार करता यदि वह अपने ऊपर आप अत्याचार किया करते थे। (४०) जिन लोगो ने ईश्वर के सिवाय दूसरे काम सम्भालने वाले बना रखे है उनकी मिसाल मकडी-जैसी* है कि उसने घर बनाया और सब घरो मे बोदा मकडी का घर है, यदि यह लोग समझते। (४१) जिनको ईश्वर के सिवाय यह लोग पुकारते है वह जानता है और वह बडा चमत्कारिक है। (४२) और हम यह उदाहरण मनुष्यो के लिए बताते है। और समझदार ही इनको समझते हैं। (४३) ईश्वर ने आकाश पृथ्वी बनाई। इसमे ईमान वालो के लिए निशानी है। (४४) (रुकू ४)



* यानी जैसी मकडी का जाला बहुत कमजोर होता है वैसे ही इनका मत है।

इक्कीसवाँ पारा (उत्लु मा ऊहिया)

ऐ पैगम्बर ! किताब मे जा ईश्वरीय सन्देशा दिया जाता है उसे पढ और नमाज पढ़ाकर। नमाज बेशर्मी और बुरी आदतो से रोकती है और अल्लाह की याद बड़ी बात है, और जो तुम करते हो अल्लाह जानता है। (४५) और किताब वालो के साथ झगड़ा न किया करो मगर ऐसी तरह पर जो बेहतर है। हाँ जो लोग उनमे से तुम पर अधिकता करें और कि हम पर उतारा है और तुम पर उतरा है सभी को मानते हैं और हमारा ईश्वर और तुम्हारा ईश्वर एक ही है और हम उसी की आज्ञा पर है। (४६) और इसी तरह हमने तुम पर किताव उतरी सो जिनको हमने किताव दी है वे उसको मानते हैं और इनमें मे भी ऐसे हैं कि वह भी उस पर ईमान ले आते हैं और जो इन्कारी हैं वही हमारी आयतो को नही मातते। (४७) और कुरान से पहले न तो तुम कोई पुस्तक ही पढ़ते थे और न तुमको अपने हाथ से लिखना ही आता था। यदि ऐसा तुम करते होते तो निस्सन्देह यह झूठा ठहराने वाले लोग सन्देह कर सकते थे। (४८) जिन मनुष्यो को समझ दी गई है उनके दिलो में यह खुली आयतें है और जो इन्कारी हैं वही हमारी आयतो को नही मानते। (४९) और कहते हैं कि इस पर इसके पालनकर्ता ने निशानियाँ क्यो नही उतरी। कहा निशानियाँ तो ईश्वर के पास हैं और मैं तो साफ तौर पर सुनाने वाला हू।(५०) ऐ पैगम्बर ! क्या इन लोगो के लिए यह काफी नही कि हमने तुम पर कुरान उतारा, जो उनको पढ कर सुनाया जाता है। जो लोग ईमान लाने वाले हैं उनके लिए इसमें कृपा और शिक्षा है। (५१) (रुकू ५)

ऐ पैगम्बर ! कहो कि मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह काफी साक्षी है। वह आकाश और पृथ्वी की वस्तुओ को जानता है और जो मनुष्य झूठे पूजितो पर ईमान लाते हैं और अल्लाह से फिरे हुए है यही तो

घाटे मे रहेंगे। (५२) और ऐ पैगम्बर ! तुमसे दण्ड के लिए शीघ्रता मचा रहे हैं और यदि समय नियत न होता तो इन पर दण्ड आ चुका होती और वह एकवारगी इन पर आवेगी और इनको पता भी न होगी। (५३) तुमसे दण्ड के लिए जल्दी मचा रहे हैं और नरक काफिरो को घेरे हुए हैं। (५४) जबकि दण्ड उनके ऊपर से और इनके पैरो के तले से इनको घेर लेगी और ईश्वर कहेगा कि जैसे-जैसे कर्म तुम करते रहो हो उसका आनन्द लो। (५५) हमारे सेवको जो ईमान लाये हो, हमारी जमीन चौडी है, हमारी ही पूजा करो। (५६) हर जीव मरेगा फिर हमारी ओर लौटकर आवेगा। (५७) और जो लोग ईमान लाये और उन्होने सुकर्म किये उनको हम स्वर्ग की खिड-कियो मे स्थान देंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होगी। उनमे हमेशा रहेंगे। काम वालो को अच्छा बदला है। (५८) जिन्होने सन्तोष किया और अपने पालनकर्ता पर भरोसा रखते रहे उनका अच्छा फल है। (५९) और जितने जीव हैं जो अपनी रोजी उठा नही सकते, अल्लाह ही उनको रोजी देता है और वही सुनता और जानता है। (६०) और ऐ पैगम्बर ! यदि तू इनसे पूछे कि किसने आकाश और पृथ्वी को पैदा किया और किसने चाँद और सूरज को बस मे कर रखा है, तो अवश्य उत्तर देंगे कि अल्लाह ने। फिर किधर को बहके चले जा रहे हैं। (६१) अल्लाह ही अपने सेवको मे से जिसको चाहे रोजी देता है और जिसको चाहता है नपी-तुली कर देता है। अल्लाह ही हर वस्तु से जानकार है। (६२) और यदि तुम इनसे पूछो कि किसने आकाश से पानी बरसाया फिर उस पानी के द्वारा जमीन को उसके मरे पीछे कौन जिला उठता है, तो उत्तर देंगे कि अल्लाह। ऐ पैगम्बर ! तू कह सब खूबी अल्लाह को है। इनमे अवसर समझ नही रखते ।३) जिस

(रुकू ६) ।गे। (१४)

बाग स्वर्ग मे

और यह सासारिक जीवन तो जी बहलाना औ जिन लोगो ने

पिछला घर परलोक को जाना ही जाना है यदि समझ के पेश आने को

(१६) बस गिर

जब नाव मे सवार होते हैं तो उसी पर पूरा भरोसा करके अल्लाह को पुकारते हैं। फिर जब उनको छुटकारा देकर जमीन की तरफ पहुचा देता है तो छुटकारा पाते ही वह साझी ठहराने लगते हैं। (६५) जो हमने उनको दिया है उससे मुकरते है आगे चलकर मालूम कर लेंगे। (६६) क्या मक्के के काफिरों ने नही देखा कि हमने हरम को अमन की जगह बना रखा है और मनुष्य इनके आस पास बचके जाते हैं तो क्या यह लोग झूठ पर ईमान रखते हैं और अल्लाह की दया नही मानते। (६७) और उससे बढ कर कौन अत्याचारी है जो ईश्वर पर झूठ लफंट लगाये या जब सत्य बात को पहुंचे तो उसको झुठलावे। क्या इनकार करने वालो का नर्क ही ठिकाना नही है। (६८) और जिन्होने हमारे काम में प्रयत्न किया हम उसको अपना मार्ग दिखलावेंगे और निस्सन्देह नेक काम वालो का अल्लाह ही साथी बनता है। (६९) (रुकू ७)

सूरे रूम

मक्के में अवतरित हुई इसमें ६० आयतें और ६ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। अलिफ-लाम-मीम। (१) रूमी लोग दब गये हैं। (२) समीप के देशो मे दब गये है और वे हारे पीछे फिर जीत जावेंगे (३) कुछ वर्षों मे पहले और पिछले काम अल्लाह ही के हाथ मे हैं और उस दिन ईमानदार प्रसन्न होगे। *(४)

* रूम (ईसाई) और ईरान (अग्नि-पूजक) के बीच युद्ध हुआ। लान वान-रान वाले जीते। उनकी विजय से मक्के के काफिर बहुत प्रसन्न ॰ उनका मत ईरान के अग्नि के उपासकों से मिलता था। ऐ पैगम्बर के मुशरिक मुसलमानो से बडा बोल बोलने लगे और है। वह आकाश रूम के ईसाई परास्त हुए जो एक प्रकार तुम्हारे ही झूठे पूजितो पर १ही तुम भी जब हमसे लड़ोगे तो अवश्य हारोगे। इस तरीं।

वह जिसको चाहता सहायता करता है और वह बलवान दयालु है। (५) अल्लाह का प्रण है और अपने प्रण के खिलाफ नही किया करता लेकिन बहुधा लोग नही समझते। (६) ससारी जीवन के जाहिरा हालो को समझते हैं और परलोक से यह लोग बिलकुल बेखबर है। (७) क्या इन लोगो ने अपने दिल मे घ्यान नही दिया कि अल्लाह ने आकाश और पृथ्वी को और उन वस्तुओ को जो इन दिनो के बीच मे हैं किसी मतलब से और नियत समय के लिये पैदा किया है और बहुतेरे आदमी प्रलय के दिन अपने पालनकर्ता से मिलने को नही मानते। (८) क्या यह लोग देश मे नही चलते-फिरते है कि अपने पहलो का परिणाम फल देखें। वह लोग इनसे बल मे भी बढ कर थे और उन्होने इनसे ज्यादा जमीन को जोता और आबाद किया था और उनके पास उनके पैगम्बर चमत्कार लेकर आये थे यदि उन्होने न माना और अपने किये का दण्ड पाया। तो ईश्वर उन पर अत्याचार करने वाला नही था बल्कि वह अपनी जानो पर आप अत्याचार करते थे। (९) फिर जिन लोगो ने बुरा किया उनका परिणाम बुरा ही हुआ क्योकि उन्होने ईश्वर की आयतो को झुठलाया और उनकी हसी उडाई थी। (१०) (रुकू १)

अल्लाह पहली वार सृष्टि पैदा करता है फिर उसको दुहरावेगा, फिर उसकी तरफ लौट जाओगे। (११) जिस दिन प्रलय आएगी अप-राधी निराश होकर रह जावेंगे। (१२) और इनके शरीको से कोई सिफारिशी न होगा और ये अपने शरीको से फिर बैठेंगे। (१३) जिस दिन प्रलय उठेगी उस दिन वे भले बुरे तितर-बितर हो जायगे। (१४) फिर जो लोग ईमान लाये और उन्होने सुकर्म किये वह बाग स्वर्ग मे होंगे। उनकी आवभगत हो रही होगी। (१५) और जिन लोगो ने इनकार किया और हमारी आयतो और अन्तिम दिन के पेश आने को झुठलाते रहे तो यही लोग दण्ड मे पकडे जावेंगे। (१६) बस जिस

समय तुम लोगो को शाम हो और जिस समय तुमको सुबह को अल्लाह की पवित्रता से याद करो। (१७) आकाश औत पृथ्वी में वही अल्लाह प्रशसा के योग्य है और तीसरे पहर भी और जब तुम लोगो को दोपहर हो। (१८) जिन्दे को मुर्दे से निकालता है और मुर्दे को जिन्दे से निकालता है और पृथ्वी को उनके मरे पीछे जीवित करता है और इसी तरह तुम लोग भी मरे पीछे पृथ्वी से निकाले जाओगे। (१९) (रुकू २)

उसने तुमको मिट्टी से पैदा किया फिर जब तुम मनुष्य होकर फैले हुए हो। (२०) और उसके चमत्कारो मे से एक यह है कि उसने तुम्हारे बीच स्त्रियाँ पैदा की कि तुमको उनके पास चैन मिले और तुममे प्यार और प्रेम पैदा किया। इस मामले मे समझ ,वालो के लिए चमत्कार है। (२१) और आकाश और पृथ्वी का पैदा करना और तुम्हारी बोलियाँ औरी तुम्हारी रंगतों का अलग-अलग होना, इसमे समझने वालो के लिए निशानियाँ हैं। (२२) और तुम्हारा रात और दिन का सोना और उसकी कृपा तलाश करना उसकी निशानियाँ हैं। जो लोग सुनते हैं उनके लिए इनमें निशानियाँ हैं। (२३) और उसी की निशानियो मे से हैं कि वह तुमको डरने और आशा करने के लिए विजलियाँ दिखाता और आकाश से पानी बरसाता और उसके द्वारा से पृथ्वी को उसके मरे पीछे जिला उठता है। जो लोग समझ रखते हैं उनके लिए इन बातो में निशानियाँ हैं। (२४) और उसी की निशानियों मे से हैं कि आकाश और पृथ्वी उसकी आज्ञा से स्थिर हैं। फिर जब वह तुमको एक आवाज देकर पृथ्वी से बुलायेगा तो तुम सब के सब निकल पड़ोगे। (२५) और जो आकाश और पृथ्वी मे हैं उसी के हैं। सब उसी के काबू मे हैं। (२६) और वही है जो पहली बार पैदा करता है, फिर उनको दुबारा पैदा करेगा, यह उसके लिए आसान है और और आकाश और पृथ्वी में उसी की सुन्दरता अधिक है और वह बलवान चमत्कार वाला है। (२७) (रुकू ३)

वह तुम्हारे लिए तुममे का एक उदाहरण बताता है कि तुम्हारे दासो मे से कोई हमारी दी हुई रोजी मे साझी है कि तुम सब उसमे बराबर हक रखते हो। तुम उनकी वैसी ही परवाह करते हो जैसी कि तुम अपनी परवाह करते हो * जो लोग समझ रखते है उनके लिए हम आयतो को इसी तरह खोल-खोलकर बताते हैं। (२८) मगर जो लोग साक्षी ईश्वर बनाकर अत्याचार कर रहे हैं वह तो वे जाने-बूझे अपनी इच्छाओ पर चलते हैं तो जिसको ईश्वर गुमराह करे उसको कौन सीधी राह पर ला सकता है, और ऐसे लोगो का कोई सहायक न होगा। (२९) ऐ पैगम्बर! तू एक ईश्वर का होकर दीन की तरफ अपना मुंह सीधा कर। यह ईश्वर की चतुराई है जिससे उसने लोगो की सूरत बनाई है। खुदा की बनावट मे बदली नही जा सकती यही दीन सीधा है। मगर अक्सर लोग नही समझते। (३०) उसी की तरफ फिरो और उसी एक ईश्वर का डर और नमाज पढ़ो और शरीक ठहरानेवालो मे न हो। (३१) जिन्होने अपने दीन मे अन्तर डाला और ईश्वर के सिवाय दूसरे पूजित बना कर फिरके हो गये। जो जिस फिरके मे है वह उसी मे मगन है। (३२) और जब लोगो को कोई दुख पहुचता है तो वह अपने पालनकर्ता की तरफ फिर कर उसी को पुकारने लगते हैं। फिर जब वह उनको अपनी कृपा चखा देता है तो उनमे से कुछ लोग झूठे पूजितो को अपने पालनकर्ता का साक्षी बना बैठते हैं। (३३) ताकि जो कृपाएँ हमने उनको दी हैं उनकी श्रद्धा करें तो लाभ उठा लो आगे चलकर फल मालूम कर लोगे। (३४) क्या हमने इन लोगो पर कोई प्रमाण उतारा है कि जिससे यह लोग ईश्वर के साथ शरीक ठहरा रहे हैं, वह प्रमाण इनको शरीक करना बता रहा है

* कहने का अर्थ यह है कि जैसे तुम अपने दासों और बाँदियों की परवाह करते और जैसा तुम्हारा मन चाहता है वैसा करते हो वैसे ही ईश्वर को तुम्हारा और सारी सृष्टि का कुछ डर नहीं। वह जो चाहे करे। उसकी शान निराली है।

(३५) और जब मनुष्यों को हम कृपा का स्वाद चखा देते है तो वह उससे खुश होते हैं और अगर उनके पिछले कर्मों के बदले मे उन पर आफत आ जावे तो वह आस तोड बैठते हैं। (३६) लोगो ने नही देखा कि अल्लाह जिसकी रोजी चाहे ज्यादा कर दे और जिसकी चाहे नपी-तुली कर देता है। जो लोग ईमान रखते है उनके लिए इसमे निशानियाँ है। (३७) तो सम्बन्धी को और मुहताज को और मुसाफिर को उनका भाग देते रहो। जो लोग ईश्वर की रोजी के चाहने वाले हैं यह उनके लिए बेहतर हैं और यही मनुष्य मनमाने फल पाने वाले हैं। (३८) और जो तुम लोग व्याज देते हो ताकि लोगो के माल मे ज्यादती हो तो वह व्याज ईश्वर के यहाँ फूलता-फलता नही। जो ईश्वर की राह पर दान करते हो तो जो मनुष्य ऐसा करते हैं उन्ही के दूने हो गये। (३९) अल्लाह वह है जिसने तुमको पैदा किया, फिर तुमको रोजी दी, फिर तुमको मारता है, फिर तुमको जिलायेगा। भला तुम्हारे शरीको मे कोई है जो इनमें से कोई काम कर सके? यह मनुष्य जैसे-जैसे शरीक ठहराते हैं ईश्वर इनसे पवित्र और अधिक बड़ा है।(४०) (रुकू ४)

लोगों की ही करतूतों से पृथ्वी और पानी मे खराबिया दिखा चुके हैं। मनुष्य जैसे-जैसे कार्य कर रहे हैं ईश्वर उनको उनके कामों का मजा चखाये। शायद वे मान जावें (४१) ऐ पैगम्बर! इन लोगों से कहो कि पृथ्वी पर चलो-फिरो और पहलो का अन्त देखो। उनमे से बहुदा शरीक ठहराते थे। (४२) तो इससे पहले कि ईश्वर की तरफ से वह प्रलय आवे जो टल नही सकता तू दीन के सीधे मार्ग पर अपना मुँह सीधा किये रह। उस दिन ईमानवाले और काफिर एक दूसरे से अलग-अलग होंगे। (४३) जो मना करता है तो उसी पर उसकी आफत पड़ेगी और जो अच्छे कर्म करता है तो यह अपने ही लिए आराम का सामान कर रहा। (४४) जो मनुष्य ईमान लाये और उन्होंने सत्कर्म किये, उनको अल्लाह अपनी कृपा से बदला देगा। वह

काफिरों को पसन्द नही करता। (४५) और उनकी प्राकृतिक निशानियों मे से है कि वह हवाओं को भेजता है कि वर्षा का शुभसंदेश पहुचावे, ताकि अल्लाह तुम लोगो को अपनी कृपा का स्वाद चखाये, ताकि अपने आज्ञा से नावें चलावे और शायद तुम उसकी कृपा ढूंढो और भलाई मानो। (४६) और ऐ पैगम्बर! हमने तुमसे पहले भी पैगम्बर उनकी जाति की तरफ भेजे तो वह पैगम्बर चमत्कार लेकर उनके पास आये मगर उन्होने झुठलाया। तो जो मनुष्य झुठलाने के अपराध के अपराधी हुए उनसे हमने बदला लिया और ईमानवालो की सहायता हम पर आवश्यक थी। (४७) अल्लाह वह है जो हवाओं को भेजता है। वह बादलो को उभारता है फिर जिस तरह चाहता है बदल को आकाश मे फैलाता हैं और उसको टुकडे-टुकडे कर देता है। तो तू देखता है बादल के बीच मे से मेह बरता है। फिर जब ईश्वर अपने बन्दो मे से जिस पर चाहता है वर्षा देता है तो वह लोग खुशियाँ मनाने लगते हैं। (४८) वैसे मेह के बरसने से पहले यह लोग निराश थे*। (४९) तो ईश्वर की कृपा की निशानियो को देख कि पृथ्वी को उसके मरे पीछे कैसे जिलाता है। निस्संदेह यह ईश्वर मुर्दो का जिलाने वाला है और हर वस्तु पर शक्तिमान है। (५०) और अगर हम ऐसी हवा चलावें और यह लोग खेती को पीला देखें तो खेती के पीले पडे पीछे जरूर कृतघ्नता करने लगते है। (५१) तो ऐ पैगम्बर! तुम न तो मुर्दों को सुना सकते हो न बहरो ही को अपनी आवाज सुना सकते हो उस समय कि बहरे पीठ फेर कर भागे। (५२) और तू न अन्धो को उल्टे रास्ते से सीधे रास्ते पर ला सकता है, तू तो बस उन्ही लोगो

---

*यानी जैसे वर्षा से पहले प्रायः लोग समझते हैं कि पानी न बरसेगा। वैसे ही सच्चे धर्म के प्रचार से पहले लोग उसके विषय मे मनमानी बातें करते है।

सुना सकता है जो हमारी आयतों को मान लेते हैं वही धर्म वाले हैं। (५३) (रुकू ५)

अल्लाह वह है जिसने तुमलोगों को कमजोर हालत से पैदा किया फिर लड़कपन की कमजोरी के बाद जवानी की ताकत दी। फिर ताकत के बाद कमजोरी और बुढापे की हालत दी। जो चाहता है पैदा करता है और वही जानकार चमत्कार वाला है। (५४) और जिस दिन प्रलय होगी पापी लोग सौगन्धे खायेंगे कि संसार मे एक घडा से ज्यादा नही ठहरे। इसी तरह मनुष्य बहके रहे। (५५) जिन लोगो को विद्या और ईमान दिया गया है वह उत्तर देंगे कि तुम तो अल्लाह की किताव में प्रलय के दिन तक ठहरे और यह प्रलय का दिन है, मगर पापियो को विश्वास न था। (५६) तो उस दिन न पापियो को उनका उज्र करना लाभ पहुचायेगा और न उनको ईश्वर के राजी कर लेने का समय दिया जायगा (५७) और हमने लोगो के लिए इस कुरान मे हर तरह का उदाहरण दिया है अगर और तुम इनको कोई चमत्कार लाकर दिखाओ तो जो इन्कार करने वाले हैं वह कहेंगे कि तुम निरे धोखेबाज हो। (५८) जो लोग समझ नही रखते उनके दिलो पर अल्लाह इसी तरह मुहर लगा दिया करता है। (५९) तो ऐ पैगम्बर तू कायम रह-निस्संदेह अल्लाह का प्रण सच्चा है और ऐसा न हो कि जो मनुष्य विश्वास नही करते, तुमको उछाल दें (६०) (रुकू ६)

सूरे लुकमान

मक्के में अवतरित हुई इसमें ३४ आयतें और ४ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु और दयावान है। अलिफ लाम-मीम (१) यह चमत्कारिक पुस्तक की आयतें हैं। (२) नेकों के लिए सूझ और कृपा है। (३) जो नमाज पढ़ते और दान देते और वह प्रलय का भी विश्वास रखते हैं। (४) वे पालनकर्ता की तरफ से सूझ पर हैं और वे मनमाने फल पाने वाले हैं। (५) और मनुष्यो मे कोई ऐसे भी हैं जो व्यर्थ कहानियाँ मोल लेते है ताकि बेसमझे-बूझे ईश्वर की की राह से भटकाएँ और ईश्वर की आयतो की हंसी उड़ायें। यही हैं जिनको जिल्लत का दण्ड होना हैं। (६) और जब उनको हमारी आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो अकड़ता हुआ मुंह फेर कर चल देता है मानो उसको सुना ही नही जैसे उसके दोनो कान बहरे है। सो तू उसे दुखदाई दण्ड की शुभसदेश सुना दे। (७) जो लोग ईमान लाये और शुभ काम किये स्वर्ग के उपवन हैं। (८) उनमे हमेशा रहेंगे ईश्वर का पक्का प्रण है। और वह बड़ा चमत्कारिक है। (९) उसी ने आकाश को जिनको तुम देखते हो बगैर खम्भो के खड़ा किया है और पृथ्वी मे पहाड़ो को डाल दिया कि तुम्हे लेकर पृथ्वी झुक न पड़े और उसमे हर तरह के जानदार फैला दिये और आकाश से पानी बरसाया, फिर पृथ्वी मे हर तरह के अच्छे जोड़े पैदा किये। (१०) यह ईश्वर की पैदा की हुई है। बस तुम मुझे दिखाओ कि ईश्वर के अलावा जो पूजित तुम लोगो ने बना रखे है उन्होने क्या पैदा किया। यह अत्याचारी खुली गुमराही मे हैं। (११) (रुकू १)

और हमने लुकमान को चमत्कार दिया कि अल्लाह को जो धन्यवाद देता है अपने इसीलिए धन्यवाद देता है और जो कृतघ्नता करता है

तो अल्लाह बेपरवाह और तारीफ के योग्य है। (१२) और जब लुकमान ने अपने पुत्र को शिक्षा देते समय उससे कहा कि बेटा, किसी को ईश्वर का शरीक न ठहराना। शरीक ठहराना अत्याचार की बात है। (१३) और मनुष्य को उनके माता-पिता के हक में ताकीद का कि उसकी माता ने बोझ उठा कर उसको पेट मे रखा और दो वर्ष मे उसका दूध छूटता है, मेरा और अपने माता पिता का धन्यवाद दो आखिर को मेरे पास ही तुझको आना है। (१४) और अगर तेरे माता-पिता* तुझको मजबूर करें की तू हमारे साथ शरीक बना जिसका तुझे विद्या नही तो उनका कहा न मान। दुनिया मे* उनके साथ अच्छी तरह रह और उन मनुष्यों के तरीके पर चल जो मेरी तरफ रुजू हैं। फिर तुमको मेरी तरफ लौटकर आना है तो जैसे काम तुम मनुष्य करते रहे हो मैं तुमको बताऊँगा। (१५) बेटा, अगर राई के दाने के बराबर भी कोई चीज हो और फिर वह किसी पत्थर के अन्दर या आकाश मे या पृथ्वी मे हो तो उसको ईश्वर ला हाजिर करेगा। निस्सदेह अल्लाह बारीक जानने वाला है। (१६) बेटा नमाज पढ़ाकर और भली बात सिखला और बुरी बातों से मनाकर और जो कुछ तुझ पर आ पडे उसे झेल निस्सदेह यह एक बड़ा काम है। (१७) और लोगो से बेरुखी न करना पृथ्वी पर इतरा कर न चल। अल्लाह किसी इतरानेवाले को पसंद नही करता। (१८) और बीच की चाल चल। अपनी आवाज नीची कर। निस्सदेह बुरी से बुरी गधो का आवाज है *। (१९) ।रुकू २)

* कहते है कि साद-बिन-वक्कास की माँ ने तीन दिन खाना पीना न लिया ताकि साद डरकर इस्लाम धर्म को छोड़ दे। परन्तु साद ने कहा कि मेरी माँ सत्तर बार मरे तो भी मैं अपना ईमान न छोड़ूगा। इस आयत का उतरना इसी घटना से सम्बन्धित बताया जाता है।

* दुनिया की बातो मे माँ-बाप की आज्ञा का पालन करो।

* यानी गधों के समान ऊंचे स्वर मे न बोल इस प्रकार की बोली बुरी समझी जाती है।

क्या तुमने नही देखा कि जो कुछ आकाश मे है और जो कुछ पृथ्वी मे है सबको अल्लाह ने तुम्हारे काम मे लगा रहा है और तुम पर अपनी जाहिरा और छिपी हुई इच्छा पूरी की है, और लोगो मे से कुछ ऐसे भी हैं जो ईश्वर के बारे मे झगडते हैं। न तो विद्या है और न आज्ञा और न रोशन किताब जो उनको सीधा रास्ता दिखाये। (२०) और जब इनसे कहा जाता है कि कुरान ईश्वर ने उतारा है हमने अपने बडो को पाया। भला अगर राक्षस इनके बड़ो को नरक के दण्ड की तरफ बुलाता रहा हो तो भी चलेंगे? (२१) और जो ईश्वर के सामने अपना सिर झुकाये और वह सत्कर्मी हो तो उसने मजबूत रस्सी पकड ली और हर काम का अन्त ईश्वर पर है। (२२) और जो इन्कारी है तो इसके इन्कार की वजह से तुझे उदास न होना चाहिए। हमारी तरफ लौटकर आना है। तो जो कुछ यह करते रहे हम इनको बतावेंगे अल्लाह जो दिलो मे है जानता है। (२३) हम इनको थोडे लाभ पहुचाते रहेंगे, फिर इनको दुखदाई दण्ड की तरफ खीच बुलावेंगे। (२४) और अगर तुम लोगो से पूछा कि आकाश को और पृथ्वी का किसने पैदा किया, तो यही उत्तर देंगे कि ईश्वर ने, तो कहो सब खूबियां अल्लाह की हैं, मगर इनमें से अक्सर समझ नहीं रखते। (२५) अल्लाह ही का है जो कुछ अकाश और पृथ्वी मे है। निस्सदेह अल्लाह बे परवाह और प्रशसा के योग्य है। (२६) और पृथ्वी में जितने पेड हैं मगर सब कलम बन जायें और समुद्र उसके बाद सात समुद्र और उसकी सहायता करें यानी स्याही के हो जावें तो भी ईश्वर की बातें तमाम न होवें। निस्सदेह अल्लाह बडा चमत्कार वाला है। (२७) तुम सबको पैदा करना और मरे पीछे जिलाना ऐसा ही है जैसा एक मनुष्य का पैदा करना और जिलाना। निस्संदेह अल्लाह सुनता देखता है। (२८) तूने नही देखा कि अल्लाह रात को दिन मे और दिन को रात मे प्रवेश करता है और सूर्य चन्द्रमा को काम मे लगा रखा है कि हरएक ठहरे हुए प्रण तक चलता है और जो कुछ भी तुम मनुष्य कर रहे हो अल्लाह को उसका सदेह है। (२९) यह इसलिए है कि अल्लाह ही

सच है और उसके बजाय जिनको तुम पुकारते हो झूठ है और अल्लाह बड़ा सबसे ऊपर है। (३०) (रुकू ३)

तूने नहीं देखा कि अल्लाह ही कृपा से नाव नदी में चलती है कि कुछ अपनी प्रकृति तुमको दिखाये। हरएक संतोषी और सच समझने-वाले के लिए निशानियाँ हैं। (३१) और जब लहरें नाव के चढ़ने वालो पर बादलो की तरह आ जाती है तो वह साफ दिल से अल्लाह की वन्दगी को वता कर उसी को पुकारने लगते है लेकिन जब ईश्वर उनको छुटकारा देकर पृथ्वी पर पहुचा देता है तो उनमे से कुछ ही बीच की चाल पर कायम * रहते हैं और हमारी निशानियों से वही लोग इन्कारी रखते हैं जो वादे के झूठे और सच न समझने वाले हैं। (३२) मनुष्यो ! अपने पालनकर्ता का डर रखो और उस दिन से डरो कि न कोई पिता अपने पुत्र के काम आवेगा और न कोई पुत्र अपने पिता के काम आ सकेगा। ईश्वर का वादा प्रलय के दिन सच्चा है, तो संसार की जीवन के धोखे मे न आजाना और न ईश्वर मे राक्षस का धोखा खाना। (३३) अल्लाह ही के पास प्रलय का सदेश है और वही मेह बरसाता और जो कुछ माताओ के पेट मे है जानता है और कोई नही जानता कि कम क्या करेगा और कोई नही जानता कि वह किस पृथ्वी पर मरेगा। निस्सदेह अल्लाह ही जानने वाला खबर रखने वाला है। (३४) (रुकू ४)

* यानी कठिनाई के समय मुशरिक और मुसलमान दोनों ईश्वर ही को सहायता के लिए पुकारते हैं परन्तु आपत्ति टल जाने पर मुश-रिक ईश्वर को छोड़कर मूर्ति पूजने लगते है और मुसलमान हर हालत मे ईश्वर ही को पूजते हैं।

सूरे सज्दह

मक्के में अवतरित हुई इसमें ३० आयतें और ३ रुकू है

अल्लाह के नाम से जो कृपालु दयावान है। अलिफ-लाम-मीम। (१) इसमे कुछ सदेह नही कि कुरान ससार के पालनकर्ता की ओर से उतरता है। (२) क्या करते हैं कि इनको इसने अपने दिल से बना लिया है। बल्कि यह ठीक तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से है ताकि तुम उन मनुष्यो को जिनके पास तुम से पहले कोई डराने वाला नही पहुचा ईश्वर के दण्ड से डराओ। अजब नहीं कि यह मनुष्य राह पर आ जावें। (३) अल्लाह वह है जिसने ६ दिन मे आकाश और पृथ्वी और उन चीजो को पैदा किया जो आकाश और पृथ्वी के बीच मे हैं। फिर सिहासन पर जा विराजा। उनके सिवाय न कोई तुम मनुष्यो का काम सभालने वाला है और न कोई सिफारशी है। क्या तुम नही सोचते (४) वह आकाश से पृथ्वी तक का बन्दोबस्त करता है। फिर तुम मनुष्यो की गिनती के अनुसार हजार वर्ष का समय का एक दिन होगा उस दिन तमाम इन्तजाम उसके सामने गुजरेगा। (५) वही छिपी और खुली सब बातों का जानने वाला बडा कृपालु है। (६) उसने जो चीज बनाई खूब ही बनाई और आदमी की पैदायश की मिट्टी से शुरू किया। (७) फिर से उसकी सतान बनाई। (८) फिर उसको ठीक किया और उसमे अपनी तरफ से जान डाली और तुम मनुष्यो के लिए कान, आखे और दिल बनाये। तुम बहुत ही थोडी भलाई मानते हो। (९) और कहते है कि जब हम मिट्टी मे मिल जायेंगे तो क्या फिर हम नये ज- में आवेंगे बल्कि अपने पर पालनकर्ता के सामने हाजिर होने को नहीं मानते। (१०) कहो कि मौत यमदूत जो तुम पर तैनात हैं तुम्हा- जीवो को निकालते है फिर अपने पालनकर्ता की ओर लौटाये जाओगे (११) (रुकू १)

और अफसोस तुम अपराधियो को देखो कि अपने पालनकर्ता के सामने सिर झुकाये खड़े हैं और फ़रियाद कर रहे हैं ऐ हमारे पालनकर्ता हमारी आखें और हमारे कान खुलें, हमको फिर ससार मे भेज कि हम भलाई करें, हमको विश्वास आया। (१२) हम चाहते तो हर आदमी को उसकी राह की सूझ देते मगर हमारी बात पूरी होती हैं कि भूत और आदमी सबसे हम नरक भर देंगे। (१३) तो जैसे तुम अपने इस दिन के पेश आने को भूल रहे थे आज उसका मजा चखो कि हमने तुमको भुला दिया और जैसे-जैसे तुम काम करते रहे उसके बदले मे हमेशा का दण्ड लो। (१४) हमारी आयतो पर तो वही मनुष्य ईमान लाते है कि जब उनको वह याद दिलाई जाती हैं तो शीश नवा मे गिर पडते और अपने पालनकर्ता की तारीफ के साथ पवित्र याद करने लगते हैं और वे घमन्ड नहीं करते। (१५) रात के समय उनकी करवटे बिछौना से तृप्त नही होती, डर और आशा से अपने पालनकर्ता से दुआये माँगते और जो कुछ हमने उनको दे रखा है उसमे से ईश्वर की राह मे व्यय करते हैं। (१६) तो कोई आदमी नही जानता कि मनुष्यो के नेक काम के बदले मे कैसी-कैसी आंखो की ठन्डक उसके लिए छिपा रखी है। (१७) तो क्या ईमान लानेवाला उसके बराबर जो आज्ञाकारी है? बराबर नही हो सकते। (१८) सो जो मनुष्य ईमान लाये और उन्होने भले काम किये, उनके लिए रहने को उपवन होंगे, मेहमानदारी उनके शुभ कामो का बदला है जो करते रहे। (१९) और जो मनुष्य अवज्ञाकारी हुए उनका ठिकाना नरक होगा। जब उसमे निकलना चाहेंगे उसी मे लौटा दिये जायँगे और उनसे कहा जायगा कि जिस दण्ड नरक को तुम झुठलाते रहे अब उसी नरक का मजा चक्खो। (२०) और प्रलय की बड़ी दण्ड से पहले हम इनको संसार मे भी दण्ड का मजा चखायेंगे। शायद यह मनुष्य फिरें। (२१) और उससे बढ़कर अन्यायी कौन है कि उसको उसके पालनकर्ता की बातो से शिक्षा दी जाय और वह उनसे मुँह फेर ले, हमको इन पापियो से बदला लेना है। (२२) (रुकू २)

और हमने मूसा को किताब तौरात दी थी तो ऐ पैगम्बर तुम भी उसके मिलने से सन्देह मे मत करो और हमने उसको इसराईल के पुत्रो के लिए आज्ञा दी थी। (२३) और हमने इसराईल के पुत्रो मे से पेशवा बनाए थे जो हमारी आज्ञा से आदेश दिया करते थे और वह सन्तोष किये बैठे रहे और हमारी आयतो का विश्वास रखते रहे। (२४) ऐ पैगम्बर इसराईल के पुत्र जिन-जिन बातो मे फूट डालते रहे तुम्हारा पालनकर्ता प्रलय के दिन उनमे उनका निर्णय कर देगा। (२५) क्या लोगो को इसका नही हुआ कि हमने इनसे पहिले कितने गुट मार डाले यह मनुष्य उन्ही के घरो मे चलते फिरते हैं। इस लौट फेर में बहुत पते हैं तो क्या यह लोग सुनते नही (२६) और इन्होने नही देखा कि हम पडी हुई पृथ्वी की तरफ पानी को निकाल देते हैं। फिर पानी द्वारा खेती को निकालते हैं और जिनमे से इनके चौपाये भी खाते हैं और आप भी खाते हैं तो क्या यह मनुष्य नही देखते। (२७) और कहते हैं कि यदि तुम सच्चे हो तो यह निर्णय कब होगा। (२८) ऐ पैगम्बर उत्तर तो कि जो लोग ससार मे इन्कार करते रहे निर्णय के दिन उनका ईमान लाना उनके कुछ भी काम न आवेगा और न उनको समय मिलेगा। (२९) सो ऐ पैगम्बर तू उनका विचार छोड और मार्ग देख वे भी मार्ग देखते हैं। (३०) (रुकू ३)

सूरे अहजाब

मक्के में अवतरित इसमें ७३ आयतें और ९ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु और दयावान है। ऐ पैगम्बर ईश्वर से डरते हो और काफिरो और धोखेबाजो का कहा न मानो निःसंदेह अल्लाह जानकार चमत्कार वाला है। (१) और तेरे पालनकर्ता से जो आज्ञा आवे उसी पर चल अल्लाह तुम्हारे कामो से खबरदार है। (२) और अल्लाह पर भरोसा रक्खो अल्लाह काम का बनाने वाला काफी है। (३) अल्लाह ने किसी मनुष्य के सीने मे दो दिल नही रखे और न तुम लोगों की स्त्रियो को जिनको तुम माँ कह बैठते हो तुम्हारी सच्ची माँ बनाया और न तुम्हारे मुंह बोले बेटे को तुम्हारा बेटा ठहराया यह तुम्हारे अपने मुंह की बात है और अल्लाह ठीक बात कहता है और वही मार्ग दिखाता है। (४) उन मुंह बोले पुत्रो को उनके सगे पिता के नाम से बुलाया करो। यही बात अल्लाह के न्याय से अधिक पास है। बस यदि तुमको उनके पिता मालूम न हों तो तुम्हारे जाति भाई और तुम्हारे जाति मित्र हैं और तुमसे इसमे भूल चूक हो जाय तो इसमे तुम पर कुछ पाप नही। यदि हां दिल से इरादा करके ऐसा करो। और अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है। (५) ईमान वालो की अपनी जान से जियादह नबी से लगाव है और उस पैगम्बर की स्त्रियाँ उनकी मातायें है नाते वाले एक दूसरे से सब ईमान वालो और देश छोडने वालो से जियादह लगाव रखते हैं यदि यह कि तुम अपने मित्रो के साथ अच्छा बर्ताव करना चाहो यह आज्ञा पुस्तक मे लिखी हुई हैं। (६) और जब हमने पैगम्बरों से और मुझसे नूह से इब्राहीम से मूसा और मरियम के पुत्र ईसा से करार लिया और पक्का प्रण किया था। (७) प्रलय के दिन ईश्वर सच्चो से उनकी सत्यता का हाल पूछेगा और काफिरो को दुखदाई दण्ड तैयार है। (८) (रुकू १)

ऐ मुसलमानों अपने ऊपर अल्लाह की कृपा याद करो। जब तुम पर बद्र व ऊहद के युद्ध में फौजें चढ आईं तब हमने उन पर आँधी भेजी और फौज जो तुमको दिखलाई नही देती थी और जो तुम लोग करते हो अल्लाह देख रहा है। (९) जिस समय कि शत्रु तुम पर तुम्हारे ऊपर और नीचे की ओर से आये थे और डर के मारे तुम्हारी आँखें फिरी रह गई थी और दिल गलो तक आ गये थे और तुम ईश्वर की बावत तरह-तरह के विचार करने लगे थे। (१०) वहाँ मुसलमानो की जाँच की गई और वह खूब हिलाये गये। (११) और जब मुनाफिक और वह मनुष्य जिनके दिलो मे रोग थे बोल उठे कि ईश्वर और उसके पैगम्बर ने जो हमसे प्रण किया था बिल्कुल धोखा* था। (१२) और जब उनमे से एक गुठ कहने लगा कि मदीने के लोगो तुमसे इस स्थान के मुकाबिलो मे नही ठहरा जायगा तो लौट चलो और उनमे से कुछ पैगम्बर से घर लौट जाने की आज्ञा माँगने लगे और कहने लगे कि हमारे घर खुले पडे हैं। वह हरगिज खुले न पडे थे उनका विचार केवल भागने का था। (१३) और यदि शहर मे कोई किनारे से आकर घुसे फिर उन्हें दीन से विचलाना चाहे तो यह लोग मान ही लेते और थोडी देर करते। (१४) हालांकि पहिले ईश्वर से प्रण कर चुके थे कि हम शत्रु के सामने से पीठ न फेरेंगे और ईश्वर के वादे की पूछ-ताँछ होकर रहेगी (१५) ऐ पैगम्बर कहो कि अगर तुम मरने या मारे जाने से भागते हो यह भागना तुम्हारे काम न आवेगा और यदि भाग कर बच भी गये तो ससार में कुछ रोज रह बस लोगो (१६) ऐ पैगम्बर कहो कि यदि ईश्वर तुम्हारे साथ बुराई करनी चाहे तो कौन ऐसा है जो तुमको उससे बचा सके तुम पर कृपा करना चाहे तो कौन उसको रोक सकता है और ईश्वर के सिवाय न तो अपना हिमायती ही पाओगे और न सहायक। (१७) ईश्वर तुम मे से उनको खूब जानता है जो दूसरो को लडाई मे शामिल होने से रोकते और अपने भाई बन्दो से कहते हैं कि लडाई से अलग होकर हमारे पास चले आओ और लडाई मे हाजिर नही होते यदि थोडी देर के लिये। (१८)

सूरे अहज़ाब

मक्के में अवतरित इसमें ७३ आयतें और ९ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु और दयावान है। ऐ पैगम्बर ईश्वर से डरते हो और काफिरों और धोखेबाजो का कहा न मानो निःसंदेह अल्लाह जानकार चमत्कार वाला है। (१) और तेरे पालनकर्ता से जो आज्ञा आवे उसी पर चल अल्लाह तुम्हारे कामो से ख़बरदार है। (२) और अल्लाह पर भरोसा रक्खो अल्लाह काम का बनाने वाला काफी है। (३) अल्लाह ने किसी मनुष्य के सीने में दो दिल नही रखे और न तुम लोगो की स्त्रियो को जिनको तुम माँ कह बैठते हो तुम्हारी सच्ची माँ बनाया और न तुम्हारे मुंह बोले बेटे को तुम्हारा बेटा ठहराया यह तुम्हारे अपने मुंह की बात है और अल्लाह ठीक बात कहता है और वही मार्ग दिखाता है। (४) उन मुंह बोले पुत्रो को उनके सगे पिता के नाम से बुलाया करो। यही बात अल्लाह के न्याय से अधिक पास है। बस यदि तुमको उनके पिता मालूम न हो तो तुम्हारे जाति भाई और तुम्हारे जाति मित्र हैं और तुमसे इसमे भूल चूक हो जाय तो इसमे तुम पर कुछ पाप नही। यदि हाँ दिल से इरादा करके ऐसा करो। और अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है। (५) ईमान वालो की अपनी जान से जियादह नबी से लगाव है और उस पैगम्बर की स्त्रियाँ उनकी मातायें है नाते वाले एक दूसरे से सब ईमान वालो और देश छोड़ने वालो से जियादह लगाव रखते हैं यदि यह कि तुम अपने मित्रों के साथ अच्छा बर्ताव करना चाहो यह आज्ञा पुस्तक मे लिखी हुई हैं। (६) और जब हमने पैगम्बरो से और मुझसे नूह से इब्राहीम से मूसा और मरियम के पुत्र ईसा से करार लिया और पक्का प्रण किया था। (७) प्रलय के दिन ईश्वर सच्चो से उनकी सत्यता का हाल पूछेगा और काफिरो को दुखदाई दण्ड तैयार है। (८) (रुकू १)

ऐ मुसलमानो अपने ऊपर अल्लाह की कृपा याद करो। जब तुम पर बद्र व ऊहद के युद्ध मे फौजें चढ आई तब हमने उन पर आँधी भेजी और फौज जो तुमको दिखलाई नही देती थी और जो तुम लोग करते हो अल्लाह देख रहा है। (९) जिस समय कि शत्रु तुम पर तुम्हारे ऊपर और नीचे की ओर से आये थे और डर के मारे तुम्हारी आँखें फिरी रह गई थी और दिल गलो तक आ गये थे और तुम ईश्वर की बावत तरह-तरह के विचार करने लगे थे। (१०) वहाँ मुसलमानो की जाँच की गई और वह खूब हिलाये गये। (११) और जब मुनाफिक और वह मनुष्य जिनके दिलो मे रोग थे बोल उठे कि ईश्वर और उसके पैगम्बर ने जो हमसे प्रण किया था बिल्कुल धोखा था। (१२) और जब उनमे से एक गुठ कहने लगा कि मदीने के लोगो तुमसे इस स्थान के मुकाबिलो मे नही ठहरा जायगा तो लौट चलो और उनमे से कुछ पैगम्बर से घर लौट जाने की आज्ञा माँगने लगे और कहने लगे कि हमारे घर खुले पडे हैं। वह हरगिज खुले न पडे थे उनका विचार केवल भागने का था। (१३) और यदि शहर मे कोई किनारे से आकर घुसे फिर उन्हें दीन से बिचलाना चाहे तो यह लोग मान ही लेते और थोडी देर करते। (१४) हालाँकि पहिले ईश्वर से प्रण कर चुके थे कि हम शत्रु के सामने से पीठ न फेरेंगे और ईश्वर के वादे की पूछ-ताँछ होकर रहेगी (१५) ऐ पैगम्बर कहो कि अगर तुम मरने या मारे जाने से भागते हो यह भागना तुम्हारे काम न आवेगा और यदि भाग कर बच भी गये तो ससार मे कुछ रोज रह बस लोगो (१६) ऐ पैगम्बर कहो कि यदि ईश्वर तुम्हारे साथ बुराई करनी चाहे तो कौन ऐसा है जो तुमको उससे बचा सके तुम पर कृपा करना चाहे तो कौन उसको रोक सकता है और ईश्वर के सिवाय न तो अपना हिमायती ही पाओगे और न सहायक। (१७) ईश्वर तुम मे से उनको खूब जानता है जो दूसरो को लडाई मे शामिल होने से रोकते और अपने भाई बन्दो से कहते हैं कि लडाई से अलग होकर हमारे पास चले आओ और लडाई मे हाजिर नही होते यदि थोडी देर के लिये। (१८)

धोखा रखते हैं तुम्हारी तरफ से तो जब डर का समय आवे तो तू उनको देखेगा कि तेरी तरफ ताकते हैं और उनकी आँखे ऐसी फिरती हैं जैसी किसी पर मौत की बेहोशी हो। फिर जब डर दूर हो जाता है तो माल लूट पर गिरे पड़ते है और चढ़-चढकर तेज जबानो से तुम पर ताने मारते हैं यह लोग ईमान नही लाये तो अल्लाह ने काम अकार्थ कर दिये और अल्लाह के पास आसान है। (१९) विचार कर रहे हैं कि यह लश्कर नही गये और अगर शत्रुओ के लश्कर आजायें तो यह मनुष्य चाहें कि देहात मे निकल जायं और उनका सदेह पूछते हैं और अगर यह मनुष्य तुम मे होते हैं तो बहुत ही कम लड़ते है।(२०) (रुकू २)

तुम्हारे लिये पैगम्बर की चाल सीखनी भली थी। उसके लिये जो अल्लाह और प्रलय के दिन से डरते थे और बहुत-बहुत ईश्वर की याद किया करते थे। (२१) और जब मुसलमानों ने शत्रुओ के गिरोहों को देखा तो बोल उठे कि यह तो वही है जो ईश्वर और उसके पैगम्बर ने हमे पहिले से बता रक्खा था और अल्लाह और रसूल ने सच कहा था और उससे मनुष्यो का ईमान और भी जियादह हो गया। (२२) ईमान वालो मे कितने मर्द हैं कि अल्लाह से जो उन्होने बचन कर लिया था उसे सच कर दिखाया। तो उनमे वह भी थे जो काम पूरा कर चुके और उनमे ऐसे भी है कि इन्तजार हैं और वह कुछ भी नही बदले। (२३) तो अल्लाह सच्चो को सच का बदला दे और मुनाफिको को चाहे दण्ड दे या उनकी क्षमा कबूल करले निस्सन्देह अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है। (२४) और ईश्वर ने काफिरो को हटा दिया गुस्से मे उनको कुछ भी लाभ न पहुचा और ईश्वर ने मुसलमानो को लडने की नौबत न आने दी अल्लाह बलवान जीतने वाला है। (२५) और किताब वालो मे से जो मनुष्य यानी यहूदी मुशरकीन के सहायक हुए थे ईश्वर ने उनको गढियो से नीचे उतार दिया और उनके दिलो मे ऐसी धाक बैठा दी कि तुम कितनों को जान से मारने लगे और कितनों

को बन्दी करने लगे। (२६) और उनकी पृथ्वी और उनके घरो और उनके धन का और उस जमीन का जिसमे तुमने कदम तक नही रक्खा था तुमको मालिक कर दिया और अल्लाह हर वस्तु पर सर्व शक्तिमान है। (२७) (रुकू ३)

ऐ पैगम्बर अपनी स्त्रियो से कह दो कि अगर तुम ससार का जीना या यहाँ की रौनक चाहती हो तो मैं तुम्हें दिला कर अच्छी तरह से बिदा कर दू । (२८) और यदि तुम ईश्वर और उसके पैगम्बर और प्रलय के घर को चाहने वाले हो तो तुम मे से जो नेकी पर हैं उनके लिये ईश्वर ने बडे फल तैयार कर रक्खे हैं। (२९) ऐ पैगम्बर की स्त्रियो तुम मे से जो कोई प्रयत्न अनाचार करेगी उसके लिये दोहरा दण्ड दिया जायगा और अल्लाह के निकट यह मालूम बात है। (३०)

बाईसवाँ पारा (वमैं यक्नूत)

और जो तुममे से अल्लाह और उसके पैगम्बर की आज्ञाकारिणी होंगी और भले काम करेगी हम उसको उसका दुगुना फल देंगे और हमने उसके लिये प्रतिष्ठा की रोजी तैयार कर रक्खी है। (३१) ऐ पैगम्बर की स्त्रियो तुम और स्त्रियो की तरह नही हो। यदि तुमको सयमी मंजूर है तो दबी जबान के साथ बात न किया करो। कि ऐसा करोगी तो जिसके दिल मे किसी तरह का बुराई है वह तुमसे किसी तरह की आशा पैदा कर लेगा और तुम ठीक बात कहो। (३२) और अपने घरो मे ठहरो और अपना बनाव श्रृंगार वगैरह न दिखाती फिरो। जैसा पहले नादानी के समय मे दिखाने का दस्तूर था और नमाज पढ़ो और दान दो और अल्लाह और उसके पैगम्बर की आज्ञा

मानों घरवालियों ईश्वर यही चाहता है कि तुमसे अपवित्रता दूर करे और तुमको खूब पवित्र बनाये। (३३) और तुम्हारे घरों मे जो ईश्वर की बातें और अकलमन्दी की बातें पढी जाती हैं उनको याद रक्खो क्योकि अल्लाह भेद का जानने वाला जानकार है। (३४) (रुकू ४)

निस्सन्देह मुसलमान पुरुष और मुसलमान स्त्रियाँ और ईमान वाले पुरुष और ईमान वाली स्त्रियाँ और आज्ञाकारी पुरुष और आज्ञाकारी औरतें और सच्चे पुरुष और सच्ची औरतें और सन्तोषी पुरुष और सन्तोखी औरतें और गिड़गिड़ाने वाले पुरुष और गिड़गिड़ाने वाली स्त्रियाँ और पुण्य करने वाले पुरुष और पुण्य करने वाली स्त्रियाँ और रोजा व्रत रखने वाले पुरुष और रोजा रखने वाली स्त्रियाँ और विषय इन्द्रिय के थामनेवाले पुरुष और विषय इन्द्रिय को थामनेवाले स्त्रिया और अवसर याद रखने वाली स्त्रियाँ इन सब के लिये अल्लाह ने पापो की क्षमा और बडे फल तैयार कर रखे हैं। (३५) जब और अल्लाह और उसका पैगम्बर कोई बात ठहरा दे तो किसी मुसलमान स्त्री और पुरुष को अपने काम का अधिकार नहीं है जैनब और उसके भाई अब्दुल्ला का किस्सा है जिन्होंने हजरत की आदेश को नामजूर किया था कि जैद सेवक को विवाह के लिये नामजूर करते थे और जिसने अल्लाह और उनके पैगम्बर की आज्ञा नही माना वह जाहिरा राह भूल गया यह सुनकर जैनब ने लाचारी से जैद के साथ विवाह किया (३६) और जब तू ऐ मोहम्मद उस जैद से जिस पर अल्लाह ने और तू ने कृपा की कहता था *कि तू अपनी स्त्री को अपने पास रहने दे और अल्लाह से

---

* जैद एक सेवक को मुहम्मद साहब ने मोल लेकर आजाद कर दिया था और उनकी जैनब के साथ कर दी थी। कुरैश दासो के साथ विवाह करने को बुरा समझते थे। विवाह होने के बाद जैनब अपने पति को दास होने का ताना दे बैठती थी इस पर जैद ने उसको तलाक

डर और तू अपने दिल मे उस बात को छिपाता था अल्लाह जिसे प्रत्यक्ष किया चाहता था। और तू आदमियो से डरता था हालांकि तुझे अल्लाह से डरना चाहिये था। बस जब जैद ने तलाक दी हमने मुहम्मद तेरा विवाह उस स्त्री से कर दिया ताकि मुसलमानो को अपने मु ह बनाये बेटो की स्त्रियो से विवाह कर लेना पाप न रहे। जबकि उसको छोड़दें और उससे अपना सम्बन्ध तोड दें और वह ईश्वर ही की आज्ञा थी। (३७) अल्लाह ने पैगम्बर के लिए जो बात ठहरा दी हो उसमे पैगम्बर के लिए कुछ हर्ज नही। पैगम्बर पहिले हो चुके हैं उनमे ईश्वर का यही नियम रहा है और अल्लाह की आज्ञा हो चुकी है। (३८) वे ईश्वर के सदेह पहुंचाते और ईश्वर से डरते थे और ईश्वर के अलावा किसी से नही डरते थे और हिसाब के लिये अल्लाह काफी है। (३९) मुहम्मद तुममे से किसी पुरुष का पिता नही है तो जैद का क्यो है वह तो अल्लाह का पैगम्बर है और पैगम्बर पर मुहर है और अल्लाह सब चीजो से जानकार है। (४०) (रुकू ५)

मुसलमानो ईश्वर को ही याद किया करो (४१) और सुबह व शाम उसी की पवित्रता याद करते रहो (४२) वही है जो तुम पर दया भेजता है और इसके फरिश्ते भी ताकि तुमको अन्धेरो से निकाल

देना चाहा। मुहम्मद साहब चाहते थे कि यह सम्बन्ध बना रहे इसलिये दोनों को समझाते बुझाते थे परन्तु अन्त मे टूट कर ही रहा और जनब के साथ मुहम्मद साहब ने स्वय विवाह कर लिया क्योंकि उस समय जैनब का विवाह और किसी आजाद के साथ नहीं हो सकता था। इस सम्बन्ध का लक्ष्य अरब की दो बुरी रीतियों को तोड़ना था एक यह कि आजाद हुए सेवक की छोड़ी हुई स्त्री को घृणा की दृष्टि से देखना दूसरे मुंह बोले बेटों को सगे बेटो ही जैसा हर बात मे समझना।

कर रोशनी में लावे और ईश्वर ईमान वालों पर कृपालु है। (४३) जिस दिन यह लोग ईश्वर से मिलेंगे उसका सलाम उनकी सलामी होगी और ईश्वर ने उनके लिये इज्जत का फल तैयार कर रखा है। (४४) पेगम्बर हमने तुमको साक्षी देने वाला और डराने वाला भेजा है। ४५) और अल्लाह की आज्ञा से उनकी तरफ बलाने वाला और राशन चिराग बनाकर भेजा है।(४६)और ईमानवालों को इसकी शुभ-सन्देश सुना दो कि उन पर अल्लाह की बड़ी कृपा है। (४७) और काफिरो और धोखेबाजो का कहा न मान और उसके दुख देने की चिन्ता न कर और ईश्वर पर भरोसा रख और ईश्वर का बनाने वाला काफी है। (४८) मुसलमानो जब तुम मुसलमान औरतो के साथ अपना विवाह करो फिर उनको हाथ लगाने से तलाक़ दे दो। तो इद्दत मे बिठाने का तुमको उन पर कोई अधिकार नही कि इद्दत की गिन्ती पूरी कराने लगो। सो उनको कुछ दे दिलाकर अच्छे नियम के साथ बिदा कर दो। (४९) ऐ पैगम्बर हमने तेरी वह पत्नी तुझ पर हलाल की जि?के मिहर तू दे चुका है और लौंडियाँ जिन्हें अल्लाह तेरी ओर लाया और तेरे चचा की बेटियाँ और तेरी बुआ की बेटियाँ और तेरे मामा की बेटियों और मौसियो की बेटियाँ जो तेरे साथ देश त्याग कर आई हैं और वह मुसलमान औरतें जिन्होने अपने को पैगम्बर को दे दिया वे मिहर निकाह मे आना चाहें बशर्ते कि पैगम्बर भी उनके साथ निकाह करना चाहे यह आज्ञा खास तेरे ही लिए है सब मुसलमानो के लिए नही। हमने जो मुसलमानो पर उनकी पत्नियो और उनके हाथ के माल यानी लौंडियो का अधिकार मिहर ठहरा दिया है सबको मालूम है इसलिये कि तुम पर किसी तरह की तगी न रहे और अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है। (५०) अपनी पत्नियो मे से जिसको चाहो अलग रखो जिसको चाहो अपने पास रखो और जिनको तुमने अलग कर दिया था उनमे से किसी को फिर बुलवालो तो तुम पर कोई पाप नही। यह इसलिए कि बहुधा तुम्हारी पत्नियो की आँखें ठण्डी रहें और

उदास न हो और जो तुम उनको दे दो उसे लेकर सब की सब राजी रहें और जो कुछ तुम लोगों के दिलो मे है अल्लाह जानता है और अल्लाह जानने वाला है। (५१) ऐ पैगम्बर इस समय के वाद से दूसरी औरतें तुमको ठीक नहीं और न यह ठीक हैं कि उनको वदल कर दूसरी पत्नियाँ कर लो अगर्चे उनकी खूबसूरती तुमको अच्छी ही क्यो न लगे मगर पत्नियाँ और भी आ सकती हैं और अल्लाह हर चीज का देखने वाला है। (५२) (रुकू ६)

मुसलमानों ! पैगम्बर के घरो मे न जाया करो मगर यह कि तुमको के लिए आने की आज्ञा दी जावे कि तुमको खाना तैयार होने की राह न देखनी पडे मगर जब तुम बुलाये जाओ तब आओ इससे पैगम्बर को को दुख होता है और पैगम्बर तुमसे शर्माते हैं और अल्लाह ठीक बात बताने मे शर्म नही करता और जब पैगम्बर की पत्नियो से तुम्हें कोई वस्तु माँगनी हो तो पर्दे के बाहर खड़े रहकर उनसे माँगो। इससे तुम्हारे और उनकी स्त्रियों के दिल पवित्र रहेंगे और तुम्हें योग्य नही है कि ईश्वर के पैगम्बर को दु ख दो और न यह योग्य है कि पैगम्बर के वाद कभी उनकी स्त्रियो से विवाह करो। ईश्वर के यहाँ यह बड़ा पाप है। (५३) तुम किसी वस्तु को प्रत्यक्ष करो या छिपाओ अल्लाह सब जानता है। (५४) तुम पैगम्बर की पत्नियो पर अपने पिता के अपने पुत्रो के अपने भाइयो के अपने भतीजो के और अपने भानजो के और अपनी औरतो और अपने दासी दासो के सामने होने मे कुछ पाप नही और अल्लाह से डरती रहो अल्लाह हर चीज का साक्षी है। (५५) अल्लाह और उसके देवदूत पैगम्बर पर कृपा भेजते रहते सो मुसलमानो तुम भी पैगम्बर पर कृपा और सलाम भेजते रहो। (५६) जो लोग अल्लाह और पैगम्बर को दु ख देते हैं उन पर संसार और प्रलय मे अल्लाह की फटकार है और ईश्वर ने उनके लिए निन्दनीय दण्ड तैयार कर रखा है। (५७) और लोग मुसलमान मनुष्यों और मुसलमान स्त्रियो को बिना अपराध सताते हैं लफर लगाते

हैं तो उन्होंने झूठे का और ज़ाहिरा पाप का बोझ उठाया। (५८) (रुकू ७)

ऐ पैगम्बर अपनी स्त्रियों और अपनी पुत्रियों और मुसलमानों की स्त्रियों से कह दो कि अपनी चादरों के घूंघट निकल लिया करें। इससे बहुधा पहचान पड़ेगी कि सुयोग्य हैं और कोई छेड़ेगा नहीं मदीने में बिला घूंघट वाली स्त्रियों को झगड़ालु मनुष्य छेड़ते थे और अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है। (५९) मुनाफिक और वह लोग जिनकी नियतें बुरी और जो लोग मदीने में झूठी खबरें फैलाया करते हैं अगर बाज न आवेंगे तो हम तुमको उन पर उभार देंगे। फिर मदीने में तुम्हारे पड़ोस में कुछ दिन के सिवाय ठहरने न पावेंगे। (६०) इनका यह हाल हुआ कि जहाँ पाए गए पकड़े गए और जान से मारे गए। (६१) जो लोग पहले हो चुके हैं उनमें ईश्वर का दस्तूर रहा है ऐ पैगम्बर तुम ईश्वर के दस्तूर में कभी बदल न पाओगे। (६२) ऐ पैगम्बर लोग तुमसे प्रलय का हाल मालूम करते हैं तुम कहो कि प्रलय की सूचना तो अल्लाह ही के पास है और तुम क्या जानों शायद प्रलय निकट आ गई। (६३) निस्सन्देह अल्लाह ने काफिरों को फटकार दिया है और उनके लिये दहकती हुई आग तैयार कर रक्खी है। (६४) उसमें हमेशा रहेंगे न हिमायती पावेंगे और न सहायक। (६५) यह वह दिन होगा जबकि इनके मुंह आग में उलट-पलट किये जावेंगे और कहेंगे दुःख हमने अल्लाह का और पैगम्बर का कहा माना होता। (६६) और कहेंगे कि हे हमारे पालनकर्ता हमने अपने सरदारों और अपने बड़ों का कहा माना फिर उन्होंने हमको राह से भटका दिया। (६७) तो ऐ हमारे पालनकर्ता उनको दुहरा दण्ड दे और उन पर बड़ी लानत कर। (६८) (रुकू ८)

मुसलमानों! उन लोगों जैसे न बनो जिन्होंने मूसा को दुख दिया फिर अल्लाह ने उनके कहे से उसे बेऐब दिखलाया और वह अल्लाह के

नजदीक इज्जतदार था। (६९) मुसलमानो अल्लाह से डरते रहो और बात सीधी कहो। (७०) वह तुमको तुम्हारे कर्म सम्भाल देगा और तुम्हारे पाप तुमको क्षमा करेगा और जिसने अल्लाह और पैगम्बर का कहा माना उसने बड़ी सफलता पाई। (७१) हमने वह अमानत आकाश पृथ्वी और पहाड़ो के सामने पेश की थी उन्होंने उसके उठाने से इन्कार किया और उससे डर गये और आदमी ने उसे उठा लिया वह बड़ा अत्याचारी नादान था। (७२) ताकि अल्लाह मुनाफिक कपटी मनुष्यों और कपटी औरतों और मुशरिक पुरुष और मुशरिक औरतों को दण्ड दे और मुसलमान मनुष्यों और मुसलमान औरतों पर अपनी कृपा करे अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु। (७३) (रुकू ९)



सूरे सबा

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ५४ आयतें, ६ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। सब खूबी अल्लाह की है जो कुछ आकाश में है और जो कुछ पृथ्वी पर है। उसी का है और परलोक में उसी की प्रशंसा है और वही चमत्कार वाला खबरदार है। (१) जो कुछ पृथ्वी मे पैदा होता है जैसे बीज और जो कुछ उससे निकलता है जैसे बनपस्ती और जो कुछ आकाश से उतरता जैसे पानी और जो कुछ उसमे चढ़ कर जाता है जैसे भाप, वह जानता है और वह कृपालु क्षमा करने वाला है। (२) और इनकारी कहने लगे कि हमको वह घड़ी न आवेगी। छिपी बातो के जानने वाले अपने पालनकर्ता की सौगन्ध जरूर आवेगी कुछ भी आकाश और पृथ्वी मे उससे छिपा नहीं और कण से छोटी और कण से बड़ी जितनी चीजें हैं सब रोशन किताब

में लिखी हुई है। (३) ताकि ईमान वालों को उनका बदला दे। यही वह मनुष्य हैं जिनके लिए बख्शीश और इज्जत की रोजी है। (४) और जो मनुष्य हमारी आयतों के हराने में करते रहे उन्हें दु.खदाई दण्ड है। (५) और जिनको समझ दी गई हैं वह जानते है कि तेरे पालनकर्ता की तरफ से तुझ पर उतारा है वही सच है और उस ईश्वर का मार्ग दिखलाता है। (६) और जो मनुष्य इन्कार करने वाले हैं वह कहते हैं कि कहो तो हम तुमको ऐसा आदमी मुहम्मद बतलावें जो तुमको सन्देह देगा कि जब तुम मरे पीछे बिलकुल टुकडे-टुकडे हो जाओगे तो तुमको फिर नये, जन्म मे आना होगा। (७) इस मनुष्य ने अल्लाह पर कैसा झूठ बांधा है या इनको किसी तरह का जुनून है कोई नही परन्तु जो प्रलय का विश्वास नही रखते दुख मे और गल्ती में दूर पड़े हैं। (८) तो क्या इन मनुष्यों ने आकाश और पृथ्वी की तरफ जो इनके आगे और इनके पीछे हैं नही देखा। अगर हम चाहें तो इनको पृथ्वी मे धंसा दें या इन पर आकाश के टुकड़े गिरादें। इनमें हरेक मनुष्य को जो रुजू रखता है पता है। (९) (रुकू १)

और हमने दाऊद को अपनी तरफ से बडाई दी। पहाड़ो और परिन्दों दाऊद के साथ ध्यान से पढ़ो और उस दाऊद के लिये हमने लोहे को मुलायम कर दिया (१०) कि पूरी जिरह बख्तर बनाये और कड़ियो के जोड़ने मे अन्दाजे का ध्यान रखे और तुम सब भले काम करो। जो कुछ तुम करते हो मै देख रहा हूं। (११) और हवा को सुलेमान के अधिकार मे कर दिया था कि उसकी सुबह की मजिल एक महीना भर की होती और हमने उनके लिये तांबे का चश्मा बहा दिया और भूतो में से वह भूत जो उसके पालनकर्ता की आज्ञा से उसके सामने काम करते थे और इनमें से जो कोई हमारी आज्ञा से फिरेगा हम उसको नरक का दण्ड देंगे। (१२) और वह भूत उसके लिये जो वह चाहता बनाते थे किले तस्वीरें और प्यालो जैसे तालाब और देगे जो एक ही जगह रखें रहें। ऐ दाऊद के घर वालों धन्यवाद करो और

हमारे मनुष्यों मे थोड़े कृपालु हैं*। (१३) फिर जब हमने सुलेमान पर मौत भेजी तो भूतो को उनके मारने का पता न बताया। मगर घुनके कीड़े ने जो सुलेमान की लाठी को खाता था यानी जब वह गिर पड़ी तो भूतो ने जाना कि अगर हम छिपी हुई बातें जानते होते निन्दनीय न रहते। (१४) सबा के मनुष्यो के लिये उनकी बस्ती मे एक निशानी थी। दो बाग दाहिने और बायें थे अपने पालनकर्ता की रोजी खाओ और उसको धन्यवाद दो अच्छे शहर और क्षमा करने वाला पालनकर्ता है (१५) इस पर उन्होने कुछ परवाह न की तो हमने उन पर बड़े जोर का नाला छोड़ दिया और हमने उनके दो बागो के बदले में और दो बाग दिये जिनमे फल कसैले और झाऊ थोड़े से बेर थे। (१६) यह हमने उनको उनकी कृतघ्नता का बदला दिया और हम कृतघ्नों को ऐसे बदला दिया करते है। (१७) और हमने सबा के मनुष्यों और उन देहात के बीच जिनमे हमने बरकत दे रखी थी और बहुत से गाँव आबाद कर रखे थे जो दिखाई देते थे और उनमे चलने की मन्जिलें ठहरा दी कि वे बेखटके इनमे रातो और दिनों को चलो फिरो (१८) फिर कहने लगे ऐ पालनकर्ता हमारी मन्जिलो को दूर-दूर कर दे। इन मनुष्यो ने अपने ऊपर आप अत्याचार किया। फिर हमनें उनके हिस्से बना दिये और टुकडे-टुकडे कर दिये। हर ठहरने वाले संतोषी और सच समझने वालों के लिये इसमे पते हैं। (१९) और इब्लीस ने अपनी अटकल उन पर सच कर दिखाई। उन्होनें उसी की राह पकड़ी मगर थोड़े से ईमान वालो ने उसकी राह न पकड़ी (२०) और राक्षस का

---

* दाऊद के समय में मूर्तियाँ बनाना मना नहीं था। यह मूर्तियाँ महापुरुषों की होती थीं जैसे पैगम्बर और सन्त आदि। उनको मसजिदों मे रखा जाता था ताकि लोग उनको देख कर ईश्वर को याद करें। अरब वाले उनको स्वयं पूजने लगे इसलिये इस्लाम मे जीवधारी वस्तुओं की मूर्तियां बनाना रोक दिया गया।

उन पर कुछ जोर न था और मतलब असली यह था कि जो मनुष्य परलोक पर विश्वास रखते हैं हम उनको उन मनुष्यों से मालूम कर लें जो उसकी तरफ से सन्देह मे हैं और तेरा पालनकर्ता हर चीज का देखने वाला है। (२१) (रुकू २)

ऐ पैगम्बर कहो कि ईश्वर के सिवाय जिनको तुम समझते हो उनको बुलाओ कि वह न तो आकाश ही में जर्रा भर अधिकार रखते हैं और न पृथ्वी में और न आकाश पृथ्वी मे इनका कुछ साझा है और न इसमें कोई सहायक (२२) और के यहां इनकी सिफारिश काम नहीं आती मगर उसके काम आयेगी जिसकी बाबत सिफारिश की आज्ञा दे, यहां तक जब उनके दिलों से घबराहट उठ जावे तब तुम्हारे पालन-कर्ता ने क्या बतलाया। वें कहेंगे जो वाजिबी है और वही सबसे ऊपर बड़ा है। (२३) ऐ पैगम्बर इन लोगो से पूछो कि तुमको आकाश और पृथ्वी से कौन रोजी देता है कहो कि अल्लाह और मैं हूं या तुम हो एक न एक गुट तो अवश्य सच मार्ग पर है और दूसरी खुली हुई गुमराही में। (२४) ऐ पैगम्बर कहो कि हमारे पापो की पूछ न तुझसे और न तेरे पापो की पूछ-ताछ मुझसे होगी। (२५) और कह दो कि हमारा पालनकर्ता प्रलय के दिन हमको जमा करेगा फिर हम मे न्याय के साथ निर्णय कर देगा और वह बड़ा जानकार न्यायी है। (२६) ऐ पैगम्बर कहो जिसको तुम शरीक बनाकर ईश्वर के साथ मिलाते हो उन्हें मुझे दिखलाओ। कोई उसका शरीका नही बल्कि वही अल्लाह जबरदस्त चमत्कार वाला है। (२७) और हमने तुमको सारे ससार के मनुष्यों की तरफ भेजा है कि उनको शुभसन्देश सुनाओ और डराओ मगर अक्सर मनुष्य नहीं समझते। (२८) और पूछते अगर तुम सच्चे हो तो यह प्रलय का प्रण कब पूरा होगा। (२९) कहो कि तुम्हारे साथ जिस दिन का प्रण है तुम न उससे एक घडी पीछे रह सकोगे और न आगे बढ़ सकोगे (३०) (रुकू ३)

और इन्कारी कहने लगे कि हम इस कुरान को कभी न मानेंगे और न इससे पहली किताबों को मानेंगे और अफसोस तुम देखो जब प्रलय के दिन यह अत्याचार अपने पालनकर्ता के सामने खडे किये जायगे एक की बात एक रद्द कर रहा होगा कि छोटे दर्जे के मनुष्य बडे मनुष्यो से कहेंगे कि अगर तुम न होते तो हम जरूर ईमान लाते (३१) इस पर बडे मनुष्य कमजोरो से कहेंगे जब तुम्हारे पास ईश्वर की ओर से आज्ञा आई तो क्या उसके आये पीछे हमने तुमको रोका बल्कि तुम अपराधी थे। (३२) और कमजोर लोग बडे लोगो से कहेंगे रात दिन के तुम्हारे झूठ ने हमे भुला दिया। जब हम से कहते थे कि हम अल्लाह को न मानें और उसके साथ दूसरे पूजित ठहरावें और जब यह मनुष्य दण्ड को देखेंगे तो छिपे-छिपे पछतायेंगे और हम काफिरों की गर्दनो मे तौक डलवा देंगे। जैसे-जैसे काम ये लोग करते रहे हैं उन्ही का फल पावेंगे। (३३) और हमने जिस बस्ती मे डराने वाला भेजा वहाँ के धनी मनुष्यो ने कहा कि जो कुछ तुम लाये हो हम उसे नही मानते। (३४) और इसी प्रकार ये मक्के के काफिर भी मुसलमानो से कहते हैं कि हम धन और सन्तान मे अधिक हैं और हम को दण्ड न होगा। (३५) ऐ पैगम्बर इन लोगो से कहो कि मेरा पालनकर्ता जिसकी रोजी चाहता है अधिक कर देता है और लोग नही जानते। (३६) (रुकू ४)

और तुम्हारे धन और सन्तान ऐसी नही कि तुमको मारा नज़ीची बनावे मगर जो ईमान लाया और उसने नेक काम किये ऐसे मनुष्यो लिये उनके काम का दुगना बदला है और वह बालाखानो मे भरोसे से बैठे होगे। (३७) और जो लोग हमारी आयतो के हराने का प्रलय करते हैं वह दण्ड मे रखे जायगे। (३८) ऐ पैगम्बर इन मनुष्यो से कहो कि मेरा पालनकर्ता अपने सेवको मे से जिसकी रोजी चाहता है बढा देता है और जिसकी चाहता है नपी तुली कर देता है और तुम कुछ भी ईश्वर के मार्ग मे खर्च करो वह उसका बदला देगा और वह

सब रोजी देने वालों से अच्छा है। (३९) और ईश्वर सब मनुष्यों को जमा किये पीछे फरिश्तों से पूछेगा कि क्या यह तुम्हारी ही पूजा किया करते थे। (४०) वह बोले तू पवित्र है हमको तुझसे काम है इनसे नहीं। परन्तु यह लोग भूतो की पूजा करते थे इनमें अक्सर भूतों पर विश्वास रखते हैं। (४१) सो आज तुम में एक दूसरे के भले-बुरे का मालिक नही और हम उन पापियो से कहेंगे कि जिस आग को तुम झुठलाते थे उसका आनन्द लो। (४२) और जब हमारी खुली-खुली आयतें उनके सामने पढकर सुनाई जाती हैं तो कहते हैं कि यह मुहम्मद एक आदमी इसका मतलब यह है कि जिनको तुम्हारे बाप दादा पूजा करते थे तुमको उनसे रोक दे और कुरान के बारे मे कहते हैं कि यह तो बस निरा झूठ है। और इसका अपना बनाया हुआ है और जो लोग इन्कार करने वाले हैं जब उनके पास सच्ची बात आई तो वह उसके लिए कहने लगे कि यह तो प्रत्यक्ष जादू है। (४३) और हमने इनको किताबें नहीं दी कि उनको पढ़ते हों और न तुमसे पहले इनकी तरफ कोई डराने वाला भेजा। (४४) और इनसे अगले मनुष्यो ने पैगम्बरों को झुठलाया था और जो हमने उन लोगों को दे रखा था यह मनुष्य तो अभी उसके दसवें हिस्से को भी नही पहुचे। फिर उन्होने पैगम्बरों को झुठलाया। तो हमारा क्या बिगाड़ हुआ। (४५) (रुकू ५)

हे पैगम्बर तुम इनसे कहो कि मैं तुमको एक शिक्षा करता हूं कि अल्लाह के काम के लिये दो-दो और एक-एक खड़े हो। फिर सोचो कि तुम्हारे मित्र मुहम्मद को किसी तरह का घमण्ड तो नही है। यह तो तुमको आगे आने वाली एक बड़ी आफत से डराने वाला है। (४६) ऐ पैगम्बर इन मनुष्यों से कहो कि मैं तुमसे कुछ मजदूरी नही चाहता मेरी मजदूरी तो हर चीज का गवाह है (४७) ऐ पैगम्बर कहो कि मेरा पालनकर्ता सच्चा चला रहा है और वह छिपी हुई बातो को खूब जानता है। (४८) ऐ पैगम्बर कहो कि सच्ची बात आ पहुंची और झूठ से न तो कभी कुछ होता है और न आगे होगा। (४९) ऐ

पैगम्बर कहो कि मैं गलती पर हूं तो मेरी गलती मेरे ही ऊपर है और अगर सच्चे मार्ग हू तो इस ईश्वरीय सन्देश के कारण से जिसे मेरा पालनकर्ता ने मेरी तरफ भेजता है वह सुनने वाला पास है।(५०) और ऐ पैगम्बर कभी तू देख जब यह घवडाये हुए फिर भागकर नही वचेंगे और पास के पास से पकड़ जायगे। (५१) और कहेगे हम उस पर ईमान लाये और इतनी दूर जगह से कैसे इनके हाथ ईमान आ सकता है। (५२) और पहले इससे इन्कार करते रहे और वे देखे-भाले दूर ही से अटकलें तुक्के चलाते रहे। (५३) और इनमे और इनकी आशाओ मे एक अटकाव पड गया, जैसा पहले उनके पूर्वजो के साथ किया गया कि वे मनुष्य धोखे मे थे। (५४) (रुकू ६)



सूरे फातिर

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ४५ आयतें और ५ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। हर तरफ की प्रशसा ईश्वर ही को है जिसने आकाश और पृथ्वी बना निकाले। उसी ने देवदूतो को दूत बनाया जिनके दो-दो और तीन-तीन और चार-चार है। पैदाइश मे जो चाहता है ज्यादा कर देता है। निस्सन्देह अल्लाह हर चीज पर शक्तिमान है। (१) अल्लाह जो मनुष्यों पर कृपा खोले तो कोई उसको बन्द करने वाला नही और बन्द कर ले तो उसके पीछे कोई उसको जारी करने वाला नही, और वह वडा चमत्कार वाला है। (२) ऐ मनुष्यो ! अल्लाह की भलाइयाँ जो तुम पर हैं, उनको याद करो। अल्लाह के सिवाय क्या कोई पैदा करने वाला है जो आकाश-पृथ्वी से तुमको रोजी दे। उसके सिवाय कौन पूजित है ? फिर

बहके चले जा रहे हो। (३) और ऐ पैगम्बर! अगर तुमको झुठलायें तो तुमसे पहले भी पैगम्बर झुठलाये जा चुके हैं और सब काम अल्लाह ही की तरफ फिरते हैं। (४) मनुष्यों! अल्लाह का प्रण प्रलय का सच्चा है तो ऐसा न हो कि ससार की जीवन तुमको धोखे मे डाल दे और ऐसा न हो कि राक्षस धोखेबाज ईश्वर के बारे मे तुमको धोखा दे। (५) राक्षस तुम्हारा शत्रु है, सो उसको शत्रु ही समझे रहो। वह अपने मनुष्यो को अपनी ओर केवल इसलिए बुलाता है कि वह लोग नरकवासियों में हो। (६) जो मनुष्य इनकार करने वाले है उनको कठोर दण्ड होना है। जो लोग ईमान लाये और उन्होने अच्छे काम किये उनके लिए दान और बडा फल है। (७) (रुकू १)

तो क्या वह जिसको उसके कुकर्मो को सुकर्म करके दिखाया गया और वह उसको अच्छा समझता अच्छे मनुष्यो की भाँति हो सकता है? नही कदापि नही अल्लाह जिसको चाहता है गुमराह करता है और जिसको चाहता है, सीधा मार्ग दिखाता है, तो इन मनुष्यो पर अफसोस करके तुम्हारी जान न जाती रहे। जैसे-जैसे कर्म यह लोग कर रहे हैं अल्लाह उनसे जानकार है। (८) अल्लाह है हवायें चलाता है, फिर हवायें बादल को उभारती हैं, फिर बादल को दूसरे शहर की तरफ हाँका। फिर हमने मेह के द्वारा पृथ्वी को उसके मरे पीछे जीवन किया है। इसी तरह पुरुषो को उठाना है। (९) जो इज्जत का चाहने वाला हो सब इज्जत ईश्वर को है। अच्छी बातें उसी तक पहुचती हैं और सुकर्म को ऊँचा करता है और जो लोग बुरी तदबीरें करते रहते हैं उनको सख्त सजा होगी और उनकी तदबीरें वही समाप्त हो जायगी। (१०) और अल्लाह ही ने तुमको मिट्टी से उत्पन्न किया। फिर वीर्य से, फिर तुमको जोडे-जोडे बनाया। और न कोई स्त्री गर्भ रखती और न जनती है, वह सब अल्लाह की विद्या से है। और बड़ी आयु वाला जो आयु पाता है और जिसकी आयु घटती है, सब पुस्तक में है। यह अल्लाह पर आसान है। (११) और दो समुद्र एक तरह

के नही हैं। एक का पानी मीठा स्वादिष्ट और प्यास बुझाने वाला है और एक का पानी खारी कड़वा है, और तुम दोनो मे से मछलियो का शिकार करके ताजा गोश्त खाते और निकालते हो जिनको पहनते हो। और तू देखता है कि नाव नदियो मे पानी को फाड़ती चली जाती हैं ताकि तुम ईश्वर की कृपा ढूंढो और तुम भलाई मानो। (१२) वह रात को दिन मे और दिन को रात मे दाखिल कर देता है, और उसी ने सूर्य और चन्द्रमा वश मे कर रखे हैं दोनो बन्धे हुए समय पर चल रहे हैं। यही अल्लाह आपका पालनकर्ता है, उसी का राज्य है और उसके सिवाय जिन पूजितो को तुम पुकारा करते हो वे जरा-सा अधिकार नही रखते। (१३) तुम उनको कितना ही बुलाओ वह तुम्हारे बुलाने को नही सुनेंगे और सुने भी तो तुम्हारी दुआ कबूल नही कर सकते और प्रलय के दिन तुम्हारे शरीक ठहराने से इन्कार करेंगे और जैसी खबर रखने वाला बतावेगा और कोई तुझे न बतावेगा। (१४) (रुकू २)

लोगों! तुम ईश्वर के मुहताज हो और अल्लाह असंख्य गुणो वाला है। (१५) वह चाहे तुमको ले जाय और नई सृष्टी ला बसाये। (१६) और यह अल्लाह को कठिन नही। (१७) और कोई आदमी किसी दूसरे का बोझ नही उठावेगा और अगर किसी पर पापो का बडा भारी बोझ हो और वह अपना बोझ बटाने के लिए किसी को बुलावे तो उसका जरा सा भी बोझ नही बटाया जायगा चाहे वह उसका सम्बन्धी क्यों न हो। ऐ पैगम्बर! तुम तो उन्ही लोगो को डरा सकते हो जो बे देखे अपने पालनकर्ता से डरते और नमाज पढते हैं और जो मनुष्य सुधरता है सो अपने ही लिए सुधरता है और अल्लाह की तरफ लौटकर जाना है। (१८) और अन्धा और आँखो वाला बराबर नही। (१९) और न अँधेरा और न उजाला। (२०) और न छाया और न धूप। (२१) और न जीवित और न मृत बराबर हो सकते हैं। अल्लाह जिसको चाहता है सुनाता है और जो मनुष्य कब्रो मे हैं तू उनको सुना नही सकता। (२२) और तू तो सिर्फ डरानेवाला है। (२३)

हमने तुमको शुभसंदेह सुनाने वाला और डरानेवाला बना कर भेजा है और कोई गुट ऐसा नही जिसमें कोई डरानेवाला न हो (२४) और जो वह तुझे झुठलाये तो इन से पहलों ने भी अपने पैगम्बरों को झुठलाया है और उनके पैगम्बर उनके पास खुले चमत्कार और छोटी किताबें और रोशन किताबें लेकर आये थे। (५) फिर मैंने इन्कार करनेवालों को धर पकड़ा तो मेरे इन्कार का कैसा फल हुआ। (२६) (रुकू ३)

क्या तूने देखा कि अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा। फिर उसके जरिये हमने अलग-अलग रंगो के फल निकाले और पहाड़ों में अलग-अलग रगतों के कुछ पत्थर निकाले। सफेद, लाल और काले भुजंग (२७) और इसी तरह आदमियों और चारपायों की रंगतें भी कई-कई तरह की हैं। इश्वर से उसके वही बन्दे डरते हैं जो समझ रखते है। अल्लाह बलवान क्षमा करने वाला है। (२८) जो लोग अल्लाह की किताब पढ़ते और नमाज पढते और जो कुछ हमने उनको दे रखा है उसमें से छिपाकर और खुले तौर पर ईश्वर की राह मे खर्चा करते हैं, वह ऐसे व्यापार की आस लगाये बैठे हैं जिसमें कभी घाटा नही हो सकता। (२६) ईश्वर उनको उनका पूरा फल देगा और अपनी कृपा से उनको ज्यादा भी देगा। वह क्षमा करने वाला कृपालु है। (३०) और ऐ पैगम्बर ! यह किताब जो हमने ईश्वरीय संदेश से तुम पर उतारी है यह ठीक है औरे जो किताबें इससे पहले की हैं यह उनकी सचाई बताती है। अल्लाह अपने सेवको से खबरदार देख रहा है। (३१) फिर हमने अपने सेवकों मे से उन लोगो को इस किताब का वारिस ठहराया जिसको हमने चुना। फिर उनमे से कोई अपनी जानो पर अत्याचार कर रहे हैं और कोई उनमे से बीच की चाल चले जाते हैं और कोई उनमे से ईश्वर के आज्ञा से नेकियों मे आगे बढ़े हुए हैं। यही ईश्वर की बड़ी कृपा है। (३२) और उनका बदला यह है बसो बसने के बाग है, यह लोग उनमे दाखिल होंगे।

यहां उनको सोने के कंगन और मोती का गहना पहनाया जायगा और उनकी पोशाक रेशमी होगी। (३३) और कहेंगे कि ईश्वर को धन्यवाद है जिसने हमसे दुख दूर कर दिया। हमारा पालनकर्ता बड़ा क्षमा करने वाला कदर जानने वाला हैं। (३४) जिसने हमको अपनी कृपा से ठहरने के घर मे उतारा। यहा हमको कोई दुख न पहुचायेगा और न वहाँ हमको थकान आवेगी। (३५) और जो लोग इन्कार करने वाले हैं उनके लिए नरक की आग है। न तो उनको मृत्यु आती है कि मर जायें और न नरक का दण्ड ही उनसे कम किया जाता है हम हर एक कृतघ्नी को इसी तरह पर दण्ड दिया करते हैं। (३६) और यह लोग नरक मे चिल्लाते होगे कि ऐ हमारे पालनकर्ता! हमको यहाँ से निकाल संसार मे ले चल कि हम जैसे कर्म करते रहे थे वैसे नही बल्कि सुकर्म करेंगे तो इनसे कहा जायगा क्या हमने तुमको इतनी आयु नही दी थी कि इसमे जो कोई सोचना चाहे सोच ले और तुम्हारे पास डराने वाला आ चुका था। बस दुख का आनन्द लिया जालिमो, का कोई सहायक नही। (३७) (रुकू ४)

अल्लाह आकाश और पृथ्वी की छिपी बातो को जानता है और जो दो दिलो के अन्दर है वह जानता है (३८) वही है जिसने तुमको पृथ्वी मे कायम मुकाम बनाया फिर जो इन्कार करता है उसकी इन्कारी का बवाल उसी पर है और जो लोग इन्कार करते हैं उनकी इन्कारी ईश्वर का प्रकोप ही बढाती है और इन्कार के कारण काफिरो को घाटा ही होता चला जाता है। (३९) ऐ पैगम्बर! इनसे कहो कि तुम अपने शरीको को जिनको तुम ईश्वर के सिवाय बुलाया करते हो, मुझे दिखाओ। उन्होने कौन सी पृथ्वी बनाई है या आकाश मे उनका कुछ साझा है या हमने इन मुशरिको को कोई किताब दी है कि यह उसका प्रमाण रखते हैं, अत्याचार दूसरो को धोखे ही के वादे देते हैं। (४०) अल्लाह ने आकाश और पृथ्वी को थाम रखा है कि टल न जाय

और टल जायं तो फिर उसके सिवाय कोई नही जो उनको थाम सके अल्लाह सतोषी और क्षमा करने वाला है। (४१) और अल्लाह की बड़ी-बड़ी पक्की कसमे खाया करते थे इन के पास कोई डराने वाला आयेगा तो वह जरूर हर एक गुट से ज्यादा राह पर होंगे। फिर जब डरानेवाला उनके पास आया तो उनकी घृणा ही बढ़ी। (४२) देश में सरकशी और बुरे यत्न करने लगे और बुरी तदबीर उलटकर बुरी तदबीर करने वाले पर ही पड़ती है। अब वह अगले लोगो के दस्तूर ही की राह देखते है और तू ईश्वर के दस्तूर मे हेर-फेर न पायेगा और अल्लाह के दस्तूर मे टलना नहीं पायेगा। (४३) क्या चले-फिरे नही कि अगलो का परिणाम देखें। वह बल मे इनसे कहीं बढ़कर थे और अल्लाह इस लायक नही कि आकाश पृथ्वी में उसको कोई चीज थका सके। वह जाननेवाला बलवान है। (४४) और अगर ईश्वर लोगो को उनके कामो के बदले मे पकड़े तो पृथ्वी पर किसी जानदार को न छोड़े। मगर वह एक नियत समय तक यानी प्रलय तक लोगों को मुहलत दे रहा हैं फिर जब उनका समय आयेगा तो उनको बदला देगा। अल्लाह अपने सेवकों को देख रहा है। (४५) (रुकू ५)



सूरे यासीन

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ८३ आयतें और ५ रुकू है

अल्लाह के नाम से जो कृपालु तथा दयावान है यासीन (१) चमत्कार वाले पक्के कुरान की सोगन्ध। (२) तू पैगम्बरो मे है। (३) सीधी राह पर। (४) यह कुरान शक्तिवान और कृपालु ने

उतारा है। (५) ताकि तुम ऐसे लोगो को डराओ जिनके बाप डराये नही गये और वह बेखबर है। (६) इनमे से बहुतेरो पर बात दण्ड कायम हो चुका है, सो यह न मानेंगे। (७) हमने इनकी गर्दनो मे ठोडियो तक तौक डाल दिये हैं, सो वह सिर उभार कर रह गये हैं। (८) और हमने एक दीवार इनके आगे बनाई और एक दीवार इनके पीछे। फिर ऊपर से ढाक दिया सो उनको नही सूझता। (९) और ऐ पैगम्बर! इनके लिए एकसा है कि तुम इनको डराओ या न डराओ यह तो ईमान लाने वाले नही हैं। (१०) तू तो उसी को डरा सकता है जो समझाये पर चले और बेदेखे रहमान से डरे, तो उसको क्षमा और इज्जत की शुभसूचना सुना दो। (११) हम मुर्दों को जिलाते हैं और जो आगे भेज चुके हैं उनको निशानी हम लिख रहे हैं और हमने हर चीज खुली असल किताब मे लिख दी है। (१२) (रुकू १)

और ऐ पैगम्बर इनसे उदाहरण के तौर पर एक गाँव रूम वालो का हाल बताओ कि जब उनके पास पैगम्बर आये। (१३) जब हमने उनकी तरफ दो पैगम्बर भेजे तो उन्होने इन दोनो को झुठलाया। इस पर हमने तीसरे पैगम्बर को भेजकर उनकी सहायता की तो उन दोनो ने मिलकर कहा कि हम तुम्हारे पास ईश्वर के भेजे हुए हैं। (१४) वह कहने लगे कि तुम हमारी तरह के आदमी हो और ईश्वर ने कोई चीज नही उतारी, तुम झूठ बोलते हो। (१५) पैगम्बरो ने कहा हमारा पालनकर्ता जानता है कि हम तुम्हारी तरफ़ भेजे गए हैं। (१६) और हमारा काम तो साफ पहुचा देना है। (१७) वह कहने लगे हमने तो तुमको मनहूस पाया। अगर तुम न मानोगे तो तुमको पत्थरो से मारेंगे और हमारे हाथो से तुमको दुखदाई मार लगेगी। (१८) कहा कि तुम्हारी शामत तुम्हारे साथ है क्या तुमको समझाया गया तुम हमको बेकार उलटा उलाहना देने लगे, नही तुम लोग हद से बढ़ गए हो। (१९) और शहर के परले सिरे से एक आदमी दौडता हुआ आया और कहने लगा कि भाइयो! इन पैगम्बरो

केके हे पर चलो। (२०) ऐसे लोगों के कहे पर चलो जा तुमसे बदला नहीं माँगते और ईश्वर की सीधी राह पर हैं। (२१)



तेईसवाँ पारा (वमा लिय)

और मुझे क्या है कि जिमने मुझको पैदा किया है उसकी पूजा न करूं। तुम उसी की तरफ लौटाये जाओगे। (२२) क्या उसके सिवाय दूसरो का पूजित मान लूं। अगर अल्लाह मुझे कोई कष्ट पहुचाना चाहे तो उनकी सिफारिश मेरे कुछ काम न आए और वह मुझको न छुडा सकें। (२३) अगर ऐसा करूं तो मैं प्रत्यक्ष कुमार्ग मे जा पड़ा। (२४) मैं तुम्हारे पालनकर्ता पर ईमान लाया हूं, सो सुन लो (२५) आज्ञा हुई कि स्वर्ग मे चला जा। बोला कि क्या अच्छा होता जो मेरी जाति को मालूम हो जाता। (२६) कि मुझे मेरे पालनकर्ता ने क्षमा कर दिया और इज्जतदारी मे दाखिल किया। (२७) और हमने उसके पीछे उनकी कौम पर आकाश से फरिश्तो का कोई लश्कर न उतरा और हम फौजें नहीं उतारा करते। (२८) वह तो बस एक आवाज थी और उसी दम वह जाति आग की तरह बुझकर रह गई। (२९) मनुष्यों पर शोक है जब कोई पैगम्बर उसके पास आया इन्होंने उसकी हंसी ही उडाई। (३०) क्या इन लोगों ने नही देखा कि इनसे पहले हमने कितने गुटों को मार डाला। और वे इनकी तरफ लौटकर कभी न आयेंगे। (३१) और सब मे कोई ऐसा नही जो इकट्ठा हमारे पास पकड़ा हुआ न आवे। (३२) (रुकू २)

और इनके लिए पृथ्वी एक निशानी है। हमने उनको जिलाया और उसने अनाज निकाला जो उसी में से खाते हैं। (३३) और पृथ्वी

मे हमने खजूर और अगूरो के बाग लगाए और उनमे झरने बहाये (३४) ताकि बाग के फलो मे से भाग्य का खायें और यह फल इनके हाथों के बनाये हुए नही। फिर क्यो धन्यवाद नही देते। (३५) वह पवित्र है जिसने सब चीजो से जिन्हें पृथ्वी उगाती है और इनकी किस्म में थे और उस किस्म मे से जिन्हें तुम नही जानते हो जोडे पैदा किए (३६) और इनके लिए एक निशानी रात है कि हम उसमे से दिन को खीचकर निकाल लेते हैं, फिर यह लोग अन्धेरे मे रह जाते है। (३७) और सूरज अपने एक ठिकाने पर चला जाता है। वह जोरावर व आगाह से सधा हुआ हैं। (३८) और चाद के लिए हमने मजिले ठहरा दी यहां तक कि आखिर माह मे घटते-घटते फिर ऐसा टेढा पतला रह जाता है जैसे खजूर की पुरानी टहनी। (३९) न तो सूरज ही से बन पडता है कि चाँद को पकडे और न रात ही दिन से आगे आ सकती है और हर कोई एक-एक घेरे मे फिरते हैं। (४०) और [illegible] के लिए एक निशानी है कि हमने इन मनुष्यो की औलाद को भरी इनके लि[illegible] मे उठा लिया। (४१) और नाव की तरह हमने इनके लिए और चीजें पैदा की हैं जिन पर सवार होते हैं। (४२) और हम चाहे तो इनको डुबो दें, फिर न तो कोई इनकी सहायता लेनेवाला होगा और न यह छुडाये जा सकेंगे। (४३) मगर यह हमारी कृपा है और एक समय तक लाभ के लिए मंजूर है। (४४) और जब उनसे कहा जाता है कि जब तुम्हारे आगे और पीछे हैं उनसे डरते रहो शायद तुम पर कृपा की जावे। (४५) और इनके पालनकर्ता की निशानियाँ इनके पास आती हैं तो यह उनसे मुह मोडते हैं। (४६) और जब इनसे कहा जाता है कि ईश्वर ने जो तुमको रोजी दे रखी है उसमे से कुछ खर्च करते रहा करो तो काफिर मुसलमानो से कहते है कि क्या हम ऐसे लोगो को खिलायें जिनको ईश्वर चाहे तो आप खिला सकता है। तुम प्रत्यक्ष गुमराही मे हो। * (४७) और कहते है अगर

---

*काफिर कहते थे कि हम उन लोगो को अपनी गाढी कमाई से

तुम सच्चे हो तो यह प्रलय का वादा कब पूरा होगा ? (४८) यही राह देखते हैं कि यह मनुष्य आपस मे लड़-झगड़ रहे हो। और एक जोर की आवाज इनको आ पकड़े। (४६) फिर न तो वसीयत ही कर सकेंगे और न अपने बाल-बच्चो मे लौटकर जा सकेंगें। (५०) (रुकू ३)

और सूर नरसिंहा फूंका जायगा तो एकदम से कब्रों से निकल-निकल अपने पालनकर्ता की तरफ चल खड़े होगे। (५१) पूछोगे कि हाय ! हमारा अभाग्य किसने हमारी कब्रों से हमको उठाया ? यही तो वह प्रलय है जिसका वादा रहमान् ने कर रखा था और पैगम्बर सच कहते थे। (५२) प्रलय बस एक जोर की आवाज होगी तो एकदम से सब मनुष्य हमारे सामने पकड़े आवेंगे। (५३) फिर उस दिन किसी आदमी पर जरा-सा भी अत्याचार न होगा और तुम लोगो को उसी का बदला दिया जायगा जो करते रहे। (५४) स्वर्ग वाले उस दिन मजे से जी बहला रहे होगे। (५५) वह और उनकी पत्नियाँ साये मे तकिया लगाये तख्तो पर बैठी होंगी। (५६) वहाँ उनके लिए मेवे होंगे और जो कुछ वे मांगें। (५७) पालनकर्ता कृपालु से सलाम किया जायगा। (५८) और ऐ अपराधियो ! आज तुम अलग हो जाओ। (५९) ऐ आदमी की संतान ! क्या हमने तुम पर आज्ञा नहीं कर दी थी कि राक्षस की पूजा न करना कि वह तुम्हारा खुला शत्रु है। (६०) और यह कि हमारी ही पूजा करना, यही सीधी राह है। (६१) और उसने तुममे से कुछ लोगो को गुमराह कर दिया, क्या तुम

क्यों खाने को दें जिनको ईश्वर ही ने खाने को नहीं दिया। यदि ईश्वर इनको खिलाना चाहता तो स्वयं खिलाता। इनको खिलाना तो ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध करना है। इस पर ये आयतें और इनके अतिरिक्त और कई आयतें उतरीं।

अक्ल नही रखते थे ? (६२) यह नरक है जिसका तुमसे वाद किया जाता था। (६३) आज अपने मना करने के बदले इसमे जाओ। (६४) आज हम इनके मुँह पर मुहर लगा और जैसे काम यह मनुष्य कर रहे थे इनके हाथ हमको बता देंगे और इनके पैर गवाही देंगे। (६५) और हम चाहें तो इनकी आखोंको मेट दें, फिर यह राह चलने को दोडें तो कहाँ से देख पावें (६६) और अगर हम चाहें तो यह जहाँ हैं वही इनकी सूरतें बदल दें, फिर न आगे चल सकें न पीछे फिर सकें। (६७) (रुकू ४)

और हम जिसकी आयु बडी करते हैं ससार मे उसको उल्टा घटाते चले जाते हैं। फिर क्या नही समझते ? (६८) और हमने इन पैगम्बर मुहम्मद को शायरी नही दिखाई और शायरी इनके योग्य भी नही। यह कुरान तो शिक्षा है और साफ है। (६९) ताकि जो जिन्दा दिल हो उनको [ईश्वर के दण्ड से डरायें। काफिरो को दण्ड दें। (७०) क्या इन लोगो ने नही देखा कि हमने अपने हाथो से इनके लिए चौपाये पैदा किए और यह उनके मालिक हैं। (७१) और हमने उनको इनके वश मे कर दिया है तो उनमे से कुछ इनकी सवारियाँ हैं और उनमे से कुछ को खाते हैं। (७२) और उनमे इनके लिए लाभ हैं और पीने की चीजे दूध, तो क्या यह मनुष्य धन्यवाद नही देते। (७३) और लोगो ने ईश्वर के सिवाय दूसरे पूजित इस उम्मेद से बना रखे हैं कि उनको सहायता मिले। (७४) सो वह उनकी सहायता नही कर सकते बल्कि यह उनकी फौज होकर खुद पकडे जावेंगे। (७५) तो इनकी बातें तुम्हारी उदासी का कारण न हो क्योंकि जो कुछ छिपाकर और जो करते हैं जाहिरा करते हैं, हम जानते हैं। (७६) क्या आदमी को मालूम नही कि हमने उसको वीर्य से पैदा किया, फिर वह जाहिरा झगडालू हो गया। (७७) और हमारी बाबत बातें बनाने लगा जब हड्डियाँ गल गई तो उनको कौन जीवित करेगा। (७८) ऐ पैगम्बर ! तुम इस गुस्ताख से कहो जिसने हड्डियो को पहली

बार पैदा किया था वही उनको जिलायेगा और वह सब तरह का पैदा करना जानता हैं। (७६) वही है जो हरे पेडों से तुम्हारे लिए आग पैदा करता हैं, फिर तुम उससे और आग सुलगा लेते हो। (८०) क्या जिसने आकाश और पृथ्वी पैदा किये वह इस पर शक्तिमान नही कि इन जैसे आदमियो को दुबारा पैदा करे। हाँ जरूर शक्तिमान हैं और वह बड़ा पैदा करनेवाला जाननेवाला है। (८१) उसकी आज्ञा यही है कि जब किसी चीज के बनाने का इरादा करे तो उसे कहे 'हो' और वह हो जाता है। (८२) वह पवित्र है, जिसके हाथ मे हर चीज का पूरा अधिकार है और मरे पीछे तुम उसी की तरफ लौटाए जाओगे। (८३) (रुकू ५)

सूरे साफ्फात

मक्के में अवतरित हुई इसमें १८२ आयतें और ५ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु तथा दयावान है। लश्करो की सौगन्ध जो कतारो में खडे होते है। (१) फिर झिड़क कर डाटने-वालो की कसम। (२) फिर याद कर कुरान पढनेवालो की सौगन्ध। (३) निसन्देह तुम्हारा हाकिम एक ईश्वर है। (४) आकाश पृथ्वी और जो चीजें आकाश और पृथ्वी मे हैं सबका पावन लवकर्ता और उन मुकामो का पालनकर्ता जहाँ-जहाँ से सूरज अलग-अलग समय पर निक-लता है। (५) हमने आकाश को तारो की शोभा से सजाया। (६) और हर राक्षस सरकश से बचाव बनाया। (७) वह राक्षस ऊपर के मनुष्यो यानी देवदूत की बातो की तरफ कान नहीं लगाने पाते और उनके लिए हर तरफ से उनपर अंगारे फेंके जाते हैं। (८) भागने

के लिए और उनकी हमेशा की मार है। (९) मगर कोई किसी देवदूत की बात को जल्दी से उचक ले जाता है तो दहकता हुआ अंगारा उसके पीछे लगता है। (१०) तो ए पैगम्बर ! इनसे पूछ कि क्या इनका पैदा करना ज्यादा कठिन है या जिनको हमने बनाया है ? इन आदम के पुत्रो को हमने लसदार मिट्टी से पैदा किया है (११) ऐ पैगम्बर ! तूने आश्चर्य किया और यह हसते हैं। (१२) और जब इनको समझाया जाता है तो नही समझते। (१३) और जब इनको कोई निशानी देखते हैं हसते उडाते हैं। (१४) और कहते हैं यह तो बस प्रत्यक्ष जादू है। (१५) क्या जब हम मर गये और मिट्टी और हड्डियाँ हो कर रह गए, प्रलय में उठा खड़े किए जावेंगे ! (१६) और क्या हमारे अगले बाप-दादा भी उठेंगे ? (१७) ऐ पैगम्बर ! इन लोगो से कहो कि हाँ, और तुम जलील होगे। (१८) सो वह तो एक झिडकी है, फिर तभी यह देखने लगेंगे। (१९) और बोल उठेंगे। कि हाय ! हमारा अभाग्य, यह तो न्याय का दिन है। (२०) यही न्याय का दिन है जिसको तुम झुठलाया करते थे। (२१) (रुकू १)

अत्याचारियो का और उनकी स्त्रियो को और ईश्वर के अलावा जिनको पूजते रहे है उनको इकट्ठा करो। (२२) फिर उनको नरक की राह ले चलो। (२३) और उनको खडा रखो कि उनसे सवाल होगा। (२४) तुम्हे क्या हो गया कि एक दूसरे की सहायता नही करते। (२५) यह कुछ भी उत्तर न देंगे वल्कि यह उस दिन नीची गर्दन किये होंगे। (२६) और एक की तरफ एक ध्यान देकर पूछा-ताछी करेगा। (२७) एक गुट दूसरे गुट से कहेगा कि तुम्हारी दाहिनी तरफ से बहकाने को हमारे पास आया करते थे। (२८) वह कहेंगे नही तुम आप ईमान नही लाते थे। (२९) और तुम पर हमारा कुछ जोर तो न था वल्कि तुम बडे थे। (३०) सो हमारे पालनकर्ता का वादा हमारे हक मे पूरा

हुआ, हमको दण्ड के मजे चखने होंगे। (३१) हम बहके हुये थे सो हमने तुमको भी बहका दिया। (३२) सो वे उस दिन दण्ड मे शरीक होगे। (३३) हम अपराधियों के साथ ऐसा ही किया करते हैं। (३४) यह ऐसे बलवान थे। जब इनसे कहा जाता था कि ईश्वर के सिवाय कोई पूजित नहीं तो यह अकड़ बैठते थे। (३५) और कहते थे कि भला हम अपने पूजितो को एक पागल शायर के लिए छोड़ दें। (३६) बल्कि वह सच्चा धर्म लेकर आया है और सब पैगम्बरो का सच माना है। (३७) तुम जरूर दुखदाई दण्ड चखोगे। (३८) और जैसे-जैसे कर्म करते रहे हो उन्ही का बदला पाओगे। (३९) मगर अल्लाह के खास बन्दे। (४०) यह ऐसे होंगे कि इनकी रोजी मालूम है। (४१) मेवे और इनकी इज्जत होगी। (४२) निआमत के बागो में (४३) तख्तों पर आमने सामने होगे। (४४) इनमें साफ शराब का प्याला घुमाया जायगा। (४५) सफेद रंग पीने वालों को मजा देगी। (४६) न उससे सिर घूमते हैं और न उससे बकते हैं। (४७) और उनके पास नीची निगाह वाली बड़ी आँखो की स्त्रियाँ होंगी। (४८) जैसे कि वह अण्डे छिपे रखे हैं, (४९) फिर यह एक दूसरे की तरफ ध्यान देकर आपस मे पूछा-ताछी करेंगे। (५०) इनमे से एक कहेगा कि एक मेरा साथी था। (५१) और वह पूछा करता था कि क्या तू उन मनुष्यों में है जो प्रलय को मानते हैं। (५२) क्या जब हम मर जायगे और मिट्टी और हड्डियाँ होकर रह जायगे हमको बदला मिलेगा? (५३) कहने लगा भला तू झाँककर देखेगा। (५४) फिर झाँकेगा तो उसको नरक के बीचोबीच देखेगा। (५५) बोल उठेगा कि ईश्वर की सौगन्ध तू तो मुझे तबाह करने को था। (५६) और मेरे पालनकर्ता की कृपा न होती तो मैं पकड़े हुओं में होता। (५७) क्या हमको अब मरना नही। (५८) अगर पहली बार मर चुके और हमें दण्ड न होगा। (५९) निस्सन्देह यही बड़ी कामयाबी है। (६०) चाहिये कि ऐसी कामयाबी के लिये काम करने वाले काम करे। (६१) भला यह मेहमानी बेहतर है सेंहुड़ का पेड़? (६२) हमने

उसको जालिमो के खराब करने को रखा है। (६३) वह एक पेड़ है जो नरक की जड मे से उगता है। (६४) उसके फल जैसे शैतानो के के सिर। (६५) सो यह उसी मे से खायगे और उसी से पेट भरेंगे। (६६) फिर उनको उस पर खौलता हुआ पानी दिया जायगा। (६७) फ़िर इनको नरक की तरफ लौटाना होगा। (६८) ऐ पैगम्बर! इन्होंने यानी मक्के के काफिरो ने अपने बाप दादो को बहका हुआ पाया। (६९) सो वे उन्ही के पीछे-पीछे चले जा रहे हैं। (७०) और इनसे पहले वे मार्ग भूल चुके हैं। (७१) और उनमे भी हमने डर सुनाने वाले पैगम्बर भेजे थे। (७२) तो ऐ पैगम्बर! देखो उन मनुष्यो का कैसा अच्छा परिणाम हुआ जो उठाये जा चुके है। (७३) मगर अल्लाह के चुने हुये बन्दे। (७४) (रुकू २)

और नूह ने हमको पुकारा था तो हमने उनकी प्रार्थना सुन ली और हम अच्छी प्रार्थना पर पहुचने वाले हैं। (७५) नूह और उनके घर वालो को उस घडी घबराहट से बचा दिया। (७६) और उनकी सन्तान को ऐसा किया कि बाकी रह गई। (७७) और आने वाले गुटो मे उनका जिक्र खैर बाकी रखा। (७८) सारे ससार मे हर तरफ से नूह पर सलाम। (७९) नेक मनुष्यो को हम ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (८०) नूह हमारे ईमानदार बन्दो मे से है। (८१) फिर औरो को हमने डुबो दिया। (८२) और नूह के तरीको पर चलनेवाले मे से एक इब्राहीम भी थे। (८३) जब साफ दिल से अपने पालन-कर्ता की तरफ रुजू हुआ, (८४) जब अपने पिता और अपनी जाति से कहा कि तुम क्या पूंजते हो। (८५) क्यो अल्लाह के सिवाय झूठे पूजित बनाकर चाहते हो? (८६) फिर तुमने ससार के पालने वाले को क्या समझा रखा है? (८७) फिर तारो पर एक निगाह की। (८८) फिर कहा मैं बीमार हू*। (८९) तो वह मनुष्य उनको छोड़

* हजरत इब्राहीम की जाति ने उनसे मेले चलने को कहा तो

कर चले गये। (९०) उनका जाना था कि इब्राहीम चुपके से उनकी मूर्तियो मे जा घुसे और कहा कि तुम खात नही। (९१) तुम्हे क्या हुआ, तुम क्यो नही बोलते ? (९२) फिर इब्राहीम दाहिने हाथ से उनके मारने को घुसा। (९३) फिर लोग उस पर घबराते दौडे आये। (९४) इब्राहीम ने कहा क्या तुम ऐसी चीजो को पूजते हो जिनको तुम आप काट कर बनाते हो ? (९५) तुमको और जिन चीजो को तुम बनाते हो अल्लाह ही ने पैदा किया है। (९६) यह सुनकर वह लोग कहने लगे कि इब्राहीम के लिए एक मकान बनाओ और उसको दहकती हुई आग में डाल दो। (९७) फिर इब्राहीम के साथ बुरा दाव चाहने लगे। फिर हमने उन्ही को नीचे डाला। (९८) और कहा मैं अपने पालनकर्ता कि ओर जाता हू बस मुझे ठिकाने लगा देगा। (९९) और इब्राहीम ने दुआ माँगी ऐ मेरे पालनकर्ता ! मुझको नेको मे से एक नेक जीव दे। (१००) फिर हमने उनको एक बड़े हलीम के लड़के इस्माईल का शुभसन्देश दिया। (१०१) फिर जब लड़का इब्राहीम के साथ चलने फिरने लगा तो इब्राहीम ने कहा बेटा ! मैं स्वप्न मे देखता हू कि मैं तुझको बलिदान कर रहा हू, फिर देख कि तेरी क्या राय है ? पुत्र ने कहा ऐ पिता ! जो तुझको आज्ञा हुई है तू कर, ईश्वर ने चाहा तू मुझे सन्तोषी पायेगा। (१०२) फिर जब दोनों पिता पुत्र ने आज्ञा मानी और पिता ने हलाल करने के लिए पुत्रो को माथे के बल पछाडा। (१०३)और हमने उसे पुकारा कि ऐ इब्राहीम ! १०४) तूने स्वप्न को सचकर दिखाया, नेको को हम ऐसा ही बदला देते हैं।(१०५) निस्सन्देह यह खुली हुई परीक्षा थी। (१०६) और हमने बडे बलि-

---

उन्होंने यह बात कहकर उनको अपने पास से टाल दिया और फिर उनकी मूर्तियो को तोड़ डाला ताकि उनके जाति वाले समझ ले कि वह जिनको पूजते हैं वह बेशक दूसरो का क्या अपना भी बचाव नही कर सकते।

दान* को इस्माईल के बदले मे दिया। (१०७) और आने वाले गुटो मे मे उनका जिक्र बाकी रखा। (१०८) इब्राहीम पर सलाम। (१०९) हम नेक सेवको को ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (११०) यह इब्राहीम हमारे ईमानदार बन्दो मे। (१११) और हमने इब्राहीम को दूसरे पुत्र इसहाक को शुभसन्देश दिया कि यह भी नेक और पैगम्बर होगा। (११२) और हमने इब्राहीम और इसहाक को बरकतें दी और इन दोनो की सन्तान मे कोई नेक और कोई बुरे अपने ऊपर आप अत्याचार करने वाले भी है। (११३) (रुकू ३)

और हमने मूसा और हारून पर एहसान किये। (११४) और दोनो भाइयो का और उनकी जाति को बड़ी घबराहट यानी फिरऔन के अत्याचार से छुटकारा दिलाया। (११५) और फिरऔन के मुकाबिले मे उनकी सहायता की तो यही मनुष्य जीत मे रहे। (११६) और दोनो को भाइयो को तौरात की किताब दी। (११७) और दोनो को सीधी राह दिखाई। (११८) और उनके बाद आने वाले गुट मे उनका जिक्र बाकी रखा। (११९) मूसा और हारून पर सलाम है। (१२०) हम नेक सेवको को ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (१२१) यह दोनो हमारे ईमान वाले बन्दो मे हैं। (१२२) और इलियास भी निस्सदेह पैगम्बर मे से हैं। (१२३) जब उन्होने अपनी जाति से कहा क्या तुम ईश्वर से नही डरते ? (१२४) क्या तुम मूर्ति को पूजते और बेहतर अल्लाह को छोड बैठे हो ? (१२५) अल्लाह तुम्हारा पालनकर्ता और तुम्हारे अगले बाप-दादो का पालनकर्ता है। (१२६) लोगो ने उनको झुठलाया सो यह लोग भी गिरफ्तार होगे। (१२७) मगर अल्लाह के

---

* ईश्वर ने उनके बेटे को बचा लिया और उनके बदल एक दुम्बा हलाल हो गया। वह बात इब्राहीम को उस समय मालूम हुई जबकि उन्होंने अपनी आँखो की पट्टी खोली।

चुने बन्दे। (१२८) और इल्यास के बाद आने वाले गुटों में हमने उनका जिक्र बाकी रखा। (१२९) इल्यास पर सलाम हो। (१३०) तुम नेकों को इसी तरह बदला दिया करते हैं। (१३१) इल्यास हमारे ईमान वाले दासों में से हैं। (१३२) और निस्सन्देह लूत पैगम्बरों मे से हैं। (१३३) हमने लूत को और उनके तमाम कुटुम्ब को बचा लिया। (१३४) मगर एक बुढिया लूत की स्त्री बाकियों में थी। (१३५) फिर हमने औरों को मार डाला। (१३६) और तुम सुबह को गुजरते हो। (१३७) और रात को भी गुजरते हो क्या तुम नही समझते। (१३८) (रुकू ४)

और निस्संदेह यूनिस पैगम्बरों मे से है। (१३९) जब भाग कर भरी हुई नाव के पास पहुचे। (१४०) और फिर चिट्ठियाँ डाली चूँकि उसमे उनका नाम निकला तो ढकेले हुओं में हो गया। (१४१) फिर उनको मछली ने निगल लिया और वह उस समय अपने आप धिक्कार करता था। (१४२)अगर यूनिस ईश्वर की पवित्रता से याद करने वालो मे से न होता। (१४३) तो उस दिन तक जब कि लोग उठा खड़े किये जायगे मछली ही के पेट मे रहता। (१४४) फिर हमने उसको मछली के पेट से निकाल कर खुले मैदान मे डाल दिया और वह मछली के पेट में रहने से बीमार था। (१४५) फिर हमने उस पर कद्दू की तरह का एक बेलदार पेड़ उगाया। (१४६) और उसको लाख बल्कि लाख से भी अधिक आदमियो की तरफ पैगम्बर बनाकर भेजा। (१४७) फिर वह ईमान लाये तो हमने उनको एक समय तक बरतने दिया! (१४८) तो ऐ पैगम्बर इन मक्के के काफिरो से पूछो कि क्या ईश्वर के लिए पुत्रियां और उनके लिये पुत्र है। (१४९) या हमने देवताओं को औरतें बनाया और वह देख रहे थे। (१५०) यह तो अपने दिल से बना-बना कर कहने हैं। (१५१) कि ईश्वर संतान वाला है और कुछ संदेह नही कि यह लोग झूठे हैं (१५२) क्या ईश्वर ने बेटो पर बेटियाँ पसन्द की। (१५३) तुमको क्या हुआ कैसे न्याय

करते हो। (१५४) क्या तुम ध्यान नही देते। (१५५) क्या तुम्हारे पास कोई खुला हुआ प्रमाण है। (१५६) सच्चे हो तो अपनी किताब लाओ। (१५७) और इन लोगो ने ईश्वर मे और दिनो मे नाता ठहराया है हलाँकि जिन्नो को अच्छी तरह मालूम है कि वह हाजिर किये जायेंगे। (१५८) जैसी बातें यह लोग बनाते हैं ईश्वर उनसे पवित्र है। (१५९) मगर अल्लाह के खालिस बन्दे हैं। (१६०) सो तुम और जिन्नो को जिनकी तुम पूजा करते हो। (१६१) ईश्वर से जिद्द करके किसी को बहका नही सकते। (१६२) मगर उसी को जो नरक मे जानेवाला है। (१६३) और हममे से हर एक का दर्जा मुकर्रर है। (१६४) और हम जो हैं हम ही हैं ईश्वर की सेवा मे पाँति बाँधने वाले। (१६५) और हमतो उसकी याद मे लगे रहते हैं। (१६६) और यह मक्का के काफिर कहा ही करते थे। (१६७) कि अगले लोगो की कोई पुस्तक हमारे पास होती। (१६८) तो हम ईश्वर के चुने हुए बन्दे होते। (१६९) सो उन्होने कुरान को न माना तो आगे चल कर मालूम कर लेंगे। (१७०) और हमारे बन्दे पैगम्बरो के हक मे हमारी आज्ञा पहले ही हो चुकी है। (१७१) निस्सदेह उन्ही की सहायता होती है। (१७२) और हमारा लशकर बलवान रहा करता है (१७३) तो ऐ पैगम्बर कुछ दिन इन इन्कार करने वालो से मुंह मोड ले। (१७४) और उन्हें देखता रहे कि आगे यह भी देख लेवें। (१७५) क्या हमारे दण्ड के लिए जल्दी मचा रहे हैं। (१७६) जब वह दण्ड उनके आँगनो मे उतरेगी तो जिन लोगो को पहले से डराया जा चुका था उनकी सुबह बुरी होगी। (१७७) और तू उनसे एक समय तक मुंह मोड ले। (१७८) और देखता रह आगे चलकर देख लेंगे। (१७९) ऐ पैगम्बर जैसी-जैसी बात यह लोग बनाते हैं उनसे तेरा इज्जतवाला पालनकर्ता पवित्र है। (१८०) और पैगम्बरो पर सलाम है (१८१) और सब खूबी अल्लाह को है जो सब ससार का पालनकर्ता है (१८२) (रुकू ५)



सूरे साद

अल्लाह के नाम पर जो कृपालु व दयावान है। कुरान की सौगन्ध जिसमे नसीहत है (१) निस्संदह जो लोग इन्कार करने वाले हैं दुश्मनी मे हैं। (२) हमने इयसे पहले वहुत से गिरोहों को मार डाला दण्ड के समय चिल्ला उठे और छूटने का समय न रहा। (३) और इन लोगो ने आश्चर्य किया कि इनमे का डराने वाला इनके पास आ गया और काफिरों ने कहा यह जादूगर झूँठा है। (४) क्या इसने पूजितों की खोज खोकर एक ही पूजित रक्खा यह वड़ी ही अनोखी वात है। (५) और इनमें के कुछ सरदार लोग यह कह कर चल खड़े हुए और अपने पूजितों पर जमे रहो, यह वात जो यह मनुष्य समझता है निस्सदेह इसमें इसकी कुछ गरज है। (६) हमने यह वात पिछले धर्म मे नहीं सुनी यह इसकी गढ़ंत है। (७) क्या हम मे से उसी पर ईश्वर की वात उतारी है वह सेरे कलाम की वावत सदेह मे हैं अभी इन्होने हमारा दण्ड नही देखा। (८) ऐ पैगम्बर क्या तुम्हारे पालनकर्ता शक्तिमान दाता की कृपा के खजाने इन्हीं के पास हैं। (९) यह आकाश या पृथ्वी और वह चीजें जो आकाश पृथ्वी मे हैं उनका अधिकार उन्ही को है तो इनको चाहिए कि रस्सिया लगा कर आकाश पर चढ़ें। (१०) ऐ पैगम्बर तमाम लशकरों में से यह कोम भी इस जगह एक हारी हुई फौज है। (११) इनसे पहले नूह की कौम और आद और मेखों वाले फिरऔन झुठला चुके हैं। (१२) और समूद और लूत की कौम और एका के गुट। (१३) इन सब ही ने तो पैगम्बरो को झुठलाया फिर हमारा दण्ड आ गया। (१४) (रुकू १)

और यह कुरेश भी एक चिंघाड़ की वाट देखते है जो वीच मे दम न लेगी। (१५) उन्होंने कहा ऐ हमारे पालनकर्ता हमारे कर्म का लेखा हिसाव लेने के दिन से पहिल हमको जल्दी दे। (१६) ऐ पैगम्बर

जैसी-जैसी बातें यह लोग करते हैं उन पर सब्र कर और हमारे सेवक दाऊद को याद कर कि हर तरह का बल रखते थे और वह ईश्वर की तरफ रुजू रहते थे। (१७) हमने पहाडो को उनके कब्जे मे कर रक्खा था कि सुबह शाम उनके साथ पवित्र बोला करें। (१८) और पक्षी सब जमा होकर उनके सामने रुजू रहते। (१९) और हमने उसके राज्य को मजबूत कर दिया और उसे चमत्कार और न्याय की बात दी थी। (२०) और ऐ पैगम्बर क्या दावेदारो की खबर तेरे पास आई है जब वह पूजित जगहों की दीवारे फाँद कर। (२१) दाऊद के पास आये वह उनसे डरा उन्होने कहा मत डरो। हम दोनो झगड़ालू है हममे से एक ने दूसरे पर ज्यादती की है। तू हममे सच्चा फैसला कर दे और बात को दूर न डाल और हमको सीधी राह बता दे। (२२) यह मेरा भाई है इसके निन्नानवे भेडें हैं और मेरे यहाँ सिर्फ एक ही भेड है अब यह कहता है कि अपनी भेड भी मुझे दे डाल और बात चीत मे मुझसे कडाई की है। (२३) दाऊद ने कहा कि इसने जो तेरी भेड माँग कर अपनी भेडो मे मिलाने के लिए तुझ पर अत्याचार किया है और बेहूदा शरीक एक दूसरे पर ज्यादती करते रहते हैं मगर जो लोग ईमान रखते और नेक काम करते हैं और ऐसे लोग बहुत ही थोडे हैं और दाऊद को ध्यान आया कि हमने उनको आजमाया फिर अपने पालनकर्ता से क्षमा माँगी और झुककर मेरी ओर रुजू हुआ। (२४) और हमने उनको क्षमाकर दिया और हमारे यहाँ उसका सम्मान और अच्छा ठिकाना है। (२५) ऐ दाऊद हमने तुझे देश मे नायब बनाया तो लोगो मे न्याय किया कर और अपनी इच्छा पर न चल एसा करोगे तो इन्द्रियो को इच्छाओ की पैरवी तुझे ईश्वर की राह से भटका देगी जो लोग ईश्वर की राह से भटकते उसको कठोर दण्ड होना है। इसलिए कि प्रलय के दिनको भूल रहे हैं। (२६) (रुकू २)

और हमने आकाश और पृथ्वी को और जो चीजें आकाश और पृथ्वी मे है उनको वृथा नही पैदा किया। यह उन लोगो का ध्यान है

जो काफिर हैं और नरक के सबब से काफिरों के हाल पर अफसोस है। (२७) क्या हम ईमानदारो और नेक काम करने वालों को जमीन में झगड़ालुओ के बराबर कर देंगे या हम संयमी को बदकारो के बराबर करेंगे। (२८) ऐ पैगम्बर यह कुरान बरकत वाली किताब है जो हमने तेरी तरफ उतारी है ताकि लोग इसकी आयतों में ध्यान दें और अक्ल वाले समझें। (२९) हमने दाऊद को सुलेमान दिया। वह अच्छा बन्दा रुजू रहने वाला था। (३०) जब शाम के समय खासे असील घोड़े उनके सामने पेश किये गये तो वह उनके देखने मे ऐसे जुटे कि नमाज का समय जाता रहा। (३१) तो कहने लगे कि मैंने अपने पालनकर्ता की यादगारी से माल की मुहब्बत जियादह की यहा तक कि सूरज ओट मे छिप गया (३२) अच्छा तो इन घोड़ा को मेरे पास लौटा लाओ और अब पिडलियाँ और गर्दनों पर हाथ फेरने लगे। (३३) और हमने सुलेमान को जाँचा और उसके तख्त पर एक मुर्दा जिस्म को डाल दिया और फिर सुलेमान रुजू हुआ (३४) बोला ऐ मेरे पालनकर्ता मेरा अपराध क्षमा कर और मुझे ऐसा राज्य दे कि मेरे पीछे किसी को न चाहे। निस्सदेह तू बड़ा दाता है। (३५) फिर हमने हवा उसके काबू मे कर दी थी उसी की आज्ञा से हवा धीरे-धीरे जहां वह चाहता था चलती थी। (३६) और शैतान जितने इमारत बनाने वाले और डुबकी लगाने वाले थे उनके काबू में कर दिये थे। (३७) कितने बंधे बेडियो मे हैं। (३८) यह हमारी बे हिसाब देन है अब तू भलाई कर या अपने ही पास रक्खे रह। (३९) और निस्सदेह सुलेमान का हमारे यहां मर्तबा और अच्छा ठिकाना है। (४०) रुकू ३)

ऐ पैगम्बर हमारे दास अयूब को याद करो जब उसने अपने पालनकर्ता को पुकारा कि शैतान ने मुझे दुख और कष्ट पहुचा रक्खा है। (४१) खुदा ने कहा अपने पाँव से लात मार इस पर लात मारी तो एक झरना निकला तो हमने अयूब से कहा कि तुम्हारे नहाने और पीने के लिये यह ठंडा पानी हाजिर है। (४२) और हमने उसको उसके

बाल-बच्चे और उनके साथ इतने ही और दिये यह हमने अपनी तरफ से कृपा की ताकि जो समझ रखते हैं उनके लिए यादगारी रहे। (४३) और हमने अयूब से कहा सीको का मुट्ठा अपने हाथ मे ले और अपनी स्त्री को उससे मार और अपनी सौगन्ध न तोड हमने अयूब को सतोषी पाया। वह अच्छा बन्दा रुजू रहने वाला था। (४४) और ऐ पैगम्बर हमारे बन्दा इब्राहीम, इसहाक और याकूब को याद कर वे हाथों और आखो वाले थे। (४५) हमने उनको एक खास बात प्रलय की याद के लिए चुना था। (४६) और वह हमारे यहाँ कबूल किये हुए नेक दासो मे हैं। (४७) और इस्माईल और इलयास और जुलकिफिल को याद कर सब नेक बन्दो मे हैं। (४८) यह जिक्र है और निस्सदेह सयमियो का अच्छा ठिकाना है। (४९) रहने के लिए बैकुण्ठ के बाग जिनके द्वार उनके लिए खुले होगे। (५०) उनमे तकिया लगा-कर बैठेंगे वहा बैकुण्ठ के नौकरो से बहुत से मेवे और शराब मँगावेंगे। (५१) और उनके पास नीची नजर वाली स्त्रियां होगी और हम उम्र होगी। (५२) यह वह दैन है जिनका तुमसे प्रलय के दिन के लिए वादा किया जाता है। (५३) निस्सदेह यह हमारी दी हुई रोजी है जो कभी समाप्त होने की नही। (५४) यह बात है कि सरकशो का बुरा ठिकाना है। (५५) नरक उसमे-इनको जाना पडेगा और वह बुरी जगह है। (५६) यह खौलता हुआ पानी और पीव इसको चक्खो (५७) और इस तरह की और तरह-तरह की चीजें हैं। (५८) यह एक फौज हैं वही तुम्हारे साथ नरक मे धँसती

* कहते हैं कि अयूब ने अपनी बीबी से किसी बात पर बिगड़ कर कसम खाई थी कि मैं तुमको सौ छड़ियां मारूंगा। कसम का पालन करने के लिये सौ सींको की झाड़ू से एक बार अपनी बीबी को मारने का हुक्म दिया गया।

आती है इनको जगह न मिले अह आग में जाने वाले हैं। (५९) बोले तुम्ही तो हो तुम्हें खुशी भी नसीव न हो तुम्ही तो यह हमारे आगे लाये हो यह बुरी जगह है। (६०) बोले ऐ हमारे पालनकर्ता जो यह हमारे आगे लाया उसको नरक में दोहरा दण्ड बढ़ा दे। (६१) और कहेंगे कि जिन लोगो को हम बुरे लोगो में गिना करते थे हम उनको नही देखते। (६२) क्या हमने उनको हंसोड ठहराया या उनकी तरफ से आखें टेढ़ी हो गई थी। (६३) यह नरकवासियों का आपस मे झगड़ना सच है। (६४) (रुकू ४)

ऐ पैगम्वर इन लोगों से कहो कि मैं सिर्फ डराने वाला हू और एक ईश्वर के सिवाय और कोई भगवान नही। (६५) आकाश और पृथ्वी और उन चीजों का मालिक है जो आकाश पृथ्वी के नीच मे है और वह बडा दानी है।। (६६) ऐ पैगम्वर इन लोगो से कहो कि कुरान वड़ी खवर है। (६७) क्या तुम इसको ध्यान मे नही लाते। (६८) मुझको ऊपर वाली किसी आवादी की कुछ खवर न थी जब वह झगडते थे। (६९) मुझको तो यही आज्ञा आती है कि मैं सिर्फ एक जाहिरा डर सुनाने वाला हूं। (७०) जव तेरे पालनकर्ता ने देवदूतों से कहा कि मैं मिट्टी से एक अदमी बनाने वालो हूँ। (७१) तो जब मैं उसे पूरा कर लूं और अपनी रूह उसमे फूंक दूं तो तुम उसके आगे सिजदे मे गिर पड़ना। (७२) इसलिए सब ही देवदूतो ने उसे शीश नवाया। (७३) इब्लीस ने घमण्ड किया और वह काफिरो मे था। (७४) ईश्वर ने इब्लीस से पूंछा कि ऐ इब्लीस जिसको मैंने अपने हाथों वनाया उसको शीश नवाने से तुझे किसने रोका। क्या तूने घमण्ड किया या तू दर्जे में वडा था। (७५) बोला मैं उससे कही वेहतर हूं मुझको तूने आग से वनाया और उसको तूने मिट्टी से वनाया है। (७६) वताया तू यहाँ से निकल तू फटकारा हुआ है। (७७) और प्रलय तक मुझ पर हमारी फटकार है। (७८) वोला ऐ मेरे पालनकर्ता मुझको उस दिन तक का समय दे जब कि

मुर्दे दुबारा उठा खड़े किये जायेंगे। (७६) तुमको उस दिन तक का समय है। (८०) उस दिन तक जो मालूम है। (८१) फिर बोला तेरी सौगन्ध मैं इस सबको बेखबर करूंगा। (८२) मगर जो तेरे चुने बंदे है उनको नही। (८३) बताया तो ठीक बात यह है और ठीक ही कहता हूँ। (८४) कि मैं तुमसे और जो कोई उनमे से तेरी पैरवी करेगा उनसे नरक को भर दूंगा। (८५) ऐ पैगम्बर तुम इन लोगों से कहो कि मैं ईश्वर की इस आज्ञा पर तुमसे कुछ बदला नही माँगता और न मुझको तकल्लुफ करना आता है। (८६) यह कुरान संसार के लोगो को शिक्षा है। (८७) और कुछ दिनो मे तुमको इसका पता चल जाएगा। (८८) (रुकू ५)



सूरे जुमर

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ७५ आयत और ८ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु दयावान, है। बड़ा चमत्कारिक अल्लाह की तरफ से इस किताब का उतरना हुआ है। (१) हमने तेरी तरफ ठीक किताब उतारी है सो केवल अल्लाह ही की पूजा किये जाओ। (२) पूजा सारी ईश्वर ही के लिए है। और जिन लोगो ने ईश्वर के सिवाय हिमायती बना रखे हैं कि हम इनकी पूजा सिर्फ इस-लिए करते है कि ईश्वर के हमको नजदीक करें जिन-जिन बातो मे यह लोग भेद डाल रहे हैं ईश्वर उनके बीच उनका न्याय कर देगा। अल्लाह झूठे और सच न मानने वाले को आज्ञा नही दिया करता। (३) अगर ईश्वर किसी को अपना पुत्र बनाना चाहता तो अपनी सृष्टि

मे से जिसको चाहता पसन्द करता। वह अकेला ईश्वर पवित्र और बडा बलवान है। (४) उसी ने आकाश और पृथ्वी को ठीक पैदा किया। रात को दिन पर लपेटता है और दिन को रात पर लपेटता है और उसी ने सूरज और चांद को काम मे लगा रखा है यह हरएक नियत समय तक चलता है वही ईश्वर बड़ा धर्म करने वाला है। (५) उसी ने तुम लोगो को अकेले शरीर से पैदा किया, फिर उसी से उसकी स्त्री को पैदा किया और तुम्हारे लिए आठ तरह के चौपाये पैदा किए। वही तुमको तुम्हारी माताओं के पेट मे एक तरह के बाद दूसरी तरह तीन अन्धेरों मे बनात है। यही अल्लाह तुम्हारा पालनकर्ता है उसी का राज्य हे उसके सिवाय कोई पूजित नही फिर किधर को फिरे चले जा रहे हो। (६) अगर तुम इन्कारी हो जाओ तो अल्लाह तुम्हारी परवाह नही करता और अपने मनुष्य के लिए इन्कारी को पसन्द नही करता और अगर तुम धन्यवाद करो तो वह तुम्हारे लाभ के लिए पसन्द करेगा और कोई किसी का बोझ नही उठायेगा फिर तुम को अपने पालनकर्ता की तरफ लौटकर जाना हैं। तो जैसे जैसे कर्म तुम करते रहे हो तुमको बता देगा। वह दिल की बातो को जानता है। (७) और जब मनुष्य को कोई दु ख पहुचाना है तो अपने पालन-कर्ता की तरफ रजू होकर पुकारता है फिर जब ईश्वर अपनी तरफ से उसको कोई नियामत देता है तो जिस लिए उसे पहले पुकारता था भूल जाता है और ईश्वर क शरीक ठहराया है ताकि ईश्वर की राह से भटकावे तो कह और बरत ले इन्कार के साथ थोडे दिन मे तू नरकवासियो मे होगा। (८) भला जो रात के समय मे ईश्वर की बन्दगी मे लगा है शीश झुकाता है और खड़ा होता परलोक से डरता है और अपने पालनकर्ता की कृपा का उम्मेदवार है ऐ पैगम्बर इन मनुष्यो से कहो कि कही जानने वाले बराबर होते हैं वही लोग शिक्षा पकड़ते हैं जो समझ रखते हैं। (९) (रुकू १)

ऐ पैगम्बर समझा दो कि हमारे ईमानदार मनुष्यो अपने पालन-कर्ता से डरो जो मनुष्य इस ससार मे नेकी करते हैं उनके लिए भलाई है और ईश्वर की पृथ्वी चौडी है सतोषियो को उसका वे हिसाब मिलता है। (१०) ऐ पैगम्बर इन मनुष्यो से कहो कि मुझे आज्ञा मिली है कि मैं केवल अल्लाह ही की पूजा करू (११) और मुझे यही आज्ञा मिली है कि मैं सबसे पहिला मुसलमान बनू। (१२) ऐ पैगम्बर इनसे कहो कि अगर मैं पालनकर्ता की अवज्ञा करू तो मुझे बडे दिन के दण्ड से डर है। (१३) ऐ पैगम्बर इनसे कहो कि मैं निरे खुदाही मे लगकर उसकी पूजा करता हू। (१४) रहे तुम सो उसके सिवाय जिसको चाहो पूजो ऐ पैगम्बर इनसे कहो कि घाटे मे वह मनुष्य हैं जिन्होने प्रलय के दिन अपने को और अपने बाल बच्चो को घाटे मे डालां। यही तो प्रत्यक्ष घाटा है। (१५) इनके ऊपर आग का ओढना और नीचे आग ही का बिछौना होगा। यह बात है जिससे ईश्वर अपने बन्दो को डराता है तो ऐ हमारे सेवको हमारा ही डर मानो। (१६) और जो मनुष्य बुतो के पूजनेसे बचे और ईश्वर की ओर ध्यान दिया उनके लिये बैकुण्ठ ही शुभसन्देश है सो तू हमारे उन सेवको को शुभसन्देश सुना दे। (१७) जो हमारी बात को कान लगाकर सुनते और उसकी अच्छी बातो पर चलते हैं यही वह लोग हैं जिनको ईश्वर ने राह दी है और यही बुद्धिमान हैं। (१८) भला जिसे दण्ड की आज्ञा हो चुकी सो तू उस नरक वासी को निकाल सकेगा। (१९) मगर जो अपने पालनकर्ता से डरते हैं उनके लिये बैकुण्ठ मे खिडकियो पर खिड़-कियाँ बनी हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होगी यह वादा खिलाफी नहीं करता। (२०) क्या तूने नही देखा कि अल्लाह ने आकाश मे पानी उतारा फिर पृथ्वी के चश्मो मे वह पानी बहा दिया फिर उससे [illegible] विरगी खेती निकलती है फिर वह जोरो पर आती है फिर पके पीछे तू उसे पीली पडी हुई देखेगा। तो ईश्वर ने उसे चूर-चूर कर डाला है निस्सन्देह खेती के इस शुरू और अन्त मे बुद्धिमानो के लिये शिक्षा है। (२१) (रुकू २)

जिसका दिल ईश्वर ने इस्लाम के लिये खोल दिया फिर वह अपने पालनकर्ता की रोशनी में है अफसोस है उन मनुष्यो पर जिनके दिल अल्लाह की याद से कठोर हैं। यही लोग प्रत्यक्ष गुमराही में हैं।(२२) अल्लाह ने बहुत ही अच्छी किताब उतारी और बार-बार दुहराई गई हैं जो मनुष्य अपने पालनकर्ता से डरते हैं इससे उनके वदन काँप उठते हैं फिर उनके शरीर और दिल अल्लाह की याद में नरम होते हैं। यह अल्लाह की आज्ञा है जिसे चाहे इससे राह दिखाता है और जिसे ईश्वर भटकावे उसे फिर कोई शिक्षा देने वाला नही। (२३) कोई जो प्रलय के दिन बुरे दण्ड से अपने मुंह छिपा सके और अत्याचारियो से कहा जायगा जैसा तुमने किया है वैसा भुगतो। (२४) इनसे पहिलो ने झुठलाया था तो उनको दण्ड ने ऐसी तरफ से आ घेरा कि उन्हें उसकी खबर न थी। (२५) सांसारिक जीवन में अल्लाह ने उन्हें बदमानी चखाई और परलोक का दण्ड कहीं बढ़कर है अगर यह मनुष्य जानते (२६) और हमने मनुष्यों के लिये इस कुरान मे सभी तरह के उदाहरण बयान किये हैं शायद वह लोग शिक्षा पकड़ें। (२७) अरबी कुरान मे किसी तरह की पेचीदगी नही ताकि डरें। (२८) अल्लाह ने एक उदाहरण बताया है कि एक आदमी है उसमे कई साझी हैं जो आपस मे भेद रखते है और एक मनुष्य एक मनुष्य का पूरा गुलाम है तो क्या इन दोनो की हालत एक सी हो सकती है। सब खूबी अल्लाह को है पर बहुत लोग समझ नही सकते। (२९) तुमको मरना है और वे भी मरेंगे। (३०) फिर प्रलय के दिन तुम अपने पालनकर्ता के सामने झगड़ोगे। (३१) (रुकू ३)



चौबीसवाँ पारा (फ़मन अज़लम)

फिर उससे बढकर अत्याचारी कौन जो ईश्वर पर झूठ बोले और सच्ची बात जब उसके पास पहुची तो झुठलाया। क्या काफिरो का नरक ही ठिकाना नही है ? (३२) और जो सत्य बात लेकर आया और जिन्होने सच माना यही लोग सयमी हैं। (३३) जो चाहेंगे उनके पालनकर्ता के यहाँ उनके लिये होगा नेकी करने वालो का यही बदला है। (३४) ताकि ईश्वर उनके कुकर्म उनसे उतार दे और उनके नेक कामो के बदले मे उनको फल दे (३५) क्या ईश्वर अपने बन्दे के लिये काफी नही (३६) और जिसको ईश्वर शिक्षा दे तो कोई उसे मार्ग भुलाने वाला नही और ऐ पैगम्बर यह लोग तुमको ईश्वर के सिवाय दूसरे पूजितो से डराते हैं और जिसको गुमराह करे उसको कोई राह बताने वाला नही क्या ईश्वर बडा बदला देने वाला नही है। (३७) और ऐ पैगम्बर अगर तू इनसे पूछ कि आकाश और पृथ्वी को किसने उत्पन्न किया तो कहेगे ईश्वर ने। कहो कि भला देखो तो सही कि ईश्वर के सिवाय जिनको तुम पुकारते हो अगर ईश्वर मुझे कोई कष्ट पहुँचाना चाहे तो क्या यह पूजित उस कष्ट को दूर कर सकते हैं या अगर ईश्वर मुझ पर कृपा करना चाहे तो क्या वह पूजित उसकी कृपा को रोक सकते है ऐ पैगम्बर तुम कहो कि मुझे तो ईश्वर काफी है। भरोसा रखने वाले उसी पर भरोसा रखते है। (३८) ऐ पैगम्बर इनसे कहो कि भाइयो तुम अपनी जगह काम किये जाओ मैं अपनी जगह काम कर रहा हूं फिर आगे चल कर तुमको मालूम हो जायगा। (३९) कि किस पर आफत आती है जो उसकी ख्वारी करे और किस पर सदा के लिए दण्ड उतरेगा। (४०) किताब हमने लोगो के लाभ के लिए तुम पर उतरी फिर जो कोई राह पर आया सो अपने भले को और जो कोई बहका सो अपने बुरे को बहका और तुझ पर उसका जिम्मा नही। (४१) (रुकू ४)

मनुष्यों के मरते समय अल्लाह उनकी जानो को बुला लेता है और जो मनुष्य मरे नहीं उनकी जानें सोते समय नींद मे बुला लेता है फिर जिनकी निस्बत मौत की आज्ञा दे चुका है उनको सोने वालो को एक नियत समय तक फिर संसार में भेज देता है जो लोग ध्यान दें उनके लिये इसमें निशानी* हैं। (४२) क्या इन मनुष्यो ने ईश्वर के सिवाय दूसरे सिफारिशी ठहराये हैं ऐ पैगम्बर इन मनुष्यो से कहो वैसे यह सिफारिशी कुछ भी अधिकार न रखते हो और न समझ रखते हों तो भी तुम उन्हें माने जाओगे। (४३) कहो कि सिफारिश तो सारे ईश्वर के अधिकार मे है आकाश और पृथ्वी में उसी का राज्य है फिर तुम उसी की तरफ से लौटाये जाओगे। (४४) और जब अकेले ईश्वर का जिक्र हो तो मनुष्य परलोक का विश्वास नही रखते उनके दिल रुक जाते हैं और जब ईश्वर के सिवाय दूसरे पूजितो का जिक्र आता है तो यह लोग खुश हो जाते हैं। (४५) ऐ पैगम्बर तू कह कि ऐ ईश्वर आकाश और पृथ्वी के पैदा करने वाले, छिपे और खुले के जानने वाले, जिन बातों मे तेरे बन्दे आपस मे भेद डाल रहे है तू ही इनके झगडो को चुकायेगा। (४६) और अपराधियो के पास जितना कुछ पृथ्वी में है वह सब को और उसके साथ उतना ही और हो तो प्रलय के दिन दुखदाई दण्ड के छुड़वाने में सब दे डालें और इनको ईश्वर की ओर से ऐसा मामला पेश आवेगा जिसका उनको गुमान भी न था। (४७) और जैसे-जैसे कर्म यह लोग करते रहे हैं उनकी खराबियां उन पर जाहिर हो जायेंगी और जिस सजा की हसी उडाते रहे हैं वह उनको आ घेरेगा। (४८) इन्सान को जब कोई तकलीफ पहुचती है तो हमको पुकारता है। फिर जब हम उसको अपनी ओर से कोई नियामत देते है तो कहने लगता है कि यह तो मुझको इल्म से मिला, यह जांच है मगर बहुत लोग नही समझते। (४९) ऐसी बात अगले कह चुके है

* सोना और मरना बराबर है। जैसे मनुष्य सोकर फिर उठता है वैसे-ही मर कर फिर उठेगा।

फिर वह जो कमाते थे उनके काम न आया। (५०) और उनके कार्मों के बुरे फल उनको पहुचे और इन मक्का के इन्कार करने वालो मे से जो लोग अवज्ञाकारी हैं उनको उनके कर्म का बुरा फल मिलेगा और वह हरा न सकेंगे। (५१) क्या इनको मालूम नही कि अल्लाह जिसकी रोजी चाहता है वढा देता है और जिनको चाहता है नपी तुलीकर देता है इसमे इमान वालो के लिये निशानियां हैं। (५२) (रुकू ५)

ऐ पैगम्बर इनके कह दो कि ऐ हमारे बन्दो जिन्होंने आपनी जानों पर जियादती की अल्लाह की कृपा से नाउम्मेद न हो जाओ। अल्लाह तमाम पापो को क्षमा कर देता है। वह क्षमा करने वाला कृपालु हैं। (५३) और तुम पालनकर्ता की ओर घ्यान दो और उसकी आज्ञा मानो। इससे पहिले कि तुम पर दण्ड आ उतरे और फिर उस समय तुमको सहायता न मिलेगी। (५४) और अपने पालनकर्ता की ओर रुजू हो और आज्ञाकारी बनो। इससे पहले कि अचानक दण्ड तुम पर आ उतरे और तुमको खबर न हो। (५५) कोई मनुष्य कहेगा अफ-सोस मैंने ईश्वर के सामने पाप किया और मैं तो हसता ही रहा। (५६) या कहने लगा कि यदि ईश्वर मुझको शिक्षा देता तो मैं संय-मियो मे होता। (५७) जब दण्ड देखा तब कहने लगा कि किसी तरह मुझको ससार मे फिर जाना हो तो मैं नेको मे हो जाऊ। (५८) हमारी आज्ञायें तुमको पहुची तो तूने उन्हें झुठलाया और अकड बैठा और तू इन्कार करने वालो मे था। (५९) और ऐ पैगम्वर तू प्रलय के दिन इन्हें देखेगा जो ईश्वर पर झूठ बोलते थे उनके मुह काले होंगे क्या धमण्डियो का ठिकाना नरक मे नही है। (६०) और जो लोग सयमी हैं उनको ईश्वर सफलता के साथ छुटकारा देगा। उनको दण्ड नही छुएगा और न वह उदास होगे। (६१) अल्लाह हर चीज को पैदा करने वाला है और वही हर चीज का जिम्मा लेने वाला है (६२) आकाश और पृथ्वी की कुञ्जियां उसी के पास है और जो मनुष्य ईश्वर की आयतो को नही मानते वही घाटे है। (६३) (रुकू ६)

ऐ पैगम्बर इन मनुष्यो से कहो कि क्या तुम मुझे ईश्वर के सिवाय दूसरों की पूजा की आज्ञा देते हो। (६४) और तुमको और तुझ से अगलों को आज्ञा हो चुकी है कि अगर तूने शरीक ठहराया तो तेरे किये सब अकार्थ जावेंगे और तू घाटे में होगा। (६५) बल्कि अल्लाह ही की पूजा करो और धन्यवाद दो। (६६) और इन लोगों ने ईश्वर की जैसी कदर करनी चाहिये थी वैसी कदर नही की। हालाँकि प्रलय के दिन सारी पृथ्वी उसकी मुट्ठी में होगी और सब आकाश लिपटे हुये उसके दाहिने हाथ में होंगे और वह इनके बनाये हुए शरीकों से ज्यादा पवित्र और बहुत ऊपर है। (६७) और सूर नरसिंह फूंका जायगा तो जो आकाश और पृथ्वी मे हैं बेहोश हो जायंगे और देखने लगेंगे। (६८) और पृथ्वी अपने पालनकर्ता के नूर से चमक उठेगी और किताबें रख दी जायेंगी और उनमें पैगम्बर गवाह हाजिर किये जायँगे और उनमें इन्साफ से न्याय कर दिया जायगा और उन पर अत्याचार न होगा। (६९) और जिसने जैसे काम किये हैं सबको पूरा पूरा बदला मिलेगा और जो कुछ भी कर रहे हैं ईश्वर उससे खूब जानकार है। (७०) (रुकू ७)

और काफिर नरक की तरफ टोलियाँ बना-बनाकर भेजे जायंगे यहाँ तक कि जब नरक के पास पहुंचेंगे तो उसके द्वार खोल दिये जायंगे और नरक का दारोगा उनसे कहेगा कि क्या तुममें के पैगम्बर तुम्हारे पास नही आये थे कि वह तुम्हारे पालनकर्ता की आयतें तुमको पढ-पढ कर सुनाते और इस दिन की भेंट से तुम्हें डराते यह उत्तर देंगे कि हाँ मगर दण्ड की आज्ञा काफिरों हर कायम हो गई है। (७१) फिर इनसे कहा जायगा कि नरक के द्वारों मे जाओ हमेशा इसमें रहो गरज अकड़ने वालो का बुरा ठिकाना है (७२) और जो मनुष्य अपने पालनकर्ता से डरते थे वे टोलियाँ बना-बनाकर वैकुण्ठ के पास पहुंचेंगे और उसके द्वार खुले होंगे और वैकुण्ठ के कार्यकर्ता उनमे सलाम करके कहेंगे कि तुम मजे मे रहे। वैकुण्ठ में हमेशा के लिए

दाखिल हो (७३) और यह मनुष्य कहेगे कि ईश्वर का धन्यवाद हमको सचकर दिखाया और हमको पृथ्वी का मालिक बनाया कि हम वैकुण्ठ मे जहाँ चाहें रहे तो नेक काम करने वालो को अच्छा फल है। (७४) और ऐ पैगम्बर उस दिन तू देखेगा कि देवदूत अपने पालनकर्ता की खूबी बताते तख्त को आस पास घेरे है और इनमे न्याय के साथ निर्णय कर दिया जायगा और कहा जायगा कि ससार के पालनकर्ता अल्लाह की बड़ाई हो। (७५) (रुकू ८)

सूरे मोमिन

मक्के में अवतरित हुई इसमें ८५ आयतें और ९ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। हा-मीम (१) जोरावर हिकमत वाले अल्लाह की तरफ से इस किताब का उतरना हुआ है। (२) पापो का क्षमा करने वाला है और तोबा का कबूल करने वाला कठोर दण्ड देने वाला है। बडी कृपा करने वाला उसके सिवाय कोई पूजित नही, उसकी ओर लौटकर जाना है। (३) ईश्वर की आयतो मे सिर्फ वही मनुष्य झगडे निकालते है जो इन्कार करने वाले हैं। इन मनुष्यो का शहरो से इधर-उधर चलना फिरना तुमको धोखे मे न डाले (४) इनसे पहिले नूह की जाति ने और उनके बाद और गुटो ने अपने पैगम्बरो को झुठलाया और हर गुट ने अपने पैगम्बर के गिरफ्तार करने का इरादा किया और झूठी बातो से झगडे ताकि अपनी हुज्जतो से सच को डिगा दें। फिर मैंने उनको धर पकडा तो मैंने उसको कैसा दण्ड दिया। (५) और इसी तरह काफिरो पर तुम्हारे पालनकर्ता की बात साबित हुई कि यह नरकगामी है। (६) जो देव-

दूत तख्त को उठाये हुये हैं और जो तख्त के आस पास है। अपने पालनकर्ता को बडाई और पवित्रता के साथ याद करते रहते और उस पर ईमान लाते और ईमान वालो के लिए क्षमा कराते हैं। ऐ हमारे पालनकर्ता तेरी कृपा और तेरे ज्ञान मे सब चीजें समाई हैं। जिन्होने तौबा की और तेरे मार्ग पर चले उनको क्षमा कर दे और उन्हे नरक के दण्ड से बचा। (७) और ऐ हमारे पालनकर्ता उनको बैकुण्ठ के बसने के बागो मे ले जाकर दाखिल कर जिनका तूने उनसे प्रण किया है और उनके बाप दादों और उनकी पत्नियों और उनकी सन्तान मे से जो-जो नेक हो उनको भी। निस्सन्देह तू बडा चमत्कार वाला है। (८) और उनको खराबियो से बचा और जिसको तूने उस दिन खराबियो से बचाया उस पर तूने कृपा की और यही बडी कामयाबी है। (९) (रुकू १)

जो मनुष्य इन्कार करने वाले है प्रलय के दिन उनसे जोर से कह दिया जायगा कि जैसे तुम आज अपने जी से दुखी हो इससे बढकर ईश्वर दुखी था। जब कि तुम ईमान की ओर बुलाये जाते थे और नही मानते थे। (१०) काफिर कहेगे कि ऐ हमारे पालनकर्ता तू हमको दो बार मृत और दो बार जीवित कर चुका। बस हम अपने पापों का स्वीकार करते है फिर निकलने की कोई सूरत है। (११) ईश्वर कहेगा नहीं और यह इसलिये कि ससार मे जब अकेले ईश्वर को पुकारा जाता था तो तुम नही मानते थे और अगर उसके साथ शरीक ठहराये जाते थे तो तुम मान लेते थे तो आज सब से ऊपर और बडे अल्लाह ही की आज्ञा है। (१२) वही है जो तुमको अपनी निशानियाँ दिखाता और आकाश से तुम्हारे लिए रोजी उतारता है और यही सोचता है जो ध्यान देता है। (१३) तो मुसलमानो को ईश्वर ही के आज्ञाकारी विचार करके उसी को पुकारो यद्यपि काफिरो को भले ही बुरा लगे। (१४) साहिब ऊंचे दर्जे के तख्त का स्वामी अपने दासो मे से जिस पर

चाहता है अपने अधिकार से भेद की बात उतारता है ताकि पैगम्बर प्रलय के दिन की मुसीबत से डरावे। (१५) जब कि वह ईश्वर के सामने आ मौजूद होगे उनकी कोई बात ईश्वर से छिपी न होगी आज किसका राज्य है अकेले अल्लाह दबाववाले की (१६) आज हर आदमी अपने किये का बदला पाएगा आज किसी पर अत्याचार न होगा। अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। (१७) और इन मनुष्यो को आने वाले दिन से डराओ कि रज के कारण दिल गले तक आ जावेंगे। पापियो का न कोई मित्र होगा और न कोई सिफारिशी होगा जिसकी बात मानी जावे। (१८) ईश्वर आँखो की चोरी और जो दिल मे छिपा है जानता है। (१९) और अल्लाह ठीक आज्ञा देता है और उसके सिवाय जिन पूजितो को यह लोग पुकारते हैं वह किसी तरह की आज्ञा नही दे सकते। निस्सन्देह अल्लाह सुनने वाला है। (२०) (रुकू २)

और क्या इन लोगो ने देश मे चल फिर कर नही देखा कि जो उनसे पहिले थे उनका परिणाम क्या हुआ। वह बलबूते के लिहाज से और उन निशानो के लिहाज से जो पृथ्वी मे छोडे गये है इनसे कही बढचढ कर थे। तो ईश्वर ने उनको उनके अपराधो के दण्ड मे घेर लिया और उनको ईश्वर से कोई बचाने वाला न हुआ। (२१) यह इस कारण से हुआ कि उनके पैगम्बर चमत्कार लेकर उन के पास आये इस पर उन्होने न माना तो अल्लाह ने उनको धर पकडा वह बडी कठोर दण्ड देने वाला है। (२२) और हमने मूसा को अपनी निशानियाँ और खुली ईश्वर ने सदेश देकर भेजा। (२३) फिरऔन और हामान* और कारून की ओर। तो वह कहने लगे कि यह जादूगर झूटा हैं। (२४) फिर जब मूसा हमारी ओर से सच लेकर उनके पास गया तो उन्होने आज्ञा दी कि जो लोग मूसा के साथ ईमान लाये

---

* हामान फिरऔन का मंत्री था। कारून बड़ा धनी था। कारून का खजाना मशहूर है।

हैं उनके पुत्रो को मार डालो और पुत्रियो को जीता रखो और काफिरों का दावा लगती मे होता है। (२५) और फिरऔन ने अपने दरबारियो से कहा कि मुझे छोड दो कि मैं मूसा को कत्ल करू और वह अपने पालनकर्ता को बुलावे मुझको सन्देह है कि कही ऐसा न हो कि तुम्हारे दीन को उलट पलट कर डाले या देश झगड़ा फैलावे। (२६) और मूसा ने कहा मैं अपने पालनकर्ता और तुम्हारे पालनकर्ता की शरण ले चुका हू। हर एक घमण्डी से जो प्रलय को नही मानता। (२७) (रकू ३)

और फिरऔन के मनुष्यो मे से एक मनुष्य ईमानदार था जो अपने ईमान को छिपाता था वह बोला कि क्या तुम एक मनुष्य को कत्ल करने को उद्यत हो कि वह ईश्वर ही को अपना पालनकर्ता बताता है। हालाँकि वह तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से तुम्हारे पास चमत्कार ले कर आया है और अगर झूठा भी हो तो उसकी झूठ का ववाल उसी पर पड़ेगा और अगर सच्चा हुआ तो जिस-जिस का तुमसे प्रण करता है उनमे से कोई न कोई तुम पर आ उतरेगा। अल्लाह किसी झूठे अवज्ञाकारी को आदेश नही करता। (२८) आज तुम्हारा राज्य देश मे बढा चढा है अगर ईश्वर का दण्ड हमारे सामने आवे तो कौन हमारी सहायता करेगा। फिरऔन ने कहा मे तुमको वही बात समझता हू जो मैं समझा हू और वही मार्ग बताता हू जिसमे भलाई है। (२९) और ईमानदार बोला ऐ भाइयो मुझको तुम्हारी बावत डर है कि तुम कर अगले गुटो जैसा दिन आ जाय। (३०) जैसा नूह, आद और समूद की जाति। और उन लोगो का हुआ जो उनके बाद हुए और अल्लाह तो बन्दो पर किसी तरह का अत्याचार करना नही चाहता। (३१) और ऐ कौम मुझको तुम्हारे लिए प्रलय के दिन का डर है। (३२) जब कि तुम पीठ देकर भागोगे। तुमको ईश्वर मे कोई न बचावेगा और ईश्वर जिसको गुमराह करे तो उसको कोई आदेश देने वाला नही। (३३) और इससे पहिले यूसुफ खुली आज्ञा लेकर

तुम्हारे पास आ चुका है। फिर जब वह तुम्हारे पास लेकर आये तुम उनमे सन्देह ही करते रहे यहाँ तक कि जब वह मर गया तब तुम कहने लगे कि इसके बाद अल्लाह कोई पैगम्बर न भेजेगा। इसी तरह अल्लाह उनको जो लोग हद्द से बढ़े हुए सन्देह मे पड़े रहते हैं राह भटकाया करता है। (३४) जो मनुष्य ईश्वर की आयतों मे बिना किसी प्रमाण के झगडते हैं अल्लाह के और ईमान वालो के लिए नापसद बात है। घमण्डी सरकशो के दिलो पर अल्लाह उसी तरह मुहर लगा दिया करता है। (३५) और फिरऔन ने कहा ऐ हामान मेरे लिये एक महल बनवा कि मैं रास्तो पर पहुचू (३६) रास्तो मे आकाश के मैं मूसा के ईश्वर तक पहुचूं और मैं तो मूसा को झूठा समझता हूं। और इसी तरह फिरऔन की बदकारी उसको भलाई कर दिखाई गई और वह राह से रोका गया और फिरऔन की तदबीरे बेकार होने वाली थी। (३७) (रुकू ४)

और वह ईमानदार बोला ऐ कौम मेरे कहे पर चल मैं तुमको सीधा मार्ग दिखा दूंगा। (३८) भाइयो यह सासारिक जीवन थोडा है और परलोक रहने का घर है। (३९) जो बुरे काम करता है उसको वैसा ही बदला मिलेगा और जो नेकी करता है मनुष्य हो या स्त्री मगर हो ईमानदार तो यह लोग बैकुण्ठ मे होगे वहाँ उनको बेहिसाब रोजी मिलेगी। (४०) और ऐ कौम मुझे क्या हुआ कि मैं तुमको छुटकारे की तरफ और तुम मुझे नरक की तरफ बुलाते हो (४१) तुम मुझे बुलाते हो कि मैं अल्लाह के साथ कुफ्र करू और उसके साथ उस चीज को शरीक करू जिसका मुझे ज्ञान ही नही और मैं तुम्हे बली बख्शने वाले की तरफ बुलाता हूं। (४२) कुछ शक नही कि जिस चीज की तरफ मुझको बुलाते हो वह न ससार मे पुकारे जाने के लायक है और न परलोक मे और कुछ सन्देह नही कि हमको अल्लाह की तरफ लौट कर जाना है जो लोग सीमा से बढे हुये है वही नरकवासी हैं। (४३) जो

मैं तुमसे कहता हूं सो आगे याद करोगे और मैं अपना काम ईश्वर को सौंपता हूं। निस्सन्देह अल्लाह की निगाह में सब जीव हैं। (४४) इसलिए मूसा को तो अल्लाह ने फिरऔनियों के बुरे दावो से बचा दिया और फिरऔनियों को बुरे दण्ड ने घेर लिया (४५) यानी नरक की सुबह और शाम फिरऔन के लोग आग के सामने खड़े किये जाते हैं और जिस दिन प्रलय आवेगी कठोर दण्ड मिलेगा। (४६) और एक समय एक दूसरे से नरक मे झगड़ेंगे तो कमजोर मनुष्य अत्याचारियों से कहेंगे कि हम तुम्हारे काबू मे थे फिर क्या तुम थोडी सी आग भी हम पर से हटा सकते हो। (४७) घमण्डी कहेंगे कि हम सब इसी में हैं अल्लाह बन्दों मे आज्ञा दे चुका है। (४८) और जो लोग नरक में हैं वह नरक के कार्यकर्त्ता से कहेंगे कि अपने पालनकर्ता से अर्ज करो कि एक ही दिन का दण्ड हमसे हलकी कर दिया जावे। (४९) वह उत्तर देंगे क्या तुम्हारे पैगम्बर तुम्हारे पास खुले चमत्कार लेकर नही आते रहे वह कहेंगे हाँ! फिर तुम्ही पुकारो और काफिरो का पुकारना केवल भटकना है और कुछ नही। (५०) (रुकू ५)

हम संसारिक जीवन मे अपने पैगम्बरो की और ईमान वालो की सहायता करते हैं और उस दिन भी सहायता करेंगे जबकि गवाह खड़े होगे (५१) जिस दिन इन्कारियो का उज्र काम न देगा और उन पर फटकार होगी और उनको बुरा घर मिलेगा। (५२) और हमने मूसा को शिक्षा दी और इसराईल के बेटो को किताब का वारिस बनाया। (५३) बुद्धमानो के लिए शिक्षा और आदेश है। (५४) सो ऐ पैगम्बर तू ठहरा रह ईश्वर का प्रण सच्चा है और अपने पापो की क्षमा माग और सुबह और शाम अपने पालनकर्ता की पवित्रताकी प्रार्थना करो। (५५) जो लोग बिना किसी प्रमाण के ईश्वर की आयतो मे झगडते हैं उनके दिलों मे अकड है वह इसको न पहुचेंगे सो ईश्वर की शरण मांग वह सुनता देखता है। (५६) आकाशों को और पृथ्वी को

पैदा करना आदमियों के पैदा करने के मुकाविले मे बड़ा काम है मगर बहुधा लोग नही समझते। (५७) और अन्धा और आंखो वाला बराबर नही और ईमानदार जो भले काम करते हैं कुकर्मियो के बराबर नही। तुम थोडी ही भलाई पकडते हो। (५८) प्रलय आने वाली है इसमे सदेह नही लेकिन अक्सर लोग ईमान नही लाते। (५९) और तुम्हारे पालनकर्ता ने मुझ से कहा है कि तुम दुआ करो। मैं उसे कबूल करूंगा। जो लोग मेरी पूजा से सिर उठाते हैं वदनाम होकर नरक मे जावेंगे। (६०) (रुकू ६)

अल्लाह है जिसने तुम्हारे लिये रात बनाई ताकि तुम उसमे आराम करो और दिन बनाए ताकि देखो। अल्लाह लोगो पर बडा ही कृपालु है लेकिन बहुधा लोग धन्यवाद नही देते। (६१) यही अल्लाह तुम्हारा पालनकर्ता हैं कुल चीजो का पैदा करने वाला उसके सिवाय कोई पूजित नही। फिर तुम किधर वहके चले जाते हो। (६२) जो लोग ईश्वर की आयतो से इन्कारी है इसी तरह वहकाये जाते है। (६३) अल्लाह जिसने तुम्हारे लिए जमीन को ठहराने की जगह और आकाश को छत बनाया और उसी ने तुम्हारी सूरतें बनाई और अच्छी बनाई और बढिया वस्तुए तुम्हे दी। यही अल्लाह तो तुम्हारा पालनकर्ता है। सो अल्लाह संसार का पालनकर्ता बडा दान देने वाला है। (६४) वह जीवित है उसके सिवाय कोई पूजित नही तो खालिस उसी की आज्ञा का ध्यान रख कर उसी की पूजा करो। सब बडाइयाँ ईश्वर ही को हैं जो सब ससार का पोषण करने वाला है। (६५) ऐ पैगम्बर कहो कि मुझे मना हुआ है कि मैं अल्लाह के सिवाय उन्हें पूजू जिन्हें तुम पुकारते हो। जब कि मेरे पालनकर्ता से मेरे पास खुली आयतें कुरान की आ गई और मुझे आज्ञा हुई है कि मैं ससार के पालनकर्ता पर ईमान लाऊ। (६६) वही है जिसने तुमको मिट्टी से पैदा किया, फिर वीर्य से, फिर लोथडे से, फिर तुमको बच्चा निकालता है तुम अपनी जवानी को पहुचते हो। फिर तुम बूढे हो जाते हो और तुम से

से कोई पहिले मर जाते है और जिनको जवानी या बुढापे तक जिन्दा रक्खा जाता है तो इस गरज से कि तुम ठीक समय तक पहुंचो और शायद तुम समझो। (६७) वही जिलाता और मारता है फिर जब वह किसी काम का करना ठान लेता है तो बस उसे कह देता है कि हो और वह हो जाता है (६८) (रुकू ७)

ऐ पैगम्बर क्या तूने उनकी तरफ न देखा जो ईश्वर की आयतों मे झगड़ा करते है किधर को बहके चले जा रहे हैं। (६९) यह लोग जो किताब को झुठलाते है और उन किताबो को जो हमने अपने दूसरे पैगम्बरो की मारफत भेजी है सो आखिरकार इनको मालूम हो जायगा (७०) जब इनकी गर्दनो मे तौक और जजीरें होंगी घसीटते हुए उनको झुलसते पानी मे ले जायेंगे (७१) फिर आग मे झोके जायंगे। (७२) फिर इनसे पूछा जायगा कि ईश्वर के सिवाय तुम जिन पूजितों को शरीक ठहराते थे वे कहाँ हैं। (७३) वे कहेगे हमसे खोये गये बल्कि हम तो पहले अल्लाह के सिवाय किसी चीज की पूजा करते ही न थे। अल्लाह काफिरो को इसी तरह भटकाते है। (७४) उनसे कहा जायगा कि यह तुम्हारी उन बातो का दण्ड है कि तुम पृथ्वी पर बेकार खुशियां मनाया करते थे और उसका दण्ड कि तुम इतराया करते थे (७५) तो अब नरक के दरवाजो मे जा दाखिल हो हमेशा इसी मे रहो गर्ज घमण्ड करने वालो का बुरा ठिकाना है (७६) ऐ पैगम्बर संतोष कर ईश्वर का प्रण सच्चा है। तो जैसे प्रण हम इन लोगो से करते है कुछ तुझको दिखायेंगे या तुझे ससार से उठा लेंगे फिर वे हमारी तरफ आवेंगे। (७७) और हमने तुमसे पहिले कितने पैगम्बर भेजे उनमे से कोई ऐसे हैं* जिन के हालात हमने तुमको सुनाये और

---

* कुरान मे कुछ रसूलों ही के हालात हैं कुछ के नाम हैं और कुछ के नाम नही है और न उनके हालात ही हैं, यद्यपि वह समय-समय पर विभिन्न स्थानों मे हुए हैं।

उनमे से कोई ऐसे है * जिनके हालात हमने तुमको नही सुनाये और किसी पैगम्बर की ताकत न थी कि बिना ईश्वर की आज्ञा कोई चमत्कार ला दिखावे । फिर जब ईश्वर की आज्ञा यानी दण्ड आया तो न्याय के साथ निर्णय कर दिया गया और जो लोग गलती में थे घाटे मे रहे । (७८) (रुकू ८)

अल्लाह ऐसा है जिसने तुम्हारे वास्ते चौपाये बनाये ताकि उन पर सवारी लो और कोई उनमे से ऐसा है कि तुम उनको खाते हो (७९) और तुम्हारे लिए चौपायो मे बहुत फायदे हैं और उन पर चढकर अपने दिली मतलब को पहुंचो और चौपायों पर और किश्तियों पर तुम लदे फिरते हो । (८०) और तुमको ईश्वर अपनी निशानियां दिखाता है तो ईश्वर की प्राकृतिक कौन २ सी निशानियो से इन्कार करते हो । (८१) क्या यह लोग देश मे चले फिरे नही कि अपने अगलों का परिणाम देखते । वह बलबूते के लिहाज से और पृथ्वी पर छोडे हुए निशानो के लिहाज से इनसे कहीं बढ चढ़ कर थे फिर उनकी कमाई उनके कुछ काम न आई । (८२) और जब उनके पैगम्बर उनके पास खुली हुई दलीलें लेकर आये तो जो उनके पास खबर थी उस पर खुश हुए और जिसकी हसी उडाते थे वह इन्ही पर उलट पडी । (८३) फिर जब उन्होने हमारा दण्ड आते देखा तो कहने लगे कि हम एक ईश्वर पर ईमान लाये और जिन चीजो को हम शरीक ठहराते थे अब हम उनको नही मानते । (८४) मगर जब उन्होंने हमारी दण्ड आते देख ली तो ईमान लाना उनको कुछ भी लाभकारी न हुआ यह दस्तूर अल्लाह का है जो उसके बंदो मे जारी है और काफिर यहाँ घाटे में होते है । (८५) (रुकू ९)

सूरे हामीम सज्दह

मदीने में अवतरित हुई इसमें ५४ आयतें और ६ रुकू हैं

आल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। हा मीम (१) कृपालु ईश्वर की तरफ से उतरा। (२) यह कुरान किताब है जिसकी आयतें अरबी बोली मे समझदार लोगो के लिए ब्यौरे के साथ बयान कर दी गई हैं। (३) शुभ सदेश मुनाता और डरता है इस पर भी इनमे से अक्सरो ने मुंह मोडा और वह नही सुनते। (४) और कहते हैं कि जिस बात की तरफ तुम हमको बुलाते हो हमारे दिल उनमे पर्दों मे हैं और हमारे कान भारी हैं और हममे और तुममे भेद है तू काम कर और हम काम कर रहे है। (५) ऐ पैगम्बर कहो कि मैं जैसा आदमी हूं मुझ पर आज्ञा आता है कि तुम्हारा एक पूजित है सो सीधे उसी की तरफ चले जाओ और उससे क्षमा मागो और शरीक करने वालो पर शोक है (६) जो जकात नही देते और वह परलोक के भी इन्कार करने वाले हैं। (७) वैसे जो लो लोग ईमान लाये और उन्होने अच्छे काम किये उनके लिए बड़ा फल है। (८) ऐ पैगम्बर कहो क्या तुम उससे इन्कार करते हो जिसने दो दिन मे पृथ्वी पैदा किया और तुम उसका शरीक बनाते हो। यही सारे जहान का पालनकर्ता है। (९) (रुकू १)

और उसी ने पृथ्वी मे पहाड बनाये और उसमे बरकत दी और उसी मे मांगने वालो के लिए चार दिनो मे खुराकें ठहरा दी। (१०) फिर आकाश की तरफ सीधा हो गया और वह धुआं था पृथ्वी और आकाश दोनो से कहा कि तुम दोनो खुशी से आये या लाचारी से। दोनों ने कहा हम खुशी से आये। (११) इसके बाद दो दिन में उस धुयें के सात आकाश बनाये और हर एक आकाश मे अपना आज्ञा उतारा और पहले आकाश को हमने तारो से सजाया और हिफाजत

रक्खी यह बडा प्रकृति से सधा है। (१२) अगर मक्का के काफिर सिर फेरें तो कह कि जैसी कडक और समूद पर हुई थी उसी तरह की कडक से तुमको भी डरता हू। (१३) तब उनके पास उनके आगे से और उनके पीछे से पैगम्बर आये कि ईश्वर के सिवाय किसी की पूजा न करो। वह कहने लगे अगर हमारा पालनकर्ता चाहता तो देवदूत भेजता फिर जो कुछ तुम लाए हो हम उसको नही मानते। (१४) सो आद के लोगो ने वृथा घमण्ड किया और बोले बलबूते मे हम से बढकर कौन है क्या उनको इतना न सूझा कि जिस अल्लाह ने उनको पैदा किया वह बलबूते मे उनसे कही बढ-बढकर है। गरज वह लोग हमारी आयतो से इन्कार ही करते रहे। (१५) तो हमने उनपर बडे जोर की आँधी चलाई ताकि ससारिक जीवन मे उनको दण्ड का मजा चखायें और परलोक की दण्ड मे तो पूरी खराबी है और उनको सहायता न मिलेगी। (१६) और वह जो समूद थे हमने उन्हे हिदायत की उन्होने सीधी राह छोड़कर गुमराही तो ली। परिणाम यह हुआ कि उनके कुकर्मों की वजह से उनको जिल्लत की कडक ने दबा लिया। (१७) और जो मनुष्य ईमान लाये और डरते थे उनको हम ने बचा लिया। (१८) (रुकू २)

और जिस दिन ईश्वर के शत्रु नरक की तरफ हाँके जायँगे उनके अलग-अलग गुट होगे। (१९) यहाँ तक कि नरक के पास जमा होगे तो जैसे जैसे काम यह लोग करते रहे हैं उनके कान* और उनकी आखे और उनके चमडे उनके मुकाबिले मे गवाही देंगे। (२०) और यह लोग अपनी खाल से पूछेगे कि तुमने हमारे खिलाफ क्यो गवाही दी

---

* काफिरो के अमालनामे (कर्म सूची) फरिश्ते लायेंगे तो वह कहेंगे यह हमारे शत्रु हैं। इनकी बात हम नहीं मानते। फिर पृथ्वी और आकाश उनके कर्मो को बतायेंगे परन्तु वे उनको भी झूठा बतायेंगे तो उनकी इन्द्रिया नाक कान आदि स्वय बुरे कामो की गवाही देंगी।

वह उत्तर देगी कि जिस ईश्वर ने हर वस्तु को बोलने की शक्ति दी उसी ने हमसे बुलवा लिया। उसी ने तुम्हें पहिली वार पैदा किया और अब तुम लोग उसी की तरफ लौटाये जाओगे (२१) और तुम इस बात की परवा न करते थे कि तुम्हारे कान आखें और चमड़ा गवाही देंगे बल्कि तुम को यह विचार था कि तुम्हारे बहुत से कामो मे खुदा भी जानकार नही। (२२) और उस बदगुमानी ने जो तुमने अपने पालनकर्ता के हक मे की तुमको नष्ट किया और तुम घाटे मे आ गये। (२३) फिर अगर यह लोग सतोष करें तो उनका ठिकाना नरक है और अगर क्षमा चाहें तो इनको क्षमा नही दी जायगी। (२४) औरहमने इन काफिरों के साथ बैठने वाले नियत कर दिये थे* तो उन्होने इनके अगले और पिछले तमाम हालात इनकी नजर मे अच्छे कर दिखाये और जिन्नों और आदमियों के सब फिर्कों जो उनसे आगे हो चुके है उन पर बात ठीक पड़ी। निस्संदेह वे घाटे मे थे। (२५) (रुकू ३)

और जो लोग इन्कार करने वाले हैं यह कहा करते हैं कि इस कुरान को मत सुनो और इसमें शोर मचा दिया करो। शायद तुम बाजी ले जाओ। (२६) सो जो लोग इन्कार करने वाले हैं हम उनको कठोर दण्ड देंगे। और उनके कामो का बुरा बदला देंगे। (२७) नरक ईश्वर के शत्रुओं यानी काफिरों का बदला है वह हमारी आयतों से इन्कार किया करते थे उसके दण्ड मे उनको हमेशा के लिए नरक मे घर मिला। (२८) और जो लोग इन्कार करने वाले है प्रलय मे कहेंगे कि ऐ हमारे पालनकर्ता शैतान और आदमी जिन्होने हमको गुमराह किया था एक नजर उनको हमे भी दिखा कि हम उनको अपने पैरो

---

* ये साथी शैतान हैं जिन्होंने उनको यह समझा रक्खा है कि दुनियां का सुख चैन उठाना चाहिए और आखिरत (परलोक) को तो किसी ने नहीं देखा उससे डरना बेकार है।

के तले डाले ताकि वह बहुत ही जलील हो। (२६) जिन लोगो ने इकरार किया कि अल्लाह ही हमारा पालनकर्ता है और जमे रहे उन पर देवदूत उतरेंगे कि न डरो और न रज करो और वैकुण्ठ जिस का तुम्हें प्रण मिला था अब उससे खुदा हो। (३०) हम सांसारिक जीवन मे और परलोक के जीवन मे तुम्हारे सहायक हैं। जिस चीज को तुम्हारा जी चाहे और जो तुम मांगो मौजूद होगी। (३१) वहाँ क्षमा करने वाले कृपालु की तरफ से धन्यवाद है। (३२) (रुकू ४)

और उससे अच्छी किस की बात हो सकती है जो ईश्वर की तरफ बुलाये गये और नेक काम करे और कहे कि मैं ईश्वर के आज्ञाकारी सेवको मे हूं। (३३) और नेकी और बदी बराबर नही बुराई का बदला अच्छे बर्ताव से दे तो तुझ मे और जिस आदमी मे शत्रुता थी उसे तू पक्का मित्र पायेगा। (३४) और बात उन्ही लोगो को दी जाती है जो सब्र करते हैं और यह उन्ही लोगो को दी जाती है जिनके बडे भाग्य है। (३५) और अगर तुमको किसी तरह का शैतानी ख्याल बहकाये तो ईश्वर से पनाह मांगो। वही सुनता जानता है। (३६) और ईश्वर की निशानियो मे से रात और दिन और सूरज और चांद भी हैं। न सूरज को शीश नवाओ और न चांद को और अगर तुम ईश्वर के पूजने वाले हो तो अल्लाह ही को शीश नवाना जिसने इन चीजो को पैदा किया है। (३७) फिर अगर यह लोग घमण्ड करे तो ईश्वर को इनकी कोई परवा नही जो देवदूत तुम्हारे पालनकर्ता के पास हैं वह रात और दिन उसकी दिल से याद करने मे लगे रहते हैं और वह नही थकते। (३८) और उसकी निशानियो मे से एक यह है कि तू जमीन को दबी हुई देखता है फिर जब हम उस पर पानी बरसा देते हैं तो वह लहलहाने लगती और उभर कर चलती है। जिसने इस पृथ्वी को जिलाया वही मृत को भी जीवित करने वाला है। वह हर चीज पर शक्तिमान है। (३६) जो लोग हमारी आयतो मे टेढ़ापन पैदा करते हैं हम पर छिपे नही।

आदमी नरक मे डाला जाय वह अच्छा है या वह आदमी जिसको प्रलय के दिन खटका न हो—लोगो जो चाहो सो करो जो कुछ भी तुम करते हो ईश्वर उसको देख रहा है। (४०) जिन लोगो के पास शिक्षा आई और उन्होने उसको न माना और यह कुरान अजीब किताब है। (४१) उसमे झूठ का न इसके आगे से और न इसके पीछे से दखल है हिकमत वाले सब खूबियो सहारे से उतरी हुई है (४२) ऐ पैगम्बर तुझ से वही बात कही जाती हैं जो तुझ से पहिले पैगम्बरो से कही जा चुकी है बेशक तेरा पालनकर्ता क्षमा करने वाला और उसकी सजा दुखदाई है। (४३) और अगर हम इसको अरबी* के सिवाय दूसरी भाषा मे बनाते तो कहते कि इसकी आयते अच्छी तरह खोल कर क्यो नही समझाई गईं इनकी भाषा तो अरबी है और हमारी अरबी ऐ पैगम्बर कहो जो मनुष्य ईमान रखते हैं उन के लिए तो यह कुरान हिदायत और सेहत है और जो ईमान नही रखते उनके कानों मे बोझ है और वह उनके हक मे अन्धापन है। यह लोग दूर की जगह से पुकारते जाते हैं कैसे सुनें (४४) (रुकू) ५

और हमने मूसाको किताब दी थी तो उसमे बडे २ भेद डाले गये और अगर तुम्हारे पालनकर्ता से न्याय करने की आज्ञा पहले उतर न चुकती तो इनमे न्याय कर दिया गया होता और यह लोग कुरान के लिए सदेह मे पड़े हैं। (४५) ऐ पैगम्बर जिसने नेक काम किये उसने अपने लिए और जिसने बुरा किया तो उसी पर है और तेरा पालनकर्ता बन्दो पर अत्याचार नही करता। (४६)

---

* इन्कारी कहते थे कि कुरान अरबी भाषा में क्यों उतरी। और किसी भाषा में उतरती तो हम मान भी लेते। अरबी तो मुहम्मद की मातृभाषा है उन्होंने अपने आप बना लिया होगा। इसका यह उत्तर दिया गया है कि यदि यह कुरान किसी अन्य भाषा मे भी होती तो भी न मानने वाले न मानते और कहते हम पराई बोली क्या जानें और उसे क्यों मानें ?

पच्चीसवाँ पारा (इलैहि यूरद्दु)

उसी की तरफ प्रलय के ज्ञान का हवाला दिया जाता है और उसी के ज्ञान से फल गाभो से निकलते हैं। न कि मादा का पेट रहता है और वह जानती है। मगर उसके ज्ञान से और जब ईश्वर लोगों को पुकारेगा कि तुम्हारे शरीक कहाँ हैं वह उत्तर देंगे कि हमने तुझे सुना दिया कि हममे से किसी को खबर नही। (४७) और जिन पूजितो को पहिले यह मनुष्य पुकारते थे अब इनसे खोये गये और यह समझ लेंगे कि इनके लिए छुटकारा नही। (४८) आदमी भलाई माँगने से नही थकता और जो उसे बुराई पहुचे तो उदास और निराश हो जाता है। (४९) और अगर उसको कोई दुख पहुचे और दुख के बाद हम उसको अपनी कृपा दिखावें तो कहने लगता है कि यह तो मेरे ही लिए है और मैं नही समझता कि प्रलय कायम हो और अगर मुझको अपने पालनकर्ता की तरफ लौटाया जायगा तो उसके यहाँ मेरे लिये खूबी होगी। सो हम काफिरो को उनके काम बता देंगे और उनको कठोर दण्ड का मजा चखायेंगे। (५०) और जब हम आदमी पर नियामत भेजते हैं तो मुँह फेर लेता है और अलग हो जाता है और जब उसको दुख पहुचता है तो लम्बी चौडी दुआयें करने लगता है। (५१) ऐ पैगम्बर कहो कि भला देखो तो सही कि अगर यह कुरान ईश्वर के यहा से हो और इस पर भी तुम इससे इन्कार करो तो जो शत्रु हो कर दूर चला जावे तो उससे बढकर गुमराह कौन है। (५२) हम इनको अपनी निशानियाँ चारो ओर दिखलावेंगे और उनकी जानो मे भी। यहाँ तक कि इन पर जाहिर हो जायगा कि यह सच है क्या यह बात काफी नही कि तुम्हारा पालनकर्ता हर वस्तु का साक्षी है। (५३) यह अपने पालनकर्ता की मुलाकात से सन्देह मे है ईश्वर हर वस्तु को घेरे हुए है। (५४) (रुकू ६)



सूरे शूरा

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ५३ आयतें और ५ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। हा मीम- (१) ऐन-सीन-काफ। (२) ऐ पैगम्बर जिस तरह यह सूरत तुम्हारे ऊपर उतारी जाती है इसी तरह अल्लाह जो बडे चमत्कारवाला है तुम्हारी तरफ और उन पैगम्बरो की तरफ जो तुमसे पहिले हो चुके हैं वही ईश्वरीय सदेशा भेजता रहा है। (३) उसी का है जो कुछ आकाश में है और जो कुछ पृथ्वी मे है और वही बड़ा आलीशान है। (४) दूर नहीं कि आकाश अपने ऊपर से फट पड़े और देवदूत अपने पालनकर्ता की तारीफ के साथ पाकी से याद करने मे लगे हैं। और जो लोग पृथ्वी मे हैं उनकी क्षमा करते है। अल्लाह ही क्षमा करने वाला कृपालु है। (५) और जिन लोगों ने ईश्वर के सिवाय काम सम्भालने वाले ठहरा रक्खे है अल्लाह को याद है और तू उन पर कुछ तैनात नही। (६) और इसी तरह अरबी कुरान हमने उतारा ताकि तू मक्के के रहने वालो को और जो लोग मक्के के आस पास हैं उनको डरावे और प्रलय के दिन के दु ख से डरावे। जिसमे कुछ सदेह नही कुछ लोग बैकुण्ठ मे और कुछ लोग नरक मे होगे। (७) और ईश्वर चाहता तो लोगों का एक ही फिरका बना देता लेकिन वह जिसको चाहे अपनी कृपा मे ले और पापियों का कोई हामी और सहायक न होगा। (८) क्या इन लोगो ने अल्लाह के सिवाय दूसरे काम सभालने वाले बना रक्खे हैं सो अल्लाह ठीक काम बनाने वाला है और वही मृत को जिलाता और हर चीज पर शक्तिमान है। (९) (रुकू १)

और जिन-जिन बातो में तुम लोग आपस मे भेद रखते हो उनका निर्णय खुदा ही के हवाले है लोगो यही अल्लाह मेरा पालनकर्ता है। मैं उसी पर भरोसा रखता और उसी की तरफ ध्यान करता हू।

(१०) आकाश और पृथ्वी का पैदा करने वाला है उसी ने तुम्हारे लिए तुम्हारी जिन्स के जोडे बनाये और चारपायो के जोडे इस तरह तुमको पृथ्वी पर फैलाता है कोई चीज उस जैसी नहीं और वह सुनता देखता है। (११) आकाश पृथ्वी की कुन्जियाँ उसी के पास है जिसकी रोजी चाहता है वढा देता है और जिसकी चाहता है नपी तुली कर देता है वह हर चीज से जानकार है। (१२) उसने तुम्हारे लिए दीन की वही राह ठहराई है जिस पर चलने की उसने नूह को आज्ञा दी थी और ऐ पैगम्बर तेरी तरफ हमने जो आज्ञा भेजी और जो हमने इब्राहीम मूसा और ईसा को आज्ञा दी थी कि इसी दिनको लायक रक्खो और इसमे फर्क न डालो। ऐ पैगम्बर तुम जिसे दीन की तरफ मुशरिको को बुलाते हो वह उन पर गिराँ गुजरता है अल्लाह जिसे चाहे अपनी तरफ चुन ले और उसको अपनी तरफ राह दिखाता है जो रुजू होता है। (१३) और उन्होने समझ आये पीछे आपस की जिद्द के कारण से भेद डाला ऐ पैगम्बर अगर तुम्हारे पालनकर्ता की तरफ से एक नियत समय का वादा पहले से न हुआ होता तो उनमे न्याय कर दिया गया होता और जो लोग अगलो के बाद किताव के वारिस हुए वे उसकी तरफ से धोखे मे हैं (१४) तो ऐ पैगम्बर तू उसी की तरफ बुला और जैसा तुझ से फर्माया गया है उस पर कायम रह और इनकी इच्छाओ पर न चल और कह दो कि हर किताव पर जो ईश्वर ने उतारी है ईमान लाता हू और मुझे आज्ञा मिली है कि तुममे न्याय करू। अल्लाह हमारा और तुम्हारा पालनकर्ता हैं। हमारा किया हम को और तुम्हारा किया तुमको मिलेगा हममे और तुममे कोई झगडा नही। अल्लाह ही हम सब को जमा करेगा और उसी की तरफ जाना है। (१५) और जव ईश्वरको मान चुके तो जो लोग इसके वाद अल्लाह के वारे मे झगडते है तो उनके पालनकर्ता के नजदीक उनकी हुज्जत झूठी है और उन पर गजव है और उनके लिए दुखदाई दण्ड है। (१६) अल्लाह जिसने किताबें और तराजू सच्ची उतारी ऐ पैगम्बर तुम क्या जान सकते हो शायद प्रलय करीब

हो (१७) जिनको प्रलय का यकीन नही वह तो उसके लिए जल्दी मचा रहे हैं और जो ईमान वाले हैं वह उससे डर रहे हैं और जानते हैं कि प्रलय सच है। सुनो जो लोग प्रलय मे झगड़ते हैं वे भटक कर दूर जा पडे हैं। (१८) अल्लाह अपने सेवको पर कृपालु है जिसे चाहता है रोजी देता है और वह जोरावर बली है। (१९) (रुकू २)

जो कोई परलोक की खेती चाहता है हम उसकी खेती में उसके लिए बढ़ती देंगे और जो संसार की खेती चाहता हैं हम उसको कुछ उसमे मे देंगे। फिर परलोक मे उसका कुछ हिस्सा नही। (२०) क्या इन लोगो के शरीक वे लोग हैं जिन्होने उनके लिए ऐसे दीन का रास्ता ठहरा दिया है जिस को ईश्वर ने आज्ञा नही दी और यकीनी वादा न हुआ होता तो इनमे निर्णय कर दिया गया होता और पापियो को दुखदाई दण्ड है। (२१) ऐ पैगम्बर तू उस दिन पापियो को देखेगा कि वे अपनी कमाई से होगे वह बदला इन पर पड़ने वाला है और जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये वह स्वर्ग के बाग की क्यारियों मे होंगे। जो उनको जरूरत होगी उनके पालनकर्ता के यहाँ होगा। यही तो बड़ी कृपा है। (२२) यह वह बदला है जिसका शुभ सदेह ईश्वर अपने ईमानदार नेक काम करने वाजे सेवको को देता है ऐ पैगम्बर कहो कि मैं तुमसे इस पर कोई मजदूरी नही चाहता मगर रिश्ते नाते की प्रेम और जो मनुष्य नेकी करेगा उसके लिए हम और ज्यादा खूबी पैदा कर देंगे, अल्लाह क्षमा करनेवाला कदरदान है। (२३) क्या यह लोग कहते हैं कि इस मनुष्य ने ईश्वर पर झूठ बाँधा सो ईश्वर अगर चाहे तो तेरे दिल पर मुहर लगाये। मगर अल्लाह अपनी बात से झूठ को मिटाता और सच को जमाता है और वह दिल की बात जानता है। (२४) और वही है जो अपने जीवो की क्षमा मानता और बुराइयाँ क्षमा करता और जैसे-जैसे कर्म तुम करते हो जानता है। (२५) और वह ईमान वालो की जो नेक काम करते है दुआ कबूल करता है और अपनी कृपा से उनको बढती देता है और

जो लोग ईन्कार करने वाले हैं उनके लिए कठोर दण्ड है। (२६) और अगर अल्लाह अपने बन्दो के लिए रोजी ज्यादा कर दे तो वह देश मे सरकशी करने लगे मगर वह अन्दाज से जितनी रोजी चाहता है उतारता है। वह अपने सेवको का खबरदार देखने वाला है। (२७) वही है जो लोगो के निराश हुए पीछे मेह बरसाता है और अपनी कृपा को सब पर कर देता है और वह काम बनानेवाला और प्रशसा के योग्य है। (२८) और उसी की निशानियो मे से आकाश और पृथ्वी का पैदा करना है और उन जानदारो को जो उसने आकाश और पृथ्वी मे फैला रक्खे हैं। वह जब चाहे उनके जमा कर लेने पर शक्तिमान है। (२९) (रुकू ३)

और तुम पर जो दुख पडता है सो तुम्हारे हाथो की कमाई का बदला है और ईश्वर बहुत अपराधो से बचाता है। (३०) तुम पृथ्वी मे ईश्वर को हरा नही सकते और न ईश्वर के सिवाय तुम्हारा कोई काम बनाने वाला है और न सहायक। (३१) और उसी की निशा- नियो मे से जहाज हैं जो समुद्रो मे पहाडो की तरह है। (३२) अगर ईश्वर चाहे हवा को ठहरा दे तो जहाज समुद्र की सतह पर खडे के खडे रह जाय। इसमे ठहरने वालो और धन्यवाद करने वालो के लिए निशानियाँ है। (३३) या जहाज वालो के कर्मो के बदले मे जाहजो को समाप्त कर दे। (३४) और बहुतेरे अपराधो को क्षमा करता है। और जो लोग हमारी आयतो मे झगडने वाले है, जान लें कि उनको भागने की जगह नही है। (३५) सो जो कुछ तुमको दिया गया है सासारिक जीवन का सामान है और जो ईश्वर के यहाँ है ईमानदारो और जो अपने पालनकर्ता पर भरोसा रखते हैं उनके लिए बढकर और पक्का है। (३६) और जब बडे-बडे कुकर्मो और बेशर्मी की बातो से अलग रहते हैं और जब उनको गुस्सा आ जाता है तब बच जाते है। (३७) और जिन्होने पालनकर्ता की आज्ञा मानी और नमाज पढी और उनका काम आपस के मशविरो से होता है और हमने जो उनको दे

रखा है उसमे से ईश्वर के मार्ग पर खर्च करते हैं। (३८) और जो ऐसे हैं कि उन पर अधिकता होती है वह बदला ले लेते हैं।(३६)और बुराई का बदला वैसे ही बुराई है, इस पर जो क्षमा कर दे और सुलह कर ले तो उसका पुण्य अल्लाह के जिम्मे है। वह अत्याचार करने वालो को पसन्द नही करता। (४०) और जिस पर अत्याचार हुआ हो और वह उसके बाद बदला ले तो ऐसे लोगो पर कोई दोष नही। (४१) दोष उन्ही पर है जो लोगों पर अत्याचार करते और व्यर्थ देश मे ज्यादती करते है उन्हीं को दुखदाई दण्ड है। (४२) और जिसने सन्तोष किया और दूसरे की गलती को क्षमा कर दिया तो वह बातें हिम्मत की हैं। (४३) (रुकू ४)

और जिसे ईश्वर ने गुमराह किया फिर उसे अल्लाह के सिवाय कोई सहायक नही और तू अत्याचारियो को देखेगा कि जब लेंगे तो कहेंगे कि भला ससार मे फिर लौट चलने की भी कोई राह है।(४४) और तू इनका देखेगा कि नरक के सामने बदनामी के मारे हुए झुके हुए छिपी निगाहो को देखते होंगे और उस समय ईमान वाले कहेंगे कि घाटे मे वह हैं जिन्होंने प्रलय के दिन अपने आपको और अपने घर वालों को तबाह किया। अत्याचार करने वाले हमेशा के दण्ड में रहेंगे। (४५) और ईश्वर के सिवाय उनका कोई सहायक न होगा जो उनकी सहायता करे और जिसे ईश्वर ने गुमराह किया तो उसके लिए कोई राह नही। (४६) अपने पालनकर्ता का कहा मान लो। उस दिन प्रलय के आने से पहिले न कोई जो ईश्वर की ओर से टलने वाली नही। उस दिन तुम्हारे लिए न कोई बचाव की जगह होगी और न इन्कार बन पडेगा। (४७) तो अगर यह लोग मुंह मोडे तो हमने तुमको इन पर निगहबान बनाकर नही भेजा। तेरा जिम्मा पहुचना है और जब हम आदमी को अपनी कृपा चखाते हैं तो वह उससे खुश होता है और लोगो को जो उनके कामों के बदले मे दुख पहुचना है तो मनुष्य बड़ा ही भलाई भूलने वाला है। (४८) आकाश और पृथ्वी का

राज्य अल्लाह ही का है जो चाहे पढा करे जिसे चाहे पुत्रियां दे और जिसे चाहे पुत्र दे। (४९) या पुत्र और पुत्रिया मिलाकर उनको दोनो तरह की सन्तान दे और जिसको चाहे बांझ करे, वह जानकर और शक्तिमान है (५०) और किसी आदमी की ताकत नही कि ईश्वर से बात करे* मगर आकाशवाणी से या पर्दे के पीछे या किसी देवदूतो को उसके पास भेज दे और वह की आज्ञा से जो मजूर हो पहुँचा देता है। वह सबके ऊपर चमत्कार वाला है। (५१) और ऐ पैगम्बर इसी तरह हमने अपनी आज्ञा से तेरी ओर एक देवदूत भेजा। तू न जानता था कि किताब क्या चीज और ईमान क्या चीज है। लेकिन हमने कुरान को रोशन बनाया और अपने सेवको मे से जिसे चाहे उससे राह दिखावे और ऐ पैगम्बरो तू अलबत्ता सीधी राह दिखाता है। (५२) राह अल्लाह की है जो आकाश और पृथ्वी की सब चीजो का मालिक है। सुनो जो अल्लाह तक कामो की पहुंच है (५३) (रुकू ५)



---

* मक्के के काफिर मुहम्मद साहब से कहते थे कि खुदा तुम्हारे सामने आकर बाते क्यों नहीं करता। वह तो मूसा से ऐसे ही बातें करता था। इस पर यह आयत उतरी कि खुदा किसी से उसके आमने सामने आकर बातें नहीं करता।

सूरे जुखरुफ़

मक्के में अवतरित हुई इसमें ८९ आयत और ७ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। हा-मीम (१) जाहिर किताब की सौगन्ध (२) हमने इसका अरबी मे बनाया है ताकि तुम समझो। (३) और यह कुरान हमारी यहाँ असल किताब मे बड़े पाये का चमत्कार किया है। (४) तो क्या इस वजह से कि तुम लोग हद से बाहर हो गये हो, हम वेतअल्लुक होकर शिक्षा करना छोड़ देंगे। (५) और अगले लोगो मे हमने बहुत से पैगम्बर भेजे (६) और जो पैगम्बर उनके पास आये उन्होने हसी ही उडाई। (७) फिर हमने उनको जो इन मक्का के काफिरो मे कही जोरावर थे मार डाला और अगले लोगो के किस्से चल पडे। (८) ऐ पैगम्बर अगर तुम इन लोगो से पूछो कि आकाश और पृथ्वी को किसने पैदा किया है। तो वह कहेगे कि इनको सर्वशक्तिमान बुद्धिमान ने पैदा किया है।(९) वही है जिसने पृथ्वी को तुम लोगो के लिये फर्श बनाया है और तुम्हारे लिये उसमे राह निकाली ताकि तुम राह पाओ। (१०) और जिसने अटकल के साथ आकाश से पानी बरसाया। फिर हमने उस पानी से मरे हुए शहर को जिला उठाया। इसी तरह तुम लोग भी निकाले जाओगे। (११) और जिसने सब चीजो के जोड़े बनाये और तुम्हारे लिए नावें और चौपाये बनाये हैं जिन पर तुम सवार होते हो। (१२) कि उनकी पीठ पर बैठ जाओ फिर जब उन पर बैठ जाओ तो अपने पालनकर्ता की भलाई याद करो और कहो कि वह पवित्र है जिसने इन चीजो को को हमारे वश किया है और हम उनको अधिकार मे करने की सामर्थ्य न रखते थे। (१३) और हमको अपने पालनकर्ता की ओर लौट आना है। (१४) और लोगो ने ईश्वर के दिये उसके बन्दे को एक बेटा दिया है। आदमी बड़ा ही कृतघ्नी है। (१५) (रुकू १)

क्या ईश्वर ने अपनी सृष्टि मे से आप तो पुत्रियाँ ली और तुम लोगो का पुत्र चुनकर दिये। (१६) और जब इन लोगो मे से किसी को उस चीज के होने का शुभसन्देश दिया जाय यानी पुत्री की जो ईश्वर के लिए कहावत ठहराई है तो अन्दर ही अन्दर ताव खाकर उसका मुह काला पड जाता है। (१७) क्या जो गहनो मे पाला जावे और झगडते समय बात न कह सके वह ईश्वर की पुत्री हो सकती ? (१८) और इन लोगो ने देवदूतो को जो ईश्वर के बन्दे हैं औरतें ठहराया है। क्या जिस समय ईश्वर ने देवदूतो को पैदा किया यह लोग मौजूद थे। इनका कौल लिखा जायगा और इनसे पूछा जायगा। (१९) और कहते हैं कि अगर कृपालु चाहता तो हम इनकी पूजा न करते। उन्हें इस बात की कुछ खबर नही, निरी अटकलें दौडाते हैं। (२०) या इनको हमने इसके पहले कोई किताब दी है कि यह उसे पकडते हैं। (२१) बल्कि कहते हैं कि हमने अपने बाप-दादो को एक तरीके पर पाया और उन्ही के कदम ब कदम हम भी ठीक राह चले जा रहे है। (२२) और ऐ पैगम्बर इसी तरह हमने तुमसे पहिले जब कभी किसी गाँव मे को पैगम्दर डर सुनाने वाला भेजा के धनी लोगो ने यही कहा कि हमने अपने दादो का एक राह पर पाया और उन्ही के कदम व कदम चलते हैं। (२३) वह बोला कि जिस राह पर तुमने अपने बाप-दादो को पाया, अगर मै उनसे बढकर राह की सूझ लेकर तुम्हारे पास आया हू तो भी तुम उसे न मानोगे वह बोले जो तुम लाये हो हम उसको नही मानते। (२४) आखिरकार हमने उनसे बदला लिया तो देखो कि पैगम्बरो के झुठलाने वालो का कैसा परिणाम हुआ। (२५) (रुकू २)

और जब इब्राहीम ने अपने बाप और अपनी कौम से कहा कि जिनकी तुम पूजा करते हो मुझको उनमे कुछ सरोकार नही। (२६) मगर जिसने मुझको पैदा किया सो वही मुझको राह दिखायेगा। (२७) और यही बात अपनी सन्तान मे छोड़ गया शायद वह ध्यान दें। (२८)

बल्कि हमने इनको और इनके बाप-दादो को संसार में बरतने दिया यहाँ तक कि इनके पास सच्चा दीन और खुलो सुनाने वाला पैगम्बर आया। (२६) और जब जब इनके पास सच्चा दीन आया तो कहने लगे यह तो जादू है और हम इनको नही मानते। (३०) और बोले कि दो बस्तियो यानी मक्का और तायफ से किसी बड़े आदमी पर यह कुरान क्यो न उतारा। (३१) क्या यह लोग तेरे पालनकर्ता का कृपा के बाँटने वाले है सो इस जीवन मे इनकी रोजी इनमें हम बाँटते है और हमने दुनियाबी दर्जो के एतबार से इनमे एक को एक पर बढा रखा है ताकि इनमे एक का एक अपना आज्ञाकारी बनाये रहे और जो माल असबाब यह लोग समेटे फिरते है तेरे पालनकर्ता की कृपा तो इसमे कही बढ कर है। (३२) और अगर यह बात न होती कि सब मनुष्य एक ही तरीके के हो जायगे तो जो ईश्वर से इन्कारी हैं, हम उनके लिये उनके घरो की छतें और जीने जिन पर चढते है चाँदी के बना देते। (३३) और उनके घरो के द्वार और तख्त भी, जिन पर तकिया लगाये बैठे है चाँदी के कर देते। (३४) और सोना भी देते और यह तमाम इस जीवन के लाभ हैं और ऐ पैगम्बर! परलोक तेरे पालनकर्ता के यहाँ संयमियो के लिए है। (३५) (रुकू ३)

और जो मनुष्य ईश्वर कृपालु की याद से जीचुराता हैं,हम उस पर एक शैतान नियत कर दिया करते हैं। और वह उसके साथ रहता है। (३६) और शैतान पापियों को राह से रोकता है और यह समझते है कि हम राह पर हैं। (३७) यहाँ तक कि जब हमारे सामने आता है तो कहता है कि अच्छा होता जो मुझमे और तुझमे पूर्व और पश्चिम की दूरी का फर्क हो जावे। तू बुरा साथी है। (३८) जब तुम अत्याचार कर चुके तो आज यह बात भी तुम्हारे कुछ काम न आवेगी जब तुम और शैतान एक साथ दण्ड मे हो। (३६) तो ऐ पैगम्बर क्या तुम बहरो को सुना सकते हो या अन्धो को और उनको जो प्रत्यक्ष गुमराही मे हैं. राह दिखा सकते हो। (४०) फिर अगर हम तुझे संसार से

उठा लें तो भी हमको इन काफिरो से बदला लेना है। (४१) या हमने जो उनसे प्रण किया है तुझको दिखा देंगे। हम उन पर सामर्थ्यवान है। (४२) तो जो तुझे आज्ञा हुई है उसे तू मजबूती से पकड़ निस्सन्देह तू सीधी राह पर है। (४३) यह तेरे और तेरी कौम के लिए शिक्षा है और आगे चल कर तुझसे पूछ-ताछ होनी है। (४४) और ऐ पैगम्बर तुझसे पहले जो हमने पैगम्बर भेजे उनसे पूछा। क्या हमने ईश्वर कृपालु के सिवाय दूसरे पूजित ठहराये हैं कि उनकी पूजा की जावे। (४५) (रुकू ४)

और हमने मूसा को अपने चमत्कार देकर फिरऔन और उसके दरबारियो की तरफ भेजा। मूसा ने कहा मैं ससांर के पालनकर्ता का भेजा हुआ हू। (४६) जब मूसा हमारे चमत्कार लेकर उनके पास आया तो वह हसने लगे। (४७) और हम जो चमत्कार उनको दिखाते बड़ा था और हमने उनको दण्ड मे पकड़ा। शायद यह मान जावें। (४८) और कहने लगे ऐ जादूगर ! हमारे लिए अपने पालनकर्ता को पुकार, जैसा उसने तुझसे वादा कर रखा है। हम निस्सन्देह राह पर आवेंगे। (४९) फिर जब हमने उन पर से दण्ड उठा लिया वह अपने कौल तोडने लगे। (५०) और फिरऔन ने अपने लोगो मे इस बात की मनादी करा दी कि लोगो ! क्या देश मिस्र हमारा नही और यह नहरें हमारे शाही महल के नीचे नही बह रही हैं, तो क्या तुम नही देखते। (५१) भला मैं इस मूसा से जो एक जलील आदमी है बढकर नही हू। (५२) और वह साफ नही बोल सकता। और मूसा हमसे बेहतर होता फिर उसके लिए सोने के कंगन* ईश्वर के यहाँ से क्यो नही आये या फरिश्ते उसके साथ जमा होकर क्यो नही उतरे। (५३)

---

* उन समय सरदारों को सोने का कंगन पहनते थे। इसलिए फिरऔन ने कहा "मूसा अगर नबी होते तो इनके हाथ में जड़ाऊ कंगन होता।"

फिरऔन ने अपने लोगों को बेसमझ कर दिया—फिर उसी का कहा मानो। निस्सन्देह वह अवज्ञाकारी थे। (५४) फिर जब इन लोगो ने हमको क्रोध दिलाया हमने इनसे बदला लिया, फिर इन सब को डुबो दिया। (५५) फिर इनको गया-गुजरा कर दिया और आने वाली नस्लो के लिए कहावत बना दिया। (५६) (रुकू ५)

और ऐ पैगम्बर जब मरियम के पुत्र का उदाहरण दिया गया तो तेरी जाति के लोग उसका सुनकर एकदम से खिलखिला पड़े। (५७) और कहने लगे कि हमारे पूजित अच्छे हैं या ईसा। इन मनुष्यो ने ईसा का उदाहरण तेरे लिए सिर्फ झगडने के लिए सुनाया है। यह झगडलू कौम है। (५८) तो ईसा भी हमारे एक बन्दे थे। हमने उन पर भलाई की थी और इसराईल बेटो के लिए एक नमूना बनाया था। (५९) और हम चाहते तो तुममें देवदूत कर देते कि वह पृथ्वी मे तुम्हारी जगह आबाद होते। (६०) और ईसा उस घड़ी प्रलय का एक निशान है उसमे सन्देह न करो और मेरे कहे पर चलो। यही सीधी-सीधी राह है। (६१) और ऐसा न हो कि तुमको राक्षस रोके कि वह तुम्हारा खुला शत्रु है। (६२) और चमत्कार लेकर आये तो उन्होने कहा कि मैं तुम्हारे पास पक्की बाते लेकर आया हूं और मतलब यह है कि तुम्हारी उन बातो को बयान करू जिनमे भेद डाल रहे हो। अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानो। (६३) अल्लाह ही मेरा और तुम्हारा पालनकर्ता है, उसी की पूजा करो यही सीधी राह है। (६४) तो उन्ही मे से बहुत से लोग भेद डालने लगे, तो जो लोग सरकशी करते हैं प्रलय के दिन दुखदाई दण्ड के एतबार से उन पर है। (६५) क्या यह लोग प्रलय ही की राह देख रहे हैं कि एकाएक इन पर आ जाय और इनको सूचना भी न हो। (६६) जो लोग आपस मे मित्र रखते हैं उस दिन एक दूसरे के शत्रु हो जायेंगे मगर संयमी। (६७) (रुकू ६)

ऐ हमारे बन्दों ! आज तुमको न किसी तरह का डर है और न तुम उदास होंगे। (६८) जो हमारी आयतों पर ईमान लाये और आज्ञाकारी रहे। (६९) तुम और तुम्हारी स्त्रियाँ स्वर्ग में जा दाखिल हो ताकि तुम्हारी इज्जत की जावे। (७०) उन पर सोने की रकाबियो और प्यालो की दौड़ चलेगी और जिस चीज को उनका जी चाहे और नजर मे भली मालूम हो स्वर्ग मे होगी और तुम हमेशा यही रहोगे। (७१) और यह स्वर्ग की वारिसी तुमको उनके बदले मे जो तुम करते रहे हो मिली है। (७२) यहाँ तुम्हारे लिये बहुत मेवे होगे जिनमे से तुम खाओगे। (७३) अलबत्ता पापी हमेशा नरक के दण्ड मे रहेगा। (७४) उनसे दण्ड हल्का न किया जायगा और वह उसमे निराश रहेगे। (७५) और हमने उन पर अत्याचार नही किया बल्कि वही अत्याचार करते रहे। (७६) और पुकारेंगे ऐ मालिक ! हमारा काम तमाम कर दे। वह कहेगा कि तुमको इसी मे रहना है। (७७) हम तुम्हारे पास सच बात लेकर आये हैं लेकिन तुममे अक्सर सच से चिढते हैं। (७८) क्या इन लोगों ने कोई बात ठान रखी है तो समझ रक्खें कि हमने भी ठान रक्खी है। (७९) या विचार करते हैं कि हम इनके भेद और मशविरे नहीं जानते और हमारे देवदूत इनके पास लिखते हैं। (८०) ऐ पैगम्बर कहो रहमान के कोई सतान हो तो मैं सबसे पहिले उसकी पूजा करने को तैयार हूं। (८१) जैसी-जैसी बातें बनाते हैं, उनसे आकाश और पृथ्वी और तख्त का मालिक पवित्र है (८२) तो ऐ पैगम्बर इन लोगो को बकने और खेलने दे यहाँ तक कि जिस रोज का इनसे प्रण किया जाता है यानी प्रलय इनके सामने आ जावे। (८३) और वही है कि आकाश में उसी की बन्दगी है और पृथ्वी मे भी उसी की बन्दगी है। और वह चमत्कार वाला और सब चीजों का जानने वाला है। (८४) जिसका राज्य आकाश और पृथ्वी और जो कुछ आकाश और पृथ्वी मे है सब पर है। वह मुबारिक है और उस घड़ी प्रलय की खबर उसी को है और तुम उसी तरफ लौट कर जाओगे। (८५) और ईश्वर के सिवाय जिन पूजितो को यह लोग

पुकारते हैं वह सिफारिश का अख्तार नही रखते मगर जिसने सच्ची गवाही दी वे जानते थे। (८६) और ऐ पैगम्बर अगर तू पूछे कि इनको किसने पैदा किया तो मजबूरन यही कहेंगे कि अल्लाह ने। फिर किधर को बहके चले जा रहे हैं। (८७) पैगम्बर कहते रहे हैं कि ऐ पालनकर्ता! ये लोग ईमान लाने वाले नही। (८८) तू इनसे मुंह मोड़ ले और सलाम कह, फिर आगे चल कर मालूम कर लेंगे। (८९) (रुकू ७)

सूरे दुखान

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ५६ आयतें और ३ रुकू ह

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। हो-मीम। (१) जाहिर किताब की सौगन्ध। (२) हमने मुबारिक रात २७ वीं रात रमजान की और शब्बरात में इसको उतारा—हमें डराना मंजूर था। (३) संसार की हर कठोर बात उसी रात को निर्णय हुआ करती है। (४) हमारे आज्ञा से क्योंकि हम भेजने वाले हैं। (५) ऐ पैगम्बर तेरे पालनकर्ता की कृपा है। वह सुनता और जानता है। (६) आकाश और पृथ्वी का और जो कुछ आकाश और पृथ्वी में है उनका मालिक वही है, अगर तुमको विश्वास हो। (७) उसके सिवाय कोई पूजित नहीं। वही जिलाता और मारता है। वही तुम्हारा और तुम्हारे अगले बाप-दादों का पालनकर्ता है। (८) कुछ नही वे धोखे मे खेलते हैं। (९) सो उस दिन का इन्तिजार कर जिस दिन आकाश से धुआं जाहिर हो* । (१०) और वह सब लोगों पर छा जायगा। यह दुखदाई दण्ड है। (११) ऐ हमारे पालनकर्ता हम पर से दु.ख को टाल हम ईमान-

दार हैं। (१२) वह क्योकर शिक्षा पकड़ें इनके पास पैगम्बर खोल कर सुनने वाला आ चुका। (१३) फिर इन्होंने उससे मुंह मोडा और कहा कि यह सिखाया हुआ दीवाना है। (१४) हम दण्ड को थोडे दिनो के लिए हटा देंगे मगर तुम फिर करोगे। (१५) हम जिस दिन वड़ी पकड़ पकडेंगे, हम वदला ले लेंगे। (१६) और इनसे पहिले हम फिरऔन की कौम को आजमा चुके हैं और उनके पास बडे दर्जे के पैगम्बर आये। (१७) और उन्होंने आकर फिरऔन के लोगो से कहा कि अल्लाह के बन्दों इसराईल के बेठो को मेरे हवाले करो, मैं तुम्हारे पास आया हू और अमानतदार हूं। (१८) और यह कहा कि ईश्वर के मिर न फेरो, मैं साफ प्रमाण तुम्हारे सामने लाया हूं। (१९) और इससे कि तुम मुझको पत्थरो से मारो और मैं तुम्हारे पालनकर्ता की पनाह मांगता हूं। (२०) और अगर तुमको मेरी वात का विश्वास न हो तो मुझसे अलग हो जाओ। (२१) तब मूसा ने अपने पालनकर्ता को पुकारा कि यह लोग अपराधी हैं। (२२) ईश्वर ने कहा कि मेरे बन्दो यानी इसराईल के वेटों को लेकर निकल जाओ, तुम लोगो का पीछा किया जायगा। (२३) और दरिया को ठहरा हुआ छोड जाना कि फिरऔनियो का सारा लश्कर डुबो दिया जायगा। (२४) यह लोग कितने वाग और नहरें छोड गये। (२५) और खेत और अच्छे मकान। (२६) और आराम के सामान जिनमे मजे उड़ाया करते थे, छोड करें। (२७) ऐसे ही हमने दूसरे लोगों को इसका वारिस बना दिया। (२८) तो उन पर न तो आकाश ही रोया और न पृथ्वी ही रोई और न वह ढील ही दिये गये। (२९) (रुकू १)

और हमने इसराईल के पुत्रो को जिल्लत के दण्ड से वचा लिया। (३०) वह सरकश हद्द से वाहर हो गया था। (३१) और इसराईल पुत्रो को हमने समझ कर ससार के मनुष्यो पर पसन्द कर लिया। (३२) और हमने उनको चमत्कार दिये जिनमे प्रत्यक्ष जाच थी। (३३) यह कहते हैं। (३४) यह कुछ नही हमारा पहली ही दफा का मरना

है और हम दुबारा नही उठाये जायंगे। (३५) बस अगर तुम सच्चे हो तो हमारे बाप-दादों को ले आओ। (३६) यह लोग बढ़कर हैं या तुब्बा शाह यमन का खिताब की कौम। और इनसे पहिले के लोग जिनको हमने मार डाला पापी थे। (३७) और हमने आकाश और पृथ्वी को और जो चीजें आकाश और पृथ्वी में है खेल नही बनाया। (३८) हमने उनको ठीक काम पर बनाया मगर बहुधा लोग नही समझते। (३६) निर्णय का दिन यानी प्रलय का दिन इन सबका नियत समय है। (४०) उस दिन कोई मित्र किसी मित्र के काम न आयेगा और न उन्हें सहयाता पहुंचेगी। (४१) मगर जिस पर ईश्वर कृपा करे, वह बड़ा दयालु है। (४२) (रुकू २)

सेहुंड़ थूहड़ का पेड़ (४३) पापियों का खाना होगा। (४४) जैसे पिघला ताँबा खोलता है पेटों में खोलेगा। (४५) जैसे खोलता पानी। (४६) हम देवदूतों को आज्ञा देंगे कि इसको पकडो और घसीटते हुए नरक के वीचोवीच ले जाओ। (४६) फिर दण्ड दो और इसके सिर पर खोलता हुआ पानी डालो। (४८) मजा चख तू बड़ा इज्जत वाला सरदार है। (४६) यही है जिसकी निस्बत तुम सन्देह करते थे। (५०) संयमी चैन की जगह होगे। (५१) बाग और चश्मो में। (५२) रेशमी महीन और मोटी पोशाकें पहने हुए आमने-सामने बैठे होगे। (५३) ऐसा ही होगा और बड़ी-बड़ी आँखों वाली हूरों से हम उनका ब्याह कर देंगे। (५४) वहाँ मेवे खातिर जमा से मंगवा लेंगे। (५५) पहली मौत के सिवाय वहाँ उनको मौत चखनी न पड़ेगी और ईश्वर ने उन्हें नरक के दण्ड से बचाया। (५६) ऐ पैगम्बर तेरे पालनकर्ता की कृपा से यही बड़ी सफलता है। (५७) हमने इस क़ुरान को तेरी बोली में इस मतलब से सहल कर दिया है, शायद वे याद रक्खें। (५८) तो राह देख वे भी राह देखते हैं। (५६) (रुकू ३)

सूरे जासियह

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ४५ आयतें और ५ रुकू ह

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। हा-मीम।(१) यह जबरदस्त चमत्कार वाले अल्लाह की उतारी हुई किताब। (२) निस्सन्देह ईमान वालो के लिए आकाश और पृथ्वी मे बहुत निशानियाँ हैं। (३) और तुम्हारे पैदा करने मे, और जानवरो मे जिनको पृथ्वी पर बिखेरता है, उन लोगो को जो विश्वास रखते हैं निशानियाँ हैं। (४) और रात-दिन के आने-जाने मे और रोजी जिसे ईश्वर ने आकाश से उतारा। फिर उनके द्वारा पृथ्वी को उसके मरे पीछे जीवित कर देता है। और हवाओ की तब्दीलियो मे निशानियाँ हैं। समझने वालो के लिए निशानियाँ हैं। (५) यह ईश्वर की आयतें हैं जिन्हें हम तुमको ठीक पढकर सुनाते हैं। फिर अल्लाह और उसकी आयतो के बाद और कौन-सी बात होगी जिसे सुनकर ईमान लायेगे। (६) हरएक झूठे पापी के लिए अफसोस है। (७) ईश्वर की आयतें उसके सामने पढी जाती हैं, उनको सुनता है। फिर हमारे घमण्ड के अडा रहता है गोया उसने इन आयतो को सुना ही नही। तो ऐसो को दुखदाई दण्ड की शुभ सूचना सुना दो। (८) और जब हमारी आयतो की कुछ भी खबर पाता है तो उनकी हसी उड़ाता है। ऐसे लोगो के लिए जिल्लत का दण्ड है। (९) [आगे इनके नरक है और जो कुछ कर्म कर गये और जिनको इन्होंने ईश्वर के सिवाय काम बनाने वाला बना रक्खा है इनके कुछ काम न आयगा और उनका बडा दण्ड होगा। (१०) यह आदेश है और जो लोग अपने पालनकर्ता की आयतों के इन्कार करने वाले हुए उनको बड़ी दुखदाई दण्ड की मार है। (११) (रुकू १)

अल्लाह वह है जिसने नदी को तुम्हारे वश मे कर दिया है ताकि ईश्वर की आज्ञा से उसमे जहाज चलें और तुम लोग उसकी कृपा से रोजी ढूढो और शायद तुम धन्यवाद करो। (१२) और जो कुछ

आकाश में है और पृथ्वी में है उसी ने अपनी कृपा से इन सबको तुम्हारे काम में लगा रक्खा है। इनमें ईश्वर की कुदरत उन लोगों के लिए जो फिक्र को काम मे लाते हैं बहुतेरी निशानियाँ हैं। (१३) ऐ पैगम्बर मुसलमानों से कहो कि लोग ईश्वर के दिनो की आशा नही रखते उन्हें क्षमा करें ताकि अल्लाह मनुष्यों को इनसे किये का बदला दे*। (१४) जिसने नेक काम किये अपने लिये और जिसने बुराई की उस पर है, फिर तुम अपने पालनकर्ता की तरफ लौटोगे (१५) हमने इसराईला के पुत्रों को किताब और हुकूमत और पैगम्बरी दी और अच्छी-अच्छी चीज़ें खाने को दीं और संसार के लोगो पर उनको बड-प्पन दिया। (१६) और दीन की खुली-खुली बातें इन्हें बता दी। फिर ज्ञान प्राप्त होने के बाद आपस की जिद से जिन बातों में यह लोग भेद डाल रहे हैं। प्रलय के दिन तुम्हारा पालनकर्ता उनमे निर्णय कर देगा। (१७) फिर हमने तुझको उसे काम के एक रास्ते पर रखा सो तू उसी पर चल और नादानों की इच्छाओं पर मत चल। (१८) वह अल्लाह के सामने तेरे कुछ काम न आवेगा और अन्यायी एक दूसरे के मित्र हैं और संयमियों का अल्लाह साथी हैं। (१९) यह लोगों के लिए समझ की और राह की बातें हैं और जो लोग विश्वास करते है उनके लिए निर्देश और कृपा है। (२०) वह जो बदी कमाते हैं क्या यह समझते हैं कि उन्हें मरने और जीने मे जीने मे ईमानदारो और भले काम करने वालो के बराबर कर कर देंगे। यह बुरे दावे करते हैं। (२१) (रुकू २)

और अल्लाह ने आकाश और पृथ्वी को ठीक पैदा किया और मतलब यह है कि हर मनुष्य को उसके किये का बदला दिया जायगा

---

* कहते हैं कि मक्के के एक काफिर ने हजरत उमर को बुरा कहा था। उन्होंने उससे बदला लेना चाहा। इस पर यह आयत उतरी कि सजा देना अल्लाह पर छोड़ा जाय।

और लोगों पर अत्याचार नही किया जायगा। (२२) ऐ पैगम्बर भजा देखो तो जिसने अपने इच्छाओ को अपना पूजित ठहराया और ज्ञान होते हुए भी अल्लाह ने उसे गुमराह कर दिया और उसके कानो पर और उनके दिल पर मुहर लगा दी और उसकी आँखो पर पर्दा डाल दिया तो ईश्वर के गुमराह किये पीछे उसको कौन आदेश दे। क्या तुम नही सोचते। (२३) और कहते हैं कि बस हमारा तो यही सांसारिक जीविन है। हम मरते और जीते हैं और हमे काल मारता है और उनको उसकी कुछ खबर नही। निरी अटकलें दौडाते हैं। (२४) और जब इनको हमारी खुली-खुची आयते पढकर सुनाई जाती हैं तो बस यही हुज्जत करते हैं और कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो हमारे बाप दादो को ले आओ। (२५) कहो कि अल्लाह तुमको जिलाता है फिर तुम्हे मारता है। फिर प्रलय के दिन जिसमे कुछ सदेह नही वह तुमको इकट्ठा करेगा, मगर अक्सर लोग नही समझते। (२६) (रुकू ३)

और आकाश और पृथ्वी का राज्य अल्लाह ही का है और जिस दिन वह घड़ी प्रलय होगी उस दिन झूठे खराब होगे। (२७) और तू देखेगा कि हर गिरोह घुटने का बल बैठा होगा। हर गिरोह अपने कर्म लेखा के पास बुलाया जायगा जैसे तुम काम करते थे आज उनका बदला पाओ। (२८) यह हमारा दफ्तर है तुम्हारे काम ठीक बतलाता है जो कुछ तुम करते थे हम उनको लिखवाते जाते थे। (२६) सो जो मनुष्य ईमान लाये और नेक काम किये उनको उनका पालनकर्ता अपनी कृपा मे ले लेगा। यही प्रत्यक्ष कामयाबी है। (३०) और जो लोग इन्कार करते रहे क्या तुमको हमारी आयतें पढ-पढकर नही सुनाई जाती थी मगर तुमने घमण्ड किया और तुम लोग पापी हो रहे थे। (३१) और जब कहा जाता था कि ईश्वर का वायदा सच्चा है और प्रलय मे कुछ भी सदेह नही तो कहते थे कि हम नही जानते कि प्रलय क्या चीज है। हाँ हमको एक विचार सा होता है मगर हमको विश्वास नही। (३२) और जैसे जैसे कर्म यह मनुष्य करते रहे उनकी

खराबियाँ उन पर जाहिर हो जायेगी और जिस दण्ड की हंसी उड़ाते रहे हैं वह उन्हें घेर लेगी। (३३) और कहा जायगा कि जिस तरह तुमने इस दिन के आने को भुलाये रक्खा था, आज हम भी भुला जायँगे और तुम्हारा ठिकाना नरक है और कोई सहायक नही (३४) यह उसका दण्ड है कि तुमने दण्ड की आयतो की हसी उडाई और साँसारिक जीवन ने तुमको धोखे में डाला। आज न तो यह लोग नरक से निकाले जायंगे, और न इनको मौका दिया जायगा कि राजी कर लें (३५) बस अल्लाह की तारीफ है जो आकाश का और पृथ्वी का मालिक और संसार का मालिक है। (३६) और आकाश और पृथ्वी में उसी की बड़ाई है और वही बड़ा चमत्कार वाला है। (३७) (रुकू ४)

छब्बीसवाँ पारा (हामीम)

सूरे अहकाफ

मक्के में अवतरित इसमें ३५ आयतें और ४ रुकू है

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। हा मीम। (१) बड़ा चमत्कार वाले अल्लाह ने किताब उतारी है। (२) हमने आकाश और पृथ्वी को और जो आकाश और पृथ्वी के बीच मे है उनको किसी इरादे से और एक समय खास के लिए पैदा किया है और काफिरो को जिस प्रलय से डराया जाता है उसीकी परवाह नही करते। (३) ऐ पैगम्बर! इन मनुष्यों से कहो कि भला देखो तो ईश्वर के सिवाय जिन पूजितों को तुम पुकारते हो मुझको दिखाओ कि जिन्होंने जमीन में पैदा किया या आकाश में उनका साझा है? अगर तुम सच्चे हो तो इसपे

पहले की कोई किताब या ज्ञान मेरे सामने पेश करो। (४) और उससे बढकर गुमराह कौन है जो ईश्वर के सिवाय ऐसे पूजितो को पुकारे जो प्रलय के दिन तक उसको उत्तर न दे सकें। और उनको उनकी दुआ की खबर नही। (५) और जब प्रलय के दिन मनुष्य इकट्ठे किये जायगे तो यह पूजित उल्टे उनके बैरी हो जायगे और उनकी पूजा से इन्कार करेंगे। (६) और जब हमारी खुली-खुली आयतें इनको पढकर सुनाई जाती हैं, जो मनुष्य इनकार करने वाले है सच्चे के पीछे उसे कहते हैं कि यह तो प्रत्यक्ष जादू है। (७) क्या यह कहते हैं कि इसको इसने अपने दिल से बना लिया है ? तू कह कि अगर मैंने इसको अपने दिल से बनाया होगा तो तुम ईश्वर के मुकाबिले मे मेरा कुछ नही कर सकते। जैसी-जैसी बातें तुम मनुष्य बनाते हो वही उनको खूब जानता है। मेरे और तुम्हारे बीच काफी गवाह है और वही क्षमा करने वाला कृपालु है। (८) ऐ पैगम्बर ! इनसे कहो कि मैं पैगम्बर मे कोई नया नही हूं और मैं नही जानता कि मेरे साथ क्या होगा और तुम्हारे साथ क्या होगा। मेरी तरफ जो वही उतरती है, मैं उसी पर चलता हू जो मुझको आज्ञा आती है, और मेरा काम खोलकर डर सुनाना है। (९) ऐ पैगम्बर ! इनसे कहो कि देखो अगर यह कुरान ईश्वर की तरफ से हो और तुम इससे इनकार कर बैठे, और इसराईल के बेटो मे से एक गवाह ने इसी तरह की एक किताब के उतरने की गवाही दी और वह ईमान ले आया और तुम अकडे ही रहे। निस्सँदेह अल्लाह अन्यायियो को आदेश नही दिया करता। (१०) (रुकू १)

और काफिर मुसलमानो की बाबत कहते हैं अगर दीन इसलाम बेहतर होता तो यह सब आदमी हमसे पहले उसकी तरफ न दौड़ पडते और जब कुरान के जरिये से इनको आदेश न हुई तो अब कहेंगे कि यह पुराना झूठ है। (११) और इस कुरान से पहले मूसा की किताब राह बताने वाली और क्या है और यह किताब अरबी भाषा भाषा मे उसको सच्चा करती है ताकि अन्यायी डराये जावें और नेकी

वालों को खुशखबरी हो। (१२) निस्संदेह जिन मनुष्यों ने कहा कि हमारा पालनकर्ता अल्लाह है फिर जमे रहे तो न तो उन पर डर होगा और न वह उदास होंगे। (१३) यहीः स्वर्गवासी हैं कि उसमे हमेशा रहेंगे, यह उनके कर्मों का फल है। (१४) और हमने आदमी को माता पिता के साथ भलाई करने की ताकीद की है कि कष्ट से उसकी माता ने उसको पेट में रखा और कष्ट से उस को जना, और उसका पेट में रहना और उसके दूधका छूटना कम से कम कही ३० महीने में जाकर तमाम होता है। यहाँ तक कि जब आदमी अपनी पूरी ताकत को पहुचता है यानी ४० वर्ष की उम्र हुई तो कहने लगा कि ऐ मेरे पालन-कर्ता! मुझको शक्ति दे कि तूने जो मुझ पर और मेरे माँ-बाप पर भलाई की हैं उनका धन्यवाद दे। और मैं ऐसे भले काम करूँ जिनसे तू राजी हो और मेरी औलाद मे नेकबख्ती पैदा कर। मैंने तेरी तरफ ध्यान दिया और मैं हुक्म उठाने वालो मे हूं। (१५) यही मनुष्य स्वर्ग वाले हैं। हम इनके भले कामों को कबूल करते और इनके अपराधो को बरा जाते हैं। ऐसा ही सच्चा प्रण इनसे किया गया था। (१६) और जिसने अपने माँ-बाप से कहा कि मैं तुमसे अप्रसन्न हूं क्या तुम मुझे प्रण देते हो कि मैं कब्र से जीवित निकाला जाऊगा हालाँकि मुझसे पहले कितने गिरोह गुजर गये और किसी को मरकर जीते न देखा और वे दोनो माता-पिता ईश्वर से दुहाई देते है कि तेरा नाश जा! ईमान ला निस्संदेह अल्लाह का प्रण सच्चा है। फिर कहता है कि यह तो अगलों के निरे ढकोसले हैं। (१७) यही वह मनुष्य हैं जिन पर जिन्नों की और आदमियों की मिली हुई सगतो जो इनसे पहले हो गुजरी हैं उनमे यह भी दण्ड के प्रण के हकदार ठहरे। निस्सदेह यह मनुष्य टोटे मे हैं। (१८) हर किसी के लिए कर्म के अनुसार दर्जे हैं और उनके कामों का उन्हें पूरा फल मिलेगा और उन पर अत्यचार न होगा। (१९) और जब काफिर नरक के सामने लाये जायगे तो इनने कहा जायगा तुमने अपनी सांसारिक जीवन में अच्छी चीजें बर्बाद की और उनसे लाभ उठा चुके। पृथ्वी में तुम्हारे अकड़ने और अवज्ञा-

कारी करने के कारण आज तुम्हें जिल्लत की दण्ड बदले में मिलेगी। (२०) (रुकू २)

और तू आद के भाई को याद कर। जब इन्होने अपनी कौम को अहकाफ मे जो देश यमन मे एक मैदान है डराया और उन हूद के आगे और पीछे बहुत डराने वाले पैगम्बर गुजर चुके और हूद ने अपनी कौम से कहा कि ईश्वर के सिवाय किसी की पूजा न करो, मुझको तुम्हारी निस्बत बडे दिन के दण्ड का डर है। (२१) वह कहने लगे कि क्या तू हमको हमारे पूजितो से फेरने आया है? अगर तू सच्चा है तो जिस दण्ड का वादा हमसे करता है उसको हम पर ले आ। (२२) इसकी खबर तो अल्लाह ही को है और मुझको तो जो पैगाम देकर भेजा गया है वह तुमको पहुचाये देता हूं, मगर मैं तुमको देखता हू कि तुम लोग बेवकूफी करते हो। (२३) फिर उन मनुष्योने जब उस दण्ड को देखा कि एक बादल है जो उनके मैदानो की तरफ को उमडता चला आ रहा है, तो कहने लगे यह तो एक बादल है और हम पर बरसेगा बल्कि यह वही है जिसके लिए तुम जल्दी मचा रहे थे। आंधी है जिस मे दुखदाई दण्ड है। (२४) यह अपने पालनकर्ता की आज्ञा से हर चीज को नष्ट भ्रष्ट कर देगी चुनाँचे यह लोग ऐसे तबाह हो गये कि इनके घरो के सिवाय और कोई चीज नजर नही आती थी। पापियो को हम इसी तरह दण्ड दिया करते हैं। (२५) और हमने उनको वह ताकत दी थी जो तुमने मक्का वालो को नही दी और हमने

---

* आद एक उन्नत जाती थी जो कुमार्ग पर चलने लगी थी। उसके नेता मक्के मेह (वर्षा) मांगने आये। उनको तीन प्रकार के बादलों में चुनना था। उन्होने काले बादल को स्वीकार किया। वह उनके साथ चला। वह समझते थे कि इस बादल से पानी बरसेगा और उनको बड़ा लाभ होगा परन्तु वास्तव मे वह ईश्वर का कोप था। उससे वह बिल्कुल नष्ट हो गये।

उनको कान और आँखें और दिल दिये थे, लेकिन उनके कान और आँखें और दिल कुछ काम न आये थे, इसलिए कि अल्लाह की आयतों से इनकारी थे और जिस की हंसी उड़ाते थे उसी ने उन्हें घेर लिया। (२६) (रुकू ३)

और हमने तुम्हारे पास की कितनी ही बस्तियाँ नष्ट भ्रष्ट कर डाली और हमने फेर-फेरकर आयतें सुनाईं शायद वे ध्यान दें। (२७) तो ईश्वर के सिवाय जिन चीजों को उन्होने नजदीकी के लिए अपना पूजित बना रखा उन्होने उनकी क्यों न सहायता की बल्कि इनकी नजर से छिप गये और यह झूठ था जो बाँधते थे। (२८) और जब हम चन्द जिन्नो को तुम्हारी तरफ ले आये कि वह कुरान सुनें। फिर जब वह हाजिर हुए तो बोले कि चुप रहो। फिर जब कुरान का पढ़ना तमाम हुआ तो वह अपने लोगों की तरफ लौट गये कि उनको डरायें। (२९) कहने लगे ऐ हमारी कौम ! हम एक किताब सुन आये हैं जो मूसा के बाद उतारी है। अगली किताबों को सही बताती है और सीधी राह दिखाती है। (३०) ऐ हमारी कौम ! यह पैगम्बर मुहम्मद जो ईश्वर की तरफ से मनादी करता है इस की बात मानो और ईश्वर पर ईमान लाओ ताकि ईश्वर तुम्हारे पाप क्षमा करे और दुखदाई दण्ड से तुमको बचावे। (३१) और जो कोई अल्लाह के पुकारने वाले को न मानेगा वह जमीन में थका न सकेगा और ईश्वर के सिवाय कोई सहायक न होगा। यह लोग प्रत्यक्ष गुमराही में हैं। (३२) क्या उन्होंने न देखा कि जिस ईश्वर ने आकाश को और पृथ्वी को पैदा किया और उनके पैदा करने में उसको थकान न हुई। वह मुर्दों के जिला उठाने में शक्तिमान है। वह तो हर चीज पर शक्ति रखता है। (३३) और जिस दिन काफिर नरक के सामने लाये जायेंगे उनसे पूछा जायगा कि क्या यह ठीक नहीं? वह कहेंगे हमको अपने पालनकर्ता की सौगन्ध सच है, तो ईश्वर आज्ञा देगा कि अपने इनकारी के बदले में दण्ड चखो। (३४) तो जिस तरह हिम्मती पैगम्बरों ने

सन्तोष किया तुमभी संतोष करो और इनके लिए जल्दी न मचा। जिस दिन प्रण की बात प्रलय को देखेंगे ऐसे होंगे गोया दिन की एक घड़ी ससार मे रहे थे ईश्वर के आदेश का पहुचाना है। अब वही जो अवज्ञाकार हैं, मारे जायेंगे। (३५) (रुकू ४)

सूरे मुहम्मद

मदीने में अवतरित हुई, इसमें ३८ आयतें, ४ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है जिन लोगो ने न माना और अल्लाह के रास्ते से लोगो को रोका, ईश्वर ने उनके काम गये गुजरे कर दिये। (१) और जो लोग ईमान लाये और उन्होने भले काम किये और कुरान जो मुहम्मद पर उतारा है, उसे मान लिया और बस सच है, उनके पालनकर्ता की तरफ से ईश्वर ने अपते पाप उन पर से उतार दिये और उनकी हालत ठीक कर दी। (२) यह इस लिए है कि काफिर झूठ पर चले और जो ईमान लाये वह अपने पालनकर्ता के ठीक रास्ते पर चले। यो अल्लाह लोगो के लिए उनके हाल वर्णन करता है (३) तो जब लड़ाई मे काफिरो से तुम्हारी मुठ भेड हो तो गर्दनें काटो, यहाँ तक कि जब खूब अच्छी तरह उनका जोर तोड लो तो मुस्कें कस लो। फिर पीछे या तो भलाई रखकर छोड दो या बदला लकर, यहाँ तक कि शत्रुओ लडाई के हथियार रख दें। ऐसी ही आज्ञा है और ईश्वर चाहता तो उनसे बदला ले लेता लेकिन यह इसलिए हुआ कि तुम मे से एक को एक से आजमाये और जो लोग ईश्वर की राह मे मारे गये उनके कामो को ईश्वर अकारथ नही होने देगा। (४) उन्हे राह देगा और उनका हाल ठीक करेगा।

उनको कान और आँखें और दिल दिये थे, लेकिन उनके कान और आँखें और दिल कुछ काम न आये थे, इसलिए कि अल्लाह की आयतों से इनकारी थे और जिस की हसी उड़ाते थे उसी ने उन्हें घेर लिया। (२६) (रुकू ३)

और हमने तुम्हारे पास की कितनी ही बस्तियाँ नष्ट भ्रष्ट कर डाली और हमने फेर-फेरकर आयतें सुनाईं शायद वे ध्यान दें। (२७) तो ईश्वर के सिवाय जिन चीजों को उन्होने नजदीकी के लिए अपना पूजित बना रखा उन्होंने उनकी क्यों न सहायता की बल्कि इनकी नजर से छिप गये और यह झूठ था जो बाँधते थे। (२८) और जब हम चन्द जिन्नो को तुम्हारी तरफ ले आये कि वह कुरान सुनें। फिर जब वह हाज़िर हुए तो बोले कि चुप रहो। फिर जब कुरान का पढ़ना तमाम हुआ तो वह अपने लोगों की तरफ लौट गये कि उनको डरायें। (२९) कहने लगे ऐ हमारी कौम ! हम एक किताब सुन आये हैं जो मूसा के बाद उतारी है। अगली किताबों को सही बताती है और सीधी राह दिखाती है। (३०) ऐ हमारी कौम ! यह पैगम्बर मुहम्मद जो ईश्वर की तरफ से मनादी करता है इस की बात मानो और ईश्वर पर ईमान लाओ ताकि ईश्वर तुम्हारे पाप क्षमा करे और दुखदाई दण्ड से तुमको बचावे। (३१) और जो कोई अल्लाह के पुकारने वाले को न मानेगा वह जमीन में थका न सकेगा और ईश्वर के सिवाय कोई सहायक न होगा। यह लोग प्रत्यक्ष गुमराही में हैं। (३२) क्या उन्होंने न देखा कि जिस ईश्वर ने आकाश को और पृथ्वी को पैदा किया और उनके पैदा करने में उसको थकान न हुई। वह मुर्दों के जिला उठाने मे शक्तिमान है। वह तो हर चीज पर शक्ति रखता है। (३३) और जिस दिन काफिर नरक के सामने लाये जायँगे उनसे पूछा जायगा कि क्या यह ठीक नही? वह कहेंगे हमको अपने पालनकर्ता की सौगन्ध सच है, तो ईश्वर आज्ञा देगा कि अपने इनकारी के बदले मे दण्ड चखो। (३४) तो जिस तरह हिम्मती पैगम्बरो ने

सन्तोष किया तुमभी सतोष करो और इनके लिए जल्दी न मचा। जिस दिन प्रण की बात प्रलय को देखेंगे ऐसे होंगे गोया दिन की एक घड़ी ससार मे रहे थे ईश्वर के आदेश का पहुचाना है। अब वही जो अवज्ञाकार हैं, मारे जायेंगे। (३५) (रुकू ४)

सूरे मुहम्मद

मदीने में अवतरित हुई, इसमें ३८ आयतें, ४ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है जिन लोगो ने न माना और अल्लाह के रास्ते से लोगो को रोका, ईश्वर ने उनके काम गये गुजरे कर दिये। (१) और जो लोग ईमान लाये और उन्होने भले काम किये और कुरान जो मुहम्मद पर उतारा है, उसे मान लिया और बस सच है, उनके पालनकर्ता की तरफ से ईश्वर ने अपते पाप उन पर से उतार दिये और उनकी हालत ठीक कर दी। (२) यह इस लिए है कि काफिर झूठ पर चले और जो ईमान लाये वह अपने पालनकर्ता के ठीक रास्ते पर चले। यो अल्लाह लोगो के लिए उनके हाल वर्णन करता है (३) तो जब लड़ाई मे काफिरो से तुम्हारी मुठ भेड हो तो गर्दनें काटो, यहाँ तक कि जब खूब अच्छी तरह उनका जोर तोड लो तो मुश्कें कस लो। फिर पीछे या तो भलाई रखकर छोड दो या वदला लकर, यहाँ तक कि शत्रुओ लड़ाई के हथियार रख दें। ऐसी ही आज्ञा है और ईश्वर चाहता तो उनसे वदला ले लेता लेकिन यह इसलिए हुआ कि तुम मे से एक को एक से आजमाये और जो लोग ईश्वर की राह मे मारे गये उनके कामो को ईश्वर अकारथ नही होने देगा। (४) उन्हे राह देगा और उनका हाल ठीक करेगा।

(५) और उनको स्वर्ग मे दाखिल करेगा जिसका हाल उसने बता रखा है। (६) ऐ ईमानवालों ! अगर तुम अल्लाह की सहायता करोगे तो वह तुम्हारी सहायता करेगा। और तुम्हारे पाँव जमाये रखेगा। (७) और जो इनकारी हुए उनके पाँव उखड़ जायगे और उनका सारा किया धरा ईश्वर अकारथ कर देगा। (८) यह इसलिए कि ईश्वर ने जो उतारा उसको उन्होंने पसन्द किया, फिर ईश्वर ने उनके कर्म वृथा कर दिये। (९) क्या यह लोग मुल्क मे चले फिरे नही कि अगलो का परिणाम देखते कि अल्लाह ने उनको नष्ट भ्रष्ट कर दिया और काफिरों के लिए ऐसा ही होता रहता है। (१०) क्यों कि अल्लाह ईमान वालों का सहायक है और काफिरो का कोई सहायक नही। (११) (रुकू १)

जो लोग ईमान लाये और उन्होने नेक काम किये अल्लाह स्वर्ग के बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। और काफिर संसार में लाभ उठाते और खाते हैं जैसे चारपाये खाते हैं और इनका ठिकाना नरक है। (१२) और ऐ पैगम्बर ! तुम्हारी बस्ती मक्का जिसने तुमको निकल छोड़ा, कितनी बस्तियाँ इससे भी बलबूतो में बढी चढ़ी थी, हमने उनको हलाक कर मारा और कोई भी उनकी सहायता को न खड़ा हुआ। (१३) तो क्या जो लोग अपने पालनकर्ता के खुले रास्ते पर हैं वह उनकी तरह हैं जिनके बुरे कर्म उनको भले कर दिखाये गये हैं और वह अपनी चाहो पर चलते है। (१४) जिस स्वर्ग का प्रण संयमियो से किया जाता है उसकी कैफियत यह है। कि उसमें ऐसे पानी की नहरें है जिसमे बू नही और दूध की नहरें हैं जिनका स्वाद नही बदला और शराब की नहरे हैं जो पीने वालो को बहुत ही मज़ेदार मालूम होंगी। और साफ शहद की नहरें हैं और उनके लिए वहाँ हर तरह के मेवे होंगे और उनके पालनकर्ता की तरफ से क्षमा क्या ऐसे स्वर्ग के रहनेवाले उन जैसे हो सकते हैं जो हमेशा आग मे होंगे और उनको खौलता पानी पिलाया जायगा और वह उनकी आंतो के टुकडे-टुकडे कर डालेगा। (१५) और ऐ पैगम्बर ! बाज इनमे से

ऐसे हैं जो तुम्हारी ओर कान लगाते हैं मगर जब तुम्हारे पास से बाहर जाते हैं तो जिन मनुष्यो को ज्ञान मिला* है उनसे पूछते हैं कि इसने अभी क्या कहा था। यही मनुष्य हैं जिनके दिलो पर अल्लाह ने मुहर कर दी, और अपनी इच्छाओं पर चलते हैं। (१६) और जो मनुष्य सीधी राह पर आये हैं उससे उनकी सूझ बढ़ी है और उससे उनको बचकर चलना मिला है। (१७) तो क्या यह लोग प्रलय ही की राह देखते है कि एकदम से इन पर आ पडे उसकी निशानिया तो आ ही चुकी हैं। फिर जब प्रलय इनके सामने आ जायगी तो उस समय इनका समझना इनको क्या ठीक होगा। (१८) तो जान लो कि अल्लाह के सिवाय कोई पूजित नही और अपने पापो की क्षमा माँग और ईमान वाले मर्दो और औरतो के लिए भी माँगते रहो। और तुम लोगो का चलना, फिरना, ठहरना अल्लाह को मालूम है। (१९) (रुकू २)

और ईमानदार कहते थे कि जिहाद की निस्बत कोई सूरत क्यों न उतारी। फिर जब एक सूरत साफ मानी उतरी और उसमे लड़ाई का जिक्र आया तो जिनके दिलो मे रोग है तूने उनको देखा कि वह तेरी तरफ ऐसे ताकते रह गये जैसे वह ताकता है जिसे मौत की बेहोशी हो तो खराबी है उनकी आज्ञा मानना और भली बात कहना अच्छा है। (२०) फिर जब काम की ताकीद हो और वह लोग ईश्वर से सच्चे रहें तो उनका भला है। (२१) और तुमसे कुछ दूर नहीं कि अगर शासक बन बैठे तो देश मे झगडा करने लगोगे और अपने रिश्ते-

---

* यह हाल उन मुताफिको का है जो मुहम्मद साहब की बातें सुनकर उनकी हसी उड़ाते थे और मुसलमानों से कहते कि जो बात हमसे उन्होंने कही है वह क्या है। वह तो हमारी समझ मे ही नहीं आई।

नातो को तोड़ने लगोगे। (२२) यही मनुष्य हैं जिन पर ईश्वर ने लानत की है और इनको बहरा और इनकी आंखो को अन्धा कर दिया (२३) क्या लोग कुरान मे ध्यान नही करते या दिलों पर ताले लगे हैं। (२४) जिन लोगो को सीधा रास्ता साफ तौर पर मालूम हो और फिर भी वह अपने उल्टे पांव फिर गये तो राक्षस ने उनके लिए बात बनाई है और उन्हें समय दिया। (२५) और यह इसलिए कि जो मनुष्य कुरान को जो ईश्वर ने उतारा है नापसंद करते हैं कि कुछ बातो मे हम तुम्हारी ही सलाह पर चलेंगे* और अल्लाह उनकी छिपी बातो को जानता है। (२६) फिर कैसी गति होगी जब देवदूत उनकी जानें निकालेंगे और उनकी पीठो और मुँहों पर मारते जाते होगे। (२७) यह इसलिए कि जो चीज ईश्वर को बुरी लगती है, यह उसी पर चले और उसकी खुशी न चाही, तो ईश्वर ने उनके कर्म मेट दिये। (२८) (रुकू ३)

क्या वह लोग जिनके दिलो में रोग है ईश्वर उनकी दिली अदावतों को कभी जाहिर न करेगा। (२९) और ऐ पैगम्बर! हम चाहते तो तुझे उन लोगो को दिखा देते कि तू उनको उनकी सूरत से पहचान लेता और अल्लाह तुम्हारे कर्मों को जानता है। (३०) और तुमको हम आजमायेंगे ताकि तुम में से जो जिहाद करने वाले और बरदाश्त करने वाले हैं उनको हम मालूम कर लें और तुम्हारी खबरो को आजमावेंगे। (३१) जिन मनुष्यो ने साफ राह जाहिर हुए पीछे इन्कार किया और अल्लाह की राह से रोका और पैगम्बर की दुश्मनी की, यह मनुष्य अल्लाह का कुछ न बिगाड़ेंगे बल्कि वह उनके किये को अकारथ कर देगा। (३२) ऐ मुसलमानों! अल्लाह की आज्ञा पर

---

*यहूदियो ने मक्के के काफिरों से वादा किया था कि यदि मुसलमानों और उनमे युद्ध हुआ तो वह मक्के वालों का साथ देंगे। उनकी यह बात खुदा ने मुहम्मद साहब पर जाहिर कर दी।

चलो और अपने कर्मों को वृथा न करो। (३३) जो काफिर हुए और मनुष्यो को ईश्वर के मार्ग से रोका फिर कुफ्र ही की हालत मे मर गये, ईश्वर उनको कदापि क्षमा न करेगा। (३४) सो तुम दुर्बल न बनो कि सुलह की तरफ पुकारने लगो और तुम्हारी ही जीत होगी और अल्लाह तुम्हारे साथ है और तुम्हारे कर्मों को न मेटेगा (३५) सांसारिक जीवन खेल-तमाशा है और अगर ईश्वर पर ईमान लाओ और सयम करते रहो तो तुम क तुम्हारे फल देगा और तुम्हारे माल तुमसे न माँगेगा। (३६) अगर वह तुमसे तुम्हारे माल माँगे और तुम को तग करे तो तुम कजूसी करोगे और इससे तुम्हारी दिली अदावतें जाहिर हो जावेंगी। (३७) ऐ लोगो! जब अल्लाह की राह मे खर्च करने को बुलाए जाते हो तो तुममे से कोई-कोई कंजूसी करता है, अपने ही लिए करता है अल्लाह तो दाता है और तुम मुहताज हो और अगर तुम मुह मोडोगे तो ईश्वर तुम्हारे सिवाय दूसरे लोगो को ला बिठायेगा और वह तुम जैसे न होगे। (३८) (रुकू ४)

सूरे फतह

मक्के मे अवतरित हुई, इसमें २६ आयतें और ४ रुकू हैं

अल्लाह ने नाम से जो कृपालु व दयावान है*। हमने तुझे खुली

* विजय का इस स्थान पर क्या अर्थ है इसमे विद्वानों के भिन्न भिन्न मत है इसका अर्थ है, हुदैबिया की सन्धि, कुछ कहते हैं इसका अर्थ है, मक्के की विजय और कुछ कहते हैं इस विजय से उस वचन की ओर सकेत किया गया है जो "बैयतुर्रिजवान,, के नाम से प्रसिद्ध है। उसका वर्णन आगे आता है।

विजय दी। (१) ताकि ईश्वर तेरे अगले-पिछले पाप क्षमा करे और तुझ पर अपनी भलाइयाँ पूरी करे और तुमको सीधी राह दिखावे। (२) और तुझे भारी सहायता दी। (३) उसने मुसलमानों के दिलों में संतुष्टता डाली ताकि उनके ईमान के साथ ईमान जियादह हो और आकाश और पृथ्वी के लश्कर अल्लाह के हैं और जाननेवाला चमत्कार वाला है। (४) ताकि ईश्वर ईमान वाले पुरुषों और ईमान वाली स्त्रियों को स्वर्ग के बागों में ले जा दाखिल करे। जिनके नीचे नहरें वह रही होंगी। वह हमेशा उनमें रहेंगे और वह उन पर से उनके पापों को उतार देगा और ईश्वर के पास यह बड़ी कामयाबी है। (५) और ताकि मुनाफिक पुरुषों और मुनाफिक स्त्रियों और मुशरिक पुरुषों और मुशरिक स्त्रियों को दण्ड दे, जो अल्लाह के बारे में बुरे विचार रखते हैं। अब यहीर मुसीबत के चक्कर में आ गये और अल्लाह का गुस्सा उन पर हुआ और उसने इनको फटकार दिया और उनके लिए नरक तैयार किया और वह बुरी जगह है। (६) और आकाश और पृथ्वी लश्कर अल्लाह के हैं और अल्लाह बली और चमत्कार वाला है (७) ऐ पैगम्बर! हमने तुमको हाल बताने वाला और खुशी और डर सुनाने वाला बना के भेजा है। (८) ताकि तुम अल्लाह और उसके पैगम्बर पर ईमान लाओ और ईश्वर की सहायता करो और उसका सम्मान रखो और सुबह-शाम उसकी माला फेरते रहो। (९) ऐ पैगम्बर! जो लोग तुझसे हाथ मिलाते हैं उनके हाथों* पर ईश्वर का हाथ है फिर जिसने कौल तोड़ा उसने अपने ही लिये तोड़ा और जिसने

---

* मुहम्मद साहब ने हजरत उस्मान को मक्के के कुरेश की ओर अपना दूत बनाकर भेजा था। कुछ लोगों को वह समाचार मिला कि उन काफिरों ने मार डाला है। इस पर मुसलमानों से मुहम्मद साहब ने एक वृक्ष नीचे यह दृढ़ वचन लिया कि वे उस्मान के खून का बदला अवश्य लेंगे। इसी को "बैअतुर्रिज़्वान" कहते हैं।

उस कौल को पूरा किया जिसका ईश्वर ने प्रण किया था वह, उसे बड़ा फल देगा। (१०) (रुकू १)

ऐ पैगम्बर ! देहाती लोग जो पीछे रह गये हैं और हुदैबिया के सफ़र मे शरीक नही हुए तुझसे कहेंगे कि हम अपने माल और बाल-बच्चो मे लगे रहे, तू हमारे अपराध ईश्वर से क्षमा करो। यह लोग अपनी जबान से ऐसी बातें कहते हैं जो इनके दिलों मे नहीं। कहा कि अगर ईश्वर तुमको हानि पहुचाना चाहे या लाभ पहुचाना चाहे तो कौन है जो ईश्वर के सामने तुम्हारा कुछ भी कर सके बल्कि जो कुछ भी करते हो ईश्वर उससे जानकार है। (११) बल्कि तुमने ऐसा समझा था कि पैगम्बर और मुसलमान अपने घर वापिस आने के ही नही और यह तुम्हारे दिलो में चुभ गई थी और तुम बुरे विचार करने लगे थे और तुम लोग आप बर्बाद हुए। (१२) और जो अल्लाह और उसके पैगम्बर पर ईमान लाये तो अपने इनकार करने वालो के लिए दहकती आग तैयार कर रखी है। (१३) और आकाश और पृथ्वी की बादशाही अल्लाह ही की है जिसको चाहे क्षमा करे और जिसको चाहे दण्ड दे और अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला कृपालु है। (१४) जब तुम खबर की लूटो के माल लेने को जाने लगोगे तो जो लोग हुदैबिया के सफर से पीछे रह गये थे कहेंगे कि हमको भी अपने साथ चलने दो। इनका मतलब यह है कि ईश्वर के कहे हुए को बदल दे। ऐ पैगम्बर ! इन लोगो से कह दो कि तुम हमारे साथ न चलने पाओगे अल्लाह ने पहले ही से ऐसा कह दिया है। यह सुनकर कहेंगे कि नहीं बल्कि तुम हमसे डाह रखते हो बल्कि यह लोग कम समझते हैं। (१५) ऐ पैगम्बर ! देहाती जो जो हुदैबिया की सफर से पीछे रहे इनसे कह दो कि तुम बड़े लड़ने वालो के लिए बुलाये जाओगे। तुम उनसे लडो या वे मुसलमान हो जावें। तो अगर ईश्वर की आज्ञा मानोगे तो अल्लाह तुमको भला फल देगा और अगर तुमने सिर फेरा जैसे तुम पहले हुदैबिया के सफर मे सिर फेर चुके हो तो तुमको दुखदाई दण्ड

देगा। (१६) अन्धे पर सख्ती नहीं और न लंगड़े पर कठोरता है और न बीमार पर कठोरता है और जो अल्लाह और उनके पैगम्बर की आज्ञा मानेगा वह उनको बागों में दाखिल करेगा, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी और जो फिरेगा वह उसको दुखदाई दण्ड देगा। (१७) (रुकू २)

ऐ पैगम्बर! जब मुसलमान बबूल के पेड़ के नीचे तुझसे हाथ मिलाने लगे अल्लाह उसे खुश हुआ और उसने उनके दिली विश्वास को को जान लिया और उनको तसल्ली दी और उसके बदले में उनको नजदीकी फतह दी। (१८) और बहुत-सी लूटें उनके हाथ लगीं और अल्लाह बली चमत्कार वाला है। (१९) अल्लाह ने तुमसे बहुत सी लूटों के देने का प्रण किया था कि तुम उसे लोगे फिर मह खैबर की लूट तुमको जल्द दी और हुदैबिया की सुलह से वजह से अरब के लोगों पर जुल्म करने से तुमको रोका ताकि यह मुसलमानों के लिए निशानी हो और वह तुमको सीधी राह पर ले चले। (२०) और दूसरा प्रण लूट का है जो तुम्हारे काबू मे नही आया। यह ईश्वर के हाथ है और अल्लाह हर चीज पर शक्तिमान है। (२१) और अगर काफिर तुमसे लड़ते तो जरूर भाग जाते, फिर कोई हिमायती और सहायता न पाते। (२२) अल्लाह की आदत है जो चली आती है और तू अल्लाह की आदतो मे तब्दीली न पावेगी। (२३) और वही ईश्वर है जिसने मक्के में तुमको काफिरों पर फतह दी पीछे उनके हाथों को तुमसे और तुम्हारे हाथों को उनसे रोक दिया और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह देखता है। (२४) यह मक्के वाले वही हैं, जिन्होने इन्कार किया और तुमको सम्मान वाली मसजिद से रोका और कुरबानी को बन्द रखा कि अपनी जगह न पहुचे और अगर कुछ मुसलमान मर्द और कुछ मुसल-मान औरतें न होती जिन्हें तुम नहीं जानते और तुम उनको कुचल डालते तो अनजाने पाप उनकी तरफ से तुम्हे पहुंच जाता, तो ईश्वर जिसे चाहे अपनी कृपा में दाखिल करे। अगर वे मनुष्य एक तरह हो

जाते तो हम काफिरो को दुखदाई दण्ड देते। (२५) जब काफिरो ने अपने दिलो में नादानी की जिद की हठ ठान ली तो अल्लाह ने पैगम्बर और मुसलमानो को तसल्ली दी और उनको सयमी पर जमाये रखा और वह उसके योग्य और अधिकार थे और अल्लाह हर चीज से जानकार है। (२६) (रुकू ३)

अल्लाह ने अपने पैगम्बर को स्वप्न की घटना सच्ची कर दिखाई कि अल्लाह ने चाहा तो तुम अपना सिर मुड़वाओगे और कतराओगे तुमको डर न होगा वह जानता था जो तुम नही जानते थे। फिर इसके अलावा उसने एक करीब की फतह दी। (२७) वही है जिसने अपने पैगम्बर को हिदायत और सच्चा दीन देकर भेजा है ताकि उसे तमाम दीनो पर जीत दे और अल्लाह साक्षी है। (२८) मुहम्मद ईश्वर के भेजे हुए हैं और जो लोग उनके हैं काफिरो के हक मे बडे कठोर हैं, आपस मे कृपालु हैं। तू उन्हें रुकू और शीश नवाते देखेगा। ईश्वर की कृपा और खुशी चाहते हैं। उनकी पहचान यह है कि शीश नवाने के निशान उनके माथो पर हैं। यही गुण उनके तौरात मे और इन्जील में लिखे हैं, जैसे खेती। उसने अपना कल्ला निकला फिर उसे मजबूत किया फिर मोटी हुई, आखिरकार अपनी नाल पर सीधी खडी हो गई और किसानो को खुशी करने लगी ताकि काफिरो को उनसे ईर्षा हो। जो ईमान लाये और भले काम किये उनसे ईश्वर ने क्षमा का और बडे फल का प्रण किया। (२९) (रुकू ४)



सूरे हुजरात

मदीने में अवतरित हुई, इसमें १८ आयतें और २ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु तथा दयावान है। मुसलमानो ! अल्लाह और उसके पैगम्बर से आगे न बढो और अल्लाह से डरो। अल्लाह सुनाता-जानता है। (१) मुसलमानों ! अपनी आवाजो को पैगम्बर की आवाज से ऊंचा न होने दो और न उनके साथ बहुत जोर से बात न करो जैसे तुम आपस में बोला करते हो। ऐसा न हो कि तुम्हारा किया-धरा सब अकारथ हो जावे और तुम्हें खबर भी न हो। (२) जो मनुष्य ईश्वर के पैगम्बर के सामने आवाजें नीची कर लिया करते हैं जिनके दिलों को ईश्वर ने संयमियों के लिए जाँच लिया है। उनके लिए क्षमा और बड़ा फल है। (३) जो मनुष्य तुमको कमरों के बाहर से पुकारते हैं उनमें से बहुत से अज्ञानी हैं। (४) और अगर यह सब्र करते यहाँ तक कि तू उनकी तरफ निकल आता उनके लिए बहुत अच्छा होता है और अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है। (५) मुसलमानों ! अगर कोई पापी तुम्हारे पास कोई खबर लावे तो अच्छी तरह से जांच लिया करो ताकि ऐसा न हो कि तुम नादानी से किसी कौम पर जा पडो फिर अपने किये से हैरान हो। (६) और जाने रहो कि तुम मे ईश्वर का पैगम्बर है। अगर वह बहुत सी बातो मे तुम्हारा कहना माना करे तो तुम्हीं पर मुश्किल जा पडे। मगर ईश्वर ने तुमको ईमान की मुहब्बत दे दी है और उसको तुम्हारे दिलो मे अच्छा कर दिखाया है और कुफ्र और घमण्ड और बेहुक्मी से तुमको नफरत दिला दी है। यही मनुष्य हैं जो नेकचलन हैं। (७) अल्लाह की कृपा और एहसान से और अल्लाह जानकार चमत्कार वाला है। (८) और अगर मुसलमानो के दो फिर्के आपस मे लड पड़ें तो उनमे मिलाप करा दो, फिर अगर उनमे का येक दूसरे पर जियादती करे तो जियादती करने वाले से लड़ो यहाँ तक कि वह ईश्वर की आज्ञा की तरफ

ध्यान दे फिर जब ध्यान दे तो उनमे बरबरी के साथ मिलाप करा दो और न्याय करो। अल्लाह न्याय करने वालो को पसन्द करता है। (९) मुसलमान आपस मे भाई हैं, तुम अपने भाइयो मे मेल-मिलाप रखो और ईश्वर से डरो। शायद तुम पर दया की जावे। (१०) (रुकू १)

मुसलमानो! मर्द मर्दों पर न हसें, आश्चर्य नही कि उनसे भले हैं और न औरतें-औरतो पर, आश्चर्य नही कि वह उनसे भली हो और आपस मे एक दूसरे को ताने न दो और न एक दूसरेका नाम धरो, ईमान लाये पीछे बुरी आदत हो बुरी है और जो न माने तो वह अन्यायी है। (११) मुसलमानो! बहुत अटकलें न बाँधा करो क्योकि कोई-कोई अटकल पाप है, और किसी का भेद न टटोलो और पीठ पीछे कोई किसी को बुरा-भला न कहे। क्या तुममे से अपने मरे हुए भाई का माँस खाना पन्सद करता है? बस इससे नफरत करो और अल्लाह से डरते रहो। अल्लाह तौबा कबूल करने वाला कृपालु है। (१२) लोगो! हमने तुमको एक पुरुष और एक स्त्री से पैदा किया और तुम्हारी जाते और बिरादरियाँ ठहराई, ताकि एक एक दूसरे को पहचान सको। अल्लाह के नजदीक तुम मे वही अधिक बडा है, जो तुममे बडा सयमी है। अल्लाह जानने वाला खबरदार है। (१३) अरब के देहाती कहते हैं कि हम ईमान लाये ऐ पैगम्बर! इनसे कह दो कि तुम ईमान नही लाये; हाँ कहो कि हमने मान लिया और ईमान का तो* अब तक तुम्हारे दिलो मे गुजर भी नही हुआ और अगर आप ईश्वर और उसके पैगम्बर की आज्ञा पर चलोगे तो वह तुम्हारे कामों का बदला कुछ कम न करेगा। अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है। (१४) मुसलमान वह हैं जो अल्लाह और उसके पैगम्बर पर ईमान

---

* यानी तुम इस्लाम की कुछ ही शिक्षा मानते हो। इससे तुम्हारा ईमान लाना नहीं सिद्ध होता।

लाये, सदेह नहीं किया और अल्लाह की राह मे अपनी जानो और मालों से कोशिश की। यही सच्चे हैं। (१५) ऐ पैगम्बर! इन लोगो से कहो कि क्या तुम अल्लाह को अपनी दीनदारी जताते हो? हालांकि जो कुछ आकाश मे है और जो कुछ पृथ्वी मे है अल्लाह जानता है और अल्लाह हर चीज से जानकार है। (१६) ऐ पैगम्बर! यह लोग तुम पर अपने इस्लाम लाने का एहसान रखते हैं। तू कह कि मुझ पर अपने इसलाम का एहसान न रखो बल्कि अल्लाह का एहसान तुम्हारे ऊपर है कि उसने तुमको ईमान की राह दिखाई, बशर्ते कि तुम सच्चे हो। (१७) अल्लाह आकाश और जमीन के भेद को जानता है और तुम मनुष्य जैसे-जैसे काम कर रहे हो, अल्लाह उनको देख रहा है। (१८) (रुकू २)

सूरे क़ाफ़

मक्के में अवतरित हुई इसमें ४४ आयतें और ३ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु तथा दयावान है। काफ—कुरान बुजुर्ग की कसम। (१) बल्कि इन काफिरो का अचम्भा हुआ कि इन्ही मे का एक डर सुनाने वाला इनके पास पैगम्बर बनकर आया। तो काफिर कहने लगे कि यह तो अदभुत बात है। (२) क्या जब हम मर जावेंगे और मिट्टी हो जायगे तो फिर उठा खडे किये जायगे। यह फिर आना बहुत दूर है मुर्दों के जिन टुकडो को मिट्टी कम करती है हमको मालूम है और हमारे पास याद दिलाने वाली किताब है। (३) बल्कि इन मनुष्यों ने सच्ची बात पहुंचाने पर उसको झुठलाया तो वह ऐसी बात मे उलझे पडे हैं। (४) क्या इन मनुष्यो ने अपने ऊपर आकाश

की तरफ नही देखा कि हमने उसका जैसे बनाया और उसको सजाया और उसमे उसके कही लिखा नही। (५) और पृथ्वी को हमने फैलाया और उसके अन्दर बोझिल पहाड डाल दिये और सब तरह सुन्दर वस्तुए उसमे उगाईं। (६) हर ध्यान देने वाले बन्दे के लिये याद दिलाने को और सुलझाने को है। (७) और हमने आकाश से बरकत पानी उतारा और उस पानी के द्वारा बाग और खेती का अनाज उगाया (८) और लम्बी-लम्बी खजूरें जिनके गुच्छे खूब गुथे हुए होते हैं। (९) और बन्दो को रोजी देने के लिए हमने मेह द्वारा मुर्दा बस्ती को जिलाया। इसी तरह निकल खडे होना है। (१०) इनसे नूह की कौम ने खन्दक वालो ने और समूद ने झुठलाया था। (११) और आद ने और फिरऔन ने और लूत ने। (१२) वनवासियो ने तुब्बा के मनुष्यो सभी ने अपने पैगम्बरों को झुठलाया था, तो हमारा प्रण पूरा हुआ। (१३) क्य हम पहली बार पैदा करके थक गये हैं बल्कि उन्हें फिर पैदा होने मे संदेह है। (१४) (रुकू १)

और हमने आदमी को पैदा किया और हम उसके विचारो को जानते है और हम धडकती रग से उसके अधिक पास हैं। (१५) जब दो लेने वाले दाहिने और बायें बैठे हुए लेते जाते हैं*। (१६) जो बात आदमी बोलता है उसके पास निगहबान मौजूद हैं। (१७) और मृत्य की बेहोशी जरूर आकर रहेगी। यही तो वह है जिससे तू भागता था। (१८) और नरसिंहा सूर फूंका जायगा, यही वह दिन होगा जिससे डराया जाता है। (१९) और हर मनुष्य जो आया उसके पास एक हाजिर हांकने वाला और एक साक्षी होगा। (२०) तू इससे भूला रहा। अब हमने तेरे पर्दे को तुझ पर से हटा दिया तो आज

---

* हर आदमी के साथ दो देवदूत रहते हैं। आदमी जो काम करता है या जो बात कहता हैं ये दोनो उसको लिखते जाते हैं। इस प्रकार हर एक का किया और कहा उसके सामने लाया जायगा।

तेरी निगाह तेज है। (२१) और उसका साथी बोला जो कुछ मेरे पास था कर्मलेखा यह मौजूद है। (२२) ऐ दोनों देवदूतो! हर काफ़िर शत्रु को नरक मे डाल दो। (२३) नेकी से रोकने वाले, हद से बढ़ने वाले और संदेह पैदा करने वाले। (२४) जिसने अल्लाह के साथ दूसरे पूजित ठहराये, उन्हें कठोर दण्ड में डाल दो। (२५) उनका साथी राक्षस कहेगा कि ऐ मेरे पालनकर्ता! मैंने इसको सरकश नही बनाया बल्कि यह राह से दूर भूला हुआ था। (२६) अल्लाह कहेगा मेरे पास झगड़ा न कर। मैं तेरे पास पहले दण्ड का डर पहुँचा चुका था। (२७) मेरे यहाँ बात नही बदली जाती और मैं बन्दो पर अत्याचार नही करता। (२८) (रुकू २)

उस दिन नरक में पूछेंगे कि तू भर चुका। वह कहेगा क्या कुछ और भी है? (२९) और स्वर्ग सांसारिक के पास लाया जायगा। दूर नही। (३०) यह है जिसका प्रण तुमको हरएक रुजू लाने वाले और याद रखने वाले को मिला था। (३१) जो मनुष्य वे देखे रहमान से डरता रहा और ध्यान देकर हाजिर हुआ। (३२) क्षेम कुशल के साथ इस स्वर्ग मे दाखिल हो, यही हमेशा रहने का दिन है। (३३) जन्नत में इन मनुष्यों को जो चाहेंगे मिलेगा और हमारे पास और भी अधिक है। (३४) और इन मक्का के काफिरो से पहले हमने कितने गिरोह मार डाले जो बल-बूते मे कहीं बढ़कर थे। उन्होंने तमाम शहरो को छान मारा कि कही भागने का ठिकाना भी है। (३५) जो दिल वाला है या लगा कर दिल से सुनता है उसके लिए इन बातों मे शिक्षा है। (३६) और हमने अकाश और पृथ्वी को और जो कुछ उनके बीच मे है ६ दिन मे बनाया और हम नही थके। (३७) तो ऐ पैगम्बर जैसी-जैसी बातें यह इन्कारी कहते हैं उन पर संतोष करो और सूरज के निकलने और डूबने के पहले अपने पालनकर्ता की प्रशंसा के साथ दिल से याद करो। (३८) और रात में उसकी पवित्रता से याद करो और नमाजों के बाद। (३९) और सुन रखो कि जिस दिन पुकारने

वाला पास के जगह से आवाज़ देगा कि उठो*। (४०) जिस दिन चीख़ने को सुन लेंगे वह दिन निकलने का होगा। (४१) हम ही जिलाते और हम ही मारते हैं और हमारी तरफ फिर आना है। (४२) जिस दिन मुर्दों से ज़मीन फट जायगी वे दौड़ेंगे। यह जमा कर लेना हमको आसान है। (४३) यह लोग जो कहते हैं हम जानते हैं और तू इन पर अधिकता करने वाला नहीं। सो तू कुरान से उसको समझा दो हमारी दण्ड से डरता है। (४४) (रुकू ३)

सूरे जारियात

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ६० आयतें और ३ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। उड़ाकर बखेरनेवाली की सौगन्ध*। (१) फिर बोझ उठानेवालो की सौगन्ध। (२) फिर नर्मी से चलने वालो की सौगन्ध। (३) फिर आज्ञा से बाँटनेवालियो की सौगन्ध। (४) निस्सदेह जो प्रण तुमको मिला सच है। (५) और निस्संदेह इन्साफ होनेवाला है। (६) आकाश की सौगन्ध जिसमे रहते हैं। (७) कि तुम लोग बे ठिकाने की बात मे हो। (८) जो फेरा गया वही उससे फिर जाता है। (९) अटकल के तुक्के चलाने वालो

---

* हजरत इस्राफील प्रलय के दिन इस जोर से सूर फूंकेंगे कि हर आदमी अपनी जगह यही समझेगा कि सूर उसके सर ही पर फूंका गया है।

*इन आयतों मे हवा और बादल की सौगन्ध खाई गई है। कुछ लोग कहते हैं इनसे देवदूत मुराद हैं।

का नाश जाय। (१०) जो गफलत मे भूले हुए हैं। (११) तुझ से पूछते है कि न्याय का दिन कब होगा ? (१२) जब यह मनुष्य आग पर सेके जायगे। (१३) कि अपनी शरारत के मजे चखो, यही तो है जिसकी जल्दी मचा रहे थे। (१४) सयमी स्वर्ग के बागों और चश्मो मे होगे। (१५) जो ईश्वर ने दिया उसे पाया। यह लोग इससे पहले भले काम करने वाले थे। (१६) रात को बहुत कम सोते थे। (१७) और सुबह के समय क्षमा माँगा करते थे। (१८) और उनके मालों में जो माँगे या न मागे, उसका हिस्सा था। (१९) और यकीन लाने वालों के लिए पृथ्वी में निशानियां हैं। (२०) और खुद तुममे भी। तो क्या तुम्हें नहीं सूझ पड़ता ? (२१) और तुम्हारी रोजी और जो तुमसे प्रण किया जाता है, आकाश मे है। (२२) आकाश और जमीन के पालनकर्ता की सौगन्ध, यह कुरान सच है, जैसा कि तुम बोलते हो। (२३) (रुकू १)

ऐ पैगम्बर ! इब्राहीम के इज्जतदार मेहमानों की बात तुमको पहुंचती है या नहीं। (२४) जब उसके पास आये तो सलाम किया। इब्राहीम ने भी सलाम किया और कहा तुम ऊपरी मनुष्य हो। (२५) फिर अपने घर को दौडा और एक बछेड़ा घी में तला हुआ ले आया। (२६) फिर उसके सामने रखा और पूछा क्या तुम नही खाते ? (२७) फिर इब्राहीम उनसे जी मे डरा और उन्होंने कहा मत डर, और उनको एक योग्य पुत्र इसहाक का शुभसंदेश दिया। (२८) यह सुनकर इब्राहीम की स्त्री बोलती हुई आगे आ खड़ी हुई और अपना मुंह पीट लिया और कहने लगी कि पहले तो बुढ़िया और दूसरे बाँझ जनेगी। (२९) देवदूत बोले, तेरे पालनकर्ता ने ऐसा ही कहा है, वह चमत्कार वाला खबरदार है। (३०)

सत्ताईसवाँ पारा (कालफमा खत्बुकुम)

इब्राहीम ने देवदूतो से पूछा कि ऐ भेजे हुओ। फिर तुम्हारा मतलब क्या है ? (३१) वे बोले कि हम अपराधी मनुष्यो की तरफ भेजे गये हैं। (३२) कि उन पर खजर के पत्थर बरसावें। (३३) कि यह खजर तेरे पालनकर्ता के यहाँ उन लोगो के लिए नाम पड़ गये हैं, जो हद से बढ गये हैं। (३४) फिर हमने वहाँ एक ही मुसलमान का घर पाया। (३६) और हमने उनमे उन लोगो के लिए जो दुख-दाई दण्ड से डरते हैं, निशानी बाकी रखी। (३७) और मूसा के हल मे निशान है, जब हमने उसको प्रत्यक्ष निशानी देकर फिरऔन की तरफ भेजा। (३८) फिर उससे अपने बलबूते में आकर मुंह मोडा और मूसा की बाबत कहा कि यह जादूगर या दीवाना है! (३९) फिर हमने उसको और उसके लश्करो को दण्ड मे पकड़ा, फिर उनको दरिया मे डाल दिया और वह बुराई थी। (४०) और कौम आद मे भी निशानी है जब हमने उन पर मनहूस आँधी चलाई। (४१) जिस चीज पर से गुजरती वह उसको चूरा किये बगैर न छोडती। (४२) और कौम समूद मे भी निशान है, जब उनसे कहा गया कि एक समय खास तक वर्त लो (४२) फिर अपने पालनकर्ता की आज्ञा से शरारत करने लगे तो उनको कड़क ने पकड़ा और वह देखते रह गये। (४४) फिर उठ न सके और न बदला ले सके। (४५) और इनसे पहले नूह की कौम थी, वह आज्ञाकारी थे। (४६) (रुकू २)

और हमने आकाश को अपने बाहुबल से बनाया और हम सामर्थ्य वाले हैं। (४७) और हमने पृथ्वी को बिछाया, सो हम क्या खूब बिछाने वाले है। (४८) और हमने हर चीज के जोडे बनाये। शायद तुम ध्यान दो। (४९) सो अल्लाह की तरफ भागो, मैं उसकी तरफ से तुमको साफ तौर पर डर सुनाता हू। (५०) और ईश्वर के साथ कोई दूसरा पूजित न ठहराओ। मैं उसकी तरफ से तुमको साफ तौर पर

डराता हूं। (५१) इसी तरह पर अगलों के पास जो कोई पैगम्बर आया उन्होंने उसको जादूगर या दीवाना ही बताया। (५२) क्या यह लोग एक दूसरे को वसीयत करते आये हैं। नहीं, बल्कि यह मनुष्य बढ़े हैं। (५३) सो तू उनकी तरफ ध्यान न दे। तुझ पर उलाहना न होगा। (५४) और समझते रहो कि समझना ईमान वालो को लाभ देता है। (५५) और मैंने जिन्नो और आदमियो को इसी मतलब से पैदा किया है कि हमारी पूजा करें। (५६) मैं उनसे रोजी नही चाहता और न यह चाहता हूं कि मुझे खाना खिलावें। (५७) अल्लाह स्वयं बडी रोजी देनेवाला ताकत देने वाला बलवान हैं। (५८) सो उन पापियो का यही डौल है जैसे डौल पड़ा - उनके साथियों का, सो चाहिए कि जल्दी न करें। (५९) सो काफिरो पर उनके उस रोज के एतबार से जिसका उनसे प्रण किया जाता है अफसोस है। (६०) रुकू (३)

सूरे तूर

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है तूर की सौगन्ध। (१) और लिखी किताब की। (२) कड़े पन्नो मे। (३) और बैतुल मामूर देवदूत का आसमानी काबा की। (४) और ऊंची छत आकाश की। (५) और उमड़ते हुए समुद्र की। (६) निस्सदेह तेरे पालनकर्ता का दण्ड होने को है। (७) किसी को ताकत नहीं कि उसको टाल सके। (८) जिस दिन आकाश लहरें मारने लगे। (९) और पहाड़ चलने लगेंगे। (१०) उस दिन झुठलाने वालो की खराबी है। (११) जो बातें बनाते खेलते हैं। (१२) जिस दिन नरक की आग की ओर धक्के दे देकर ले जायेंगे। (१३) यही वह नरक है जिसे

तुम झुठलाते थे। (१४) तो क्या यह नजरबन्दी है या तुमको सूझ नही पडता। (१५) इसमे घुसो, सँतोष करो या न करो, तुम्हारे लिए समाज है। और जैसे कर्म तुम करते थे तुमको उन्ही का बदला दिया जायगा। (१६) सँयमी स्वर्ग के बागों और निश्रामतो मे होगे। (१७) अपने पालनकर्ता की दी हुई निश्रामतो के मजे उड़ा रहे होगे और उनके पालनकर्ता ने उनको नरक के दण्ड से बचा लिया। (१८) खाओ पिओ रुचि से, अपने कामो का बदला है। (१९) तख्तो पर जो बराबर बिछाये गये हैं तकिए लगा-लगाकर बैठे हैं और हमने बड़ी-बडी आखोंवाली हूरें उनको ब्याह दी हैं। (२०) और जो लोग ईमान लाये और उनकी औलाद ईमान मे उनके पीछे चली, उनकी औलाद को हम उनसे मिला देंगे और उनके कर्मों से कुछ भी न घटायेंगे। हर आदमी अपनी कमाई मे फसा है*। (२१) और जिस मेवे और माँस को उनका भी जी चाहेगा हम उनको देवेंगे। (२२) वह आपस मे वहा शराब के प्यालों की छीनाझपटी करेंगे, उसमें न बकवाद लगेगी और न कोई अपराध होगा। (२३) और लड़के उनके पास आयगे-जायगे, गोया यत्न से रखे हुए मोती हैं। (२४) और एक दूसरे की तरफ ध्यान देकर आपस मे बातें करेंगे। (२५) कहेंगे कि हम पहले अपने घरो मे डरा करते थे। (२६) सो ईश्वर ने हम पर कृपा की और हमको तू नरक के दण्ड से बचा लिया। (२७) पहले हम उसे पुकारते, थे वह भलाई करने वाला और दयालु है। (२८) (रुकू १)

तो ऐ पैगम्बर ! इन लोगो को शिक्षा दो कि पालनकर्ता की कृपा से जादूगर और दीवान नही। (२९) क्या काफिर कहते हैं कि शायर है? हम उसके लिए ससार के दुख की राह देख रहे हैं। (३०) तू कह कि तुम राह देखो मैं भी तुम्हारे साथ राह देख रहा हू। (३१) क्या इनकी अक्लें इनको ऐसा सिखाती हैं या यह लोग झगडालू हैं। (३२) या कहते हैं कि इसने कुरान अपने आप बना लिया है बल्कि वह ईमान नही लाते। (३३) सो अगर सच्चे हैं तो इसी तरह की

कोई बात ले आवें। (३४) क्या वे आप ही आप बन गये हैं या वही बनाने वाले हैं ? (३५) क्या इन्होंने आकाश को और पृथ्वी को पैदा किया है ? नहीं, बल्कि विश्वास नहीं करते। (३६) क्या तेरे पालन-कर्ता के खजाने उनके पास हैं या वह हाकिम हैं ? (३७) या इनके पास कोई सीढ़ी है कि उस पर चढ़कर आकाश की बातें सुन आया करते हैं ? सो अगर इन में से कोई सुन आया हो तो वह प्रत्यक्ष प्रमाण पेश करे। (३८) क्या ईश्वर के लिए बेटियां और तुम लोगों के लिए बेटे हैं ? (३९) क्या तू इनसे पहुंचाने की कुछ मजदूरी मांगता है ? यह बोझ से दबे जाते हैं। (४०) क्या इनके पास गुप्त भेद जानने की विद्या है वे, दे लिख सकते हैं। (४१) या इनका इरादा कुछ धोखा देने का है, तो यह काफिर आप ही धोखे में हैं। (४२) या ईश्वर के सिवाय इनका कोई पूजित है, तो अल्लाह इनके शिर्क से पवित्र है। (४३) और अगर कोई आकाश का टुकड़ा गिरता हुआ देखें। कहने लगते हैं कि यह तो जमा हुआ बादल है।* (४४) तो ऐ पैगम्बर इनको रहने दो कि वह उस दिन का इन्तजार करें जब कि इनको बिजली की कड़क पकड़ेगी। (४५) जिस दिन उनका धोखा उनके कुछ काम न आवेगा और न इनको सहायता मिलेगी (४६) और जालिमो को प्रलय के दण्ड के सिवाय संसार में और भी दण्ड है। मगर इनमे से बहुतों को मालूम नहीं। (४७) और तू अपने पालनकर्ता की आज्ञा के इन्तजार मे रह कि हमारी आंखों के सामने हैं। और जिस समय सोकर उठे अपने पालनकर्ता की खूबियों के बोल बोल। (४८) और कुछ रात गये भी उसकी याद किया करो और तारों के अस्त हुए पीछे भी (४९) (रुकू २)

---

* कहते हैं कि काफिर मुहम्मद साहब से कहते थे कि अगर तुम वास्तव में ईश्वर के भेजे हुए नबी हो तो आकाश का एक टुकड़ा हमारे ऊपर गिरा दो, जिससे हम नष्ट हो जावें। इस पर यह आयत उतारी।

सूरे नज्म

मक्के में अवतरित हुई इसमें ६२ आयतें और ३ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। तारे नक्षत्र की सौगन्ध जब यह टूटता है। (१) तुम्हारा मित्र मुहम्मद बहका नही और न बेराह चला। (२) और वह अपनी चाह से नही बातें बनाता। (३) यह तो आज्ञा है जो उसे भेजा जाता है। (४) बड़े बलशाली ने उसे सिखलाया है। (५) जो बड़ा है। फिर सीधा बैठा। (६) और वह आकाश के ऊंचे किनारे पर था। (७) फिर वह नजदीक हुआ और करीब आ गया। (८) फिर दो कमान के बराबर या उससे भी कम फर्क रह गया। (९) उस समय ईश्वर ने फिर अपने बन्दे मुहम्मद पर आज्ञा भेजी। जो भेजा। (१०) झूठ नहीं कहा दिल ने जो देखा। (११) अब क्या तुम झगड़ते हो उससे इस पर जो उसने देखा ? (१२) हलांकि उसने उसको दूसरी बार देखा। (१३) अन्तिम हद की बेरी के पास उस बेरी पर जो छा रहा था। (१४) उस बेरी के पास स्वर्ग रहने की जगह। (१५) जब छा रहा था (१६) निगाह न बहकी न हद से बढ़ी। (१७) निस्संदेह उसने अपने पालनकर्ता की निशानियो मे से बडी निशानी देखी। (१८) मुशरिको ! भला तुमने लात और उज्जा मूर्तियो के नाम (१९) और यह जो तीसरी देवी मनाते है, (२०) क्या तुम लोगों के लिए बेटे और उस ईश्वर के लिए बेटियां (२१) अगर ऐसा हो तो यह बड़ी अन्याय की बात है। (२२) यह तो निरे नाम ही हैं जो तुमने और तुम्हारे बाप दोनो ने अपनी तरफ से रख लिए हैं। ईश्वर ने तो इनकी कोई प्रमाण नही उतारे। यह लोग तो अटकल और दिली इच्छाओ पर चलते और इनके पालनकर्ता की तरफ से इनके पास आदेश भी आ चुका है। (२३) कहीं मनुष्य को मनमानी मुराद भी मिली है। (२४) सो परलोक और संसार अल्लाह ही के काबू मे है। (२५) (रुकू १)

और बहुत देवदूत आकाश में हैं। उनकी सिफारिश कुछ भी काम नहीं आती। मगर जब ईश्वर किसी के बारे में सिफारिश करना चाहे इजाजत दे और देवदूतों की सिफारिश को पसंद फर्मावे। (२६) जिन लोगों को परलोक का निश्चय नही है, वही तो देवदूतों के नाम औरतों जैसे रखते हैं। (२७) और उनको इसकी कुछ खबर नही, निरी अटकल पर चलते हैं और ठीक बात में अटकल कुछ काम नहीं आती। (२८) तो जो मनुष्य हमारी याद से मुंह फेरे और सांसारिक जीवन के सिवाय कुछ न चाहे, सो तू उस पर ध्यान न कर। (२९) यहाँ तक ही उनकी समझ पहुंची है। तेरा पालनकर्ता खूब जानता है कि कौन उसकी राह से भटका हुआ है और कौन सीधी राह पर है। (३०) और अल्लाह ही का है जो कुछ आकाश और पृथ्वी में है ताकि उन लोगो को जिन्होंने बुरे कर्म किये उनके किये का बदला दे। और जिन्होंने अच्छे कर्म किये हैं उनको अच्छे का बदला दे। (३१) जो बड़े पापो और बेशर्मी के कामों से बचते रहते हैं मगर छोटे पाप उनसे हो जाते हैं। तो तेरा पालनकर्ता बड़ा क्षमा करने वाला है। वह तुमको खूब जानता है। जब उसने तुमको मिट्टी से बनाया था और जब तुम अपनी मांओं के गर्भ में बच्चे थे, सो अपनी सफाई न जताओ संयमियों को वही खूब जानता है। (३२) (रुकू २)

ऐ पैगम्बर! भला तू ने मनुष्य को देखा जिसने मुंह फेरा। (३३) और थोड़ा माल देकर कठोर हो गया *। (३४) क्या उसके

* कहते हैं कि, एक दिन वलीद-बिन सुपुत्र मुगीरा मुहम्मद साहब के पीछे-पीछे चला ताकि उनकी बातें सुने। एक दूसरे काफिर ने यह देखकर उससे कहा, "क्या तुमने अपने बाप-दादों को बुरा जाना जो इनके पीछे चल पड़े।" उसने कहा ईश्वर के डर से ऐसा कर रहा हूं! उसने कहा तुम इतना धन मुझे दे दो तो तुम्हारे पाप कटकर मुझ पर आ जायेंगे मै तुम्हारे पापों को उठा लूंगा। उसने यह बात मान ली परन्तु केवल थोड़ा ही दिया, बाकी न दिया। इस पर यह आयत उतरी

पास गुप्त बात जानने की विद्या है कि वह देखने लगा है। (३५) क्या उसको खबर नही जो कुछ मूसा के सहीफो में लिखा है। (३६) और इब्राहीम के सहीफो में जो वफ़ादार था। (३७) कि कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ नही उठाता। (३८) और यह कि मनुष्य को उतना ही मिलेगा जितना उसने कमाया है। (३९) और यह कि उसकी कमाई आगे चलकर देखी जायगी। (४०) फिर उसको पूरा बदला दिया जायगा। (४१) और यह कि ईश्वर तक पहुंचना है (४२) और यह कि वही हंसाता और वही रुलाता है। (४३) और यह कि वही मारता और जिलाता है (४४) और यह कि उसने स्त्री पुरुष का जोड़ा बनाया (४५) वीर्य से जब टपकाया गया। (४६) और यह कि दुबारा (जीवित करना उसके जिम्मे है। (४७) और यह कि वही मालदार और धनवान करता है। (४८) और यह कि वही शेरा एक तारे के नाम का मालिक है। (४९) और यह कि उसी ने आद की जाति के अगलो को मार डाला था। (५०) और समूद को भी फिर वाकी न छोड़ा। (५१) और पहले नूह की जाती को इसमे सदेह नही कि यह स्वयं ही बडे अत्याचारी और बड़े उपद्रवी थे मार डाला। (५२) और उल्टी वस्तियो को जिन मे लूत की जाति रहती थी दे पटका। (५३) फिर उन पर जो तबाही आई सो आई। (५४) ऐ आदमी ! तू अपने पालनकर्ता के कौन-कौन पदार्थो मे संदेह किया करेगा ? (५५) यह अगले डराने वालो मे से एक डराने वाला है (५६) नजदीक आनेवाली समीप आ पहुची है। (५७) अल्लाह के सिवाय किसी की सामर्थ्य नही कि इसको दूर कर सकें। (५८) तो क्या तुम इस बात से अश्चर्य करते हो ? (५९) और हंसते हो और रोते नही ? (६०) और तुम भूल मे हो (६१) बस ईश्वर को सिर झुकाओ और पूजो। (६२) (रुकू ३)

सूरे कमर

मक्के में अवतरित हुई इसमें ५५ आयतें और ३ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। प्रलय की घड़ी पास आ लगी और चांद फटगया। (१) अगर यह कोई निशानी भी देखें तो मुंह फेर लेते हैं और कहते हैं कि यह जादू चला आता है। (२) और इन लोगों ने पैगम्बर को झुठलाया और अपनी इच्छाओं पर चले मगर हर काम नियत समय पर होता है। (३) और उनके पास इतनी खबरें आ चुकी हैं जिन में काफी ताड़ना थी। (४) इसमें पूरा चमत्कार है, मगर डराना कुछ काम नहीं आता। (५) सो तू उनकी तरफ से हट जा। जिस दिन बुलाने वाला ऐसी चीज की तरफ बुलायेगा जिसको यह न पहचानेंगे। (६) नीची आँखें किये हुए कब्रों से निकलेंगे गोया फैली हुई टिड्डियां हैं। (७) बुलाने वाले की तरफ भागते होंगे और काफिर कहेंगे कि यह कठोर दिन है। (८) इन लोगों से पहले नूह की जाति ने झुठलाया। हमारे सेवक नूह को झुठलाया और कहा कि यह पागल उन्मत्त है और उसको धमकियां दी। (९) फिर उसने अपने पालनकर्ता को पुकारा कि मैं दब गया हूं, तू ही बदला ले। (१०) तो हमने मूसलाधार पानी से आकाश के पट खोल दिये। (११) और पृथ्वी से सोते बहा दिये, तो पानी एक काम के लिए जो नियत हो चुका था, मिल गया। (१२) और नूह को हमने तख्तों और कीलो से बनाई हुई नाव पर सवार कर लिया। (१३) और वह हमारी निगरानी मे पड़ी तैरती रही। यह उस नूह का बदला था जिस की कदर नहीं की गई थी। (१४) और हमने इसको एक निशानी बना कर छोड़ दिया, फिर कोई सोचने वाला है। (१५) फिर हमारा दण्ड और हमारा डराना कैसा हुआ। (१६) और हमने कुरान को समझने के लिए सुगम कर दिया है, सो कोई है जो शिक्षा ग्रहण करे ? (१७) आद की जाति ने पैगम्बरों को झुठलाया तो हमारे दण्ड और

हमारा डराना कैसा हुआ। (१८) हमने एक अशुभ दिन जिसकी अशुभता नही टलती थी उन पर एक कठोर जोरशोर की आँधी चलाई (१९) वह मनुष्यों को उखाड़ फेंकती थी कि गोया वह जड़ से उखड़े हुए खजूरों के तने हैं। (२०) तो हमारा दण्ड और हमारा डराना कैसा हुआ ! (२१) और हमने कुरान को समझने के लिए सुगम कर दिया है तो कोई है जो शिक्षा ग्रहण करे ? (२२) (रुकू १)

कौम समूह ने डर सुनाने वालों पैगम्बरों को झुठलाया। (२३) और कहने लगे क्या हम ही में के एक शख्स के कहे पर हम चलेंगे, तो हम गुमराह और पागलों में होंगे। (२४) क्या हममें से इसी पर वही ईश्वरी संदेशा है। नही, यह झूठी शेखी मारने वाला है। (२५) अब कल को मालूम हो जायगा कि कौन झूठा शेखीखोरा है। (२६) हम इनके जाँचने के लिए एक ऊटनी भेजनेवाले हैं तो तुम इनकी राह देखो और सतोष से बैठे रहो। (२७) और इनको जता दो कि इनमे और ऊंटनी मे पानी बाँट दिया गया है, तो हर एक गरोह अपनी अपनी बारी पर पानी पीने के लिए हाजिर हो। (२८) तो उन्होंने अपने दोस्त को बुलाया तो उसने ऊटनी पर हाथ डाला और कूचें काट दीं। (२९) तो हमारा दण्ड और डराना कैसा हुआ। (३०) फिर हमने उन पर एक चिंघार भेजी, तो वह ऐसी हो गई जैसी रौंदी हुई काँटो की बाढ़। (३१) फिर हमने कुरान के समझाने के लिए आसान कर दिया है, तो कोई है कि शिक्षा पकड़े ? (३२) लूत की कौम ने डर सुनाने वालो को झुठलाया। (३३) तो हमने उन पर पत्थर की वर्षा की, मगर लूत के घर के लोगों को हम अपनी कृपा से सुबह होले-होले निकाल ले गये। (३४) यह हमारी तरफ से कृपा थी। जो लोग कृतज्ञ होते शुक्र करते हैं, हम ऐसा ही बदला देते हैं। (३५) और लूत ने उन्हें हमारी पकड़ से डराया भी था मगर वह डराने मे हुज्जतें निकालने लगे। (३६) और वह उनको उनके महमानो की बाबत फुसलाते थे, फिर हमने उनकी आँखें मेट दी। अब हमारा

दण्ड और हमारे डराने के मजे चखो। (३७) और प्रातःकाल उनको मौत ने आ घेरा जो टाले से न टल सकती थी। (३८) अब हमारा दण्ड और हमारे डराने के मजे चखो। (३९) और हमने कुरान को समझाने के लिए आसान कर दिया है, तो कोई है कि शिक्षा ग्रहण करे? (४०) (रुकू २)

और फिरऔन के लोगों के पास डराने वाले आये। (४१) सो ऐसा ही उन्होंने हमारी तमाम निशानियों को झुठलाया, तो हमने उनको ऐसा पकड़ा जैसा बली बलवान पकड़ता है। (४२) ऐ मक्केवालो! क्या तुममें से इनकार करने वाले उन लोगों से बढ़कर है या तुम्हारे लिए क्षमा है? (४३) यह लोग कहते हैं कि हमारा गिरोह अपने आप सहायता कर सकता है। (४४) सो कोई दिन जाता है कि गरोह हार जायगा और पीठ फेर कर भागेंगे (४५) नहीं। बल्कि प्रण तो उनके साथ स्वर्ग का है और प्रलय बड़ी बला और कड़वी है। (४६) निस्संदेह पापी गुमराही में और पागलपन में है। (४७) जिस दिन उनको उनके मुंह के बल नरक की आग मे घसीटा जायगा और उनसे कहा जायगा नरक की आग का दण्ड लो। (४८) हमने हर चीज को एक अन्दाजे के साथ पैदा किया है। (४९) और हमारी आज्ञा करना सिर्फ एक बात है जैसे आंख की झपक। (५०) और मक्का के काफिर लोग! हम तुम्हारे साथवालो को मार चुके हैं, तो कोई है कि शिक्षा पकड़े? (५१) और हर काम जो उन्होंने किये हैं किताब मे लिखे हैं। (५२) और हर एक छोटा और बड़ा काम सब लिखा हुआ है। (५३) सयमी स्वर्ग के बागों में नहरें होंगी। (५४) सच्ची बैठक में बादशाह के पास जिसका सब पर कब्जा है, बैठेंगे। (५५) (रुकू ३)

सूरे रहमान

मक्के में अवतरित हुई इसमें ७८ आयत और ३ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। हे कृपालु (१) ईश्वर ने कुरान सिखाया। (२) उसी ने आदमी को पैदा किया। (३) फिर उसको बोलना सिखाया। (४) सूरज और चाँद का एक हिस्सा है। (५) और बूटियाँ और पेड उसी को सिर झुकाये हुए हैं। (६) और उसी ने आकाश को ऊंचा किया है और तराजू बना दी। (७) ताकि तुम लोग तौलने में कम ज्यादा न करो। (८) और न्याय के साथ सीधा तौल तौलो और कम न तौलो। (९) और उसी ने ससार के लिए पृथ्वी बना दी है। (१०) कि उस मे मेवे हैं और खजूर के पेड़ हैं, जिन पर गिलाफ चढ़े होते हैं। (११) और अनाज जिसके साथ भुस है और खुशबूदार फूल हैं। (१२) तो तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन सी निआमतो को झुठलाओगे ? (१३) उसी ने मनुष्य को पपड़ी की तरह बजती हुई मिट्टी से पैदा किया। (१४) और जिन्नो को आग की लौ से। (१५) तो तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन सी निआमतो को झुठलाओगे ? (१६) और सूरज के निकलने और डूबने की जगहो के मालिक है। (१७) फिर तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन सी निआमतो को झुठलाओगे ? (१८) उसी ने दो नदियो को मिला दिया है कि वह मिली हैं। (१९) इन दोनो के बीच एक आड है कि यह उससे बढ नही सकते। (२०) तो अपने पालनकर्ता की किस निआमत को तुम झुठलाओगे ? (२१) दोनो मे से मोती और मूंगे निकलते हैं। (२२) तो तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन निआमतो को झुठलाओगे (२३) और जहाज जो समुद्र मे पहाडो की तरह ऊचे खडे रहते हैं उसी के है। (२४) तो तुम अपने पालनकर्ता के कौन-कौन से पदार्थों को झुठलाओगे ? (२५) (रुकू १)

ऐ पैग़म्बर! जितनी सृष्टि जमीन पर है सब मिटने वाली है। (२६) और केवल तुम्हारे पालनकर्ता की जात बाकी रह जायगी जो बड़प्पन वाली बड़ी है। (२७) तो तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन सी निआमतों को झुठलाओगे ? (२८) जो कोई आकाश में और पृथ्वी में हैं, उसी से सवाल करते हैं। वह हर रोज एक शान में है। (२९) फिर तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन-सी निआमतों को झुठलाओगे? (३०) ऐ दो बोझिल काफ़िलों* ! हम जल्द तुम्हारी तरफ ध्यान देने वाले हैं। (३१) तो तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन निआमतों को झुठलाओगे ? (३२) ऐ जिन्न और आदमियों के गुटों ! अगर तुमसे हो सके कि आकाश और पृथ्वी के किनारों से निकल देखो। मगर तुम बग़ैर जोर के निकल ही नहीं सकते। (३३) फिर तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन सी निआमतों को झुठलाओगे ? (३४) और तुम पर आग के शोले और धुआँ भेजा जावेगा और तुम सहायता भी न कर सकोगे। (३५) फिर तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन सी निआयतों को झुठलाओगे ? (३६) फिर जब आकाश फटे और नरी की मानिन्द लाल हो जाये। (३७) तो तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन-सी निआमतों को झुठलाओगे ? (३८) तो उस दिन न तो आदमियों से उनके गुनाहों के लिए पूछा जायगा और न जिन्नों से। (३९) तो तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन-सी नियामतो को झुठलाओगे ? (४०) पापियों को उनकी सूरत से पहचान लिया जायगा फिर पुट्ठे और पैर पकड़े जायंगे और उनको खींचकर नरक में ले जायंगे। (४१) तो तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन सी नियामतों को झुठलाओगे ? (४२) यही नरक है जिसको पापी मनुष्य झुठलाते हैं। (४३) नरक में और खौलते हुए पानी में फिरेंगे। (४४) तो तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन-सी नियामतो को झुठलाओगे ? (४५) (रुकू २)

---

* यानी मनुष्य और वह जीव जो आँखों से नहीं दिखाई देते और इसीलिए जिन्न कहलाते हैं।

और जो मनुष्य अपने पालनकर्ता के सामने खड़े होने से डरता रहे उसको दो बाग मिलेंगे। (४६) तो तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन-सी निआमतों को झुठलाओगे ? (४७) जिसमे बहुत-सी टहनियाँ हैं। (४८) तो तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन-सी निआमतों को झुठलाओगे ? (४९) दोनों मे दो चश्में जारी होंगे। (५०) तो तुम पालनकर्ता की कौन-कौन-सी निआमतों झुठलाओगे ? (५१) उनमें मेवे की दो किस्में होंगी। (५२) फिर तुन अपने पालनकर्ता की कौन कौन-सी निआमतों को झुठलाओगे ? (५३) फरशो पर तकिए लगाये बैठे होंगे। ताफ्ते के उनके अस्तर होंगे और दोनो बागों के फल झुके होंगे। (५४) तो तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन सी निआमतों को झुठलाओगे ? (५५) उनमे पाक हूरें होंगी जो आँख उठाकर भी नहीं देखेंगी और स्वर्गवासियो से पहले न तो किसी मनुष्य ने उन पर हाथ डाला होगा और न किसी जिन्न ने। (५६) तो तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन सी नियामतों को झुठलाओगे। (५७) वे लाल और मूंगे जैसे हैं। (५८) फिर तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन सी निआमतो को झुठलाओगे। (५९) भला नेकी का बदला नेकी के सिवाय क्या हो सकता है। (६०) फिर तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन सी निआमतों को झुठलाओगे। (६१) और इन दो बागो के सिवाय और दो बाग हैं। (६२) तो तुल अपने पालनकर्ता की कौ-कौन-सी निआमतो को झुठलाओगे। (६३) दोनो बाग खूब गहरे सब्ज हैं। (६४) फिर तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन सी निआमतो को झुठलाओगे। (६५) उनमे दो चश्मे उछल रहे होंगे। (६६) तो तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन-सी निआमतो को झुठलाओगे। (६७) उन दोनो बागो मे मेवे और खजूरें और अनार होंगे। (६८) फिर तुम अपन पालनकर्ता की कौन-कौन सी निआमतों को झुठलाओगे। (६९) उनमे अच्छी खूबसूरत औरतें होंगी। (७०) फिर तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन-सी निआमतो को झुठलाओगे। (७१) हूरें जो खीमो मे बन्द हैं। (७२) फिर तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन

सी नियामतो को झुठलाओगे। (७३) वैकुण्ठवासियों से पहले न तो किसी इन्सान ने उन हूरों पर हाथ डाला होगा और न किसी जिन्न ने। (७४) फिर तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन सी निआमतों को झुठलाओगे। (७५) वैकुण्ठवासी वहाँ सब्ज कालीनों और अच्छे-अच्छे फर्शो पर पर तकिये लगाये होंगे। (७६) फिर तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन सी निआमतों को झुठलाओगे। (७७) ऐ पैगम्बर तुम्हारे पालनकर्ता का नाम बड़ा बड़प्पन वाला और भलाई करने वाला है। (७८) (रुकू ३)

सूरे वाक़िया

मक्के में अवतरित हुई, इसमे ९६ आयत और ३ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। (१) जब होनेवाली होगी प्रलय। (२) उसके आने मे कुछ भी झूठ नही। (३) किसी को को नीचा दिखायेगी और किसी के दर्जे ऊंचे करेगी। (४) जब पृथ्वी बडे जोर से हिलने लगेगी। (५) और पहाड़ के टुकड़े टुकड़े हो जायगे। (६) फिर उड़ती मिट्टी हो जावेंगे। (७) और फिर तुम्हारी तीन किस्मे हो जावेंगी। (८) फिर दाहिने हाथ वाले से दाहिने हाथ वालो का कहना है। (९) और बायें हाथ वाले बायें हाथ वालो का क्या ही बुरा हाल है। (१०) और आगे वाले सा आगे ही हैं। (११) यही मनुष्य पास वाले हैं। (१२) नियामत के बागों में। (१३) अगलों मे से एक जमात है। (१४) और पिछलो मे से थोड़े। (१५) जडाऊ तख्तों के ऊपर। (१६) आमने सामने तकिये लगाये बैठे होगे। (१७) उनके पास लौंडे हैं जो सदैव लड़के ही बने रहेंगे। (१८) उनके पास किसी आबखोरे और लोटे और साफ शराब के प्याले लाते और बे जाते होंगे। (१९) जिससे न तो उनके सिर में दर्द होगा न बकवाद

लगेगी। (२०) और जो मेवे उनको अच्छे लगे। (२१) और जिस किस्म के पक्षी का मांस उनको अच्छा लगे। (२२) और हूरें बड़ी बड़ी आंखों वाली जैसे छिपे हुए मोती। (२३) बदला उसका जा करते थे। (२४) वहाँ बकना और पाप की बात सुनेंगें। (२५) मगर सलामती-सलामती की आवाजें आ रही होगी। (२६) और दाहिते तरफ वाले! सो इन दाहिनी तरफ वालो का क्या कहना है। (२७) वे कांटे की बेरियो। (२८) और लदे हुए केलो मे। (२९) और लम्बे साये मे। (३०) और बहते पानी मे। (३१) और मेवों में। (३२) जो न कभी खतम हो और न रोके जायें। (३३) और ऊंचे बिछौने। (३४) हमने हूरो की एक खास सृष्टि बनाई है। (३५) फिर इनको क्वांरी बनाया है। (३६) प्यारी प्यारी समान अवस्था वाली। (३७) यह सब दाहिनी तरफ वालो के लिए हैं। (३८)(रुकू १)

एक जमात पहिलो में से है। (३९) और एक जमात पिछलों मे से है। (४०) और बाई ओर वाले क्या बुरे बाई ओर वाले होगे। (४१) कि वह आच की भाप मे और गरम पानी मे होगे। (४२)और धुयें की छाओ मे। (४३) जो न ठण्डी है और न इज्जत की। (४४) यह लोग इससे पहिले आराम मे थे। (४५) और बड़े पाप पर हठ करते रहते थे। (४६) और कहते थे जब हम मर गये और मिट्टी और हड्डियाँ हो गये क्या फिर हम उठाये जायेंगे। (४७) और क्या हमारे अगले बाप दादा भी। (४८) हे पैगम्बर कहो कि अगले और पिछले सब। (४९) एक मालूम वक्त पर जमा किये जायेंगे। (५०) फिर ऐ झुठलाने वाले गुमराहो। (५१) तुमको नरक मे सेहुड का पेड खाना होगा। (५२) और उसी से पेट भरना पडेगा। (५३) फिर ऊपर से उबलता हुआ पानी पीना होगा। (५४) फिर ऐसे पीओगे जैसे प्यासे ऊट पीते हैं। (५५) न्याय के दिन यही उनकी मेहमानी है। (५६) हमने तुमको पैदा किया है फिर भी तुम क्यो नही मानते। (५७)भला देखो तो जो वीर्य स्त्रियो की योनि मे टपकाते हो। (५८) क्या तुम

उससे आदमी पैदा करते हो या हम पैदा करते हैं। (५९) हमने तुममें मरना ठहरा दिया और हम हारे नहीं रहे। (६०) कि तुम्हारी मानिन्द और कौम बदल लाये और तुम्हें उस जहाज में उठा खड़ा करें जिसे तुम नहीं जानते। (६१) और तुम पहिली पैदायश जान चुके हो फिर क्यों नहीं सोचते। (६२) भला देखो तो जो बोते हो। (६३) क्या तुम उसको उगाते हो या हम उगाते हैं। (६४) हम चाहें तो उसको चूरा-चूरा कर दें। और तुम बातें बनाते रह जाओ। (६५) हम टोटे में आ गये। (६६) बल्कि हमारा भाग्य फूट गया। (६७) भला देखो तो पानी जो तुम पीते हो। (६८) क्या तुमने इसको बादल से बरसाया या हम बरसाते हैं। (६९) अगर हम चाहें तो उसको खारी कर दें तो तुम क्यों नहीं धन्यवाद देते। (७०) भला देखो तो आग जो तुम सुलगाते हो। (७१) इस पेड़ को तुमने पैदा किया है या हम पैदा करते हैं। (७२) हमने वे याद दिलाने और मुसाफिरों के फायदे के लिए बनाये हैं। (७३) सो अपने पालनकर्ता के नाम की माला फेर जो सब से बड़ा। (७४) (रुकू २)

तारों के टूटने की सौगन्ध है। (७५) और समझो तो यह बड़ी सौगन्ध है। (७६) यह बड़ी कद्र की कुरान है। (७७) छिपी किताब में लिखा हुआ है। (७८) उसको वही छूते हैं जो पवित्र बने हैं (७९) संसार के पालनकर्ता से भेजा है। (८०) अब क्या इस बात से सुस्ती करते हो। (८१) और अपना हिस्सा यही लेते हो कि झुठलाते हो। (८२) फिर क्यों न हो जब जान गले में पहुंच जावे। (८३) और तुम उस समय देखा करो। (८४) और हम तुम्हारी निस्बत उससे अधिकतर पास हैं लेकिन तुम नहीं देखते*। (८५) फिर अगर तुम किसी

---

* एक नस ऐसी है जो शहरग कहलाती है। यदि यह न होती तो नाड़ीमें धमक न होती, यह आत्मा से मिली हुई है, ईश्वर आदमी से इससे भी अधिक समीप है। कुछ लोगों ने इस शब्द आमल का यह भी अर्थ

की प्राज्ञा में नहीं हो तो क्यों। (८६) तो तुम उसको फेर लाते अगर तुम सच्चे हो। (८७) सो अगर वह पास वालों में हुआ। (८८) तो आराम रोजी और नियामत के बाग हैं। (८९) और अगर वह दाहिनी ओर वालों में से है। (९०) तो दाहिनी तरफ वालों की ओर से तेरे लिए सलाम है। (९१) और अगर झुठलाने वालों गुमराहो में से है। (९२) तो उबलते पानी से महमानी की जावेगी। (९३) नरक आग में डकेला जावेगा। (९४) निस्संदेह यह बात सच विश्वास के लायक है। (९५) सो अपने पालनकर्ता के नाम की जो सबसे बड़ा है माला फेर। (९६) (रुकू ३)

सूरे हदीद

मक्के में अवतरित हुई इसमें २९ आयत और ४ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो दयावान व कृपालु है। जो कुछ आकाश और पृथ्वी में हैं अल्लाह को पवित्रता से याद करते हैं और वही जबर-दस्त चमत्कार वाला है। (१) आकाश और पृथ्वी का राज्य उसी का है। वही जिलाता और मारता है और वह हर चीज पर शक्तिमान है। (२) वही आदि है और अन्त है और वही प्रत्यक्ष और गुप्त है और वह हर चीज से जानकार है। (३) वही है जिसने ६ दिन में आकाश और पृथ्वी को बनाया फिर तख्त जा विराजा। जो चीज पृथ्वी मे दाखिल होती और जो चीज पृथ्वी से बाहर आती है और जो चीज

बताया है कि जब आदमी मरने लगता है तो उसके करीबी रिश्तेदार उसके पास होते हैं। ईश्वर हर समय उसके पास होता है और उसके सम्बन्धियों से ज्यादा नजदीक होता है।

आकाश से उतरती और जो चीज आकाश की तरफ चढ़ती है वह जानता है और तुम जहाँ कहीं हो वह तुम्हारे साथ है और जो कुछ तुम किया करते हो अल्लाह सबको देख रहा है। (४) आका ा और पृथ्वी का राज्य उसी का है और सब काम अल्लाह ही तक पहुचते हैं। (५) वही रात को दिन मे दाखिल करता और दिन को रात मे दाखिल करता है। दिली बात की उसको खबर है। (६) अल्लाह और उसके पैगम्बर पर ईमान लाओ और उस माल में से जिसका उसे अधिकारी बनाया है खर्च करो। तो जा मनुष्य तुम में से ईमान लाये और खर्च करते हैं उनके लिये बडा फल है। (७) और तुमको क्या हो गया है कि ईश्वर पर ईमान नहीं लाते हालांकि पैगम्बर तुमको तुम्हारे ही पालनकर्ता पर ईमान लाने के लिए बुला रहे है और अगर तुमको विश्वास आये तो ईश्वर तुमसे कौल करा चुका है। (८) वही जो अपने सेवक पर खुली आयतें उतारता है ताकि अन्धकार से निकालकर रोशनी में लाये और निस्सन्देह अल्लाह पर बड़ा दयावान व कृपालु है। (९) और तुमको क्या हो गया है कि ईश्वर की राह में खर्च नही करते हालांकि आकाश और पृथ्वी का स्वामी ईश्वर ही है, तुममे से जिन लोगों ने मक्का से पहिले खर्च किया और लड़ाई की। वह दूसरों लोगो के बराबर नहीं। यह लोग दर्जे में उनसे बढ़कर हैं जिन्होंने मक्का के फतह के पीछे माल खर्च किये और लड़े खर्च और ईश्वर ने सभी से से अच्छा प्रण किया है और जैसे-जैसे काम तुम लोग करते हो अल्लाह को उनकी खबर है। (१०) (रुकू १)

ऐसा कौन है जो अल्लाह को प्रसन्नता से उधार* दे फिर वह उसको उसके लिए दूना कर दे और उसके लिए इज्जत का फल है।

---

* जो कोई अपना धन ईश्वर की राह में देता है उसको ईश्वर उसके दिये हुए धन का दूना बदला देता है। यानी दोनों लोकों में अच्छा फल पाता है।

(११) जिस दिन दिन तू ईमान वाले मनुष्य और ईमान वाली स्त्रियाँ को देखेगा उसकी रोशनी उनके आगे और उनके दाहिनी तरफ दौडती है। आज तुम लोगो के लिये खुशी है। वैकुण्ठ के बाग हैं जिनके नीचे नहरें वह रही है। इन्ही मे सदा रहोगे यही वडी कामयावी है। (१२) उस दिन कपटी मनुष्य और कपटी औरतें ईमान वालो से कहेंगे कि हमारा इन्तजार करो कि हम भी तुम्हारी रोशनी से कुछ ले लें। कहा जायगा अपने पीछे की ओर लौट आओ और रोशनी तलाश कर लो। इसके वाद इन दोनो फरीको के बीच मे एक दीवार खडी कर दी जायगी उसमे एक द्वार होगा उसमे भीतरी तरफ कृपा होगी और उसकी वाहरी तरफ दण्ड होगा। (१३) वह कपटी ईमान वालो को पुकारेगे कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे वह कहेंगे। सही मगर तुमको अपने आपको वला मे डाला और तुम राह देखते थे और सन्देह करते थे और ख्यालो पर धोखे मे रहे यहाँ तक कि ईश्वर की आज्ञा आ पहुची और राक्षस धोखेवाज ने तुयको अल्लाह के विषय मे धोखा दिया। (१४) सो आज न तो तुमसे छुडाई का वदला कवूल किया जायगा और न उन मनुष्यो से जो इन्कार करते रहे। तुम सवका ठिकाना नरक है वही तुम्हारा मित्र है और तुम्हारा बुरा ठिकाना है। (१५) क्या ईमान वालो के लिए समय नहीं आया कि ईश्वर का जिक्र और कुरान के पढने के लिए जो सच्चे ईश्वर की तरह से उतरा है उनके दिल पिघले और यह उन मनुष्यो की तरह न हो जावें जिनको पहले किताव दी गई थी। फिर उन पर एक समय बीत गया और उनके दिल कठोर हो गये और उनमे वहुत अवज्ञाकारी हैं। (१६) जाने रहो कि अल्लाह पृथ्वी को उसको मेरे पीछे जिलाता है हमने तुम्हारे लिए आयतें वयान की है ताकि तुम्हें समझ हो। (१७) निस्सदेह दान करने वाले और दान करने वालियो और जो लोग ईश्वर को खुशदिली से उधार देते है उन्हे दूना मिलेगा और उनको प्रतिष्ठा का फल मिलेगा। (१८) और जो लोग अल्लाह और उसके पैगम्बर पर ईमान लाये यही लोग अपने पालनकर्ता के निकट सच्चे

और गवाह हैं उनको उनका फल और रोशनी दूर मिलेगी और जो लोग काफिर हुए और हमारी आयतो को झुठलाते हैं यही मनुष्य नरकवासी हैं। (१९) (रुकू २)

मनुष्यो जाने रहो कि इस साँसारिक जीवन का खेल और तमाशा और जाहिरी शोभा है और आपस मे एक दूसरे पर घमण्ड करना और माल और सन्तान बढाना है। यह मेह की तरह है कि काश्तकार खेती को देख कर खुशियाँ मनाने लगते है। फिर पक कर खुश्क हो जाती है तो उसको देखता है कि पीली पड़ गई। फिर मडनी मे आ जाती और पिछले घर मे कठोर दण्ड है। और अल्लाह से रजामन्दी और क्षमा भी है और सासारिक जीवन तो निरा धोखा की टट्टी है। (२०) मनुष्यो अपने पालनकर्ता के दान की तरफ लपको और बैकुण्ठ की ओर लपको जिसका फैलाव है जैसे आकाश और पृथ्वी का फैलाव और वह उन मनुष्यो के लिए तैयार कराई गई है जो ईश्वर और उसके पैगम्बरो पर ईमान लाते हैं। यह ईश्वर की कृपा है जिसको चाहे दे और अल्लाह की कृपा बहुत बड़ी है। (२१) लोगो जितनी मुसीबते जमीन पर उतरती हैं और जो तुम पर उतरती हैं वह सब उनके पैदा करने से पहली हमने किताब मे लिख रक्खी हैं। निस्सन्देह यह अल्लाह के पास सरल है। (२२) और हमने तुमको इसलिए जताया ताकि कोई वस्तु तुमसे जाती रहे तो उसको रज न करो और चीज ईश्वर तुमको दे तो उस पर इतराओ मत और अल्लाह किसी इतराने वाले घमण्डी को पसन्द नही करता। (२३) जो मनुष्य कंजूसी करते है और मनुष्यो को कँजूसी सिखाते हैं और मनुष्य मुंह फेरेगा तो कुछ सन्देह नही अल्लाह बेनियाज तारीफ के योग्य है। (२४) हमने अपने पैगम्बरो को खुले खुले चमत्कार देकर भेजा और उसकी मारफत किताबे उतारी और तराजू ताकि मनुष्य न्याय पर कायम रहें और लोहा पैदा किया उसमे बड़ा खटका है और उसमे मनुष्यो के लाभ हैं और एक मतलब यह भी है कि अल्लाह उन मनुष्यो को मालूम करले जिन्होने अल्लाह को देखा

नही फिर भी अल्लाह और उसके पैगम्बरो की सहायता को खडे हो जाते हैं। निस्सन्देह अल्लाह बडा बलवान है। (२५) (रुकू ३)

और हमने नूह और इब्राहीम को भेजा और उनकी सतान मे पैगम्बरी और किताब को रक्खा। फिर उनमे से कोई राह पर है और बहुतेरे उनमे अवज्ञाकारी हैं। (२६) फिर पीछे उन्ही के कदम व कदम हमने अपने पैगम्बर भेजे और पीछे मरियम के बेटे ईसा को भेजे और उनको इजील दी और जो लोग उनके मुरीद हुए उनके दिलो मे दया और तरस डाल दिया और ससार को छोड बैठना सन्यास जिनको उन्होने अपने आप पैदा किया था* हमने वह उन पर फर्ज नही किया था। मगर उन्होने ईश्वर की प्रसन्नता हासिल करने के लिए जैसा उनको निबाहना चाहिए था न निबाह सके तो जो लोग इन मे से ईमान लाये हमने उनको उनका फल दिया और उनमे से बहुतेरे तो अवज्ञाकारी हैं। (२७) ईमानवालो। अल्लाह से डरते रहो और उसके पैगम्बर मुहम्मद पर ईमान लाओ कि वह अपनी कृपा मे से तुमको दोहरा हिस्सा दे और तुमको ऐसा नूर दे जिसकी रोशनी मे चलो और तुम्हे क्षमा करेगा और अल्लाह क्षमा करनेवाला कृपालु है। (२८) किताब वाले जान रखें कि वह ईश्वर की कृपा पर कुछ भी अधिकार नही रखते और इसलिए कि कृपा अल्लाह के हाथ हैं, जिसको चाहे दे। और अल्लाह की कृपा बडी है। (२९) (रुकू ४)

---

* हजरत ईसा के मानने वाले बडे नेक तपस्वी और बडे दयालु होते थे, इजील द्वारा सन्यास जरूरी न होने पर भी उन्होने सन्यास अर्थात ससारी सुखो से अपने को अलग कर रखा था यह ईश्वर की प्रसन्नता के लिये था।

अट्ठाईसवा पारा (कद समिअल्लाह)

सूरे मुजादिला

मदीने में रवतरित हुई, इसमें २२ आयतें और ३ रूकू हैं

* अल्लाह के नाम से जो कृपालु तथा दयावान है। ऐ पैगम्बर! अल्लाह ने उस औरत की बात* सुन ली जो अपने पति के विषय में तुम से झगड़ती और ईश्वर से बुराई करती थी और अल्लाह तुम दोनों की बात चीत को सुन रहा था। निस्सदेह अल्लाह सुननेवाला, देखने वाला है। जो लोग तुममे से अपनी बीबियों को माँ कह बैठते हैं वह तो उन की माँ नही हो जाती। उनकी मातायें तो वही हैं जिन्होने उनको पैदा-किया है। और उन्होने उनको जना है। और उन्होने एक वेहूदा और झूठी बात कही अल्लाह क्षमा करनेवाला है। (२) और जो लोग अपनी बीबियो से माँ कह बैठते हैं फिर जो कहा था उससे फिरना चाहते हैं तो एक दूसरे को हाथ लगाने से पहले एक गुलाम छोड़ना होगा। यह तुमको शिक्षा दी जाती है और ईश्वर तुम्हारे कामों की खबर रखता है। (३) फिर जो यह न कर सके तो एक दूसरे को हाथ लगाने से पहले लगातार दो महीने के रोजे रखे और जो यह न कर सके तो साठ गरीबों को खाना खिला दे। यह इस लिए है कि तुम अल्ला और उसके पैगम्बर पर ईमान ले आओ यह अल्लाह की बाँधी हुई हद्दें हैं और काफिरों को दुखदाई दण्ड है। (४) जो मनुष्य अल्लाह और

---

*इस्लाम से पहले यदि कोई अपनी पत्नी को माँ या बहन कह देता या तो वह स्त्री उस पुरुष पर सदा के लिए हराम हो जाती थी इस्लाम के बाद एक आदमी से ऐसी ही भूल हो गई, औरत रोती-पीटती मुहम्मद साहब के पास आई। उस पर यह आयत उतरी।

उसके पैगम्बर के विरुद्ध आचरण करते हैं वह ख्वार हुए, जैसे इससे पहले मनुष्य ख्वार हुए थे। और हमने साफ आयतें उतारी और काफिरो के लिए ख्वारी का दण्ड है। (५) जब अल्लाह उन सब को उठायेगा फिर जैसे,जैसे कर्म यह मनुष्य करते रहे हैं, इनको बता देगा। अल्लाह तो उनके कर्मों को गिनता गया और यह उनको भूल गये और अल्लाह सब चीजों की देख-रेख है (६) (रुकू १)

ऐ पैगम्बर ! क्या तूने नही देखा कि जो कुछ आकाश मे है और जो कुछ पृथ्वी मे हैं अल्लाह सब से जानकार है। जब तीन आदमी की सलाह होती है तो अवश्य उनका चौथा वह होता है और पाँच का सलाह मशविरा होता है तो जरूर उनका छटा वह होता है। और इमसे कम हो या ज्यादा कही भी हो वह अवश्य उनके साथ होता है। फिर जैसे-जैसे कर्म यह करते रहे हैं प्रलय के दिन वह उनको जता देगा। अल्लाह हर चीज को जानता है। (७) ऐ पैगम्बर ! क्या तूने उन मनुष्यो को नही देखा जिन को कानाफूसी करने से मना कर दिया गया था ? फिर जिससे उनको मना कर दिया गया था लौट कर वही करते हैं। और वह पाप और अधिकता करने की और पैगम्बर से सरकशी करने की कानाफूसी करते हैं, और जब यह तेरे पास आते हैं तो ऐसी दुआ देते हैं जैसी अल्लाह ने तुझे दुआ नही दी। और यह अपने जी मे कहते हैं कि हमारे कहने पर ईश्वर हम को दण्ड क्यो नही देता ? इनके लिये नरक काफी है। वह उसी मे दाखिल होगे और वह बुरी जगह है। (८) मुसलमानो ! जब तुम कानाफूसी करो तो पाप की और जियादती करने की और पैगम्बर की अवज्ञाकारी की बाते एक दूसरे के कान मे न किया करो, हाँ, नेकी और सयमी की और अल्लाह से डरते रहो जिसके सामने इकट्ठा होना है। (९) ऐसी कानाफूसी तो एक शैतानी हरकत है ताकि जो ईमान लाये हैं उदास होवे। हालाकि ईश्वर की आज्ञा के बिना उनको कुछ भी हानि नही पहुचा सकते और ईमान वालो को चाहिए कि अल्लाह ही पर भरोसा

रखें। (१०) ईमान वालो! जब तुमसे कहा जावे कि मजलिस मे खुल-खुलकर बैठो तो तुम जगह छोड-छोड कर बैठो ईश्वर तुम्हारे लिए ज्यादा कर देगा और जब कहा जाय उठ खडे हो तो उठ खडे हुआ करो जो लोग तुम मे से ईमान रखते है और ज्ञानी हैं, अल्लाह उनके दर्जे ऊचे और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह को उसकी खबर है। (११) ईमान वालो! जब तुमको पैगम्बर के कान मे कोई बात कहनी हो तो अपनी बात कहने से पहले कुछ पुण्य लाकर आगे रख दिया करो यह तुम्हारे लिए भलाई है और ज्यादा पवित्र है। फिर अगर तुम यह न कर सको तो अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है। (१२) क्या तुम पैगम्बर के कान मे * कोई बात कहने से पहले कुछ पुण्य लाकर आगे रखने से डर गये? तो जब तुम ऐसा न कर सको तो ईश्वर ने तुम्हारा यह अपराध क्षमा कर दिया, तो नमाजें पढो और जकात दो और अल्लाह और उस पैगम्बर की आज्ञा मानो और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह को उसकी खबर है। (१३))रुकू २)

क्या तूने उन्हें नही देखा जिन्होने ऐसे मनुष्यो से मित्रता की जिन पर ईश्वर का क्रोध है? यह लोग न तुममे हैं न उनही मे और वह जान-बूझकर झूठी बातो पर सौगन्ध खाते हैं। (१४) उनके लिए ईश्वर ने कठोर दण्ड तैयार कर रखा है। इसमे संदेह नही कि यह मनुष्य बुरा करते हैं। (१५) उन्होने अपनी सौगन्धो को ढाल बना रखा है और यह ईश्वर की राह से लोगों को रोकते हैं, तो उनके लिए ख्वारी का दण्ड है। (१६) अल्ला के यहाँ न, इनके माल कुछ इनसे काम आवेंगे और न इनकी औलाद। यह नरकगामी मनुष्य हैं

---

* कुछ मुनाफिक अपनी शान जताते और यह दिखाने को कि ये मुहम्मद साहब के बड़े मुँह लगे हैं कान में बातें करते थे, उनका भंडाफोड़ करने के लिए ये आयते उतरीं। झूठे भला क्यो पुण्य करते।

जो हमेशा नरक ही मे रहेगे। (१७) जिस दिन अल्लाह इन सबको उठायेगा तो यह उसके आगे कस्मे खावेंगे जैसे यह मुसलमानो के आगे सोगन्ध खाया करते है और समझते हैं कि खूब कर रहे है निस्सदेह यही लोग झूठे हैं। (१८) शैतान ने इन पर काबू जमाया है और उसने इनको ईश्वर की याद भुला दी है। यह शैतानी गिरोह है और शैतानी गिरोह नाश होगे। (१९) जो लोग अल्लाह और उसके पैगम्बर से विरोध करते हैं वही जलील होगे। (२०) ईश्वर तो लिख चुका है कि हम और हमारे पैगम्बर जबर रहेगे। निस्सदेह अल्लाह जोरावर जबर-दस्त है। (२१) ऐ पैगम्बर! जो लोग अल्लाह और प्रलय का विश्वास रखते है उनको न देखोगे कि ईश्वर और उसके पैगम्बर के शत्रुओ के साथ मित्रता रखे चाहे वह उनके बाप या उनके पुत्र या उनके भाई या उनके वश ही के हो। यही है जिनके दिलो के अन्दर ईश्वर ने इमान लिख दिया है और अपनी गुप्त कृपा से उनकी सहायता की है और उनको बागो मे ले जाकर दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरे बह रही होगी। वह हमेशा उन्ही मे रहेगे। खुदा उनमे खुश और वह ईश्वर से खुश। यह खुदाई गिरोह है। खुदाई गिरोह ही की जीत होगी (२२) (रुकू ३)



सूरे हशर

मक्के में अवतरित हुई, इसमें २४ आयतें और ३ रुकू है

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। जो कुछ आकाश मे है और जो कुछ पृथ्वी मे है सब अल्लाह की माला फेरते है और वह बली चमत्कार वाला है। (१) वही है जिसने किताब वालो मे से

इन्कारियो को उनके घरो से जो मदीने में बसते थे पहले* हशर के लिए निकाल बाहर किया। मुसलमानो! तुम यह न विचार करते थे कि यह निकलेंगे और वह इस ख्याल मे थे कि उनके किले उनको ईश्वर के मुकाबले में बचा लेंगे। तो जिधर से उनका विचार भी न था ईश्वर ने उनको घेर लिया और उनके दिलो मे धाक बैठा दी कि उन्होने अपने हाथो और मुसलमानो के हाथो से अपने घरो को खराब कर डाला। तो आँखो वालो! शिक्षा पकडो। (२) और अगर ईश्वर ने दंश निकाले की लिख दी होती, तो वह उनको संसार मे दण्ड देता और अन्त मे उनको नरक की दण्ड है। (३) यह इस कारण से कि इन्होने ईश्वर और उसके पैगम्बर की शत्रुता की और जो ईश्वर से शत्रुता करे तो ईश्वर की मार कठोर है. (४) मुसलमानो! इनके खजूरो के पेड़ जो तुमने काट डाले या इनको उनकी जडो पर खडा रहने दिया ठूंठ कर दिया तो यह ईश्वर ही की आज्ञा से था और इसलिए कि वदकारो को जलील कर। (५) और जो माल ईश्वर ने अपने पैगम्बर को मुफ्त मे उनसे दिलवा दिया हालांकि तुमने उसके लिए न तो घोडे दौड़ाये और न ऊट, मगर अल्लाह अपने पैगम्बरो मे से जिसको चाहे जीत देता है, और अल्लाह हर चीज पर शक्तिमान है। (६) जो माल अल्लाह अपने पैगम्बर की बस्तियो के लोगो मे दिला दे सो अल्लाह का और पैगम्बर का और रिश्तेदारो का और अनाथो का और गरीबो का और यात्रियो का है। यह इस-लिए कि जो तुममे से धनी है, यह माल उन्ही के लेने देने मे आता जाता न रहे। और जो चीज पैगम्बर तुम को दे दिया करे वह ले लिया करो और जिस चीज से मना करें उससे रुके रहो ईश्वर से डरो

* इन आयतों में बनी नुजैर का हाल है। यह लोग यहूदी थे। यह मुसलमानों के विरुद्ध कपटियों की सहायता करते थे। इनको लड़कर इस बात पर विवश किया गया कि यह अपना घर छोड़कर कहीं और चले जायें। यही पहला हशर था।

ईश्वर की मार बडा कठोर है। (७) यह लूट का माल तो गरीब देश त्यागियो के लिए है जो अपने घरो और माल से निकाल दिये गये कि वह ईश्वर की कृपा और उसकी रजामन्दी की चाहना मे लगे हैं और ईश्वर और उसके पैगम्बर की सहायता करते है। यही लोग सच्चे हैं। (८) और वह माल उनके लिए है जिन्होने इस घर यानी मदीने मे और ईमान मे जगह पकड रखी है। जो उनके पास हिजरत देश त्याग करके आता है उसको प्यार करते और जो कुछ उन देश त्यागियो को दिआ जाय दूसरे दिल तग नही करते और जो उनको अपनी जानो पर मुकद्दम* रखते हैं अगर्चे आप तँगी मे हो। और जो अपने जी के लालच से बचाया गया वही मन चाहा पावेगा। (९) और वह माल उनके लिए है जो इन देश त्यागियो के बाद आये। कहते हैं कि हमारे पालनकर्ता! हमको और हमारे उन भाइयो को भी जो हमसे पहले ईमान लाये क्षमा कर और हमारे दिलो मे ईमानवालो की बुराई न डाल। ऐ हमारे पालनकर्ता! तू ही कृपालु और दया करने वाला है। (१०) (रुकू २)

ऐ पैगम्बर! क्या तूने उन लोगो को न देखा जो दगाबाज, कपटी है। किताब वालो मे से काफिरो से कहते हैं कि अगर तुम निकाले जाओगे तो हम भी तुम्हारे साथ निकल जावेगे और तुम्हारे सम्बन्ध मे हम कभी किसी का कहना न मानेगे। और अगर तुमसे लडाई होगी, तो हम तुम्हारी सहायता करेगे और अल्लाह साक्षी बेता है कि वह झूठे हैं। (११) अगर वह निकाले जावें यह उनके साथ न निकलेंगे और उनसे लडाई हुई तो यह कभी इनकी सहायता न करेंगे और जो सहायता देगे तो पीठ देकर भागेगे। फिर कही सहायता न पावेंगे। (१२) इनके दिलो मे तुम्हारा डर ईश्वर से भी बढकर है। यह इस

* पहली आयतो मे उन लोगो का वर्णन था जो मक्के से मदीने चले आये थे। इन आयतो मे उनकी प्रशंसा की गई जो मदीने रहते रहते थे और असार या सहायक कहलाते थे।

कारण से है कि यह लोग ना समझ है। (१३) यह सब मिलकर भी तुम से नहीं लड सकते, मगर किलेवाली बस्तियो मे या दीवारो की आड से। आपस मे इनकी बड़ी धाक है। तू इनको एक समझता है हालाँकि इनके दिल फटे हुए है, यह इसलिए कि यह बेसमझ है। (१४) इनकी* उदाहरण उन जैसी उदाहरण है थोडे ही दिनो पहले अपने किये का मजा चख चुके और इनको दुखदाई दण्ड है। (१५) इनका उदाहरण राक्षस जैसा उदाहरण है, जब वह आदमी से कहता है कि इन्कारी हो। फिर जब वह इन्कारी हुआ तो कहता है कि मुझको तुझसे कुछ मतलब नही। मैं अल्लाह से डरता हू जो ससार का पालन-कर्ता है। (१६) तो इन दोनो का परिणाम यही होता है कि दोनो नरक मे जावेगे। उसी मे हमेशा रहना होगा और सरकशों का यही दण्ड है। (१७) (रुकू २)

मुसलमानो! ईश्वर से डरते रहो और हर आदमी का ध्यान रखना चाहिए कि उसने कल के लिए क्या कर रखा है और ईश्वर से डरो। जो कुछ तुम करते हो अल्लाह को उसकी खबर है। (१८) और उन लोगो की तरह न बनो जिन्होने ईश्वर को भुला दिया, तो ईश्वर ने भी ऐसा किया कि यह अपने आप को भूल गये। यही अवज्ञा-कारी है। (१९) नरकवासी और स्वर्ग वासी बराबर नही, स्वर्गवासी ही कामयाब है। (२०) ऐ पैगम्बर! अगर हमने यह कुरान किसी पहाड़ पर उतारा होता तो तू देखता कि ईश्वर के डर के मारे वह झुकगया और फट गया होता और हम यह उदाहरण लोगो के लिए बयान फर्माते है ताकि वह सोचें। (२१) वही अल्लाह है जिसके सिवाय कोई पूजित नही। छिपे और सामने का जानने वाला बडा कृपालु है। (२२) वही अल्लाह जिसके सिवाय कोई पूजित नही। बादशाह है,

*यह बद्र के काफिरों की ओर संकेत है। बद्र की लड़ाई मे उनकी बहुत बुरी हार हुई थी।

निर्दोष है, शान्तिदाता निरीक्षक है, शक्ति वाला है, बडा तेजस्वी है। यह लोग जैसे-जैसे शिर्क ईश्वर की जात व गुण मे साझा करते है, अल्लाह उससे पवित्र है। (२३) वही अल्लाह पैदा करनेवाला, बनाने वाला, सूरते देनेवाला है, उसके सब नाम अच्छे है जो कुछ पृथ्वी आकाश मे है वह उसी की माला फेरा करते है और वह बडा चमत्कार वाला है। (२४) (रुकू ३)



सूरे मुम्तहना

मक्के में अवतरित इसमें १३ आयते और २ रुकू है

अल्लाह के नाम पर जो कृपालु तथा दयावान है ईमान वालों! अगर तुम हमारी राह मे जेहाद करने और हमारी रजामन्दी ढूंढने के लिए निकले हो तो हमारे और अपने शत्रुओ को मित्र न बनाओ तुम तो उनकी तरफ प्रेम के सदेश भेजते हो हालांकि तुम्हारे पास जो सच बात आई है वह उससे इन्कार करते हैं। पैगम्बर को और तुमको इस बात पर निकालते है कि तुम ईश्वर पर, जो तुम्हारा पालनकर्ता है, ईमान लाये हो। तुम छिपकर उनकी तरफ प्रेम के सदेश भेजते हो और जो कुछ तुम छिपाकर करते हो और जो कुछ जाहिरा करते हो हम खूब जानते हैं। और जो कोई तुममे से ऐसा करे सो वह सीधी राह से भटक गया। (१) और वह तुम्हें पावें तुम्हारे शत्रु हो जावे और तुम्हारी तरफ अपने हाथ चलायेंगे और बुराई के साथ अपनी जबान भी चलायेंगे कि तुम भी काफिर हो जाओ। (२) प्रलय के दिन न तुम्हारी रिश्तेदारी तुमको काम आवेगी और न तुम्हारी सतान। वह तुममे निर्णय कर देगा और ईश्वर तुम्हारे कामो को देखने वाला

हैं। (३) इब्राहीम मे और उसके साथियों मे तुम्हारे लिए अच्छा नमूना है जब उन्होने अपनी जाति से कहा कि हम तुमसे और जिनको तुम अल्लाह के सिवाय पूजिते हो उनसे अलग हैं। हम तुमको नही मानते और हममे और तुममे शत्रुता और बैर हमेशा के लिए खुल पड़ा जब तक तुम अकेले ईश्वर पर ईमान न ले आओ, मगर इब्राहीम का कहना बाप के लिए यह था कि मैं तेरे लिए क्षमा माँगूगा हालाकि ईश्वर के आगे तेरे लिए मेरा कुछ जोर तो चलता नहीं। ऐ हमारे पालनकर्ता हम तुझी पर भरोसा करते हैं और तेरी ही तरफ ध्यान धरते हैं और तेरी ही तरफ लौट कर जाना है। (४) ऐ हमारे पालनकर्ता हम पर काफिरो को विजय न दे और ऐ हमारे पालनकर्ता हमको क्षमा कर, तू बली चमत्कार वाला है। (५) तुमको उनकी भली चाल चलनी है जो अल्लाह पर और प्रलय पर उम्मेद रखते हैं और जो कोई मुंह फेरे तो ईश्वर बेपरवाह और बड़ाई के योग्य है। (६) (रुकू १)

आश्चर्य नहीं कि अल्लाह तुममें और राक्षसो मे जिनके साथ तुम्हारी शत्रुता है मित्रता पैदा कर दे और अल्लाह सब कर सकता है और अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है। (७) जो लोग तुमसे दीन मे नही लड़े न उन्होने तुमको तुम्हारे घरों से निकाला उनके साथ भलाई करने और न्याय का बर्ताव करने से ईश्वर तुमको मना नही करता। अल्लाह न्याय पर चलने वालो को चाहता है। (८) अल्लाह तुम्हें उनकी मित्रता से मना करता है जो तुमसे दीन के बारे मे लडे और जिन्होने तुमको तुम्हारे घरो से निकला और तुम्हारे निकालने मे दूसरो की सहायता की और जो कोई ऐसो की दोस्ती रखे तो लोग अत्याचारी हैं। (९) ईमान वालो ! जब तुम्हारे पास ईमान वाली औरतें घर छोड़ कर आवे तो उनको जाँचो अल्लाह उनके ईमान को खूब जानता है अगर तुम्हें मालूम हो कि वह ईमान वाली हैं तो उनको राक्षसो के पास न फेरो। वह राक्षसों को हलाल नही और न राक्षस उन्हें हलाल हैं और जो उन राक्षसो ने खर्च किया है उनको दे दो तुम

पर पाप नही कि उन औरतो से ब्याह करो जब कि तुम उनको उनके मिहर पति का करार स्त्री के लिये, दे दो और तुम काफिर औरतो का निकाह न थाम रखो* और जो तुमने खर्च किया है माँग लो और उन काफिरो ने खर्च किया है वे भी माँग लें। यह अल्लाह की आज्ञा है जो तुम्हारे बीच न्याय करता है अल्लाह जानने वाला चमत्कार वाला है। (१०) और अगर तुम्हारी औरतो मे से राक्षसो की तरफ कोई औरत निकल जावे फिर तुम राक्षसो को क्रोधी होकर मारो यानी लडाई कर के लूटो तो लूट के माल मे से उनको जिसकी औरतें जाती रही हैं उतना माल दे दो जितना उन्होने खर्च किया था और अल्लाह से डरो जिस पर ईमान लाये हो। (११) ऐ पैगम्बर जब तेरे पास मुसलमान औरतें आवें और इस पर तेरी चेली बनाना चाहें कि किसी चीज को अल्लाह का साझी नही ठहरावेंगी और न चोरी करेंगी और व्यभिचार करेंगी और न लड़कियो को मार डालेंगी और न अपने हाथ पाँव के आगे कोई लफट बनाकर खड़ा करेंगी और न अच्छे कामो मे तुम्हारी अवज्ञा करेंगी तो इन शर्तो पर तुम उनको चेली बना लिया करो और ईश्वर के सामने उनके लिये क्षमा की प्रार्थना करो और अल्लाह क्षमा करने वाला दयालु है। (१२) ऐ मुसलमानो ऐसे लोगो से मित्रता न करो जिन पर ईश्वर का क्रोध है। यह तो पिछले दिन से ऐसे आशा तोढ बैठे हैं जैसे काफिर कब्र वालो के जी उठने से निराश हैं। (१३) (रुकू २)



---

* यानी जो औरतें मुसलमान नहीं उनको अपने अधिकार मे न रक्खो इनको उनका मिहर अलग कर दो ताकि वह जिससे चाहें अपना ब्याह कर लें।

सूरे सफ्फ

मदीने में अवतरित हुई, इसमें १४ आयतें, २ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। जो कुछ आकाश मे और जो कुछ पृथ्वी मे है अल्लाह की पवित्रता बोलने मे लगे हैं और वही बडे चमत्कार वाला है। (१) हे ईमान वालो क्यो मुह से कहते हो जिसको तुम नही करते। (२) अल्लाह को कठोर ना पसन्द है कि कहो और करो नही (३) निस्सन्देह ईश्वर उन लोगो का प्यार करता है जो उसकी राह मे कतार बाँधकर लडते है। वह गोया एक दीवार है जिसमे सीसा पिला दिया गया है। (४) और जब मूसा ने अपनी जाति से कहा कि भाइयो मझे क्यो सताते हो हालाँकि तुम जानते हो कि मैं तुम्हारी तरफ ईश्वर का भेजा हुआ हू तो जब यह टेटे कर दिये और अवज्ञाकारी मनुष्यो को आज्ञा नही दिया करता। (५) और जब मरियम के बेटे ईसा ने कहा कि ऐ इसराईल के बेटो मैं तुम्हारी तरफ अल्लाह का भेजा हुआ आया हू। तौरात जो मुझसे पहले है उसकी सच्चाई करता हू और एक पैगम्बर का शुभ सन्देश देता हू जो मेरे बाद आयगा उसका नाम अहमद होगा। फिर जब वह खुली निशानियाँ लेकर आया वह बोले कि यह तो साफ जादू है। (६) और उससे बढकर कौन अत्याचारी है जिसने अल्लाह पर झूठ बाँधा हालाँकि वह इस्लाम की तरफ बुलाया जाये और ईश्वर अत्याचारी मनुष्यो को आदेश नही करता। (७) अल्लाह की रोशनी मुह से बुझा देना चाहते हैं और अल्लाह को अपनी रोशनी पूरी करनी है हालाँकि काफिरो को यह बुरा ही लगे। (८) (रुकू १)

वही है जिसने अपना पैगम्बर शिक्षा और सच्चा मत देकर भेजा ताकि उसको तमाम दीनो पर जय दे और शिर्क करने वाले को भले ही बुरा लगे। (९) ऐ ईमान वालो मैं तुमको ऐसा व्यापार बताऊ

जो तुमको दु खदाई दण्ड से बचा दे। (१०) ईश्वर और उसके पैग-म्बर पर ईमान लाओ और ईश्वर की राह मे अपने माल और अपनी जानो मे कोशिश करो यह तुम्हारे लिये भला है अगर समझ हो (११) वह तुमको तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा और तुम्हें बागो मे दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होगी। वहाँ के बागो मे अच्छे मकान है यह ही बडी सफलता है। (१२) एक और चीज जिसे तुम पसन्द करोगे यानी ईश्वर की तरफ से सहायता और थोडे ही दिनो मे एक जीत और ईमान वालो को शुभ सन्देश सुना दे। (१३) और ईमान वालो ! ईश्वर की सहायता करने वाले हो जाओ जैसे मरीयम के लडके ईसा ने हव्वारियो से कहा था कि अल्लाह की तरफ मेरा कौन सहायक है फिर इसराईल की सतान मे से एक गुट ईमान लाये और एक ने इन्कारी की। तो जो मनुष्य ईमान लाये थे हमने उनको उनके शत्रुओ के मुकाबिले मे सहायता दी और उनकी जीत हुई। (१४) (रुकू २)

—o—

सूरे जुमा

मदीने मे अवतरित हुई इसमें ११ आयतें और २ रूकू है।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। जो कुछ आकाश मे है और जो कुछ पृथ्वी मे है अल्लाह की पवित्रता बोलने में लगे हैं जो बादशाह बडा चमत्कार वाला है। (१) वही है जिसने मूर्खो मे उनमे का एक पैगम्बर भेजा कि वह उनको उसकी आयतें पढ-पढ कर सुनाये और उनको पवित्र करे और उनको किताब और चमत्कार सिखाये हालाँकि इससे पहले वह प्रत्यक्ष कुमार्ग मे थे। (२) और दूसरो मे यानी अजम के मनुष्यो यानी यह पैगम्बर अजम के मनुष्यो मे भी है। जो अभी उन अरब वालो मे नही मिले और वह बडा चमत्कार वाला

है। (३) यह ईश्वर की कृपा है जिसे चाहे देवे और अल्लाह की कृपा बड़ी है। (४) यहूदियो ने जिन मनुष्यों पर तौरात लादी गई। फिर उन्होने उसको नही उठाया नो उनकी मिसाल किताब लादे गये जैसी है। जो मनुष्य ईश्वर की आयतो को झुठलाते हैं उनके उदाहरण वडे बुरे हैं और ईश्वर अत्याचारियो को आदेश नहीं दिया करता। (५) तो कह कि ऐ यहूद अगर तुमको दावा है कि तमाम मनुष्यो में से तुम्ही ईश्वर के मित्र हो तो अगर तुम सच कहते हो तो मृत्यु को मनाओ। (६) उन कामो के कारण से जो अपने हाथो कर चुके है वह कभी मौत को न मनायेगे और अल्लाह अन्यायियो को जानता है। (७) तो कह कि मौत जिससे तुम भागते हो वह जरूर तुम्हारे सामने आवेगी। फिर तुम गुप्त और प्रत्यक्ष जानने वाले ईश्वर की तरफ लौटाये जाओगे और वह तुमको जरूर काम वतायेगा। (८) (रुकू १)

ऐ ईमान वालो जब शुक्र के दिन नमाज के लिये अजाँ दी जावे तो तुम अल्लाह की याद को दौड़ो और वेचना छोड़ दो अगर आपको समझ है तो यह आपके लिये भला है। (९) फिर जब नमाज समाप्त हो हो जावे तो अपनी-अपनी राह लो और ईश्वर की याद मे लग जाओ और अधिकता से ईश्वर की याद करते रहो ताकि तुम छुटकारा पाओ, (१०) और जब यह व्यापार या खेल देखते हैं तो उसकी तरफ दौड जाते हैं और तुमको खडा छोड देते हैं तो कह कि जो कुछ ईश्वर के यहाँ है वह खेल और व्यापार से भला है और अल्लाह रोजी देने वालो में सबसे अच्छा है। (११) (रुकू २)



सूरे मुनाफिकून

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ११ आयतें और २ रुकू है

अल्लाह के नाम जो कृपालु व दयावान है। जब तेरे पास मुनाफिक आते हैं तो यह कहते हैं कि हम साक्षी देते हैं कि तू निस्सन्देह ईश्वर का पैगम्बर है। और ईश्वर जानता है कि तू उसका पैगम्बर है। मगर ईश्वर साक्षी देता है कि मुनाफिक निस्सदेह ईश्वर झूठे हैं। (१) यह अपनी सौगन्ध को डाल बनाते हैं और लोगो को ईश्वर की राह से रोकने है। ये लोग बुरे काम करते है। (२) यह इसलिए कि अब वह ईमान लाये पीछे काफिर हो गये है तो उनके दिलो पर मुहर कर दी गई है और वह समझते नहीं। (३) और जब तू उनको देखता है तो तुझको उनके शरीर अच्छे मालूम होते हैं और अगर यह बातें करते हैं तो उनकी बातो को सुनता है। वह गोया लकड़ी के कुन्दे हैं जो दीवार से लगे हुए हैं। जानते हैं कि हर एक बला उन्ही पर आई। यह शत्रु है बस इनसे बच। ईश्वर उनको भेंट दे यह किधर को फिरे जा रहे हैं। (४) और जब उनसे कहा जाता है कि आओ ईश्वर के पैगम्बर तुम्हारे लिये माफी माँगें तो अपने सिर मरोरते हैं और तू उनको देखेगा कि रोकते और गरूर करते हैं। (५) उसके लिए बराबर है चाहे उनके लिये क्षमा मांग या न मांग ईश्वर उनको कदापि क्षमा न करेगा निस्सन्देह ईश्वर बुरे मनुष्यो को राह नही देता। (६) यही हैं जो कहते हैं कि जो लोग ईश्वर के रसूल के पास रहते हैं उन पर खर्च न करो यहाँ तक कि खण्ड-खण्ड हो जावे और आकाश और पृथ्वी के खजाने अल्लाह ही के है। मगर मुनाफिक नही समझते। (७) कहते है अगर हम मदीने फिर गये तो जिनका जोर है वहाँ से वह जलील मनुष्यो को जरूर निकाल देंगे और जोर अल्लाह का, पैगम्बर का और ईमान वालो का हैं। लेकिन मुनाफिक नही समझते। (८) (रुकू १)

ऐ ईमान वालों तुमको तुम्हारे माल तुम्हारी सन्तान अल्लाह का याद से गाफिल न करे और जो कोई करेगा तो वही टोटे मे रहेगा। (९) और जो कुछ हमने तुमको दिया है उसमें से खर्च करो पहिले इससे कि तुममें से किसी की मौत आ जावे और वह कहे कि ऐ मेरे पालनकर्ता तू ने मुझको थोड़े दिन और क्यो न ढील दिया कि मैं दान करता और नेक मनुष्यों मे होता। (१०) और जब किसी जीव का काल आ जावेगा तो ईश्वर उसको हरजिग न छोड़ेगा। और तुम्हारे कामो की खबर रखता है। (११) (रुकू २)



सरे तगाबुन

मदीने में अवतरित हुई, इसमें १८ आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम जो कृपालु व दयावान है। जो कुछ आकाश मे है और पृथ्वी मे है सब अल्लाह की पवित्रता बोलने मे लगे हैं उसी का राज्य है और वह हर चीज पर शक्तिमान। (१) वही है जिसने तुमको पैदा किया। फिर कोई तुममे इन्कारी है और कोई ईमानदार और जो करते हो अल्लाह देखता है। (२) आकाश और पृथ्वी को तदबीर से बनाया और उसी ने तुम्हारी सूरतें बनाई। और तुम्हारी अच्छी सूरते खीची और उसी को ओर लौट कर जाना है। (३) वह जानता है जो कुछ आकाश और पृथ्वी मे है और वह जानता है जो तुम छिपाते हो और जो तुम प्रत्यक्ष करते हो और ईश्वर दिलो की बातें जानता है। (४) क्या तुम्हारे पास इन मनुष्यो की सन्देश नही पहुचा जिन्होने इससे पहिले इन्कार किया था और अपने कामों के ववाल का आनन्द चक्खा और उनको दु:खदाई दण्ड होना है। (५) इसलिये कि उनके

पास पैगम्बर प्रत्यक्ष उदाहरण लेकर आये और बोले कि क्या मनुष्य हमे राह दिखायेंगे और उन्होने पैगम्बर को न माना और मुह फेरा और अल्लाह ने परवाह न की और ईश्वर असख्य बडाई के योग्य है। (६) काफिर दावा करते हैं वे उठाये न जावेंगे। तू कह हाँ! मुझे अपने पालनकर्ता की सौगन्ध तुम उठाये जाओगे। फिर तुम्हें जताया जावेगा जो तुम करते थे और यह अल्लाह पर आसान है। (७) तो अल्लाह और उसके पैगम्बर पर ईमान लाओ और उस प्रकाश पर जो हमने उतारा है। और जो तुम करते हो अल्लाह को उसकी सूचना हैं। (८) इकट्ठा करने के दिन, जिस दिन वह तुम्हें इकट्ठा करेगा वह दिन हार जीत का है और जो कोई ईश्वर पर ईमान लाये और नेक काम करे तो वह उसकी बुराइयाँ दूर करेगा उसको वैकुण्ठ मे प्रविष्ठ करेगा जिनके नीचे नहरें बहती हैं उसमे वह हमेशा रहेंगे यह बडी सफलता है। (९) और जो काफिर हुए और हमारी आयतो को झुठलाया वह नरकवासी हैं। उसमे हमेशा रहेंगे और वह बुरी जगह है। (१०) (रुकू १)

अल्लाह की आज्ञा के बिना कोई आफत नही आती और जो कोई अल्लाह पर विश्वास करे ईश्वर उसके दिल को ठिकाने से लगाये रखेगा और अल्लाह हर चीज से जानकार है। (११) और अल्लाह की और पैगम्बर की आज्ञा मानो, फिर अगर तुम मुंह मोडो तो पैगम्बर की काम तो साफ-साफ पहुचा देना है। (१२) अल्लाह है उसके कोई पूजित नही और ईमान वालो को चाहिये कि अल्लाह ही पर भरोसा रक्खें। (१३) ऐ ईमान वालो तुम्हारी कोई-कोई स्त्रियां और सतान तुम्हारे शत्रु हैं सो उनसे बचते रहो* और जो क्षमा करो और क्षमा

---

* हिजरत के बाद मुसलमानों का एक जत्था मदीना आना चाहता था उनके बेटे और बीबियां रोने लगी और उनको रुक जाना पडा। यह आयतें उन्हीं के लिए उतरीं।

कर दो तो ईश्वर भी क्षमा करने वा ा और कृपा करने वाला है। (१४) तुम्हारा धन तुम्हारी जांच के लिए है और ईश्वर के यहां बडा फल है। (१५) तो अल्लाह से डरो जितना डर सको और सुनो और मानो अपने भले को व्यय करो जो कोई अपने जी के लालच से वचा वही मनुष्य मन इच्छा पावेंगे। (१६) अगर तुम अल्लाह को खुशदिली से उधार दो तो वह तुमको उसका दूना करेगा और तुम्हारे पाप क्षमा करेगा और अल्लाह कदर जानने वाला दयालु है। (१७) गुप्त और प्रत्यक्ष का जानने वाला वली चमत्कार वाला है। (१८) (रुकू २)

सूरे तलाक

मक्के में अवतरित हुई इसमें १२आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। पैगम्बर जब तुम स्त्रियों को तलाक देना चाहते हो तो उनको उनकी इद्दत * के शुरु मे तलाक दो और अल्लाह तालाक के बाद ही से इद्दत गिनने लगो और ईश्वर से जो तुम्हारा पालनकर्ता है डरते रहो उन्हें उनके घरो से न निकालो और वह खुद न निकलें। हां प्रलय वेशर्मी का काम कर बैठे तो इनको घर मे निकाल दो। यह अल्लाह की बांधी हदें हैं और जिस मनुष्य ने अल्लाह की हदों से कदम बाहर रक्खा उसने अपने ऊपर अत्याचार किया। कौन जाने शायद अल्लाह तलाक के बाद कोई

---

*इद्दत उस समय को कहते हैं जिसमें तलाक दी हुई औरत या जिसका पति मर गया है ब्याह नहीं कर सकती।

सूरत पैदा कर दे। (१) फिर जब वह अपनी इद्दत पूरी कर ले तो दस्तूर के कपटी उनको रक्खो या नियम के अनुसार उनको विदा कर दो और अपने मे से दो विश्वसनीय आदमियो को साक्षी कर लो और ईश्वर को आगे साक्षी पर रहो। यह उसकी की जाती है जो ईश्वर पर और प्रलय पर ईमान रक्खे और जो कोई ईश्वर से डरा तो वह उसके लिए राह निकाल देगा और उसे ऐसी जगह से रोजी देगा जहाँ से उनको विचार भी न हो। (२) और जो मनुष्य ईश्वर पर भरोसा रक्खेगा तो ईश्वर उसको काफी है। अल्लाह अपना काम पूरा कर लेता है। अल्लह ने हर चीज का अनुमान ठहरा रक्खा है (३) और तुम्हारी औरतो मे से जिनकी रजस्वला होने की आशा नही अगर तुमको सन्देह हो तो उनकी इद्दत तीन महीने है और जिन औरतो को रजस्वला होने का समय नही आया यही तीन माह उनकी इद्दत और गर्भवती स्त्रियाँ उनकी इद्दत बच्चा जनने तक और जो ईश्वर से डरता रहेगा ईश्वर उसके काम आसान करेगा। (४) यह ईश्वर की आज्ञा है है जो उसने तुम पर उतारा है और जो कोई ईश्वर से डरे तो उसकी बुराइयो को उससे दूर कर देगा। और उसको बडा फल देगा। (५) तलाक दी हुई औरतो को अपनी सामर्थ्य के अनुसार वही रक्खो जहा तुम रहो और उन पर कठोरता करने के लिए दु:ख न दो और अगर गर्भवती हो तो बच्चा जनने तक उनका खर्च उठारते रहो और अगर वह तुम्हारे लिए दूध पिलायें तो उनको उनकी दूध पिलाई दो और आपस की सलाह से नियमानुसार काम करो और अगर आपस मे जिद्द करोगे तो दूसरी औरत उसको दूध पिलावेगी। (६) सामर्थ्य वाला अपनी सामर्थ्य के अनुसार व्यय करे और जिसकी रोजी नपी तुली हो जैसा उसको ईश्वर ने दिया है उसी के अनुसार व्यय करे और अल्लाह किसी को कष्ट देना नही चाहता मगर जितना उसने उसे दिया। अल्लाह तगी के बाद आसा न कर देगा। (७) (रुकू १)

और कितनी बस्तियाँ थी कि उन्होंने अपने पालनकर्ता की आज्ञा से और उसके पैगम्बर की आज्ञा से सिर उठाया पर अनदेखी तो हमने

उनसे कठिन हिसाब लिया और उनको आफत डाली। (८) तो उन्होंने अपने किये का आनन्द लिया और उनको परिणाम मे हानी हुई। (९) ईश्वर ने उनके लिए बुरी मार तैयार कर रक्खी है तो बुद्धिमानो! जो ईमान ला चुके हों ईश्वर से डरो। (१०) और अल्लाह ने तुम्हारी तरफ समझौता उतारा। पैगम्बर जो अल्लाह को खुली आयतें पढ-पढ़ कर सुनाता हैं ताकि जो मनुष्य ईमान रखते और नेक काम करते हैं उनको अंधेरे से निकाल कर रोशनी मे लावें और जो कोई ईश्वर पर ईमान लाये और भले काम करे तो वह उसको बैकुण्ठ मे दाखिल करेगा जिसके नीचे नहरें बह रही होगी। वह हमेशा उन्ही मे रहेंगे। अल्लाह ने उसको अच्छी रोज़ी दी है। (११) ईश्वर वह है जिसने सात आकाश को बनाया और उसी के अनुसार पृथ्वी भी। इन दोनो के बीच आदेश आते रहते हैं ताकि तुम जानो कि ईश्वर हर चीज़ कर सकता है और अल्लाह के ज्ञान, जानकारी में हर चीज समाई है। (१२) (रुकू २)

सूरे तहरीम

मदीने में अवतरित हुई, इसमें १२ आयतें और २ रुकू हैं

ऐ पैगम्बर अपनी स्त्रियों को खुश करने के लिए तू अपने ऊपर उस* चीज को क्यों हराम करता हैं जो ईश्वर ने तेरे लिए हलाल की

* कहते हैं कि एक दिन मुहम्मद साहब ने अपनी बीबी जैनब के यहाँ शहद खा लिया था। दूसरी बीबियों ने जिनका नाम आइशा और हफ्सा था, आप से कहा कि आपके मुंह से दुर्गन्ध आती है इस पर आप ने कहा कि मैं अब भविष्य में कभी शहद न खाऊँगा कुछ लोग कहते हैं कि बीबी हफ्सा को खुश करने के लिए आपने बीबी मारिया को अपने ऊपर हराम कर लिया था। इस पर यह आयतें उतरीं।

है और ईश्वर दया करने वाला कृपालु है। (१) तुम लोगो के लिए ईश्वर ने तुम्हारी सौगन्धो के तोड़ने की भी आज्ञा है और अल्लाह ही तुम्हारा सहायक और वह जानकार चमत्कार वाला है। (२) और जब पैगम्बर ने अपनी स्त्रियों मे से किसी से एक वात चुपके से कही और जब उसने उसकी खबर कर दी और ईश्वर ने उस पर इस वात को प्रकट कर दिया तो पैगम्बर ने कुछ कहा और कुछ टाल दिया। फिर जव वह उस स्त्री को बता दिया तो वह बोली तुझको यह किसने वताया। वह वोला मुझको उस खबरदार जानने वाले ने वताया है। (३) अगर तुम दोनो हिफसह और आयशा अल्लाह की तरफ तोवा करो क्योकि तुम दोनो के दिल टेढ़े हो गये हैं और जो तुम दोनो पैग-म्बरो पर चढ़ाई करोगी अल्लाह और जिब्राईल और नेक ईमान वाले उसके मित्र हैं और उसके बाद फिरिश्ते उसके सहायक है। (४) अगर पैगम्बर तुम सबको तलाक दें तो आश्चर्य नही कि उसका पालनकर्ता तुम्हारे बदले उसको तुमसे अच्छी स्त्रियाँ दे। जो ईमानवाली, अज्ञा-कारी, तोबा करने वाली, नमाज मे खडी होने वाली, वन्दगी वजा लाने वाली, जहन रखने वाली, विवाहित और क्वारी हो।(५) हे ईमान वालो! अपने को और घर वालो को उस आग से वचाओ जिसका ईंधन आदमी है और पत्थर हैं। जिस पर कठोर हृदय और बलवान फिरिश्ते नियत हैं कि जो कुछ ईश्वर उनको आज्ञा मानता है उससे अवज्ञा नही करते और जो कुछ उनको आदेश दिया जाता है करते है। (६) ऐ काफिरो आज के दिन कुछ मना न करो वही बदला पाओगे जो तुम करते हो। (७) (रुकू १)

ऐ ईमानवालो! ईश्वर के सामने साफ दिल से तोवा करो शायद तुम्हारा पालनकर्ता तुमसे तुम्हारी वुराइया दूर कर दे और तुमको बागो मे प्रविष्ठ करे जिनके नीचे नहरें बह रही हैं। उस दिन ईश्वर नबी को और जो उसके साथ ईमान लाये उनको लज्जित न करेगा उनकी रोशनी उनके आगे और दाहिनी ओर दौडती होगी और वह

कहेंगे ऐ हमारे पालनकर्ता ! हमारी रोशनी को हमारे लिए पूरा करदे और हमको क्षमा कर। निस्सदेह तू हर चीज पर शक्तिमान है (८) ऐ पैगम्बर काफिरों से और कपटियों से जिहाद कर और उन पर कठोरता कर उनका ठिकाना तो नरक है और वह बुरी जगह है। ईश्वर ने काफिरों के लिए नूह* की बीबी और लूत के उदाहरण बयान किए है। (९) दोनो हमारे दो भले सेवको के अधिकार मे थी। मगर उन दोनो ने उनको दण्ड दिया। बस वह दोनों सेवक उन औरतो से ईश्वर की दण्ड न उठा सके और उनसे कहा गया कि तुम दोनो दाखिल होने वालों के साथ नरक की आग में दाखिल हो। (१०) और ईश्वर ने ईमान वालों के लिए फिरऔन की उदाहरण बताया है। जब उस स्त्री ने कहा कि ऐ मेरे* पालनकर्ता मेरे लिए वैकुण्ठ मे अपने पास एक घर बना और मुझको फिरऔन और उसके काम से बचा निकाला और अत्याचारियों से बचा। (११) और इमरान की पुत्री जिसने अपनी शिहवत की जगह रोकी और हमने उसमे अपनी रूह फूंकदी और वह अपने पालनकर्ता की बातें और उसकी वस्तुओं को मानती थी और ईश्वर की आज्ञाकारिणी थी (१२) (रुकू २)।

---

* नूह और लूत की बीबियां काफिरों में से था इसलिए ईश्वर के कोप से न बच सकीं।

*फिरऔन की स्त्री इन्कारियों में से नहीं थी। फिरऔन ने उस बहुत दुख दिया फिर भी वह ईमान पर जमी रहीं।

उनतीसवाँ पारा (ताबारकल्लजी)

सूरे मुल्क

मक्के में अवतरित हुई, इसमे ३० आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। उसकी बड़ी दया है जिसके हाथ मे राज्य है। और वह हर चीज पर शक्तिमान है।(१) जिसने मरना, जीता बनाया ताकि तुमको जाँचे कि तुममे कौन अच्छा काम करता है और वह बली क्षमा करने वाला है। (२) जिसने ऊपर सात आकाश बनाए। भला तुमको दयावान की कारीगरी मे कोई कमी दिखाई देती है फिर एक निगाह दौडा कही कमी दिखाई देती है। (३) फिर दुबारा निगाह दौडा तेरे नजर खिसयानी होकर थकी हारी तेरी तरफ उल्टी लौट आवेगी। (४) और हमने पहिले आकाश को दीपको से सजा रक्खा है और हमने इन दीपको को राक्षस के लिए मार की चीज बनाई है और हमने उनके लिए नरक का दण्ड तैयार कर रक्खा है। (५) और जो मनुष्य अपने पालनकर्ता को नहीं मानते उनके लिए नरक का दण्ड है और बुरी जगह है। (६) जब ये उसमे डाले जावेंगे तो वह उसका चिल्लाना सुनेंगे और वह भडक रही होगी। (७) कोई समय मे मारे जोश के फट पडेगी। जब-जब कोई गिरोह उसमें डाला जायगा तो जो उस पर तैनात हैं उनसे पूछेंगे क्या तुम्हारे पास डराने वाला नही आया। (८) वह कहेगे हां डराने वाला तो हमारे पास आया था, मगर हमने झुठलाया और कहा ईश्वर ने कोई चीज नही उतारी। तुम बडी भटक मे पडे हो (९) और अगर हमने सुना और समझा होता तो नरकवासियो मे न होते। (१०) वो उन्होने अपना पाप मान लिया बस नरकवासियो पर धिक्कारता है। (११) जो लोग वे देखे अपने पालनकर्ता से डरते हैं उनके लिये दान

और बड़े फल हैं। (१२) और तुम अपनी बात चुपके से कहो या पुकार कर कहो वह दिलो के भेद को जानता है। (१३) भला वह न जाने जिसने बनाया और वही बारीक बात को देखने वाला खबरदार है। (१४) (रुकू १)

वही है जिसने तुम्हारे लिये पृथ्वी को नरम कर दिया। उसकी चलने की जगहो पर चलो और उसका दिया हुआ खाओ। और जी उठा कर उसी की तरफ चलाना है। (१५) जो आकाश में है क्या तुम उससे नही डरते कि पृथ्वी मे तुमको धंसा दें और वह झकोरे मारा करें। (१६) क्या तुम उससे निडर हो गये जो आकाश मे हैं कि तुम पर पत्थर बरसावें जो तुमको मालूम हो जायगा कि हमारा डराना कैसा हुआ। (१७) और जो मनुष्य इनसे पहिले हो गये हैं उन्होने भी हमारे पैगम्बरों को झुठलाया था तो हमारी ना खुशी कैसी हुई (१८) क्या इन मनुष्यो ने पक्षियों को नही देखा जो उनके ऊपर पख खोले और समेटे हुये उड़ते हैं, दयावान ही उनको थामे रहना है वह हर चीज को देखता है। (१९) भला दयावान के सिवाय ऐसा कौन है, जो तुम्हारा लश्कर बनकर तुम्हारी सहायता करे निरे धोके मे हैं। (२०) अगर ईश्वर अपनी रोजी रोक ले तो भला ऐसा कौन है जो तुम को रोजी पहुचा दे, मगर काफिर तो सरकशी और भागने पर अडे बैठे है। (२१) तो क्या जो मनुष्य अपना मुंह औंधाये हुए चले वह ज्यादा पर है या वह मनुष्य जो सीधी राह पर चलता है। (२२) ऐ पैगम्बर कहो कि वही है जिसने तुमको पैदा किया और तुम्हारे लिये कान और आँखें और दिल बनाये तुम थोडा ही धन्यवाद करते हो। (२३) ऐ पैगम्बर कहो कि वही है जिसने तुमको पृथ्वी मे फैला रक्खा है और उसी के सामने जमा किये जावोगे। (२४) और कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो बताओ यह वादा कब होगा। (२५) ऐ पैगम्बर! उत्तर दो कि इसका ज्ञान तो ईश्वर ही को है और मैं तो साफ तौर से डराने वाला हू। (२६) फिर जब देखेगे कि वह प्रलय पास आ पहुची तो काफिरो की शक्लें बिगड़ जायगी और कहा जायगा यही वह दण्ड

है जो तुम मागा करते थे। (२७) ऐ पैगम्बर कहो अगर अल्लाह मुझ को और जो मनुष्य मेरे साथ हैं उनको मार डाले या हमारे हाल पर कृपा करे तो कोई है जो काफिरों को दु:खदाई दण्ड से शरण दे। (२८) ऐ पैगम्बर कहो कि वही ईश्वर कृपा करने वाला है हम उसी पर ईमान लाये हैं और उसी पर हमारा भरोसा है तुमको मालूम हो जायगा कि कौन प्रत्यक्ष गुमराही मे था। (२९) कहो देखो तो तुम्हारा पानी सूख जावे तो कौन है जो तुमको बहता हुआ पानी ला देगा (३०) (रुकू २)

सूरे कलम

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ५२ आयतें और २ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। नून-कलम की और जो कुछ वह लिखते है उसकी सौगन्ध। (१) तू अपने पालनकर्ता की कृपा से पागल नही है*। (२) और तुझको अटूट फल है। (३) और तू बडी प्रकृति वाला है। (४) सो अब तू देखेगा और वे भी देख लेंगे। (५) कि तुम मे से अब कौन विचल रहा है। (६) ऐ पैगम्बर निस्सन्देह तुम्हारा पालनकर्ता उन मनुस्यो को खूब जानता है जो उसकी राह से भटके हुए हैं और वही उनको भी खूब जानता है जो सीधी राह पर हैं। (७) सो तू झुठलाने वालो का कहा न मान। (८) वे चाहते है किसी तरह तू ढील हो तो वे भी ढीले हो। (९) और किसी सौगध खाने वाले नीच के कहे मे मत आ जाना। (१०) और न किसी चुगलखोर की जो चुगली खाता फिरे। (११) और अच्छे कामो मे रोकता है ज्यादती करने वाला पापी है। (१२) इसके बाद बदनाम।

---

* वलीद बिन मुगीरा मुहम्मद साहब को पागल कहता था। इन आयतों में उसको झूठा बताया गया है।

(१३) इसलिए कि धन संतान रखता है। (१४) जब उसको हमारी आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो कहता है कि यह अगली कहानियाँ हैं। (१५) हम उसकी नाक पर दाग देंगे। (१६) हमने उनको जाँचा है जैसा हमने बागवालो को जाँचा था कि जब उन्होने, सौगन्ध खाई कि जरूर सुबह होते ही उसके फल तोड़ेंगे। (१७) अल्लाह ने चाहा इन्शा अल्लाह नही कहा था (१८) फिर तेरे पालनकर्ता की तरफ से एक घूमने वाला उस बाग पर घूमने गया और वह सो रहे थे। (१९) और सुबह होते-होते वह बाग ऐसा रह गया जैसे सारे फल तोड कर ले गया है। (२०) फिर सुबह होते ही आपस मे बोले। (२१) अगर तुमको तोडना है तो सबेरे अपने खेत पर चलो। (२२) तो वह चले और चुपके-चुपके बातें करते जाते थे। (२३) कि आज के दिन वहाँ कोई फकीर तुम्हारे पास न आयगा। (२४) और सवेरे जोर से लपकते चले। (२५) मगर जब वहाँ देखा तो बोले हम हैं। (२६) नही हमारा भाग्य फूटा। (२७) उनमे से जो भला था कहने लगा क्या मैं तुमसे नही कहा करता था कि ईश्वर को पवित्रता से क्यो नही याद करते। (२८) वह वह बोले कि हमारा पालनकर्ता पवित्र है निस्सदेह हम ही अपराधी थे। (२९) तो आपस में एक दूसरे को दोष देने लगे। (३०) बोले हम पर शोक हम अज्ञानी थे। (३१) कुछ आश्चर्य नही कि हमारा पालनकर्ता उसके बदले हमको उससे अच्छा दे। हम अपने पालनकर्ता से प्रार्थना करते हैं। (३२) इस प्रकार कष्ट आते है और परलोक के कष्ट तो सब से बड़े है अगर उसको समझ होती। (६३) (रुकू १)

सयमियो के लिए उनके पालनकर्ता के यहाँ नियामतों के बाग हैं। (३४) तो क्या हम आज्ञाकारियो को पापियो के बराबर कर देंगे। (३५) तुमको क्या हुआ कैसी बात ठहराते हो। (३६) क्या तुम्हारे पास कोई पुस्तक है जिसको तुम पढते हो। (३७) कि वहाँ तुमको मिलेगा जो तुमको लगेगा। (३८) क्या तुमने हमसे सौगध ले रक्खी

हैं जो प्रलय के दिन तक चली जावेंगी कि तुम्हारे लिए वही मिलेगा जो तुम ठहराओगे। (३९) उनसे पूछ कि तुममे से कौन इसका जिम्मा लेता है। (४०) या इन्होने शरीक ठहरा रक्खे हैं बस अगर सच्चे हो तो अपने शरीको को ला हाजिर करे। (४१) जिस दिन पर्दा उठा दिया जायगा और उनको दण्डवत करने के लिये बुलाया जायगा। वह सिजदह न कर सकेंगे। (४२) उनकी आँखे नीची होगी जिल्लत उनके चेहरो पर छागई होगी और जब भले चँगे थे सिजदे के लिए बुलाये जाते थे। (४३) अब मुझे और इस कुरान के झुठलाने वाले को छोड। हम उन्हें धीरे-धीरे ऐसे नीचे उतारेंगे कि यह न जानें। (४४) और उनको ढील देता चला जा रहा हू निस्सदेह हमारा दाँव पक्का है। (४५) क्या तू उनसे नेक मजदूरी मागता है जो वह दण्ड के बोझ से दबे जाते है। (४६) क्या यह गैब की गुप्त बात जानते है और उसको लिख सकते है। (४७) अपने पालनकर्ता की आज्ञा के लिए ठहरा रह और मछली वाले यूनिस की तरह न हो जिसने क्रोध मे प्रार्थना की। (४८) अगर तेरे पालनकर्ता की कृपा उसको न सम्हालती तो वह चटियल मैदान मे फेंक दिया गया होता। (४९) फिर उसको उसके पालनकर्ता ने आनन्दित किया और नेको मे कर दिया (५०) और करीब है कि काफिर अपनी निगाहो* से ऐ मोहम्मद तुझे डिगा दें जबकि वह कुरान सुनते और कहते हैं कि वह तो दीवाना है। (५१) और यह तो ससार के लिए शिक्षा है। (५२) (रुकू २)

* यानी ऐसा घूर-घूर कर देखते हैं कि तुम डर जाओ और बयान सुनाना बन्द कर दो।

सूरे हाक्का

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ५२ आयतें २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। होनहार वात। (१) होनहार बात क्या चीज है। (२) और तूने क्या समझा होने वाली बात क्या चीज है। (३) समूद और आद ने प्रलय को झुठलाया (४) सो समूद तो कडक से मार डाले गए। (५) और आद रहे सो कठोर हवा के सर्राटे से मार डाले गये। (६) उसने उस हवा को सात रात आठ दिन लगातार उन पर चला रक्खा था। फिर तू उन मनुष्यों को गिरा हुआ देखता जैसे कि वह खजूर की खोखली लकड़ियाँ हैं (७) तो क्या तू इनमे से किसी को भी बाकी देखता है। (८) और फिरऔन और जो मनुष्य उससे पहले थे। और उल्टी हुई बस्तियों के रहने वाले सब पापी थे। (९) फिर पालनकर्ता के पैगम्बर की आज्ञा न मानी फिर उनको बड़ी पकड़ ने पकड़ा। (१०) जब पानी का तूफान नूह के समय में आया तो हमही ने तुमको सवार कर लिया था। (११) ताकि हम उसको तुम्हारे लिए एक यादगार बनायें और याद रखने वाले कान उसको याद रक्खें। (१२) फिर जब सूर नर-सिंह एक वार फूंका जायगा। (१३) और पृथ्वी और पर्वत उठाये जांयगे और एकदम तोड़े जायंगे। (१४) तो होने वाली उस दिन हो जायगी। (१५) और आकाश फट जायगा और वह उस दिन सुस्त हो जायगा। (१६) और देवदूत किनारों पर होंगे और उस दिन तुम्हारे पालनकर्ता के तख्त को आठ देवदूत अपने ऊपर उठाये होंगे। (१७) उस दिन तुम सामने लाये जाओगे और तुम्हारी बात छिपी न रहेगी। (१८) सो जिसकी किताब उसके दाहिने हाथ मे दी जावेगी वह कहेगा लो मेरा कर्म लेख पढ़ो। (१९) मुझको विश्वास था कि मेरा हिसाब मुझको मिलेगा। (२०) तो वह खुशी के जीवन मे होगा। (२१) ऊंचे बागो मे। (२२) जिसके फल झुके होंगे। (२३) खाओ

श्रौर पीश्रो उसके लिए जो तुमने गुजरे दिनो मे किया है (२४) श्रौर वह मनुष्य जिसको उसकी किताव बायें हाथ मे दी जावेगी वह कहेगा मुझको मेरा यह कर्म लेखा न मिला होता। (२५) श्रौर न मैं अपने इस हिसाब को जानता। (२६) अफसोस यहीं मेरी समाप्ती हुई होती। (२७) मेरा माल मेरे काम न आया। (२८) मेरी बादशाही मुझ से जाती रही। (२६) इसको पकडो श्रौर इसके गले मे तौक डालो। (३०) फिर इसको नरक मे ढकेल दो। (३१) श्रौर इस सत्तर हाथ लम्बी जजीर से बाँध दो। (३२) वह अल्लाह पर जो सब से बड़ा है विश्वास नही लाता था। (३३) श्रौर न लोगो को गरीबो को खिलाने के लिए प्रोत्साहित करता था। (३४) तो आज के दिन यहाँ उसका कोई मित्र नही। (३५) श्रौर न खाना सिवाय जखमो के धोवन के। (३६) यह खाना सिर्फ पापी खावेंगे। (३७) (रुकू १)

जो कुछ तुम देखते हो मैं उसकी सौगन्ध खाता हू। (३८) श्रौर जो तुम नही देखते उसकी भी। (३६) यह कुरान एक देवदूत द्वारा ज्ञान है। (४०) श्रौर यह कवि का कहा नही तुम बहुत ही कम मानते हो। (४१) श्रौर न परियो वाले का कहा हुश्रा है तुम बहुत ही कम ध्यान करते हो। (४२) यह ससार के पालनकर्ता का उतारा हुश्रा है। (४३) श्रौर अगर यह हम पर कोई बात बना लाता। (४४) तो हम उसका दाहिना हाथ पकडते। (४५) फिर उसकी गर्दन काट डालते। (४६) फिर तुम मे इससे कोई रोकनेवाला नही। (४७) श्रौर यह डरने वालो के लिए शिक्षा है। (४८) श्रौर हमको मालूम है कि तुम मे कोई-कोई झुठलाते हैं। (४६) श्रौर यह काफिरो के लिए पछतावा है। (५०) श्रौर यह सचमुच ठीक है। (५१) अब अपने पालनकर्ता के नाम की जो सबमे बडा है माला फेर। (५२)। (रुकू २)

सूरे मआरिज

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ४४ आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। एक पूछने वाले ने उस दण्ड के बारे मे जो होने वाली है पूछा। (१) काफिर कोई उस को रोक नही सकता। (२) ईश्वर के मुकाबले मे जो सीढियों का आकाश मालिक है। (३) उनसे देवदूत और रूह उसकी तरफ एक दिन मे चढते हैं और उसका अन्दाज ५० वर्ष का है। (४) बस तू अच्छी तरह सतोष कर। (५) वह उसे दूर देखते हैं। (६) और हम उसे करीब से देखते हैं। (७) उस दिन आकाश पिघले तावे की तरह हो जावेगा। (८) और पहाड जैसी रगी हुई ऊन। (९) और कोई मित्र किसी मित्र को न पूछेगा। (१०) वह सब उन्हें दिखलाये जावेंगे पापी चाहेंगे उस दिन के दण्ड के वदले मे अपने बेटे देदें। (११) और अपनी स्त्री अपने भाई को (१२) और अपने कुटुम्ब को जिस मे रहता था। (१३) और जितने पृथ्वी पर हैं सारे दे डालें फिर आप को बचावे। (१४) सो तो टालना नही है वह तपती आग है। (१५) मुंह की खाल खीचने वाली। (१६) यह, जिसने पीठ फेरी और मुह मोड़ा उसको पुकारती है। (१७) और जिसने माल जमा करके वरतन मे रखा। (१८) आदमी वे सब्र पैदा किया गया है। (१९) जब उसको बुराई लगती है तो घवडाता है (२०) और जब भलाई पहुचती है तो अपने तई अच्छे कामो से रोक लेता है। (२१) मगर निमाज पढने वाले। (२२) जो अपनी निमाज पर कायम हैं। (२३) और जिनके माल मे हिस्सा ठहर रहा है। (२४) मांगने वालो और वे मागने-वालो के लिए। (२५) और जो न्याय के दिन का विश्वास करते हैं। (२६) और जो अपने पालनकर्ता की दण्ड मे डरते हैं। (२७) उनके पालनकर्ता के दण्ड से निडर न होना चाहिए। (२८) और जो अपनी शहवत की जगह विषय इन्द्रिया थामते हैं। (२९) मगर अपनी

स्त्रियो और बाँदियो से सो उन पर उलाहना नही। (३०) मगर जो लोग इनके अलावा और की इच्छा करते हैं तो वह अधिकता करने वाले हैं। (३१) जो लोग अमानत और अपने अहद को निबाहते हैं। (३२) और जिनको अपनी साक्षियो पर विश्वास हैं। (३३) और जो लोग अपनी निमाज का ध्यान रखते है। (३४) तो यही लोग सम्मान के साथ बैकुण्ठ मे होगे। (३५) (रुकू १)

काफिरो को क्या हो गया जो तेरे सामने दौड़ते आते है। (३६) दाहिने और बायें से इकट्ठ होकर। (३७) क्या हर मनुष्य इनमे से चाहता है कि स्वर्ग के बाग मे पहुचेगे। (३८) बिल्कुल नही हमने उन्हे उस चीज से पैदा किया जो वह मानते है। (३९) तो मैं पूरव और पश्चिम के पालनकर्ता की सौगन्ध खाता हू कि हम उस पर सामर्थ रखते है। (४०) इस बात पर कि उन से बिहतर उनके बदले औरो को ले आवे और हम आजिज नही होने के। (४१) सो तू उन्हे छोड कि बाते बनावे और खेलें यहा तक कि उस दिन से मिले जिसका वादा दिया गया है। (४२) जिस दिन कब्रो से दौडते निकलेगे जैसे किसी निशाने पर दौडे जाते हैं। (४३) शर्म के मारे निगाह नीची किये होगे। यह वह दिन है जिसका उनसे प्रण है। (४४) (रुकू२)



सूरे नूह

मक्के मे अवतरित हुई, इसमे २८ आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। हमने नूह को उसकी जाति की तरफ भेजा कि दुखदाई दण्ड आने से पहिले अपनी जाति को डरावे। (१) उनसे कहा भाइयो मे उसको डर सुनाने आया हू। (२) कि ईश्वर की पूजा करो और उससे डरते रहो और मेरा कहा मानो

(३) तो वह तुम्हारे अपराध क्षमा करेगा और नियत समय तक तुमको मौका देगा। जब ईश्वर का नियत किया हुआ समय आवेगा तो वह टल नही सकता। शोक तुम समझते होते। (४) कहा ऐ पालनकर्ता मैंने अपनी जाति को रात दिन पुकारा (५) फिर मेरे बुलाने से और ज्यादा भागते ही रहे। (६) और जब मैंने उनको पुकारा कि तू उन्हें क्षमा करे उन्होने अपने कानो में उगलियाँ डाली और अपने कपडे लपेटे और जिद्द की और अकड़ बैठे। (७) फिर मैंने उनको पुकार कर बुलाया। (८) फिर मैंने उनको जाहिरा समझाया और गुप्त भी समझाया (९) फिर मैंने कहा कि अपने पालनकर्ता से पापों की क्षमा मागो। वह क्षमा करने वाला है। (१०) आकाश से तुम पर झडी लगाकर बरसायेगा। (११) और धन और सतान से तुम्हारी सहायता करेगा और तुम्हारे लिए बाग उगायेगा और नहरें जारी करेगा। (१२) तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह से बुजुर्गी की उम्मेद नहीं रखते (१३) उसने तुमको तरह तरह का बनाया। (१४) क्या तुमने न देखा कि अल्लाह ने कैसे नीचे ऊपर सात आकाश बनाये। (१५) और उनमे चन्द्रमा को उजेले के लिए और सूर्य को चिराग बनाया। (१६) और ईश्वर ने तुम्हें पृथ्वी मे एक किस्म से उगाया। (१७) फिर तुम्हें पृथ्वी मे मिला देगा और फिर तुमको निकाल खड़ा करेगा। (१८) और अल्लाह ने तुम्हारे लिए पृथ्वी को बिछौना बनाया है। (१९) कि उसमे खुले रास्तो से चलो। (२०) (रुकू १)

नूह ने कहा कि ऐ मेरे पालनकर्ता यह मुझ से नटखटी करते हैं और उनके कहे पर चलते हैं जिनको उनके धन और उनकी सतान ने टोटे मे डाल रक्खा है। (२१) और उन्होने बड़-बड़े धोखे किये। (२२) और बोले कि अपने पूजितों को न छोडो वद* को और सोवा

*ये अरब की मूर्तियों के नाम हैं जो नूह के जमाने मे पूजी जाती थीं।

को और यगूस* और ययूक और नस्त्र* को (२३) और यह बहुतेरो को गुमराह कर चुके हैं और ऐसा कर कि अत्याचारियों में गुमराही ही बढती जावे। (२४) यो यह अपने ही पापो के कारण से डुवाये गये फिर नरक की आग मे डाल दिये गये और उन्होने ईश्वर के मुकाबिले में किसी को सहायक न पाया। (२५) और नूह ने कहा ऐ मेरे पालनकर्ता ससार मे काफिरों का कोई घर न छोड। (२६) अगर तू उन्हें रहने देगा तो ये तेरे बन्दो को गुमराह करेंगे और इनसे जो संतान चलेगी वह भी कुकर्मी काफिर ही होगी। (२७) ऐ मेरे पालनकर्ता मुझको और मेरे मां बाप को और जो मनुष्य ईमान लाकर मेरे घर मे आये उसको और ईमानदार मर्दो और ईमानदार औरतो को क्षमाकर और ऐसा कर कि अत्याचारियो की तबाही बढती चली जावे। (२८ (रुकू २)



सूरे जिन्न

मक्के में अवतरित हुई, इसमे २८ आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। कह दे कि मुझ को आदेश आया है कि जिन्नो के कई लोग* कुरान सुन गये हैं और उन्होने कहा हमने कुरान सुना है। (१) जो ठीक बात की शिक्षा देता है और हम उस पर ईमान लाये और हम किसी को भी अपने पालनकर्ता का शरीर न ठहरायेंगे (२) और हमारे पालनकर्ता की इज्जत बहुत वडी है उसने न किसी को स्त्री और न किसी को सतान वनाया

*कहा जाता है कि एक वार मुहम्मद सहाव खजूर के एक वाग मे कुरान पढ रहे थे कि कई जिन्न वहां आये और ईमान लाये और अपनी जाति वालों से जाकर इसकी चर्चा की।

(३) और हममें कुछ मूर्ख हैं जो ईश्वर पर बढ़-बढ़कर बातें बनाते हैं। (४) और हम विचार करते थे कि मनुष्य और जिन्न कोई ईश्वर पर झूठ नही बोल सकता। (५) और मनुष्यो मे से कुछ लोग ऐसे है जो जिन्नो मे से कुछ लोगो की शरण लेते हैं और उन्होने जिन्नो के घमण्ड को और भी बढा दिया है। (६) और वह विचार करते थे जैसा तुम विचार करते थे कि ईश्वर कभी किसी को पैगम्बर बना कर नही भेजता। (७) और हमने आकाश को टटोला तो उसको कठोर चौकीदारो और अगारो से भरा पाया। (८) और हम वहाँ बैठने की जगहो मे बैठकर सुना करते थे फिर अब जो कोई सुनना चाहे अपने लिये आग का अगारा पायेगा। (९) और हम नही जानते कि पृथ्वी के रहने वालो को कुछ नुकसान पहुचना मंजूर है या उनके पालनकर्ता ने उनके लिए भलाई करना विचारी है। (१०) और हममे कोई-कोई नेक हैं और कोई-कोई और तरह के हैं। हमारे अलग-अलग फिर्के होते आये हैं। (११) और हमने समझ लिया है कि न तो पृथ्वी मे ईश्वर को हरा सकते हैं और न भाग कर उससे बच सकते हैं। (१२) और हमने जब राह की बात सुनी तो हम उसको मान गये बस जो मनुष्य अपने पालनकर्ता पर ईमान लायेगा उसको न किसी हानी का भय होगा न अत्याचार का। (१३) और हम मे कोई आज्ञाकारी है और कोई अत्याचारी है सो जो कोई आज्ञा मे आये उन्होने सीधी राह ढूढ निकाली। (१४) और जिन्होने मुंह मोड़ा वह नरक के लट्ठे बन गये (१५) और यह कि अगर लोग सीधी राह पर रहते तो हम उन्हे पानी पिलाते। (१६) ताकि उनको उसमे जाचें और जो कोई अपने पालनकर्ता की याद से फिर गया तो उसको कठोर दण्ड मे दाखिल करेगा। (१७) और मसजिदें सब ईश्वर की हैं तो ईश्वर के साथ किसी को न पुकारो। (१८) और जब ईश्वर का बन्दा मुहम्मद खडा होकर उसको पुकारता है तो पास आकर ये उसको घेर लेते है। (१९)

(रुकू १)

कह कि मैं तो अपने पालनकर्ता को पुकारता हू और किसी को उसका शरीक नही करता। (२०) ऐ पैगम्बर कहो कि तुम्हारा लाभ या हानि मेरे अधिकार मे नही। (२१) ऐ पैगम्बर कहो मुझे अल्लाह के हाथ से कोई न बचावेगा। और मैं उसके सिवाय कोई रहने की जगह नही पाता। (२२) मगर मेरा काम ईश्वर के समाचारो का पहुचा देना है और जो कोई अल्लाह् का और उसके पैगम्बर की आज्ञा न माने सो उसके लिए नरक की आग है जिस मे वह हमेशा रहेगे। (२३) जब तक उसको न देख लेंगे जिनका उनसे वादा किया जाता है तो उस समय जान लेंगे कि किसके सहायक कमजोर और गिनती मे थोडे हैं। (२४) ऐ पैगम्बर कहो कि मे नही जानता कि जिस चीज का तुमसे वादा हुआ वह नजदीक है या मेरा पालनकर्ता उसको देर मे लायेगा। (२५) वह भेद का जानने वाला है और अपने भेद की खबर किसी को नही देता। (२६) मगर जिस पैगम्बर को पसन्द कर लिया उसके आगे और पीछे चौकीदार चला आता है। (२७) ताकि वह जाने उसने उसके समाचार पहुचा दिये और यूँ तो उसने सब मामलो को हर प्रकार अपने अधिकार मे कर रखा है और एक-एक चीज को गिन रखा है। (२८) (रुकू २)

सूरे मुज्जम्मिल

मक्के में अवतरित हुई, इसमें २० आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु तथा दयावान है। ऐ चादर ओढ़े हुए मुहम्मद (१) रात को निमाज के लिए खड़े रहा करो मगर थोड़ी देर। (२) आधी रात या उसमे थोडी कम कर। (३) या आधी से कुछ बढा दिया कर। और कुरान को ठहर-ठहर कर पढा कर। (४) अब हम तेरे ऊपर भारी बात डालेंगे। (५) रात का उठना इन्द्रियो के रोकने मे बहुत अच्छा होता है और ठीक-ठीक दुआ माँगने मे भी (६) दिन को तुझे बहुत काम रहता है। (७) और अपने पालनकर्ता का नाम याद कर और सबको छोडकर उसी की तरफ लग जा। (८) वही पूरब और पश्चिम का स्वामी है उसके सिवाय कोई पूजित नही बस उसको काम संभालने वाला बना। (९) और ये लोग जो कुछ कहते हैं उसका संतोष कर और खूबसूरती के साथ उन्हे छोड़ दे। (१०) और मुझको और झुठलाने वालो को जो आराम मे रहे हैं छोड दे और उन्हें थोड़ा समय दे। (११) हमारे पास बेडियाँ और आग का ढेर है। (१२) और खाना जो गले से न उतरे और दुखदाई दण्ड है। (१३) जिस दिन पृथ्वी और पर्वत कापने लगेंगे और पहाड भुरभुरे टीले हो जावेंगे। (१४) हमने तुम्हारी तरफ पैगम्बर भेजा है वह तुम पर साक्षी देगा जैसा कि हमने फिरऔन के पास पैगम्बर भेजा था। (१५) मगर फिरऔन ने पैगम्बर से नटखटी की तो हमने उसको कठोर दण्ड मे पकड़ा। (१६) फिर अगर उस दिन से इन्कारी रहे जो लड़को को बूढा कर देता तुम क्यो कर बचोगे। (१७) उससे आकाश फट जायगा और उस ईश्वर का वादा हो जायगा। (१८) यह तो एक समझौता है तो जो चाहे अपने पालनकर्ता की राह ले। (१९) (रुकू १)

तेरा पालनकर्ता जानता है कि तू दो तिहाई रात और आधी रात और तिहाई रात नमाज को उठता है और उनमे से जो तेरे साथ है

एक गिरोह उठता है और अल्लाह रात और दिन का अन्दाजा करता है वह जानता है कि तुम इसको निबाह न सकोगे। बस तुम पर कृपालु हुआ। अब कुरान मे से जिस कदर आसान हो पढो। ईश्वर जानता है कि तुममें कुछ बीमार होगे और कुछ ऐसे जो ससार मे कृपा ढूढने फिरेगे और कुछ ऐसे भी जो ईश्वर की राह मे लडाई करेंगे तो जो उसमे से आसान पढो और निमाज पर कायम रहो और दान दो और अल्लाह को प्रसन्नता से कर्ज दे दिया करो और जो नेकी अपने लिए पहले से भेज दोगे। उसको अल्लाह के यहाँ पाओगे। वह बहुत बढ-कर हैं और उसका फल भी बहुत बडा है और अल्लाह से अपने पापो की क्षमा माँगते रहो—अल्लाह बडा क्षमा करने वाला कृपालु है। (२०) (रुकू २)

सूरे मुदस्सिर

मक्के मे अवतरित हुई, इसमे ५६ आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम जो कृपालु व दयावान है। ऐ पैगम्बर वही यानी आयत के भय से जो चादर ओढे हुए हो। (१) उठ और लोगो को डरा। (२) और अपने पालनकर्ता की बडाई कर। (३) और अपने कपडो को पवित्र रख। (४) और अपवित्रता से अलग रह (५) और ज्यादा करने के लिए किसी पर एहसान न रख। (६) और अपने पालनकर्ता की राह देख। (७) जब सूर नरसिंहा फूंका जायगा। (८) तो वह दिन काफिरो के लिए ऐसा कठिन होगा। (९) कि उसमे आसानी न होगी। (१०) मुझे उस मनुष्य को जिसे मैंने अकेला पैदा किया छोड दो। (११) और मैंने उसको बहुत माल दिया। (१२) और लडके जो उसके सामने हाजिर रहते हैं। (१३) और हर तरह का सामान उसके लिये इकट्ठा कर दिया है। (१४) इस पर भी वह आशा

लगाये बैठा है कि हमे और भी कुछ दे। (१५) हरगिज नही वह हमारी आयतों का शत्रु था। (१६) हम जल्द उसे कठोर दण्ड मे फसावेगे। (१७) वह तदवीर मे लगा है और तदवीर कर रहा है। (१८) नाश हो—वह कैसी तदवीरें कर रहा है। (१९) फिर भी वह नाश हो फिर कैसी तदवीरें कर रहा है। (२०) फिर उसने देखा। (२१) फिर-नाक चढाई और मुंह सिकोड लिया। (२२) फिर पीठ फेर ली और घमण्ड किया। (२३) और कहने लगा कि ये जादू है जो चला आता है* (२४) ये तो वस किसी आदमी का कहा हुआ है। (२५) हम उसको जल्दी नरक में झोक देंगे। (२६) और तू क्या जाने कि नरक की आग क्या चीज है। (२७) वह न वाकी रखती है। और न छोडती है। (२८) शरीर को झुलसा देती है। (२९) उस पर १९ चौकीदार हैं। (३०) और हमने देवदूतो ही को आग का चौकीदार वनाया है और इनकी गिनती हमने काफिरो की जाँच के लिए ठहराई है ताकि किताव वाले विश्वास कर लें और ईमान वालो का और भी ईमान हो और किताव वाले और ईमान वाले सदेह न करें और जिन लोगो के दिलो मे रोग है और जो काफिर हैं वोल उठे कि ऐसी वातो के कहने से ईश्वर का क्या प्रयोजन है। इसी तरह ईश्वर जिसको चाहता है भटकाता है और जिनको चाहता है राह दिखाता है और तुम्हारे पालनकर्ता के लश्करो का हाल उसके सिवाय कोई नही जानता और यह लोगो के लिए शिक्षा है। (३१) (रुकू १)

नही-नही चाँद की सौगन्ध। (३२) और रात की जव वह गुजरने लगे। (३३) और सुवह को जव वह उदय हो। (३४) यह नरक एक

---

* ये आयतें वलीद विन मुगीरा के विषय में उतरी। उसने पहले तो कुरान सुन कर उसकी प्रशंसा की लेकिन वाद में अवू जिहल के भड़काने से उसको जादू वताने लगा। वह वड़ा धनी था और उसके कई लड़के थे। कुरैश में उसका वड़ा ऊँचा स्थान समझा जाता था।

बडी बात है। (३५) यह लोगो को डराना है। (३६) तुम मे से उस मनुष्य को जो आगे बढना चाहे और पीछे रहना चाहे। (३७) हर एक जो अपने किये मे फसा है। (३८) मगर दाहिनी ओर वाले (३९) कि वह बैकुण्ठ मे पूछते होगे। (४०) अपराधियो से (४१) कौन चीज तुमको नरक मे ले आई। (४२) वह कहेगे हम निमाज न पढते थे। (४३) और न हम गरीबो को खाना खिलाते थे। (४४) और हम हुज्जत करने वालो के साथ हुज्जत किया करते थे। (४५) और हम न्याय के दिन को झुठलाते थे। (४६) यहाँ तक कि हमको विश्वास आया। (४७) फिर किसी शिफारिसी की शिफारिस उनके काम नही आयेगी। (४८) और उनको क्या हो गया है कि वह इस शिक्षा से मुँह फेरते हैं। (४९) गोया कि ये गधे है जो भागे जाते है। (५०) शेर के आगे से भाग जाते हैं। (५१) बल्कि इसमे का हर एक आदमी चाहता है कि उसको खुली किताबें मिल जावें। (५२) हरगिज नही ये प्रलय से नही डरते। (५३) हरगिज नही यह तो एक शिक्षा है। (५४) तो जो कोई चाहे इसको याद रक्खे। (५५) और जब तक ईश्वर न चाहे वह हरगिज याद न करेगे वह डर के लायक और क्षमा करने के योग्य है। (५६) (रुकू २)

सूरे कयामत

मक्के मे अवतरित हुई, इसमे ४० आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम नाम जो दया वाला व कृपालु है। मैं प्रलय के दिन की सौगन्ध खाता हूं। (१) और मैं जी की सौगन्ध खाता हू जो बुरे कामो पर अपने आप मलामत करता है। (२) क्या आदमी विचार करता है कि हम उसकी हड्डियाँ जमा न करेंगे। (३) और हम इस बात पर शक्तिमान हैं कि उनके पोर-पोर ठिकाने से बैठा दें। (४)

बल्कि आदमी चाहता है कि उसके सामने ढिठाई करे। (५) वह पूछता है कि प्रलय का दिन कब होगा। (६) तो जब आँखें पथरा जायगी। (७) और चन्द्रमा में ग्रहण लग जावेगा। (८) और सूर्य और चन्द्रमा जमा किये जावेगे। (९) तो उस दिन आदमी कहेगा कि भागने की जगह कहा। (१०) हरगिज नही शरण की जगह नही है। (११) उस तेरे पालनकर्ता की तरह जाकर ठहरना होगा। (१२) उस दिन आदमी को बता दिया जायगा कि उसने पहिले कैसे काम किये हैं और पीछे क्या छोडा है। (१४) परन्तु वह अपने बहुत उज्र लावे। (१५) अपनी जबान न हिला कि उसके लिए जल्दी करने लगे। (१६) उसका जमा करना और पढना हमारे जिम्मे है*। (१७) जब हम उसको जिब्रील द्वारा पढा लिया करें तो तू भी उसके पीछे-पीछे पढ। (१८) फिर उसका बयान करना हमारे जिम्मे है। (१९) मगर तुम कुछ जल्दबाज ही हो। (२०) ससार को छोड बैठे और प्रलय को पसन्द करते हो। (२१) उस दिन कितने मुंह ताजे है। (२२) अपने पालनकर्ता को देख रहे होगे। (२३) और कितने मुह उस दिन उदास होगे। (२४) समझ रहे होगे कि उनके साथ ऐसी कठोरता होने को है जो कमर तोड देगी। (२५) नही जब जान हँसली तक आ पहुचेगी। (२६) और कहा जायगा कौन झाडा फूक करेगा (२७) और उसको विश्वास हो जायगा कि यह जुदाई है। (२८) और पिण्डली-पिण्डली से लिपट जायगी। (२९) (रुकू १)

तो उसने न विश्वास किया और न नमाज पढी। (३१) बल्कि उसने उनको झुठलाया और पीठ फेर दी। (३२) फिर अपने घर को अकडता गया। (३३) खराबी तेरी फिर खराबी तेरी। (३४) फिर

---

* यानी कुरान को याद रखने के लिए जल्दी-जल्दी जबान चला इसका याद करना और उसका जमा करना हमारा काम है।

खराबी तेरी खरीबी पर खराबी तेरी। (३५) क्या आदमी विचार करता है। कि वह बेकार छोड दिया जायगा। (३६) क्या वह वीर्य की एक बूंद न था जो टपकी। (३७) फिर लोथड़ा हुआ फिर बनाया और ठीक किया। (३८) फिर उस वीर्य से स्त्री और पुरुष को जोडा बनाया। (३९) क्या ऐसा मनुष्य मृतक को नही जिला सकता।(४०) (रुकू २)

सूरे दहर

मक्के में अवतरित हुई, इसमे ३१ आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो दयावाला व कृपालु है। क्या आदमी के ऊपर से जमाने मे एक ऐसा समय बीता जब वह कुछ भी चर्चा के योग्य न था। (१) हमने आदमी को मिले हुये वीर्य से पैदा किया कि उसको जाँचे इसलिए उसको सुनने वाला और देखने वाला बनाया। (२) हमने उसे राह दिखा दी है अब वह धन्यवान दे या कृतघ्नता। (३) हमने इन्कारियो के लिए जजीरें और तौक और दहकती हुई आग तैयार कर रक्खी है। (४) निस्सन्देह सुकर्मी प्याले पीवेंगे जिसमे कपूर की मिलावट होगी। (५) सोता जिसका पानी अल्लाह के सेवक पीवेंगे। और उसको जहाँ चाहें वहाँ ले जावेंगे। (६) वह अपनी मन की कल्पना पूरी करते हैं और उस दिन प्रलय से डरते हैं, जिसकी बुराई फैली हुई होगी। (७) और उसके प्रेम के लिए गरीबो को और

अनाथो को और कैदियो को खाना खिलाते हैं। (८) हम तो तुमको ईश्वर की प्रसन्नता के लिए खिलाते हैं हम तुमसे बदला चाहते हैं और न धन्यवाद। (९) हमको अपने पालनकर्ता से उस दिन का डर लग रहा है जब लोग मुंह बनाये भौहे चढाये होगे।(१०) तो ईश्वर ने उस दिन की विपदा से बचा लिया और उनको ताजगी और खुशहाली उन्हें पहुची। (११) और जैसा उन्होने सन्तोष किया था उसके बदले मे बैकुण्ठ और रेशमी वस्त्र उन्हें दिये। (१२) बैकुण्ठ मे तख्तो पर उन तकिये लगाये बैठे होगे न वह वहाँ धूप ही देखेगे न दण्ड। (१३) और उन पर वहाँ के वृक्षो की छाया होगी और उनके फल भी पास भी झुके होगे। (१४) और उन पर चाँदी के बर्तनो और गिलासो क दौर चलता होगा कि वह शीशे की तरह होगे। (१५) शीशे भी चाँदी के वह उन्ही के लिए बने होगे। (१६) और वहाँ उनको प्याले पिलाये जायगे जिसमे सोंठ मिली होगी। (१७) एक चश्मा होगा जिसका नाम सलसबील होगा। (१८) और उसके पास हमेशा नौजवान लड़के फिरते हैं। जब तू उन्हे देखे बिखरे मोती समझेगा! (१९) जब तू देखे यहाँ पदार्थ और बड़ा राज्य तुझको दिखाई देगा। (२०) उनके ऊपर बारीक हरे रेशमी और गाढ़े रेशम के कपडे है और चाँदी के कडे पहिने है और उनका पालनकर्ता उन्हें पवित्र मदिरा पिलावेगा। (२१) यह तुम्हारा बदला है और तुम्हारी कमाई सुकर्म मे लगी।(२२) (रुकू १)

हमने तुझ पर धीरे-धीरे कुरान उतारा। (२३) तू पालनकर्ता की राह देख और उनमे से किसी पापी कृतघ्न की स मान। (२४) और अपने पालनकर्ता का नाम सुबह और शाम याद कर। (२५) और कुछ रात में उसका दण्डवत कर और बडी रात तक उसकी पवित्रता बताओ। (२६) यह लोग तो बस जल्दी होने वाली बात पसन्द करते हैं और इस भारी दिन को छोड देते है। (२७) हमने उनको पैदा किया और उनकी गिरहबन्दी मजबूत बाँधी और जब हम चाहेंगे उनके बदले उन्ही जैसे लोग ला बसायेगे। (२८) शिक्षा है फिर जो कोई

चाहे अपने पालनकर्ता की तरफ पहुचने का रास्ता ले। (२९) और तुम न चाहोगे। जब तक अल्लाह न चाहे। निस्सन्देह अल्लाह जानने वाला चमत्कार वाला है। (३०) जिसको चाहे अपनी कृपा मे ले लेता है और अन्यायियो मनुष्यो के लिये उसने दुखदाई दण्ड तैयार कर रखा है। (३१) (रुकू २)

सूरे मुर्सलात

मक्के मे अवतरित हुई, इसमें ५० आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। उन हवाओ की क़सम जो मामूली चालो से चलाई जाती है। (१) फिर जोर पकडकर तेज हो जाती हैं। (२) फिर वादलो को फैला देती हैं। (३) फिर अलग कर देती है। (४) और दिलो मे याद दिलाती हैं। (५) ताकि प्रमाण समाप्त हो और डराया जाय। (६) तुमसे जो वादा किया जरूर होकर रहेगा। (७) यानी जव नक्षत्र धीमे पड जाय। (८) और जव आकाश फट जावे। (९) और जव पहाड उडाये। (१०) और जव पैगम्बर नियत समय पर हाजिर किये जावें। (११) कौन-सा दिन इनके लिए नियत था। (१२) न्याय का दिन। (१३) और तू क्या जाने न्याय का दिन क्या चीज है। (१४) उस दिन झुठलाने वालो की वर्बादी है। (१५) क्या हमने अगलो को मार नही डाला ? (१६) फिर उनके पीछे हम पिछलो को कर देते हैं। (१७) पापियो के साथ हम ऐसा ही किया करते हैं। (१८) उस दिन झुठलाने वालो की मृत्यु है। (१९) क्या हमने तुमको तुच्छ पानी से नही पैदा किया ? (२०) फिर हमने उसको नियत समय तक एक रक्षित जगह मे रखा। (२१) एक नियत समय तक रखा। (२२) फिर हमने अनुमान लगाया तो

कैसा अच्छा अनुमान लगाया। (२३) प्रलय के दिव झुठलाने वालों की मृत्यु है। (२४) क्या हमने पृथ्वी को समेट जाने वाली नही बनाया* (२५) जिन्दों और मुर्दो के लिए। (२६) और उसमें ऊंचे-ऊचे बोझिल पहाड खडे किये और तुम लोगों को मीठा पानी पिलाया। (२७) प्रलय के दिन झुठलाने वालों की तबाही है। (२८) जिस चीज को तुम झुठलाया करते थे, उसकी तरफ चलो। (२९) छाया मे चलो जिसके तीन टुकड़े हैं। (३०) उसमें ठंडक नहो और न गर्मी से बचाव है। (३१) वह महलों के बराबर लपटें सेकती होगी। (३२) गोया वह पीले ऊट हैं। (३३) प्रलय के दिन झुठलाने वालों की बर्बादी है। (३४) यही वह दिन है कि वह बात न कर सकेंगे। (३५) और न उनको आज्ञा दी जावेगी कि उज्र करें। (३६) प्रलय के दिन झुठलाने वालो की तबाही है। (३७) यही तो न्याय का दिन है। हमने तुमको और अगलो को जमा किया है। (३८) तो अगर तुम्हारी कोई तदबीर चल सके तो चलाओ। (३९) उस दिन झुठलाने वालो की बर्बादी है। (४०) (रुकू १)

संयमी तो जरूर छाओं में और चश्मा होंगे। (४१) और मेवों में जो उनको भाते हो, होंगे। (४२) अपने किये का फल शौक से खाओ-पीयो। (४३) नेक लोगों को हम इस तरह बदला देते हैं। (४४) उस दिन झुठलाने वालो पर बर्बादी है। (४५) संसार मे खाओ और कुछ लाभ उठाओ। निस्सन्देह तुम अपराधी हो। (४६) उस दिन झुठलाने वालो की खराबी हो। (४७) जब उन्हें नमाज के समय कहा जाय झुको, तो नहीं झुकते। (४८) उस दिन झुठलाने वालो की तबाही है। (४९) अब इसके बाद कौन-सी बात पर यह ईमान लावेंगे? (५०) (रुकू २)

---

* पृथ्वी जीवित आदमी को अपनी पीठ पर समेटती है और मुर्दा को भी। जीवित को अपनी पीठ पर समेटे है और मुर्दे को अपने पेट में :



तीसवाँ पारा (अम)

सूरे नबा

मक्के में अवतरित हुई इसमें ४० आयत और २ रुकू हैं

अल्लाह के नाम जो बडा कृपालु व दयावान है। यह लोग आपस मे क्या बात पूछ रहे हैं। (१) क्या बडी खबर प्रलय* की बात ? (२) जिसके बारे मे यह अलग-अलग राय रखते हैं। (३) तो जल्द इनको मालूम हो जायगा। (४) फिर जल्द इनको मालूम हो जायगा। (५) क्या हमने जमीन को फर्श (६) और पहाडो को मेखे नही बनाया ? (७) और हमने तुमको जोडा जोड़ा मर्द औरत पैदा किया। (८) और हम ही ने तुम्हारी नीद को आराम बनाया। (९) और हम ही ने रात को को पर्दा बनाया। (११) हम ही ने तुम्हारे ऊपर सात पुस्ता आकाश बनाये। (१२) और हमने चमकता चिराग सूर्य को बनाया। (१३) और हमने बादलो से जोर का पानी बरसाया। (१४) ताकि उससे अनाज और सब्जियाँ निकालें। (१५) और घने-घने बाग निकालें। (१६) निस्सन्देह न्याय के दिन का एक नियत समय है। (१७) उस दिन सूर फूका जायगा और तुम लोग गिरोह के गिरोह चले आओगे (१८) और आकाश फट कर टुकडे-टुकडे हो जायगे। (१९) और पहाड चलाये जायेंगे। वह धूल होकर रह जायगे। (२०) निस-देह नरक की घात मे है। (२१) सरकशो का वही ठिकाना है। (२२) उसी मे वर्षो पड़े रहेगे। (२३) वहाँ न ठडक और न पीने का मजा चखेंगे। (२४) मगर गर्म पानी और पीब के सिवाय उनको कुछ पीने को भी नही मिलेगा। (२५) यह उनके आमाल का पूरा बदला है। (२६) यह लोग हिसाब की आशा न रखते थे। (२७) और हमारी आयतो को झुठलाते थे। (२८) और हमने हर चीज को लिख रखा है। (२९) तो अपने किये का मजा चखो और हम तो तुम्हारे लिए दण्ड ही बढ़ाते जायेंगे। (३०) (रुकू १)

सयमी निस्सन्देह सफल होगे। (३१) यानी रहने को बाग और खाने को अगूर (३२) और नौजवान औरते हम उम्र। (३३) और छलकतें हुए प्याले। (३४) वहाँ यह लोग न तो बुरी सुनेगे और न करेंगे। (३५) यह तुम्हारे पालनकर्ता का हिसाब से दिया उनके कर्मो का बदला है। (३६) आकाश का और पृथ्वी का और जो कुछ पैदाइश इन दोनो के बीच है, सबका मालिक बड़ा कृपालु है। प्रलय के दिन उससे बात नही कर सकेंगे। (३७) जब कि जिब्रील और देवदूत पाँति मे खडे होगे, किसी के मुंह बात तो निकलने की नही। मगर जिसको ईश्वर आज्ञा दे और वह बात भी ठीक कहे। (३८) यह दिन सच्चा है, बस जो चाहे अपने पालनकर्ता के साथ ठिकाना बना रखे। (३९) हमने तुमको निकट आने वाली प्रलय के दण्ड से डरा दिया है कि उस दिन आदमी उन कर्मों को देखेगा जो उसने अपने हाथो भेजे हैं और काफिर चिल्ला उठेगा कि उसने ऐं, काश! मिट्टी होता तो। (४०) (रुकू २)

सूरे नाजिआत

मक्के में अवतरित हुई इसमें ४६ आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है।* और उन देवदूतो की सौगन्ध जो घुस कर कठोरता से रूह निकालते हैं। (१) और उन देवदूतो को जो आसानी से जान निकाल लेते हैं। (२) और उन देव-

* इन आयतों में जिसकी सौगन्ध खाई गई उसके बारे में एक मत नहीं है। काईन्कोई कहता है कि ये सब वायु है। कोई कहता है कि ये एक तरह के जीव है अधिकतर लोगों का विचार है कि ये देवदूत हैं।

दूतो की जो आकाश और पृथ्वी के बीच तैरते फिरते हैं। (३) फिर दौड़ कर आगे बढते हैं। (४) कि जैसी आज्ञा होती है वन्दोवस्त करते हैं। (५) जिस दिन पृथ्वी कांप उठेगी। (६) और भूकम्प के बाद भूकम्प आयेंगे। (७) उस दिन लोगो के दिल घडक रहे होगे। (८) उनकी आँखें झुकी होगी। (९) गुनहागार कहते हैं क्या हम उल्टे पाँव लौटाये जायगे ? (१०) क्या जब गल सड़ कर हड्डियाँ होजायेंगे, (११) कहते हैं कि ऐसा हुआ, यह तो लौटना हानि की बात है। (१२) वह तो एक झिडकी है। (१३) और एकदम से लोग मैदान मे आ मौजूद होगे। (१४) ऐ पैगम्बर ! मूसा का किस्सा भी तुमको पहुचा है, (१५) जब कि उनको तोआ के पवित्र मैदान मे उनके पालनकर्ता ने पुकारा था। (१६) कि फिरऔन* के पास जा, उसने सिर बहुत उठा रखा है। (१७) फिर कहा कि भला तुझको इसकी भी कुछ चिन्ता है कि तू पवित्र हो जाय। (१८) और मैं तुझको तेरे पालनकर्ता की ओर रास्ता दिखाऊ और तू डरे। (१९) फिर मूसा ने उसको बडा चमत्कार दिखाया। (२०) तो उसने झुठलाया और न माना। (२१) फिर लौट गया और तदबीर करने लगा। (२२) यानी लोगो को जमा किया और मुनादी करा दी। (२३) और कह दिया कि मैं तुम्हारा बडा पालनकर्ता हू। (२४) तो ईश्वर ने उसको परलोक और संसार मे धर पकड़ा। (२५) जो मनुष्य ईश्वर से डरता है उसके लिए इसके शिक्षा है। (२६) (रुकू १)

क्या तुम्हारा पैदा करना कठिन है या आकाश का कि उसकी उस ईश्वर ने बनाया। (२७) उसकी छत को खूब ऊचा रखा। फिर उसको बराबर किया। (२८) और उसकी रात का अंधेरा बनाया और दिन को उसकी धूप निकाली। (२९) और इसके बाद पृथ्वी को विछाया।

---

* फिरऔन व हजरत मूसा का हाल जानने के लिए पहला सिपारा देखिए।

(३०) उसी में से उसका पानी और उसका चारा निकाला। (३१) और पहाड़ो को गाड़ दिया। (३२) यह सब तुम्हारे और तुम्हारे चारपायो के लाभ के लिए किया। (३३) तो जब बडी आफत आ पड़ेगी। (३४) जो कुछ आदम ने किया हैं उस दिन उसकी याद आयेगी। (३५) और नरक सब देखने वालों के सामने प्रत्यक्ष किया जायगा। (३६) तो जिसने सरकशी की (३७) और सांसारिक जीवन को प्राथमिकता दी। (३८) तो ठिकाना नरक हैं। (३९) और जो अपने पालनकर्ता के सामने खड़े होने से डरा और इन्द्रियों को इच्छाओं से रोकता रहा। (४०) तो उसका ठिकाना स्वर्ग है। (४१) सो ऐ पैगम्बर! तुम से प्रलय के बारे मे पूछते हैं कि उसका समय कब है? (४२) तुम उसका समय बताने की चर्चा में कहाँ पड़े हो। (४३) आखिरी थाह तेरे पालनकर्ता को ही है (४४) तू तो बस उसको डरा सकता है, जो उससे डरे। (४५) जो लोग जिस दिन प्रलय को देखेंगे तो मालूम होगा गोया वह बस दिन के अन्तिम पहर ठहरे या प्रथम पहर। (४६) (रुकू २)

सूरे अबस

मक्के में अवतरित हुई इसमें ४२ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से कृपालु व दयावान है। मुहम्मद इतनी बात पर गुस्से मे हुए और मुंह मोड़े बैठे*। (१) जब एक अन्धा* उनके पास

---

* यह आयतें अब्दुल्ला के बारे में उतरीं। वह अन्धे थे। एक दिन मुहम्मद साहब अरब के बड़े-बड़े सरदारों को इस्लाम की बातें समझा

आया। (२) और कहा ऐ पैगम्बर ! तू क्या जाने शायद वह पवित्र हो जाय। (३) या शिक्षा सुने वा उसको शिक्षा लाभदायक हो। (४) तो जो मनुष्य वेपरवाही करता है, (५) उसकी तरफ तू खूब ध्यान देता है। (६) हाँलाकि वह पवित्र न हो तो मुझ पर कुछ दोष नही। (७) और जो तेरे पास दौड़ता हुआ आये। (८) और जो डरा कर आये। (९) तो उससे बेपरवाहीं करता है। (१०) देखो कुरान तो शिक्षा है। (११) जो चाहे इसे याद रखे। (१२) और सम्मानित पन्नों में लिखा हुआ है। (१३) जो ऊचे पर रखे और पवित्र हैं। (१४) ऐसे लिखने वालों के हाथो मे। (१५) जो बुजुर्ग और भले हैं। (१६) आदमी पर मार। वह कैसा कृतघ्न है। (१७) ईश्वर ने उसको जिस चीज से पैदा किया ? (१८) वीर्य से उसको बनाया। फिर उसका एक अन्दाजा बाँध दिया। (१९) फिर उसके लिए राह आसान की। (२०) फिर उसको मार दिया। फिर उसको कब्र मे दाखिल किया। (२१) फिर जब चाहेगा उसको उठा कर खडा करेगा। (२२) नही, ईश्वर ने जो कुछ आदमी को आज्ञा दी, उसने उसकी शिक्षा नही की। (२३) तो आदमी को चाहिए कि अपने खाने की तरफ देखे।

रहे थे कि वह आ गए और बीच में बोल उठे कि हमको बताइये। यह बात मुहम्मद साहब को बुरी लगी। इस पर उनको इस तरह समझाया गया।

* एक बार रसूलुलल्लाह मक्केके सरदारों में इस्लाम की चर्चाकर रहे थे। उसी समय एक अन्धे साथी ने आकर हजरत से कुरान के लिए पूछना शुरू किया। मक्के के रईस घमण्डी थे। रसूलुलल्लाह ने भी उसके बीच उस अन्धे को आया देख मुंह घुमा लिया। ईश्वर ने हजरत को चेतावनी दी कि अन्धा गरीब जो ईश्वर से डरता है उसकी परवाह न करके उन लोगो की फिक्र करते हो जो अपने घमण्ड में दीन की कोई परवाह नही करते।

(२४) कि हमने पानी बरसाया। (२५) फिर हमने पृथ्वी को फाड़ा। (२६) फिर हमने पृथ्वी में अनाज उगाया। (२७) और अंगूर और तरकारियाँ। (२८) और जैतून और खजूरें। (२६) और घने-घने बाग। (३०) और मेवे और चारा। (३१) तुम्हारे और चार-पायों के लिये। (३२) तो जिस समय शोर प्रलय होगी जिसके सुनाने मे कान बहरे हो जायँ। (३३) जिस दिन आदमी अपने भाई। (३४) और अपनी माँ और अपने बाप। (३५) और अपनी पत्नी और अपने बेटो से भागेगा। (३६) इनमें से हर मनुष्य को उस दिन अपने-अपने छुटकारे की चिन्ता लगी होगी कि बस वही उसके लिये काफी होगी। (३७) कितने मुंह उस दिन चमकाते होंगे।(३८) हँसते खुशियाँ करते। (३६) और कितने मुंह ऐसे मैले होंगे कि उन पर गर्द पड़ी होगी। (४०) उन पर स्याही छाई होगी। (४१) यही काफिर बुरे हैं। (४२) (रुकू १)



सूरे तकवीर

मक्के में अवतरित हुई, इसमें २६ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। जिस समय सूरज लपेट लिया जाय। (१) और जिस समय तारे झड़ पड़ें। (२) और जिस समय पर्वत चलाये जायं। (३) और जिस समय दस महीने की

गाभिन ऊँटनियाँ छुटी-छुटी फिरें। (४) और* जिस समय जगली जानवर आ मरें। (५) और जिस समय दरिया पाट दिये जाँय। (६) और जिस समय रूहो जीवों को मिलाया जाय। (७) और जिस समय लडकी से जो जीवित कब्र मे रख दी गई थी, पूछा जाय। (८) कि किस कसूर के बदले में मारी गई। (९) और जिस समय कर्मों का लेखा खोला जाय (१०) और जिस समय आकाश की खाल खीची जाय। (११) और जिस समय नरक की आग दहकाई जाय। (१२) और जिस समय स्वर्ग पास लाया जाय। (१३) उस समय हर मनुष्य जान लेगा जो कुछ वह परलोक मे होगा। (१४) तो मे उन सितारो की सौगन्ध खाता हूं जो चलते-चलते पीछे हटने लगते हैं। (१५) और जो सैर करते और गायब हो जाते हैं (१६) और रात की सौगन्ध जब उसका उठान हो। (१७) और सुबह की सौगन्ध जिस समय उसकी पौ फटती है। (१८) निस्सदेह यह कुरान एक प्रतिष्ठित देवदूत का सदेश है। (१९) अर्श के मालिक ईश्वर के पास उसका बडा रुतबा है। (२०) सरदार और अमानतदार है। (२१) और ऐ मक्का वालो तुम्हारे मित्र मुहम्मद कुछ बावले नही। (२२) निस्सदेह उन्होने उस (जब्रील) को साफ आसमान मे देखा। (२३) और यह गुप्त बाते छिपाने वाला नही। (२४) और कुरान शैतान मरदूद का कहा हुआ नही है। (२५) फिर तुम किधर बहके चले जा रहे हो। (२६) यह कुरान तो ससार के लिए शिक्षा हैं (२७) लेकिन उस मनुष्य के लिए जो तुममे से सीधी राह पर चले। (२८) और तुम कुछ नही चाहि सकते मगर यह कि अल्लाह तमाम ससार का पालनकर्ता है, चाहे। (२९) (रुकू १)

---

* यह हाल प्रलय का है। उस दिन पृथ्वी आकाश सब का बुरा हाल होगा और कोई किसी की बात न पूछेगा।



सूरे इन्फितार

मक्के में अवतरित हुई, इसमें १९ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। जब कि आकाश फट जाये। (१) और जब सितारे झड़ पड़ें। (२) और जब नदियां वह चलें। (३) और जब कब्रें उखाड़ दी जांय। (४) तब हर मनुष्य जान लेगा जो कर्म उसने आगे भेजा और जो पीछे छोड़ा। (५) ऐ आदमी किस चीज ने तेरे पालनकर्ता बुजुर्ग के बारे में तुझ को धोखा दिया है। (६) जिसने तुझको बनाया और सही बनाया और तेरे जोड ठीक रक्खे। (७) जिस सूरत से चाहा तेरा जोड़ मिला दिया। (८) मगर बात यह है कि तुम दण्ड को नही मानते। (९) हालांकि तुम पर चौकीदार हैं। (१०) आलीकदर लिखने वाले। (११) जो कुछ भी तुम करते हो उनको मालूम रहता है। (१२) निस्संदेह सुकर्मी मजे में होंगे। (१३) और वह कुकर्मी निस्संदेह नरक में होंगे। (१४) और प्रलय के दिन उसमें दाखिल होंगे। (१५) और वह उससे भाग नही सकते। (१६) और ऐ पैगम्बर तू क्या जाने प्रलय का दिन क्या चीज है। (१८) जिस दिन कोई मनुष्य किसी मनुष्य को कुछ भी लाभ नही पहुचा सकेगा और हुकूमत उस दिन अल्लाह ही की होगी। (१९) (रुकू १)

सूरे ततफीफ

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ३६ आयतें और १ रुकू है।

अल्लाह् के नाम से जो कृपालु व दयावान है। कम देने तौलने वालों की तबाही हैं। (१) जब मनुष्यों से माप लें तो पूरा-पूरा लें। (२) और जब दूसरी को नापकर या तौल कर दें तो कम दें। (३) क्या इनको इस बात का विचार नही कि प्रलय को यह उठा खड़े किये जायगे। (४) बड़े दिन को। (५) जिस दिन लोग संसार के पालन-कर्ता के सामने खडे होगे। (६) कुकर्मी मनुष्यो के कर्म रोजनामचा और कैदियो के रजिस्टर क्या चीज हैं। (८) वह किताब है जिसकी खानापूरी होती रहती है। (९) उस दिन झुठलाने वालो की तबाही है। (१०) जो प्रलय के दिन को झुठलाते हैं (११) और उस दिन को वही झुठलाता है जो पापी हद से बढ जाता है। (१२) जब उसको हमारी आयतें पढकर सुनाई जाँय तो कहे कि अगले लोगो के ढकोसले हैं। (१३) बल्कि इनके दिलो पर इनके आमालों की कालिम बैठ है। (१४) यही अपने पालनकर्ता के सामने नही आने पायेंगे। (१५) फिर यह लोग अवश्य नरक मे दाखिल होगे। (१६) फिर कहा जायगा कि यही तो वह है जिसको तुम झुठलाते थे। (१७) अच्छे मनुष्यो का कर्म लेखा बडे रुतबे वाले लोगो के रजिस्टर मे है। (१८) और ऐ पैगम्बर तुम क्या समझो कि बडे रुतबे वाले मनुष्यो का रजिस्टर क्या चीज है। (१९) एक किताब है जिसकी खानापूरी होती रहती है। (२०) देवदूत जो निकट हैं उस पर तैनात है। (२१) निस्सन्देह अच्छे मनुष्य आराम मे होगे। (२२) तख्तो पर बैठे देख रहे होंगे। (२३) तू उनके चहरो पर स्वर्ग की ताजगी देखेगा। (२४) उनको खालिस खराब मुहर की हुई पिलाई जायगी। (१५) जिस बोतल का मुहर कस्तूरी की होगी और इच्छा करने वालो को चाहिए कि उसी पर इच्छा करे। (२६) और उस शराब मे तसनीम के पानी की मिला-

वट होगी। (२७) तसनीम बैकुण्ठ का एक चश्मा है जिसमे से नजदीक के मनुष्य पीयेंगे। (२८) निस्संदेह अपनराधी ईमानवालों के साथ हंसी किया करते थे। (२९) और जब लौटकर अपने घर जाते तो बातें बनाते थे। (३१) और जब इनको देखते तो बोल उठते कि यही गुमराह हैं (३२) हालाकि ईमान वालों पर निगहबान बनाकर तो इनको नही भेजा गया। (३३) तो आज प्रलय में ईमानवाले काफिरों पर हसेंगे। (३४) तख्तों पर बैठे सैर देख रहे होंगे। (३५) अब तो काफिरो ने अपने किये का बदला पाया। (३६) (रुकू १)

सूरे इन्शिकाक

मक्के में अवतरित हुई, इसमें २५ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम पर जो कृपालु व दयावान है। जब आकाश फट जायगा। (१) और अपने पालनकर्ता की बात सुनेगा और यह उसका फर्ज ही है। (२) और जब पृथ्वी तान दी जायगी। (३) और जो उस मे है बाहर डाल देगी और खाली हो जायगीं। (४) और अपने पालनकर्ता की बात सुनेगी और यह तो उसका फर्ज ही है। (५) ऐ आदमी तू प्रयत्न करके पालनकर्ता की ओर जाता हैं और तू उससे जरूर मिलेगा। (६) तो जिसको उसका कर्म लेखा दाहिने हाथ में दिया जायगा। (७) तो उससे आसानी के साथ हिसाब लिया जायगा

(८) और वह खुश-खुश अपने बाल बच्चो मे वापिस जायगा। (९) और जिसको उसका कर्म लेखा उसकी पीठ के पीछे से दिया जायगा। (१०) वह मौत मनावेगा। (११) और नरक मे जायगा। (१२) यह अपने बाल बच्चो के साथ मगन था। (१३) वह समझता था कि ईश्वर की ओर फिर न आयगा। (१४) हाँ उसका पालनकर्ता उसे देख रहा था। (१५) सो मैं शाम की लाली की सौगन्ध खाता हू। (१६) और रात को जिन चीजो पर वह अन्धेरा करती हैं। (१७) और चाँद की सौगन्ध जब पूरा हो। (१८) कि तुम धीरे-धीरे दूसरी को तै करोगे। (१९) तो इन काफिरो को क्या है कि ईमान नही लाते। (२०) और जब इनके सामने कुरान पढ़ा जाय तो शीश नही नवाते। (२१) बल्कि काफिर झुठलाते हैं। (२२) और ईश्वर खूब जानता है जो कुछ दिल मे रखते हैं। (२३) तो ऐ पैगम्बर इनको दुखदाई दण्ड की शुभसदेश सुना दो। (२४) मगर जो लोग ईमान लाये और उन्होने सुकर्म किये उनके लिए अत्यन्त उत्तम फल है। (२५) (रुकू १)



सूरे बुरूज

मक्के मे अवतरित हुई, इसमे २२ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है आकाश की सौगन्ध जिसमे बुर्ज हैं। (१) और उस दिन की जिसका प्रण है। (२) और साक्षी* की और जिसके सामने साक्षी देता है उसकी सौगन्ध। (३)

और खाइयां खोदने वाले मारे गये। (४) आग खरे ईंधन से। (५) जब वह स्वयं उस पर बैठे हुए थे। (६) और ईमानवालों पर अपने किये के गवाह थे। (७) और वह ईमानवालो की इसी बात से चिढ़े कि वह अल्लाह पर ईमान लाये जो बलवान और प्रशसनीय है। (८) आकाश और पृथ्वी का राज्य उसी का है और अल्लाह हर चीज से जानकार है। (९) जो लोग ईमानवाले मर्दों और ईमानवाली स्त्रियो को दुख देते हैं और तौबा नही करते तो उनको नरक का दण्ड है। (१०) जो मनुष्य ईमान लाये और उन्होने सुकर्म किये उनके लिए स्वर्ग के बाग हैं जिन के नीचे नहरें बह रही होगी यही बड़ी सफलता है। (११) तेरे पालनकर्ता की पकड़ बहुत कठोर है। (१२) वही पहली बार पैदा करता हैं और दुबारा भी करेगा। (१३) और वह क्षमा करने वाला और प्रेम करने वाला है। (१४) तख्त का स्वामी बडी शान वाला है। (१५) जो चाहता है करता है। (१६) क्या तेरे पास लश्करों का सदेश पहुचा है। (१७) फिरऔन की और समूद की। (१८) मगर काफिर झुठलाने में लगे हैं (१९) औरअल्लाह उनको उनके सब ओर से घेरे हुए है। (२०) बल्कि यह कुरान बड़ी शान का है। (२१) लौह मौहफूज* मे लिखा हुआ है(२२)(रुकू १)

*यहाँ साक्षी का क्या अर्थ है ? यह एक ऐसा प्रश्न है जिसके विषय में मनुष्यों का मत अलग-अलग है। कोई कहता है शाहिद वह हैं जो प्रलय में जमा होंगे और कोई कहता हैं कि ईश्वर शाहिद हैं और बन्दे मशहूद। और कोई कहता है कि शाहिद आदमी के अंग हैं और वह आप मशहूद हैं।

*मक्के के बेदीन मनुष्य दीन वालों पर अत्याचार कर रहे थे उन्हें खाइयों से डालते व जीवित जला देते थे। उसी की तरफ यह इशारा है। व दीनदारों को दिलासा है कि अन्त में सच्चाई ही की जीत है। 'लौह महफूज' लोहे की एक तख्ती है जिसमें ईश्वर ने सब कुछ शुरू से अखीर तक लिख रक्खा है जो संसार में होने वाला है इसे जान लेना इन्सान की ताकत से बाहर है।

सूरे तारिक

मक्के में अवतरित हुई, इसमें १७ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। आकाश की और रात को आने वाले की सौगन्ध। (१) और तू क्या समझे कि रात को आनेवाला क्या है। (२) वह चमकता हुआ तारा है। (३) कोई मनुष्य नही जिस पर चौकीदार न हो। (४) तो मनुष्य को चाहिए कि वह जिस चीज से पैदा किया गया है। (५) वह पानी से पैदा किया गया है जो वीर्यपात के समय उछल कर। (६) पीठ और छाती की हड्डियो के बीच से निकाला है। (७) निस्सदेह ईश्वर मरे पीछे उसके लौटाने पर शक्तिमान है। (८) जिस दिन भेद जाँचे जायेंगे। (९) उस दिन न तो आदमी का कुछ बस चलेगा और न कोई सहायक होगा। (१०) पानी वाले आकाश की सौगन्ध। (११) और फट जाने वाली पृथ्वी की सौगन्ध। (१२) जरूर यह कथन बिल्कुल सही है। (१३) और यह कुछ हसी की बात नहीं। (१४) यह काफिर दाव कर रहे हैं। (१५) और हम अपने दाँव कर रहे हैं। (१६) तो ऐ पैगम्बर इन काफिरो को समय दे इनको थोडा सा समय दे। (१७) (रुकू १)



सूरे आला

मक्के में अवतरित हुई, इसमें १६ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। ऐ पैगम्बर अपने आलीशान पालनकर्ता के नाम की माला फेर। (१) जिसने सृष्टि को बनाया और ठीक किया। (२) और जिसने अनुमान लगाया और राह लगा दी। (३) और जिसने चारा निकाला। (४) फिर उसको काला कूड़ा कर दिया। (५) ऐ पैगम्बर हम तुम को क़ुरान पढ़ा देंगे तुम भूलने न पाओगे। (६) मगर जो ईश्वर चाहे निस्सदेह ईश्वर पुकार कर पढ़ने को भी जानता है और आहिस्ता पढ़ने को भी। (७) और हम तेरे लिए और भी आसानी कर देंगे। (८) याद दिलाते रहो। जहाँ तक याद दिलाना लाभदायक हो। (६) जो डरता है वह समझ जायेगा। (१०) मगर भाग्यहीन तो उससे भागता ही रहेगा। (११) जो बड़ी आग में पड़ेगा। (१२) फिर न तो उसमें मरेगा ही और न जीवित ही रहेगा। (१३) जो पवित्र रहा वही सफल हुआ। (१४) और अपने पालनकर्ता का नाम लेता और नमाज पढ़ता रहा। (१५) मगर तुम मनुष्य सांसारिक जीवन को पकड़ते हो। (१६) हालाकि प्रलय कही बढकर और अधिक कठोर है। (१७) यही बात तो अगली किताबों मे है। (१८) यानी इब्राहीम और मूसा की किताब मे है। (१६) (रुकू १)

सूरे गाशियह

मक्के में अवतरित हुई इसमें २६ आयतें और १ रुकू हैं

अल्लाह के नाम पर जो कृपालु व दयावान है। तुझको उस छिपा रखनेवाली प्रलय की कुछ बात पहुची है। (१) कितने मुह उस रोज उतरे हुए होगे। (२) मेहनत उठा रहे होगे। (३) थक रहे होंगे दहकती हुई आग मे दाखिल होगे। (४) इनको एक खौलते हुए चश्मे का पानी पिलाया जायगा। (५) कांटो के सिवाय और कोई खाना इनको मिला ही नही। (६) जिनसे न तो मोटा हो और न भूख ही जाय। (७) कितने मुह उस रोज खुश होगे। (८) अपनी कोशिश से खुश। (९) ऊपर वाले स्वर्ग मे होगे। (१०) वहाँ वेहूदी बातें न सुनेंगे (११) उसमे चश्मे बह रहे होगे। (१२) उसमे ऊचे तख्त होगे। (१३) और आबखोरे रक्खे होगे। (१४) और गाव तकिये एक पक्ति मे लगे होगे। (१५) और मसनद बिछे हुए। (१६) तो क्या यह ऊंटो की तरफ नही देखते कि कैसे पैदा किये गये हैं। (१७) और आकाश की तरफ कि वह कैसा ऊंचा बनाया गया है। (१८) और पर्वतों की तरफ कि वह कैसे खडे किये गये हैं। (१९) और पृथ्वी की तरफ कि कैसी बिछाई गई है। (२०) तो ऐ पैगम्बर याद दिलाये जा तू तो बस याद ही दिलाने वाला है। (२१) तू उन पर दरोगा तो नही है। (२२) मगर जो मुंह फेरे और इन्कार करे। (२३) तो ईश्वर उसको बडा दण्ड देगा। (२४) निस्सदेह इनको तो हमारी तरफ लौटकर आना है। (२५) फिर उनसे हिसाव लेना हमारा काम है। (२) (रुकू १)

सूरे फजर

मक्के में अवतरित हुई इसमें ३० आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम पर जो कृपलु व दयावान है। सुवह की सौगन्ध (१) और दस* रातों की सौगन्ध। (२) जुफत और ताक की सौगन्ध। (३) रात जवकि गुजरने लगे। (४) बुद्धिमानो के लिए तो इनमे वड़ी भारी सौगन्ध है। (५) क्या तूने न देखा कि तेरे पालनकर्ता ने आद के साथ कैसा किया। (६) इरम के साथ कैसा किया। (७) जो ऐसे वड़े डील डौल के थे कि शहरों में कोई उन ऐसे पैदा नही हुए। (८) और समूद जिन्होंने घाटी में पत्थरों को काट कर वनाया था। (९) और फिरऔन तो मेखें रखता था। (१०) जो शहरों मे सरकश हुए। (११) और उनमें बहुत झगडे हुए। (१२) तो तेरे पालनकर्ता ने इस पर दण्ड का कोड़ा फटकारा (१३) तेरा पालनकर्ता अवज्ञा-कारियों की जरूर घात में है (१४) लेकिन मनुष्य है जव उसका पालन-कर्ता उसको जाँचता है और इज्जत और निआमत देता है तो कहता है कि मेरे पालनकर्ता ने मुझे प्रतिष्ठा दी है। (१५) और जब वह उसको दूसरी तरह जांचता है और उस पर उसकी रोजी तग कर देता है तो वह कहता है कि मेरा पालनकर्ता मुझे तंग करता है। (१६) हरगिज नहीं बल्कि तुम अनाथ के लिए नही करते। (१७) और न एक दूसरे को गरीवों को खाना खिलाने का वढ़ावा देते हो। (१८) और मुर्दों तक का छोड़ा हुआ माल समेट समेट कर खाते हो। (१९) और माल को वहुत ही प्यारा समझते हो। (२०) हरगिज नही जव पृथ्वी मारे

---

* रातों से क्या मतलव है? कोई कहता है इनसे १ से १० रमजान मुराद है और कोई कहता उनसे १ से दसवीं जिलहिज्ज (हज का महीना)।

धक्के के चकनाचूर हो जाय। (२१) और तेरा पालनकर्ता आ गया और देवदूत पाँति की पाँति। (२२) और उस दिन नरक समीप लाया जायेगा। उस दिन आदमी करेगा मगर उसके याद करने से क्या होगा। (२३) वह कहेगा हा शोक ! मैंने अपनी इस जीवन के लिये पहले से कुछ किया होता। (२४) तो उस दिन उसकी जैसी कोई दण्ड न देगा (२५) और न कोई उसके जैसा जकड़ेगा। (२६) ऐ विश्वास पाने वाली आत्मा ! (२७) अपने पालनकर्ता की ओर चली तू चली हू उससे राजी वह तुझसे राजी। (२८) फिर मेरे बन्दो मे जा मिल। (२९) और मेरे स्वर्ग प्रवेश हो। (३०) (रुकू १)



सूर बलद

मक्के में अवतरित इसमें २० आयतें और १ रुकू है

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। मैं इस शहर मक्का की सौगन्ध खाता हू। (१) तू इसी शहर मे उतरा हुआ है। (२) और सौगन्ध है पैदा करने वाले आदम की और उसका सन्तान की। (३) हमने आदमी की मेहनत के लिये वनाया (४) क्या वह इस विचार मे है कि उस पर किसी का वस न चलेगा। (५) वह कहता है कि मैंने वहुत माल उडा दिये। (६) क्या वह यह समझता है कि उसे कोई नही देखता। (७) क्या हमने उसके दो आँखें नही वनाई। (८) और जीभ और दो होठ नही दिये। (९) और उसको दो राहें

नेकी बदी नही दिखाई। (१०) फिर वह घाटी से होकर नहीं निकला, (११) और ऐ पैगम्बर! तू क्या जाने घाटी क्या चीज है। (१२) गर्दन का छुड़ा देना। सेवक को स्वतन्त्र करना (१३) या भूख के दिनों मे खाना खिलाना। (१४) नातेदार अनाथ को। (१५) या दीन मिट्टी पर बैठने वाले को खिलाना। (१६) फिर उन लोगो में होना जो ईमान लायें और एक दूसरे को सब्र और दया की शिक्षा देते रहे। (१७) यही लोग सौभाग्यशाली होंगे। (१८) और जिन लोगों ने हमारी आयतों से इन्कार किया वही अभागे होंगे। (१९) इनको आग मे डालकर किवाड़ बन्द कर दिए जायंगे। (२०) (रुकू १)

सूरे शम्स

मक्के में अवतरित हुई इसमें १५ आयतें और १ रूकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। सूरज और उसकी धूप की सौगन्ध। (१) बाद में जब चाँद उदय होता है, उसकी सौगन्ध (२) और दिन की सौगन्ध, जब कि वह सूरज को उदय करे। (३) और रात की सौगन्ध, जब वह सूरज को छिपा ले। (४) और आकाश की और जिसने उसको बनाया। (५) और पृथ्वी की सौगन्ध, और जिसने उसे बिछाया। (६) और इन्सान की सौगन्ध, और जिसने उसे सही बनाया। (७) और उसके दिल मे उसकी बदी और संयमता सुझा

दी । (८) जिसने अपने जीव को पवित्र किया, वह मुराद को पहुंचा (९) और जिसने उसको दबा दिया वह घाटे में रहा । (१०) समूद ने अपनी सरकशी की वजह से पैगम्बर को झुठलाया । (११) जब कि उनमें से एक बड़ा कुकर्मी उठा । (१२) तो ईश्वर के पैगम्बर ने उनसे कहा कि यह ईश्वर की ऊटनी है, इसे पानी पीने दो । (१३) इस पर भी उन लोगो ने सालेह को झुठलाया और ऊटनी के पाँव काट डाले, तो उनके पालनकर्ता ने उनके पाप के बदले उन्हें मार डाला और सबो को बराबर कर दिया । (१४) और वह नही डरता कि बदला लेने । (१५) (रुकू १)



सूरे लैल

मक्के में अवतरित हुई, इसमें २१ आयतें और १ रुकू है

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है । रात की सौगन्ध कि ढाँक ले । (१) और दिन की सौगन्ध जब वह खूब रोशन हो । (२) और उसकी सौगन्ध, जिसने नर-मादा को बनाया । (३) तुम लोगो की कोशिश निस्सदेह अलग-अलग है । (४) तो जिसने दान दिया और बुराई से बचा । (५) और अच्छी बात को सच समझा । (६) तो हम आसानी की जगह कर देंगे । (७) और जो कजूसी करे और बेपरवाही करे । (८) और अच्छी बात को झुठलाये । (९) तो हम उसको कठोरता की ओर पहुचायेंगे । (१०) और जब गिरेगा तो उसका माल

उसके कुछ भी काम न आयेगा। (११) हमारा काम तो राह दिखा देना है। (१२) और प्रलय और ससार हमारे ही अधिकार मे है। (१३) और हमने तो तुमको भडकती हुई आग से डरा दिया है। (१४) इसमे वही भाग्यहीन प्रवेश करेगा। (१५) जो झुठलाता और मुह फेरता रहा। (१६) और सयमी उससे दूर रखा जायगा। (१७) जिसने अपने को पवित्र करने के लिए अपना माल दिया। (१८) और उस पर किसी का एहसान नही जिसका बदला दे। (१६) वह तो सिर्फ ऊचे पालनकर्ता की प्रसन्नता चाहता है। (२०) और वह अवश्य प्रसन होगा। (२१) (रुकू १)



सूरे जुहा

मक्के मे अवतरित हुई इसमें ११ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से कृपालु व दयावान है। दिन चढे की सौगन्ध। (१) और रात की सौगन्ध, जब ढाँक ले। (२) पालनकर्ता ने तुमको छोडा नही* और न वह प्रसन्न हुआ। (३) और तेरी इस जीवन से

---

* एक मौके पर रसूलुल्लाह के पास आयतो का आना रुक गया था। लोग ताना कसने व मजाक उड़ाने लगे थे। औं हजरत भी उदास थे। उसी समय उनको दिलासा देते हुए यह आयत उतरी कि ईश्वर ने ऐ पैगम्बर तुमको कभी नहीं छोड़ा और वह तुमको इतना कुछ देगा जिसके आगे सब आत है।



परलोक अच्छा होगा। (४) और तेरा पालनकर्ता आगे तुमको इतना चलकर देगा कि तू प्रसन्न हो जायगा। (५) क्या तुमको उसने अनाथ नही पाया और फिर जगह दी। (६) और तुमको गुमराह देखा और राह दिखाई। (७) और तुमको गरीब पाया और मालदार बना दिया। (८) तो अनाथ पर अत्याचार न कर। (९) और माँगने वाले को मत धिडक। (१०) और अपने पालनकर्ता के एहसानो का वर्णन कर दे। (११) (रुकू १)



सूरे इन्शिराह

मक्के में अवतरित हुई इसमे ८ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम जो कृपालु व दयावान है। ऐ पैगम्बर ! क्या हमने तेरा हौसला नही खोल दिया। (१) और हमने तुझ पर से तेरा बोझ उतार दिया। (२) जिसने तुम्हारी कमर तोड़ रखी थी। (३) और तेरा जिक्र ऊचा किया। (४) सख्ती के साथ आसानी भी है। (५) निस्सदेह कठिनता के साथ आसानी है। (६) तो अब तू फारिग हुआ तो प्रार्थना मे मेहनत कर। (७) और अपन पालनकर्ता की ओर ध्यान दे। (८) (रुकू १)



सूरे तीन

मदीने में अवतरित हुई इसमें ८ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। अजीर और जैतून की सौगन्ध। (१) और तूरसीनन पहाड की (२) और इस शहर मक्का की सौगन्ध जिसमें चैन है (३) हमने मनुष्य को अच्छी से अच्छी सूरत मे पैदा किया। (४) फिर हमने नीचे फेंक दिया। (५) मगर जो लोग ईमान लाये और उन्होंने सुकर्म किये उनके लिए बहुत फल है। (६) तो इसके बाद कौन चीज है जिससे तू न्याय के दिन को झुठलाता है। (७) क्या ईश्वर सब हाकिमों का हाकीम नही है। (८) (रुकू १)



सूरे अलक

मक्के में अवतरित हुई इसमें १९ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। अपने पालनकर्ता का नाम लेकर जिसने पैदा, कुरान पढ़े चलो। (१) आदमी को जमे हुए* लोहू से बनाया। (२) पढ़ चलो तेरा पालनकर्ता बड़ा करीम है। (३) जिसने कलम के द्वारा विद्या सिखाई। (४) मनुष्य को वह बातें सिखाई जो उसे मालूम न थी। (५) मगर नहीं आदमी तो बड़ा

सरकश है। (६) इसलिए कि अपने तईं गनी देखता है। (७) तुझे अपने पालनकर्ता की ओर लौट कर जाना है। (८) क्या तूने उस मनुष्य को देखा जो मना करता है। (९) जब एक बन्दा नमाज पढ़ने खडा होता है। (१०) भला देख तो अगर वह सच्ची राह पर हो। (११) या सयमता सिखाता है। (१२) क्या तूने देखा कि अगर वह झुठलाता और पीठ फेरता है। (१३) क्या वह नही जानता कि ईश्वर देख रहा है। (१४) नही अगर वह बाज न आया तो हम उसको पट्टे पकड कर जरूर घसीटेंगे। (१५) झूठे गुनागार के पट्टे। (१६) तो उसको चाहिये कि अपने साथ बैठने वालो को बुला ले। (१७) हम भी नरक के देवदूतो को बुलायेगे। (१८) हर्गिज नहीं। तू उसकी कही न मान शीश नवा और ईश्वर के करीब हो। (१९)(१)



सूरे कद्र

मक्के मे अवतरित हुई इसमे ५ आयते और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। हमने यह कुरान कदर की रात से उतारना शुरू किया है। (१) और तू क्या जाने कदर की रात क्या है। (२) कदर की रात हजार महीनो से बढ कर है। (३) उसमे हर काम के लिए देवदूत और रूह अपने पालनकर्ता की आज्ञा से उतरते हैं। (४) वह रात सलामती की है। वह प्रात काल तक रहती है। (५) (रुकू १)



---

* यह नहीं बताया जा सकता कि कौन-सी रात कदर की रात है। हां रमजान के अन्तिम सप्ताह मे कोइ एक रात ज्यातर मुसलमान मानते हैं।

सूरे बय्यिनह

मदीने मे अवतरित हुई इसमे ८ आयते और १ रुकू है ।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान । जो लोग किताववालो और शिर्क वालो मे मे इन्कारी हुए वे मानने वाले न थे । जब तक उनके पास कोई खुली हुई दलील न पहुंचे । (१) और वह दलील यह थी कि ईश्वर की ओर से कोई पैगम्बर आये और पवित्र किताव पढ कर सुनायें । (२) उनमे पक्की बातें लिखी हो । (३) दूसरी किताब वालो ने दलील आये पीछे भेद डाला है । (४) हालांकि कुरान मे भी पिछली किताबो की ही तरह उनको पैगम्बर के द्वारा वही आज्ञा दी गई कि पवित्र अल्लाह की ही वन्दगी की नियत से एक तरफ होकर उसकी पूजा करें और नमाज पढें और यही सही दीन है । (५) किताब वालो और शिर्क वालो मे से जो लोग इन्कार करते रहे नरक की आग में होगे । हमेशा इसी में रहेगे, यही लोग सबसे बुरे हैं । (६) जो लोग ईमान लाये और नेक काम किगे, यही लोग सबसे अच्छे हैं । (७) इनका बदला इनके पालनकर्ता के यहाँ रहने के बाग स्वर्ग हैं जिनके नीचे नहरें वह रही होंगी । वह उनमें हमेशा रहेंगे । अल्लाह उनसे प्रसन्न और ये अल्लाह से प्रसन्न । यह उनके लिये है जो अपने पालन-कर्ता से डरें । (८) (रुकू १)



सूरे ज़िलज़ाल

मदीने में अवतरित हुई इसमें ८ आयतें और १ रुकू है।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। जब पृथ्वी अपने भूचाल से हिलाई जाये। (१) और पृथ्वी अपना बोझ निकाल डाले। (२) और मनुष्य बोल उठे कि उसे क्या हो गया। (३) उसी दिन वह अपनी खबरें सुनायेगी। (४) इसलिए कि तेरा पालनकर्ता उसको आज्ञा भेजेगा (५) उस दिन लोग अलग-अलग हालतो मे लौटेंगे ताकि उनको उनके कर्म दिखलाये जाय। (६) तो जिसने थोडी भी बुराई नेकी की वह उसको देखेगा (७) और जिसने थोड़ी भी की वह उसको भी देखेगा। (८) (रुकू १)



सूरे आदियात

मक्के में अवतरित हुई इसमें ११ आयतें और १ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। हाफकर दौडनेवाले घोड़ो की सौगन्ध (१) जो फिर टाप मारकर आग निकालते हैं। (२) फिर सुबह के समय छापा जा मारते हैं। (३) फिर वह उस समय भी दौड-धूप से गुब्बार उडाते हैं। (४) फिर उसी वक्त फौज मे जा घुसते है। (५) मनुष्य अपने पालनकर्ता का बडा कृतघ्नी है। (६)

और वह इसको खूब जानता है। (७) और वह माल पर प्रेम करने मे मजबूत है। (८) तो क्या इनको मालूम नही जब वह मनुष्य जो कब्रो मे हैं उठा खड़े किये जायेंगे। (९) और दिलो में जो बातें है वह जाहिर कर दी जायंगी। (१०) उस दिन उनका पालनकर्ता ही उनसे बखूबी जानकार होगा। (११) (रुकू १)

सूरे कारिअह

मक्के में अवतरित हुई, इसमें १७ आयतें और १ रुकू है।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। खड़खड़ाने वाली। (१) खड़खडाने वाली क्या चीज है। (२) और तू क्या जाने खड-खड़ाने वाली क्या चीज है। (३) जिस दिन आदमी बिखरे हुए पतिंगों की तरह होगे और पहाड़ धुनी हुई ऊन की तरह हो जायंगे। (५) तो जिसके कर्म भारी होगे, (६) तो वह खुशी के जीवन मे होगा। (७) और जिस किसी का वजन हल्का होगा। (८) तो ठिकाना उसका हावियह होगा। (९) और तू क्या जाने वह हावियह क्या चीज है। (१०) वह नरक की जलती हुई आग है। (११) (रुकू १)

सूरे तकासुर

मक्के मे स्वतरित हुई, इसमें ८ आयतें और १ रुकू है

अल्लाह के नाम पर जो कृपालु व दयावान है। तुम्हारी बहुतायत इच्छाओ ने भूल मे डाल रखा है। (१) यहा तक कि तुम कब्र मे पहुचो। (२) नही-नही, तुमको मालूम हो जायगा। (३) फिर नही-नही, तुम को मालूम हो जायगा। (४) बात यह है अगर तुम विश्वास करना जानो, (५) तो तुम अवश्य नरक को देख लोगे। (६) फिर जरूर उसे तुम विश्वासी आँखो से देखोगे। (७) फिर उस दिन निआमतो के विषय मे तुमसे पूछ-ताछ अवश्य होगी। (८) (रुकू १)



सूरे असर

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ३ आयत, १ रुकू है

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। अमर ढलते दिन को सौगन्ध। (१) आदमी घाटे मे है। (२) मगर वह नही जो ईमान लाये और जिन्होने सुकर्म किये और एक दूसरे को हक की शिक्षा देते रहे, एक दूसरे को सब्र करने की शिक्षा देते रहे। (३) (रुकू १)



सूरे हुमजह

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ९ आयतें और १ रुकू है

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। हर ताना देने वाले और ऐब चुनने वाले की खराबी है। (१) जो माल जमा करता और गिन-गिनकर रखता रहा। (२) वह समझता है कि उसका माल हमेशा उसके साथ रहेगा। (३) नही वह तो जरूर जलती हुई आग में क्या चीज है। (४) और तू क्या जाने जलती हुई आग क्या चीज है। (५) वह ईश्वर की भड़काई हुई आग है। (६) दिलो तक की खबर लेगी। (७) वह उनके ऊपर चारो तरफ से बन्द घिरी होगी। (८) आग के बड़े-बडे खम्भो की तरह पर। (९) (रुकू १)



सूरे फील

मदीने मे अवतरित हुई, इसमें ५ आयतें और १ रुकू है।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। ऐ पैगम्बर ! क्या तूने नही देखा कि तेरे पालनकर्ता ने हाथी वालो के साथ कैसा वर्ताव किया*। (१) क्या उसने उनके दाँव बेकार नही कर दिये ? (२)

---

* रसूलुल्लाह की पैदायश से पहले, हबश के बादशाह के एक गवर्नर ने यमन मे 'सुनआ' एक शानदार गिरजा बनवा कर यह ख्वा-

ओर उन पर झुण्ड के झुण्ड पक्षी भेजे। (३) जो उन पर कंकड की पथरियाँ फेंकते थे। (४) यहा तक कि उनको खाये हुए भूसे की तरह कर दिया। (५) (रुकू १)



सूरे कुरेश

मक्के मैं अवतरित हुई, इसमे ४ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। इस वास्ते कि कुरेश को मिला रखा चाव पैदा किया। (१) जाडे और गर्मी के सफर मे उन्हे चाव दिलाया। (२) तो उनको चाहिए इस घर काबा के मालिक की पूजा करें। (३) जिसते उनको भूक मे खिलाया और उनको सफर के डर से बचाया। (४) (रुकू १)



हिश की कि काबा की इज्जत घटकर 'सुनआ' की हो जाय। इसी सिलसिले में उसने काबा को मिटाने के लिए मक्के पर चढाई की। उसकी फौज मे बडे-बडे हाथी भी थे। किन्तु ईश्वर के फजल से रास्ते ही मे चिड़ियो के गोल के गोल आये और उनको कंकड़ियो की मार से लश्कर समाप्त हो गया।

सूरे माऊन

मक्के मे अवतरित हुई, इसमे ७ आयतें और १ रुकू है।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। ऐ पैगम्बर ! क्या तूने उसको देखा जो प्रलय के न्याय को झुटलाता है ? (१) और यह ऐसा मनुष्य है जो अनाथ को धक्के दे देता है (२) और गरीब के खिलाने का बढावा नही देता। (३) तो उन निमाजियो की खराबी है, (४) जो अपनी नमाज की तरफ से गाफिल रहते हैं। (५) जो मनुष्यो को अपने नेक काम दिखलाते हैं। (६) और नित्यप्रति की बर्तने की चीजो को भी देने मे इन्कार करते हैं। (७) (रुकू १)

सूरे कौसर

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ३ आयते और १ रुकू है

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। हमने तुझे कौसर यानी बहुतायत से चीजें दी। (१) बस अपने पालनकर्ता की नमाज पढ़ और बलि दे। (२) तेरे दुश्मन का नाम लेवा न रहेगा। (३) (रुकू १)

सूरे काफ़रून

मदीने में अवतरित हुई, इसमे ६ आयते और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है तू कह कि ऐ काफिरो (१) मैं उस मूर्ति की पूजा नही करता जिनकी तुम पूजा करते हो। (२) और जिस ईश्वर की मैं पूजा करता हू तुम भी उसकी पूजा नही करते। (३) और आगे भी न मैं उनकी पूजा करूँगा जिनकी तुम पूजा करते हो। (४) और न तुम उसकी पूजा करोगे जिस की मैं पूजा करता हू। (५) तुमको तुम्हारा दीन और मुझ को मेरा दीन। (६) (रुकू १)



सूरे नस्र

मक्के में अवतरित हुई इसमे ३ आयते और १ रुकू है।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। जब कि ईश्वर की सहायता मे फतह आई *। (१) और तूने मनुष्यो को देखा कि ईश्वर के दीन मे गिरोह के गिरोह दाखिल हो रहे है। (२) तो अपने पालन-कर्ता की प्रशसा के साथ तस्बीह से याद करने मे लग जा और उससे पापो की क्षमा माँग। निस्संदेह वह बड़ा तौबा कबूल करने वाला है। (३) (रुकू १)

*हजरत रसूलुल्लाह के चचा अबूलहब और उनकी बीबी जो इनके इस्लाम के दुश्मन थे, दुनिया मे तबाह हो गये। उसी का जिक्र है

सूरे लहब

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ५ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। अबूलहब* के दोनों हाथ टूट गये और वह नष्ट हुआ। (१) न तो उसका माल ही उसके कुछ काम आया और न उसकी कमाई। (२) वह जल्दी ही लौ उठती हुई आग में दाखिल होगा। (३) और उसकी बीवी भी जो ईंधन ढोती फिरती है (४) उसकी-गर्दन मे खजूर की रस्सी होगी। (५) (रुकू १)



सूरे इखलास

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ४ आयतें और १ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। ऐ पैगम्बर ! कहो कि वह अल्लाह एक है। (१) वे परवाह है। (२) न कोई उससे पैदा हुआ, न वह किसी से पैदा हुआ। (३) और न कोई उसका समता का है। (४) (रुकू १)



---

* मदीने में हिजरत के समय रहने पर, बाद में मक्के के सरदारों से जंग हुई या फतह हासिल हुई।

सूरे लक

मदीने में अवतरित हुई, इसमे ५ आयतें १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम पर जो कृपालु व दयावान है ऐ पैगम्बर! कहो कि सुबह के मालिक से शरण माँगता हू। (१) तमाम सृष्टि की बुराइयो से। (२) और अघेरी रात की बुराई से जब अ धियारी छा जाये (३) और गडो पर फू कनेवालो की बुराई से। (४) और ईर्षा करने वालो की बुराई से जब ईर्षा करने लगें। (५) (रुकू १)



सूरे नास

मदीने में अवतरित हुई इसमें ६ आयतें और १ रुकू है।

अल्लाह के नाम पर जो कृपालु व दयावान है। ऐ पैगम्बर! कहा कि मैं आदमियो के पालनकर्ता की शरण माँगता हू। (१) मनुष्या के मालिक की। (२)मनुष्यो के पूज्य की। (३) उसकी (शैतान) बुराई से जो सनकारे और छिप जावे। (४) वह जो मनुष्यो के दिलो मे (बुरे) ख्याल डालता है। (५) जिन्नो या आदमियो से (इनकी बुराइयो से पनाह माँगता हू) (६) (रुकू १)

